सर्वे अवतारना अवतारी अक्षरातीत परब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराज



जन्मस्थळ चुडा (झालावाड) सौराष्ट्र संवत १८९०

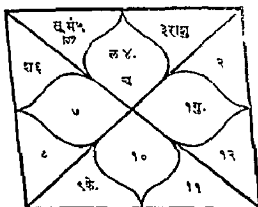
परब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्णनी

कुंडळी

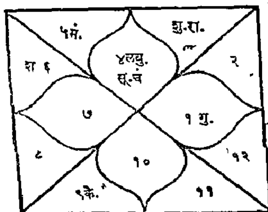
श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः

स्वस्ति श्रीविक्रमार्क राज्य समयातीत संवत १८८९ अषाढादि संवत १८९० तमे वर्षे श्रीमद् भूपति शालिवाहन कृत शाके १७५५ तमे प्रवर्तमाने दक्षिणायने वर्षाऋतौ श्रावण मासे कृष्णपक्षे १४ चतुर्दशी घ. ३७ प. १६ पर अमावास्यां जन्मतिथौ सौम्यवासरे पुष्य घ. ३२ प. २५ पर आश्लेषाख्ये जन्मभे व्यतीपात घ. ३२ प. ४० पर वरीयान जन्मयोगे तात्कालिके चतुष्पद करणे एवं पंचांगशुद्धावत्र दिने श्रीसूर्योदयाद् गत घटिकाः ५८ पलानि ४८ समये श्रीचूडा ग्रामे औदीच्य सहस्र विप्रज्ञाति विभूषण श्री रावळ भाणजीभाई भार्योभय कुलशुद्धा सौ. हरियाकुक्षेः श्रीहरिकृष्ण भगवतो जनिरभूत् ॥

अथेदं श्रीमतां जन्म लग्नम्



अथेदं भाव लग्नम्



भगवाननो जन्मः—वि. सं. १८८९ शक १७७५ ना दक्षिणायन वर्षाऋतुमां श्रावण वदि चौदश अमासने बुधवारे चूडा गाममां औदीच्य सहस्र ज्ञातिना श्री रावळ भाणजीभाईनां धर्मपत्नीनी कुखे भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराज प्रगट थया. सूर्योदयथी घ. ५८ प. ४८ समय थयो अने ते दिवसे चतुर्दशी घ. ३७ प. १६ सुधी छे. तेथी जन्म वखते घ. ३१ प. ३२ अमास भोगवाई गई छे ते वखते जन्म थयो छे अर्थात ते घडी अमासनी जोडे संबंध राखनारी छे.

श्री

स्वस्तिश्री बोटाद माहा सुभस्थाने सुभोपमा
जोगबाई जीमकी तथा बाई सोन तथा बाई धु
नली तथा बाई पांन वीगेरे सरवे हरीजन
बाई ओनी चरणोंमा ली. वी. घणी हेते
ओ तांनथी सो लीत्रे थी लखित गगा हाथ
जेहरीकृष्णनी कृपा वांचजो बीजु आ
ई अवेरने खबर काढवा मोकला छे तेम
गाजो कोई आवी सको तो घणु सारु तमारा
जीव दरसन वीना घणो तणातो हस माटे आ
वा ओ तो आवजो ने न अवायतो हीवाळी
नी उपर जरुर आवजो ने अवेर भेगो समा
चार लखी मोकलजो बीजु भगतदु

ल उपर बोटाद नो घर माहोतु घरावानी
मका मण ऊखी छे तमो ई अवेरने तेडी
ने आवजो माटे जेने जे अधा होय ते आ
पजो पत्र बहुदहा थया अवेर ने आपजो
अवेरखे भगतदु दाची गीलखावी मो
कलजो माटे जे बेन ते करजो भुलसो
मा बीजु डोसीअ सोने कहेजु केत
मे घरनी घसु थई ने घरमांनेघर पांके
म बेसी रोछो ते तमे केम रहेवाय छे भ
गवांनजा णापछी रहेता कगण पडे माटे
आळस न काढी तया बीजुते सीयुने
लईने सोलीत्रे आवजो सतसंग बहु
थयो छे साछो पत्र लखजो
ली. माहाराज हरीकृष्ण. जेम वइउ पर चंडु सोम

निवेदन

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः

श्रीहरिकृष्ण दुःख हरण प्रभु उरमां करो निवास,
अहं ममता माया मटे अंतर थाय प्रकाश....१
सर्वातीत सर्वोपरि सर्वकारण सुखधाम,
महामनोहर मूरति हरिकृष्ण सुंदर नाम....२
वार वार विनंति करुं जोडी जुगल वेउ हाथ,
कृपासिंधु कृपा करी अभयदान आपो नाथ....३
धर्म ज्ञान वैराग सहित भक्त एकांतिक जोय,
निर्विकल्प निश्चय उत्तम प्रभुजी आपो मोय....४
आठो पहोर आपो सदा तव दासन को संग,
गुण तमारा गाउ प्रभु न चडे दुजो रंग....५
हिंसा न थाय कोई जंत की दुभाय नहीं तव दास,
चोरी छिनाळी दारु मांस अडे नहीं तेनो पास....६
अधर्म अनीति कुडकपट कोईनी निंदा न होय,
शीळ संतोष दया घणी हरिकृष्णजी आपो मोय....७
आत्मा मध्ये वसो सदा अखंड करो निवास,
धर्मानंद कहे हरिकृष्णजी राखो चरणमां दास....८

आ पुस्तनुं नाम "श्रीहरिकृष्ण श्रीमुखसिद्धांत" छे. श्री कहेतां अनंत कोटी ब्रह्मांडना देव, ब्रह्मादिक ईश्वर तथा अक्षरादिक सर्वे धाम तेने शोभाना आपनारा छो. अने हरि कहेतां सर्व दुःखना हरनारा छो. ते दुःख ते शुं छे? तो जन्म, मरण, गर्भवास अने चोरासी तेनां अपार दुःख छे. अने वळी जीवना अंतर शत्रु जे काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान ए जे शत्रु ते जीवने अपार दुःख आपे छे, ते दुःखने तमो हरो छो माटे ज हरि एवुं तमारुं नाम छे. अने कृष्ण कहेतां पोताने शरणे आव्या एवा जे दैवी अने मुमुक्षु

जीव तेनां इन्द्रियो, अंतःकरण अने जीव तेने आकर्षण करीने पोतानी मूर्तिने विषे जोडावीने ब्रह्मस्थितिने पमाडो छो. माटे हे प्रभु ! तमारुं नाम श्रीहरिकृष्ण ते यथार्थ छे.

एवा जे सर्वे अवतारना अवतारी परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराज तेमणे सौराष्ट्र अने गुजरातना गामडे गामडे फरीने वेद, शास्त्र अने पुराणना सार रूप जे आत्यंतिक ज्ञान तेनां सिद्धांतो सरळ गुजरातीमां भाषण द्वारा समजावेला ते आ ग्रंथमां छे माटे आ ग्रंथनुं नाम " श्रीहरिकृष्ण श्रीमुखसिद्धांत " राखवामां आव्युं छे.

परब्रह्म पुरुषोत्तम प्रगट भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजना सर्वोपरि आत्यंतिक ज्ञाननो लाभ मानव जगतने मळे ते सारु भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजना एकांतिक अक्षररूप साधु श्रीधर्मानंद स्वामी तथा श्रीअक्षरमुक्तानंद स्वामी तेमणे भगवानश्रीनी आज्ञाथी लखी राखेला जे श्रीमुखना उपदेशो तेमांथी भगवानश्रीना प्रागट्य दरम्यानमां संवत १९२५ नी सालमां एकवीस सिद्धांतोनुं एक पुस्तक प्रगट करेलुं. अने पछी संवत १९३४ नी सालमां प्रथम वार प्रगटना एकांतिक भक्तो भगवानजीभाई लक्ष्मीराम ओझा रोहीशाळा अथवा चूडा वाळा तथा सरवैना भक्त दुदाभाई जीवाभाई तेमणे चुडाना तथा समस्त हरिभक्तोनी मददथी " श्रीमुखसिद्धांत " नामना त्रण भागना ग्रंथ रूपे पोथी–पानाथी श्रीमुखना उपदेशो छपावी प्रसिद्ध करेला छे.

हालमां आ ग्रंथनी जूज नकलो छूटी छवाई भक्तो पासे छे अने ते पण घणी जीर्ण थई गई होवाथी श्रीहरिकृष्ण भगवानना भक्तोए ता. ९–२–१९४९ ना रोज "श्रीमुखसिद्धांत" ग्रंथ तथा संप्रदायनुं बीजुं साहित्य छपाववानो ठराव कर्यो अने ते कार्यनी व्यवस्था करवा सारु परब्रह्म भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजना ज्ञान प्रचारक भक्त मंडळनी स्थापना करी छे.

प्रथम आवृत्तिमां सिद्धांतो तिथि प्रमाणे जोतां आडा अवळा होवाथी तेने क्रमवार तिथि प्रमाणे गोठववामां आव्या छे अने श्रीमुखनी दिव्य वाणीने मूळ स्वरूपमां साचवीने सिद्धांतवार विषय मूक्या छे. वळी त्रण भागना ग्रंथने बे भागमां छपाववानुं नक्की करेलुं तेमांथी अमोए "श्रीमुखसिद्धांत भा. १" सं. २०१२ रामनवमीना रोज प्रगट कर्यो छे. अने आ " श्रीमुखसिद्धांत भा. २ " मानव जगतनी सन्मुख मुकतां अमने परम आनंद थाय छे अने आ आत्मकल्याणी ग्रंथ आध्यात्मिक जगतमां संप्रदायोना परस्परना भेदभावने दूर करी सर्वेनो समन्वय करशे अने जगतमां शान्ति माटे जरूर उपयोगी थशे.

वळी आ श्रीमुखसिद्धांत ग्रंथने वांचशे अथवा सांभळशे तेने आत्मा अने परमात्माना स्वरूपनुं साक्षात्कार ज्ञान थशे अने तेने परमात्माने विषे भक्ति थशे अने ते भक्तिए करीने मोक्ष थशे. माटे सर्वे वेद–शास्त्रनो सार एवी जे परमात्मानी वाणी एटले आ श्रीमुखसिद्धांत तेनो जे नित्य पाठ करशे अथवा तेनुं श्रवण करशे तेने धर्म, अर्थ, काम

अने मोक्ष ए चारे फळनी प्राप्ति थशे एमां जराय संशय नथी. वळी आ साथे प्रगट भगवाननो टुंक परिचय तथा संतोना बोल अभिप्राय वगेरे मूक्या छे.

आ आत्मकल्याणी अने जगतकल्याणी सर्वोत्तम कार्यमां जे जे सद्ग्रहस्थो तरफथी यथाशक्ति सेवा मळी छे "तेमनुं कल्याण करो" एवी अमे श्रीहरिकृष्ण परमात्माने प्रार्थना करीए छीए अने आ पुस्तक वांचनार अक्षरधामना अधिकारी वांचकोने विनंति करीए छीए के अमोने "भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजने विषे अखंड वृत्ति रहो" एवो आशीर्वाद आपजो. वळी आ कार्यमां रू. १००) अने तेथी वधु रकम मंडळने भेट आपनार सद्गृहस्थोनी नामावली मंडळना नियम प्रमाणे पुस्तकमां मुकवामां आवी छे. अने हवे पछी भेट आपनार सद्गृहस्थोनी नामावली संप्रदायना नवा प्रकाशनमां मूकवामां आवशे.

अमारा प्रकाशन कार्यमां जे भक्तोए अने सद्गृहस्थोए अमुल्य सेवा आपी छे ते माटे अमो तेमनो हार्दिक उपकार मानीए छीए.

आ पुस्तकमां कोई जातनो दोष रही न जाय तेने माटे बनता प्रयासे पुरती काळजी राखवामां आवी छे छतां दृष्टि दोषथी अथवा यंत्र दोषथी कोई जग्याए भूल रही गई होय तो तत्त्व-जिज्ञासु दैवी अने मुमुक्षु वाचको सुधारीने वांचशे एवी आशा छे.

मंत्रीओ

प्रगट प्रभुनी उपासना

साधन सर्व प्रगट प्रभु सारु करवुं,
प्रगट तजीने परोक्षनी पाछळ, मिथ्या दोडी दोडी मरवुं; साधन....
उनाळे खेडु खडे करे पण, चोमासे बीज न वावे;
महेनत एनी मजरे न आवे, गाडा भरी क्यांथी लावे, साधन....
शास्त्र प्रमाणे साधन कीधां ने प्रगटमां प्रीत न जामी,
एकडा वीनाना मींडा एवी, महेनत गई छे नकामी, साधन....
जे जे जन प्रगटने पाम्या भावे भक्ति कीधी;
अडळक ढळ्या एनी उपर वालो, अविचळ पदवी दीधी, साधन....
प्रगट मळे पूरां थाय साधन करवुं रहे नहि कांई;
मोह मान ममताने मूकी, पकडो प्रगटनी बांई, साधन....
अरज अमारी उर धरीने हरिकृष्णजी आवो हसता;
नित्यानंदने निर्भय कीधो, क्षणुं एक दूरना खसता, साधन....

हरिकृष्णाष्टक

परीब्रह्म नंदन जगत वंदन, चरण रज भक्तो तर्या
चार वेद पट शास्त्रथी–हरिकृष्ण नीरखो रंग भर्या
गुण अगणित त्रिगुणातीत, ने शामळे वस्त्रो धर्या
हजार हाथथी शोभीता–हरिकृष्ण नीरखो रंग भर्या
ललाट चंदन करुणानंदन, दैवी जीव दुःखथी टळ्या
वनमाळी वासुदेव वे–हरिकृष्ण नीरखो रंग भर्या
अधुर लाल गुलाबी गाल, नेण जोई नेणा ठर्यां
पचरंगी पीली पावथी–हरिकृष्ण नीरखो रंग भर्या
विषय पंचन निकंद करवा, अवनी आ अवतार धर्या
सेवकजन सुख दायते–हरिकृष्ण नीरखो रंग भर्या
प्रमाण पंडित पाखंड खंडित, त्रिविधिना तापो हर्या
ज्ञान गुण भंडार ते–हरिकृष्ण नीरखो रंग भर्या
वांसल तटपर विशाळ मठमां, महाराजे यज्ञो कर्या
अनंत ऋषिजन करत हरहर–हरिकृष्ण नीरखो रंग भर्या
जमत ऋषिजन हरख अतिमन, मोहने मनमां धर्या
हरिकृष्णना प्रतापथी जन्मोजन्मना दुःख टळ्या
अष्टक पद जे पठत निशदिन, स्वर्गमां वासो ठर्या
रळीयामणां शुभ छंद ते, आनंदमां छगने कर्या

चूडा जोवाने

चालो चालो चतुर नरनार रे, चूडा जोवाने.
पूरण ब्रह्मनो थयो अवतार रे, पूरण पवित्र झालावाड रे, चूडा....
त्यां तो कळि मळ कीधी कहाड रे, वसे विशेष मुक्तनां वृंद रे, चूडा...
सौ नीरखे भाणजीनो नंद रे, भाण पितानुं भाग्य अपार रे, चूडा...
जेने भूवन भया किरतार रे, माता हरिवा घणां गुणवान रे, चूडा....
जुओ पुत्र पोते भगवान रे, वेद भेद शिवशंकर भ्रात रे, चूडा....
जाणे सर्वे सिद्धांतनी वात रे, राम लक्ष्मण सरखी जोड रे, चूडा....
मुक्त करशे जीव करोड रे, मुक्ति मळे छे हाजरा हजुर रे, चूडा....
वेचर इच्छे छे कंकणपुर रे, चूडा जोवाने.

पद १.

आज हरिकृष्ण पधार्या परिब्रह्म, विरला जाणे छे एनों मर्म रे संतो, आज.
राधा लक्ष्मी जेना चरणने रे सेवे, तेह प्रभु सुख देवे रे संतो, आज. .
अक्षरमुक्त जेने उर रहे धारी, वेद गाय छे पोकारी रे संतो, आज..
शेष सहस्र मुखे गुण नीत्य गावे, महिमानो पार न पावे रे संतो, आज....
अक्षरमुक्तानंद हरिकृष्ण चरण सेवे, सुख अलौकिक छेवे रे संतो, आज

पद २.

आज हरिकृष्ण आव्या अविनाशी, अक्षर धामना वासी रे संतो, आज
प्रकृतिपुरुष जेनी आज्ञामां कहावे, अनंत ब्रह्मांड उपजावे रे संतो, आज
जेनी इच्छा थकी उत्पत्ति थाये, मोटा मुनि गुण गाय रे संतो, आज
काळ माया जेनी आज्ञामां कंपे, शिव, ब्रह्मा नीत्य जपे रे संतो, आज
अक्षरमुक्तानंद हरि संग सुख माणे, अढळक ढळ्या छे आ टाणे रे संतो, आज .

पद ३.

आज हरिकृष्ण आव्या सुख देवा, लक्ष्मी करे जेनी सेवा रे संतो, आज
अधर्म उथापी वाले धर्म द्रढ स्थाप्यो, अनेक जीवोने मोक्ष आप्यो रे संतो, आज
कळियुग मध्ये वाले करुणा बहु कीधी, अचळ पदवी लई दीधी रे संतो, आज .
आ रे मर्म जेणे आशरो रे कीधो, जन्म सफळ करी लीधो रे संतो, आज
अक्षरमुक्तानंद जेने हरिकृष्ण मळीया, अक्षर मुक्तमां भळीया रे संतो आज.

पद ४.

आज हरिकृष्ण आव्या सुख कंद, साथे लाव्या मुक्त वृंद रे संतो, आज ..
कृपा करीने पोते आव्या छे आ वार, सर्वे अवतारना आधार रे संतो, आज
अनंत शक्ति जेणे चरणमां रे धारी, देवना देव मोरारी रे संतो, आज .
आज प्रभुजी आवी अढळक ढळीया, पार उतार्या जेने मळीया रे संतो, आज
अक्षरमुक्तानंद जेने हरिकृष्ण मेट्या, ताप त्रिविधना मट्या रे संतो, आज ..

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि र्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

अर्थः—ज्यारे ज्यारे एकांतिक-धर्मनो लोप थाय छे अने अधर्मनी वृद्धि थाय छे त्यारे त्यारे ते एकांतिक-धर्मना स्थापनने अर्थे अने 'परित्राणाय' कहेतां निर्वासनिक अने पंचविषयना त्यागी एवा जे साधु तेनी रक्षाने अर्थे अने दुष्टोने दंड देवाने अर्थे," श्रीमद् भगवद्गीतामां श्रीकृष्ण परमात्मा कहे छे, "हे अर्जुन! हुं प्रगट थाउं छुं."

पोताना मित्र अने भक्त अर्जुनने कहेलां इत्यादिक वचनने सत्य करी बताववानो प्रसंग उपस्थित थतां परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्ण भगवान पोतानी स्व-इच्छाए करीने आजथी सो वर्ष पूर्वे एटले संवत १८९० ना श्रावण वदि १४ नी रात्री पाछली बे घडी बाकी हती ते समयने विषे सौराष्ट्रनी पवित्र भूमिमां आवेला चुडा शहेरमां उदीच्य सहस्र ब्राह्मण ज्ञातिमां सद्भाग्यशाळी कुळभूषण रावळ भाणजाभाई रुपजीभाईने त्यां श्रीहरिकृष्ण नाम धारण करी प्रगट थया अने पोताना प्रागटयनुं कारण आपतां उपरना गीताना श्लोकनुं प्रतिपादन करीने संवत १९२५ना महा सुदि ६ ने दिवस गाम श्री सोजीत्रामां पोताना मंदिरमां सर्व सभा प्रत्ये बोलेला छे जे "अमने निर्वासनिक अने पंचविषयना त्यागी एवा जे साधु ते अतिशय वहाला छे. अने आलोकमां जे अमारुं स्वरूप देखाय छे ते पण आ धर्मानंद स्वामी अने अक्षरमुक्तानंद स्वामी तेना अर्थे देखाय छे, केमके अमने प्रसन्न करवाने अर्थे घणांक युग सुधी तप करीने निर्वासनिक थया छे अने आ जन्मने विषे पण अमारा दर्शन सारु अढार वर्ष सुधी फक्त लोट अने पाणी पीने मारुं ध्यान कर्या करता हता. माटे आ बे साधुने दर्शन देवाने अर्थे अमारे आलोकमां आववुं थयुं छे. अने बीजुं कार्य जे आ सभाने विषे ज्ञानमां गडबडाट घणो थई गयो हतो.

ते शो गडबडाट थई गयो हतो? तो रामकृष्णादिक प्रगट भगवानना वचनो तथा ऋषि मुनियोना वेद, शास्त्र, गीता अने भागवतादिक पुराण तथा रामायण महाभारतादिक इतिहास तेमां कहेलां मोक्ष प्राप्तिना साधनोमां मार्मिक वचनो तेने समजाववा शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य आदिक संत महात्माओए समय प्रमाणे लोकोनी रुचीने ध्यानमां राखीने कृपा करीने लोकोना मोक्षने माटे अद्वैत, विशिष्टाद्वैतादिक जे मार्गनुं प्रतिपादन करेलुं छे पण काळ बळे पंचविषयनी प्रवृति खूब वधी गई अने जगतना अज्ञानी

जीवो असत्पुरुषनी दोरवणीथी अवळुं समज्या अने एकांतिक धर्मनो लोप थयो हतो "तो ज्ञान आपीने धर्मने शुद्ध करवाने अर्थे अमारुं प्रगटपणुं छे. अने ज्यारे ज्यारे हुं प्रगट थउं छुं त्यारे त्यारे ए ये कार्य करवाने अर्थे ज प्रगट थउं छुं."

अने वळी कह्युं के भगवानना अवतार जे जे थाय छे ते जीवोने मुक्ति आपवा सारु थाय छे. ते मुक्ति आपवामां जीवने चोविस तत्त्व आडां आवरण करे छे ते चोविस तत्त्वनां आवरण टाळ्वा सारु भगवानना चोविस अवतार शास्त्रमां कह्या छे. वळी कह्युं छे के कार्यानुसार परब्रह्म निर्गुण ब्रह्म, सबळब्रह्म, मीथ्या ब्रह्म आदिक छ प्रकारना ब्रह्मना अवतार तथा बीजा भक्तावतार पण थाय छे एम वेदशास्त्रमां कह्युं छे. अने परब्रह्म सिवायना बीजा ब्रह्मना अवतारो रामकृष्णादिक परब्रह्मनुं भजन करता करावता थका धर्म ज्ञान वैराग अने भक्ति रूपी साधनने दृढ करावीने पोतपोताना धाममां लई जाय छे, अने ज्यारे आत्यंतिक ज्ञान आपवुं होय अने आत्यंतिक ज्ञानना अधिकारी घणांक मुक्त मुमुक्षु जन्म्या होय त्यारे तो ते समये पंडे परब्रह्म पुरुषोत्तम अक्षरातीतनो अवतारी अवतार थाय छे अने मुख्यपणे आत्यंतिक ज्ञाननी ज प्रवृत्ति करे छे. ते रामकृष्णादिक परब्रह्म अक्षरातीतना अवतारो छे अने ते सिवायना बीजा भक्तावतार छे ते पण भगवान कहेवाय छे.

अने वळी कहेलुं छे के रामकृष्णादिक अवतारो थया त्यारे ज्ञान आपवा सिवाय बीजां घणां कार्यो करवानां हतां अने ते अवतारो क्षत्रिय कुळे थया हता माटे जानकीजी, हनुमानजी, लक्ष्मणजी, पांडव, उद्धव, विदुर, गोपी, गोवाळादिक थोडाक भक्तोने ज ज्ञान आपीने पोताना स्वरूपनो निश्चय करावीने तेमनो मोक्ष कर्यो छे. "माटे आ समये सर्वेनो कारण अने सर्वेने उपासना करवा योग्य अने सर्वेने भजवा, पूजवा, सेववा योग्य अने सर्वेने मोक्षनो दाता एवो जे हुं सर्व अवतारनो अवतारी भगवान ते आज प्रगट थयो छुं माटे अमारे कोई मतपंथ नथी. अने वळी सर्वे धर्म पण अमारा ज छे, केमके सर्वे सत्पुरुषे सर्वोपरि जे भगवान तेने पामवा सारु धर्मनुं स्थापन कर्युं छे. माटे सर्वे धर्म अमारा छे. अने अमे जैन मतना सिद्धांत कही देखाडीए छीए तथा रामानुजना तथा शंकराचार्यना तथा वेदांतिना तथा हिंदु, मुसलमान आदिक सर्वेना सिद्धांतने कही देखाडीए छीए अने सर्वेना मोक्षनो मार्ग एक ज प्रतिपादन करी आपीए छीए अने सर्वेना वादविवाद तथा वढवाड अळसावीए छीए ....माटे आ समये तो आत्यंतिक ज्ञाननी प्रवृत्ति छे ते जेने सांभळीने बाकी तेने कांई समजवुं रहेतुं नथी."

ते पण व्यासजीए भगवानना अवतारोनी लीलानी समाप्ति करतां श्रीमद् भागवतना एकादश स्कंधने विषे अध्याय पांचमां श्लोक अडत्रीसमां कह्युं छे के—

कृतादिषु प्रजा राजन् कलाविच्छन्ति संभवम् ।
कलौ खलु भविष्यन्ति नारायण परायणाः ॥

अर्थः—' हे राजन् ! सत्युगनी आधे लईने मोटा देव छे ते कलियुगने विषे जन्मने इच्छे छे. (शा माटे) तो जे कलियुगने विषे ' खलु ' कहेतां निश्चय घणां जीव नारायण परायण थशे. ' तेमां कहेलां भावार्थने आगळ करीने पोताना प्रागटयनुं प्रतिपादन करतां भाग २ सि. २९६ मां बोलेला छे के " अमे एवो संकल्प कर्यो हतो जे ' अमने पामवाने अर्थे साधन करीने जे मुक्त तथा मुमुक्षु अक्षरधाम सिवाय बीजा जे जे लोक अगर धाम तेमां रह्या होय ते सर्वे आ सोरठ देशमां सो सो गाउ फरता फरता जन्म धरजो.' माटे ते बधाय मुक्त, मुमुक्षुए जन्म धर्या छे; अने जेटला मुक्त, मुमुक्षुए जन्म धर्या छे ते सर्वेने अमारे विषे सहेजमां प्रीति थाय छे अने तेने अमारा स्वरूपनो निश्चय थाय छे. अने जेटलाने संस्कार ओछो छे तेने अमारा स्वरूपनो निश्चय थवामां वार लागे छे. माटे तमारे सर्वेने अमारे विषे तरत प्रीति थई अने अमारा स्वरूपनो निश्चय थयो ते अमे तमने जन्म धराव्या छे अने तमोने दर्शन देवा सारु अने तमोने अमारा स्वरूपनो निश्चय करावीने अक्षर धामने पमाडवाने अर्थे हुं पण मारी स्वइच्छाए करीने प्रगट थयो छुं. अने अनंत जन्म थयां अमने पामवा सारु जप, तप, साधन कर्यां हता ते सर्वेनुं फळ तमने आज प्राप्त थयुं छे अने तमारा सर्वेना साधन पूरां थई रह्यां छे, हवे तमारे कांई करवुं रह्युं नथी. माटे तमारे देह रहे त्यां सुधी अमे आप्या जे वर्तमान तेने द्रढ राखीने अमारुं भजन कर्या करजो एटले तमारो साक्षात्कार मोक्ष थई रह्यो छे."

अने वळी कहेलुं छे जे " देवताने पण दुर्लब समो ते आज तमने प्राप्त थयो छे, कहेतां अनंत प्रतापे युक्त जे भगवान ते ज तमने आज प्रत्यक्ष मळ्या छे एम दृढ निश्चय राखजो. केमके सर्वे अवतारनो अवतारी एवो जे हुं ते आज मारो एवो संकल्प छे जे जे मारा संबंधने पामीने मारी सेवा, भक्ति धर्ममां रहीने करशे तेने मारा धाममां लई जवा छे."

परब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराज कोईनी पासे भणवा गया न हता अने ज्यारे ज्यारे प्रगट पुरुषोत्तम अक्षरातीतनो अवतार थाय छे त्यारे तेओश्रीनी पासे " वगर शीखव्युं सर्व शास्त्रनुं ज्ञान होय अने ते उपरांत पण अपार ज्ञान होय जे ज्ञानने सांभळवे करीने सांभळनाराना संशय मात्र टळी जाय अने पंचविषय अने जगत प्रत्ये अभाव थई जाय अने आत्मा अने परमात्मा विना बीजा कोई पदार्थनी वासना रहे नहीं एवो वैराग प्रगटे अने जीवात्मा ब्रह्मरूप थाय अने परमात्माना ध्यानने विषे दृढ स्थिति थाय अने तेना आत्मामां शान्ति थाय." आवी रीतनुं ज्ञान

आपनारा सत्पुरुष पोते ज परमात्मा छे, एम वेद पण कहे छे. वळी प्रगटने ओळखाववा माटे कहेलुं छे जे—

उत्पत्तिं विनाशं च लोकानामगतिं गतिं च ।
वेत्ति विद्यामविद्यां च स वाच्यो भगवानिति ॥

अर्थः—'जगतनी उत्पत्ति जेम थई छे तेम यथार्थ जाणे तथा नित्य, निमित्त, प्राकृत अने आत्यंतिक ए चार प्रकारना प्रलयने पण जाणे तथा गतिने अने अगतिने पण यथार्थ जाणे तथा विद्याने अने अविद्याने पण जेम छे तेम जाणे. ए छ ऐश्वर्यने यथार्थ जेम छे तेम प्रत्यक्ष जाणे अने कही देखाडे ते भगवान कहेवाय छे. कहेतां भगवान विना बीजो कोई ए छ वानाने जाणतो नथी.'

केमके जेम बापना जन्मने छोकरो जाणे नहीं अने छोकराना जन्मनी बापने यथार्थ खबर होय छे तेम जगतनी उत्पत्ति पहेलां जीवो तो बधाय घोर सुषुप्तिमां लीन हता माटे तेने जगतनी उत्पत्तिनुं ज्ञान होय नहीं. अने ज्यारे जगतनो प्रलय थाय छे त्यारे पण कोई जीवनो आकार रहेतो नथी माटे प्रलयनुं ज्ञान पण कोई जीवोने होय नहीं. माटे उत्पत्ति प्रलयादिकनुं ज्ञान जेनी पासे होय ते तो साक्षात्कार परमात्मा भगवान छे.

एम प्रगट भगवान ज्ञानथी ओळखी शकाय छे एम कहीने भाग २ सिद्धांत २७९ मां कहेलुं छे के "उपरथी जोयामां तो बीजा माणस जेवा जणाता होय अने जेम बीजा मनुष्य खाय, पीए, ओढे, पहेरे, तेम सर्वे क्रिया माणसना जेवी ज करे छे पण भगवान पासे जेवुं ज्ञान होय तेवुं ज्ञान बीजा कोई पासे होय नहीं, माटे ज्ञाने करीने जेने अमारी परीक्षा लेवी होय ते लो. अमारी पासे जे ज्ञान छे ते ज्ञान चौद लोकनी मांहेली कोरे कोईनी पासे नथी. माटे स्वामीनारायण धर्मना बधा साधु, ब्रह्मचारी, शास्त्री, पुराणी, आचार्य आवे अने मने ज्ञाने करीने तेनी नजरमां आवे ते पूछे तो हुं तेने मारा स्वरूपनो निश्चय करावुं अने ते वीना बीजा शंकराचार्यवाळा आवे, रामानुजना आवे, वल्लभाचार्यना आवे, जैन मतना आवे, मुसलमान आवे तो ते सर्वेने ज्ञाने करीने मारा स्वरूपने विषे भगवानपणांनो निश्चय करावुं, अने मोटा देव ब्रह्मा अने प्रकृतिपुरुष सुधीना सर्वे मारी पासे आवीने ज्ञान पूछे तो हुं तेने निश्चय करावुं अने ते पण मारा आश्रित थईने भजन करवा मांडे, अने ज्ञान विना बीजी रीते मारी पासे परीक्षा लईने निश्चय करवा आवे तेने तो हुं कोई दहाडो ओळखावो नथी अने तेनुं कल्याण थतुं नथी...." (सं. १९२४ पोष सु. १५ बोचासण)

"ते सारु अमारी परीक्षा तो ज्ञाने करीने छे, अने ज्ञानने विषे तो नव निधि अने अष्ट महासिद्धि रही छे पण नवनिधि अने अष्ट महासिद्धिने विषे ज्ञान नथी. माटे चिंतामणिरूप जे आत्यन्तिक ज्ञान ते एक अमारी पासे छे. पण बीजा कोई पासे आत्यंतिक ज्ञान नथी."

आवी रीतनुं वेद, शास्त्र अने पुराणना साररूप जे आत्यन्तिक ज्ञान तेनी वातो बाल्यावस्थामांथी ज नाना बाळकना मुखेथी सांभळी गामना लोको आश्चर्य पामवा लाग्या अने धीमे धीमे आजुबाजुना गामोमांथी लोको तेमनुं ज्ञान सांभळवा लाग्या अने भगवानश्रीने विनंति करी तेमना गाममां पण बोलावता हता. आम गामोगाम ज्यारे तेमनी वातो थवा लागी त्यारे पंडित, विद्वान, साधुओ वगेरेनुं ध्यान खेंचायुं अने वखत मळतां तेओ पण भगवानश्रीनी सभाना श्रोता बनी गया अने आश्चर्य पामी पोतपोताना गामोमां जईने भगवानश्री संबंधी वातो करता.

वखत जता आजुबाजुना प्रदेशमां ज्यारे 'भगवान प्रगट थया छे' एवी वातो खूब प्रमाणमां थवा लागी त्यारे समय लईने स्वामीनारायण संप्रदायना मुख्य मुख्य साधुओ अने हरिभक्तो पण भगवानश्री पासे आवी गया अने गुणातीतानंद स्वामी अने तेमनुं मंडळ ज्यारे वडतालथी पाछा जुनागढ जता हता त्यारे बोटादमां श्रीहरिकृष्ण महाराजना परब्रह्म भगवानपणांनो निश्चय करवा संवत १९१३ चैत्र वद अमासना दिने मोटी सभा राखी अने भगवानश्रीने आमंत्रण आप्युं. माया परनी आत्यन्तिक ज्ञाननी वाणी सांभळतां आखी सभा दिग्मूढ थई गई अने ते सभामां पोताना गुरु गुणातीतानंद स्वामी साथे आवेला अनंत जन्मना मुक्त साधु धर्मानंद तथा अक्षरमुक्तानंद पोताना गुरुनी रजा लईने श्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजीना अनन्य दास बन्या.

बोटादथी चुडा पाछा आवता भगवानश्री साथे बे साधुने जोईने गामना लोकोने अत्यन्त आनंद थयो अने लोकोने भगवानश्रीना निश्चयमां दृढता बंधाणी. पछी तो महाप्रभुजी आजुबाजुना प्रदेशमां साधुओ तथा घणां गृहस्थ भक्तो साथे फरवा लाग्या अने एवी रीते उपदेश आपतां थका ज्यारे तेओश्री २४ वर्षना थया त्यारे संवत १९१४ नी सालमां वसंतपंचमी उपर चुडा मध्ये बे लाख ब्रह्मभोजननो एक मोटो महारुद्र यज्ञ कर्यो अने देशविदेशथी आवेला हजारो पंडित, पुराणी, साधु, संन्यासी वगेरेनी मोटी सभामां तेमणे भगवानपणांनुं प्रतिपादन कर्युं अने तेमना साधु धर्मानंद स्वामीए छडी पोकारी जे–'हरिकृष्ण अक्षरातीत प्रगट पुरुषोत्तम धर्म धुरंधर महाराजाधिराज श्रीहरिकृष्ण महाराजने घणी खम्मा" त्यारथी अगियार वरस अने बावन दिवस अनंत जीवोनो उद्धार करवा देशाटनमां फर्या अने चार वेद, छ शास्त्र, अढार पुराण अने भारतादिक इतिहासना मर्म गामडाना भोळा लोको सहेलाईथी समजी शके ते माटे घरगथ्थु दाखला आपीने रोजनी भाषामां नर्म–गद्यना भाषणो आपीने एकांतिक–धर्मनुं स्थापन कर्युं अने पंचविषयरूपी जीवना अनादि शत्रुने दंड आपी अनंत जीवनो उद्धार कर्यो, अने वेद, गीता अने भागवतना वचनोने सत्य

करीने पांत्रीस वर्षनी उंमरे सोजीत्रा गाममां संवत १९२५ ना फागण वदि १३ ना दिने पोतानो लीलानी समाप्ति करी.

भगवान श्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजीए सनातन प्राचिन संप्रदायना परस्परना आंतरिक भेदभाव दूर थाय तेवी रीते ते ते संप्रदायना मूळ-भावार्थने बतावी तेमनो समन्वय करी बताव्यो छे. अने ते ते देशकाळ परत्वे वेदोक्त धर्मानुसार थयेला अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत अने द्वैताद्वैत ए चारे मतनो मूळ सिद्धांत एक करी बताव्यो छे. अने भगवानश्रीए हिंदु, मुसलमान, आदिक सर्व धर्मनुं पोताना मुखे प्रतिपादन कर्युं छे अने सर्वेने मोक्षनो एक ज सिद्धांत बताव्यो छे.

वळी अक्षर, अक्षरथी पर एवा जे परमात्मा ते रामकृष्णादिक रूपे प्रगट थाय छे तेनी प्रेमे सहित भक्ति करवाथी अने आज्ञा पाळवाथी ज मोक्ष थाय छे ए सर्व शास्त्रनो सार छे एम प्रतिपादन करतां कहेलुं छे श्लोक—

आलोड्य सर्व शास्त्राणि विचार्य च पुनः पुनः ।
इदमेकं सुनिष्पन्नं ध्येयो नारायण सदा ॥

(अथर्ववेद-उपनिषद)

वळी शंकर स्वामीए गुरु अष्टकमां कह्युं छे जे—

षडंगादि वेदो मुखे शास्त्र विद्या,
कवित्वादि गद्यं सुपद्यं करोति ।
गुरोरंघ्रिपद्मे मनश्चेन्न लग्नं,
ततः किं ततः किं ततः किं ततः किम् ॥

वळी विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहीनः ।
रस वर्जं रसोप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तन्ते ॥
दैवि ह्येषा गुणमयी मम माया दूरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥

(गीता)

अने तेटला ज माटे ज्ञान आपीने अर्जुनना सर्व संशय छेदीने ब्रह्मरूप करीने छेवट अढारमा अध्यायमां कह्युं छे के—

सर्वं धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वं पापेभ्या मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥

माटे वेद, शास्त्रने भणवा, सांभळवा, विचारवा अने तेमां कह्यु होय ते प्रमाणे जप, तप, साधन करवां अने तेने करीने आत्मानी शुद्धि करवी कहेतां विषय थकी निवृत पामवुं अने ब्रह्मरूप थवुं पण तेने करीने प्रत्यक्ष परमात्मा मळ्या विना एकले साधने करीने पूर्णपणुं न मानवुं. ते पण गीतामां कह्यु छे जे—

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति ।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥

ए श्लोकमां श्रीकृष्ण परमात्मा कहे छे के ब्रह्मरूप थयो एज मारी भक्ति करवानो अधिकारी थाय छे.माटे प्रत्यक्ष परमात्मा रामकृष्णादिक रूपे मळ्या विना पूर्ण थवातुं ज नथी. केमके आत्यंतिक ज्ञान विना मोक्ष थाय नहीं अने आत्यंतिक ज्ञान तो एक प्रत्यक्ष परमात्मा विना बीजा कोई पासे नथी. केम के जन्म पामेला सर्वे जीवो अधुरा छे अने आत्यंतिक ज्ञान पामीने अक्षर धामने पामेला भगवानना भक्तो फरीथी पृथ्वी उपर आवता नथी. ते पण गीतामां कह्युं छे जे—

न तद् भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥

तेटला माटे ज ज्यारे ज्यारे एकांतिल धर्मनो लोप थाय छे अने विषयनी प्रवृत्ति खूब वधी जाय छे त्यारे त्यारे साधु पुरुष रूप मुक्त अने मुमुक्षु जीवनो आत्यंतिक ज्ञान आपीने उद्धार करवा सारु अने पंचविषय रूपी जीवना अनादि शत्रुने दंड देवा सारु सर्वोपरि परब्रह्म परमात्मा अक्षरातीतनो अवतार थाय छे. माटे "आ समये जे प्रत्यक्ष अमारो आश्रय करीने अमारी आज्ञा प्रमाणे वर्ते छे तेने तो कांई करवुं रह्यु नथी अने अमारो आश्रय मूकीने बीजां सूझे एटलां कर्म करे, तीर्थ करे, व्रत करे, यज्ञ करे, होम करे, ज्ञान कथे, वैराग राखे, भेख ले, तप करे, योग साधे पण एक हुं प्रत्यक्ष पृथ्वी उपर होवुं अने मारो आश्रय करे नहीं तो तेनां सर्व साधन वृथा छे अने ते सर्वे साधने करीने कांई पण सिद्धि थती नथी." (भाग २ पा. ६१७.)

अने वळी घणा पाखंडी धर्म घातकी एम कहे छे जे—

एक राम तो घट घट बोले, बीजा राम दशरथ घेर डोले,
त्रीजा राम सकळ पसारा चोथा राम सबसे न्यारा.

एम एक रामना नोखा नोखा भेद बतावीने प्रत्यक्ष दशरथना पुत्र राम अने जे राम

तेज कृष्ण तेने विषेथी आस्था उठडावीने नास्तिक करे ते तो नास्तिक छे माटे कल्याणना खपवाळाए तेनो संग करवो नहीं. अने 'जे राम दशरथना पुत्र ते विना बीजो कोई निरंजन निराकार भगवान छे,' एम कहे छे ते तो असुर छे अने महापापी छे अने तेने अने तेना संगना करनाराने ब्रह्महत्या गोहत्या, स्त्रीहत्यादिक पांच महापाप लागे छे.

अने वळी घणा आसुरी ढोंगी असद्‌गुरु विषय भोगववा सारु भोळा लोकोने खोटा उपदेश करे छे जे—

मन होय हाथ तो जाय दाराने साथ.

पण मूर्खा एम नथी समजता जे विषयनो संबंध थवाथी ब्रह्मा, नारद, ईन्द्रादिक मोटा मोटा योग मार्ग थकी पडी गया छे तो मानवीनी शी गणत्री जे नित्य स्त्री, द्रव्य अने रसास्वादनो संबंध राखीने निर्लेप रही शके ? माटे "जेने स्त्री धननो संग छे ते मोक्षने अर्थे गुरु अथवा आचार्य करवा योग्य नथी अने स्त्री, द्रव्य अने रसास्वादादिक विषयने भोगवे छे अने ते गुरु थईने फरे छे के आचार्य कहेवाय छे ते तो पाखंडी छे अने जीवने बंधन करनारा धर्म घातकी छे."

माटे मोक्षनी इच्छावाळा दैवी अने मुमुक्षु जीवोए प्रगट भगवान अथवा प्रगट भगवानना संत पंचविषयना त्यागी निर्वासनिक चोसठ लक्षणे युक्त संतनो आश्रय करवो अने जे त्यागी थईने स्त्री, द्रव्य अने रसास्वादादिक विषयनो संबंध राखता होय तेनो तो कोईए संग करवो नहीं अने एवा दुष्टोनो वध करनाराने पण महा पुन्य थाय छे.

"अने प्रगट भगवान पृथ्वी उपर ना होय त्यारे तो जे धर्ममां विषयनो त्याग करता–करावता होय तथा भगवानने दिव्य साकार जाणीने तेज भगवान रामकृष्णादिक रूपे अवतार धरे छे तेनुं भजन करता–करावता होय तेवा मार्गमां रहीने भगवाननी प्रतिमानी सेवा तथा भगवाननुं भजन करवुं अने ज्यारे भगवान प्रगट थया संभळाय त्यारे प्रगटनो आश्रय करवो अने तेनुं भजन करवुं अने प्रगटनुं भजन करवामां जे ना पाडे तेनो त्याग करवो" (भा. २ पा. ५२६) अने जे प्रगट रामकृष्णादिकने शरणे गया छे तेना ज कल्याण थयां छे अने ते शास्त्रमां पण लख्यां छे अने जेणे प्रगटने नथी ओळख्या अने जेणे द्रोह कर्यो छे ते असुर कहेवाय छे.

"माटे अमारा आश्रित होय तेने अमारा पछी एवो खोटो ममत्व राखवो नहीं अने कोई शुद्ध ज्ञानदाता प्रगट थाय तो तेनी पासे सुखेथी जजो अने ते खरो ज्ञानदाता जणाय तो तेनो आश्रय करजो. अने तेनो आश्रय करशो ए ज अमारो आश्रय छे." (भा. १ पा. १६०)

• आवी रीते प्रगट भगवाननी भक्तिथी ज मोक्षनुं प्रतिपादन कर्युं छे अने कहेलुं छे के

प्रगट विना मोक्ष थतो होय तो भगवानने अवतार शा सारु लेवा पडे ? माटे सर्वोपरि पुरुषोत्तम भगवान रामकृष्णादिक अवतारनुं धारण करे छे अने पोतानी सेवा भक्ति अने ध्यान करावीने अनंत जीवोने पोताना स्वरूपमां जोडावीने अक्षरधामने पमाडे छे. अने वळी पोतानी मूर्तिनुं ध्यान करवानी आज्ञा आपतां कहेलुं छे जे "आ अमारी मूर्ति जेवी तमे देखो छो तेवी वस्त्र पुष्पे सहित संभारीने ध्यान करवुं अने मूर्ति सामुं जोई रहेवुं पछी एम ध्यान करवानो अभ्यास थोडाक दिवस करशो एटले अंतरमां प्रकाश थशे अने ते प्रकाशमां अमारुं स्वरूप अनंत प्रतापे अने अनंत पार्षदे सहित देखाशे. पछी ते मूर्तिनी क्यारे य विस्मृति थशे नहीं." (भा. २ पा. ५३२)

वळी आत्यंतिक ज्ञान साथे वर्णाश्रम धर्म व्यवस्थानी आवश्यकता देखाडतां भगवानश्री कहे छे के "ते धर्म बे प्रकारनो छे एक वर्णाश्रम धर्म छे अने एक एकांतिक धर्म छे. ते वर्णाश्रमना धर्मे करीने पापनो क्षय थाय छे अने एकांतिक धर्मे करीने भगवानना अक्षरधामने पमाय छे. ते प्रथम वर्णाश्रम धर्म पाळीने निष्पापी थाय छे त्यार पछी ते एकांतिक भक्त थईने अक्षर धामने पामे छे माटे आत्माना मोक्षने अर्थे सर्वे प्राणी मात्रने वर्णाश्रमनो धर्म जरूर पाळवो. अने जे धर्म पाळे छे तेने आ लोकमां कोई दहाडे दुःख आवतुं नथी अने परलोकमां पण महासुखने पामे छे." (भा. २ पा. ५९९)

अने वळी कहेलुं छे जे "आत्यंतिक ज्ञानने पामीने वासना टळी गई होय अने प्रत्यक्ष भगवानने प्रीति विषे थई गई होय तो पण वर्णाश्रमनो धर्म अने इन्द्रियोनो नियम ते तो देह पर्यंत राखवा पण तेनो क्यारेय त्याग करवो नहीं. अने वर्णाश्रमनो धर्म अने इन्द्रियोनो नियम तेनो त्याग करीने अनियमपणे वर्तशे तो ते मूझे एवो मोटो कहेवातो हशे अने ब्रह्म-स्थितिने पाम्यो हशे तोपण ते भ्रष्ट थई जशे." (भा. २ पा. ५६०)

अने वळी गृहस्थनो विशेष धर्म बतावतां कहेलुं छे के "आ समये लोकोए धर्म-भाग काढीने भगवानने अर्पण करवो बंध कर्यो छे ते सारु ईश्वरे राजामां प्रवेश करीने लोकोने दंडवा मांडया छे..........अने जो सर्वे लोको धर्म-भाग काढीने भगवानने अर्पण करवा लागे तो हमणां राजानी बुद्धि सारी थाय अने लोकोने सुख थाय तेम करवा लागे."
(भा. २ पा. ६०१)

वळी कर्मनी गहन गतिने समजावतां कहेलुं छे जे वेदनी आज्ञा जे "हिंसा न करवी, खोटुं न बोलवुं, तप करवुं, व्रत करवां, चोरी न करवी, व्यभिचार न करवो, मांस न खावुं, मद्य न पीवुं, कोईनी निंदा न करवी, विष्णुनी भक्ति करवी," इत्यादिक अनेक प्रकारनी वेदनी आज्ञाओ छे. तेमां जे परस्पर विरुद्धता आवे छे तेने यथार्थ जाणवुं ते ज कर्मनी गहन

गति छे. अने तेने समजावतां कसाई अने गायनुं दृष्टांत आपतां बोलेला छे जे गायने बचावतां जुठुं बोलवुं पडे ते जुठुं पण सत्य छे अने जो सत्य बोलवाथी गाय मरे ते सत्य ते पण असत्य छे. माटे पोतानी मेळे शास्त्रमांथी सांभळीने आज्ञा पाळवा जाय तो धर्म होय तेने अधर्म मनाय छे ने अधर्म होय तेने धर्म मनाय छे. माटे सत्पुरुषना संग विना कर्मनी गहन गतिने कहेतां निर्बाधपणांना कर्मने जाणी शकाय नहीं.

अने वळी पंडितोना समाजमां हालमां वादविवाद उपस्थित करनार "संस्कृत" अने "प्राकृत" शब्दनो तोड लावता पोते बोलेला छे जे "प्रकृतिना कार्यमां मोह पामीने चार वेद कंठथी मुखपाठे कही जाय तो पण ते प्राकृतवाणी छे अने जे पुरुष माया पर स्थितिमां रह्या थका जीवोना कल्याणने अर्थे ज्ञानबोध आपता होय तो ते संस्कृत वाणीए बोध आपे अथवा गुजराती वाणीए आपे अथवा गमे तो हिंदुस्तानी वाणीए बोध आपे अथवा आरबी, मुसलमानी, अंग्रेजी, काठीयावाडी, वालाकी वगेरे गमे ते वाणी बोलीने ज्ञानउपदेश आपे पण जो माया पर स्थितिए रहीने माया पर ज्ञान आपे छे तो ते पण संस्कृतवाणी छे अने वेदनुं ज व्याख्यान करे छे अने ते विना जे बोले छे ते सर्व प्राकृतवाणी छे. अने श्रीकृष्ण भगवाने अर्जुनने तथा उद्धवजीने वात करीने ज ज्ञान आप्युं छे अने रामचंद्रजीए पण पोताना भक्तोने वात करीने ज ज्ञान आप्युं छे तथा वृषभदेवे तथा कपिलदेवे पोतपोताना भक्तोने वातो करीने ज ज्ञान आप्युं छे अने श्लोक बांधीने शास्त्र तो पछी व्यासजीए कर्यां छे." (भा. १. पा. ४५४-४५५)

माटे शास्त्रना मर्म प्रगट सत्पुरुष थकी ज समजाय छे पण ते विना पोतानी मेळे शास्त्रने भणे-सांभळे समजाय नहीं. ते पण भागवतमां व्यासजीए कह्युं छे जे—

अहं वेद्मि शुको वेत्ति संजयो वेत्ति वानवा ।
भक्त्या भागवतं शास्त्रं न च बुध्या न च टिकया ॥

तेमां कह्युं छे जे 'शास्त्रमां कहेला मर्मने हुं जाणुं छुं, शुक जाणे छे ने थोडुंक संजय जाणे छे.' अने तेटला माटे ज शास्त्रमां गुरुनी आवश्यकता डगले अने पगले वर्णवी छे.

ए प्रमाणे तमाम सिद्धांतोनुं तारतम्य जोतां अने ते समये ज्ञानमां थयेलो गडबडाट जोतां एकांतिक धर्मना स्थापनने अर्थे अने वर्णाश्रम धर्म मर्यादाना सेतुओनुं रक्षण करवाना हेतुथी अक्षरातीत परमात्मानो अवतार थयो छे एम दृढ निश्चय थाय छे. वळी भगवानश्रीना स्वतःसिद्ध अगाध ज्ञाननी प्रतीतिथी तेओ पोताना प्रागट्यमां पण परब्रह्म परमात्मा तरीके पूजायेला छे अने भृगुलांछन, श्रीलांछन आदिक परब्रह्म भगवानना सोळे चिन्हो हता एटले आ अवतार परब्रह्म पुरुषोत्तम अक्षरातीतनो ज छे.

योग्य उम्मरे भगवानश्रीनुं लग्न चुडामां ज सद्‌भाग्यशाळी व्यास लीलाधर वेचरदासनां पुत्री लक्ष्मीजी (वजुवा) साथे थयुं हतुं.

परम पूज्य धर्मानंद स्वामीनो जन्म सौराष्ट्रमां सागरकिनारे परब्रह्म परमात्मा श्रीकृष्णचंद्रना पुनित चरणकमळथी पवित्र थयेली द्वारकापुरीमां लुहाणा ज्ञातिमां श्रीमंतने घेर थयो हतो. परम पूज्य अक्षरमुक्तानंद स्वामीनो जन्म गढडा पासे आवेला विकरीया गामनी पवित्र भूमिमां ब्राह्मण ज्ञातिमां थयो हतो.

परब्रह्म परमात्मा भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजना सौराष्ट अने गुजरातमां चुडा, अमदावाद, सोजीत्रा, खंभात, धोळका, पींपळी अने गोलाणामां मंदिर छे अने छूटा छवाया घणा हरिभक्तो छे—

त्रिभुवनदास त्रिकमलाल पटेल. धर्मभूषण
प्रमुख श्रीहरिकृष्ण महाराजनुं मंदिर अमदावाद.

ग्रंथावलोकन

वेद, शास्त्र, पुराण, गीता, भागवत, रामायण, महाभारत आदिकमां लखेला मोक्ष प्राप्तिना मर्मोने समजावी निर्बीज-मुक्ति अने सबीज मुक्ति, निर्बीज सांख्य-योग अने सबीज,सांख्य-योग, निर्विशेष वेदान्त अने सविशेष वेदान्त, अंतरदृष्टि अने बहारदृष्टि, योगमार्ग सांख्यमार्ग, अने भक्तिमार्ग, अष्टांगयोग, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, शुद्धाद्वैत अने द्वैताद्वैत, स्वयंआधार ब्रह्म अने सर्वाधार ब्रह्म, जीव अने जगत, आत्मा अने परमात्मा, ब्रह्म अने परब्रह्म, विषय अने वासना, माया अने मोक्ष आदिक आध्यात्मिक जगतमां गुह्य गणाता प्रश्नोनी गामडाना अभण अने सादा मानवी पण समजी शके तेवी शुद्ध काठीयावाडी अने गुजराती भाषामां घरगथ्थु दाखला दलीलो साथे हृदयस्पर्शी चोखवट करी आपी आ कळिकाळमां चालता सांप्रदायीक भेदभावने दूर करी ते ते संप्रदायना मूळ हेतुने बतावी स्वधर्म अने परधर्मनी समजण आपी मानवीने पोतपोताना वर्णाश्रमना धर्ममां ज मोक्ष प्राप्ति करावतो अने आत्यंतिक ज्ञानथी भरपूर जे आ श्रीमुखसिद्धांत ग्रंथ तेनुं प्रुफ रीडींग वगेरे कार्य करवानो जे अवसर प्राप्त थयो ते मारां अहोभाग्य गणाय.

जो के "श्रीमुखसिद्धांत भा-१" मां अपायेलुं तेटलुं ध्यान आ भा-२ मां आपी शक्यो नथी छतां एटलुं तो दृढ करी शक्यो छुं के आध्यात्मिक जगतमां सौथी मोखरे गणाता आ भारत वर्षमां श्रीकृष्ण परमात्माना अवतारी अवतार पछी अनेक धर्माचार्यो, संतमहात्माओ

वृत्ति विरामी

संसारना सुख देखी वृत्ति विरामी,
जेमां जेमां चित्त नाखुं, तेमां लागे खामी........माटे वृत्ति विरामी.
त्रियामां जो सुख होय तो करने तपास;
त्रिया थकी जन पाम्या कांईक अति त्रास........माटे वृत्ति विरामी.
पुत्रमां जो सुख होय तो करने तुं पेर;
पुत्र पिता वच्चे दीठा, कांईक अति वेर........माटे वृत्ति विरामी.
मोटी मोटी मेडीओ करीने मलकाय,
सांचनारो न मळे तो, अतिशय अकळाय........माटे वृत्ति विरामी.
भाई भोजाईने द्रव्य आपे तो प्रीति बांधे दृढ,
द्रव्य न अपाय तो, बांधी वेरे तड........माटे वृत्ति विरामी.
मीठुं मीठुं अन्न होय तो भावे जमाय,
गचरको आवे ने, रोग घणा थाय........माटे वृत्ति विरामी.
झाझुं झाझुं द्रव्य होय तो व्याजे मुकाय,
आशामी तूटे त्यारे, मनमां मुंझाय........माटे वृत्ति विरामी.
ए आ सात भाणेजा सारी रीते सचवाय,
एक वार न अपाय तो, अवगुण झाझा गाय......माटे वृत्ति विरामी.
घोडा गाडीए सुख होय तो करने विचार,
घोडा गाडी थकी पडया कांईक नर ने नार........माटे वृत्ति विरामी.
जगन्नाथ हरिकृष्ण विना नथी क्यांय सुख,
जेमां जेमां दृष्टि नाखुं तेमां लागे दुःख........माटे वृत्ति विरामी.

श्रीमुखसिद्धांत भाग २ना प्रकाशन वखते रूपिया एकसो अने वधु रकम भेट आपनार सद्‌ग्रहस्थोनी

नामावली

कुल रूपिया ४३२६

जबलपुर

१००१) शेठ मोहनलाल हरगोवनदास पटेल
२०१) मणीलाल व्रजलाल पटेल

मुंबई

२५१) शेठ मफतलाल चेरीटी ट्रस्ट
२०१) शेठ मंगळदास हरगोवनदास पटेल (जामनगरवाळा)
२०१) चुनीलाल धनजीभाई पटेल
१५१) मेसर्स महादेवीआ ब्रधर्स (अमदावादवाळा)
१०१) चीमनलाल धनजीभाई पटेल

चुडा

१०१) शेठ मनसुखलाल सुखलाल (रूना वेपारी मुंबई)

खंभात

१२५) मणीलाल एन्ड ब्रधर्स दवावाळा
१२५) गं. स्व. चंचळबाई (माणेकलाल बापुलाल फेन्सीवाळा)
१०१) माणेकलाल लल्लुभाईना स्मरणार्थे (ह. जीवणलाल माणेकलाल)
१०१) जीवणलाल बापुलाल चंदावाळा
१०१) अंबालाल नारणदासना स्मरणार्थे (ह. अमृतलाल अंबालाल)

सोजीत्रा

१०१) जगजीवनदास हरखजीभाई पंचालना स्मरणार्थे ह. वीठलदास अने भोगीलाल

अमदावाद

१५१) अमृतलाल नाथालाल दलाल ह. शांन्तीलाल अमृतलाल
१०१) शेठ नानालाल काळीदासना स्मरणार्थे ह. गं. स्व. मणीबेन
१०१) शेठ चंदुलाल माधवलाल पटेल चेरीटी ट्रस्ट
१०१) चमनलाल अंबाराम पटेल
१०१) छनालाल अंबालाल पटेल
१०१) चुनीलाल जेठालाल दलवाडी
१०१) भोगीलाल डाह्याभाई सोनी
१०१) संतोकबेनना स्मरणार्थे ह. तेमना पुत्र अमृतलाल भाईचंद पटेल
१०१) गं. स्व. जयाबेन भोगीलाल साकळचंद
१०१) अ सौ. सूरजबेन [पटेलनी दीकरी भोगीलाल मोतीलाल पटेल
१०१) द्वारकादास त्रिकमलाल पटेलना स्मरणार्थे ह. रतिलाल अने चीनुभाई

भावनगर

१०१) रतिलाल माधवजी जोषी वकील

बामणवा

१०१) मगनलाल माणेकचंद नरोडीआना स्मरणार्थे ह. तेमनी दीकरीओ कमळाबेन अने मणीबेन

गाडा

१०१) जेठाभाई मनोरदास पटेलना स्मरणार्थे ह. तेमना पुत्रो मोतीभाई अने कुबेरभाई

परब्रह्म भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराजना ज्ञान प्रचारक भक्त मंडळनी कार्यवाहक कमिटी.

मंत्रीयो

रा. रा. त्रिभुवनदास त्रिकमलाल अमदावाद
(धर्मभूषण)
,, मफतलाल चुनीलाल खंभात
,, त्रिभुवनदास खीमचंद धंधुका
(पींपळीवाला)
,, वीठलदास जगजीवनदास, सोजीत्रा

सभ्यो

रा. रा. लक्ष्मणदास वीठलदास अमदावाद
(भावनगरवाळा)
,, शान्तीलाल अमृतलाल अमदावाद
,, नटवरलाल चुनीलाल ,,
,, चुनीलाल जेठालाल ,,
,, परसोत्तमदास भीखाभाई ,,
,, मणीलाल गांडालाल खंभात
रा. रा. गीरधरभाई छगनलाल खंभात
,, शान्तीलाल आशाराम ,,
,, जटाशंकर हरगोविंद वडोदरा
,, गोविंदभाई भलाभाई सोजीत्रा
,, वाघुभाई आशाभाई मुंबई
(सोजीत्रावाळा)
,, परसोत्तमदास तळशीभाई सोजीत्रा
,, आशाभाई तळसीभाई तारापुर
,, चतुरभाई उमेदभाई गाडा
,, मनहरलाल मोहनलाल चुडा
,, गीरधरलाल चुनीलाल ,,
,, बेचरभाई रामजीभाई धोळका
,, जटाशंकर शिवशंकर विरमगाम
,, नटवरसंग वनाभाई पींपळी
,, तखतसिंह गतसंगजी पींपळी
,, मणीलाल त्रिभुवनदास गोळाणा

ज्ञान प्रचारक भक्त मंडळनी ओफीस

श्रीहरिकृष्ण महाराजनुं मंदिर,
रायपुर मकेरीवाड,
अमदावाद.

—: नवप्रभात प्रिन्टिंग प्रेस : अमदावाद :—

अनुक्रमणिका



शुद्धिपत्रक

पानुं	लीटी	अशुद्ध	शुद्ध
६१	६	तो भोगने	तो
६४	९	मेळवानी	मेळववानी
१००	१५	देव	देवे
१०६	१८	ब्रह्म थईने	ब्रह्मरूप थईने
१२८	१	भगवानने	भगवाने
१५२	१३	नाखो	नोखो
१८२	६	मतत्वबुद्धि	ममत्वबुद्धि
२०९	१४	गुणो	घणो
२७२	११	आश्रम	आश्रय
३००	७	असिद्धि-दृष्टि	असिद्ध-दृष्टि
३१४	१४	अद्वैब्रह्मतना	अद्वैतब्रह्मना
३५०	११	सत्पुरुपने	असत्पुरुपने
४०४	१९	लक्षण	क्षण
४१३	१८	पकाशे	मकाशे युक्त
४५१	१४	बने ज	बने ज नहीं
५९७	१२	उपकार पर	पर उपकार
६२४	१३	छे	छ

पंचीकरण

१ चोवीस तत्त्वना नाम :–

पंचभूत :–पृथ्वी, जळ, तेज, वायु, अने आकाश.

पंचविषय :–शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध.

पंच ज्ञानेन्द्रियो :–कान, चामडी, आंख, जीभ अने नाक.

पंच कर्मेन्द्रियो :–वाणी, हाथ, पग, शीश्नु अने गुदा.

चार अंतःकरण :–बुद्धि, मन, चित्त, अने अहंकार

२ चौद देवता :–दिक्‌पाल, वायु, सूर्य, वरुण, अश्वनीकुमार, अग्नि, ईन्द्र, विष्णु, प्रजापति,
यम, ब्रह्मा, चंद्र, वासुदेव, अने रुद्र.

३ चौद लोकनु ब्रह्मांड :–सात नीचे :–अतळ, वितळ, सुतळ, तळातळ, महातळ, रसातळ,
सात उपर :–भूर, भवर, जन, स्वर्ग, महर, तप, अने ब्रह्मलोक. [अने पाताळ.

४ नवधा भक्ति :–श्रवण, कीर्तन, स्मरण, अर्चन, वंदन, पादसेवन, दासत्व, सखा अने
५ षटकर्म :–स्नान, संध्या, देव पूजा, तर्पण, होम, स्वाध्याय. [आत्मनिवेदन.

६ छ प्रकारना ब्रह्मना अवतार :–परब्रह्म, ब्रह्म, सरळब्रह्म, अव्याकृतब्रह्म, सूत्रात्माब्रह्म अने
७ षटदर्शन :–बे तर्क दर्शन :–न्यायशास्त्र अने वैशेषिकशास्त्र. [विराटब्रह्म
बे मिमांसा :–पूर्व मीमांसा–धर्मशास्त्र अने उत्तर मीमांसा–वेदान्त शास्त्र.
बे योगदर्शन :–सांख्यशास्त्र अने योगशास्त्र.

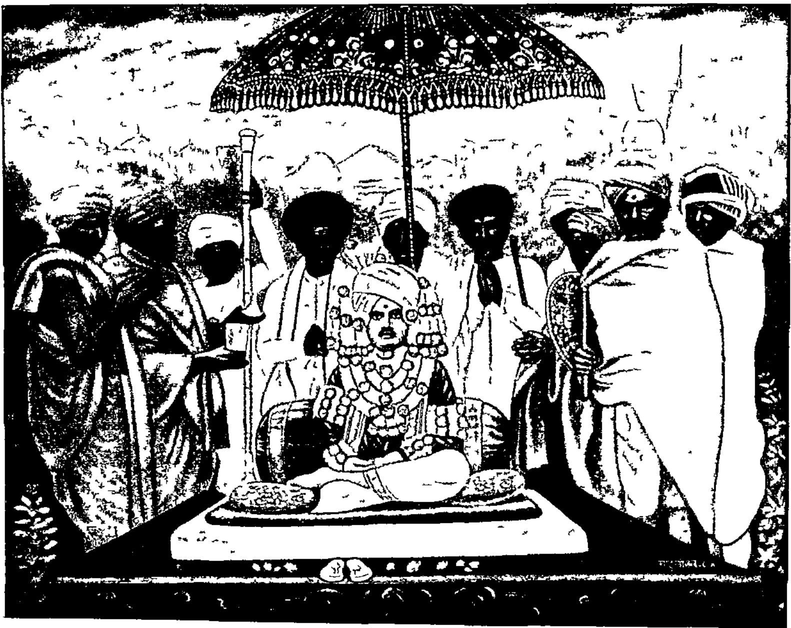
८ छ दोष :–काम, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान अने क्रोध.

९ पंचदेव :–गणपति, शक्ति, सविता, विष्णु अने शीव

१० पंचकोषात्मक माया :–अन्नमयकोष, प्राणमयकोष, मनोमयकोष, विज्ञानमयकोष अने
११ चार वर्ण :–ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अने शुद्र [आनंदमयकोष
१२ चार आश्रम :– ब्रह्मचारी, गृहस्थ, वानप्रस्थ अने संन्यासी
१३ चार वेद:–ऋग्वेद, यर्जुवेद, सामवेद अने अथर्ववेद
१४ चार शास्त्र :–सांख्य, योग, वेदान्त अने पांचरात्र
१५ चार देह :–स्थूल, सूक्ष्म, कारण अने महाकारण
१६ चार अवस्था :–जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति अने तुर्या
१७ चार गुण :–तामस्, राजस्, सत्त्व अने शुद्ध सत्त्व
१८ तपना चार प्रकार :–धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति
१९ चार प्रकारना भक्तः–पामर, विषयी, मुमुक्षु अने मुक्त
२० चार प्रकारना प्रलय :–नित्य, निमित्त, प्राकृत अने आत्यंतिक
२१ चार प्रकारना फळ :–धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष



જન્મ સ્થળ: ચુડા (કંકણપુર) ઝાલાવાડ, સૌરાષ્ટ્ર સંવત ૧૮૯૦



श्रीमुखसिद्धांत

भाग बीजो

श्रीमुखसिद्धांत १५५ विषयः— प्रगट भगवाननो निश्चय

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२१ ना चैत्र सुदि १० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री गोलाणा मध्ये भक्त कुवेर नथुने घेर उगमणें बार ओरडानी ओसरीमां गादीतकिया नखावीने हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तके कसुंबल सोनेरी पाघ बांधी हती. सर्वे अंगमां पुष्पना आभूषण शोभी रह्यां हतां अने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे " सर्वे साधन करतां प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय करवो ए अतिशय कठण साधन छे. अने ज्यारे प्रगट भगवानना स्वरूपनो अडग निश्चय थयो त्यारे तेनां सर्वे साधन पूरां थई रह्यां छे अने तेने मोक्षना मार्गमां कांई अंतराय रहेतो नथी. पण एवो निश्चय थवो ए बहु कठण काम छे. अने जप, तप, चांद्रायणादिक व्रत करवां तथा तीर्थ, यज्ञ, दान ए सर्वे करवां ते कांई कठण नथी, पण ए सर्वे करतां प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय करवो एक कठण पडे छे केमके ए साधन जगतमां केटलाक करे छे पण प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय करवो तेने कठण पडे छे.

ते पूर्वे ऋषि यज्ञ करता हता अने चार वेदना भणेला हता अने महा समर्थ हता अने त्रण काळना जाणनारा हता तो पण तेने प्रगट श्रीकृष्ण भगवानना स्वरूपनो निश्चय करवो घणो कठण पड्यो. अने

रामावतारमां रावण हतो तेणे केटलाक तो माथां कापीने शिवने चडाव्यां हतां अने शरीरमांथी रगो काढीने रावणे हथ्थो करीने शिवजी आगळ गान कर्युं हतुं, तो पण तेने प्रगट भगवान जे राम तेना स्वरूपनो निश्चय थयो नहीं. अने पोताना प्राण गया तो पण निश्चय थयो नहीं. अने राजा कर्ण हतो ते नित्य सवाभार सोनानुं दान आपतो हतो अने सूर्यनो पुत्र हतो, तो पण तेने प्रगट श्रीकृष्णना स्वरूपनो निश्चय थयो नहीं. अने राजा जरासंघ हतो ते एवो धर्मवाळो हतो अने सत्यवादी हतो जे सवापहोर दिवस चड्या सुधी तो परोक्ष भगवाननी सेवामां रहेतो अने जेटलामां पोतानुं राज्य हतुं ते सर्वमां वार वार गाउ उपर सदाव्रत बंधाव्यां हता अने पोताने आंगणे आवीने ब्राह्मण के साधु ते जे मोढेथी मागे ते आपतो; एवो हतो तो पण तेने प्रगट श्रीकृष्णना स्वरूपनो निश्चय थयो नहीं.

त्यारे कोइ एम शंका करे जे ए तो दैत्य हता ते एने क्यांथी निश्चय थाय? तो प्रगट भगवानने न ओळख्या त्यारे केडेथी शास्त्रमां लख्या त्यारे दैत्य कहेवाया छे. पण ते दिवस कोई जाणतुं नहीं जे आ दैत्य छे. माटे भगवानने जे न ओळखे ते पामर जीव कहेवाय. अने जे प्रगटनो द्रोह करे अने ते जरासंघनी पेठे परोक्ष भगवाननी सूझे एटली भक्ति करतो होय, तप करतो हतो, सदाव्रत आपतो होय तो पण तेने शास्त्रमां दैत्य लखाय छे. अने मोटा मोटा जे पंडित, पुराणी, तपस्वी, त्यागी, संन्यासी आदिक सर्वने प्रगट भगवाननो निश्चय थवो घणो कठण छे, ए तो जेने अनंत जन्मना शुभ संस्कार होय अने जेना उपर भगवाननी कृपा थाय छे तेने ज प्रगटनो निश्चय थाय छे पण बीजाने प्रगट भगवाननो निश्चय थतो नथी.

—अने परोक्ष भगवान थाय छे त्यारे तो सर्वने निश्चय थाय छे

अने तेमां कोईने संशय थाय नहीं. ते चोरने, शाहुकारने, धर्मीने, पापीने सर्वेने परोक्ष भगवाननो निश्चय थाय छे तो पण तेने करीने कोईनुं कल्याण थतुं नथी. अने ज्यारे परोक्ष भगवान थाय छे त्यारे वांसेथी ते ज्यां ज्यां विचर्या होय ते ठेकाणे जईने हजारो रूपियानो खर्च करे छे अने त्यां जईने तेनी धूळ मांथे चडावे छे तो पण तेने करीने कोईनी वासना टळती नथी अने वासना टळ्या विना कल्याण थाय नहीं.

—अने ज्यारे प्रगट भगवान होय त्यारे तेने अर्थे करवुं ते जीवने कठण पडे छे, पण जे प्रगट भगवानने अर्थे करे छे तेना ज साक्षात्कार कल्याण थाय छे अने तेना शास्त्रमां नाम लखाय छे. ते सुदामाए प्रगट श्रीकृष्णने मुठ्ठी तांदुल जमाड्या तो तेनो साक्षात्कार मोक्ष थयो अने तेनुं नाम शास्त्रमां लखायुं. अने वीदुरे प्रगटने भाजी जमाडी तो ते पण शास्त्रमां लखाई छे. अने सवरी भीलडीना बोर ते पण शास्त्रमां लखार्या छे. अने परोक्षने अर्थे तो घणाक खर्च करे छे पण तेना कोई नाम जाणता नथी. माटे प्रगट थकी ज जीवनो मोक्ष थाय छे ए सिद्धांत वार्ता छे."

प्रश्नः—पछी नथु परमारे प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! प्रगट तमारा स्वरूपनो निश्चय थवानो शो उपाय छे?" पछी महाराज बोल्या जे "प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय बे प्रकारना मनुष्यने थाय छे. एक तो ज्ञाने करीने जेने सर्वे शास्त्रमां दृष्टि पूगती होय तेने थाय छे. अने बीजो जे विश्वासी होय तेने निश्चय थाय छे. अने जेने विश्वास नथी अने ज्ञान पण नथी अने कोई कहे जे 'भगवान छे' त्यारे ते भेगो पोते पण कहे जे 'भगवान छे.' अने कोई कहे जे 'भगवान नथी' तो ते भेगो पोते पण एम कहे जे 'भगवान नथी.' एवा जे अध्धरीया होय तेने कोई काळे प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय नहीं अने क्लेशने पामे छे. त्यां श्लोक छे—

यस्य मुठे तमो लोके यस्य बुद्धि परां गति।

एमां एम कह्युं छे जे 'विश्वासी अने ज्ञानी एचे सुखिया छे अने ते विनाना अधधरीया ते क्लेशने पामे छे. अने जे विश्वासी होय तेने निश्चय थाय छे.'

ते विश्वास पण कोनो करवो? तो जेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय होय अने पंचविषयना त्यागी एवा जे निर्वासनिक साधु तेनो विश्वास करवो पण जे पंचविषयनी आसक्तिवाळा होय अने जेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय न होय अने उपरथी धर्मवाळा जणाता होय तो पण तेनो विश्वास न करवो अने निर्वासनिक अने प्रत्यक्षना निश्चयवाळानो विश्वास करवो. एवी रीतना जे विश्वासी होय तेने ज प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे.

–अने जे ज्ञानी होय ते तो भगवानना दिव्य चरित्रने जाणे अने मनुष्यचरित्र शास्त्रमां लख्यां छे ते सर्वने जाणे. ते भगवान गमे तेवां चरित्र करे अने आसुरी जीव गमे तेवा निंदाना वचन कहे तो पण तेने प्रगट भगवानना स्वरूपना निश्चयमां संशय थाय नहीं. अने जे विश्वासी होय तेने एम विश्वास होय जे 'आवा पंचविषयना त्यागी अने महा वैरागवान अने जेने कोई जातनो स्वार्थ नहीं एवा जे साधु ते कोई जातना पडपंचने तो माने ज नहीं. तेणे जे भगवानपणांनो निश्चय कर्यो हशे ते सत्य ज हशे.' एम जाणीने तेनो दृढ विश्वास राखीने प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय करे छे तो तेने निश्चय थाय छे. अने तेनो निश्चय कोईनो डगाव्यो डगतो नथी. अने एवा जे ज्ञानी अने विश्वासी ते परमपदने पामे छे अने महासुखिया थाय छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत १५५ समाप्त ॥

श्रीसुखसिद्धांत १५६ विषयः—अविद्यामायाने टाळवानो उपाय

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२१ना चैत्र सुदि ११ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री गोलाणा मध्ये भक्त करशन नथुने घेर उगमणें बार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषण धारण कर्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "सांभळो एक वार्ता करीए छीए जे आ जीवनो मोक्ष थवो ते अतिशय कठण छे, केम के पंचविषयनी वासनारूपी अविद्यामाया अनादिनी जीवने वळगी छे ते टाळवी वज्रसार जेवी छे. अने ते वासनारूपी अविद्यामायाने टाळे त्यारे जीवनो मोक्ष थाय पण ते विना कोई काळे मोक्ष थाय नहीं."

प्रश्नः–पछी अखंडानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! ते अविद्यामायाने टाळवानो शो उपाय छे?" पछी महाराज बोल्या जे "ते अविद्यामायाने टाळवानो तो एक उपाय छे. ते अतिशय सुगम छे, पण ज्यारे मोक्षदाता एवा जे सत्पुरुष ते कृपा करीने प्रगट थाय छे त्यारे जीवने अविद्यामाया थकी मुकावे छे. ते केवी रीते मुकावे छे? तो दैवी अने मुमुक्षु एवा जे जीव जेने वासना थकी मुकावानी इच्छा होय तेने पोतानो आशरो करावीने तेने नियमरूपी शस्त्र कहेतां हथियार बंधावे छे तेने करीने वासनारूपी अविद्यामाया वज्रसार जेवी छे पण ते कपाई जाय छे. अने नियमरूपी शस्त्र विना तो कोई काळे वासनारूपी अविद्यामाया टळे नहीं. ते मर (भले) जगतमां सूझे एवा मोटा कहेवाता होय, त्यागी कहेवाता होय, तपस्वी होय, संन्यासी होय, परमहंस

कहेवाता होय पण जो सत्पुरुषना आपेला नियमने न राखे तो ते सर्वे भ्रष्ट थई जाय छे.

ते नारदमुनि महामोटा हता पण जो सत्पुरुषना नियम अने सत्शास्त्रनी मरजादा जे 'साधुने स्त्री सामुं न जोवुं' ते मरजादाने तोडीने तेणे राजानी दीकरीनो हाथ जोयो तो तेनी बुद्धि भ्रष्ट थई गई अने मांकडानुं मोढुं थयुं अने महा फजेती थई, अने शिवजी महामोटा हता पण जो नियम चूकीने मोहनीस्वरूप जोयुं तो मन भ्रष्ट थई गयुं अने विर्यपात थयो अने फजेती थई. अने सीताजी महामोटा हता पण जो नियमरूपी आज्ञा लोपी तो तेने रावण हरी गयो अने महाहेरान थया. एवी रीते केटलाक सत्पुरुषना नियम चूकीने भ्रष्ट थया छे. अने जो सत्पुरुषना आपेला नियमने दृढपणें पाळे तो ते जेवो तेवो जीव होय तो पण तेनी वासनारूपी अविद्यामाया टळी जाय छे.

जेम कूवाना कांठा उपर काळमींढ पथ्थरनी शल्या नाखी होय पण तेने नरम दोरडीए करीने नित्य पाणी सिंचे छे तो ते पथ्थरने कापीने वरड पाडे छे. तेम काळमींढ पथ्थररूप अविद्यामाया महावज्रसार जेवी छे तो पण नियमरूपी दोरडी जे नित्यभगवाननुं भजन, स्मरण, माळा, पूजा, कीर्तन, कथावार्ता करवां तथा चोरी, छिनाळी, दारू, माटी, वटलवुं, वटलाववुं तेनो त्याग करवो अने जे त्यागी होय तेने अष्ट प्रकारे स्त्रीनो अने द्रव्यनो त्याग करवो तथा रसास्वाद, स्नेह अने मान तेनो पण त्याग करवो तो तेने करीने तेनी वासनारूपी अविद्यामाया तेनो नाश थई जाय छे. माटे सत्पुरुषना आपेला जे नियम तेने दृढ करीने शीर साटे राखवा.

—अने देहथी नोखो जे पोतानो आत्मा तेने अखंड, अविनाशी,

सुखरूप, सत्तारूप, प्रकाशरूप, ज्ञानरूप जाणीने आत्मारूप कहेतां ब्रह्मरूप थईने परब्रह्म एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेनो दृढ आशरो करीने तेना आपेला जे नियम ते प्रमाणे वर्ते छे तेनी अविद्यामाया महा वज्रसार जेवी छे पण समूळी नाश थई जाय छे. अने देह छते महामुक्त थई जाय छे अने देह मूकीने अक्षरधामने पामे छे. एवो प्रत्यक्ष सत्पुरुषना नियमरूपी जे आज्ञा तेनो प्रताप छे.

पण प्रत्यक्ष सत्पुरुषना आशरा विना अने तेनी आज्ञा विना वासनारूप अविद्यामाया कोई काळे टळती नथी. अने केटलाक अखतरडाह्या जगतमां होय ते एम कहे जे 'अमे अमारी मेळे नियम पाळीए छीए'. एम कहेनारा मूरख छे. अने सत्पुरुषना संग विना अने प्रगट भगवाननी भक्ति विना पोतानी मेळे कोई नियम पळे ज नहीं. अने कोई पाळतो हशे तो पण तेना नियम खोटा छे अने ते नियमे करीने अविद्यामायारूप वासना टळे नहीं. केम के सत्पुरुषना ज्ञान विना अने भगवान प्रगटनी उपासना विना पंचविषयनो अभाव थाय ज नहीं.

अने पोतानी मेळे नियम पाळे छे तेना नियम केवा छे? तो जेम बळदने गोधलो करे अने ते ब्रह्मचर्यव्रत पाळे छे तथा झाडवां जेम टाढ, तडकानुं सहन करे छे अने क्यांय आवे-जाय नहीं, तथा वळी जेम ब्राह्मण होय ते होको न पीवानो नियम राखे छे, तेम पोतानी मेळे मननी खुशी प्रमाणे पाळे छे ते तो एवा नियम छे. अने तेणे करीने रंच मात्र वासनारूप अविद्यामाया टळे नहीं. माटे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो आशरो करीने तेना आपेला जे नियम तेने दृढ करीने पाळवा ए ज एक वासनारूपी अविद्यामायाने टाळवानो मोटो उपाय छे. अने वासनारूपी अविद्यामाया टळे त्यारे ज जीव सुखियो थाय पण ते

विना कोई काळे जीव सुखियो थाय नहीं. माटे पोताना इष्टदेवे आप्या जे नियम तेने शीर साटे राखवा."

इति श्रीमुखसिद्धांत १५६ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत १५७ विषयः—जीवमां विषय के विषयमां जीव

श्रीहरिकृष्णाय नमो नमः—संवत १९२१ना चैत्र सुदि १२ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री गोलाणा मध्ये कल्याण नथुने घेर उगमणें बार ओरडानी ओसरीमां ढोलिया उपर गादीतकिया नखावीने विराजमान थयाँ हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां पुष्पना हार धारण कर्या हता. पाघमां डावी कोरे फूलनो तोरो लटकतो हतो अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणांक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी परमसिद्धानंद स्वामीए प्रश्न पूछयुं जे "हे महाराज! पंचविषय छे ते जीवमां रह्या छे के जीव विषयमां रह्यो छे? ते कहो." पछी महाराज बोल्या जे "सांभळो एनो उत्तर करीए जे जीवमां विषय रह्या छे अने विषयमां जीव रह्यो छे. अने ते विषय ते शुं छे? तो जेने वासना कहे छे अने जेने प्रकृति कहे छे. अने जे जीव छे ते पुरुष छे. ते पुरुषने अने प्रकृतिने अनादि काळनो संबंध छे. ते जीव प्रकृतिने मूकतो नथी अने प्रकृति जीवने मूकती नथी. एवी रीते परस्पर अन्योन्य भावे करीने रहेलां छे.

जेम आकाशने विषे चार भूत कारणपणें रह्यां छे अने ते आकाशमांथी वायु थाय छे अने ते वायुने विषे आकाश रहे छे. अने वायु थकी अग्नि थाय छे अने ते अग्निमां वायु अने आकाश बेय रहे छे. अने अग्नि थकी जळ थाय छे. अने जळमां अग्नि, वायु अने आकाश त्रणेय रहे छे.

अने जळ थकी पृथ्वी थाय छे अने ते पृथ्वीने विषे आकाशादिक चारेय भूत रहे छे. अने प्रलयकाळे पाछा चारेय भूत आकाशमां रहे छे. अने चारेय भूतने विषे आकाश रह्यो छे. तेम आकाशने ठेकाणे जीव छे अने चारे भूतने ठेकाणे पंचविषय छे. ते कारणपणें वासनारूपे करीने जीवमां विषय रह्या छे अने कार्यरूपे करीने विषयमां जीव रह्यो छे. एवी रीते जीवमां विषय रह्या छे अने विषयमां जीव रह्यो छे.

—अने ते जीव चैतन्य छे अने पंचविषय जड छे. अने ते जीवने विषयनी वासना छे तेने करीने बहार पंचविषयने उपजावी तेमां सुख मानीने तेने भोगवे छे पण ते विषयमां लेशमात्र सुख नथी. अने सुखरूप तो पोते आत्मा छे ते पोताना स्वरूपना भानने भूलीने जडरूप अने नाशवंत अने दुःखरूप जे विषय तेने विषे सुख माने छे. जेम श्वान सूका हाडकाने करडे अने तेने करीने पोतानुं मोढुं छोलाय तेणे करीने हाडकुं लोहीवाळुं थाय पछी ते हाडकाने चाटीने सुख माने छे. तेम पंच-विषय तो हाडकानी पेठे जड छे अने तेमां जे सुख जेवुं जणाय छे ते तो आत्मावते जणाय छे. माटे सुखरूप तो पोतानो आत्मा ज छे पण अज्ञाने करीने पोताना स्वरूपने भूलीने पंचविषयमां सुख मानीने ते सुखने पामवा सारु जन्ममृत्युने वारंवार पामे छे अने महादुःखने भोगवे छे. माटे सुखियो तो जीव क्यारे थाय? तो ज्यारे पंचविषयनी वासना टळे त्यारे सुखियो थाय. अने ते वासना क्यारे टळे? तो ज्यारे आत्माना स्वरूपनुं ज्ञान थाय अने आत्माने विषे परमात्मा साक्षात्कार देखाय त्यारे विषयनी वासना टळे छे. हवे ते आत्मारूप थईने परमात्माने केम देखे? तो ज्यारे पंचविषयनी वासना टळे त्यारे आत्मारूप थईने परमात्माने देखे. माटे वासना टळवी ते घणी ज कठण छे.

पण एवी जे वासना तेने टाळवानो एक उपाय छे. ते क्यो उपाय छे? तो पोताने प्रत्यक्ष भगवान मळे अने कां ते भगवानना एकांतिक साधु निर्वासनिक पंचविषयना दृढ त्यागी ते मळे; पछी तेनी आज्ञाए करीने पंचविषयना त्याग संबंधी नियमने दृढ करीने राखे अने इन्द्रियो अंतःकरणनी जे वृत्तियो छे तेने प्रत्यक्ष सद्गुरुने विषे जोडी दीए तो ते जीवने प्रत्यक्ष सत्पुरुषने विषे दृढ स्नेह थाय छे. पछी जे साथे जेने स्नेहे करीने संबंध थाय छे तेना गुण तेमां आवे छे. माटे जेने सत्पुरुषनो स्नेहे करीने संबंध थयो तेनी इन्द्रियो, अंतःकरण दिव्य-भावने पामी जाय छे अने तेनी वासना पण निवृत्ति पामी जाय छे अने ते जीव ब्रह्मरूप थईने परब्रह्मने साक्षात्कार देखे छे.

जेम सूर्य उगे अने तेनो नेत्रने संबंध थाय छे त्यारे अंधारुं सर्वे टळी जाय छे अने तेने सूर्य पण साक्षात्कार देखाय छे. ते सूर्यना संबंधथी अंधारुं पण टळ्युं अने सूर्य थकी सूर्य देखायो, तेम प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना एकांतिक संत ते सूर्यरूप छे ते जीवने प्रगट मळे अने तेने विषे स्नेहे करीने संबंध थाय तो ते जीवने वासनारूपी अंधारुं नाश पामी जाय अने ते जीव ब्रह्मरूप थाय अने परब्रह्म एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेना स्वरूपनो माहात्म्ये सहित उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय.

जेम घडामां वायु भर्यो होय तेमां जेम जेम जळ भरातुं जाय तेम तेम घडामांथी वायु नीकळतो जाय छे. तेम प्रत्यक्ष कल्याणकारी भगवाननो जेटलो जेटलो संबंध थतो जाय तेटला तेटला विषय टळता जाय छे. तेमां प्रथम इन्द्रियोमां संबंध थाय छे त्यारे नियमे करीने इन्द्रियोना विषय निवृत्ति पामे छे. अने ज्यारे अंतःकरणमां

भगवाननो संबंध थाय त्यारे अंतःकरणना विषय निवृत्ति पामे छे. अने ज्यारे जीवमां प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध थाय त्यारे जीवमां जे अनादिनी वासना छे ते निवृत्ति पामी जाय छे, कहेतां निर्वासनिक थईने ब्रह्मरूप थाय छे. माटे प्रत्यक्ष सत्पुरुषनो संबंध थाय त्यारे ज विषयनी निवृत्ति थाय छे. अने ब्रह्मरूप थईने परब्रह्मने देखवा ते पण प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत थकी ज देखाय छे अने जीव अक्षरधामने पामे छे."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १५७ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत १५८ विषयः–कल्याणनुं खरुं रूप

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२१ ना चैत्र सुदि १३ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीगोलाणा मध्ये भक्त करसन नथुने घेर उगमणे वार ओरडानी आगळ फळीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने फूलना हार कंठमां धारण कर्या हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "कल्याण एवो त्रण अक्षरनो शब्द जगतमां प्रवर्त्यो छे पण ते कल्याण केवुं छे एम कोईने खबर नथी. माटे कल्याण ते शुं? तो रूडानुं नाम कल्याण छे. तेमां जेने पंच-विषयनी वासना छे तेने विषयभोग मळे तो तेणे करीने ते रूडुं माने छे, पण रूडुं नथी. अने वळी केटलाक जपे, तपे, दान-पुन्ये करीने कल्याण खोळे छे अने केटलाक तीर्थ, व्रत, यज्ञयाग, पूजादिके करीने कल्याण खोळे छे पण तेणे करीने कोईने कल्याण यथार्थ जडतुं नथी. केमके कल्याणनो मार्ग तो अतिशय अटपटो छे अने घणो अगम छे,

कहेतां कोईने गम नथी. माटे कल्याण तो क्यारे थाय ? तो ज्यारे पंचविषयनी वासना जीवमां अनादिनी छे ते वासना टळी जाय अने जीव ब्रह्मरूप थईने परब्रह्मने पामे त्यारे कल्याण थाय. अने ते विना तो बीजां सर्वे कल्याणना उपकरण छे अने अंतःकरणने शुद्ध करनारा छे. अने कल्याण तो क्यारे थाय ? तो ज्यारे मायापर एवा जे सत्पुरुष ते जीवने प्रगट मळे अने ते सत्पुरुषनो विश्वास आवे त्यारे ते जीवने ज्ञान आपे त्यारे कल्याण थाय, पण ते विना कल्याण थाय नहीं.

हवे ते सत्पुरुष केवी रीते ज्ञान आपे छे ? तो अष्ट प्रकारनी जे जड प्रकृति तेनां रूप नोखां नोखां देखाडीने साक्षात्कार तेनुं ज्ञान करावे अने ए जड प्रकृतिने धरी रही एवी जे चैतन्य प्रकृति जे जीव, ईश्वररूप तेना स्वरूपनुं ज्ञान पण जेम छे तेम यथार्थ करावे. अने ए जड अने चैतन्य ए बेना आधार एवा जे परमात्मा भगवान तेना स्वरूपनुं ज्ञान साक्षात्कार करावे अने एवी रीते ज्ञान थाय त्यारे ज जीवनी वासना टळे अने आत्यंतिक मोक्षने पामे. पण ते विना एकले साधने करीने पूर्ण थई बेसे छे ते तो अतिशय अविवेकी छे अने मानी छे अने मनमुखी छे. पण एने सत्पुरुषनो सिद्धांत समजवामां आव्यो नथी. केमके तप, व्रतादिक साधने करीने अंतःकरण शुद्ध थाय छे अने ज्ञान पामवानो अधिकारी थाय छे. ते सारू सत्पुरुषे साधन बताव्यां छे. ते ज्ञानने तो न पामे अने साधने करीने जे तृप्ति पामे तो ते मिथ्या तृप्ति छे अने ते ज्ञान विना साधने करीने तृप्ति पामे छे तेने आत्यंतिक मोक्षमां विघ्नरूप छे. केमकं ज्ञान विना संतोष छे ते अतिशय कल्याणनो विरोधी छे. माटे विवेकी थवुं अने अतिशय श्रद्धा राखीने निर्मानी थईने सत्पुरुष पासेथी ज्ञान पामवुं. अने ज्ञान पामे त्यारे ज वासना टळे अने

वासना टळे त्यारे ज आत्यंतिक मोक्ष थाय. एज एक साचुं कल्याण छे."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १५८ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत १५९ विषय :–दैवी अने आसुरी जीवनां लक्षण

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२१ना चैत्र सुदि १४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री गोलाणा मध्ये परमार मोटाभाईने घेर आथमणें बार ओरडानी ओशरीमां गादीतकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां पुष्पना हार शोभी रह्या हता. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया पछी महाराज बोल्या जे "बे प्रकारनी संपत्तिना जीव छे. ते एक दैवी संपत्तिना जीव छे अने एक आसुरी संपत्तिना जीव छे. अने ते बे प्रकारना जीवोने परस्पर अनादिनो विरूद्धभाव छे. तेमां दैवी संपत्तिना जीव छे तेने आस्तिक मति होय अने ते एम समजता होय जे 'सर्वेना कारण अने कर्ता एक भगवान छे. अने प्रकृतिपुरुष तथा ब्रह्मा, विष्णु, शिव तथा सूर्य, चंद्रमा, काळ आदिक जे मोटा मोटा ते ए भगवाननी आज्ञामां थरथर कंपे छे. अने ते लेशमात्र पण भगवाननी आज्ञा लोपता नथी तो हुं अल्प जेवो ते माराथी केम भगवाननी आज्ञा लोपाय.' एम जाणीने शास्त्रमां सत्पुरुषना बांधेला जे धर्म तेने दृढपणें पाळे पण अधर्म-अनीतिने मार्गे चाले ज नहीं. एवी रीतनां जेनां लक्षण होय तेने दैवी संपत्तिना जीव जाणवा.

अने जे आसुरी संपत्तिना जीव होय तेना अंतःकरणमां तो नास्तिक

भाव होय अने जगतना कर्ता काळ, कर्म अने मायाने जाणे तथा स्वभावे करीने जगत थाय छे एम समजे. पण नास्तिक होय ते भगवानने कर्ता न माने अने तेनुं अंतःकरण भ्रष्ट होय तेणे करीने मा, व्हेन, दीकरीनो पण ते नास्तिक संग करवाने इच्छे, तथा मनुष्यने मारीने द्रव्य लेवुं, कोईनी थापण ओळवी, विश्वासघात करवो चोरी करवी इत्यादिक अधर्मे करीने द्रव्य भेळुं करवुं, तथा अभक्ष जे मद्य, मांसादिकनुं भक्षण करे तथा वेश्याओ आदिकना भूंडा भूंडा रूप जुए तथा अधर्मनी क्रिया करवी तेमां आसुरी संपत्तिना जीवने प्रीति होय, पण एवा दुष्ट आसुरी होय ते परमेश्वरनो डर राखे नहीं. अने एवा असुर होय ते वर्णाश्रमनो धर्म तो उपरथी लोकने भये करीने पाळे अने ते पण कोईक भाळे एटली घडी राखे पण एना अंतरमां तो एम समजे छे जे 'वर्णाश्रमनो धर्म तो मिथ्या छे.' अने एवा जे आसुरी महापापी अधर्मी तेने अने धर्मे युक्त एवा जे दैवी संपत्तिना जीव ए वेने कोई काळे भेगुं वने ज नहीं. जेम दिवस अने रात्रीने भेगुं वने नहीं तेम दैवी अने आसुरीने भेगुं वने ज नहीं.

माटे जे मुमुक्षु होय तेणे तो एवा आसुरीनां लक्षण जोईने तेथी छेटे रहेवुं अने एम कांई न समजवुं जे 'गृहस्थमां आसुरी होय अने त्यागीमां न होय.' ए तो काळनिमि, राहु, रावण जेवा वेशधारी त्यागीमां पण आसुरी होय तथा ब्राह्मणमां पण होय. ते भोळा लोकोने धीरववा सारु वेश लईने भक्तिनो भाव जणावीने जे तेनो संग करे तेने भ्रष्ट करीने मोक्षना मार्ग थकी पाडी नाखे छे. अने तेना आत्मानुं अतिशय अहीत करे छे. माटे आसुरीनो जे संग ते जेवुं जीवने भूंडुं करे एवुं वीजुं कोई पाप नथी. अने धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति तेना दाता

एवा जे सत्पुरुष तेना संग जेवुं कोई जीवने रूडुं करे एवुं बीजुं पुन्य नथी. केमके आसुरी संपत्तिना जीवने अधर्मे करीने कल्याणकारी सत्पुरुष ओळखाय नहीं तेने करीने तेनो जे जे संग करे तेने पण कल्याणकारीनो दोष देखाडीने विमुख करे. अने जे दैवी जीव होय तेने कल्याणकारी ओळखाय छे अने तेनो जे संग करे तेने पण ते कल्याणकारीनो गुण देखाडीने तेना स्वरूपनो निश्चय करावीने भगवान सन्मुख करे अने तेना आत्मानुं अतिशय रूडुं करे. माटे प्रगट कल्याणकारीनो आशरो करवो ते जेवुं बीजुं कोई रूडुं नथी अने ते जेवो बीजो कोई लाभ नथी. अने प्रगट कल्याणकारीनो अवगुण लेवो ते जेवुं कोई बीजुं भूंडुं नथी अने ते जेवी जीवने बीजी हाण्य नथी.

ते सारु उपर लख्या जे दैवी-आसुरीना गुण तेने ओळखीने आसुरीना संगनो त्याग करवो अने दैवी एवा जे भगवानना भक्त संत तेनो संग करवो. अने तेना संग थकी प्रगट कल्याणकारीनो आशरो करीने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्तीने पोताना आत्मानुं रूडुं करवुं अने तेमां अतिशय श्रद्धा राखीने ज्ञान पामवानो अभ्यास करवो. अने जेने श्रद्धामां कसर होय तेने बहु ज खोट रही जाय छे. अने जे श्रद्धा राखीने सत्पुरुषना वचन प्रमाणे अभ्यास करे छे तेने तत्काळ ज्ञान थाय छे अने ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामे छे. माटे मनुष्यदेहे करीने अधर्म-अनीतिनो त्याग करीने प्रगट सत्पुरुषनो आशरो करीने श्रद्धा राखीने तेना वचन थकी ज्ञान पामवुं ए सर्व शास्त्रनो सार सिद्धांत छे अने एज जीवने सर्वोपरि लाभ छे."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १५९ समाप्त ॥



श्रीमुखसिद्धांत १६० विषय :–प्रगट भगवान अने संतनां ऐश्वर्य

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२१ ना चैत्र सुदि १५ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री गोलाणा मध्ये परमार दाजीभाईने घेर उगमणें बार ओरडानी ओशरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तके गुलाबी रंगनो फेंटो बांध्यो हतो. जमणा हाथमां रूमाल धारण कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्न :–पछी करसन भक्ते प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! एक तो तमारे हाथे वर्तमान धरावीने सत्संगी थयो होय अने एक तो तमारा साधुने हाथे वर्तमान धरावीने सत्संगी थयो होय; ते ए बेनां कल्याण बरोबर थाय के कांई फेर रहे छे? ते कहो." पछी महाराज बोल्या जे "अम थकी धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित भक्ति सिद्ध करीने आत्यंतिक ज्ञानने पाम्या एवा जे अमारा एकांतिक साधु तेने हाथे वर्तमान धरावीने जो यथार्थ तेनी आज्ञामां वर्ते तो तेने अमारे हाथे वर्तमान धरावे कल्याण थाय तेवुं ज ते साधुने हाथे वर्तमान धरावे कल्याण थाय छे. अने अमारे हाथे वर्तमान धराव्या होय अथवा साधुने हाथे वर्तमान धराव्या होय पण जो आज्ञा प्रमाणे न वर्ते अने अमारा विना बीजे क्यांय वासना रहे तो तेना कल्याणमां फेर रहे छे. अने हरिभक्तने अमारा दर्शन न थयां होय अने अमारा मळेला धर्मयुक्त साधु तेने हाथे वर्तमान धरावीने निर्वासनिक थाय, तो तेनुं पण कल्याण साक्षात्कार थाय.

–अने साधुने अमारां दर्शन न थयां होय अने हरिभक्तने पण

अमारां दर्शन न थयां होय अने परोक्षपणें भक्ति करता होय अने त्यागी अने गृहस्थीना जे अमारा बांधेला धर्म ते प्रमाणे यथार्थ वर्तता होय तो तेने एक बे जन्मे अमारो प्रत्यक्ष संबंध थाय छे अने ते अम थकी ज्ञानने पामीने निर्वासनिक थईने आत्यंतिक मोक्षने पामे छे. पण प्रगट अमारा संबंध विना आत्यंतिक मोक्ष थाय नहीं. केमके आत्यंतिक ज्ञान विना आत्यंतिक मोक्ष थाय नहीं अने आत्यंतिक ज्ञान तो एक अमारी पासे छे. अने कां अम थकी ज्ञानने पाम्या एवा जे अमारा एकांतिक ब्रह्मवेत्ता निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी साधु तेनी पासे आत्यंतिक ज्ञान होय पण ते विना बीजा कोई स्त्री आदिक पंचविषयनी वासना वाळा पांसे आत्यंतिक ज्ञान होय नहीं. माटे माया पर थकी ज आत्यंतिक मोक्ष थाय छे. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

प्रश्नः—पछी वळी करसन भक्ते प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! साधु जेवी रीते वर्ते छे; ते गळ्या, चीकणादिक खट रसनो त्याग राखे छे तेवी रीते अमारे वर्तातुं नथी अने सहेजे जे रसोई थाय छे ते खवाय छे अने मनमां आसक्ति तो नथी तो पण एम जाणीए छीए जे 'अमारुं ते साधुना बरोबर कल्याण थशे के नहीं थाय,' एम संशय थाय छे, ते कहो." पछी महाराज बोल्या जे "बे आश्रम छे, तेमां जेने संसारनो त्याग करीने भेख लीधो होय तेने तो पांचे विषयनो अति दृढपणें त्याग करवो, तो तेनुं कल्याण थाय. अने ते जो पांचमांथी एके विषयनो संबंध राखे तो तेनुं कल्याण थाय नहीं.

अने जे गृहस्थाश्रममां रह्यो होय अथवा अमारी पासे धोळा लुगडे रह्यो होय तेने पण अंतरमां तो त्यागीनी पेठे ज पंचविषयनी अरुची राखवी अने उपरथी तो सहेजे अमारी आज्ञाए करीने गळ्युं, चीकणुं

खवाय अथवा आज्ञाए करीने प्रयोजन वश स्त्रीयो साथे बोलाय तो तेनो बाध नथी. पण मनमां कोई जातनो संकल्प न थाय तो तेनुं त्यागीना बरोबर कल्याण थाय. अने जो कोई विषयमां राग होय अने सारुं सारुं खावा मळे त्यारे राजी थाय अने जेवुं तेवुं मळे त्यारे कुराजी थाय अने कोईकनो अवगुण ले, अने भगवान अने भगवानना भक्त करतां देह अने देहनां सगां संबंधीमां वधारे हेत राखे तो तेनुं कल्याण थाय नहीं. अने ते सत्संगमां रह्यो होय तो पण जे दहाडे ते दहाडे जरूर विमुख थाय. माटे सारा-नरसानी भावना टाळीने देह अने देहना संबंधीमांथी प्रीतिनो त्याग करीने अमारी आज्ञा प्रमाणे वर्ते तो तेनुं त्यागीना बरोबर कल्याण थाय छे, एमां कांई संशय नथी."

इति श्रीमुखसिद्धांत १६० समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत १६१ विषय :–त्रण गुणनां लक्षण

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२१ना चैत्र वदि पडवाने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्रीगोलाणा मध्ये महेता जीभाईने घेर आथमणें बार ओरडानी ओशरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "आ जीव छे ते जे ते बहारदृष्टिए करीने त्रण गुणना वेग थकी विपरीत क्रिया करे छे अने तेने करीने महादुःखने पामे छे अने जन्ममृत्युने वारंवार भोगवे छे. अने जो अंतरदृष्टि करीने गुणने ओळखे तो तेथी सारी क्रिया थाय अने जीव सुखियो थाय. अने ते अंतरदृष्टि पण सत्पुरुषने संगे थाय छे अने गुण पण सत्पुरुष थकी ज ओळखाय छे."

प्रश्नः—पछी गाम पाटडीना भट हरगोविंदे प्रश्न पूछयुं जे “हे महाराज! ए त्रण गुण केम ओळखाय? ते कहो.” पछी महाराज बोल्या जे “ए गुण तो एनां लक्षणने जाणवे करीने ओळखाय छे. ते लक्षणने कहीए जे देहमां ज्यारे सत्त्वगुण वर्ततो होय त्यारे ज्ञान वर्ते, प्रकाशपणुं वर्ते, प्रसन्नपणुं वर्ते, सुखसंगीपणुं वर्ते, आरोग्य वर्ते, उद्रेक वर्ते, संतोष वर्ते, श्रद्धा वर्ते, क्षमा वर्ते, उदारणुं वर्ते, धृती वर्ते, तंद्रापणुं न वर्ते, आनंद वर्ते, अहिंसापणुं वर्ते, सत्त्व वर्ते, ऋण करवापणुं न वर्ते, अनार्जव न वर्ते, अकार्य करवाने विषे लज्जा वर्ते, मार्दववर्ते, कठणपणुं न वर्ते, मांहि-बहार पवित्रपणुं वर्ते, धर्मवर्ते, आर्जव वर्ते, इन्द्रियोने विषे लोलुपपणुं न वर्ते. सारा कर्म करे पण कोईने कही न देखाडे अने पदार्थ मात्रने विषे इच्छा न वर्ते अने दाने करीने अनुग्रह करवापणुं न वर्ते. अने सर्वे भूतप्राणीमात्रने विषे दया वर्ते अने परमार्थपणुं वर्ते अने संभ्रमपणुं न वर्ते. एवी रीते सत्त्वगुणनां त्रीस लक्षण जाणवा.

हवे रजो गुण देहमां ज्यारे वर्ते त्यारे नाना प्रकारना रसने विषे इच्छा वर्ते अने चंचणपणुं वर्ते. अने रूप जे विषय-निरूपण करवापणुं वर्ते, विग्रहपणुं वर्ते, करुणा करवापणुं न वर्ते, अत्यागपणुं वर्ते, वादविवाद सेववाने विषे प्रीति वर्ते, पर निंदाने विषे प्रीति वर्ते, क्षण क्षण प्रत्ये सुखने सेववापणुं वर्ते अने क्षण क्षण प्रत्ये दुःखने सेववापणुं वर्ते, तंद्रापणुं वर्ते, वेर करवापणुं वर्ते, वेरने सेववापणुं वर्ते अने अंतःकरणमां परिताप वर्ते, कोईकनुं हरीलेवापणुं वर्ते, लज्यानुं नाशवंतपणुं वर्ते, अनाचारपणुं वर्ते, मांहोमांहे भेद पाडवापणुं वर्ते, कठणपणुं वर्ते, हिंसा वर्ते, काम वर्ते, क्रोध वर्ते, लोभवर्ते, दंभवर्ते, मदवर्ते, हांसी-ठेकडी

करवापणुंवर्ते अने विषयभोग भोगवीने तृप्तिपणुं न वर्ते. एवी रीते रजोगुणनां लक्षण जाणवा.

हवे तमोगुण देहमां वर्ततो होय त्यारे तमवर्ते, तामसवर्ते, अंध-तामसवर्ते, मोहवर्ते, महामोहवर्ते, प्रमादवर्ते, करवा न करवानुं अविवेक-पणुं वर्ते, व्यथावर्ते, भयवर्ते, दीनपणुंवर्ते, असमृद्धिवर्ते, शोकवर्ते, निद्रावर्ते, खेदवर्ते, आळसवर्ते, दिवसे सूवाने विषे रुचिवर्ते, गंधवास विहारने विषे प्रीतिवर्ते, पुष्पना सयनने विषे रुचिवर्ते, अने अज्ञान थकी नृत्यने जोवुं, वाजां सांभळवा, गांणुं सांभळवुं ए त्रणने विषे श्रद्धावर्ते, धर्मद्वेषी विशेषण कहेतां पोताना भूंडा स्वभाव होय तेने करीने धर्मवाळा पुरुषनुं आचरण न गमे. एवी रीते तमोगुणनां वीस लक्षण जाणवा. अने एम गुणनां रूपने जाणीने जे जे गुण वर्ततो होय ते ते थकी पोताना आत्माने जुदो द्रष्टा मानवो अने ते गुणना वेगमां पोताने भळवुं नहीं."

प्रश्नः—पछी वीरजी भक्ते प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज ! त्रण गुण थकी जीव केम मुकाय ?" पछी महाराज बोल्या जे "ए गुण थकी मुकाया होय एवा जे पंचविषयना त्यागी मोटा संत तेनो मन, कर्म, वचने समागम करवो अने ते थकी आत्मविचार पामीने देह थकी असंगीपणें वर्ते अने आत्मरूप थईने परमात्मानुं ध्यान करे अने देहे करीने पंचविषयनो त्याग करे त्यारे त्रण गुण थकी मुकाईने ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामे."

इति श्रीमुखसिद्धांत १६१ समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत १६२ विषयः–सत्य अने असत्य बंधन

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२१ना चैत्र वदि २ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री गोलाणा मध्ये भक्त काळुभाईने घेर आथमणें वार ओरडानी ओशरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कया हतां अने मस्तक उपर गुलाबी रंगनो फेंटो बांध्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "जीवने बे प्रकारनुं बंधन छे, तेमां एक सत्य बंधन छे अने एक असत्य बंधन छे; ते सत्य बंधन थकी जीवनुं रूडुं थाय छे अने असत्य बंधन थकी जीवनुं भूंडुं थाय छे. तेमां सत्य-बंधन ते कयुं? तो प्रत्यक्ष भगवान तथा ते भगवानना एकांतिक पंच-विषयना त्यागी साधु तेने विषे स्नेहे करीने जे जीव बंधाय छे ते सत्य बंधन छे. अने ते थकी जीव भगवानना धामने पामे छे. अने काम, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान ते जेने विषे होय तेने विषे पंचविषयनी वासनाए करीने जे जीव बंधाय छे ते असत्य बंधन छे अने ते थकी जीव जे ते जन्ममृत्यु, गर्भवास, चोराशी अने यमपुरी आदिकनां महादुःखने पामे छे.

हवे ते असत्य बंधनने विषे जीव कई रीते बंधाणो छे तेने कहीए जे जीवने कामरूपी वासना छे तेणे करीने पुरुष स्त्रीमां बंधाणो छे अने स्त्री पुरुषमां बंधाणी छे. केमके ते थकी तेने कामरूपी विषय मळे छे. अने ते स्त्री महा नकारी अने नरकना कोथळारूप छे अने कोटी कल्प थया जीवे चोराशीमां कूतरा, गधेडा, बोकडा, पाडा आदिक नकारा देह धरीने तथा राजा, देवता आदिक अनंत जन्म धरीने अनंत

अनंत स्त्रीयो रूपवान, जोवनवान जीव मात्रे भोगवी छे. अने जीवे स्त्रीयोना देह धरीने चोराशीमां कूतरा, गधेडादिक तथा राजा, देवतादिक अनंत पुरुष भोगव्या छे; तो पण हजी सुधी स्त्रीने के पुरुषने काम थकी तृप्ति थई नथी. अने कोटी युग सुधी पण काम भोगवीने तृप्ति थाय एम नथी.

जेम अग्निमां घी जेम जेम वधारे वधारे होमे तेम तेम वधारे वधारे भडका थाय पण अग्नि ओलवाय नहीं. तेम काम जे स्त्रीभोग तेने भोगवीने कोई जीव तृप्ति थयो नथी अने थशे पण नहीं. अने कामरूपी विषये करीने पुरुष जे ते स्त्रीनो दास थयो छे अने वगर पैसे अने वगर रासे अने वगर परोणे अने वगर हाके बळद्नी पेठे रात-दिवस स्त्री सारु कमाया करे छे अने स्त्री छे ते पण कामरूपी वासनाए करीने पुरुषनी गोली थईने वगर पैसे अने वगर कहे रातदिवस गोलीपु कर्या करे छे. अने एवी रीते स्त्रीपुरुष कामे करीने बंधाणा थका जन्ममृत्यु अने चोराशीनां महाकष्टने भोगवे छे.

अने बीजुं जीवने लोभनुं बंधन छे. ते लोभनी वासनाए करीने द्रव्यादिक पदार्थना आपनारा जे पुरुष तेने विषे बंधाईने तेनुं गोलीपु करे छे अने तेना दास थईने वर्ते छे अने ते थकी जन्ममृत्युने पामे छे. अने त्रीजुं जीवने स्वादनुं बंधन छे. ते जे कोई सारुं सारुं खावा आपे तो जीव तेने विषे बंधाय छे अने स्वादरूपी विषये करीने तेने आधिन थईने रहे छे अने ते थकी जन्ममृत्युने पामे छे. अने चोथुं जीवने स्नेहनुं बंधन छे. ते देह अने देहना संबंधीने विषे स्नेहे करीने बंधाणो थको रात-दिवस असत्य एवो जे देह अने असत्य एवा जे देहना संबंधी तेनो दास थईने तेनी सेवा कर्या करे छे अने ते थकी जन्म-

मृत्युने पामे छे. अने पांचमुं माननुं जीवने बंधन छे. ते असत्य एवो जे देह अने असत्य एवा जे वर्ण अने आश्रम तेने माने करीने तेने जे कोई वखाणे अने मान आपे तेमां फुलईने तेने वश थईने तेमां बंधाई रहे छे अने ते थकी जीव जे ते जन्ममृत्युने पामे छे.

—अने ते बंधन थकी जीव पोतानी मेळे कोई काळे छूटवाने समर्थ नथी. केमके अनादिनो ज जीव जे ते पोतानुं ब्रह्मस्वरूप भूलीने नाशवंत एवा जे मायिक पंचविषय तेमां असत्य वासनाए करीने बंधाई रह्यो छे ते असत्यने संबंधे करीने जन्म-मरणनां दुःखने पाम्या करे छे अने असत्य बंधने करीने सत्पुरुष तेने ओळख्यामां नथी आवता. केमके ज्यां सुधी जीवने मायानुं बंधन होय त्यां सुधी तेने सत्पुरुष ओळखाय नहीं. जेम जेनी आंखमां कमळो होय ते सर्वेने पीळा देखे, तेम जे सकामी होय ते सत्पुरुषने संगे रह्यो होय तो पण ते सकामरूपी कमळे करीने सत्पुरुषने पण पोताना जेवा जाणे, पण ते सत्पुरुषनो महिमा जाणी शके नहीं.

—अने ज्यारे जीव निष्कामभावे प्रथमथी ज आत्माना कल्याण सारु सत्पुरुषनो संग करे अने नवधा भक्तिए करीने निष्कामभावे सत्पुरुषने विषे जीव जोडाई जाय अने ते सत्पुरुषने विषे दृढ हेते करीने बंधाय त्यारे जीव असत्य बंधन थकी मूकाईने ब्रह्मरूप थाय. अने ज्यां सुधी सकामभाव राखीने सत्पुरुषनो संग करे त्यां सुधी तेने कोई काळे मायानुं बंधन टळतुं नथी. अने सकामभावे करीने मुळगुं जीवने दिवसे दिवसे मायानुं आवरण वधतुं थाय छे. अने ते सकाम-भाववाळो पुरुष अंते जतां विमुख थाय छे अने जीवनुं अतिशय भूंडुं करे छे. माटे जेने पोताना आत्माने मायाना बंधन थकी मुकाववो

होय अने महा सुखिया थवुं होय तेने तो निष्कामभावे कल्याणकारी सत्पुरुषनो संग करवो, तो तेने सत्पुरुषनो महिमा यथार्थ जणाय छे.

अने जीव अनादि काळ थया सकामभावे करीने पंचविषय भोगवे छे तो पण हजी तृप्त थयो नथी. अने अतिशय दुर्लभ एवा जे कल्याणकारी सत्पुरुष तेने संगे रहीने जे सकामपणुं राखे छे तेने तो महापाप जाणवुं, केमके जे ठेकाणे वासना टळवी जोईए ते ज ठेकाणे वासना वांधी माटे एने एज मोटुं पाप छे. ते सारु जेने पोताना आत्मानुं कल्याण इच्छवुं होय तेने पोतानी श्रद्धा प्रमाणे निष्कामभावे भगवान अने भगवानना संतनी सेवा करवी, पण भगवाननी सेवाने विषे सकामभाव राखवो नहीं. अने सकामभावे करीने विषयनी क्रिया थकी जीव जे ते अनादिनो असत्यमां बंधाणो छे ते हवे प्रत्यक्ष कल्याणकारीने विषे निष्कामभावे इन्द्रियो अंतःकरणे करीने नवधा भक्ति वडे जीव दृढ बंधाय तो असत्य मायाना बंधन थकी जीव मुकाईने ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामे छे.

—अने पूर्वे पण जेणे जेणे निष्कामभावे प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति करी छे तेज मायाना बंधन थकी मुकाया छे अने ते मोटी पदवीने पाम्या छे. ते प्रह्लादे निष्कामभावे भगवाननी भक्ति करी त्यारे तेनी उपर भगवान प्रसन्न थया अने कह्युं जे 'हे प्रह्लाद! तुं वर माग, जे मागे ते आपुं.' पछी प्रह्लाद वोल्यो जे 'हे महाराज! तमारा भक्त थईने तमारी सेवा विना जे कांई तमारी पासे बीजुं मागे छे के मनमां इच्छा राखे छे ते तो तमारो भक्तजन नथी अने ए तो मायानो भक्त छे. अने हुं तो तमारो निष्काम भक्त छुं, माटे तमारी सेवा विना बीजुं कांई इच्छतो नथी."

तेम जेने पोताना आत्मानुं कल्याण इच्छवुं होय तेने तो निष्काम-भावे भगवान अने भगवानना संतनी सेवा करवी." अने जे निष्काम-भावे भगवान अने संतनी सेवा भक्ति करशे तेने कल्याणना मार्गमां कोई विघ्न आवशे नहीं अने जे सकामभाव राखीने भगवान अने संतनी सेवा करशे तेने जरूर कल्याणना मार्गमां विघ्न आवशे, ए सिद्धांत-वार्ता छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत १६२ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत १६३ विषय :–ज्ञानी अने अज्ञानी

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२१ ना चैत्र वदि ३ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री गोलाणा मध्ये भक्त परमार दाजीभाईने घेर आथमणें बार ओरडानी ओशरीमां गादीतकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां मोगराना पुष्पना हार शोभी रह्या हता. वे कान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने वेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराजनी आरती धून करीने सर्वे सभा वेठी पछी विरजी भक्ते प्रश्न पूछ्युं जे " हे महाराज ! ज्ञानीनां शा लक्षण छे अने अज्ञानीनां शा लक्षण छे ? ते कहो." पछी महाराज बोल्या जे "ज्यां सुधी देह अने देहना संबंधीना पोषणने अर्थे जे जे क्रिया करे छे अने ते पुरुष बहुबुद्धिवाळो जणातो होय अने ते ब्रह्मांडनुं कारखानुं चलावे एवो होय, पंडित होय, पुराणी होय अने सर्वे शास्त्रना अर्थने जाणतो होय तथा त्यागी कहेवातो होय अने भेख लीधो होय, तो पण

ते सर्वे अज्ञानी छे अने ते मूर्ख छे. केमके नाशवंत एवो जे देह अने नाशवंत एवा जे देहना संबंधी तेना सुखने अर्थे जे जे बुद्धि वापरे छे ते महामूर्ख छे अने ते ज अतिशय अज्ञानी छे.

अने जे जे पोताना आत्माना मोक्षने अर्थे जतन करे छे अने ते नथी भण्यो अने तेनी थोडिक बुद्धि जणाती होय अने लोक वहेवारमां पण मोटो न कहेवातो होय, तो पण ते ज अतिशय ज्ञानी छे केमके अविनाशी एवुं जे पोताना आत्मा अने परमात्मा संबंधी सुख तेमां तेनी दृष्टि पूगे छे अने तेने अर्थे भगवाननी आज्ञा दृढपणें पाळे छे अने भगवान भजवामां कोईनो दाब्यो दबातो नथी अने ते लोक वहेवारमां झाझु समजतो होय अथवा न समजतो होय अने शास्त्रनो भणेलो होय अथवा वगर भणेलो होय, पण ते ज बुद्धिवाळो छे अने ते ज अतिशय ज्ञानी छे. अने ते विनाना सर्वे मूर्ख छे अने अज्ञानी छे अने ते झाझी बुद्धिवाळा होय अथवा थोडी बुद्धिवाळा होय पण जे देह अने देहना संबंधीना सुखने अर्थे जतन करे छे ते सर्वे मूर्ख छे अने अज्ञानी छे. अने जे पोताना जीवना कल्याणने अर्थे निष्कामभावे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतने ओळखीने तेनो दृढ आशरो करे छे अने ते थकी पंचविषयनी वासना टाळवानो उपाय करे छे, ते ज ज्ञानी छे, ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १६३ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत १६४ विषय :–निश्चयात्मक अने अनिश्चयात्मक बुद्धि

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२१ ना चैत्र वदि ४ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री गोलाणा मध्ये भक्त करसन

नथुने घेर उगमणें वार ओरडानी ओशरीमां खुरशी उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां. अने मस्तके गुलाबी रंगनो फेंटो बाध्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "जीवने एक निश्चयात्मक बुद्धि छे अने एक अनिश्चयात्मक बुद्धि छे, तेमां जेने ज्यां सुधी अनिश्चयात्मक बुद्धि होय त्यां सुधी ते अनंत प्रकारना क्लेशने पामे छे. जेम कोईकनी भूंडी नठारी स्त्री होय ते पोताना पतिने अनंत प्रकारे करीने पदार्थ सारु दुःख दीधा करे अने कोई वस्तु थकी तृप्ति पामे नहीं अने खातां-पीतां रात-दिवस 'आ पदार्थ लावो अने आ पदार्थ लावो' एम ने एम कल्पांत कर्या करे अने पुरुषने सुख आववा दे नहीं. तेम जेनी अनिश्चयात्मक बुद्धि होय तेने पण पंचविषयनी वासनाए करीने अनंत पदार्थनी कल्पना कर्या करे छे अने ते थकी जीवने अधर्मने मार्गे चलावीने महा कष्टने पमाडे छे अने जन्ममृत्युने वारंवार भोगवावे छे.

—अने जेने निश्चयात्मक बुद्धि होय ते तेना जीवने अतिशय सुखनी पमाडनारी छे. जेम पतिव्रता स्त्री होय ते पोताना पतिनी रूडी रीते सेवा करे अने तेना पतिनी जेम आज्ञा होय तेम क्रिया करे पण तेना पतिनुं वचन लेशमात्र लोपे नहीं. तेम जेनी निश्चयात्मक बुद्धि होय ते तो जीवनुं जेम हीत थाय तेवी रीते धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति संबंधी निश्चय करे छे अने जेवी रीते आत्मानुं रूडुं थाय एवा पंचविषयना त्यागपणांना निश्चय करीने जीवने निर्वासनिक करे छे अने महा सुखने पमाडे छे. अने जेने निश्चयात्मक बुद्धि होय तेने ज प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे अने तेने ज भगवाननी आज्ञा दृढपणें पळाय छे.

माटे जेने निश्चयात्मक बुद्धि थाय छे तेने ज अमारा स्वरूपनो निश्चय थाय छे. अने निश्चयात्मक बुद्धि थवी ते पण प्रत्यक्ष भगवान अने ते भगवानना साधु तेनी सेवा अने तेनुं दर्शन अने तेनो अंतरमां गुण लेवो अने तेनो समागम करवो, तेणे करीने निश्चयात्मक बुद्धि थाय छे. अने प्रत्यक्ष भगवान अने संतना द्रोह वडे करीने अनिश्चयात्मक बुद्धि थई जाय छे. माटे जेने पोताना आत्मानुं रूडुं करवुं होय तेने तो सावधान थईने अनिश्चयात्मक बुद्धिनो त्याग करीने निश्चयात्मक बुद्धि राखीने दृढपणें अमारा स्वरूपनो निश्चय करीने धर्ममां दृढ वर्तवुं अने अनिश्चयात्मक बुद्धि थाय तेवा संगनो अने तेवा स्वभावनो त्याग करवो, तो तेना जीवनो साक्षात्कार मोक्ष थाय छे एमां कांई संशय नथी."

प्रश्नः–पछी गाम वरलना भट लक्ष्मीरामे महाराजने प्रश्न पूछ्युं जे "धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्तिनुं शुं रूप छे? ते कहो." पछी महाराज बोल्या जे "ल्यो एनो उत्तर करीए जे धर्मनुं रूप तो ए छे जे भगवाननी आज्ञा दृढपणें पाळवी अने ते आज्ञा कोई देशकाळे पण लेशमात्र लोपाय नहीं एवी रीते वर्ते तेनुं नाम धर्म कहेवाय छे. अने ज्ञाननुं ए रूप छे जे त्रण देह अने त्रण अवस्था अने त्रण गुण ते थकी नोखो एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं. ते आत्मा केवो छे? तो अच्छेद, अभेद, सुखरूप, सत्तारूप, अविनाशी एवो छे, एम जाणीने वर्णाश्रम, नातजात तेना मानने मूकीने सुखदुःख मान-अपमान तेने विषे समभाव राखवो तेनुं नाम ज्ञान छे.

–अने वैरागनुं रूप ए छे जे भगवाननी मूर्ति विना पींड, ब्रह्मांडादिक प्रकृतिनुं कार्य मात्र तेने विषे अत्यंत अरुचि वर्ते कहेतां तेने विषे वैरभाव वर्ते अने मायिक सुख मात्रने कागविष्टा तुल्य जाणे तेने वैराग

कहीए. अने भक्तिनुं रूप ए छे जे पोताना आत्माने ब्रह्मरूप मानीने कहेतां ब्रह्मरूप थईने परब्रह्म एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेने विषे माहात्म्य ज्ञाने सहित जे अत्यंत स्नेह तेने पराभक्ति कहीए. अने ते प्रत्यक्ष भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे निष्कामभावे देहे करीने नवधाभक्ति करे छे अने जे पराभक्तिने पामे छे ते पण पराभक्ति छे. अने जे परोक्षपणें भगवान प्रगट न होय अने निष्कामभावे नवधाभक्ति करे छे तेने साधनभक्ति कहीए. ते एवी रीते साधनभक्ति करतां करतां प्रत्यक्ष भगवान तेने मळे छे अने पछी ते पराभक्तिने पामे छे त्यारे ज तेनो आत्यंतिक मोक्ष थाय छे.

माटे जेने निष्कामभावे अनंत जन्म थया परोक्षपणें साधनभक्ति करी हशे तेने ज प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध थाय छे अने ते ज पराभक्तिने पामे छे, पण ते विना सकामभाव राखीने सूझे एटली भक्ति करे तो पण तेने प्रत्यक्षने विषे पराभक्ति थाय नहीं. ते सारु निष्कामभावे पोताना आत्माना कल्याणने अर्थे अमारी अने मारा संतनी सेवा करवी एज पराभक्ति छे अने एने कांई करवुं रहेतुं नथी."

इति श्रीमुखसिद्धांत १६४ समाप्त ॥



श्रीमुखसिद्धांत १६५ विषय :—सत्पुरुष थकी ज शास्त्र सवळां समजाय छे

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२१ ना अषाड वदि ४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पीपळी मध्ये भक्त वीरजी खीमाने घेर उगमणें वार ओरडानी ओशरीमां गादीतकीये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषणो सर्वे अंगमां शोभी रह्या हता. ककुंनो चांदलो

कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ संतमंडळ तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराजनी संध्या आरती थया केडे महाराज पोताना सर्वे भक्तजन प्रत्ये कृपा करीने बोल्या जे "शास्त्र सर्वे छे ते तो भगवानना स्वरूपने ओळखवा सारु सत्पुरुषे कर्या छे तथा जीवने पंचविषयनी वासना टळाववा सारु कर्या छे. पण तेमां जे सत्पुरुषना संगी छे ते शास्त्रने सवळां समजे छे अने जे असत्पुरुषना संगी छे ते शास्त्रने अवळां समजे छे. अने शास्त्र तो सर्वे एक रीतना सरखां अने सुखदायी छे; ते सवळां समजे छे तेने महा सुख थाय छे अने जे शास्त्रने अवळां समजे छे तेने महा दुःख थाय छे.

जेम पृथ्वी अने जळ तो एक सरखां होय पण तेमां जेवुं बीज वावे ते प्रमाणे तेनी वृद्धि थाय छे, ते भींडानुं बीज होय अने तेने पृथ्वी, जळादिकनो जोग थाय त्यारे तेमांथी भींडानो छोड थाय, ते प्रथम तो बहु वृद्धि पामतो जणाय पण अंते ढींचण जेटले थईने बे मास थाय त्यारे ते सूकाई जाय छे; ते एमां पृथ्वी, जळ तो संपूर्ण हतां अने वृद्धि करतां हतां पण भींडानुं बीज ज एवुं नकारुं हतुं माटे नाश पामी गयुं. अने वडनुं बीज होय अने तेने पृथ्वी, जळादिकनो योग थाय त्यारे तेमांथी मोटो वड थाय छे अने ते वड हजारो वर्ष सुधी रहे छे अने तेनी छायामां अनंत जीव सुखी थाय छे. अने वळी एक शेरडीनुं बीज छे अने तेने पृथ्वी, जळादिकनो जोग थाय त्यारे तेमांथी मीठी शेरडी थईने तेनो गोळ, खांड, साकर आदिक सुखदायी रस नीपजे छे. अने जो शींगडीया वछनागनुं बीज होय अने तेने पृथ्वी, जळादिकनो जोग थाय त्यारे तेमांथी झेर नीपजे छे अने तेने जे खाय तेना प्राण जाय

छे. अने पृथ्वी, जळ तो सर्वेमां सरखां हता पण जेवुं जे बीज हतुं तेवुं तेमांथी फळ थाय छे.

तेम सत्शास्त्र तो सरखां अने सुखदायी छे. पण जेवा जेवा पुरुषना संगरूपी बीज पडे छे. ते प्रमाणे ते जीवने सुखदुःखरूपी फळ थाय छे. तेमां असत्पुरुषना मुख थकी शास्त्रने सांभळे छे तेने दुःखरूप फळ थाय छे अने जे सत्पुरुष थकी शास्त्रने सांभळे छे तेने सुखरूप अने अविनाशी फळ थाय छे. तेमां सत्पुरुषना संगी शास्त्रने केम समजे छे अने असत्पुरुषना संगी केम समजे छे ? तो जीवने, जन्म, मरण, गर्भवास अने चोराशीनां महाकष्ट छे तेने टाळवाने अर्थे अने जीवने सुखिया करवा सारु शास्त्रमां भगवाननुं स्वरूप जणाव्युं छे केमके भगवानना स्वरूपने जीव जाणतो नथी एज जीवने जन्म, मरण अने गर्भवासनुं कारण छे.

ते भगवान केवा छे? तो अपार महिमावाळा छे अने ते भगवानना एक एक रोम प्रत्ये कोटानकोटि सूर्यना जेवो प्रकाश छे ते जेम आंखना अंधाराने सूर्य टाळे छे, तेम जीवना अज्ञानरूपी अंधाराने प्रत्यक्ष भगवान टाळे छे. ते जेम सूर्य आंखना अंधाराने टाळे छे पण जेनी आंखने पडळ वळीने विकारवान थई गई होय तेने सूर्यनो प्रकाश जणातो नथी अने तेने अंधारुं पण टळतुं नथी. अने जेनी आंख निर्विकारी होय तेने सूर्यनो प्रकाश जणाय छे अने तेने अंधारुं टळी जाय छे. तेणे कोटी सूर्यना करतां अपार प्रकाशवान एवा जे परमात्मा भगवान ते जीवोना अज्ञानरूपी अंधाराने टाळवा सारु प्रगट थाय छे. पण जेने असत्पुरुषने संगे करीने काम, लोभादिक विकार जीवमां वृद्धि पाम्यो होय ते जीवना जाण्यामां प्रत्यक्ष भगवाननुं स्वरूप आवतुं नथी. अने जे जीव सत्पुरुषनो समागम करीने ते थकी ज्ञान पामीने

काम, लोभादिक विकारने टाळीने शुद्ध थया होय तेने प्रत्यक्ष भगवाननुं स्वरूप अपार महिमा ते ज प्रताप गुण अने ऐश्वर्ये सहित साक्षात्कार भासे छे. अने तेने मायाना अंधाररूप जे पंचविषयनी वासना ते टळी जाय छे अने जन्म, मरण, गर्भवास अने चोराशीनां जे महा दुःख ते सर्वे नाश पामी जाय छे. अने ते जीव ब्रह्मरूप थईने अपार सुखना सागररूप एवुं जे अक्षरधाम तेने पामे छे.

माटे सत्पुरुष जीवोनी उपर कृपा करीने कामादिक दोषने टाळवा सारु शास्त्रमां तेनो उपदेश लखी गया छे. माटे ते शास्त्र प्रमाणे जे वर्ते छे तेना विकार टळी जाय छे अने प्रत्यक्ष भगवाननुं स्वरूप ओळखाय छे. अने जेने असत्पुरुषनो संग थई जाय छे तेने शास्त्र अवळां समजाय छे अने तेने कामादिक विकार वृद्धि पामे छे.

हवे ते शास्त्रमां सत्पुरुषे कामरूपी दोष टाळवा सारु नियम कह्या छे जे गृहस्थ होय तेणे परस्त्रीनो संग करवो नहीं अने पोतानी मा, बहेन अने दीकरी ते जुवान अवस्था वाळी होय तो तेनी संगाते आफतकाळ पड्या विना एकला बे जणांने एकांतमां रहेवुं नहीं. अने जे त्यागी होय तेणे स्त्री मात्रनो अष्ट प्रकारे त्याग करवो. एवी रीते नियमने दृढ करीने राखे तो तेने कामरूपी दोष टळी जाय छे अने तेनुं कल्याण थाय छे.

–अने जे ते नियमने चूके छे तेनुं मन भ्रष्ट थाय छे. ते नारदे त्यागीनो धर्म चूकीने राजानी कन्यानो हाथ जोयो तो मन भ्रष्ट थयुं अने फजेती थई. अने शिवजीए मोहनी स्वरूप जोयुं तो वीर्यपात थयो अने योगमार्गमांथी पडी गया. अने ब्रह्माए तेनी दीकरी जुवान अवस्थावाळीनुं एकांतमां मोढुं जोयुं तो मन विकारने पाम्युं अने तेनी पण मोटी फजेती थई. एवी रीते नियम चूके छे तेनुं मन भ्रष्ट थाय छे

अने जे नियम राखे छे तेना कामादिक दोष टळी जाय छे, एम समजीने सत्पुरुषना संगी छे ते शास्त्रमां जे जे नियम कह्या होय तेने दृढ करीने पाळे छे अने कामनी वासनानो त्याग करे छे. अने तेनुं ते शास्त्र जो असत्पुरुष पासेथी सांभळे छे त्यारे ते असत्पुरुष केम समजावे छे ? तो कहेशे के शास्त्रमां एम कह्युं जे मोटा मोटा नारद, शिव, ब्रह्मा जेवा ते पण जो कामने जीतवा गया तो उलटी तेनी फजेती थई, माटे काम तो कोईथी जीताय नहीं. एम पापी एवा जे असत्पुरुष ते पोताना शिष्योने अवळुं समजावीने पोते पण निःशंक थईने काम भोगवे छे अने तेना शिष्योने काम भोगवावे छे अने ते गुरु अने शिष्य बेय नारकी थाय छे.

अने वळी पापी छे ते केम अवळुं समजावे छे ? तो श्रीकृष्ण भगवाने कृपा करीने गोपीयोनो कामरूपी दोष टाळवाने अर्थे अने तेना मननी वृत्तियो पोताने विषे जोडावीने ब्रह्मरूप करवा सारु भगवान गोपीयो साथे रास रम्या छे अने पोते उर्ध्व कहेतां ब्रह्मचारी रह्या अने कामनो मद उतार्यो अने गोपीयोने पण निष्कामी करी मूकीयो, ते मर्मने तो सत्पुरुष समजे छे. अने जे असत्पुरुष छे ते तो एवा महा निष्कामी अने कृपाना सिंधु श्रीकृष्ण भगवान तेने विषे कामरूपी दोष परठे छे अने ते प्रमाणे पोते पण स्त्रीओ अने पुरुषो भेगा थईने रास रमे छे अने व्यभिचार करे छे. अने ते पापी असत्पुरुष एम कहे जे भगवान पण स्त्री साथे रम्या छे तो आपणे शुं छे ? एम कहीने पोते भूंडां कर्म करे छे अने बीजाने भूंडां कर्म करावे छे अने ते पापे करीने घोर नरकमां जाय छे.

अने वळी भगवाने बळिराजानो लोभ काढवा सारु अने तेने अविनाशी सुख पमाडवाने अर्थे भगवाने कृपा करीने पोते वामनजीनुं

रूप धारण करीने बळिराजाने याचीने तेनुं सर्वस्व लई लीधुं अने बळिराजाने निर्लोभी करीने पोताना अविनाशी सुखने पमाड्या. ते वातने तो सत्पुरुष समजे छे जे भगवान तो अति कृपाळु छे ते बळिराजानो फक्त लोभ टाळवा सारु ज सर्वस्व लीधुं छे अने पोते तो पूर्णकाम छे अने लक्ष्मीना तो पोते स्वामी छे अने सुखना सागर छे. ते पोताना सुखमांथी एक सळी भरीने प्रकृतिपुरुषने सुख आप्युं तो तेणे करीने प्रकृतिपुरुष अनंतकोटी ब्रह्मांड सर्जवानी शक्तिने पाम्यो छे, अने तेना लेश सुखे करीने अनंतकोटी ब्रह्मांडना देव, ब्रह्मादिक तथा राजा, मनुष्य पशु, पक्षी आदिक सर्वे जीव ते सुखे करीने सुखिया थया छे, एवा जे अपरिमित सुखना धाम भगवान ते तुच्छ जेवुं जे बळिराजानुं राज्य तेमां शुं लोभाय ? न ज लोभाय. एम सत्पुरुष अने सत्पुरुषना शिष्य छे ते समजे छे अने एम समजीने पोते लोभनो त्याग करे छे अने संसार थकी वैरागने पामीने भगवान अने तेना संतमां प्रीति करे छे.

—अने एवी रीतनी भगवाननी कृपाने न जाणता एवा जे असत्पुरुष ते भगवानने विषे लोभरूपी दोष परठे छे अने पोताना शिष्योने कहे जे 'सांभळो भाई ! भगवानने पण लोभ छे, ते बळिराजानुं सर्वस्व लई लीधुं तो आपणे तो लोभ होय ज तो !' एम समजीने द्रव्यादिक पदार्थने विषे महा लोलुप वर्त्या करे छे अने मरीने घोर नरकमां जाय छे.

—अने वळी भक्तजन भावे करीने सारां सारां भोजन भगवानने जमाडे छे तेने कृपा करीने पोताना भक्तना स्वादरूपी दोषने टाळवाने अर्थे थाळने जमे छे अने ते भक्तने निर्वासनिक करीने अविनाशी सुखने पमाडे छे. एवी रीते भगवाननी कृपाने सत्पुरुष जाणे छे अने एम समजे छे जे लक्ष्मी आदिक कोटी शक्तियो ते भगवाननी सेवामां हाजर उभीयो छे तो पण तेनी सेवानो त्याग करीने अल्प एवा जे

मुमुक्षु जीव तेनी सेवाने कृपा करीने तेनो भाव जोईने ग्रहण करे छे अने पोते तो सदाय पूर्णकाम छे. अने भगवानने तो आलोकनुं सारुं-नरसुं पदार्थ दृष्टिमां नथी पण भगवान तो केवळ एक भावना भोगी छे, ते सुदामाना तांदुल, विदुरनी भाजी अने भीलडीना बोर तेनो भाव हतो तो ते भगवान जम्या अने तेने पोतानुं अविनाशी धाम आप्युं, एवो जे भगवाननो मोटो उपकार अने भगवाननी दया तेने असत्पुरुष ते नथी जाणता अने ते तो शास्त्रने सांभळीने तेना अवळा अर्थ करे छे जे भगवानने पण सारुं सारुं खावा जोईए छीए, तो आपणे स्वाद केम तजाय ? एवी रीते अवळुं समजीने विष्टाना कीडानी पेठे रसा स्वादने विषे लोलुप थई रहे छे.

अने वळी भक्तजन पोताना कल्याणने अर्थे भगवानने भावे करीने वस्त्र घरेणां पुष्पना हार धारण करे छे तेनो भाव अने भक्ति जोईने तेने अविनाशी सुख आपवा सारु अंगीकार करे छे, तथा कोई हरिभक्त हेते करीने भगवानना चरणारविंद चांपे छे तथा पूजा करे छे, इत्यादिक जे जे निष्कामभावे सेवा करे छे तेने भगवान कृपा करीने ग्रहण करे छे; ते प्रमाणे शास्त्रमांथी सांभळीने असत्पुरुष अवळुं समजे छे जे भगवानने पण देहमां स्नेह छे माटे देहनी सेवा करावे छे. एम समजीने असत्पुरुष पोते पण देहमां आसक्त थईने रात दहाडो देहनुं जतन कर्या करे छे अने महा हेरान थाय छे. अने जीवोने अनंत जन्मनी वासना वळगी छे ते तेने मुकाववा सारु भगवान पोताना आश्रितोने कठण वचने करीने उपदेश आपे छे. अने जीव मायानी जाळमां लुब्ध थई रह्यो छे तेने मुकाववाने तो एक भगवान अने भगवानना एकांतिक संत समर्थ छे. ते साम, दाम, दंड अने भेदे करीने जे रीते जीवनी माया टळे तेवो उपदेश आपीने जीवने मुक्त करे छे.

जेम रोगी होय तेनो रोग जे जे औषधे करीने मटे तेवां तेवां कडवां औषध वैद पाय छे, तेम सत्पुरुष कठण वचने करीने उपदेश आपे छे तेने सांभळीने जे असत्पुरुष छे ते भगवान अने तेना संतने विषे मान तथा क्रोधरूपी दोष परठे छे. तथा 'असुरोने भगवाने मार्या' एवुं शास्त्रमांथी सांभळीने असत्पुरुष एम समजे छे जे भगवानने पण मान अने क्रोध छे, तो आपणे मान अने क्रोध ते केम टळे? एम समजीने उलटा मानी अने क्रोधी अतिशय थाय छे.

अने जे सत्पुरुष अने तेना शिष्य छे ते तो भगवानना चरित्रने शास्त्रमांथी सांभळीने ते चरित्रने दिव्य अने अलौकिक अने परम उपकार्यरूप जाणे छे अने ते चरित्रने सांभळीने मायामांथी अतिशय वैराग पामीने भगवानमां दृढ प्रीति करे छे अने देहथी नोखो पोताना आत्माने जाणीने ब्रह्मरूप थईने परब्रह्म एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेनी प्रेमलक्षणा भक्ति करीने अभयपद एवुं जे अक्षरधाम तेने पामे छे. अने जे असत्पुरुष अने तेना शिष्य छे ते शास्त्रने सांभळीने उलटा विषयी थईने नरकमां जाय छे.

माटे जेने पोताना आत्मानो मोक्ष करवानी इच्छा होय तेणे असत्पुरुषना मुख थकी शास्त्र सांभळवा नहीं अने तेनो संग पण कोई दहाडे करवो नहीं. अने ते सत्पुरुष एवा जे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना पंचविषयना त्यागी संत तेना मुख थकी शास्त्र सांभळवा अने तेनो नित्य प्रत्ये समागम करवो तो ते थकी जीवने मायाना पडळ टळी जाय छे अने तेने भगवाननुं स्वरूप साक्षात्कार जणाय छे अने ते जीवनो मोक्ष थाय छे."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १६५ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत १६६ विषय :—चंचळने शान्त अने शान्तने चंचळ केम थवाय?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२१ना अषाढ वदि ५ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये भक्त वीरजी खीमाने घेर उगमणें वार ओरडानी ओशरीमां गादीतकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां पुष्पना हार शोभी रह्या हता. पाघमां फूलना तोरा वे कोरे लटकता हता अने वे कान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता. हाथने विषे वाजुबंध अने गजरा वांध्या हता अने ललाटने विषे ककुंनो चांदलो कर्यो हतो. जमणा हस्तकमळने विषे रूमाल धारण कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने वेठी हती.

प्रश्न :—पछी महाराजनी संध्या आरती थया पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज ! जेनो चंचळ स्वभाव होय तेने शान्त केम थवाय अने जे अतिशय शान्त होय तेने चंचळ केम थवाय ? ते कहो."

पछी महाराज वोल्या जे "चंचळने शान्त थवानो तो ए उपाय छे जे पोताने आत्मारूप मानीने भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करवुं अने भगवाननी अखंड स्मृति राखवी, ए रीते भगवाननुं ध्यान अने स्मृति राखवानो अभ्यास करे तो चंचळ होय ते शान्त थाय छे. अने शान्तने चंचळ थवुं होय तेने भगवान अने भगवानना संतनो महिमा समजवो अने तेनी सेवा मन, कर्म, वचने करीने करवी तो तेने चंचळपणुं आवे छे." एम उत्तर करीने पछी महाराज वोल्या जे "हवे अमे तमने सर्वेने एक प्रश्न पूछीए छीए जे भगवानना भक्त होय तेणे जप, तप, व्रत, धर्म,

ज्ञान, वैराग, भक्ति आदिक सर्वे साधन करीने पछी छेल्ली वारे शुं करवुं? अने शुं पामवुं ?" पछी तेनो उत्तर कोईथी यथार्थ थयो नहीं. पछी महाराज बोल्या जे "ल्यो अमे तेनो उत्तर करीए जे सर्वे साधन करीने अंते भगवानना स्वरूपनी अखंड स्मृति करवी. ते भागवतमां पण कह्युं छे जे—

एतवान् सांख्ययोगाभ्यास स्वधर्म परिनिष्टया ।
जन्म लाभः परः पुसामन्ते नारायण स्मृतिः ॥

अर्थः—सांख्य अने योग शास्त्रे करीने पोताना धर्मने विषे निष्टा जे आस्था ते करीने पुरुष जे तेने जन्मनो लाभ शो? तो अंते कहेतां सर्वे साधन करीने शुद्ध ब्रह्मरूप थईने मुक्तदशाने पाम्यां होय तेने भगवानना स्वरूपमां अखंड स्मृति राखवी. अने एवो मुक्त थाय छे तेने भगवानना स्वरूपनी अखंड स्मृति रहे छे.

अने वळी जे भगवानना स्वरूपनी अखंड स्मृति राखवानो नित्य अभ्यास करे छे ते ज महा मुक्त थाय छे अने भगवानना स्वरूपनी स्मृति पण कोने रहे छे? तो जे आहार शुद्ध करे छे तेने अखंड स्मृति रहे छे. ते पण शास्त्रमां कह्युं छे जे—'आहार शुद्धे अंतःकरण शुद्ध अने अंतःकरण शुद्धे ध्रुवानी स्मृति.' अर्थः—जे इन्द्रियोना आहार शुद्ध करवाथी अंतःकरण शुद्ध थाय छे अने अंतःकरण शुद्ध थाय छे त्यारे ज भगवानना स्वरूपनी अखंड स्मृति रहे छे. माटे भगवानना भक्त होय तेणे आहार शुद्ध करवो.

ते केवी रीते आहार शुद्ध करवो ? तो काने करीने भगवानना शब्द सांभळवा पण अधर्मी, विमुख अने दुराचारीना शब्द कानमां पेसवा देवा नहीं. अने कोईक देशकाळे करीने अधर्मीना शब्द सांभळवा पडे तो जेम कोईक पोताने मा, बहेन सामी गाळो दे अने ते जेवुं

वसमुं लागे अने तेने शत्रु जेवो जाणीने तेनी साथे वेरभाव थाय छे तेम अधर्मी अने विमुखना शब्दने शत्रुरूप जाणीने ते शब्दने अंतरमां पेसवा देवा नहीं. अने ते शब्दे करीने मनमां हरखशोकने पामवुं नहीं. अने आंखे करीने भगवानना दर्शन हेते करीने करवा अने विमुख अने अधर्मीना दर्शन न करवा. अने देशकाळे अथवा जाणे अजाणे अधर्मी अने विमुखना दर्शन थई जाय तो जेम सडेल कूतरुं के विष्टानो ढगलो देखाय तेम अधर्मीने देखवा. अने त्वचाए करीने भगवाननो हेते करीने स्पर्श करवो अने विमुखना स्पर्शने काळा सर्प रूप जाणीने तेनो स्पर्श करवो नहीं. अने रसनाए करीने भगवाननी प्रसादी माहात्म्ये करीने जमवी अने विमुख जीवनुं एंठुं खावुं नहीं. ए रीते इन्द्रियो अंतःकरणे करीने भगवाननो अखंड संबंध राखवो अने अधर्मी अने विमुखना संगनो सर्वे प्रकारे त्याग करवो.

अने एवी रीते सावधान थईने जे वर्ते छे तेनुं अंतःकरण शुद्ध थाय छे. अने तेने पंचविषयनी वासना टळी जाय छे. अने जेने वासना टळे छे तेने ज भगवानना स्वरूपनी अखंड स्मृति रहे छे. अने जेने भगवानना स्वरूपनी अखंड स्मृति रहेवा मांडी ते तो बाई अथवा भाई, त्यागी अथवा गृहस्थ सर्वे हरिभक्त करतां भगवाननो मोटेरो भक्त छे. अने जेने भगवाननी अखंड स्मृति रहे छे तेने कांई करवुं रह्युं नथी अने तेने दर्शने करीने तो अनंत जीवोनो उद्धार थाय छे. अने एवो अखंड स्मृतिवाळो भगवाननो भक्त छे ते तो जे जे धारे ते थाय छे.

जेम चिंतामणि होय तेमांथी जे जे चिंतवे ते थाय छे, तेम भगवाननी मूर्ति चिंतामणिरूप छे ते जेना उरमां भगवानना स्वरूपनी अखंड स्मृति रहेती होय तेना तो संकल्प सत्य थाय छे अने एवा भक्त तो जगतना आधार रूप छे. अने तेनो महिमा तो कह्यामां आवे एम नथी. अने जेने भगवानना स्वरूपनी अखंड स्मृति रहे छे तेने तो

भगवाननी संपूर्ण सेवा करी छे. अने तेनां जप, तपादिक सर्वे साधन पूरां थई रह्या छे. अने जे भगवानना स्वरूपनी अखंड स्मृति छे ते तो अनंत पापने तत्काळ नाश करे एवी छे. अने जेने अखंड स्मृति रहे छे तेने अंतरमां आठे पहोर आनंदना फुवारा छुट्या करे छे. अने एवो भक्त तो छते देहे, भगवानना धामने पामी रह्यो छे. ते कह्युं छे जे– 'या मतिः सा गतिर्भवेत् ।' अर्थः–जेनी जेवी मति तेनी तेवी गति थाय छे. माटे जेने भगवानने विषे अखंड स्मृति रहे छे तेनी गति भगवानना धाममां थाय छे. माटे एवा भक्तना आत्माना मोक्षमां लेशमात्र संशय रहेतो नथी. अने जेने भगवानना स्वरूपनी स्मृति रहेती होय ते तो सर्वे भक्तमां उत्तम भक्त छे. अने एवा भक्तना दर्शने करीने तो अनंत जीवोनुं कल्याण थाय छे.

अने एवी भगवाननी अखंड स्मृति पण क्यारे रहे छे ? तो प्रत्यक्ष भगवान अने ते भगवानना निर्वासनिक संत जेने मळे छे तेने ज भगवानना स्वरूपनी अखंड स्मृति रहे छे. पण ते विना जे वस्तु दीठी न होय तेनी स्मृति केम रहे ? न ज रहे. माटे जेने प्रगट भगवान अने तेना संतनो संबंध थाय छे तेने ज अखंड स्मृति रहे छे अने तेना भाग्यनो पण पार नथी. केमके एवो प्रगट भगवान अने तेना संत मळ्यानो प्रताप छे. ते पूर्वे गोपी, गोवाळादिक तथा रामावतारमां वांदराओने भगवान प्रगट मळ्या हता तो तेने भगवाननी अखंड स्मृति रहेती हती. अने ते सर्वेनां साक्षात्कार कल्याण थई गयां छे. माटे ते समो आज तमारे आव्यो छे ते तमारा भाग्यनो पार नथी."

इति श्रीमुखसिद्धांत १६६ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत १६७ विषयः–मुक्त, मुमुक्षु, विषयी अने पामर पोताना अने बीजाना दोष केम देखे ? अने प्रगट भगवानने केवी रीते भजे?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२१ना अषाड वदि ६ने दिवस माहाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री पींपळी मध्ये भक्त वीरजी खीमाने घेर उगमणे वार ओरडानी ओशरीमां गादीतकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. श्वेत खेस पहेर्यो हतो अने धोळुं अंगरखुं धारण कर्युं हतुं. पीळो बुट्टादार रूमालनो फेंटो मस्तके बांध्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी धर्मानंदस्वामीए हरिभक्तने कह्युं के "तमे मांहोमांहे प्रश्नोत्तर करो." त्यारे महाराज बोल्या जे "ल्यो अमे हरिभक्तने प्रश्न पूछीए छीए. तेमां प्रथम गाम रोहीशाळाना भगवानजी लक्ष्मीरामने पुछुं छुं जे जे मुक्त होय ते पोताने विषे दोषने केम देखे छे ? अने ते बीजा जीवोने विषे दोषने केम देखे छे ? तेनो उत्तर करो."

पछी भक्त भगवानजी बोल्या जे "जे मुक्त होय तेने तो पोताने विषे एम वर्ते जे 'रखे मारे विषे कोई दोष प्रवेश करे नहीं.' एम जाणीने धर्म नियमने विषे तथा सत्शास्त्रनी मार्यादाने विषे दृढपणे वर्ते छे अने पोताना उपर भगवाननी कृपा थई छे तेने करीने अद्‌भूत आनंदमां रह्यो थको पोताने विषे कोई दोषनो तथा कोई विषयनो प्रवेश थवा देतो नथी, तथा कोई विषयनो संबंध पण राखतो नथी. अने देह निर्वाहने अर्थे अन्न वस्त्रादिक अवश्य जोईए तेटलुं ग्रहण करे छे अने बीजा सर्वे पदार्थनो त्याग करीने भगवाननी जेम आज्ञा होय ते प्रमाणे निःशंक थको वर्ते छे अने पोताने विषे कोई दोष मात्र नथी. अने बीजाने विषे जेने जेटलो दोष होय तेने यथार्थ जाणे छे अने

तेनी उपर दया करीने तेना दोषने टाळवाना उपाय करे. एवी रीते मुक्त वर्ते छे."

प्रश्नः–पछी महाराज बोल्या जे "ठीक उत्तर कर्यो. अने हवे करशनसंगजीने पूछीए छीए जे मुमुक्षु जीव होय ते केवी रीते पोताने विषे दोषने देखे ? अने बीजाने विषे दोषने केम देखे ? ते कहो." पछी करशनसंगजीए उत्तर करवा मांड्यो पण थयो नहीं. पछी महाराज बोल्या जे "सांभळो अमे उत्तर करीए जे जे मुमुक्षु होय तेने एम वर्ते छे जे पोताने विषे जे जे दोष होय तेने जाणीने ते दोषने टाळवाना उपायमां मंड्यो रहे अने सत्पुरुषे जे जे नियम आप्या होय तेने दृढपणें पाळे अने पंचविषयनो त्याग करवो पोताने गमे अने पंचविषयना त्यागी एवा जे भगवानना संत तेनो समागम कर्या करे अने पोताना दोष टाळवा सारु भगवान अने भगवानना संतनी निरंतर प्रार्थना कर्या करे अने भगवानना बीजा भक्त होय तेने विषे जे जे दोष होय तेने यथार्थ जाणे अने तेने विषे मित्रभाव राखीने तेना दोषने टाळे एवो उपाय करे अने तेवो उपदेश करे अने तेनुं हीत करे पण कोई उपर तेने ईर्षा न होय एवी रीते मुमुक्षुने वर्ते. एनो एज उत्तर छे."

प्रश्नः–पछी वळी महाराजे काळा भक्तने प्रश्न पूछ्युं जे "जे विषयी जीव होय ते केवी रीते पोताने विषे दोषने देखे अने बीजाने विषे दोषने केम देखे ? ते कहो." पछी तेनो उत्तर काळा भक्तने आवड्यो नहीं. पछी महाराजे उत्तर कर्यो जे "जे विषयी जीव होय तेने नियममां रहीने विषय भोगववा उपर प्रीति होय अने पोताने विषे दोष होय तेने देखे नहीं अने बीजाने विषे जे जे दोष होय तेने देखे. अने तेना दोषने ईर्षाए करीने कही देखाडीने तेनी फजेती करे छे. एवी रीते विषयी जीवने वर्ते छे."

प्रश्न :–पछी लवजी भक्तने प्रश्न पूछ्युं जे "जे पामर जीव होय ते केवी रीते पोताने विषे दोषने देखे ? अने बीजाने विषे केम देखे ?" पछी तेनो उत्तर लवजी भक्तने आवड्यो नहीं. पछी महाराजे उत्तर कर्यो जे "जे पामर जीव होय ते तो पोताने विषे कोई दोषने देखे नहीं अने बीजाने विषे पण दोषने देखतो नथी अने कोईक बीजाना दोषने कहे अने ते दोष तेमां होय तो पण जे पामर होय ते एम कहे जे 'भाई ! आपणे कोईना दोष कहेवा नहीं.' ते शा सारु एम कहे छे ? तो पोतामां सर्वे दोष भर्या होय माटे पोताना दोष उघाडा थाय ते सारु एम कहे जे 'कोईना दोष जोवा नहीं.' एवुं जे वर्ततुं होय तेने पामर जीव जाणवो."

एवी रीते चारे प्रश्ननुं समाधान करीने वळी महाराज बोल्या जे "चारे जणाने बीजा चार प्रश्न पूछीए छीए जे जे मुक्त होय ते भगवाननो महिमा केवो समजे छे ? अने मुमुक्षु होय ते भगवाननो महिमा केवो जाणे छे ? अने विषयी जीव होय ते भगवानने केवा जाणे छे ? अने पामर जीव होय ते भगवानने केवा जाणे छे ? ते कहो." पछी तेनो उत्तर हरिभक्ते करवा मांड्यो पण थयो नहीं. पछी महाराजे तेनो उत्तर कर्यो जे "मुक्त छे ते तो एम समजे छे जे पोताने मळ्या जे प्रत्यक्ष भगवान ते जे जे लीलाचरित्र करे तेने दिव्य अने अलौकिक जाणे छे. ते प्रत्यक्ष भगवान समर्थपणें वर्ते अथवा असमर्थपणें वर्ते तो पण तेने लेशमात्र संशय थाय नहीं अने सदाय अखंड आनंदमां वर्त्या करे अने ते सर्वे लीलाचरित्रने गाई-सांभळीने परम आनंद पामे. अने एम समजे जे 'प्रत्यक्ष भगवान छे ते ज सर्वेना कर्ता हर्ता छे माटे जे जे थाय छे ते प्रत्यक्ष भगवाननी इच्छा प्रमाणे थाय छे,' एम जाणीने प्रत्यक्ष भगवाननी दृढ उपासना भक्ति, सेवा, स्मरण, ध्यान कर्या करे छे. एवी रीते मुक्तने

प्रत्यक्ष भगवानने विषे सदाय अलौकिकभाव रहे छे.

अने जे जे मुमुक्षु छे तेने पण ते प्रत्यक्ष भगवानना सर्वे चरित्र, लीलाने विषे अलौकिकभाव अने दिव्यभाव वर्त्या करे अने भगवाननुं समर्थपणुं अने असमर्थपणुं अने कोईनी निंदा-स्तुतिपणुं तेने विषे पण तेने समभाव रहे. अने तेमां हरखशोकने पामतो नथी पण तेने कोई दिवस भगवान ते भक्तनी दृढता जोवा सारु अने पोतानी इच्छाए करीने अतिशय भूंडो देशकाळ देखाडे त्यारे मुमुक्षुने लगारेक मनमां संशय थाय. जेम सीतानुं हरण थयुं अने रामचंद्रजी सीता सारु रोवा लाग्या त्यारे सतीने संशय थयो, तेम मुमुक्षुने एवां प्रत्यक्ष भगवानना मनुष्यचरित्र जोईने संशय थाय. पछी ते संशयने मुक्त संतनो समागम करीने टाळी नाखे. एवी रीते मुमुक्षुने वर्ते छे.

अने जे विषयी भक्त होय तेने तो एम वर्ते छे जे प्रत्यक्ष भगवाननी उत्कृष्टता देखे त्यारे घणो आनंद पामे अने घणा मनुष्य प्रत्यक्ष भगवाननुं भजन करे तथा पूजा पधरामणी थाय तथा भारे भारे वस्त्र घरेणां धारण करे त्यारे ते विषयी भक्त होय ते घणो आनंद पामे. अने ज्यारे भगवान मनुष्यचरित्र करे अने कोई माणस निंदा करे अथवा भगवान कोईक थकी नासे. जेम श्रीकृष्ण जरासंघ थकी नासीने द्वारकामां गया, तेम कोईक समे नाशे, तथा कोईक भगवानने मानता होय ते मानता आळसी जाय त्यारे विषयी भक्त होय ते मोळो पडी जाय अने एम कहे जे 'भगवान आम सीद करता हशे ?' एम संशय करे. अने तेने मोटा संत ज्ञान आपे तो पण ते विषयीने संशय टळे नहीं. अने वळी ज्यारे भगवान पोतानी इच्छाए करीने सारो देशकाळ वर्तावे त्यारे विषयी भक्त पाछो आनंद पामे. एवी रीते विषयीने वर्ते छे."

एम उत्तर करीने पछी बोल्या जे "पामर भक्त होय ते भगवानने

केम भजे छे? तेनो उत्तर लवजी भक्त करशे." पछी लवजी भक्ते कह्युं जे "पामर होय तेने तो एम वर्ते जे घणाक मनुष्य एम कहे जे 'भगवान प्रगट थया छे ते कल्याण करशे.' त्यारे ते भेगो पोते पण एम कहे जे 'भगवान छे.' एम जाणीने प्रत्यक्ष भगवाननुं भजन करवा मंडी जाय. अने वळी कोईक एम कहे जे 'ए तो भगवान नथी त्यारे पोते मोळो पडे अने एम जाणे जे 'भगवान नहीं होय.' एवो होय तेने पामर जाणवो."

पछी महाराज बोल्या जे "ठीक उत्तर कर्यो. अने आ चारे प्रश्नना उत्तरने विचारीने जोशो तो जेना जेवा गुण हशे तेवा तेना साक्षात्कार देखाशे. जेम दर्पणमां मोढुं देखाय छे तेम आ वार्ता दर्पण जेवी छे ते जेना जेवा गुण हशे तेवा तेना साक्षात्कार देखाशे. पछी पोताने विषे पामरना जेवा गुण जणाय तो ते गुणनो त्याग करीने विषयीना जेवा गुण शीखवा. अने विषयीना जेवा गुण पोताने विषे जणाय तो ते गुणनो त्याग करीने मुमुक्षुना जेवा गुण शीखवा. अने पोताने विषे मुमुक्षुना जेवा गुण जणाय तो ते गुणनो त्याग करीने मुक्तना जेवा गुण शीखवा अने मुक्तना जेवा गुण पोताने विषे जणाय तो ते गुणने दृढ करीने राखवा अने पोताने कृतार्थ मानवुं अने तेवा गुण बीजाने दया करीने आपवा. अने जेने मुक्तना जेवा गुण आव्या छे ते तो सर्वे साधनना पारने पामी रह्यो छे अने तेने समागमे करीने तो अनंत जीवोनो उद्धार थाय छे.

माटे सावधान थईनेमुक्तना जेवा गुणशीखवा. ते एवा गुण क्यारे आवे छे?तोजे एवा मुक्तनो दृढ विश्वास राखीने तेनो अखंड समागम करे तेने मुक्तना गुण आवे छे. माटे आ समे धर्मानंदस्वामीनो तथा

अक्षरमुक्तानंद स्वामीनो विश्वास राखीने अखंड समागम करे तो तत्काळ मुक्त थाय अने तेनुं आत्यंतिक कल्याण थाय."

इति श्रीमुखसिद्धांत १६७ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत १६८ विषयः—आस्तिक-नास्तिकना गुण अने त्रण प्रकारना सत्संगीनां लक्षण

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२१ ना अषाड वदि ७ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये भक्त वीरजी खीमाने घेर उगमणें वार मेडीनी ओशरीमां गादीतकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां जाइ अने गुलाबना पुष्पना हार धारण कर्या हता. बे कान उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ खोस्या हता अने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. अने संध्या आरती थया पछी पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती अने मशालनो प्रकाश थई रह्यो हतो.

प्रश्नः—पछी महाराज सर्वे सभा उपर कृपादृष्टि करीने बोल्या जे "सर्वेने अमे प्रश्न पूछीए छीए जे आस्तिक होय तेनां केवां लक्षण होय? अने नास्तिक होय तेनां केवां लक्षण होय? अने अर्धो नास्तिक होय अने अर्धो आस्तिक होय तेनां केवां लक्षण होय? ते कहो."

पछी जेने जेम आवडयुं तेणे तेम कह्युं पण यथार्थ कोईनाथी उत्तर थयो नहीं. पछी महाराज बोल्या जे "सांभळो अमे उत्तर करीए जे जे नास्तिक होय ते तो एम जाणे जे 'आ जगतनो कर्ता ज कोई नथी अने जगत तो एनी मेळे थाय छे, पण कोई कर्ता नथी.' एम समजे छे तेने अतिशय नास्तिक जाणवो. अने जे अर्धो आस्तिक अने अर्धो नास्तिक होय ते

एम समजे छे जे 'आ जगतनो कर्ता तो कोईक भगवान छे खरो, पण अहीं आवतो नथी अने कोईना जाण्यामां पण आवतो नथी.' एम समजे तेने अर्धो आस्तिक अने अर्धो नास्तिक जाणवो.

–अने जे आस्तिक होय ते एम जाणे छे जे 'माया पर अजन्मा, अकर्ता, निर्गुण, सर्वकर्ता, सर्वकारण, सर्वव्यापक, निराकार, अंतरजामी अने जेना एक एक रोमने विषे कोटानकोटी सूर्यना प्रकाशने झांखो करे एवो तो जेनो प्रकाश छे एवा अक्षरधामना अधिपति भगवान ते ज भगवान कृपा करीने अनंत कोटी जीवोनां कल्याण करवाने अर्थे मनुष्याकृत्तिनुं धारण करीने पृथ्वी उपर पधारे छे. अने ते प्रत्यक्ष भगवाननो आशरो करे छे तेनुं ज कल्याण थाय छे अने ते ज भगवाननुं कर्युं थाय छे. माटे मन, वाणीने पार कह्या जे भगवान ते ज आ प्रत्यक्ष छे. अने सर्वव्यापक, अंतरजामी, निर्गुण, कर्ता, अकर्ता, निराकार, अद्वैत, पूर्णब्रह्म ए आदिक अनंत दिव्यगुणे सहित एवा जे परब्रह्म पुरुषोत्तम परमात्मा भगवान ते ज भगवान आ प्रत्यक्ष मने मळ्या छे, पण ते विना बीजो कोई भगवान नथी अने बीजा कोईनुं कर्युं थतुं नथी.' एम जे समजे छे तेने अतिशय आस्तिक जाणवो. अने जे एवो आस्तिक होय तेनो ज आत्यंतिक मोक्ष थाय छे अने ते ज अक्षरधामने पामे छे. अने जे एवो आस्तिक थयो छे ते तो सर्वे साधनना पारने पामी रह्यो छे अने तेने कांई करवुं रह्युं नथी."

प्रश्नः–एम कहीने वळी महाराज बोल्या जे "ल्यो एक बीजुं प्रश्न पूछुं छुं जे भगवाननो सत्संगी होय तेनां केवां लक्षण छे अने साधुनो सत्संगी होय तेना केवा गुण हशे अने सत्संगीनो सत्संगी होय तेनां केवां लक्षण होय? ते कहो." पछी तेनो उत्तर पण कोईथी थयो नहीं, ते पोते कर्यो जे "जे भगवाननो सत्संगी होय तेनां आवां लक्षण छे

जे ते एम जाणे जे 'सर्वकारण, सर्वना आधार अने दिव्य स्वरूप एवा जे परात्पर भगवान ते ज भगवान आ प्रत्यक्ष मने मळ्या छे' एम जाणीने प्रत्यक्ष भगवानने विषे सर्वे प्रकारे जोडाई जाय छे. अने प्रत्यक्ष भगवाननी सर्वे क्रियाने विषे दिव्यभाव देखे छेअने तेने प्रत्यक्ष भगवाननी पासे रहेवुं गमे छे अने ते प्रत्यक्षना ज दर्शन करवां गमे अने पोताने मळ्या जे प्रत्यक्ष भगवान तेनो ज स्वभाव गमे अने तेनां जे वचन ते अमृत जेवां लागे अने प्रत्यक्ष भगवाननो ज स्पर्श करवो सारो लागे अने ते प्रत्यक्ष भगवान पोताने जे आज्ञा करे तेने सत्य मानीने ते प्रमाणे तत्काळ करवा मांडे, पण तेमां लेशमात्र संशय करे नहीं. अने ते प्रत्यक्ष भगवानने हजारो मनुष्य मानता होय अथवा कोई मानता न होय अने कोई आंगणे उभा रहेवा देता न होय, तो पण तेनो जे प्रेम अने आनंद ते लेशमात्र ओछो थाय नहीं. अने भगवान जे जे लीलाचरित्र करे छे तेने गाई-सांभळीने परम आनंदने पामे.' एवो जे भक्त होय ते भगवाननो सत्संगी छे एम जाणवुं.

अने जे साधुनो सत्संगी होय तेने 'तप, त्याग करवो, तथा धर्म, ज्ञान, वैरागने विषे वर्तवुं तथा आत्मारूप थईने भगवाननुं ध्यान करवुं तथा तप, त्यागादिक लक्षणे युक्त एवा जे साधु तेनो संग करवो गमे अने तेवा साधुने विषे तेने प्रीति होय अने पोताने पण साधु थवानुं मनमां होय पण तेने एटलो संकल्प रहे जे महाराज तो साक्षात्कार भगवान छे अने तेना चरणारविंदमां ज अखंड सुख रह्युं छे, माटे आपणे पण साधु थवुं. पण वेक वधारे साधु थाय तो साधु थवुं. पण हमणां न थवुं, केमके कदापि थोडाक साधु छे ते आळसी जाय के भगवाननी इच्छाए करीने साधु स्वधाममां जाय तो आपणे ठीक न पडे.' अने कदापि एवो संकल्प करतो करतो साधु थाय अने तेवो देशकाळ आवे तो ते

સાધુ પાછો આળસી જાય. અને તે પ્રત્યક્ષ ભગવાનના સ્વરૂપનો નિશ્ચય તો અડગ હોય પણ તે સાધુનો સત્સંગી જાણવો.

અને જે સત્સંગીનો સત્સંગી હોય તે અમારી પાસે આવતો હોય અને અમને ભગવાન જાણતો હોય તો પણ તે એમ કહે જે 'અમારે વર્તમાન લેવા છે પણ અમારા દોસ્તાર પાંચ સાત જણા છે તે વર્તમાન લેશે ત્યારે મારે વર્તમાન લેવા છે.' પછી પોતે તે દોસ્તારને વાતો કરીને અમારી પાસે તેડી આવે અને તેને વર્તમાન લેવડાવીને સત્સંગી કરે અને પોતે પણ સત્સંગી થાય. એવી રીતે ઘણાક સત્સંગી થાય ત્યારે તેને બહુ ઉલ્હાસ થાય અને કોઈક સત્સંગી આળસી જાય ત્યારે તેને મનમાં શોક થાય. એવાં જેનાં લક્ષણ હોય તેને સત્સંગીનો સત્સંગી જાણવો.

માટે આ વાર્તાને વિચારી સર્વેને જોવું જે 'આપણે તે ભગવાનના સત્સંગી છીએ કે સાધુના સત્સંગી છીએ કે સત્સંગીના સત્સંગી છીએ,' એમ તપાસી જોવું. પછી જો પોતે ભગવાનના સત્સંગી થયા હોય તો પોતાનું મોટું ભાગ્ય માનવું. અને તેવા ગુણ પોતાને વિષે ન હોય અને સાધુના સત્સંગી હોઈએ કે સત્સંગીના સત્સંગી હોઈએ તો પોતાને વિષે ઘણી ખોટ જાણવી. અને એમ ખોટ જાણીને તે ખોટને ટાળવાને અર્થે જે ભગવાનના સત્સંગી એવા જે સાધુ તથા પ્રત્યક્ષ ભગવાન તેનો મન, કર્મ, વચને સમાગમ કરીને તે ખોટને ટાળી નાખવી અને ભગવાનના સત્સંગી થવું. અને જે ભગવાનનો સત્સંગી થાય છે તે તો અક્ષરબ્રહ્મરૂપ થઈ રહ્યો છે અને તે તો ભગવાનને રહ્યાનું ધામ છે.

માટે એવા ભગવાનના સત્સંગી કરવા સારુ તો અમે પણ રાત દહાડો જ્ઞાન વાર્તાનો દાખડો કરીએ છીએ. અને તે સારુ તો કોઈકને વઢીએ છીએ, કોઈકને કાઢી મૂકીએ છીએ, કોઈકથી રીસાઈએ છીએ, કોઈકને

हसीए छीए, कोईकने मान आपीए छीए इत्यादिक सर्वे भगवानना सत्संगी करवा सारु करीए छीए. अने सर्वे साधन करीने तथा सर्वे ज्ञान सांभळीने सर्वे सेवा करीने भगवानना सत्संगी थवुं. अने जे भगवाननो सत्संगी थयो छे ते सर्वोपरि सुखने पामी रह्यो छे. ते भगवानना सत्संगी थवानो शो उपाय छे ? तो भगवानना सत्संगी थया होय एवा जे संत पंचविषयना त्यागी निर्वासनिक तेने समागमे करीने भगवानना सत्संगी थवाय छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत १६८ समास ।

श्रीमुखसिद्धांत १६९ विषय :–चार प्रकारना जीवनां लक्षण, तेमनी गति, वगेरे चार प्रश्न

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२१ ना अषाड वदि १० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये भक्त वीरजी खीमाने घेर उगमणें बार ओरडानी ओशरीमां गादीतकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां गुलाब अने जाईना पुष्पना हार धारण कर्या हता. कान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता अने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. अने संध्या आरती थया पछी पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी महाराज बोल्या जे "सांभळो सर्व सभाने अमे प्रश्न पूछीए छीए तेनो उत्तर जेने आवडे ते करजो. ते प्रश्न ए छे जे केटलाक मनुष्य छे ते जेवा तेवा उतरता विषयने भोगवीने आनंद माने छे अने तेने सारा-नरसा विषयनुं भान नथी. अने जेवा विषय मळे तेने प्रीतिए करीने भोगवे छे अने तेमांथी मुठी अन्न पण कोईने आपतो नथी.

एवो होय तेने केवो जीव जाणवो? अने एवा जीवनो देह छूटशे त्यारे ते शी गतिने पामशे? अने एनुं ते मुढपणुं शा उपाये टळे ते कहेवुं. अने एक बीजो मनुष्य छे तेने तो सारा सारा विषय उपर प्रीति छे अने तेने नरसा विषय तो गमता ज नथी अने सारा विषयने भोगवीने आनंद पामे छे अने वळी अधिक सारा विषयनी प्राप्ति थाय तेने अर्थे दान, पुन्य, यज्ञादिक शुभ कर्म करे छे, तेने केवो जीव जाणवो? अने तेनो देह पडशे त्यारे ते जीव शी गतिने पामशे? अने तेने सारा विषय उपर प्रीति छे ते टळी जाय अने सारा-नरसा विषय समान थई जाय तेनो शो उपाय छे? ते कहेवुं.

—अने वळी एक त्रीजो मनुष्य छे तेने तो सारा-नरसा विषय समानपणें वर्ते छे, ते जीवने केवो जाणवो? अने तेनो देह पडशे त्यारे ते शी गतिने पामशे? अने तेने सारा विषय ते नरसा थई जाय अने जेवा तेवा पदार्थे करीने देह निर्वाह करे एवुं शा उपाये करीने थाय? ते कहेवुं. अने एक चोथो मनुष्य छे तेने तो सारा विषय ते अतिशय नरसा लागे छे, तेने केवो जाणवो? अने ते देहने मूकशे त्यारे शी गतिने पामशे? अने ते शा साधने करीने एवो थयो छे? ते कहेवुं. एवी रीते चार प्रकारना जीवनां रूप अने ते शी शी गतिने पामशे अने ते शा उपाये करीने उर्ध्व—गतिने पामे? एवी रीते चार तेरी बार प्रश्न थया तेनो उत्तर करो."

पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए उत्तर करवा मांडयो पण थयो नहीं. पछी महाराज बोल्या जे "एनो उत्तर अमे करीए जे जे जेवा तेवा नरसा विषयने मुढपणें भोगवे छे अने तेमांथी कोईने मुट्ठी अन्न आपतो नथी तेने तो पामर जीव जाणवो अने तेनो देह छूटशे त्यारे ते चोराशीमां जशे अने तेने कागडा, कूतरा, गधेडादिकनो अवतार आवशे, केमके

तेणे मनुष्यदेहे करीने भूंडा विषयने प्रीतिए करीने भोगव्या छे अने तेमांथी कोईने दान, पुन्य पण कांई कर्युं नथी. माटे तेने परमेश्वर कागडा, कूतरादिकनो देह धरावशे. अने ते देहे करीने पण विष्टादिक नकारा विषयने सारा मानीने प्रीतिए करीने भोगवशे अने तेमां आनंद मानशे. अने एवा जे पामर जीव तेनुं पामरपणुं टळ्यानो ए उपाय छे जे तेने भगवान के भगवानना संतनो संबंध थाय अने तेना मूख थकी कर्मकांडनुं श्रवण करे अने ते कर्मनां फळ शास्त्रमां कह्यां छे तेनो लोभ देखाडीने कर्मने विषे आस्था बंधावे तो ते जीव पामर मटीने विषयी थाय छे. माटे सत्पुरुषना संगे करीने कर्मकांडने विषे निष्टा बेसे तो तेनुं पामरपणुं टळी जाय. अने ते कर्मफळने लोभे करीने विषयी थाय छे.

अने जे जीवने नरसा विषय गमता न होय अने सारा विषय उपर प्रीति होय अने उत्तम सारा विषयने भोगवीने आनंद पामतो होय अने वळी सारा विषय पोताने प्राप्त थाय तेने अर्थे,दान, पुन्य, जप, तपादिक साधन करतो होय तेने विषयी जाणवो. अने तेनो देह छूटशे त्यारे ते देवादिक लोकने पामशे अने कां आलोकमां मोटा राजाने घेर अथवा मोटा गृहस्थ शाहुकारने घेर तेनो जन्म थशे. अने तेने जे सारा विषय उपर प्रीति छे ते टळीने सारा–नरसा विषय समान थाय तेनो तो ए उपाय छे जे सत्पुरुषना संग थकी देह-आत्मानो विवेक पामे अने पोताने आत्मारूप माने. ते आत्मा केवो छे? तो अखंड छे, पूर्ण छे, अविनाशी छे, अमर छे, अजर छे, अच्छेद छे,अभेद छे, सुखरूप छे, सत्तारूप छे, प्रकाशवान छे, ज्ञानरूप छे अने व्यापक छे; एवो आत्मा छे. ते आत्माने पोतानुं रूप मानीने ते आत्माथी नोखो एवो जे देह अने ते देह संबंधी पदार्थ तथा पंचविषय तथा देवादिकना लोकभोग

ते सर्वे नित्य, निमित्त अने प्राकृत प्रलयमां नाश थई जाय छे अने मिथ्या स्वप्नवत् छे, माटे तेमां प्रीति करवा योग्य नथी.' एवी रीते विचार करीने सत्पुरुष अने सत्शास्त्र थकी ज्ञानने दृढ करे तो तेने सारा–नरसा विषय समान थई जाय.

अने जेने सारा–नरसा विषय समानपणें वर्तता होय तेने मुमुक्षु जाणवो. अने ते मुमुक्षु ज्यारे देह मूकशे त्यारे ते बद्रीकाश्रममां तथा श्वेतद्वीपादिक धामने पामशे अथवा आलोकमां पंचविषयना त्यागी अने आत्मारूप थईने परमात्मानी एकांतिक भक्ति करता होय एवा जे संत तेना समुहमां देह धरे छे. अने ते मुमुक्षुने मुक्त थवानो ए उपाय छे जे तेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत तेनो संबंध थाय अने ते थकी ज्ञानने पामे अने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो उत्तमानिर्विकल्प निश्चय थाय छे. अने ते प्रत्यक्ष भगवान अने संतना मुख थकी चार प्रकारना प्रलयनो विचार सांभळीने उत्तम वैरागने पामे. अने माहात्म्ये सहित प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रेमलक्षणा भक्ति दृढ करे तो ते आत्मा महा मुक्त थाय छे अने तेने मायिक उत्तम पंचविषय ते अतिशय नकारा अने दुःखरूप थई जाय अने उतरता विषय थकी पण उतरता थई जाय. केम के जेवा तेवा विषय वडे करीने तो देह निर्वाह करे छे अने उत्तम विषयने तो भक्तिमां विघ्न करनारा जाणीने तेने विषे शत्रुपणुं थई जाय छे. अने ते उत्तम पंचविषयने पापरूप जाणीने तेनुं कोई दहाडे ग्रहण करे ज नहीं. अने भगवान अने भगवानना संतनो अतिशय महिमा समजीने पोते त्यागी थयो होय तो पण देहे करीने मन, कर्म, वचने भगवान अने भगवानना संतनी सेवामां जोडाई जाय. अने गृहस्थ होय तो पोतानुं तन, मन, धनादिक सर्वे पदार्थ तेने करीने भगवान अने भगवानना संतनी सेवा जेम घटे तेम करे अने भगवान परायण वर्ते ते महा मुक्त थाय

छे. अने एवो जे मुक्त ते तो छते देहे ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामी रह्यो छे."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १६९ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत १७० विषय :-प्रत्यक्ष सत्पुरुषमां जोडावाथी कल्याण थाय छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२१ ना अषाड वदि १३ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये भक्त वीरजी खीमाने घेर उगमणें वार ओरडानी ओशरीमां ढोलिया उपर गादीतकिया बिछावीने विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने गुलाबना पुष्पना आभूषणो सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्न :-पछी महाराज बोल्या जे "सर्वेने एक प्रश्न पूछीए छीए जे एक परोक्षपणें भगवाननुं भजन करे छे अने एक प्रत्यक्ष भगवाननो आशरो करीने तेनुं भजन करे छे; ते बे बरोबर छे के कांई फेर छे ?" पछी विरजी भक्ते कह्युं जे "फेरतो घणोक छे, केमके प्रत्यक्ष विना ज्ञान कोण आपे ? अने ज्ञान विना मोक्ष पण थाय नहीं. ते शास्त्रमां कह्युं छे जे 'प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत मळ्या विना कल्याण थाय नहीं.' अने जो परोक्षपणें कल्याण थतुं होय तो वारे वारे भगवानने अवतार शा सारु लेवा पडे ? अने परोक्ष भगवान थाय छे त्यारे तो पंचविषयनी प्रवृत्ति अतिशय थाय छे अने विषयनी प्रवृत्तिए करीने कल्याणनो मार्ग बंध थई जाय अने जीवनी मति भ्रष्ट थई जाय छे. अने मुमुक्षु जीव होय तेने एटली आस्था रहे छे जे 'भगवान छे ते मनुष्यावतार धारण करे छे.' अने तेने जो शास्त्रनुं ज्ञान होय तो धर्ममां

रहे अने जो गवडगंद होय तो विषयी जीव एने धर्ममांथी पाडी नाखे छे. माटे प्रत्यक्ष भगवाननुं भजन करे ते घणो श्रेष्ठ छे."

पछी महाराज बोल्या जे "ठीक उत्तर कर्यो. केमके प्रत्यक्ष भगवान अने तेना संत थकी ज जीवनुं कल्याण थाय छे, केमके माया पर एवुं ज अक्षरधाम तेने पामे त्यारे मोक्ष थाय छे; ते तो 'माया पर सत्गुरु मळे त्यारे माया पर थवाय छे. पण ते विना माया पर थवाय नहीं.' ए सर्वे शास्त्रनो सिद्धांत छे. अने परोक्षपणें जे जे आस्था राखीने भगवाननुं भजन धर्ममां रहीने करे छे तेने ज प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत ओळखाय छे, पण पापी के आसुरी जीवने प्रत्यक्ष भगवान अने संत ओळखाता नथी. अने ए तो जेणे घणाक जन्म सुधी परोक्ष भगवाननी भक्ति करी हशे तेने ज प्रत्यक्ष भगवान अने संतनो संबंध थाय छे. जेम उनाळे खेतरमां खेड करे छे अने खातर नाखे छे तेने ज चोमासे नीपजे छे, तेम अनेक जन्मना शुभ संस्कार जेने होय तेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे."

प्रश्नः– एम कहीने वळी महाराजे प्रश्न पूछ्युं जे "प्रत्यक्ष भगवानने विषे केवी समजणे करीने जोडावुं जे तेने कोई रीते प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो वियोग कोई काळे थाय ज नहीं ?" पछी तेनो उत्तर पोते ज कर्यो जे "जीवने पोताना कल्याणनो स्वार्थ मनाय जे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत विना जीवनुं कल्याण बीजा कोई थकी थाय ज नहीं. अने जो मनुष्यदेहे करीने मारा आत्मानुं कलणाण नहीं थाय तो चोराशीमां जन्म-मरणनां अपार दुःख भोगववा पडशे. माटे प्रत्यक्ष भगवान अने संतमां दृढ प्रीति करीशुं तो ज ए सर्वे दुःख टळीने परम मोक्षने पामीशुं. एवी रीते कल्याणनो स्वार्थ जेने मनाय छे तेने प्रत्यक्ष भगवानमां जोडावुं कांई कठण पडतुं नथी.

जेम मृगलाने शब्दमां रस मनाणो छे तो तेने पारधी घंटाल वगाडीने प्राणने काढे छे, तो पण ते शब्दने मूकी शकतो नथी. तेनी पेठे प्रत्यक्ष भगवान अने संतना शब्दमां भगवानना भक्तने जोडावुं. केमके पारधीना घंटालना शब्द तो मृगलाना प्राणने काढे एवा छे तो पण तेने मृगलो मूकी शकतो नथी, तो प्रत्यक्ष भगवान अने संतना शब्द तो जन्म-मरणनां महा दुःखने मटाडीने अविनाशी एवुं जे पोतानुं अक्षरधाम तेने पमाडे एवा छे. माटे भगवान अने भगवानना संतना शब्दमां तो अतिशय जोडाई जवुं अने अति जतन करीने अंतरमां उतारीने राखवा. अने तेमज प्रत्यक्ष भगवानना चरणारविंदना स्पर्शमां अतिशय जोडावुं, केमके पूर्वे पण मोटा मोटा मुनि तेणे पण चरणारविंदनी सेवा मागी छे. ते भगवानना स्पर्शमां केवी रीते जोडावुं ? तो हाथीने जेम स्पर्शनो विषय छे ते स्पर्शनी आसक्तिए करीने अजाडीमां पडीने प्राणने खोवे छे. तेम भगवानना भक्तने भगवानना स्वरूपमां जोडावुं, केमके जे जे भगवानना स्वरूपमां जोडाय छे ते तो ब्रह्मरूप थईने भगवानना धामने पामे छे.

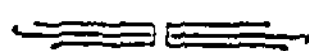
—अने तेवी रीते भगवानना रूपमां जोडावुं, केम के भगवानना दर्शनना एक निमिषना सुखनी बरोबर अनंतकोटी ब्रह्मांडना सुख भेगां करीए तो पण ते सुखना लेशनी बरोबर थाय नहीं. ते भगवानना रूपमां केवी रीते जोडावुं ? तो जेम पतंगीयाने रूप विषयमां प्रीति छे, ते अग्निमां पडीने पोताना प्राणने काढे छे, पण ते रूप विषयने देखीने रही शकतो ज नथी. तेनी पेठे भगवानना भक्तने भगवानना रूपमां जोडावुं. अने वळी प्रत्यक्ष भगवाननो जमेलो जे महा प्रसाद तेना रसमां अतिशय प्रीतिए करीने जोडावुं, केमके भगवाननो प्रसाद छे ते तो अनंत जन्मना पापने तत्काळ नाश करे एवो छे. माटे बीजा सर्वे रसनो त्याग करीने भगवानना ज एक रसमां जोडावुं.

अने तेवी ज रीते जगतना गंधनो त्याग करीने भगवान अने भगवानना संतने चड्यां जे चंदन, पुष्पादिक तेनो सुगंध तेमां प्रीति करवी. अने जे जे प्रत्यक्ष भगवाननी प्रसादी, चंदन, पुष्पादिकनो सुगंध तेमां जोडाय छे तेने मायानुं आवरण टळी जाय छे. अने छते देहे ब्रह्मरूप थई जाय छे. ते केवी रीते भगवाननी प्रसादी सुगंधमां जोडावुं? तो जेम भमरो कमळनी सुगंध लेवा सारु कमळमां पेसे छे. पछी ते कमळ बिडाई जाय छे तेणे करीने भमराना प्राण जाय छे, पण ते गंधने मूकी शकतो नथी. अने ते भमरो समर्थ तो एवो छे के मोटा मोटा लाकडा फाडी नाखे छे, तो पण गंधनी वासनाए करीने प्राणने खोवे छे. तेम तेवी रीते भगवानना भक्तने भगवाननी प्रसादी, सुगंधमां जोडावुं. अने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपमां जोडातां कोईनी शंका राखवी नहीं.

त्यारे कोईने एम शंका थाय जे 'एवी रीते प्रत्यक्ष भगवानमां जोडाईए तो लोकनिंदा करे ते केम खमाय?' तो तेनुं एम छे जे जो तमे प्रत्यक्ष भगवानमां नहीं जोडाओ तो चोराशीमां जशो अने त्यां भूंडा भूंडा अवतार धरवा पडशे अने ते अवतारमां अपार दुःख सहेवां पडशे. ते कूतरानो आवशे त्यारे कूतरीना पेटमां रहेवुं पडशे अने कूतरीनुं धावण धाववानुं थशे अने कूतरीना कहेवाशो अने कूतरो बाप थशे. अने तेमज गधेडीने पेट जन्म लेवो पडशे त्यारे गधेडीना कहेवाशो. ए आदिक घणांक दुःख सहेवां पडशे, तो प्रत्यक्ष भगवाननो आशरो करतां कोईक पापी जीव जो कांईक निंदाना शब्दो बोलशे तेना भय थकी डरीने भगवानना स्वरूप थकी शा सारु छेटे रहीए. अने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत जीवने मळवा ते तो अति दुर्लभ छे. अने ते दुर्लभ समो पोताने प्राप्त थयो अने जे छेटे रहे छे ते तो अतिशय दुर्भागीयो छे अने तेने गवडगंद जाणवो. अने जे जे प्रत्यक्ष भगवानने भजतां

तेने वारे ते जेवो कोई जीवनो शत्रु नथी, केमके बीजा शत्रु तो देहना सुखनो नाश करे अने ते भगवानने भजतां वारे ते तो आत्माना अविनाशी सुखने नाश करे एवा छे. माटे पोताना गुरु कहेवाता होय तथा सगां, संबंधी होय ते भगवान भजवामां वारे तो ते कोईनुं न मानवुं अने सर्वे प्रकारे प्रत्यक्ष भगवानमां जोडावुं. एम समजे ते बुद्धिमान छे अने ते विनाना सर्वे मूरख छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत १७० समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत १७१ विषय :—तृष्णा टाळवानो उपाय

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२१ ना श्रावण सुदि १ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये भक्त वीरजी खीमाने घेर उगमणां वारना ओरडानी ओशरीमां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता, सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्या हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराजनी संध्या आरती थया पछी सर्वे भक्तजनो उपर कृपादृष्टि करीने महाराज बोल्या जे "अतिशय अगम्य अने अतिशय दुर्लभ एवी जे वात ते आतिशय सुगम अने सुलभ थई जाय ते वात कहीए छीए. तेमां अगम्य ते शुं ? तो जीवने तृष्णा टाळवी अने भगवानना धाममां जवुं एज आतिशय कठण काम छे अने भगवानना धाममां जतां एक तृष्णा ज आडी आवे छे. अने जो एक तृष्णा टळे तो जीव भगवानना धामने साक्षात्कार पामी जाय.

ते तृष्णा केवी छे ? तो आतिशय झींणी छे अने सूक्ष्म छे अने वळी तुच्छ जेवी छे, पण जीवने अज्ञाने करीने जे जे विषयनी तृष्णा होय अने ते विषय तेने न मळे तो तेने ते विषयनी कल्पना थवा मांडे; ते आखा ब्रह्मांडना विषयनी कल्पना करे तो पण तेने तृप्ति थाय नहीं. पछी ते जीव महा दुःखियो थयो थको रघवायो फरतो फरे अने तेने कोई एम कहे जे 'तुं तृष्णा मूकी दे तो महा सुखियो थईश.' त्यारे ते एम कहे जे 'आखा ब्रह्मांडना विषयने भोगवुं तो पण मारे तृप्ति थाय नहीं एवी मारे तृष्णा छे, तेनो माराथी केम त्याग थाय ?' एम जाणीने कायर थईने भगवानना धामने पामवामां जीव निराश थईने बेसे छे. एवुं आतिशय कठण तृष्णानुं आवरण छे.

जेम कोईक महा वज्रनो मोटो गढ ऊंचो आकाशना छेडा सुधी होय अने हेठो ठेठे पाताळ सुधी ऊंडो होय अने लांबो पण पृथ्वीना छेडा सुधी बे कोरे होय अने पांच हाथनो पाहोळो तो पायो होय. अने ते गढ कोई रीते पडे के कपाय के खोदाय एवो न होय. अने ते गढनी मांहेनी कोरे अग्निनी लाय बळती होय अने वळी तेमां मोटा मोटा सिंह, सर्प, गांडा हाथी रहेता होय अने तेमां जीव महा दुःख पामतो होय. पछी ते दुःखने टाळवाने अर्थे जीव नासवानुं करे ते गढने ऊंचु जुए तो आकाश सुधी अने हेठुं खोदे तो अंत आवे नहीं अने बे कोरे अडखे-पडखे नासवा जाय तो तेनो पार आवे नहीं. पछी ते जीव महा दुःखने पामतो थको निराश थईने पृथ्वी उपर पडे. पछी तेने कोईक ईश्वर इच्छाए करीने ते गढनी बहारनो पुरुष त्यां आवीने एम कहे जे 'हे भाई ! तुं महा दुःखमां शीद पड्यो छुं; चालने आ गढनी बहार, त्यां तो महा सुख छे अने दुःखनो तो त्यां लेश नथी. अने छेटुं पण कांई नथी पांच हाथनो गढ ज आडो छे. अने ते गढमां एक गडक बारी छे ते

वारीमां गडकीने गढनी बाहर नीसरी जवाय छे.' पछी ते वारीमां गडकीने गढनी बहार गयो एटले ते पुरुष महा सुखियो थयो.

ए तो दृष्टांत अने एनुं सिद्धांत ए छे जे जीवने पंचविषयनी तृष्णारूपी भगवानना धाम आडो वज्रनो गढ छे. अने ते तृष्णाए करीने विषयनी कल्पना थाय छे. तेमां स्त्रीनी तृष्णा होय अने स्त्री पोताने न मळे त्यारे तेने स्त्रीनी कामरूपी कल्पना थवा मांडे. अने ते कल्पनाना संकल्पे करीने जीवनी मति अंध-धंध सरखी थई जाय छे. जेम लीलागर के दारू पीये अने तेने केफे करीने पोतानुं भान भूली जवाय छे, तेम स्त्रीनी कल्पनाए करीने आत्माने पोताना स्वरूपनुं भान रहेतुं नथी तथा धर्म-अधर्मनुं पण तेने भान रहेतुं नथी. अने ते कामनारूपी कल्पानाए करीने बधा विश्वनी स्त्रीओनी कल्पना करवा मांडे अने महा पातकी अने चंडाळना भावने पामी जाय. अने एवी रीते स्त्रीने पुरुषनी तृष्णा होय अने तेने पुरुष न मळे तो तेने पुरुषनी कामनारूपी कल्पना थवा मांडे अने ते कल्पनाए करीने बधा विश्वना पुरुषनी कल्पना करे अने धर्म-अधर्म कांई जुए नहीं अने ते वेश्याना भावने पामी जाय छे तो पण तेने तृप्ति थाय नहीं. अने एवी कल्पनाए करीने स्त्री-पुरुष बेय घोर नरकमां जाय छे अने महा दुःखने पामे छे.

—पछी ते जीवने जो सत्पुरुषनो आशरो थाय अने तेनी आज्ञाए करीने कामनी कल्पनानो त्याग करीने संतोषरूपी वारीनुं ग्रहण करे तो ते जीव सर्वे दुःख थकी मूकाईने अपार सुखने पामे. ते केवी रीते कामनी कल्पनानो त्याग करे ? तो जेने वासना होय तेने परमेश्वरे एक एक पुरुषने एक एक स्त्रीनी आज्ञा आपी छे अने स्त्रीओने पण एक एक पुरुषनी आज्ञा आपी छे. अने ते एक पुरुषने एक स्त्री होय तो तेने बीजी स्त्रीनी इच्छा रहेती नथी. अने जीवने कामना पण एटली

ज छे जे एक पुरुषने एक स्त्री जोईए अने एक स्त्रीने एक पुरुष जोईए अने तेणे करीने कामनी कल्पना समी जाय छे.

अने तेमां पण जेने आत्मानुं कल्याण करवानो खप होय तेणे तो पोतानी एक स्त्री होय तेनो पण व्रतादिकने दिवस त्याग करवो अने तेमां संतोष राखवो जे 'कोटी युग थया जीवे पुरुषना देह धरीने अनंत स्त्रीओ भोगवी छे अने स्त्रीना देह धरीने अनंत पुरुष भोगव्या छे, तो भोगने पण ते थकी जीवने-स्त्रीनेके पुरुषने-काम भोगनी तृप्ति थई नथी. अने हजी कोटी युग सुधी भोग भोगवशे तो पण तृप्ति थवानी नथी.' एम जाणीने संतोष राखीने कामनी कल्पनानो त्याग करवो.

अने जेने स्त्री न होय एवा जे गृहस्थाश्रमी पुरुष तथा जेने पुरुष न होय एवी जे विधवा बाईओ तेणे पण पूर्वे कह्यो जे विचार तेने दृढ करवो अने मनमांथी कामनानी कल्पनानो त्याग करवो अने संतोषने पामवुं. एवी रीते समजे तो तेने कामनानी तृष्णारूपी दुःख ते टळी जाय छे. अने सर्वे कामनाने वधारनारी कल्पना छे, माटे भगवानना भक्तने भगवानना धाममां जवुं होय तेने सावधान थईने कल्पनानो त्याग करवो अने संतोष राखीने भगवाननी आज्ञामां रहीने भगवाननुं भजन करवुं.

अने तेमज जीवने द्रव्यनी कल्पनानो उदय थाय छे, ते प्रथम तो सो-बसो रूपियानी वासना होय अने पछी तो हजार, बे हजार, लाख, दशलाख, करोड, सो करोड, अबज तथा खर्व सुधीनी कल्पना करे तो पण तृप्ति थाय नहीं. अने ते कल्पनाए करीने जीव महा दुःखने पामे छे. पछी तेने कोईक एम कहे जे 'तुं द्रव्यनी वासनाने मूकी दे अने निर्लोभी था तो तुं महा सुखने पामीश.' त्यारे ते द्रव्यनी कल्पनावाळो एम कहे जे "मारे तो आखा ब्रह्मांडना द्रव्यनी कल्पना छे ते माराथी

केम मूकाय ?" एम जाणीने महा दीनताने पामीने हारी बेसे छे. अने एम समजीने तृष्णानी झाळमां जीव बळ्या करे छे. अने तेने परमेश्वरनी दिशा तो सूझती ज नथी.

अने विचारीने जोईए तो मनुष्यने एक शेर अन्ननो खप छे अने जाडा-मोटा वस्त्रनो खप छे, ते भूख लागे त्यारे एक शेरनी भूख होय पण ते घडिक न मळे त्यारे तेनी कल्पना करवा मांडे ते आखा ब्रह्मांडना अन्ननी कल्पना करे तो पण तृप्ति थाय नहीं. अने ते एम जाणे जे 'हुं तो कोई दहाडे धराईश ज नहीं,' एवी तृष्णाए करीने कल्पनानो मोटा गढ जणाय छे अने ते गढने उलंघवाने समर्थ थतो नथी अने ते जीव महा दुःखने पामे छे.

पछी एवा दुःखिया जीवने जोईने भगवान अने भगवानना संतने दया आवे छे अने तेने कल्पना रूपी गढने ओळंगवाने अर्थे संतोष रूपी बारी बतावे छे. ते केवी रीते बतावे छे ? तो एम ज्ञान आपे छे जे 'तारे भूख लागी छे ते खावाने अर्थे एक शेर अन्न जोईए ते सारु उद्यम कर तो तने अन्न मळशे अने तुं कोई दिवस भूख्यो नहीं रहे. अने उद्यम कर्या विना तुं कल्पना करी करीने मरी जईश तो पण तने अन्न मळशे नहीं अने तृप्ति पण थशे नहीं. अने कमाईने एक शेर अन्न खाईश एटले तारी भूख मटी जशे अने तृप्ति पण थशे.' माटे संतोष राखीने उद्यम करवो अने कल्पनानो त्याग करवो. एवी रीते समजे तो ते जीवने लोभनी वासना टळी जाय छे अने जीव महा सुखियो थाय. अने जेने काम, लोभादिकनी वासना टळे छे तेने आत्मा-परमात्माने विषे प्रीति थाय छे अने ते जीव ज्ञानने पामीने भगवान भजीने भगवानना धामने पामे छे. माटे भगवानना भक्त होय तेने कल्पनानो त्याग करवो. अने सदाय संतोष राखीने भगवाननुं भजन करवुं.

अने वळी जेने सारुं सारुं खावानी वासना होय तेने ते रस खावानी कल्पना उत्पन्न थाय छे अने तेने आखा विश्वना रसने भोगववानी झाळ वृद्धि पामे छे. अने जीवनी मति अंध-धंध थई जाय छे अने सारुं-नरसुं धर्म-अधर्मने कांई गणे नहीं अने बेभान थई जाय छे. अने ते जीव जो सत्पुरुषनुं शरणुं लईने संतोषरूपी गुणनुं ग्रहण करे तो ते जीव अपार सुखने पामे, केमके आत्मा तो देहथी नोखो छे अने पोते ज सुखरूप छे, अखंडानंद छे अने ब्रह्मानंद छे. अने प्राणवायु तो जेवुं तेवुं आहार मात्रे करीने तृप्त थाय छे. माटे ईश्वरनी इच्छाए करीने पोताना प्रारब्ध प्रमाणे ज प्राप्त थाय तेणे करीने संतोष पामवो. अने च्हाय तेवा सारा रस खाय तो पण ते गळाथी हेठुं उतरतां वेंत विष्टा थई जाय छे. माटे भगवानना भक्तने एवी नकारी वस्तुमांथी प्रीतिनो त्याग करीने भगवानना स्वरूपमां प्रीति करवी. अने भगवानमां जे प्रीति करे छे ते जीव अपार सुखने पामे छे.

अने तेमज देह अने देहना संबंधीना स्नेहरूपी कल्पना उदय थाय छे अने ते स्नेहनी कल्पनाए करीने जीव अतिशय संतापने पामे छे. केमके जीवने जे जे पदार्थमां अतिशय प्रीति होय अने ते ते पदार्थ नाश पामी जाय त्यारे तेने सारु जीव अतिशय कल्पना करे ते जो पोतानी स्त्री मरी गई होय तो तेने वांसे लाज-मरजादाने मूकीने निर्लज थईने रोया करे छे. अने तेमज स्त्री पण पोताना धणीनी केडे निर्लज थईने रोया करे छे. अने तेमज मा-बाप, सगां-संबंधी आदिक जेमां जेमां प्रीति होय तेने वांसे रोया करे छे. अने छाती कूटी-कूटीने अतिशय संतापने पामे छे अने मतिमां पण तेने भ्रमणां थई जाय छे. अने जो ते जीव सत्पुरुष थकी ज्ञानने पामीने संतोषनुं ग्रहण करे तो ते अपार सुखने पामे अने कल्पना रूपी झाळ सर्वे समी जाय.

ते केवी रीते सत्पुरुष संतोषरूपी गुण आपे छे ? तो 'आत्माने कोई सगुं-संबंधी नथी अने ए तो सौ सौने स्वार्थे भेगां थयां छे अने सौ सौनी आवरदा आळी रहेशे त्यारे ते कोईना राख्या रहेता नथी अने मारा पण आयुष्यनो क्यां निराधार छे' एम समजीने कल्पनानो त्याग करीने संतोषनुं ग्रहण करीने भगवानने आत्माना साचा हीतकारी जाणीने अखंड भगवाननुं भजन करवुं.

अने माननी पण जीवने कल्पना उदय थाय छे त्यारे ते जीव अपार क्लेशने पामे छे जे 'हुं उत्तम कुळवाळो छुं, हुं पंडित थाउं, हुं राजा थाउं,' एवी रीते कोटी ब्रह्मांडना मान मेळवानी जीव कल्पना करे छे अने ते मळवानुं तो छे नहीं. माटे जीव महा दुःखने पामे छे. अने भगवाननो मार्ग तो तेने सूझतो ज नथी, केमके भगवानने मार्गे चालतां तो काम, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान तेनी वासनानो त्याग करवो जोईए छीए, त्यारे भगवानने मार्गे चलाय छे. ते तो जे जीव कामादिकनी कल्पना करे छे ते जीव तो एम जाणे छे जे 'माराथी तो कामादिकनो केम त्याग थाय ?' एम जाणीने महा कायर थई जाय छे.

माटे जेने पोताना आत्माना कल्याणनी इच्छा होय तेने तो सत्पुरुषनो आश्रय करीने ते थकी ज्ञान पामवुं. अने जे ज्ञानने पामे तो ते कल्पना रूपी एवो जे वज्रसार गढ तेने संतोषरूपी वारीए करीने ओळंगी जाय छे अने तेने दुःख सर्वे मटी जाय छे अने अपार सुखने पामे छे. माटे जेने महा सुखिया थवुं होय अने भगवानना पदने पामवुं होय तेने तो पंचविषयनी कल्पनानो त्याग करवो. अने सदाय संतोष राखवो अने भगवाननी आज्ञामां रहीने भगवाननुं भजन करवुं अने भगवानना एकांतिक संतनो अखंड समागम करवो अने विषयनी वासनावाळा होय तेना संगनो त्याग करवो एज जीवनी हीतवार्ता छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत १७१ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत १७२ विषयः—कल्पना टाळवानो उपाय

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२१ नाश्रावण सुदि ३ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये भक्त वीरजी खीमाने घेर उगमणें वार ओरडानी ओशरीमां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां पुष्पना हार धारण कर्या हता. कान उपर गुच्छ शोभी रह्या हता अने पाघमां तोरा लटकता हता. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी महाराजनी संध्या आरती थया केडे महाराज बोल्या जे "सर्वेने अमे पूछीए छीए जे काले नहीं अने त्रीजे दिवसे आ-वखते शी वात करी हत्ती ? ते कही." पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए कह्युं के "कल्पनानो त्याग करवो अने संतोषनुं ग्रहण करवुं, ए वात थई हती."

पछी महाराज बोल्या जे "कल्पना जेवुं कोई दुःख नथी अने संतोष जेवुं कोई सुख नथी. जेम रात्रीनुं अंधारुं अपार छे, ते अंधारामां दिवसनो प्रकाश लेशमात्र होय नहीं अने अपार एवुं जे रात्रीनुं अंधारुं ते ज्यारे दिवस उदय थाय त्यारे ते अंधारुं लेशमात्र रहेतुं नथी. तेम रात्रीना अंधारारूप जे कल्पनानुं दुःख ते अपार छे अने कल्पनाने विषे सुख जे ते लेशमात्र नथी. एवुं अपार दुःखनुं मूळ कल्पना छे पण जे जीव सत्पुरुषनो आश्रय करीने संतोषने पामे छे तेने कल्पनानुं दुःख लेशमात्र रहेतुं नथी.

हवे एवी जे कल्पना ते टळी जाय अने संतोष आवे तेनो शो उपाय छे ? अने वळी संतोष आवीने पाछी कल्पना उदय थाय छे ते शाने करीने थाय छे ? अने ते केवी समजणने समज्यो हतो ? अने एकने

संतोप आवे ते पाछो संतोष कोई काळे टळे नहीं अने तेने कल्पना उदय थाय ज नहीं तेनो शो उपाय छे" ? ते कहो.

पछी धर्मानंद स्वामीए कह्युं जे देहरूप थईने कल्पनानो त्याग करे छे अने संतोप राखे छे तेने पाछी कल्पना उदय थाय छे अने जे धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति तेने सिद्ध करीने ब्रह्मरूप थईने जे कल्पनानो त्याग करे छे अने संतोपने पामे छे तेने पाछी कल्पना कोई काळे उदय थती ज नथी."

पछी महाराज बोल्या जे "ए उत्तर तो खरो पण देहाभिमानी कल्पनानो त्याग करे अने संतोप राखे तो पण तेने पाछी कल्पना उदय थाय ए तो ठीक पण जे पोताने देहथी नोखो आत्मरूप मानतो होय जे 'हुं आत्मा छुं, अखंड छुं अने सुखरूप छुं, ते मारे कांई जोईतुं नथी,' एम समजीने कल्पनानो त्याग करीने संतोष पाम्या होय पण जो तेने भगवान प्रत्यक्ष रामकृष्णादिकनी उपासना अने भक्ति न होय तो ते आत्मनिष्ट पुरुपने पण पाछी कल्पना उदय थाय छे. ते केवी कल्पना करे छे? तो जगतना देहाभिमानी जीवोना करतां लाख घणी वधारे कल्पना करे छे. केमके देहाभिमानी जीव होय ते तो कांईक पाप थकी बीने थोडी कल्पना करे, अने उपासना विनानो एवो जे आत्मनिष्ट पुरुष ते तो एम जाणे जे 'हुं आत्मा छुं. ते आत्माने कांई अडतुं नथी,' एम जाणीने संतोप राखे त्यां सुधी तो सारु पण तेने अंते जतां उपासना विना संतोप रहेतो नथी अने तेने विपयनो संग थाय तो पाछी कल्पना उदय थाय छे. अने ते एवी कल्पना करवा मांडे के धर्म-अधर्म, पाप-पुन्य कांई गणे नहीं अने ते महा पातकी थई जाय छे. ते पछी कोई दहाडे कल्पनानो त्याग करवाने समर्थ थतो नथी अने ते मरीने घोर नरक मां जाय छे.

માટે જેને પોતાના આત્માના કલ્યાણની ઇચ્છા હોય તેને ભગવાનની ઉપાસના દૃઢ કરીને રાખવી અને ભગવાનની ભક્તિ કરવી અને વિષયના સંગનો ત્યાગ કરવો અને પોતાને આત્મારૂપ માનવું. એવી રીતે સમજીને તે પ્રમાણે વર્તે તો તેને કલ્પના ટળી જાય છે અને મહા સુખને પામે છે. તે શાસ્ત્રમાં પણ કહ્યું છે જે

'સંગ ત્યાગી સુખિ ભવેત્ ।'

માટે વિષયના સંગનો ત્યાગ કરવો. અને જે વિષયના સંગનો ત્યાગ કરે છે તેને સહેજે કલ્પના ટળી જાય છે અને તેને અંતરમાં મહા સંતોષ ઉદ્ય થાય છે અને ચૌદ લોકનાં સુખ તેને કાગવિષ્ટા તુલ્ય થઈ જાય છે. કેમકે જે જે પદાર્થનો આપણને સંગ છે તે તે પદાર્થની કલ્પના થાય છે પણ જો આપણે દારૂ, માટી આદિક દુરાચરણના સંગનો ત્યાગ કર્યો છે તો તેની કલ્પના કોઈ દહાડે થતી નથી. તેમ જે જે ત્યાગી સાધુ છે તેને દેહ પર્યંત ગળ્યા, ચીકણાદિક, રસને ખાવાના સંગનો ત્યાગ કર્યો છે તો તે રસને ખાવાની કલ્પના કોઈ દહાડે થતી નથી અને બીજા ગૃહસ્થને પણ એકાદશી, રામનવમી આદિક વ્રતને દિવસ પણ અન્ન ખાવાની કલ્પના થતી નથી અથવા ચતુર્માસમાં માસ બે માસ ગળ્યા ચીકણાના જેણે નિયમ લીધા હોય તો તેટલા દિવસ તેને કલ્પના થતી નથી અને જેને જે પદાર્થનો સંગ હશે અને કોઈ વાતનું નિયમ નહીં હોય તેને અનંત કલ્પના થયા કરતી હશે અને જેણે નિયમ લીધા હોય અને તે કલ્પના કરે છે તેને તો મહા પાપી જાણવો અને તેના નિયમ પણ રહેવાનાં નથી. અને કદાપિ કલ્પનાનો ત્યાગ કર્યો હોય પણ જો તે વિષયનો સંગ કરવા માંડે તો તેને પાછી કલ્પના ઉદ્ય થાય છે. તે ગીતામાં ભગવાને કહ્યું છે શ્લોક—

'સંગાતસંગ જાયતે કામાત્, કામાત્ ક્રોધોऽમિ જાયતે ॥'

अर्थः—'विषयना संग थकी काम जागे छे अने काम थकी क्रोध थाय छे अने क्रोध थकी मोह थाय छे अने मोह थकी बुद्धिनो नाश थाय छे अने बुद्धिने नाशे करीने आत्मानो नाश थाय छे, कहेतां ते आत्मा कल्याणना मार्ग थकी पडी जाय छे.'

माटे जेने पोताना आत्मानुं रूडुं इच्छवुं होय तेने पोत पोताना वर्णाश्रमना धर्म वेदमां कह्या होय तेने दृढ करीने पाळवा अने विषयना संगनो त्याग करवो. अने जे तेमां भोळपण राखशे अने विषयनो संग करशे तो तेनो धर्म जरूर रहेशे नहीं अने ते कल्याणना मार्ग थकी जरूर पडी जशे. ते उपर एक वार्ता छेः—

एक नानी बाळकी हती तेने एक ब्राह्मण साथे हेत थयुं. ते ब्राह्मण अवस्थाये नेवुं-पंचाणु वर्षनो हतो अने वनमां नदीने तीरे तप करतो हतो. तेनी पासे ते बाळकी रही अने तेने ऋषिए ज्ञान आप्युं अने तेने वैराग उपज्यो अने ते परणी नहीं. अने वीस वर्षनी थई. पछी ते बाई मांदी थई ते मरण तुल्य थई गई. पछी ते ऋषिए साजी करवा सारु वैदने तेडाव्यो. ते वैद पण अवस्थाए वीस वर्षनो हतो अने ते बाळकी पण वीस वर्षनी थई त्यां सुधी कोई पुरुषनो स्पर्श करेलो नहीं, अने पोते मरण तुल्य थई हती तो पण ते वैदे हाथमां नाडी जोवा सारु कांइ झाल्युं त्यां तो ते बाईने मनमां काम उत्पन्न थयो अने तेने एम विचार उठ्यो जे आटला दिवस में पुरुष न कर्यो ते खोट खाधी अने सुख तो पुरुषमां ज छे.' एम विचार करतां करतां तेनो देह छूटी गयो. पछी तेने कल्पनाने पापे करीने वेश्याने घेर जन्म थयो अने तेने घणाक पुरुष कर्या. माटे विषयनो संग छे एज कामनानी कल्पनानुं कारण छे.

ते सारु अमारा आश्रित होय अने जेने पोताना आत्मानो मोक्ष

करवो होय तेने बुद्धि राखवी. अने जेने बुद्धि राखवी होय तेने कोई मायिक पदार्थमां मोह पामवुं नहीं, कहेतां प्रीति करवी नहीं अने जेने मोह टाळवो होय तेने कोई विषय-पदार्थनो भंग थाय तो पण क्रोध करवो नहीं अने जेने क्रोध टाळवो होय तेने कामादिक भोगनो त्याग करवो अने जेने कामादिक भोगनो त्याग करवो होय तेने विषयना संगनो त्याग करवो अने जे विषयना संगनो त्याग करे छे तेने विषयनी कल्पना मात्र टळी जाय छे अने महा संतोषने पामीने परम सुखियो थाय छे.

माटे एवी रीते समजीने प्रत्यक्ष भगवाननी उपासना अने भक्ति दृढ करीने पोते आत्मारूप थईने, धर्ममां दृढ रहीने, वैरागने पामीने सर्वे लोक-भोगादिक पदार्थ थकी संतोष पामवो अने जेने करीने काम-लोभादिक उदय थाय एवा जे पदार्थ तेना संगनो त्याग करीने कल्पनानो त्याग कर्यो छे तेने पाछी कोई काळे कल्पना उदय थती ज नथी.

माटे अमारा आश्रित होय तेने विषयना संगनो त्याग सर्वे प्रकारे करवो. तेमां जे गृहस्थाश्रमी पुरुष होय तेने पोतानी स्त्री विना बीजी कोई स्त्री साथे तथा पोतानी मा, बहेन, दीकरी साथे बे जणांने एकांतमां न रहेवुं अने बाईओ हरिभक्त होय तेने पण पोताना पुरुष विना कोई पुरुष साथे तथा पोताना भाई, बाप, दीकरा संगाथे बे जणांने एकांतमां न रहेवुं, तथा मंदवाड थाय अने शरीर दबाववुं पडे तो पुरुषने पुरुष पासे दबावरावबुं अने स्त्रीने स्त्री पासे चाकरी करावबी. पण पुरुषने पोतानी स्त्री विना बीजी कोई स्त्री पासे तथा पोतानी मा, बहेन, दीकरी पासे शरीर दबावरावबुं नहीं. अने स्त्री होय तो तेने कोई पुरुष पासे सूझे एवो मंदवाड थयो होय तो पण शरीर दबावरावबुं नहीं.

एवी रीते नियमने जे दृढ करीने राखशे तेनो ज धर्म दृढ रहेशे

अने धर्मे सहित अमारी उपासना अने भक्ति करशे तथा अमारा चरित्रनुं श्रवण कीर्तन करशे अने पोते देहथी नोखो आत्मारूप थईने प्रत्यक्ष परमात्माने विषे जोडाई जशे ते ज भगवाननी मायाने तरीने भगवानना अक्षरधामने पामशे, अने जे धर्मे रहित भगवाननी उपासना भक्ति करे छे तेनुं कल्याण कोई काळे थाय नहीं अने धर्म पाळतो होय तो पण तेने भगवाननी उपासना अने भक्ति न होय तो तेनुं पण कल्याण थाय नहीं. ते पण सहजानंद स्वामीए वचनामृतमां कह्युं छे जे 'भगवाननी उपासना अने भक्ति विना एकले धर्मे करीने कल्याणने इच्छे छे ते तो जेम वहाणनो त्याग करीने तुंबडा वती समुद्र तरवाने इच्छे तेना जेवो जाणवो. अने भगवाननी उपासना भक्ति करतो होय पण तेने धर्म न होय तो तेने जेम कंठमां पथरो बांधीने समुद्र तरवा जाय एवो जाणवो अने जे धर्ममां रहीने भगवाननी भक्ति करे छे अने भगवानना लीलाचरित्रनुं श्रवण कीर्तन करे छे अने भगवानना निर्वासनिक संतनो समागम अने सेवा करे छे तेने तो जेम वहाणमां बेसीने समुद्र तरवाने इच्छे एवो जाणवो.'

माटे अमारा आश्रित-बाई-भाई सर्वेने धर्ममां दृढ रहीने अमारी उपासना भक्ति करवी अने अमारा लीलाचरित्रनुं श्रवण कीर्तन करवुं अने संतनो समागम करवो एज कल्याणनो अचळ सिद्धांत छे अने सर्वोपरि सुख पामवानो उपाय छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत १७२ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत १७३ विषयः—त्रण गुण ज दुःखनुं कारण छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२१ना श्रावण वदि ४ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये पोताना मंदिरमां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्र धारण

कर्यां हतां अने सर्वे अंगमां पुष्पना आभूषण शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "जीव छे ते अखंड अने अविनाशी छे अने सुखरूप अने चैतन्य छे; पण तेने ज्यां सुधी रज, तम अने सत्त्व ए त्रण गुण तेनो संबंध छे; कहेतां त्रण गुणमां जोडाणो छे त्यां सुधी ते जीव जन्म, मरण अने चोराशीनां अनंत दुःखने भोगवे छे. माटे त्रण गुण एज दुःखनुं कारण छे केमके त्रण गुण थकी देहरूपी वृक्ष उत्पन्न थयुं छे अने वासनारूपी तेना मूळ छे अने पंचविषयरूपी जळे करीने ते देहरूपी वृक्ष वृद्धि पामे छे अने ते देह पाछो जेमांथी उपज्यो छे तेमां नाश थाय छे. केमके जेमांथी जे उपज्युं होय तेमां ते लय पामे.

अने ज्यारे देहनो नाश थाय छे त्यारे ते देह भेगो आत्मा पण नाश पाम्यो एम जणाय छे. अने ते आत्मा मरे एवो तो नथी तो पण देह नाश थाय त्यारे ते आत्मा एम जाणे जे 'हुं मरी गयो अने मने दुःख थाय छे,' एम मानतो थको वारंवार जन्म, मरण अने चोराशीमां भटक्या करे छे अने अनंत क्लेशने पामे छे. अने ते आत्मा काळ, कर्म, मायानो नाश कर्यो नाश थाय एवो नथी. तो पण काळ कर्मादिक जे त्रण गुण ते थकी बन्यो जे देह तेने विषे जीव जोडायो छे त्यां सुधी ते आत्माने काळ, कर्म जन्ममृत्युने पमाडे छे. अने जो त्रण गुण थकी बन्यो जे देह ते थकी असंगी थईने पोतानुं स्वरूप जे अक्षरब्रह्म ते रूप पोते थईने ते अक्षरब्रह्मना प्रकाशक एवा जे परब्रह्म प्रत्यक्ष भगवान तेना स्वरूपने विषे जोडाय तो ते आत्मा काळ कर्मनो नाश कर्यो नाश थाय नहीं. अने ते थकी तो काळ, कर्म पण थरथर कंपे अने ते तो काळनो पण काळ छे. अने तेने जन्ममरण टळी जाय छे.

जेम अग्नि थकी जळ थयुं छे अने ते जळने पाछुं अग्नि नाश करे छे पण जळ अग्निने नाश करी शके नहीं एवो जळ करतां अग्नि घणो बळवान छे. अने मोटा मोटा तळाव अने नदीओ तेने सूर्यनो अग्नि छे ते सुकवी नाखे छे अने ते सूर्यना अग्निने जळ नाश करी शकतुं नथी. एवो महा बळवान अग्नि छे, तो पण जो ते अग्नि सूर्यना संबंधथी जुदो पडीने पोतानुं कार्य जे जळ अने जळनुं कार्य जें काष्टादिक पृथ्वी तेमां अग्नि जोडाय छे तो ते अग्निने जळ नाश करे छे. अने ते अग्नि जो काष्टादिक पृथ्वीनो त्याग करीने पोतानुं शुद्ध स्वरूप जे सूर्य तेना भावने पामे तो जळनो नाश कर्यो ते अग्नि नाश थाय नहीं.

तेम आत्मानुं शुद्ध स्वरूप जे ब्रह्म ते थकी त्रण गुणात्मक काळ, कर्म, माया आदिक सर्वे विश्व उपज्युं छे अने पाछुं ते विश्व ब्रह्मना एक देशने विषे नाश थाय छे, पण काळ, कर्म, माया आदिक कोई ब्रह्मने नाश करवाने समर्थ नथी एवुं जे ब्रह्म ते आत्मानुं स्वरूप छे. पण ते पोताना ब्रह्मस्वरूपने भूलीने ते ब्रह्म थकी उपज्युं जे त्रिगुणात्मक पिंड, ब्रह्मांडादिक मायानो मिथ्या पड्पंच तेने विषे अज्ञाने करीने जोडायो छे तो ते आत्मा दीनताना भावने पामतो थको वारंवार नाश पामे छे अने उपजे छे अने चोराशीमां अपार दुःख भोगवे छे.

अने जो सत्पुरुषने शरणे जीव जाय अने ते थकी ज्ञानने पामीने त्रणगुणात्मक जे पिंड ब्रह्मांड तेनी वासनानो त्याग करीने पोतानुं स्वरूप जे अक्षरब्रह्म ते रूप थईने परब्रह्म एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेने विषे जोडाय तो तेने जन्म, मरण टळी जाय छे अने भगवानना धामने पामे छे.

अने ते पिंड, ब्रह्मांड आदिकनी वासनानो त्याग क्यारे थाय छे ? तो ते वासनाने वधारनारा एवा जे मायिक शब्दादिक पंचविषय तेनो

त्याग करे तथा विषयनी वासनावाळा एवा जे असत्पुरुष तेना संगनो त्याग करे तो तेनी वासना टळी जाय छे. जेम वृक्षने अने तेना मूळने वृद्धि करनारुं जळ छे ते जळ जो मूळमां पावुं बंध करे तो वृक्षनो नाश थई जाय. तेम वृक्षरूप देह छे अने तेना मूळरूप वासना छे अने जळरूप पंचविषय छे. ते विषयने भोगववे करीने देहरूपी वृक्ष अने वासनारूपी मूळीयां वृद्धि पामे छे. माटे वासनानी वृद्धि करे एवा जे मायिक जगत संबंधी पंचविषय तेनो त्याग करवो.

अने पोताना आत्माने ब्रह्मना भावने पमाडे एवा जे प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूप संबंधी जे पंचविषय तेने भोगववां, कहेतां मायिक विषयनो त्याग करीने भगवानना अने संतना शब्द सांभळवा अने भगवानना चरणनो स्पर्श करवो अने भगवान अने भगवानना संतना दर्शन करवां अने ते भगवाननी प्रसादीनो रस जमवो. अने भगवान अने भगवानना संतने चड्यां जे चंदन पुष्पादिक तेनी सुगंधी लेवी; एवी रीते मायिक विषयनो त्याग करीने भगवान अने भगवानना संत संबंधी पंचविषय भोगववा तेने करीने भगवानना स्वरूपमां जीव जोडाय छे. अने तेने त्रण गुण थकी उपज्यां जे पिंड, ब्रह्मांड तेनी वासना टळी जाय छे अने ते आत्मा ब्रह्मरूप थईने भगवानना अक्षरधामने पामे छे अने महा सुखियो थाय छे."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १७३ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत १७४ विषय :–कर्म अने अकर्मनी समज

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२१ना श्रावण वदि ५ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये पोताना मंदिरनी

जग्यामां आथमणा वारनी मेडीनी ओशरीमां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने ककुंनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराजनी आरती थया केडे महाराज कृपा करीने सर्वे सभा प्रत्ये बोल्या "जे जीव छे तेने स्वर्ग, मृत्यु अने पाताळने विषे जवुं पडे छे अने जन्म, मरण, गर्भवास अने चोराशीमां भटकवुं पडे छे अने महादुःखने पामे छे; तेनुं कारण शुं हशे? ते सर्वे जेने जेम सूझे तेम ते कहो."

पछी वीरजी भक्ते कह्युं के "वासनाये करीने जवुं पडे छे." पछी महाराज बोल्या जे "वासना तो सर्वेने सुख पामवानी छे पण तेमां दुःख थाय छे ते शाने करीने थाय छे?" पछी धर्मानंद स्वामीए कह्युं के "कर्मे करीने सुख दुःख थाय छे." पछी महाराज बोल्या जे "ए तो ठीक पण ते केवां कर्म करे तो स्वर्गमां जाय? अने केवां कर्म करे तो नरकमां जाय?" पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए कह्युं के "पुण्य कर्मे करीने स्वर्गमां जाय छे अने पाप कर्मे करीने नरकमां जाय छे." पछी महाराज बोल्या जे "एनो उत्तर एम नहीं. एनुं तो एम छे जे जे सत्त्वगुणी कर्म करे तो स्वर्गमां जाय छे अने जे रजोगुणी कर्म करे छे ते मृत्युलोकने पामे छे अने जे तामसी कर्म करे छे ते पाताळ कहेतां नरकलोकने पामे छे.

हवे एवी रीते कर्मे करीने जीव जे सुख दुःखने पामे, तेमां बंधाय ए तो ठीक पण ते कर्म करीने बंधाय नहीं एवो कोई हशे?" पछी तेनो उत्तर कोईनाथी थयो नहीं. त्यारे महाराज बोल्या जे "एनो उत्तर अमे

करीए छीए जे जे जीव देहने पोतानुं रूप मानीने ते देहने अंहकारे करीने जे जे कर्म करे छे ते ते कर्ममां जीव बंधाय छे अने ते ते कर्मनुं फळ स्वर्ग, मृत्यु अने पाताळने विषे जईने भोगवे छे. अने ते कर्म सत्पुरुषनी आज्ञामां रहीने करतो होय तो पण ज्यां सुधी देहने पोतानुं रूप मानीने करे छे त्यां सुधी ते कर्म तेने बंधन करे छे अने जे देहने पोतानुं रूप मानतो होय अने ते कर्म कांई न करतो होय तो पण तेने कर्म थयाज करे छे. केम के इंद्रियो अंतःकरण छे ते पोतपोताना आहार कर्या विना रहेता ज नथी. ते शुभ अथवा अशुभ आहार करे छे, ते कान शब्द सांभळे छे, त्वचा स्पर्श करे छे, आंखरूप जुवे छे, रसना रस चाखे छे, नासिका गंध ले छे. चित्त चिंतवन करे छे, बुद्धि निश्चय करे छे अने अंहकार अभिमान धरे छे.

एवी रीते इंद्रियो अंतःकरण पोत पोताना विषयने भोगवे छे तेने करीने जीवने कर्म लागे छे अने ते कर्मे करीने जीवने बंधन थाय छे अने ते स्वर्ग, मृत्यु अने पाताळमां रहीने सुख दुःखने भोगवे छे. केम के देह छे ते आत्मानुं स्वरूप नथी. ते देहने पोतानुं स्वरूप मान्युं माटे जीव मात्र पोतानुं सारुं इच्छे छे. ते सत्पुरुषनी आज्ञामां रहीने सारुं इच्छे तो पोताने सुख थाय छे अने सत्पुरुषनी आज्ञाथी विरुद्ध वर्तीने सारुं इच्छे तेने दुःख थाय छे. पण तेमां सत्पुरुषनी आज्ञामां रहीने पोतानुं सारुं इच्छे छे, ते सारुं देहनुं थाय छे, ते देह नाशवंत छे माटे देह नाश थाय त्यारे ते सुख पण नाश थई जाय छे अने पाछो जन्म-मरणनां दुःखने पामे छे.

जेम वेपारी घरने विषे आसक्ति करीने रह्यो होय अने ते वेपार करीने द्रव्य कमाय तो ते द्रव्यने विषे सुखे करीने बंधाय छे अने ते

वेपारमां खोट जाय तो तेना करजरूपी दुःखे करीने बंधाय छे. अने ते करजने दुःखे करीने उदास थईने वेपार करवो पड्यो मूकीने घरमां स्त्री, छोकरां भेगो बेसी रहे तो पण तेने अन्न, वस्त्रादिक देह रक्षण सारु जोईए तेणे करीने करज थाय छे अने ते करजे करीने दुःख पामे छे. तेम जे जीव देहने पोतानुं स्वरूप मानीने सत्त्व गुणी कर्म करे ते स्वर्गादिकनां सुखमां बंधाय छे अने जे रजोगुणी कर्म करे ते मृत्युलोकनां सुख-दुःखमां बंधाय छे अने जे तमोगुणी कर्म करे ते पाताळादिकनां दुःखमां बंधाय छे.

अने ते कर्मादिकना सुखदुःख थकी उदास थईने कर्मनो त्याग करीने भेख लईने एकांत पकडीने बेसी रहे तो पण जे देहने पोतानुं रूप माने छे तेने स्त्री-छोकरांरूप जे इन्द्रियो अंतःकरण तेना आहाररूप कर्म थाय छे अने ते कर्मे करीने जीवने बंधन थाय छे. अने ते देहना अंहकारनो त्याग करीने पोताने आत्मारूप माने अने आत्मारूप थईने ते आत्माना आधार अने प्रकाशक एवा जे परमात्मा भगवान तेनो आश्रय करीने भगवाननी आज्ञा प्रमाणे वर्ते छे तेने कर्म बंधन करतां नथी.

जेम गृहस्थ जे ते स्त्री, छोकरां, घरनी आसक्ति तेनो त्याग करीने कोई भारे शाहुकार होय ते भेगो जईने रहे अने ते शाहुकार कहे ते प्रमाणे वेपार करे; तेमां खोट जाय के हांसल आवे पण तेनी हाण्य-लाभना सुख-दुःखमां लेश मात्र बंधातो नथी अने ते शाहुकार एम कहे जे 'तारे कांई करवुं नहीं अने बेठो बेठो रोटला खा अने वस्त्र पहेर' तो ते बेठो बेठो देह निर्वाण करे तो पण तेने कोई बाते हाण्य-वृद्धिनुं सुख-दुःख थाय नहीं. तेम जे देहना अहंकारनो त्याग करीने आत्मारूप थईने प्रत्यक्ष परमात्मा भगवान अने तेना संतनो आश्रय करीने तेनी आज्ञा

प्रमाणे जे जे कर्म करे छे ते कर्म तेने बंधन करता नथी अने ते कर्म तो तेने भक्तिरूप थाय छे अने जे भक्ति छे ते तो अकर्मरूप एटले ज्ञानरूप छे. त्यां भगवद्गीतानो श्लोक छे.

'कर्मणि कर्मयो पश्येतः ।'

एनो अर्थ ए छे जे देहना अहंकारनो त्याग करीने, आत्मारूप थईने, प्रत्यक्ष भगवाननो दृढ आश्रय करीने ते भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे भगवान अने भगवानना संतनी आज्ञाए करीने।जे जे कर्म करे छे, ते कर्मने अकर्म जे ज्ञान ते रूप देखे छे अने ते देहने पोतानुं रूप मानीने अकर्मपणें रहेतो होय तो पण ते कर्ममां भरपुर छे एम जे देखे छे ते मनुष्य मध्ये श्रेष्ठ छे, बुद्धिवाळो छे अने ज्ञानी छे. माटे ए वात समजवी शुद्धि पण अटपटी छे, केमके उपरथी जोयामां तो देहना अंहकारे रहित पुरुषनी क्रिया अने देहना अहंकारे सहित पुरुषनी क्रिया तो सरखी जणाय छे, पण तेना अंतरना आशयमां घणो फेर छे. केमके देहना अंहकारे सहित करे छे ते देहना सुख सारु करे छे. अने जे आत्मारूप थईने करे छे ते तो आत्माने अविनाशी सुख प्राप्त थाय तेने अर्थे अने भगवान प्रसन्न थाय ते सारु करे छे पण देहना सुख सारु करतो नथी. माटे ते भगवान अने संतनी आज्ञाए करीने रजोगुणी, तमोगुणी, सत्वगुणी कर्म करे तो पण ते कर्म तेने बंधन करतां नथी.

ते पूर्वे अर्जुने देहना अंहकारनो त्याग करीने आत्मारूप थईने पछी श्रीकृष्ण भगवाननी आज्ञाए करीने घणाक प्रकारनां कर्म कर्यां तो पण ते कर्म तेने लेश मात्र बंधन करवाने समर्थ थयां नहीं अने एकांतिक भक्त कहेवाणा. अने गंधारीए आंखे सात पाटा बांध्या हता अने अकर्मपणें रहेती हती पण तेने भगवाननी भक्ति अने भगवाननो आशरो न हतो अने पोताने देहनो अहंकार टळ्यो न हतो तो ते दुर्भागणी कहेवाणी.

माटे जे प्रत्यक्ष भगवानना भक्त छे ते देहना अहंकारने मूकीने पोते आत्मारूप थईने भगवान अने भगवानना संतनी प्रसन्नताने अर्थे आज्ञाए करीने जे जे कर्म करे छे तेने कांई कर्म बंधन करतुं नथी अने ते तो भगवानना अक्षरधामने पामे छे. माटे जेने सर्वे बंधन थकी छूटवुं होय तेने देहना अहंकारनो अने देहना सुखनी इच्छानो त्याग करीने अखंड, अविनाशी अने शुद्ध चैतन आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप जाणीने प्रत्यक्ष पोताने मळ्या जे भगवान अने भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी संत तेनो दृढ आशरो करीने तेनी आज्ञामां मन, कर्म, वचने वर्तवुं. अने एम जे वर्तशे तेने कोई जातनुं बंधन थशे नहीं अने ते अक्षरधामने पामशे."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १७४ समाप्त ॥



श्रीमुखसिद्धांत १७५ विषय :–अहंकार टाळवानो उपाय

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२१ना श्रावण वदि ८ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये पोताना मंदिरमां आथमणां बारनी मेडीनी ओशरीमां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां पुष्पना हार धारण कर्या हता. पाघमां डाबी कोरे फूलनो तोरो लटकतो धारण कर्यो हतो अने कान उपर गुच्छ धारण कर्या हता. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया केडे महाराज बोल्या जे "सर्वेने एक प्रश्न पूछीए छीए जे जेने लईने जीव जे ते जन्म-मृत्युने पामे छे एवो

जे अहंकार ते वधे-घटे छे के वधतो-घटतो नथी? अथवा टळे छे के टळतो नथी? अथवा टळ्यो होय तेनां शा लक्षण? अने ते शा उपाये करीने टळे छे? जेने आवडे ते उत्तर करो."

पछी तेनो उत्तर कोईथी थयो नहीं त्यारे महाराज बोल्या जे "ल्यो अमे एनो उत्तर करीए जे कुसंगने जोगे करीने अहंकार वृद्धि पामे छे अने सत्संगने जोगे करीने घटी जाय छे. पण मूळमांथी अहंकार टळवो घणो कठण छे, केमके मुक्त थयो होय अने काम, लोभादिकनी वासना टळी गई होय अने सर्वे संसारनो तथा पंचविषयनो सर्वे प्रकारे त्याग कर्यो होय अने केवळ एक भगवानननी निष्कामभावे नवधाभक्ति करतो होय तो पण तेने देहनो अहंकार रहे छे अने देहना अहंकार विना देहनुं रक्षण थाय नहीं अने रक्षण न करे तो देह रहे पण नहीं. अने देह पडी जाय तो भगवानननी भक्ति करवी अने आत्यंतिक ज्ञान पामवुं ते ज्ञान देह विना केम पमाय? अने भगवानननी भक्ति पण देह विना थाय नहीं. माटे एम समजीने मुक्त कहेवातो होय तेने पण देहनो अहंकार रही जाय छे अने ज्यां सुधी 'ज्ञान-भक्तिनो उपयोगी देह छे' एम हेतुं मानीने अवश्य घटे तेटलुं पण रक्षण करे छे तेने देहनो अहं-कार कोई काळे टळतो नथी. अने देहनो अहंकार छे त्यां सुधी जन्म-मरण पण टळे नहीं. अने देहनुं रक्षण मुद्दल न करे अने देहने पाडी नाखे अने ज्ञानमां अधुरुं होय तो पण जन्म-मरण टळतुं नथी. माटे देहनो अहंकार तो मुक्त थयो होय तेने पण टाळवो घणो कठण छे अने ज्यां सुधी देहनो अहंकार रज मात्र होय त्यां सुधी सर्वे माया उभी छे.

जेम झाड सुकाई गयुं होय पण तेनुं बीज छे तो ते बीजमांथी पाछुं वृक्ष थशे. तेम काम, लोभादिक दोष तथा शब्दादिक विषय टळी गया होय पण देहने जो ज्ञान-भक्तिनो उपयोगी जाणीने तेनो गुण

मानीने तेनुं रक्षण करे तो तेने सर्वे मायाना बीजरूप एवो जे देहनो अहंकार टळतो नथी अने तेने पाछो जन्म धरावे छे, केमके ते देहने विषे तेने गुण मान्यो माटे जेनो गुण मनाय तेनो अहंकार टळे नहीं अने जेने विषे गुण-बुद्धि होय अने तेना रक्षणनुं कोईक खंडन करे तो तेनो पण अवगुण जरूर आवे. माटे ए वात समजवी घणी कठण छे. केमके आत्मारूप थयो होय तेने पण देहनुं रक्षण तो करवुं जोईए अने रक्षण करे त्यारे अहंकार विना थतुं नथी.

हवे एवो जे अहंकार तेने जे टाळे तेने जन्म-मरण टळे छे अने ते अक्षरधामने पामे छे. माटे ते देहना अहंकारने टाळवानो एक उपाय छे. ते शो उपाय छे? तो जेने ते देहने विषे अतिशय शत्रुभाव थाय अने देहने शत्रु जाणीने पछी 'तेने ज्ञान भक्तिनो उपयोगी छे' एम जाणीने शत्रुभाव राखता थका वटे तेटलां अन्न, वस्त्रादिके करीने देहनुं रक्षण करे पण तेनो गुण मानवो नहीं.

जेम एक शाहुकार हतो तेनो दीकरो वीस वर्षनो हतो तेने चोरे मारी नाख्यो. पछी ते चोरने राजाए बेडीओमां नाख्यो अने कोटडीमां पूर्यो. पछी ते शाहुकार पण कांई राजाना वांकमां आव्यो अने तेने पण पगमां बेडीओ नाखीने ते चोर भेगो कोटडीमां पूर्यो. पछी ते शाहुकार तो जाते सुंवाळुं माणस अने कोई दहाडो भार उपाडेलो नहीं. ते दिशाए जवुं पडे त्यारे बेडी उपाडी शके नहीं त्यारे तेणे चोरने कह्युं के 'मारी बेडी उपाडीश?' त्यारे तेणे कह्युं के 'बेडी तो उपाडुं पण तुं मने तारा खावामांथी थेक (थोडुंक) खावा आपे तो उपाडुं.' पछी ते शाहुकारे पोताना माणस भात आपवा आवतां हशे तेने कह्युं के 'थेक (थोडुंक) खावानुं वधारे लावजो; आ चोरने मारे आपवुं छे.' पछी ते

शाहुकार तेने खावानुं आपे अने वेडी उपडावे. पछी ते वातने शाहुकारना घरना माणसे जाणी त्यारे ते एम कहेवा लाग्यां जे 'ते चोरे तो आपणा दीकराने मारी नांख्यो छे अने तेने शुं करवा खावा आपता हशे?' अने ते शाहुकार पण एम जाणे छे जे 'ते चोर खरेखरो मारो पाको शत्रु छे.' एम शत्रुभाव राखतो थको पण पोतानी वेडी उपडाववा सारु तेने खावानुं आपतो. अने ते चोरने कोईक मारी नाखे अथवा तेने कोईक दुःख दे तो तेमां ते शाहुकार राजी थाय. पण तेना उपर दया आवे नहीं.

तेम जेने देहने विषे शत्रुभाव रहे तेने देहनो अंहकार टळे छे. केमके देह छे ते ज जीवने जन्म, मरण अने चोराशीमां रखडावनारो छे अने महाकष्टने पमाडनारो छे, एम जाणीने देहने विषे अतिशय शत्रुभाव राखीने पछी वेडी उपडाववारूप ज्ञान-भक्तिने सिद्ध करवा सारु ते देहने अन्न, वस्त्रादिक अवश्य घटे तेटलुं आपवुं पण तेनो गुण न मानवो. अने जो 'ज्ञान-भक्तिनो उपयोगी छे' एम जाणीने देहनो गुण मानशे तो ते देहनो अहंकार कोटी काळे टळे नहीं अथवा शत्रुभाव विना बीजां कोटी साधन करे पण टळवानो नथी. ते सारु जे भगवानना भक्त होय अने जेने आने आजन्मे देहना अंहकारनो त्याग करीने अक्षर-धामने पामवुं होय तेने तो देहने विषे सदाय शत्रुभाव राखवो अने शत्रुभाव राखतां थका शाहुकारनी पेठे अन्न, वस्त्रादिक घटे तेटलुं आपवु. एम समजे तेने देहनो अहंकार टळी जाय छे.

अने जेने देहने विषे शत्रुभाव थयो होय तेना देहने कांईक रोगादिक कष्ट आवी पडे तो तेमां राजी थाय तथा तेने भगवान के भगवानना संत कांईक भक्ति-सेवामां कारसो आपे तथा व्रत उपवासादिक

तप करवानी आज्ञा करे तो तेमां घणो राजी थाय. त्यारे तेने एम जाणवुं जे देहनो अंहकार टळ्यो. ते उपर निष्कुलानंदस्वामीनुं कीर्तन छे जे-

दुःखी देखे आ देहने, रहे राजी ते मनजी
अनर्थनुं रे आगार छे जाणी न करे जतनजी
हुं वलहारी ए वैरागनो ॥ १ ॥

माटे जेने देहने विषे शत्रुभाव होय अने जेने देहनो अंहकार टळ्यो होय तेने सहेजे देहनो अनादर वर्त्या करे; ए ज अंहकार टळ्यानुं एंधाण छे. एम समजीने देहना अंहकारनो त्याग करे ते बुद्धिवाळो छे अने ते विनाना सर्वे मूर्ख छे अने आत्मघाती छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत १७५ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत १७६ विषय :-अत्यंताभावनुं स्वरूप

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२१ ना श्रावण वदि १४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पींपळी मध्ये पोताना मंदिरमां आथमणें वार मेडीनी ओशरीमां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने गुलावना पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां धारण कर्या हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने वेठी हती.

प्रश्नः-संध्या आरती थया पछी महाराज बोल्या जे "सर्वे साधुने तथा सर्वे हरिभक्तने अमे एक प्रश्न पूछीए छीए जे केटलाक भगवानना भक्त पंचविषयनो त्याग करीने वर्तता होय तो पण तेने विषयनो संबंध थाय त्यारे तेमां बंधाई जाय छे, माटे तेने शी कसर हशे? अने केटलाक विषयना संबंधमां रह्या थका पण विषयमां बंधाता

नथी अने तेने देह मूकीने फरी जन्म धरवो पडतो नथी अने ते तो अक्षरधामने पामे छे. ते पूर्वे जनकादिक राज्यमां रह्या तो पण बंधनने पाम्या नहीं. माटे ते केवी समजणे करीने बंधनने पाम्या नहीं? अने भरतादिक राज्य वैभवादिक पंचविषयनो त्याग करीने वनमां गया हता, तो पण तेने मृगना बच्चामां स्नेह थयो अने तेने करीने तेने जन्म धरवो पड्यो. माटे तेनी कई जातनी समजण हशे? ते कहो."

पछी तेनो उत्तर साधु तथा हरिभक्ते करवा मांड्यो पण थयो नहीं त्यारे महाराज बोल्या जे "एनो उत्तर एम छे जे चार प्रकारना अभाव छे तेमां त्रण प्रकारना विषयना अभावे करीने विषयनो त्याग कर्यो होय तेने ज्यारे विषयनो संबंध थाय त्यारे ते विषयमां बंधाय छे अने जेणे चारे प्रकारना अभावने जाणीने अंतरमांथी त्याग कर्यो होय ते कोई विषयमां बंधाय नहीं.

ते चार प्रकारना अभाव ते कया? तो एक प्रागभाव, बीजो अन्योन्याभाव, त्रीजो प्रध्वंसाभाव अने चोथो अत्यंताभाव. हवे प्रागभाव एटले शुं? तो जेम माटीमां घडो रह्यो छे ते माटी देखाय छे पण घडो नथी देखातो माटे घडानो अभाव छे, पण ज्यारे माटीमांथी घडो थशे त्यारे पाछो भाव थशे, तेम प्राकृतप्रलयने विषे जगतनो अभाव छे अने मायाने विषे जगत रह्युं छे, ते ज्यारे प्राकृतप्रलयने अंते पाछी उत्पत्ति थशे त्यारे पाछो जगतनो भाव थशे, तेनुं नाम प्रागभाव कहेवाय. अने अन्योन्याभाव ते शुं? तो जेम घडो ते लुगडुं नहीं अने लुगडुं ते घडो नहीं, तेनुं नाम अन्योन्याभाव कहेवाय. तेम आत्मा ते देह नहीं अने देह ते आत्मा नहीं ते अन्योन्याभाव कहेवाय छे. ते अन्योन्याभावना ज्ञाने करीने विषयनो त्याग कर्यो होय तेने पाछो विषयना संबंधे करीने बंधन थाय छे.

अने त्रीजो प्रध्वंसाभाव छे; तो प्रध्वंसाभाव ते शुं ? तो जेम कोईने दीकरो होय अने ते मरी जाय त्यारे तेने दीकरानी पाछा आववानी आशा नहीं, पण हतो ते नाश पामी गयो माटे तेनो शोक थाय खरो. तेनुं नाम प्रध्वंसाभाव कहेवाय. तेम जगत हतुं ते प्राकृतप्रलयने विषे नाश पामी गयुं पण हतुं ते नाश पाम्युं माटे ते सांभरे खरूं अने तेनी मूळमांथी वासना टळे नहीं. अने प्रलय होय त्यां सुधी तो तेने अभाव रहे पण ज्यारे पाछी उत्पत्ति थाय त्यारे तेमां ते बंधाणा विना रहे नहीं. माटे ए त्रण प्रकारना अभावे करीने जेणे पंचविषयनो त्याग कर्यो होय तेने पाछा विषय बंधन करे छे अने तेने जन्म धरवो पडे छे तेम सर्वे प्रकारे विषयनो त्याग करीने त्यागी थयो होय, भेख लीधो होय अने वनमां एकलो रहेतो होय तो पण तेने जरूर जन्म धरवो पडे छे.

अने चोथो जेने अत्यंताभाव थयो होय ते कोई विषय भोगवे नहीं अने ते अत्यंताभाववाळो भक्त जे ते सूझे तो त्यागी थयो होय अने सूझे तो गृहस्थास्श्रामममां रह्यो होय पण ते विषयमां बंधाय नहीं अने तेने फरीने जन्म धरवो पडे नहीं.

हवे अत्यंताभाव ते शुं ? तो जेम ससलाना शिंगडा तथा काचबाना रोम तेनो अभाव छे तेम जेणे आत्यंतिक प्रलयने ज्ञाने करीने विषयनो त्याग कर्यो होय तेने कोई विषय बंधन करे नहीं. ते आत्यंतिक प्रलय ते शुं? तो त्रण काळमां माया छे ज नहीं जेम झांझवाना जळ तथा स्वप्ननी सृष्टि ते वस्तुगते नथी तेम अत्यंताभावने विषे त्रण काळमां माया तथा जगत छे ज नहीं. अने ते अत्यंताभावना ज्ञानने पाम्यो होय ते कोई विषयमां बंधाय नहीं अने ते कोई विषयनो संबंध पण करे ज नहीं. अने ते सदाय विषय थकी असंगपणे वर्ते अने जे तेनो समागम करे तेना अंतरमांथी पण विषयनी वासनाना मूळीयां काढी

नाखे अने सदाय अखंड ब्रह्म-स्थितिमां वर्त्या करे अने तेने फरीने जन्म धरवो पडतो नथी; ते तो अक्षरधामने विषे अखंड भगवाननी सेवामां रहे छे. अने ते अत्यंताभावनुं जे ज्ञान ते जेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संत मळे छे तेने ज थाय छे, पण ते विना थतुं नथी."

इति श्रीमुखसिद्धांत १७६ समाप्त।



श्रीमुखसिद्धांत १७७ विषय :-पामर, विषयी, मुमुक्षु अने मुक्तनां लक्षण

श्रीहरिकृष्णाय नमोनम :- संवत १९२२ना पोषसुदि ११ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री पेटलाद मध्ये काछीया वनमाळीदासने घेर आथमणां बारना ओरडानी आगळ चोकमां गादातकिये युक्त ढोलियो विछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने चंपा अने गुलाबनां पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. केसरनी अर्चा अने कंकुनो चांदलो ललाटने विषे कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया पछी महाराज श्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजी बोल्या जे "आ जगतने विषे चार प्रकारना जीव छे. ते चार प्रकारना जीव कया? तो पामर, विषयी, मुमुक्षु अने मुक्त ए चार प्रकारना जीव छे. हवे ते चार प्रकारना जीवनां लक्षण कहुं छुं जे पामर जीव छे ते तो आहार, मैथुन, निद्रा, अने भय तेमां ज मूढपणें वर्तता होय, कहेतां आहार जे सारां सारां पदार्थ खावामां बहु प्रीति होय अने मैथुन एटले स्त्री-भोगमां प्रीति होय अने निद्रा एटले शुभ कर्म करवामां आळस घणी

होय कहेतां सूई रहेवामां प्रीति होय. अने भय एटले 'रखे कोई मारा पदार्थने लई जाय नहीं अथवा मने मारी नाखे नहीं' इत्यादिक भय बहु वर्त्या करे. एवी रीतनां लक्षण जेने विषे होय तेने पामर जीव जाणवो.

अने जे विषयी जीव छे तेने उत्तम पंचविषय पामवानी इच्छा होय, पण ते शास्त्रनी मरजादामां रहीने विषयने भोगवे. अने तेने लोकनी लाज, मोटप, कीर्ति वधारवानी इच्छा वर्ते. अने जे मुमुक्षु छे तेने तो आस्तिकपणुं होय अने ते अधर्म-अनीतिनो त्याग करीने धर्ममां दृढ रहेतो होय अने तेने शास्त्र अने सत्पुरुषनो विश्वास होय अने एकादशी आदिक व्रत, तप करवामां श्रद्धा होय. अने तेने विषयनो त्याग करवो गमे अने विषयना त्यागी एवा जे भगवानना संत तेनो समागम करवो गमे, अने तीर्थे जवुं, तथा भगवानने दर्शने जवुं तेमां बहु श्रद्धा होय. अने वळी तेने एम विचार थाय जे जन्ममरण थकी कोई मने मुकावे एवा पुरुष क्यारे मळे? एवी रीते तेने बहु इच्छा वर्ते एवां लक्षण होय तेने मुमुक्षु जाणवो.

अने जे मुक्त होय तेने तो आ संसारनां सुख गमे ज नहीं. अने ते प्रारब्धकर्मने जोगे करीने संसारमां रह्यो होय तोपण ते उदास थको रहे अने तेने संसारमां सदाय अरुचि वर्ते. अने धर्म, ज्ञान वैराग अने भक्ति तेने दृढ करीने राखे पण तेमां कोई काळे डगे नहीं. अने ते मुक्त होय ते 'भगवान प्रगट थया' एम काने करीने सांभळे तो ते तत्काळ जगतना अनंत बंधन होय तेने तोडीने तथा मतपंथना बंधनने तोडीने प्रगट भगवान पासे जई पूगे पण कोई आवरणनो रोक्यो रोकाय नहीं तेने मुक्त जाणवो.

एवी रीते चार प्रकारना जीवोनां लक्षण कह्यां तेमां पामर अने विषयी जीव होय ते तो भगवानने मार्गे चाले ज नहीं. अने ते जो कोईक

रीते लोभे, लालचे करीने सत्संगमां आवतो होय पण तेनो सत्संग भाल देशना कूवा जेवो थाय, ते भाल देशना कूवामां उपर पाणी मीठुं होय अने ऊंडु खोदे तो तेमां खारुं झेर पाणी नीसरे. तेम विषयी अने पामर जीव सत्संगी थया होय अने तेना गमता प्रमाणे विषयने भोगववा दईए त्यां सुधी ते सारो रहे अने सत्संगमां हेत राखे अने जो तेना हीतने अर्थे सत्पुरुष विषयनुं खंडन करे तो तेने भालना कूवानी पेठे तरत सत्पुरुषना अवगुण आवे अने अधर्मने मार्गे चाले. अने सत्पुरुषना संगनो त्याग करीने उलटो सत्पुरुषनो द्रोह करवा लागे.

अने जे मुक्त अने मुमुक्षु होय तेने तो भगवान अने भगवानना निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी संत तेना संग विना बीजुं कोई गमे ज नहीं. अने भगवान अने संत तेने सूझे एवा वढे अने भीडामां लीये तो पण ते कोई रीते पाछा पडे नहीं. अने ते मुक्त अने मुमुक्षु जे ते काने करीने भगवानना गुण, चरित्र अने महिमा सांभळीने परम आनंद पामे. अने त्वचाए करीने भगवानना चरणनो स्पर्श करीने परम सुख माने छे. अने नेत्रे करीने भगवानना दर्शन करीने तृप्त थाय छे. अने जीह्वाए करीने भगवाननो महा-प्रसाद जमीने तथा भगवानना यश गाईने सुख माने छे. एवी रीते मुक्त अने मुमुक्षु जे ते दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरण तेणे करीने भगवानमां जोडाय छे, पण ते विना बीजे क्यांय लोभाय नहीं. अने पामर-विषयी होय ते तो इन्द्रियोना जे मायिक पंचविषय तेमां लोलुप वर्ते छे अने तेने कोई रीतनुं नियम होय नहीं.

माटे जेने भगवान भजवा होय तेने पामर अने विषयी जीवना संगनो त्याग करीने मुमुक्षु अने मुक्तनो संग करीने पोताना आत्मानुं

काम सुधारी लेवुं. अने आ समे तो अमने अने अमारा निर्वासनिक संतने मन अर्पण करे तो ते पामर जीव होय तथा विषयी जीव होय तेनुं पण साक्षात्कार कल्याण थाय अने तेनुं आने आ देहे पामरपणुं अने विषयीपणुं मटीने ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामे. माटे जेने आ समे मनुष्यदेह आव्यो छे अने आ सत्संगमां जेने प्रतीति आवी छे तेना भाग्यनो पार नथी."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १७७ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत १७८ विषयः-अमारी जे वात छे ते तो अतिशय दुर्लभ छे

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ ना पोष सुद १२ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पेटलाद मध्ये काछीया वनमाळीने घेर आथमणां बारना ओरडानी रवेशमां गादीतकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्या हता अने कंठमां चंपो अने गुलाबना पुष्पना हार धारण कर्या हता अने कर्ण उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता.

पछी हरिभक्त घोडी तैयार करीने लाव्या अने तेणे महाराजने हाथ जोडीने कह्युं जे "हे महाराज ! आज सभा करवी छे अने देशदेशना विद्वान ब्राह्मण घणाक आव्या छे, माटे काळकामातानी धर्मशाळामां पधारो." पछी महाराज घोडीए अश्वार थईने गाजता—वाजता त्यां पधार्या अने ते धर्मशाळामां उगमणी कोरनी परसाळने विषे गादीतकिये युक्त पलंग बिछाव्यो हतो ते उपर विराजमान थया. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा शास्त्री जेशंकर गोविंदराम तथा पुराणी, वेदीया ब्राह्मणो तथा देशदेशना हरिभक्त ते सर्वेनी मोटी सभा भराईने बेठी

हती. पछी शास्त्री, पुराणी, वेदीया ब्राह्मणोए घणीवार सुधी परस्पर प्रश्नोत्तर कर्या पण तेने करीने कोईने शांति थई नहीं. पछी महाराजे वात करी त्यारे सर्वे सभाने घणो आनंद थयो अने ते सर्वेने अंतरमां परम शान्ति थई.

पछी महाराज अतिशय कृपादृष्टि करीने बोल्या जे "अमारी जे वात छे ते तो मोटा मोटा देव, ब्रह्मा तथा शिव, सनकादिक सरखाने पण अतिशय दुर्लभ छे, केम के देव, ब्रह्मादिकना लोकमां पण आवी माया पर अलौकिक वात थती नथी. अने प्रकृतिपुरुषनी आनी कोरे सर्वे लोकमां तथा सर्वे धाममां पंचविषय पामवानी ज वार्ताओ थाय छे अने नाना देवादिकने थोडा विषयनुं बंधन छे अने मोटा देवादिकने मोटा विषयनुं बंधन छे, केम के जुओने ब्रह्मा तथा शिव तथा इन्द्र तथा चन्द्र ते सर्वेथी मोटा कहेवाय छे पण ते कामने वश थईने व्याकुळ थया अने लाज खोई अने मनुष्य कोई न करे एवुं काम कर्युं. माटे देव ब्रह्मादिक मोटा छे तो तेना कामादिक पण मोटा छे. माटे स्वर्ग, मृत्यु अने पाताळ ए त्रण लोकमां धर्म, अर्थ अने कामनी ज वात थाय छे, पण मोक्षनी वार्ता क्यांय थती नथी.

अने मोक्ष तो प्रगट भगवानने संगे करीने ज थाय छे तथा प्रगट भगवानना एकांतिक संत पंचविषयना त्यागी निर्वासनिक तेने संगे करीने मोक्ष थाय छे. माटे जेने मोक्षनी इच्छा होय तेने प्रगट भगवान अने भगवानना एकांतिक विषयना त्यागी साधु तेनो समागम करवो. अने प्रगट भगवान अने तेना संतनो संग मळवो अतिशय दुर्लभ छे. अने एवो सत्संग ज्यारे पोताने प्राप्त थाय त्यारे तो पोताना अतिशय मोटां भाग्य समजवां. अने तेनी ज्ञानवार्ता सांभळवामां अतिशय

श्रद्धा राखवी अने जेने श्रद्धा न होय तेने तो सत्संग करवामां घणी खोट रही जाय छे अने मोक्षमां पण घणो फेर रहे छे.

जेम समुद्रमां स्वाती वरसे छे त्यारे छीपो पाणी उपर आवीने ते स्वातीना बिंदुने झीले छे. तेमां जे छीप उंची उछळीने बिंदुने झीले छे ते छीपमां अमुल्य मोती थाय छे अने जे छीप थोडीक उछळीने झीले छे तेनुं मोती किंमत न आवे एवुं सो बसो रुपियानुं थाय छे. अने जे छीप पाणी उपर पडी पडी बिंदुने झीले छे तेना तो खोटां फटकीयां मोती थाय छे. केम के तेमां खारा पाणीनो भेग भळे छे. माटे ते मोती तो टकाना त्रणसो वेचाय छे. तेम प्रगट अमारी ज्ञानवार्ता छे ते स्वातीनां बिन्दु जेवी छे अने संसाररूपी समुद्र छे अने छीपरूपी मुमुक्षु जीव छे. माटे जे खरेखरी श्रद्धा राखीने अमारी वार्ता सांभळशे ते तो आने आ देहे ब्रह्मरूप थईने अमारा अक्षरधामने पामशे, अने जे मध्यम श्रद्धा राखीने सांभळशे तो ते मोटा प्रकृतिपुरुषना लोकने तथा प्रधानपुरुषना लोकने तथा वैराट, ब्रह्मादिक, ईन्द्रादिकना लोकने पामशे. अने जे कनिष्ट श्रद्धावाळा हशे ते तो आ लोकमां कोईक मोटा राजा थशे.

तेमां उत्तम श्रद्धावाळाने तो अक्षरधामनी प्राप्ति थशे अने तेने तो फरीने जन्म धरवां नहीं पडे अने ते तो अविचळ सुखने पामशे. अने जे मध्यम श्रद्धावाळा छे तेने त्रण चार जन्म धरवा पडशे. पछी धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति सिद्ध करीने उत्तम श्रद्धाने पामीने ते अक्षरधामने पामशे. अने जे कनिष्ट श्रद्धावाळा हशे ते तो देवतामां अने मनुष्यमां घणाक जन्म धरशे पछी ज्यारे ते उत्तम श्रद्धाने पामशे त्यारे ते भक्त ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामशे, माटे प्रगट भगवान मळ्या होय तो पण श्रद्धामां घणो फेर रही जाय छे.

अने आ लोकमां पण बे प्रकारना जीवनी सृष्टि छे; तेमां एक आसुरी जीवनी सृष्टि छे अने बीजी दैवी जीवनी सृष्टि छे. तेमां आसुरी सृष्टिना जीव छे ते तो देहोऽहं बुद्धिए युक्त वर्ते छे अने देहना सगां–संबंधी, नातजात, हुं–मारुं तेमां हरखशोक, हाण्यवृद्ध तेमां जीव क्लेशने पामे छे अने त्रिविधि तापमां बळ्या करे छे, केमके मायिक पदार्थ छे ते तो नाशवंत छे, माटे नाशवंत पदार्थमां कोई काळे सुख होय नहीं. अने जे दैवी सृष्टिना होय ते तो एक परमेश्वरने ज सत्य माने छेअने पोताने आत्मारूप मानीने देहने मिथ्या देखे छे. अने जाति–वर्ण जे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ते पण देहना भाव छे. ते जन्म धर्या पछी मा–बापे समजाव्या जे 'आ तारी जात, आ तारुं नाम, आ तारुं घर, आ तारुं गाम' इत्यादिक जे आलोक वहेवारना शब्द ते तो उपरथी मा-बापे चोटाड्या छे. अने जे आत्मा छे ते तो अजन्मा अने अविनाशी छे.

अने ते आत्माए वासनाए करीने जेटला चोराशीमां जीव छे ते सर्वेना देहने विषे जन्म धर्या छे. अने जीवे पुरुषना देह धरीने चोराशीमां सर्वे जीवने पोतानी स्त्रीओ करी छे अने स्त्रीना देह धरीने चोराशीमां सर्वे जीवने पोताना धणी कर्या छे. एवी रीते दैवी सृष्टिवाळा छे ते एम समजीने जेम चोरासीलाख जातना सगपणने हमणां नथी मानता तेमज आ देहना संबंधीने पण पोताना संबंधी मानता नथी. अने पोताने स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देहथी नोखो अने शुद्ध रूप एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानीने परमेश्वरे जेम वर्णाश्रमनो धर्म कह्यो छे ते धर्म प्रमाणे रहीने परमेश्वरनुं भजन स्मरण करे.

अने जे एवी रीते पोताना आत्मानो मोक्ष थाय एवा उपायमां निरंतर वर्त्या करे तेने जगतना सुखदुःख, हाण्यवृद्ध ते समपणे वर्ते छे. केम के ते तो एम जाणे छे जे 'ईश्वरनी इच्छा हशे तेम थशे.' एम

समजीने हरख, शोकादिकनो धणी थतो नथी. अने आ जगतना नाशवंत पदार्थ अने ते पदार्थ संबंधी जे सुख ते पण नाशवंत छे एम जाणीने तेनी इच्छा नथी राखता, केम के आ लोकनां सुख छे ते तो ज्यारे त्यारे जरूर नाश थई जशे. माटे दैवी दृष्टिवाळा एवा जे भगवानना भक्त होय ते मायिक सुखने इच्छे नहीं. अने भगवानना भक्त तो अविनाशी एवुं जे अक्षरधाम तथा अविनाशी एवुं जे भगवानना स्वरूप संबंधी सुख तेने ज इच्छे छे.अने ते सुख अतिशय दुर्लभ छे.

पण आ समे आ सत्संगमां जेने जेने प्रतीति आवे छे तेने ए सुख अतिशय सुगमपणे प्राप्त थाय छे. केम के ए सुखना दाता आ समे प्रगट नमने दर्शन आपे छे. माटे प्रत्यक्ष सत्पुरुषनी आज्ञाए करीने अधर्मनो त्याग करीने धर्ममां रहीने भगवाननुं भजन करे तो ते आ लोकमां पण सुखने पामे अने देहने मूकीने भगवानना अक्षरधामने पामे छे अने ते आत्मा अपार सुखने पामे छे, केम के जेने प्रगट भगवाननो संबंध थाय छे ते जे ते अक्षरधामना सुखने पामे छे. ते पूर्वे गोपी, गोपाळ तथा गुहराजा भील तथा वांदरा तेने प्रगट भगवाननो संबंध थयो तो ते पण मोटी पदवीने पामी गया छे.

माटे प्रगट भगवाननो संबंध जेने थयो छे ते तो भगवानना पार्षद थई रह्या छे अने तेना मोक्षमां पण कांई लेश मात्र अधुरुं नथी. अने तेने देहनुं निमित्त होय त्यां सुधी ते देहमां रहे छे. अने ज्यारे देहने मूकशे त्यारे तेने ब्रह्ममय देह धरावीने भगवान पोताना धामने पमाडशे. माटे पोतपोताना धर्ममां रहीने जे अमारी भक्ति करशे तेनो साक्षात्कार कल्याण थशे." एम कहीने महाराज घोडीए अस्वार थईने पोताना उतारे पधार्या.

इति श्रीमुखसिद्धांत १७८ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत १७९ विषयः—कर्म, उपासना अने ज्ञान

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ना फागण वदि ४ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये पंड्या अंबाशंकर हरखरामने घेर उगमणें वारणे ओरडानी आगळ चोकमां पाट उपर गादी—तकिये युक्त ढोलियो विछाव्यो हतो अने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां, अने कंठमां गुलाबना पुष्पना हार धारण कर्या हता अने पुष्पना बाजु, गजरा, तोरा अने गुच्छ सर्व अंगमां शोभी रह्या हता. ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी पंड्या अंबाशंकरे महाराजनी पूजा करीने आरती धून करी. पछी सर्वे सभा प्रत्ये महाराज कृपादृष्टि करीने बोल्या जे "सर्वेना मोक्षनो एक ज सिद्धांत छे अने ते सिद्धांत वेदमां संपूर्ण कह्यो छे, पण ते वेदनो अर्थ अतिशय गूढ छे; ते प्रत्यक्ष सत्पुरुषना मुख विना कोईने पोतानी मेळे समजातो नथी. माटे वेदना कर्ता थकी ज वेद सवळा समजाय छे, ते सारु वेदना त्रण अंग कहेवाय छे. ते त्रण अंग कया? तो एक कर्म, बीजुं उपासना अने त्रीजुं ज्ञान; एवी रीते वेद त्रयि कहेवाय छे.

हवे कर्म ते शुं? तो कर्म, अकर्म अने विकर्म एम कर्मना त्रण भेद छे. तेमां कर्म ते शुं? तो जगतकर्ता परमेश्वर तेनी आज्ञा पाळवी अने जगतना नाशकारक एवा जे कामादिक दोष तेनो नियम राखवो, कहेतां गृहस्थने पोतानी परणेली स्त्री होय तेने विषे भोग-बुद्धि राखवी ते पण अभाव युक्त कहेतां हाड मांसना लोचारूप जाणीने राखवी अने ते विना बीजी स्त्रीने विषे तो संकल्प पण न करवो, अने जे त्यागी

होय तेणे अष्ट प्रकारे स्त्रीनो त्याग राखवो अने जे सधवा स्त्री होय तेणे परपुरुषनो त्याग राखवो अने जे विधवा स्त्री होय तेणे तो त्यागीनी पेठे पुरुषमात्रनो सर्व प्रकारे त्याग राखवो. एवी रीते काम, लोभादिकने विषे आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं तेनुं नाम धर्म कहेवाय.

अने जे कामादिकने विषे अनियमपणें वर्तवुं तेनुं नाम अकर्म कहेवाय, कहेतां अधर्म कर्म कहेवाय अने ते अधर्म कर्मनो करनारो जीव छे ते नरकमां जाय छे अने आज्ञापूर्वक कर्मनो करनारो जीव स्वर्गमां जाय छे. अने विकर्म एटले निष्काम कर्म करवुं, कहेतां कर्म तो तेनुं ते पण ते परमेश्वरनी आज्ञापूर्वक करवुं अने 'परमेश्वर मारा उपर प्रसन्न थाय' एम समजीने कर्म करवुं तेनुं नाम विकर्म एटले निष्काम कर्म कहेवाय अने ते निष्काम कर्में करीने अंतःकरण शुद्ध थाय छे अने इन्द्रियो नियमसां थाय छे.

पण ते एकले धर्मे करीने विषयनो अभाव थतो नथी. केमके देहने पोतानुं रूप माने छे ते देह पण मायामांथी थयो छे अने विषय पण मायामांथी थया छे, माटे 'देह हुं त्यारे विषय मारा.' एम पोताना जणाय त्यां सुधी तेनो अभाव थाय नहीं अने जो पारका जणाय तो तेनो सहेजे ज अभाव थाय. जेम पोताना मोढानुं थुंक छे तेने पोतानुं जाण्युं छे तो तेने घडीये घडीये गळी जाय छे, पण तेनो कोई दहाडो अभाव थतो नथी. अने जो बीजाना मोढानुं थुंक होय तो तेनो अतिशय अभाव थाय छे अने ते थुंक पारकुं कोई रीते गळवानुं मन थाय ज नहीं. तेम पंचविषय छे ते पण थुंकना करतां कोटी घणा नकरा छे अने नरकरूप छे पण देहोऽहं बुद्धिवाळाए विषयने पोताना मान्या छे माटे तेनो अभाव थतो नथी अने प्रीतिए करीने जीव जे ते विषयने भोगवे छे. अने जो देहोऽहं बुद्धि टळी जाय तो विषयनो अतिशय अभाव थई जाय.

ते सारु सत्पुरुष जे ते जीवने निष्कामकर्मनी दृढता करावीने पछी देह आत्माना वेगळापणारूप ज्ञान करावे छे ते शब्द विषयनुं जे सुखदुःख छे ते तो श्रोत्र इन्द्रियने अने दिग्पाल देव अने अंतःकरणने छे पण तेनुं सुखदुःख आत्माने लेशमात्र न होय, केमके देहमां आत्मा होय पण जो कान इन्द्रियना देव उठी जाय तो शब्द इन्द्रियनुं सुखदुःख कोई दहाडे लेशमात्र थाय नहीं, माटे कान अने तेना देवने सुखदुःख थाय छे पण आत्माने शब्दनुं सुखदुःख थतुं नथी.

जेम कोईनो दीकरो वीस वरसनो अने महागुणवान होय अने ते मरी जाय तो तेनुं अंतरमां लेशमात्र दुःख थाय नहीं अने पोतानो दीकरो वे वरसनो होय अने रोगी अने कुरूप होय पण जो ते मरी जाय तो तेनुं अंतरमां महादुःख थाय, केमके पोतानो मान्यो माटे दुःख थयुं. अने वीजाना दीकराने पोतानो नथी मान्यो माटे तेनुं दुःख न थयुं, तेम 'देहथी आत्मा नोखो छे' एम समजे तो तेने शब्दादिक पंचविषयनुं दुःख लेश मात्र थाय नहीं. एवी रीते चोवीस तत्त्वरूप जे मायानुं टोळुं ते थकी आत्माने जुदो पाडीने तेने विषे स्थिति पामवी. ते आत्मा केवो छे ? तो चैतन्य छे, व्यापक छे, जाणनारो छे, निराकार छे, अविनाशी छे, अखंड छे अने चिदाकाशरूप छे; कहेतां भगवानना अंगनो प्रकाश जे अक्षरब्रह्म तेनो रूप जाति छे. पण ते अक्षरब्रह्म निरअवकाश छे, कहेतां भगवाननी मूर्ति विना तेने विषे वीजो मायानो भाग लेश मात्र नथी, अने चिदाकाशरूप जे आत्मा तेने विषे अवकाश रह्यो छे अने ते अवकाशमां माया रही छे. ते माया अंधकाररूप छे; कहेतां अज्ञानरूप एटले परमात्माने न जाणवापणुं एज अंधकार अने एज माया अने एज जन्ममरणनुं बीज छे.

अने परमात्मा केवा छे ? तो सूर्यरूप छे. ते जे आत्मा मायाना टोळाथी जुदो समजीने अक्षरब्रह्मने विषे पोताना आत्माने एकत्वभाव

करीने, तेने विषे दृढ स्थिति पामीने सुखदुःखने सम करीने पछी एवी रीते निष्कामधर्मने दृढ करावनारा अने मायाने दूर करावीने ब्रह्मस्थितिने पमाडनारा एवा जे ज्ञानदाता प्रत्यक्ष सद्गुरुरूप हरि तेनी मूर्तिनुं ध्यान करवुं. अने ते मूर्तिनुं ध्यान करं छे त्यांर माया पण टळी जाय छे अने ब्रह्मरूप पण थवाय छे अने मनुष्य अने दिव्य बे भाव परमात्माने विषे जणाता हता ते बे भाव टळीने अद्वैतपणें पोतानुं स्वरूप जे ब्रह्म तेने विषे दर्शन थाय छे त्यारे ते आत्मा निरअवकाशरूप एवुं जे अक्षरब्रह्म ते रूप थाय छे, त्यारे ते आत्माने विषे अवकाश नाश पाम्यो त्यारे माया पण नाश पामी अने माया नाश पामी त्यारे जगत पण टळी गयुं अने जगत दृष्टिमांथी गयुं त्यारे जन्म-मरण पण टळी जाय छे. एवी रीते, कर्म, उपासना अने ज्ञान ए त्रण भेगां छे.

तेमां उपासना कारण छे अने कर्म अने ज्ञान तेनुं कार्य छे, ते उपासना अखंड रहे छे अने कर्म अने ज्ञान ए बे उपासनाने विषे लय पामे छे, केम के मायाने दूर करवी तेनुं नाम कर्म छे अने ते माया टळी गई एटले कर्मनी समाप्ति थई रही. ते माया केवी रीते टळे? तो परमात्माने देखवे करीने ते माया टळी एटले कर्मनी समाप्ति थई, पण परमात्माने देखवारूप जे उपासना ते तो अखंड रही. अने ब्रह्मरूप थवुं तेनुं नाम ज्ञान छे. ते ब्रह्मने विषे स्थितिने पाम्यो त्यारे ज्ञाननी पण समाप्ति छे, केम के जे काम करी रह्यो ते कामनी समाप्ति थाय छे. ते ज्ञान पण शाथी दृढ थयुं? तो ते पण परमात्माने ध्याने करीने थयुं, ते ज्ञाननी तो समाप्ति थई पण परमात्मानुं ध्यान करवारूप जे उपासना ते तो अखंड रही, माटे उपासना थकी ज माया तराय छे, अने ब्रह्मरूप थवाय छे अने परमात्माने साक्षात्कार पमाय छे. ते सारु गीतामां पण कह्युं छे श्लोक–

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वा सर्वे पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ॥ १ ॥
दैवी ह्येषा गुणमयि मम माया दुरत्यया।
मामेवये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥ २ ॥

एवी रीते प्रत्यक्ष परमात्मा थकी ज माया तराय छे अने ब्रह्मरूप थवाय छे अने ब्रह्मरूप थईने परमात्माने पमाय छे ते पाछुं कोई दहाडे जगतमां अवातुं नथी अने परमात्माने ध्याने करीने मायानो आकार टळीने दिव्य आकार बंधाय छे अने परमात्माना साधर्म्यपणांने पामे छे. अने परमात्मानी मूर्ति विना तेनी दृष्टिमां बीजुं कांई रहेतुं नथी अने भक्त पूर्णकाम थाय छे.

अने प्रत्यक्षनी उपासना विना तो कोटी कल्प सुधी कर्म कर्या करे अने ज्ञान कथ्या करे पण तेने करीने कोई वातनी सिद्धि थती नथी. जेम आकाशने सो वर्ष सुधी जीभे करीने चाटे पण खारो–खाटो लेश मात्र जणाय नहीं तेम उपासना विना तो आकाशने चाट्या जेवुं छे. माटे उपासना विना तो धर्म ते अधर्म छे अने ज्ञान ते अज्ञान छे माटे उपासनाये युक्त जे जे साधन करे तेनी ज सिद्धि थाय छे अने ते सर्वे सुखने पामे छे. माटे ते समय आज तमारे आव्यो छे ते सावधान थईने आत्मानुं काम सुधारी ल्यो. ए ज तमारा हीतनी वार्ता छे.”

इति श्रीमुखसिद्धांत १७९ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत १८० विषय :—पंचदेवरूपे एक ज परमात्मा केवी रीते? ज्ञान अने निर्विकल्प निश्चयथी ज मोक्ष थाय.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२२ना फागण वदि ६ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये पारेख भवानीदास

जगजीवनदासनी धर्मशाळामां बंगला उपर गादी–तकिये युक्त ढोलियो विछाव्यो हतो अने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने वेठी हती अने रात्री प्होर एक गई हती.

प्रश्नः– ते समये जोशी गौरीशंकर रामकृष्णे प्रश्न पूछ्यों जे "हे महाराज ! जे पांच देव जे सूर्य, गणपति, देवी, विष्णु अने शिव ते सरखा हशे के कोई अधिक न्यून हशे ?"

पछी महाराज बोल्या जे "पांचे देव सरखा छे पण तेमां कोई अधिक न्यून नथी अने सर्वे जगतना कर्ता हर्ता, सर्वना आधार अने अक्षरातीत एवा जे परमात्मा ते एक छे, अने ते परमात्माना पांच देव अंग छे अने परमात्मा तेना अंगी छे. जेम आपणे हाथ, पग, नाक, कानादिक अंग छे तेमां कयुं अंग नानुं कहेवाय ? अने कयुं अंग मोटुं कहेवाय ? ए तो सर्वे अंग सरखां ज छे. केम के एक अंगने कोई पूजे अने एक अंगने कोई कापे तो तेनुं सुखदुःख ते एक पुरुषने ज थाय छे, तेम पांचे देव परमात्माना अंग छे ते एक देवनी स्तुति करे अने एक देवनी निंदा करे तो ते परमात्मानी ज निंदा अने स्तुति थाय छे. माटे ते निंदा अने स्तुतिना करनारा उपर परमात्मा प्रसन्न थता नथी, केमके जेम कोईकनुं एक अंग कापीए अने एक अंगने पूजीए तो ते पुरुष राजी तो थाय नहीं अने ऊलटो अतिशय कोपायमान थाय. तेम जे मनुष्य एक देवने पूजे अने बीजा देवनी निंदा करे छे तेना उपर तो परमात्मानो कोप थाय छे. माटे पांचे देवने विषे परमात्मानो भाव राखीने सरखा जाणवा पण तेमां भिन्नभाव न राखवो.

अने पुराणोमां व्यासजीए पांचे देवनो नोखो नोखो महिमा कह्यो

छे, ते पण एक परमात्मानो ज कह्यो छे. केम के ते पांच देवरूपे परमात्माना गुण कह्या छे. ते जीव तथा ईश्वरना इन्द्रियो अने अंतःकरणना गुणने परमात्मा प्रकाशे छे तेणे करीने परमात्माने 'गणपति' एवे नामे कहीने व्यासजीए पुराणमां गाया छे. अने ते परमात्मा जे ते मायानुं आवरण टळावीने जीवने ज्ञान प्रकाश करे छे माटे सविता एटले सूर्य एवे नामे कहीने व्यासजीए परमात्मानुं ज वर्णन कर्युं छे अने गायत्रीमां जे सविता कह्या छे ते परमात्माने ज कह्या छे; पण आ सूर्यने नथी कह्या, केम के आ सूर्य तो अग्निनो गोळो छे. अने जेना एक आकर्षणे करीने अनंत कोटी ब्रह्मांड रह्यां छे एवा जे जगतेश्वर परमात्मा तेने ज व्यासजीए शक्तिरूपे करीने गाया छे. अने जेना बोधवडे करीने आत्मानुं कल्याण थाय छे एवा ज परमात्मा तेने कल्याण एटले शिवरूपे गाया छे अने सर्वे जगतनुं पालन करे छे माटे ते परमात्माने विष्णुरूपे कहीने गाया छे एवी रीते एक परमात्माने ज पांच देवरूपे करीने गाया छे.

अने ते परमात्मा जीवोने ज्ञान आपीने इन्द्रियो अंतःकरणना आवरण टळाववा सारु पृथ्वी उपर प्रगट थया हता त्यारे ते परमात्माए कह्युं के 'हुं गणपति छुं.' पछी ते गणपतिने सर्वोपरी कहीने बीजा देवोए तेमनी भक्तिभावे स्तुति करी. पछी ते परमात्मानुं गणपतिरूपे व्यासजीए वर्णन कर्युं. तेनुं नाम 'गणपतिपुराण' कहेवाय छे, अने एवी ज रीते परमात्माए कोईक समये स्त्रीओना उद्धारने अर्थे जगदंबारूपे अवतार धारण कर्यो त्यारे ते समये परमात्माने देवीरूपे सर्वोपरी कहीने बीजा सर्वे देवोए भक्तिभावे स्तुति करी, तेनुं नाम देवीपुराण कहेवाय छे.

त्यारे तेमां कोईने एम आशंका थाय जे सर्वे देव परमात्मानां ज अंग छे अने सर्वे सरखां छे तो तेमां एकने सर्वोपरी कहीने बीजा देवोए

स्तुति करी तेनुं शुं कारण हशे? तो एनुं एम छे जे जेम आपणां अंग सर्वे सरखां छे पण तेमां एक आंखने जो कोईक रूप जोवानुं मन थाय त्यारे ते रूप तो एक आंखने जोवुं छे पण ते आंखनी सेवामां सर्वे बीजा अंग मंडी पडे छे, ते पग पण ज्यां रूप पदार्थ होय त्यां चालीने जाय छे, हाथ पण ते पदार्थने हाथमां लईने फेरवी फेरवीने आंखने रूप देखाडे छे. वाणी पण आंखनो विषय जे रूप तेनां वखाण करे छे, कान पण ते रूप पदार्थनां वखाण सांभळीने खुशी थाय छे, मन पण ते रूपमां तदाकार थई जाय छे, चित्त पण ते रूप पदार्थनुं चिन्तवन करवा मांडे छे अने बुद्धि पण ते रूपनो निश्चय करे छे. एवी रीते रूप पदार्थ एक आंखनो ज फक्त विषय छे पण ते आंखनी सेवामां बीजा सर्वे इन्द्रियो अंतःकरण मंडी गया. अने तेमज कानने शब्द सांभळवो होय तो बीजा सर्वे तेनी सेवामां मंडी जाय छे.

तेम जगतना कल्याणने अर्थे परमात्माए पोताना अंगरूप पांच देवनुं प्रतिपादन कर्युं छे ते जे देवने मुख्य राखीने परमात्मा पृथ्वी उपर प्रगट थया होय त्यारे ते समये बीजा देव तेने सर्वोपरी पुरुषोत्तम कहीने तेनी भक्तिए एटले प्रीतिए करीने स्तुति करी छे. एवी रीते सर्वे देवनी एक बीजाए स्तुति करी छे पण ते तो पांचे देव सरखा छे अने ज्यारे जीवने आत्यंतिक ज्ञान थाय छे त्यारे ते पांच देवनो भाव टळी जाय छे अने एक अद्वैत परमात्मा प्रत्यक्ष देखाय छे. माटे पांचे देवरूपे एक परमात्मा ज छे पण तेमां कोई नाना मोटा नथी, ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

पछी रावळ छोटालाल लक्ष्मिरामे प्रश्न पूछयो जे "हे महाराज! कृष्णावतारमां भगवाने गोपीयो संघाते विहार कर्यो तेने करीने गोपीयोनां कल्याण थयां हशे के कोई ज्ञान आप्युं हशे ? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "जीवनुं कल्याण तो बे वात सिद्ध थाय त्यारे थाय छे ते एक वासनानो त्याग अने बीजुं प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय; ए बे साधन परिपूर्ण सिद्ध थाय त्यारे जीवनो आत्यंतिक मोक्ष थाय अने जन्म-मरण टळी जाय. अने जो ए बे साधनमां एके अधूरुं होय त्यां सुधी जन्म-मरण टळे नहीं.

तेमां वासना टळी होय अने निश्चयमां कसर होय तो ते सारु जन्म धरवो पडे छे अने निश्चय थयो होय पण वासना टळी न होय तोय पण जन्म धरवो पडे छे. ते ऋषभदेव भगवानना पुत्र भरतजीने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय तो थयो हतो पण तेनी वासना टळी न हती तो तेने त्रण जन्म धरवा पड्या अने पछी ते वासनाने टाळवाने अर्थे जडभरतना देहमां अतिशय आकरा वैरागने पाम्या अने पदार्थ मात्रनो त्याग कर्यो अने जाणीने गांडानी पेठे वर्त्या अने निर्वासनिक थया त्यारे तेनो आत्यंतिक मोक्ष थयो अने जन्म-मरण टळी गयुं.

अने गोपीयोने वासना तो न हती अने तेणे तो घणाक जन्म सुधी महा तप करीने वासनानो त्याग कर्यो हतो पण तेणे प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो निश्चय न हतो ते सारु जन्म धरवो पड्यो हतो. माटे ते गोपीयो पूर्वे ऋषि हता अने तप करता हता पछी ते ऋषियोए परमात्मानी स्तुति करी जे 'हे प्रभो ! तम विना बीजा सर्व देवने अमे पति कर्या कहेतां सर्व देवोनुं वर्णन कर्युं पण एक तमने वर्या नथी, कहेतां तमारा स्वरूपने पाम्या नथी, केमके तमारुं स्वरूप तो माया पर छे, ते मायिक इन्द्रियोए करीने केम वर्णवामां आवे ? न ज आवे. ते सारु, हे हरी ! तमे कृपा करीने अमारा पति थाओ, कहेतां तमारुं स्वरूप अमने साक्षात्कार प्रगट थईने देखाडो अने अमे तमने वरीये अने

तमारा गुण गाइए.' पछी एवी रीते स्तुतिने सांभळीने परमात्मा पोते श्रीकृष्णरूपे प्रगट थया अने ते वेदमूर्ति एवा जे ऋषियो तेने वृंदावनने विषे स्त्रीओना देह धराव्या. पछी तेने धर्म, ज्ञान अने वैराग तो पूर्वेना दृढ हता अने एक भक्ति जे प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीति न हती माटे तेने पोताने विषे अतिशय आकरी भक्ति जे प्रीति थाय ते सारु श्रीकृष्ण भगवान ते गोपीयो साथे रास रम्या, विहार कर्यो अने तेना दूध दहीं जम्या अने ते साथे हास्य-विनोद करीने तेनां चित्तने ताणी लीधां अने अतिशय दृढ प्रीति करावीने तेनो आत्यंतिक मोक्ष कर्यो माटे ते गोपीओने ज्ञान तो हतुं अने निर्वासनिक थई हती पण स्वरूपना निश्चयमां अने प्रीतिमां कसर हती माटे हास्य विनोदादिक हावभाव देखाड्या विना प्रीति थाय नहीं ते सारु भगवाने कृपा करीने पोताने विषे प्रीति कराववा सारु ज एवी लीला करी छे अने पोते भगवान तो उर्ध्व कहेतां ब्रह्मचारीना पण ब्रह्मचारी छे, अने पूर्णकाम छे. ते पोताना भक्तोने पूर्णकाम करवा सारु जे रीते तेनो मोक्ष थाय तेवी लीला अने तेवां चरित्र करे छे. ते गोपीयोने प्रीति ज एक कराववी हती तो ते साथे हास्य-विनोद ज करीने प्रीति करावीने तेनो मोक्ष कर्यो. अने अर्जुनने अने उद्धवजीने ज्ञानमां कसर हती तो तेने ज्ञान आपीने मोक्ष कर्यो. माटे निर्वासनिकपणुं अने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो माहात्म्ये सहित उत्तम निर्विकल्प निश्चय ए बे साधन पूरां थाय त्यारे ज जीवनी आत्यंतिक मुक्ति थाय छे अने जन्म-मरण टळे छे, पण ते विना जन्म-मरण टळे नहीं." ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे.

इति श्रीमुखसिद्धांत १८० समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत १८१ विषयः–अद्वैत, विशिष्टाद्वैतादिक चार मतनुं अभेदपणुं

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ ना चैत्र सुदि १० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये सोनी मोतीने घेर पाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां गुलाब अने जाईना पुष्पना घणाक हार धारण कर्या हता. हाथने विषे पुष्पना बाजुबंध अने गजरा धारण कर्या हता अने पाघमां बे कोरे तोरा अने कान उपर गुच्छ धारण कर्या हता. पाघ उपर घणांक पुष्पनां हार शोभी रह्या हता अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. उगमणे मुखारविंदे विराजमान थया हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी जेठे काछीए महाराजने हाथ जोडीने एक प्रश्न पूछ्यो जे "हे महाराज ! जीवात्मानुं रूप केवुं हशे, अने परमात्मानुं स्वरूप केवुं हशे ? अने जीवात्मा अने परमात्मा ते बन्ने एक हशे के जुदा जुदा हशे ? अने जुदा होय तो ते जीवात्मा परमात्माने पामे छे के नथी पामतो ? अने पामतो होय तो शी रीते पामे छे ? अने ते पामे छे त्यारे बन्ने एक थई जाय छे के जुदा अने जुदा रहे छे ? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "बहु सारा प्रश्न पूछ्या. हवे सांभळो तेनो उत्तर करीए छीए जे प्रथम परमात्मानुं स्वरूप कहुं छुं. जे परमात्मा केवा छे ? तो स्वतःसिद्ध अनादि माया पर छे. ते माया शुं ? तो परमात्माने विषे काम नथी, कहेतां जेम पुरुषने स्त्रीनी इच्छा अने स्त्रीने पुरुषनी इच्छा थाय छे तेम परमात्माने स्त्रीनी के पुरुषनी इच्छा नथी. माटे परमात्माने विषे काम नथी. अने बीजो परमात्माने विषे लोभ नथी, कहेतां पोतेपोताने सुखे करीने परिपूर्ण छे पण कोई द्रव्यादिक पदार्थनी

इच्छा नथी. माटे परमात्मा निर्लोभी छे, कहेतां परमात्माने विषे लोभ नथी. अने त्रीजो परमात्माने स्वाद नथी. कहेतां परमात्माने कोई जमवाना पदार्थनी इच्छा नथी. अने चोथो परमात्माने विषे स्नेह नथी,अने पांचमुं परमात्माने मान नथी; मान एटले माप. ते परमात्मा मापमां आवे तेवा नथी जे 'परमात्मा आवा छे' एम कहेवाय. माटे परमात्माने मान नथी. अने परमात्मा एक छे.

—अने जे जीव छे तेने विषे ए काम, लोभादिक पांचे दोष रह्या छे, अने ते एवा जीव जे ते असंख्य एटले घणांक छे. अने ते दोषरूपी आवरणे करीने जीव जे ते परमात्माथी जुदा कहेवाय छे ज्यारे ते पांच दोष टळे छे त्यारे ते आत्मा ब्रह्म कहेवाय छे; अने ते ब्रह्ममां परमात्मा अखंड रह्या छे.

ते परमात्मा केवा छे ? तो सच्चिदानंदरूप कहेवाय छे, सत् एटले अनादि अखंड मूर्ति त्रणे काळमां छे, छे अने छे. अने चिद् एटले प्रकाशवान, कहेतां अनादि अखंड सहेज ज्ञानरूपी प्रकाश जेने विषे रह्यो छे. अने आनंद एटले सुख, ते परमात्मा पोते अखंड अनादि सुखनी मूर्ति छे. अने जे जीव छे ते पांच दोषे करीने असत्य कहेवाय छे, कहेतां जन्म–मरणने वारे वारे पाम्या करे छे, माटे जीव जे ते असत्यना भावने पामेलो छे, अने आत्मा परमात्माने नथी जाणतो माटे अप्रकाशित छे, कहेतां अज्ञानरूपी अंधकारे युक्त छे. अने जीव जे ते दुःखियो छे, कहेतां काळ–मायाने आधिन थईने जन्म, मरण, गर्भवास अने चोरासीमां महा संतापने पामे छे. माटे परमात्माने विषे सच्चिद् अने आनंद गुण रह्या छे अने जीवने विषे असत्, अप्रकाश अने दुःख रूप गुण रह्या छे अने जीव जे ते दोषे रहित थाय तो वस्तुताए सच्चिदानंदरूप थाय एवो छे.

जेम एक राजा छे अने एक रांक छे ते वेउ मनुष्यपक्षे तो सरखा कहेवाय पण ते रांकमां अने राजामां घणो फेर छे, केम के राजा छे ते तो स्वतंत्र अने चाहे तेम करवाने समर्थ छे अने रांक छे ते तो परतंत्र अने असमर्थ छे. परंतु ते रांकनी उपर राजा महेरवान थाय तो ते रांक मटीने राजाना सरखा सुखने पामे. तेम जीव उपर दया करीने परमात्मा जे ते पोतानी स्व–इच्छाए करीने एवो संकल्प करे जे 'चिदाकाशरूप मारा अंगनो प्रकाश जे ब्रह्म तेने विषे हुं अखंड रह्यो थको ब्रह्मांड गोळाना आवरणमां रह्या जे मनुष्य प्राणी तेने प्रत्यक्ष देखाउं' एवो परमात्मा अक्षरधाममां रह्या थका संकल्प करे छे अने रामकृष्णादिकरूपे मनुष्यने दर्शन थाय छे. पछी ते प्रत्यक्ष परमात्मानो जे जीव आशरो करे छे ते जीवना कामादिक दोष टळी जाय छे अने जेने प्रत्यक्ष परमात्मा मळे छे तेने ज कामादिकनी वासना टळे छे पण ते विना बीजा कोईथी कामादिक टळतां नथी, माटे जेने प्रत्यक्षपणांना ज्ञाने करीने कामादिकनी वासना टळी जाय छे ते आत्मा जे ते परमात्माने पामे छे, कहेतां परमात्माना साधर्म्यपणांने पामे छे, कहेतां परमात्मा जेम सत्, चिद् अने आनंदरूप छे तेम ते आत्मा पण परमात्माना आशरा वडे करीने सत्, चिद् अने आनंदरूप थाय छे. अने एवी रीते प्रत्यक्ष परमात्माने पाम्यो जे आत्मा ते आत्मा परमात्माने विषे अद्वैतपणें रहे छे.

अने जे अद्वैतपणांना चार मत छे तेमां शंकरस्वामीनो केवळ अद्वैत मत छे. ते शंकरस्वामीए केवळ अद्वैतनुं प्रतिपादन कर्युं छे तेनुं शुं कारण छे ? तो जेवा परमात्मा पोते आनंदरूप छे तेवो ज तेने पाम्यो जे आत्मा ते पण आनंदरूप थाय छे माटे आनंदरूपे सरखा छे. ते सारु शंकरस्वामीए केवळ अद्वैतनुं प्रतिपादन कर्युं छे; तो पण परमात्मा स्वामी छे अने आत्मा तेनो दास छे, एम शंकरस्वामी समजता हता अने ते

वातने जणाववा सारू शंकरस्वामीए कह्युं छे के 'भजगोविंदम् भजगोविंदम्..' एवी रीते कह्युं छे. माटे ब्रह्मरूप थया पछी पण आत्माने परमात्मा ध्यान करवा योग्य रहे छे, अने सुखे करीने सरखा छे, माटे शंकरस्वामीए अद्वैतनुं प्रतिपादन कर्युं छे.

पछी ते शंकरस्वामी गया केडे तेना अंतरना सिद्धांतने न जाणता एवा जे वाचक-ज्ञानी अने विषयना रागी ते ए अद्वैत शब्द उपरथी एम समज्या जे 'सर्व ब्रह्म छे; बीजुं कोई नथी.' एम समजीने विधि निषेध तोडीने विषय भोगववा मंडी गया अने महा भ्रष्ट थया अने कल्याणनो मार्ग बंध थई गयो, अने शंकरस्वामीए जे चतुष्टय साधन बताव्यां छे तथा अहिंसा अने ब्रह्मचर्यादिक धर्म बताव्या छे तेने तो भूली गया अने एक ब्रह्मनुं नाडुं पकडीने भ्रष्ट थवा मांडयुं.

ते अज्ञानने टाळवाने अर्थे रामानुजाचार्य प्रगट थया अने तेणे कह्युं के अद्वैतब्रह्म तो खरुं पण विशिष्टाद्वैत छे. हवे विशेष्टाद्वैतनो शो अर्थ छे ? तो एक परब्रह्म परमात्मा छे ते तो सदाय माया पर छे अने एक जीवात्मा ब्रह्म छे. ते जीवात्मा प्रथम अनादि मायामां विंटळायेलो हतो. ते जीवात्माने प्रत्यक्ष परमात्मा मळे छे अने ते परमात्मा कृपा करीने आत्मा परमात्माने न जाणवारूप जे माया तेने ज्ञान आपीने माया पर करे छे त्यारे ते आत्मा ब्रह्म थईने परब्रह्मना सदृश्यभावने पामे छे त्यारे तेनुं नाम विशिष्टाद्वैत कहेवाय छे, कहेतां एक सदाय माया पर ब्रह्म छे अने एक तेनी कृपाए करीने मायानो त्याग करीने ब्रह्म थयो छे. माटे ब्रह्म पक्षे तो बे एक छे, कहेतां अद्वैत छे, पण तेनुं नाम विशिष्टाद्वैत मत कहेवाय छे. माटे धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति सिद्ध करीने ब्रह्मरूप थईने परमात्मानी उपासना करवी एज आत्यंतिक मुक्ति छे.

अने ते सिद्धांतने पण सत्पुरुष गया केडे भूली गया अने तेमां एम समजाणुं जे 'विशिष्टाद्वैत एटले परमात्मा माया पर अने जीवात्मा मायामां छे; तो पण ते तो बेउ अद्वैत छे, अने माया कोईनी टळती नथी' एम जाणीने धर्म-नियमनो त्याग करीने विषय भोगववा मंडी गया अने कल्याणनो मार्ग बंध थयो.

—पछी वल्लभाचार्ये प्रगट थईने एम कह्युं के 'परमात्मा माया पर छे अने तुं जीव मायामां छे ते तारी माया जे यत्किंचित् होय ते सर्वस्व ते माया पर एवा जे परमात्मा प्रत्यक्ष तेने अर्पण कर अने तारे जे मायाने विषे भोगबुद्धि छे तेनो त्याग कर एटले तुं शुद्ध आत्मारूप थईश अने परमात्माने पामीश अने तारे विषे माया छे ते टळी जशे' एवी रीते शुद्ध आत्मारूप थईने परमात्माने पाम्यो तेनुं नाम शुद्धाद्वैत कहेवाय, कहेतां मायाने तजीने शुद्ध थयो एवा जे आत्मा अने *अनादि शुद्ध छे एवा जे परमात्मा ए बेउ शुद्धपणें करीने अद्वैत* छे, पण जे अनादि शुद्ध छे एवा जे परमात्मा ते स्वामी छे अने मायाने त्यजीने शुद्ध थयो ते सेवक छे.

अने जे विषयने भोगवे छे अने ते वाच्यकज्ञाने करीने एम कहे जे 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' एम जाणीने पोताने ब्रह्म माने छे ते तो ब्रह्म-कोदाल छे अने ते तो महा पापी छे. केमके ज्ञाननी ओथ लईने विधि-निषेधने तोडीने विषयने भोगववा एज मोटुं पाप छे. अने ते विषयना भोगवनाराने अने परमात्माने घणुंज छेटुं छे. अने एवा ब्रह्म-कोदाल जे ते ज्ञाननी ओथ लईने विषयने भोगवे छे अने गुरु थईने बेसे छे अने बीजा केटलाक जीवोने भ्रष्ट करे छे माटे एवा अधर्मीओनो नाश करवाने अर्थे अने ज्ञानरूपी धर्म स्थापवाने अर्थे वारंवार महात्मा पुरुष प्रगट थाय छे.

अने प्रगट थईने विषयना भोगवनारा एवा जे मिथ्या-ब्रह्मज्ञानी तथा मिथ्या-भक्तिनी ओथ लईने भगवाननी प्रसादी जाणीने विषयने भोगवीने भ्रष्ट थनारा तथा मिथ्या वैराग्यनो मस लईने वस्त्र विना नग्न करीने कोईकना घर मारनारा एवा जे अधर्मी तेना मतनो नाश करे छे अने मुमुक्षु जीवनां इन्द्रियो अंतःकरण एवा अधर्मीने संगे करीने विषयमां जोडाई गया छे तेने ते विषय थकी इन्द्रियोने पाछी वळावीने कहेतां विषयनो त्याग करावीने तेनी वृत्तिओने नवधाभक्तिए करीने परमात्माना स्वरूपने विषे जोडावीने धर्मने विषे दृढता करावे छे. एवी रीते धर्मे करीने सत्पुरुष विषयनो त्याग करावे छे.

अने एवा धर्मनी जेने दृढता थई होय तेने ज्ञान थाय छे, ते ज्ञाननुं शुं रूप छे ? तो आत्मा अने परमात्मा विना सर्व पदार्थ मिथ्या छे. अने झांझवाना जळवत् छे अने स्वप्ननी सृष्टिवत् छे. माटे जेने ज्ञान थाय छे ते जे ते सर्व मायाना पडचंडने झांझवा अने स्वप्नवत् जाणीने तेने भोगववानी वासनानो त्याग करे छे. अने आत्मा अने परमात्माने अखंड संभारे छे. एवी रीते सत्पुरुष जे ते ज्ञाने करीने पण विषयनो त्याग कराववा रूप धर्मनुं स्थापन करे छे.

अने जेने एवुं ज्ञान थयुं होय तेने पछी वैराग प्रगटे छे, ते वैरागनुं केवुं रूप छे ? तो वैरागवानने आत्मा अने परमात्मा विना सर्व पदार्थने विषे वैरभाव वर्ते कहेतां शत्रुपणें वर्ते केमके जेने वैराग होय तेने एवी समजण होय छे जे 'महा सुखना धाम अने सत्य अने अविनाशी एवा जे आत्मा अने परमात्मा ते थकी पाडनारा अने जन्म, मरण, गर्भवास अने चोरासीमां जीवने महाकष्टने पमाडनारा एवा अने नाशवंत अने स्वप्नवत् अने अंते अपार दुःखनुं कारण अने भ्रांतिवत् झांझवारूप

एवा कोटी दोष अने पाप अने कलेश रह्या छे जेने विषे एवा सर्व जगतना मायिक पदार्थ छे,' एवी रीते वैरागवान छे ते मायिक पंचविषयनो अतिशय मनकर्मवचने जीवमांथी त्याग करे छे तेनुं नाम वैराग कहेवाय छे. एवी रीते पण सत्पुरुष ज वैरागे करीने विषयनो त्याग दृढपणें करावणा रूप धर्मनुं स्थापन करे छे.

अने जेने एवो वैराग प्रगट थयो होय तेने ज भक्ति आवे छे, कहेतां परमात्माने विषे प्रीति थाय छे. केमके ते वैरागवान एम जाणे छे जे ' जेणे मने अधर्मनो त्याग करावीने धर्मने विषे दृढता करावी अने पिंड, ब्रह्मांडादिक मायानो प्रपंच मिथ्या करावीने चार प्रकारना प्रलयनुं ज्ञान आपीने सर्व पदार्थने विषे वैराग करावीने माया पर एवुं जे ब्रह्म तेने विषे परब्रह्मनुं रूप साक्षात्कार देखाड्युं एवा जे सद्गुरुरूप ज्ञानदाता ते तो स्वंय परमात्मा छे,' एम ते वैरागवान जाणे छे.

अने ते सद्गुरुरूप हरि ते मनुष्य जेवा जणाय छे तो पण ते तो माया पर जे ब्रह्म तेना प्रकाशक छे अने तेना आधार छे. केमके जीव जे ते मायाने विषे महा अंधकाररूप हतो तेने ज्ञान आपीने ब्रह्मरूप कर्यो माटे जेणे ब्रह्मरूप कर्यो त्यारे ते ब्रह्मना करनारा ठर्या कहेतां ब्रह्मना कारण कहेवाय अने ब्रह्म तो तेनुं कार्य कहेवाय. माटे कारण ते कार्यनुं आधार छे. ते सारु ज्ञान आपीने पंचविषयनो त्याग करावीने ब्रह्मने विषे स्थिति करावी एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेनी मूर्तिने तो दिव्य अने अक्षरब्रह्मना आधार जाणीने माहात्म्ये सहित पोताना आत्माने विषे तेनुं अखंड ध्यान करवुं अने एवी रीते मनुष्याकार मूर्ति भगवान अने अक्षरब्रह्मने विषे रह्या जे दिव्यमूर्ति भगवान ते बेउने एक जाणवा कहेतां अद्वैत जाणवा तेनुं नाम द्वैताद्वैत मत कहेवाय छे.

माटे अद्वैतमत, विशिष्टाद्वैतमत, शुद्धाद्वैतमत तथा द्वैताद्वैतमत

ए चारे मतनो सिद्धांत एकज छे, केमके ए चारेमां सत्पुरुषना अंतरनो रहस्य एवो छे जे 'एक सदाय मायाथी पर एवा जे परमात्मा ते जे ते कृपा करीने मायामां छे जीव तेने प्रत्यक्ष मळे अने ते जीवोने पोताना निष्कामादिक गुण आपीने तेना कामादिक दोष टळावीने पंचविषयनो त्याग करावीने माया पर जे ब्रह्म तेने विषे स्थिति करावे छे. अने ते ब्रह्मथी पर एवा जे परब्रह्म तेना स्वरूपनो निश्चय करावीने तेना साधर्म्य-पणांने पमाडी दे छे, कहेतां जेवा परमात्मा सच्चिदानंदरूप छे तेवो जे ते आत्मा पण सच्चिदानंद रूप थाय छे. माटे सच्चिदानंदपणां रूप गुणे करीने तो बेउ एक एटले अद्वैत कहेवाय छे.

—पण तेमां एटलो भेद रहे छे जे आत्मानी वृत्ति परमात्माने विषे ध्यानाकार रहे छे. अने एक ब्रह्म कहेवाय छे अने एक परब्रह्म कहेवाय छे, अने जे परब्रह्म छे तेनी मूर्ति प्रत्यक्ष होय तेने तो श्री, वच्छ अने भृगुलांछन होय छे. अने ते मूर्ति जीवोना कल्याण करवाने अर्थे वारं-वार पृथ्वी उपर प्रगट थाय छे अने जीवोने ज्ञान आपीने पंचविषयनो त्याग करावीने माया पर करे छे; पण ते परमात्मा विना बीजो कोई विषयनो त्याग करावीने माया पर करवाने समर्थ नथी.

माटे जेने विषे कोई दिवस माया न हती तेनुं नाम परमात्मा छे अने जेने विषे अनादिनी माया छे तेनुं नाम जीव छे. अने ते परमात्मांनी कृपाए करीने मायानो त्याग करे ते जीव जे ते परमात्माने पामे छे अने ते जीव मटीने ब्रह्म कहेवाय. अने परमात्मा परब्रह्म छे. अने ते जीव परमात्माने क्यारे पामे ? तो ते परमात्मा पृथ्वी उपर प्रत्यक्ष होय अने तेनो जीव आशरो करे त्यारे ज ते जीव परमात्माने पामे छे पण ते विना परमात्माने पामवानो बीजो उपाय नथी. माटे ते समो आज तमारे आव्यो छे ते चेतशे ते सुखी थशे."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १८१ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत १८२ विषयः-काम, लोभादिकना अर्थमां मर्म.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२२ ना चैत्र सुदि १२ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये पाटीदार बाई जीजीबाने घेर आथमणें बार ओरडानी ओशरीमां गादीतकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. किनखावनो सुरवाल अने डगली धारण कर्यां हतां अने सोनेरी बुटीदार नीला रंगनो रेटो पहेर्यो हतो. कसबी कोर छेडानां कसुंबल शेलां केडे अने खभे धारण कर्यां हतां अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराजनी संध्या आरती थई रह्या पछी महाराज सर्वे सभा प्रत्ये बोल्या जे "जीवनुं कल्याण थवुं ते घणुं कठण छे अने ते कल्याण क्यारे थाय छे? तो पोतपोताना धर्ममां दृढपणें रहीने भगवाननुं भजन करे तो जीवनुं कल्याण थाय छे. पण ते धर्ममां क्यारे रहेवाय छे? तो प्रत्यक्ष सत्पुरुषने हाथे वर्तमान लईने तेनो आशरो करे छे त्यारे धर्ममां रहेवाय छे.

त्यारे तेमां कोईने एम आशंका थाय जे अमे आ डोशीने वर्तमान आपीने कह्युं जे 'तमारे चोरी न करवी, तथा व्यभीचार न करवो.' त्यारे कहेशे के 'साठ वरसनां घरडां डोसी अने मोटा पाटीदारना घरनां माणस अने जेणे हजारो रूपीया तो ब्रह्मभोजन करीने वापर्या ते तो कोई दहाडो चोरी के छिनाळी करे? न करे. माटे सारा माणसने एवुं शुं कहो छो?' एम आशंका थाय ते उपर कहुं छुं जे व्यभिचार ते तो कामनी वासना जीवमां छे तेनुं नाम ज व्यभिचार छे. अने जे लोभनी वासना छे तेनुं ज नाम चोरी छे. अने स्वादनी वासना छे ते ज दारु, माटी छे. अने स्नेहनी वासना छे ते ज वटलवुं-वटलाववुं छे अने मान छे ते ज हिंसा छे.

माटे एक देहे करीने उपरथी कोईक चोरी छिनाळी करे छे अने कोईक नथी करता पण ज्यां सुधी कामादिकनी वासना छे त्यां सुधी बीजा चोरासीमां अनंत देह धरीने चोरी, छिनाळी आदिक अनंत पाप जीव करशे. केमके एक एक जीवना सूक्ष्म शरीरने विषे कोटी कोटी ब्रह्मांड उपजे एटली वासना भरी छे. माटे जेणे सत्पुरुषने हाथे वर्तमान लईने वासना मूकवानो ठराव नहीं कर्यो होय ते चोराशीमां स्त्री-पुरुषना अनंत देह धरीने व्यभिचारादिक अनंत पाप करशे अने जन्म-मरणादिक महा कष्टने पामशे.

अने जे सत्पुरुष वर्तमान आपे छे ते तो कामादिकनी वासनानां मूळीयां काढी नाखवा सारु आपे छे. माटे कोई दिवस चोरी, छिनाळी न करता होय अने महा धर्मवाळा होय अने शरीरे वृद्ध होय तो पण तेने महात्मा पुरुष पासे निरमानी थईने वर्तमान लेवा तेमां तो शुं पण आ धर्मानंद स्वामी अने अक्षरमुक्तानंद स्वामी जेवा तो कोई मोटा नथी अने जेणे भगवान प्रगट मळवाने अर्थे अढार वर्ष सुधी तो लोटने पाणी पीधुं अने जेने स्वप्नमां पण कोई दिवस विर्यपात थातो नथी एवा महा त्यागी अने निष्कामी छे. पण तेणे य अमारी पासे आवीने वर्तमान लीधा केमके महात्मा पुरुषनी आज्ञा विना अने तेना आशरा विना कामादिकना बीज बळतां नथी.

ते सारु जेने कामादिक दोष टाळीने निर्वासनिक थईने भगवानना धामने पामवुं होय तेने तो सत्पुरुषना हाथे वर्तमान लईने तेनो आशरो करवो अने ते सत्पुरुषना आशरा थकी ज जीवनुं कल्याण थाय छे पण ते विना पोतानी मेळे सूझे एटला धर्म पाळे, जप करे, तीर्थ करे तो पण जीवनुं कल्याण थतुं नथी."

इति श्रीमुखसिद्धांत १८२ समास ।

श्रीमुखसिद्धांत १८३ विषयः - सत्त्वगुण अने तमोगुण

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ ना चैत्र सुदि १३ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये भवानीदासनी धर्मशाळामां पाट उपर गादीतकिये युक्त ढोलियो बिछाव्यो हतो ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगे पुष्पनां आभूषण शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी पंडया महाशंकरे महाराजने प्रश्न पूछयो जे "हे महाराज कोई न समजतो होय तेनुं कल्याण केम थाय ते कहो ?" पछी महाराज बोल्या जे "जीवने विषे त्रण गुण रह्या छे अने तेमां रज अने तम ए बे गुण जीवमां सहेजे ज मुख्यपणें वर्त्या करे छे अने ए बे गुणे करीने जीव विषयने भोगवे छे अने जन्म-मरणने पामे छे. अने जे सत्त्वगुण छे ते तो दाखडो करीने वधारे छे त्यारे वधे छे अने सत्त्वगुणनी वृद्धिए करीने जीवनुं कल्याण थाय छे. ते शास्त्रमां कह्युं छे जे—'सत्त्वगुणं ब्रह्मदर्शनम्' । माटे सत्त्वगुण मोक्षने अर्थे छे.

हवे सत्त्वगुणनुं शुं रूप छे ? तो सत्त्वगुणने विषे धर्म, ज्ञान, वैराग अने ऐश्वर्य ए चार वानां रह्यां छे. तेमां धर्म ते शुं ? तो जे जीव सत्त्वगुणी होय तेनी इन्द्रियो पोताने स्वाधिन होय कहेतां नियममां होय. अने ज्ञान एटले तेने देह-आत्मानो विवेक होय अने ते आत्माने पोतानुं स्वरूप मानतो होय. अने वैराग एटले सर्व पदार्थने विषे अरुची होय. अने ऐश्वर्य एटले दरेक मनोरथने पूरो करवानुं सामर्थ्य होय.

अने ते चार वानांथी उलटो ए तमो गुण; कहेतां तमो गुणने विषे

अधर्म, अज्ञान, राग अने असमर्थपणुं होय. हवे अधर्म ते शुं ? तो तमो गुणीनी इन्द्रियो नियममां होय नहीं. अने अज्ञान एटले तमो गुणीने देह-आत्मानो विवेक होय नहीं अने देहने पोतापणुं मानता होय अने राग एटले तमो गुणीने माफक पदार्थने विषे प्रीति बहु होय. अने असर्थ एटले तमो गुणी जे ते कोई मनोरथ पूरो करवाने समर्थ नथी अने ए बेउना मध्ये रजो गुण छे ते एवा तमो गुणीनुं कल्याण थाय नहीं अने सत्त्वगुणीनुं कल्याण थाय छे.

पण तेमां एम छे जे सत्त्वगुणी जीव होय अने ते जो प्रत्यक्ष भगवाननो द्रोह करे तो ते जीव नरकमां जाय छे अने तेनो धर्म ते अधर्मरूप थई जाय अने ज्ञान ते अज्ञान थई जाय अने वैराग ते महा-रागरूप थई जाय छे. अने तेनो सत्त्वगुण ते अतिशय तमोगुणरूप थई जाय छे. अने तमोगुणी जीव होय अने तेने प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध थाय तो ते जीवनुं साक्षात्कार कल्याण थई जाय छे. अने अज्ञान ते ज्ञानरूप थई जाय छे अने राग ते वैरागरूप थई जाय छे अने असमर्थपणुं ते महा समर्थरूप थई जाय छे.

ते रामावतारमां वांदरा हता ते महा तमोगुणी हता अने तेने कोई जातनो धर्म न हतो अने तेनी इन्द्रियो पण नियममां न हती अने लंकामां गया त्यारे घणाक प्रकारनी राडो करता अने वांदरा जेवुं कोई तमोगुणी नहीं, पण तेने प्रत्यक्ष भगवान रामचंद्रजीनो संबंध थयो तो [illegible] कल्याण थयां अने तेनो तमोगुण ते सत्त्वगुणरूप थई गयो. [illegible] तेमनुं कल्याण थयुं, ते सत्त्वगुण विना कल्याण केम थाय! माटे [illegible] ते सत्त्वगुणरूप छे. अने जेने प्रत्यक्ष भगवाननो

अने कृष्णावतारमां ऋषि महा सत्त्वगुणी हता पण जो प्रगट श्रीकृष्ण भगवानने ओळख्या नहीं तो ते ऋषि दुर्भागीया कहेवाय छे अने गंधारीए सत्त्वगुणमां रहीने पतिव्रतानो धर्म पाळवा सारु पोतानो पति आंधळो हतो तो पोते पण 'बीजा पुरुषनुं मोढुं जोवुं नहीं' ते सारु आंखे सात पाटा बांध्या हता, तो पण तेने प्रगट श्रीकृष्ण भगवानमां हेत थयुं नहीं तो ते गंधारी दुर्भागणी कहेवाणी अने तेनो सत्त्वगुण ते तमोगुणरूप थई गयो. केमके सत्त्वगुणनुं अंते फळ जे मोक्ष ते तो न थयुं अने तमोगुणनुं फळ जे नरक तेने पामी. अने माता कुंताजीए तमोगुण कर्यो कहेतां पांचदेव थकी पांच पुत्र उपजाव्या हता अने द्रौपदीए–एक स्त्रीए–पांच पति कर्या हता ते पण तमोगुण कहेवाय, पण तेने प्रत्यक्ष भगवान श्रीकृष्णने विषे प्रीति थई तो ते महा सतिओ कहेवाणी अने तेमनो तमो गुण तत्काळ नाश पामी गयो अने ते भगवानना धामने पामी गई.

जेम कोईक रांक होय अने तेने महेनत करीने लखेशरी थवुं होय तो ते महेनत करीने मरी जाय पण ते लखेशरी तत्काळ थाय नहीं. अने जो कोईक रांकनी उपर राजा महेरबान थाय तो तेनुं रांकपणुं मटाडीने तत्काळ लखेशरी करी मूके अने कोईक लखेशरी होय अने ते जो राजानो द्रोह करे तो तेनुं राजा सर्वे घरबार लूंटी लईने रांक जेवो करी मूके. तेम लखेशरीनी पेठे सत्त्वगुणी जीव होय अने धर्म पाळतो होय अने देह आत्मानो विवेक करीने आत्माने पोतानुं स्वरूप मानतो होय अने वैराग जे संसार थकी उदास रहेतो होय अने ऐश्वर्य जे जप, तप करवाने समर्थ होय पण जो ते प्रत्यक्ष भगवाननो द्रोह करे तो तेनो सत्त्वगुण अने ते सत्त्वगुणना चार साधन ते सर्वे तत्काळ नाश पामी जाय छे अने महा तमोगुणी थईने नरकमां जाय छे. अने रांकनी पेठे

तमोगुणी जीव होय अने तेने प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीति थई जाय तो तेनो तमोगुण तत्काळ नाश पामी जाय छे अने ते परम पवित्र थईने भगवानना धामने पामी जाय.

माटे कोई कांई न समजतो होय पण तेने प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीति थाय तो तेनुं तत्काळ कल्याण थाय अने प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीति कर्या विना बीजा अनंत साधन करे, जप करे, तप करे, तीर्थ करे, यज्ञ करे, दान-पुन्य करे तो तेनुं कल्याण थाय नहीं. अने प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीतिं कर्या विना तेनां साधन सर्वे खोटां थई जाय छे. माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण करवानी इच्छा होय तेने प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीति करवी. अने जेने प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीति थई होय तो तेनां जप, तप, तीर्थ, व्रत, दान, पुन्य सर्वे पूरां थई जाय छे अने तेने बीजुं कांई करवुं रह्युं नथी. अने तेने तो एक पोताने मळ्या जे प्रत्यक्ष भगवान तेनी आज्ञामां रहीने तेनी मन, कर्म, वचने सेवा करवी.

अने जेटला जगतने विषे तीर्थ मात्र कहेवाय छे ते तो प्रत्यक्ष भगवानना चरणमां रह्यां छे. माटे प्रत्यक्ष भगवानना चरणनी जे सेवा करे छे के प्रत्यक्ष भगवाननां दर्शन करे छे तेने तो नित्य तीर्थ मात्रनी यात्रानुं फळ थाय छे अने जेने प्रत्यक्ष भगवान मळ्या होय अने तेनां दर्शन मूकीने बीजे तीर्थ करवा जाय छे तेने तो खरेखरी प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीति थई ज नथी अने तेने प्रत्यक्ष भगवाननो महिमा समजायो ज नथी. केमके प्रत्यक्ष भगवानना चरणारविंदथी अने तेना दर्शनथी बीजुं कयुं तीर्थ अधिक छे जे प्रत्यक्ष भगवानना दर्शन अने सेवा मूकीने बीजे जवुं ?

अने ज्यारे प्रत्यक्ष भगवान पृथ्वी उपर न होय त्यारे तो सर्वे तीर्थ

करवा जवुं ए ठीक छे अने प्रत्यक्ष भगवान न होय त्यारे तो एक ठेकाणे बंधाई रहेवुं नहीं अने सर्व तीर्थ करवां अने तीर्थ करतां करतां ज्यारे प्रत्यक्ष भगवान मळे त्यारे तो तेना चरणमां दृढ निश्चय करीने रहेवुं अने मनने आडुं अवळुं डोलवा देवुं नहीं अने ज्यां सुधी संसारनी वासना होय त्यां सुधी संसार वहेवारनुं अवश्य काम काज होय तेटलुं करीने पछी अमारो संबंध राखवो अने ज्ञान सांभळवुं अने दर्शन करवां पण ज्यां त्यां बीजा डोळमां चडी जवुं नहीं. एवी रीते वर्ते छे तेने कांई करवुं नथी, अने तेनुं कल्याण थई रह्युं छे."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १८३ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत १८४ विषयः—स्वयं आधार अने सर्वाधार ब्रह्म एटले शंकर-रामानुज

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ ना चैत्र सुद १५ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये सोनी प्रभुदासने घेर गादीतकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां, कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराजनी संध्या आरती थया केडे महाराज कृपा करी बोल्या छे "सर्वे मोटा पुरुष थई गया छे तेनो एक ज सिद्धांत छे. ते क्या मोटा पुरुषो? तो शंकरस्वामी, रामानुज, माधवाचार्य, रामचंद्रजी, श्रीकृष्णादि सर्वेनो एक ज सिद्धांत छे; पण ते मोटा पुरुष गया केडे तेनो सिद्धांत समजातो नथी तेथी जुदा जुदा मत थाय छे अने महात्मा पुरुष तो जे समये जेवी रीत तेवा ज्ञाननी प्रवृत्ति करे छे पण अंते जोतां ते सर्वे सिद्धांत एक होय छे.

हवे शंकरस्वामीए 'स्वयं आधार' एवा जे एक ब्रह्म तेनुं प्रतिपादन कर्युं छे. हवे शंकरस्वामीए स्वयं आधारनुं प्रतिपादन कर्युं तेनुं कारण शुं छे? तो ते समये जैन मत घणो प्रवर्ती गयो हतो अने केवळ जीव जीव थई गयुं हतुं अने तेने मते कोई अनादि परमेश्वर ज नथी एवुं प्रवर्युं हतुं अने वेद प्रतिपाद धर्मनो लोप थतो हतो. पछी शंकरस्वामीए प्रगट थईने जैन मतनुं खंडन करवा सारु अने जीवो हारी गया हता तेने महा बळ आपवाने अर्थे एम कह्युं के 'जीव त्रणे काळमां नथी अने सर्वे ब्रह्म छे; बीजुं कांई नथी.' एम कह्युं.

ते एम कह्यानुं शुं कारण? तो जीवने परमात्मा मळे अने मायानो त्याग थाय तो जीव ज वस्तुताए ब्रह्म छे. माटे प्रथमथी ज जीवने हिंमत आपी सावधान कर्या अने अहिंसा, ब्रह्मचर्यादिक धर्म पळाव्या छे अने श्रवण, मननादिक साधन कराव्या छे. जो ते जीव अनादिना ब्रह्म होय तो साधन करवानुं शुं काम? अने ए तो केवळ जीवने हिंमत आपी छे.

जेम कोईनो छोकरो नानो होय, अने तेने विद्वान मळे अने एम कहे जे 'तुं तो विद्वान छे अने हुं जेवो विद्वान छुं तेवो विद्वान तुं पण छे,' एम ते छोकराने हिंमत आपी पोताने विषे हेत करावी विद्वान करे छे. तेम पंडितरूप एवा जे ब्रह्मवेत्ता शंकराचार्य, तेणे नाना छाकरारूप एवा जे जैनमतना ज्ञाने करीने जीव जीव थई गयुं हतुं तेने पंडितनी पेठे ब्रह्मरूप करवा सारु कह्युं के 'तमे सर्वे ब्रह्म छो, बीजुं कांई नथी अने हुं पण ब्रह्म छुं,' एम अतिशय हिंमत आपी अने एवी एक ब्रह्म प्रतिपादननी श्रुतिओ, स्मृतिओ बोलीने पोतानो दृढ विश्वास अणावीने पछी ते जीवोने ब्रह्मचर्यादिक धर्म पळावीने, तथा श्रवण,

मननादिक साधन करावीने तथा कर्मकांड, ज्ञानकांड अने उपासनाकांड सिद्ध करावीने ब्रह्मने विषे स्थिति करावी हती.

जेम पंडित नाना छोकराने विद्या भणावीने पोता जेवो करे तेम शंकरस्वामीए अनादिना अज्ञानी जीवोने पोतानी ब्रह्म विद्यारूप ज्ञान आपीने पोता जेवा ब्रह्मरूप कर्या छे; अने जे ब्रह्मरूप थया ते तो परब्रह्मना अंगना प्रकाशरूप थया छे. ते प्रकाश अने प्रकाशमान ते एक ज छे. जेम सूर्य अने सूर्यनो प्रकाश ते एक ज छे. तेम परब्रह्म अने परब्रह्मना अंगना प्रकाशरूप जे ब्रह्म ते एक ज छे. अने परमात्मानो प्रकाश ते शुं? तो परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान पामवुं तेज परमात्मानो प्रकाश छे अने तेनुं ज नाम ब्रह्म छे.:माटे प्रकाश–प्रकाशमानने अभेद कहीने वेदान्त शास्त्रमां परमात्मानुं वर्णन कर्युं छे एम समजवुं.

अने ते शंकरस्वामीनी झपटमां जेटला जीव आव्या अने जे दैवी जीव हता तेने सर्वेने ब्रह्मरूप करी मूक्या अने वाकीना जे अज्ञानी जीव रह्या तेने अर्थे शास्त्रो लखी गया छे अने ते शास्त्रो पण पोतानी मेळे अज्ञानी जीव समजी शक्या नहीं अने उलटुं अवळुं समज्या जे *'आपणे सर्वे ब्रह्म छीए अने आपणे शुं करवुं छे? केने पामवुं छे,'* एम जाणीने विधि-निषेधनो त्याग करीने पंचविषयना आशक थई गया, पण एम न समज्या जे 'जो सर्वे एक ब्रह्म होय तो जन्म, मरण, गर्भवास अने चोरासी ते ब्रह्मने माथे होय? अने ब्रह्म तो माया पर छे, ते मायामां केम होय?' माटे ब्रह्म तो कोई नथी; सर्वे जीव छे. अने ते सर्वे ब्रह्म जे परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान तेथी अनादिना अजाण्या छे अने जीव अनंत अपार छे.

तेमांथी जे जीवने शंकरस्वामी जेवा मळे छे अने तेना मुख थकी

कर्म, उपासना अने ज्ञान सिद्ध करे छे ते ब्रह्मरूप थाय छे. अने जे ब्रह्मरूप थईने परब्रह्मने पाम्यो ते पाछो पृथ्वी उपर देहने धरतो नथी. ते पण गीतामां कह्युं छे के, श्लोक–

न तद् भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः ।
यद्गत्वा न निवर्तन्ते तद्धाम परमं मम ॥ १ ॥

अर्थः–भगवान कहे छे के 'मारुं धाम केवुं छे? तो जेने सूर्य, चंद्रमा अने अग्नि प्रकाश करता नथी, कहेतां स्वयंप्रकाश छे, अने ते धामने पाम्यो ते पाछो पृथ्वी लोकमां जन्मने धरतो नथी.' माटे जन्म-मरणने पामे छे ते तो सर्वे जीव छे अने ब्रह्मथी घणा जुदा छे.

अने प्रथम कह्युं तेवी रीते ते जैन मतनुं खंडन करवा सारुं अने जीवने हिंमत आपवा सारु एक ब्रह्मनुं कहेतां स्वयं आधार ब्रह्मनुं प्रतिपादन कर्युं हतुं पण तेमां वासना बीजा जीवोने अवळुं पड्युं अने पाछा रामानुज प्रगट थईने 'सर्वाधार ब्रह्मनुं' प्रतिपादन कर्युं छे. ते सर्व एटले शुं? तो परमात्माना अंगनो प्रकाश जे अक्षरब्रह्म तेनुं अनवय स्वरूप जे जीव, ईश्वर अने माया–ए सर्वेना आधार परमात्मा छे. ते जीव तथा ईश्वर ते जे ते मायानो त्याग करीने परमात्माने पामे त्यारे ते व्यतिरेक ब्रह्मरूप थईने परमात्माना साधर्म्यपणांने पामे छे. एवी रीते जीवने अनवय रूपमांथी धर्म, ज्ञान, वैराग, भक्ति आदिक सिद्ध करावीने व्यतिरेक ब्रह्मने पमाडवो तेनुं नाम 'सर्वाधार ब्रह्म' कहेवाय.

–अने एक जीवने विषे 'तुं ब्रह्म छे' एवी प्रथमथी ज प्रतिज्ञा करी पछी तेने अहिंसा अने ब्रह्मचर्यादिक धर्म पळावीने तथा श्रवण, मननादिक साधन करावीने परमात्माने विषे महात्म्य ज्ञाने सहित जोडावो तेनुं नाम 'स्वयं आधार ब्रह्म' कहेवाय छे.

जेम एक कोईक रैयतनो छोकरो होय तेने विद्वान महेताजी छे ते विद्याभ्यास करावीने महा विद्वान करे अने तेने राजा छे ते पोताना राज्यनुं कारभारुं सोंपी दे अने ते राजानुं राज्य सर्वे पोते करे. तेम रैयतना छोकरानी पेठे जीव जे ते परमेश्वरथी जुदो छे पण ते विद्वान-रूपी सत्पुरुष थकी धर्म, ज्ञानादिक गुणरूपी विद्या शीखीने ब्रह्मरूप थाय छे. पछी तेने प्रत्यक्ष परब्रह्मने विषे भक्ति जे प्रीति ते थाय छे अने परमात्माना सरखा सुखने पामे छे, अने तेनुं नाम सर्वाधार ब्रह्म कहेवाय छे.

–अने जेम एक राजाने घेर छोकरो जन्मने पाम्यो होय अने जन्मे छे त्यारथी ज ते राजा कहेवाय छे. अने तेने पछी विद्याभ्यास करावीने विद्वान करे छे. अने पछी तेने राजा गादीए बेसाडे छे अने तेने राजा करे छे. तेम जे जीवने प्रत्यक्ष सत्पुरुषनो आशरो थाय छे ते राजाने घेर दीकरो जन्म्यो ते राजा कहेवाय, तेम जेने सत्पुरुष प्रगट मळ्या ते जीव ब्रह्मरूप कहेवाय छे अने पछी ते सत्पुरुष जे ते जीवने पोताना आशरामां राखीने तेने धर्म, ज्ञानादिक साधन करावीने ब्रह्म-स्थितिने पमाडे छे अने पोता जेवो सुखियो करे छे अने तेनुं नाम स्वयं आधार ब्रह्म कहेवाय छे.

तेमां शंकरस्वामीनो स्वयं आधार ब्रह्मनो मत छे अने रामानुजनो सर्वाधार ब्रह्मनो मत छे. स्वयं आधार एटले केवळ अद्वैत ब्रह्म अने सर्वाधार एटले विशेष्टाद्वैत ब्रह्म कहेवाय छे.

तमां राजाने घेर दीकरो आव्यो ते राजा कहेवाय खरो, पण जो ते विद्यां न भणे अने मूर्ख जेवो रहे तेने राजा राजगादीए बेसाडे नहीं अने तेने तो बे चार गामडां जीवाईनां आपे ते, अन्न, वस्त्र ओढे-

पहेरे, खाय-पीए अने पडयो रहे. अने जे राजनीतिनो जाणनारो होय तेने राजगादीए वेसाडे छे. तेम शंकरस्वामीए कह्युं जे 'तमे सर्वे ब्रह्म छो' एम कहीने तेने साधन कराव्यां अने ब्रह्म-स्थितिने पमाडयां अने तेमांथी जेणे साधन न कर्यां, कहेतां पोते अहिंसा अने ब्रह्मचर्यादिक धर्म पळावता हता पण तेमांथी केटलाक जणे ते शंकरस्वामीनो वाद लईने दारुमाटीनुं भक्षण कर्युं तो तेने शंकरस्वामीए विमुख करीने काढी मूक्या. ते जो एक ज ब्रह्म होय अने वीजुं कोई न होय तो काढी शुं करवा मूकवा पडे ?

—माटे खरा ब्रह्म तो त्यारे थाय छे ज्यारे प्रत्यक्ष भगवाननो दृढ आशरो अने तेनी आज्ञा पाळवी; ए वे वात दृढ थाय छे त्यारे एक ब्रह्मना भावने पामे छे अने ते विना तो प्रत्यक्ष भगवाननो आशरो कर्यो होय पण तेनी आज्ञामां फेर पडे तो ते एक ब्रह्मना भावने पामे नहीं अने जेम राजाना मूर्ख छोकराने वे गाम मळे तेम ते विना वीजा देवादिक लोकने पामे. तेम मोटा पुरुषोनो तो एक ज सिद्धांत छे, पण ते प्रत्यक्ष सत्पुरुष मळ्या विना ते सिद्धांतने पोतानी मेळे समजातो नथी तेथी ताणाताण अने मतामति थाय छे.

—पण सो वातनी एक वात ए ते जे जीव अनादिना मायामां छे अने परमात्मा माया पर छे, ते जीवने माया पर करवा सारु वारंवार रामकृष्णादिक रूपे प्रगट थाय छे अने जीवोने पोतानो आश्रय करावीने पछी तेने धर्म, ज्ञान, वैराग, भक्ति सिद्ध करावाने ब्रह्मरूप करीने पोता जेवा सुखिया करीने पोताना अक्षरधाममां लई जाय छे अने अखंड सुखने पमाडे छे, ते पाछा पृथ्वी उपर कोई काळे आवता नथी. अने ते विनाना वीजा जीवो घणाक छे ते जन्ममरण पामे छे.

माटे जेने पोताना आत्माने जन्ममरणादिक महा कष्ट थकी मुकाववो होय तेने तो प्रत्यक्ष भगवानन्नो दृढ आश्रय करींने तेना आपेल जे वर्तमान अने तेणे कह्युं जे ज्ञान तेने सिद्ध करवुं. अने एटलुं समजशे तेनुं कल्याण थई रह्युं छे अने तेने कांई करवुं रह्युं नथी. अने जे 'सर्वे एक ब्रह्म छे,' एम जाणीने सत्पुरुषनो आशरो नहीं करे अने धर्म नहीं पाळे अने कोईक धर्म पाळता-पळावता होय तेनी निंदा करशे ते सर्वे नरकमां जशे अने तेने असुर जाणवा."

इति श्रीमुखसिद्धांत १८४ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत १८५ विषय :–सांख्ययोग अभेद केवी रीते? भक्तावतार अने अवतारी अवतारमां भेद

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२२ना चैत्र वदि ३ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये माळी आशाराम जेठाने घेर गादीतकिया बिछावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां, अने सर्वे अंगमां पुष्पना हार घणाक शोभी रह्या हता. पुष्पना बाजु, गजरा, गुच्छ अने तोरा ते सर्वे अंगमां धारण कर्या हता. अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराजनी संध्या आरती थई रह्या पछी महाराज बोल्या जे "एक पदार्थना बे नाम होय ते जेम एक चोखा कहेवाय छे अने एक चावल कहेवाय छे, पण ते एकज पदार्थना बे नाम छे. तेम आत्मानो मोक्ष थवो तेना बे नाम छे; एक योग अने एक सांख्य. तेमां योगमां शुं कह्युं छे? तो 'प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति करवी, अने तेनी मूर्तिनुं ध्यान

करवुं अने ध्यान करतां जे जे पदार्थ अंतराय करे तेनो त्याग करवो. एवी रीते प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति अने ध्यान करीशुं एटले भगवानना अक्षरधामने पामशुं अने आत्मानो मोक्ष थशे.' अने सांख्यमां एम कह्युं छे जे 'आत्माना स्वरूपने जाणवुं एटले मोक्ष छे', वळी समजवुं कह्युं छे.

एम बेना मार्ग कहेवामां जुदा जुदा जणाया पण बंनेना अर्थ एक छे. केमके योगमां कह्युं छे के भगवाननुं ध्यान करवुं अने ते विना सर्वनो त्याग करवो कह्यो अने सांख्यमां एम करवुं कह्युं जे 'इन्द्रियो अंतःकरण अने इन्द्रियो अंतःकरणना ग्रहण कर्यामां जे जे आवे ते सर्वेनो त्याग करवो. अने अनुभवमां आवे तेनुं ग्रहण करवुं एज मोक्ष छे.' तेमां एम कह्युं के इन्द्रियो अंतःकरणनो त्याग करवो, ते त्याग एटले आंखने फोडी नाखवी, अने कानने कापी नाखवा अने त्वचाने तोडी नाखवी अने जीभने खेंची काढवी अने नाकने कापी नाखवुं. एम त्याग करवानुं कह्युं नथी. अने एम त्याग करे त्यारे महादुःखने पामे अने हेरान थाय अने मोक्ष पण थाय नहीं. केमके मोक्ष तो ज्ञाने करीने थाय छे. ते एवी रीते त्याग करे तो ज्ञान पण थाय नहीं.

त्यारे केम त्याग करवो? तो माफक शब्दादिक पंचविषय छे तेने पामवानी इच्छानो त्याग करीने शुद्ध थईने ते इन्द्रियो अंतःकरणे करीने ज्ञानदाता एवा जे सत्पुरुष तेना महा वाक्यादिक उपदेशना शब्द काने करीने सांभळवा अने मने करीने ते महात्मा पुरुषना आपेल जे महा वाक्य तेनुं मनन करवुं अने तेनो चित्तमां नित्य अभ्यास करवो अने बुद्धिमां तेनो साक्षात्कार करवो अने अहंकारमां ते सद्गुरुरूप जे महात्मा पुरुष अने जेने उपदेशे करीने कामादिक दोष तथा शब्दादिक पंचविषय तेनां मूळीयां उखडी जाय एवा जे प्रत्यक्ष सत्पुरुष तेनुं दासत्वपणुं धरवुं

कहेतां 'हुं तेनो दास छुं.' अने आंखे करीने एवा माया पर करनारा जे माया पर पुरुष तेनुं हेते करीने दर्शन करवुं, केमके 'माया पर होय तेज माया पर करी शके छे.' अने ते पुरुषनी हाथे करीने सेवा करवी अने पगे करीने तेनी पासे वारंवार चालीने जवुं अने वाणीए करीने तेना गुण गावा अने जीभे करीने तेनो महा प्रसाद जमवो, पण वर्णाश्रमनो धर्म राखवो. अने नासिकाए करीने तेने चडयुं जे चंदन पुष्पादिक तेनी सुगंध लेवी अने त्वचाए करीने तेना चरणनो स्पर्श करवो. एवी रीते माफक पंचविषयनो त्याग करी प्रत्यक्ष सद्गुरुनी मूर्तिने विषे इन्द्रियो अंतःकरणने जोडी देवां, ए ज सांख्यनो गलीतार्थ छे.

अने एवी रीते विषयनी वासनानो त्याग करीने प्रत्यक्ष सद्गुरुने विषे जोडाणो छे ते ज आत्माना स्वरूपने पामी रह्यो छे अने ते ब्रह्मरूप थयो छे अने तेनो मोक्ष थई रह्यो छे.

अने योगवाळो छे ते पण प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्ति विना बीजा सर्व पदार्थनो त्याग करीने ते मूर्तिने विषे सलक्षपणें जोडाई जाय छे ते भक्त पण ब्रह्मरूप थई भगवानना धामने पामे छे अने तेनो मोक्ष थाय छे.

माटे सांख्यवाळानो अने योगवाळानो एक ज रीतनो मोक्षनो मार्ग छे केमके योगवाळे प्रथमथी ज भगवाननी मूर्ति ध्यानमां लावी. पछी ते मूर्तिना ध्यानमां जे जे पदार्थ आडुं आवे तेनो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवानमां जोडाणो अने ते भगवानना धामने पाम्यो. अने जे सांख्यवाळो छे ते प्रथम मायाना भावनो त्याग करीने पछी ते मायाना भावने टळावनारा एवा जे सद्गुरु तेने विषे जोडाय छे, अने ते आत्मा-रूप थाय छे अने मोक्षने पामे छे. माटे सांख्यमां अने योगमां बंनेमां एम आव्युं जे 'पंचविषयनो त्याग करीने निर्वासनिक थईने प्रत्यक्ष ज्ञानदाताने विषे जोडावुं ए ज मोक्ष छे.'

अने ते भगवानना भक्त छे तेमां जे योगवाळा छे ते प्रत्यक्ष ज्ञानदाता जे भगवान तेने परमात्मा कहे छे, परब्रह्म कहे छे, परमेश्वर कहे छे, भगवान कहे छे अने जे सांख्यवाळा छे ते जे ते ज्ञानदाताने सद्गुरु कहे छे, सत्पुरुष कहे छे, ब्रह्म कहे छे, महात्मा कहे छे, ब्रह्मवेत्ता कहे छे; पण ते सर्वे नामो एक भगवाननां ज छे; बीजा कोईना नथी. जेम कोईक चोखाने चोखा कहे छे अने कोईक चोखाने चावल कहे छे पण ते तो बंने चोखा ज छे, तेम योगवाळा भगवानने भगवान कहे छे अने सांख्यवाळा छे ते भगवानने सद्गुरु कहे छे, पण ते तो बेउना एक ज भगवान छे. माटे बंनेनो एक ज सिद्धांत छे.

त्यारे कोई एम कहे जे 'जेटला ज्ञान आपता होय ते सर्वेने भगवान जाणवा ?' तो एनुं एम छे जे ज्ञानमां भेद छे. ते जेने ज्ञाने करीने कामादिक दोष टळी जाय, अने पंचविषयनां पदार्थनो अतिशय अभाव थई जाय, अने एक आत्मा अने परमात्मा विना बीजा कोई पदार्थनी वासना रहे नहीं अने देहे करीने पण जगतना कोई उत्तम पदार्थनुं ग्रहण थाय नहीं अने जेवा तेवा पदार्थे करीने देह निर्वाह कराय पण सारा पदार्थो तो गमे ज नहीं एवो वैराग प्रगटे अने आत्मारूप थईने परमात्माना ध्यानने विषे दृढ स्थिति थाय अने जन्ममरणनो भय छते देहे मटी जाय, एवी रीतनुं जेनुं ज्ञान होय तेज भगवान छे. अने एवा भगवान जेने मळे छे तेने ज छेल्लो देह थाय छे अने आत्यंतिक मोक्ष जे अक्षरधाम तेने पामे छे.

–अने एवा ज्ञानने पामीने सिद्ध थयो ते बीजाने ज्ञान आपे, अने विषयवासना मटाडे अने भगवानना स्वरूपने पमाडे ते पण भगवान कहेवाय खरो, पण ते भक्तावतार भगवान कहेवाय अने ते पोतानुं

भजन करावे नहीं; अने ते पण पंचविषयनो त्याग करीने भगवाननुं भजन करतो होय.

—अने जे स्वयं भगवान होय ते तो पोतानुं भजन करावे छे अने बीजाने विषयनो त्याग करावे छे अने पोते तो पोतानी इच्छामां आवे तेम वर्ते छे, एम वर्ततां छतां पण पोते मायामां बंधाता नथी अने पोताना आश्रितोने पण मायामां बंधावा देता नथी अने पोतानी आज्ञा प्रमाणे पंचविषयनो त्याग करावे छे.

—अने जे भक्तावतार भगवान छे ते तो ए भगवाननी आज्ञामां रहे अने पंचविषयनो त्याग करीने भगवाननुं भजन करे तो ते भगवान कहेवाय अने जो आज्ञा लोपे, विषयनुं ग्रहण करे तो ते भगवान कहेवाय नहीं. अने वळी ते आज्ञा लोपी होय अने विषयनुं ग्रहण कर्युं होय ते पापनुं निवारण करीने शुद्ध थाय तो पाछो भगवान कहेवाय छे.

जेम मग होय के घउं होय तेमां धुळ के कांकरा आदिक विकार न होय ते चोख्खा कहेवाय छे अने धुळ के कांकरा मळे तो ते मग अने घउं ते चोख्खा कहेवाय नहीं, तेम जे जीव परमात्माने ज्ञाने करीने धुळ कांकरा रूप कामादिक दोष तथा शब्दादिक पंचविषयनी वासना तेनो त्याग करीने शुद्ध थयो ते भगवान कहेवाय छे. ते नारद, सनकादिक, व्यास, वाल्मीकादिक ते सर्वे भगवान भजीने ज्ञान पामीने शुद्ध थया माटे सर्वे भगवान कहेवाय छे, पण तेमांथी जो नारदे भगवाननी आज्ञा लोपीने, विषयनुं ग्रहण कर्युं, कहेतां ' साधुने अष्ट प्रकारे स्त्रीनो त्याग राखवो ' तेनुं नाम खरो साधु कहेवाय ते नारदे राजानी दीकरीनुं भविष्य जोवा सारु तेनो हाथ पोताना हाथमां लईने जोयो त्यां तो पोताने काम व्याप्यो अने तेने परणवानुं मन थयुं अने तेनी

केटलीक फजेती थई छे. पछी तेने भगवानने ज्ञान आपीने तप करावीने शुद्ध कर्या त्यारे पाछा नारद भगवान कहेवाया छे.

अने चोखा जेम वस्तुगते होय, तेमां तो धुळ मळे के कांकरा मळे तोय पण ते तो चोखाने चोखा ज कहेवाय छे तेम भगवान छे ते तो पोतानी इच्छामां आवे तेम वर्ते छे तोय पण ते तो 'भगवान ते भगवान,' तेनो प्रताप रज मात्र ओछो थतो नथी. ते कृष्णावतारमां भगवान गोपीयो साथे रास रम्या तेनुं मोटा शुकदेव जेवा ब्रह्मवेत्ताए गान कर्युं अने ते ज्ञानने सांभळीने परिक्षितनुं कल्याण थयुं. अने नारदे लगारेक कन्यानो हाथ जोयो तेटलामां तेनी फजेती थई. माटे भगवानमां अने बीजा भगवानना भक्त ज्ञान आपता होय तेमां घणो भेद छे.

अने ते शुद्धपणें रहीने आपणने ज्ञान आपीने विषयनी वासना टळावता होय अने आत्मज्ञान आपीने परमात्माने विषे स्थिति करावता होय ते भगवानना भक्त होय तो पण तेने भगवान जेवा जाणवा अने तेनी सेवा करवी. अने जे पंचविषय भोगवता होय अने कामादिकने विषे आसक्त थता होय अने पोताना संगीना पण कामादिक ओछा न थता होय अने कोई जातना नियम पाळता-पळावता न होय अने ते वाचकज्ञान कथता होय ते तो मायाना जीव छे, अने यमपुरीना अधिकारी छे. अने ते एम कहेता होय जे 'अमे तो योगमार्गवाळा छीए के अमे तो सांख्यमार्गवाळा छीए'—एम मोढेथी कहेता होय पण जो तेने धर्म, नियम अने विषयनो त्याग अने भगवाननी उपासना न होय ते तो बंने जणां दंभी छे अने पाखंडी छे अने तेने तो असुर जाणवा अने तेनो जे संग करशे तेना आत्मानुं भूंडुं थशे.

माटे सांख्य अने योगनो खरो एक ज मत छे जे धर्म-नियममां रहीने विषयनी वासनानो त्याग करीने भगवानने भजवा ए ज साचो मोक्ष छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत १८५ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत १८६ विषय :–उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलयना कर्ता एक भगवान.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनम :– संवत १९२२ ना चैत्र वदि ४ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री धोळका मध्ये पंड्या अंबाशंकर हरखरामने घेर उगमणां बारना ओरडानी आगळ पाट उपर गादी-तकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरि-यानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पीळा पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्न :–पछी पंड्या अंबाशंकरे महाराजने प्रश्न पूछ्युं जे "हे महा-राज ! जीवने शुभ संस्कार बंधाय छे ते पोताने पुरुषार्थे करीने बंधाय छे के तेनो कोई बीजो उपाय हशे ? ते कृपा करीने कहो."

पछी महाराज श्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजी बोल्या जे "जीवने पोतानी मेळे तो कोई वातनी सिद्धि थती ज नथी. माटे सत्पुरुष अने सत्शास्त्र थकी जीवने शुभ संस्कार बंधाय छे. ते शास्त्र पण सत्पुरुष पासेथी सांभळे तो ज वेदमां कह्या प्रमाणे कर्मकांड, ज्ञानकांड, उपासनाकांड ते सवळां समजाय छे. अने ते जीवने शुभ संस्कार बंधाय छे अने तेनुं कल्याण थाय छे. पण सत्पुरुषना आशरा विना पोतानी मेळे शास्त्र वांचीने अथवा असत्पुरुष पासेथी सांभळशे तो तेने अवळुं समजाशे. पछी ते कर्मने ज कर्ता जाणीने कर्म करे छे तेणे करीने तेने कांई पण सुकृत थतुं नथी अने तेनुं कल्याण पण थतुं नथी.

–अने जे भगवान के भगवानना निर्वासनिक संत तेनो आशरो करीने तेना वचन प्रमाणे वर्ते छे तेने शुभ संस्कार थाय छे. ते एम

वर्ततां वर्ततां घणांक शुभ संस्कार भेगा थाय छे त्यारे तेने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय छे अने ते आत्मा ब्रह्मरूप थईने भगवानना अक्षरधामने पामे छे. माटे भगवान अने भगवानना संत तेना आशरा विना एकले शास्त्रे करीने तथा जप, तप, साधने करीने तथा दान, पुन्य, यज्ञादिके करीने पोताना मनने धारे कोई पण शुभ संस्कार थतो ज नथी. माटे प्रगट भगवान कां भगवानना निर्वासनिक संत तेनो आशरो करीने तेनी आज्ञा प्रमाणे शुभ कर्म करशे तेनुं ज कल्याण थशे, पण ते विना कोई वातनी सिद्धि थती नथी.

त्यारे कोई एम कहेशे जे "पोताने जाणे शुभ संस्कार थाय छे." एम कोई कहे तो ते कहेनाराने मूर्ख जाणवो अने कां तो एम कहेनारो नास्तिक छे अने कां तो ते अंते जतां नास्तिक थशे. केमके जेम कोई एम कहे जे 'सूर्य उग्या विना रात्री जाय छे,' तो एम कहेनाराने मूर्ख जाणवो. अने सूर्य उग्या विना कोई काळे रात्री जाय नहीं. तेम भगवान अने भगवानना जनना आशरा विना कोई काळे शुभ संस्काररूपी आत्मामां प्रकाश थतो ज नथी अने तेनुं कल्याण पण कोई काळे थाय नहीं.

वळी जेम वरसाद वरस्या विना अने नदी, तळाव अने कूवाना जळ विना खेतरमां मोल नीपजे नहीं, तेम भगवान अने भगवानना भक्तना सत्संग विना कोई जीवनुं कल्याण थतुं नथी अने थशे पण नहीं. ते छोने पोताने जाणे धर्म पाळे, जप करे, तप करे, व्रत करे, तीर्थ करे, संसारनो त्याग करीने भेख लईने वनमां एकलो रहे अने वेदांतादिक शास्त्रमांथी सांभळीने एम कहेवा शीख्या होय जे 'हुं ब्रह्म छुं, हुं आत्मा छुं, हुं अखंडानंद छुं.' एम कहेतो होय तो पण प्रत्यक्ष भगवान अने

भगवाननी दृढ उपासना वाळा अने पंचविषयना त्यागी भगवानना भक्त संत तेना सत्संग विना कल्याण थाय नहीं. अने भगवान अने भगवानना भक्तना संग विना अने तेना आशरा विना तेनां साधन सर्वे वृथा छे अने उलटां बंधनकारी थाय छे.

जेम खेतरमां जळ विना जेटली जेटली मेहनत करे तेटली छूटी पडे अने तेनुं खर्च थयुं होय तेणे करीने तेना करजमां बंधाय छे, तेम जीव पोतानी मेळे सत्पुरुषना आशरा विना शास्त्र भणे-सांभळे तथा जप, तप, तीर्थ, व्रत, यज्ञादिक साधन करे अने तेना माने करीने कोई प्रत्यक्ष भगवान के भगवानना भक्तनो द्रोहे करे तो ते द्रोहे करीने उलटुं ते जीवनुं अतिशय भूंडुं थाय छे. ते कृष्णावतारमां ऋषि पोतानी मेळे यज्ञ करता हता ते यज्ञने माने करीने भगवानने अन्न जमवा आप्युं नहीं अने उलटो भगवान अने भगवानना भक्त–गोवाळीयाओ तथा तेनी स्त्रीओ जे ऋषि पत्नीयो–तेनो द्रोह कर्यो, माटे ऋषि दुर्भागीया कहेवाया छे. ते सारु पोतानी मेळे तो कोई पण सुकृत मेळवी शकातुं नथी.

माटे प्रथम मायाना पेटमांथी जीवने बहार काढ्या त्यां पण भगवान ज कर्ता छे अने मध्य स्थितिमां पण भगवान अने भगवानना भक्तनो संग होय त्यारे ज शुभ संस्कारे करीने जीव उर्ध्व गतिने पामे छे, माटे मध्ये पण भगवान कर्ता छे. अने अंते पण प्रत्यक्ष भगवान आत्यंतिक ज्ञान आपशे त्यारे ज जीव ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामशे. माटे उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय ए त्रणेना कर्ता एक भगवान छे; पण बीजो कोई कर्ता नथी अने भगवान जे ते जीवोने महा मायामांथी बहार काढीने मुक्ति आपे छे, तेमां उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय करे छे. माटे सर्व कर्ता एक भगवान छे; पण बीजो कोई कर्ता नथी.

त्यारे कोई एम कहशे जे 'भगवान सर्व कर्ता छे त्यारे सर्वना शुभ संस्कार केम करावता नथी?' एम कोई कहे तो तेनुं एम छे जे जेम कोईनो छोकरो नानो होय. ते छोकराने तेना बापे जन्म आप्यो अने तेने मोटो पण तेना बापे कर्यो अने तेने निशाळे बेसाडीने विद्या भणावे. ते पण जो न भणे तो तेनो बाप छोकराने नानो होय त्यां सुधी मारीने भणावे अने रूडा गुण शीखवे. ते छोकरो नानो होय त्यां सुधी तेना बापनो मार खाय अने जेम कहे तेम करे, केमके ते छोकरो तेना बापने पूगी शके तेम नथी. माटे मार खाय अने जेम कहे तेम करे. अने ज्यारे ते छाकरो जुवान थाय अने तेना बापना करतां चोगणो बळियो थाय त्यारे जो ते छोकरो सज्जन मनुष्यनो संग करीने रूडा गुण शीख्यो होय तो ते छोकरो तेना बापनी आज्ञामां रहे अने जेम कहे तेम करे. अने जो दुर्जन मनुष्यनो संग करीने भूंडा स्वभाव शीख्यो होय तो ते छोकरो तेना बापनुं कह्युं करे नहीं अने झाझुं बोले तो तेना बाप सामो थाय, पण ते छोकरो तेना बापनुं कह्युं करे नहीं.

तेम प्रथम जीवने मायामांथी भगवान बहार काढे छे अने पछी भगवान अने भगवानना जन धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति रूपी उपदेश आपे छे. ते ज्यां सुधी नाना छोकरानी पेठे मुमुक्षु होय त्यां सुधी ते जीव भगवान अने भगवानना जनना उपदेशने माने छे. पछी उपदेशने सांभळतो सांभळतो जे जीव भगवानना भक्तने संगे करीने धर्म, ज्ञानादिक रूडा गुण दृढ शीखीने मुक्त थाय छे ते आत्मा भगवाननी आज्ञा यथार्थ पाळे छे अने तेने ज शुभ संस्कार बंधाय छे अने ते आत्मानुं कल्याण थाय छे अने जे जीव भगवानना द्रोही एवा जे आसुरी जीव तेनो संग करीने असुर भावने पामीने भ्रष्ट थयो होय ते जीव भगवान अने भगवानना संतनो उपदेश मानतो नथी. अने एवाने भगवान अने

भगवानना संतनो संग करवो गमतो नथी. माटे एवा आसुरी जीवना उपर भगवान अने भगवानना संतनो उपदेश नथी. अने तेना उपर शास्त्रनी मर्यादा पण नथी. माटे आसुरी जीवने शुभ संस्कार बंधातो नथी अने ते जीवनुं कल्याण पण थतुं नथी.

माटे जे दैवी जीव होय तेने भगवान अने भगवानना संतना संगे करीने शुभ संस्कार वृद्धि पामे छे अने तेनुं ज कल्याण थाय छे. माटे मायाना पेटमां जीव हतो त्यां पण भगवानने संबंधे करीने शुभ संस्कार बंधाय छे तेने करीने जीव मायामांथी बहार नीसरे छे; अने पछी जेम जेम शुभ संस्कार बंधाता जाय छे तेम तेम जीव कल्याणने मार्गे चालतो जाय छे.

तेमां कोईने आशंका थाय जे 'मायाना पेटमां जीव होय तेने शी रीते संस्कार लागतो हशे?' तो त्यां संस्कार लागे छे, तेनो विश्वास अणाववा सारु तो स्त्रीना पेटमां गर्भ होय त्यांथी ज वेदने विषे गर्भाधानादिक सोळे संस्कार करवा कह्या छे. तेमां जेने सोळे संस्कार पूरा थाय छे ते ब्राह्मण कहेवाय छे, अने तेमां जेने कांईक ओछा संस्कार रहे छे ते क्षत्रिय कहेवाय छे अने तेथी ओछा संस्कार रहे छे ते वैश्य कहेवाय छे अने तेथी ओछा संस्कार रहे छे ते शुद्र कहेवाय छे. अने जेने मुद्दल संस्कार नथी ते तो अति शुद्र कहेवाय छे, कहेतां चंडाळादिक कहेवाय छे. तेना उपर श्लोक—

जन्मना जायते शुद्र संस्कारात् द्विज उच्यते ।
वेदाभ्यासे भवेत् विप्रः ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः ॥

अर्थः—'जन्मने पाम्यो त्यारे तो जीव शुद्र जेवो छे, केम के तेने संस्कार नथी अने ज्यारे जनोई आदिक संस्कार कर्यो त्यारे द्विज कहेवाय छे. अने वेद भणे छे त्यारे ते विप्र थाय छे अने ब्रह्म जे आत्मा अने

आत्माना प्रकाशक एवा जे परमात्मा तेना स्वरूपना ज्ञानने साक्षात्कार पामे छे त्यारे ते ब्राह्मण कहेवाय छे.' माटे जीव जेम जेम संस्कारने पामतो जाय छे तेम तेम मोटपने पामे छे. पछी ज्यारे संस्कार सर्वे पूरा थाय छे त्यारे ते आत्मा परमपदने पामे छे. ते उपर गीतानो श्लोक–

'अनेक जन्म संसिद्ध ततो याति परां गतिम् ।'

अर्थः–भगवान अने भगवानना संतना संगे करीने अनेक जन्मना शुभ संस्कार भेगा थाय छे त्यारे ते आत्मा परमपदने पामे छे.

ते परमपद एटले शुं ? तो प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिक मनुष्य स्वरूप ते पोताने मळे अने तेनी मूर्तिने विषे सर्वोपरि पुरुषोत्तमपणानो उत्तम निर्विकल्प निश्चिय थाय एज परमपदने पामी रह्या छे. माटे आज अथवा अनेक जन्मे भगवान अने भगवानना संतनो संत्सग करीने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय करवो एज कल्याण छे, एम समजे ते बुद्धिवाळा छे. अने एम समजशे तेनुं ज कल्याण थशे. अने जे एम नहीं समजे तेनुं कल्याण कोई काळे नहीं थाय अने तेने मूर्ख जाणवो. अने जे प्रत्यक्ष भगवान थकी कल्याणने इच्छे छे तेने महा बुद्धिवाळो जाणवो.

अने पूर्वे जेनां जेनां कल्याण थयां छे ते पण जेने प्रगट भगवान के भगवानना संत मळ्या छे तेनां ज कल्याण थयां छे. अने तेनां ज शास्त्रमां नाम लखायां छे. माटे प्रगट भगवान अने प्रगट भगवानना संतना संगे करीने जीवने शुभ संस्कार बंधाय छे अने ते जीवनुं कल्याण थाय छे. माटे ते अतिशय दुर्लभ समय ते आज तमारे प्राप्त थयो छे अने तमारा संस्कार सर्वे पूरा थई रह्या छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत १८६ समाप्त।



श्रीमुखसिद्धांत १८७ विषय :-क्रिया अने कृपामां अधिक कोण ?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२२ ना चैत्र वदि ४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये भवानीदासनी धर्मशाळामां पाट उपर गादीतकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण शोभी रह्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया पछी महाराज कृपा करीने सर्वे सभा प्रत्ये बोल्या जे "जीवनुं कल्याण थवुं ते बे वातनी सिद्धि थाय त्यारे जीवनुं कल्याण थाय छे. ते बे वात कई तो एक भगवाननी कृपा थवी जोईए अने बीजुं ते भगवाननी कृपा पोतानी उपर अखंड रहे एवा गुण शीखवा, कहेतां तेवी क्रिया करवी. एवी रीते क्रिया अने कृपा बेय होय त्यारे जीवनुं कल्याण थाय छे, पण तेमां कृपा अधिक छे. अने क्रिया तो कृपाना पेटामां आवी जाय छे, केमके प्रथम तो जीव जे ते महा कारणरूप मायाने विषे लीन हतो अने इन्द्रियो अंतःकरणादिक कोई अवयव न हतां त्यारे पण उत्पत्ति समये प्रथम भगवाने कृपा करीने इन्द्रियो अंतःकरण जीवने सर्जी आप्यां छे. ते पछी क्रिया करवा शीख्यो माटे कृपा मुख्य छे अने पछी क्रिया छे.

अने पछी जीव जेवी क्रिया करे छे, कहेतां जेवां कर्म करे छे तेवी गतिने पामे छे. तेमां पण जीव पोतानी मेळे जे जे क्रिया करे ते पोतानुं भूंडुं थाय एवी ज क्रिया करे छे पण पोतानुं सारुं थाय एवी क्रिया जीवने पोतानी मेळे आवडती नथी, माटे ते क्रिया पण भगवान प्रगट थईने जीवने पोतानो संबंध करावीने शुभ संस्कार बंधावे छे

त्यारे सारी क्रिया करवानुं जीवने सूझे छे, ते पण भगवाननी कृपा छे. अने एवी रीते भगवाननी कृपाए करीने शुभ संस्कार वंधातां वंधातां ते जीवने प्रत्यक्ष भगवानने विषे अत्यंत प्रीति थाय छे. पछी तेने वेदोक्त धर्में करीने प्रत्यक्ष भगवान ज्ञान आपे छे अने धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित भक्ति सिद्ध करावीने मोक्षने पमाडे छे. अने तेने ज्ञान आप्युं अने तेनुं पुस्तक लखाणुं तेनुं नाम ज वेद कहेवाय छे.

अने एक जीवनो भगवाने मोक्ष कर्यो तेनी पाछळ घणाक जीवोने शुभ संस्कार वंधाय छे. ते जे जीवनो मोक्ष थाय छे अने तेनी माया नाश पामी त्यारे ते मायामां हता जे जीव ते महाकारणमांथी स्थूळ, सूक्ष्म, कारण देह सर्जाईने जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्तिमां आवे छे अने इन्द्रिओ अंतःकरणने पामीने क्रिया करवाने समर्थ थाय छे ते पण भगवानना संवंध थकी क्रिया करवाने समर्थ थया केमके जे जीवने भगवाने आत्यंतिक ज्ञान आप्युं ते जीव तो ब्रह्मरूप थईने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिमां जोडाई गयो अने तेनी वासनारूप माया तो टळी गई पण ते वासनारूप मायानी गांठरूप जे देह ते देहे करीने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनां दर्शन कर्यां अने वाणीए करीने प्रत्यक्ष भगवाननां गुणनां चरित्रनुं गान कर्युं अने काने करीने भगवानना मुखनी वाणी सांभळी अने हाथे करीने प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा करी. एवी रीते इन्द्रियो अंतःकरणे करीने प्रत्यक्ष भगवानने विषे देह जोडाणो अने ते संस्कारे करीने देहरूप जे मायानी गांठ ते गळी जाय छे अने तेमां हता जे असंख्य जीव ते वधाय उत्पन्न थाय छे कहेतां इन्द्रियो अंतःकरण सर्जाय छे.

माटे उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय तेना कर्ता एक भगवान छे. पण कोई एम कहे जे 'जीव पोतानी मेळे सुकृत करे तो थाय.' ए वात

खोटी छे. अने ते एम कहेनारो तो पापी अने नास्तिक छे. ते एम कहे छे जे 'पोतानी मेळे सुकृत थाय', पण पोतानी मेळे तो जीव सुकृत करी शकतो नथी अने पोतानी मेळे तो जीव जे जे क्रिया करे छे ते पोतानुं भूंडुं थाय एवी ज करे छे पण सारु थाय एवी क्रिया तो जीवने पोतानी मेळे आवडती ज नथी. अने ते जैनमतवाळाए क्रिया एटले कर्मनुं मुख्यपणुं करीने पोतानी मेळे कर्म करवा मंडया तो ते वेदोक्त धर्म थकी जुदा पडीने नास्तिक थई गया अने मोक्ष-मार्ग भूली गया."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १८७ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत १८८ विषयः–आचार्य अने गुरु कोने कहेवा.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२२ ना चैत्र सुदि १२ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये माळी आशाराम जेठाने घेर गादीतकिये युक्त पलंग विछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. ललाटने विषे केसरना आड अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने वेठी हती.

प्रश्नः–पछी महाराज श्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजीनी संध्या आरती थया पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए हाथ जोडीने महाराजने प्रश्न पूछयुं जे "हे महाराज! एक आचार्य कहेवाय छे अने एक गुरु कहेवाय छे; ते बे एक छे के बे जुदा जुदा छे? अने ते बेनो धर्म शो छे? अने तेना गुण केवा छे? ते कृपा करीने कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "आचार्य अने गुरु ए बे एक ज छे. जेम

चोखा छे तेनां नाम बे कहेवाय छे; एक चोखा कहेवाय छे अने बीजुं चावल कहेवाय छे; ते नाम बे अने वस्तु एक छे. तेम कल्याणदाता सत्पुरुष तेनां नाम बे छे. एक आचार्य कहेवाय छे अने तेना ते आचार्य ते गुरु कहेवाय छे, पण ते आचार्य अने गुरु बे जुदा नथी.

हवे आचार्य शब्दनो शो अर्थ छे? अने गुरु शब्दनो शो अर्थ छे? तो आचार्य एटले शुद्ध आचरणने विषे दृढपणें वर्तवुं अने बीजाने वर्तावबाने विषे समर्थ होय तेने आचार्य कहीए. हवे आचरण एटले शुं? तो धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित प्रत्यक्ष भगवाननी एकांतिक भक्ति सिद्ध करीने परमपद आपवा रूप आत्यंतिक ज्ञान ते जेनी पासे साक्षात्कार होय अने पोते माया पर स्थितिमां वर्तता होय अने पोताना शिष्योने ज्ञान आपीने माया पर वर्तावता होय, तेने आचार्य कहीए. पण जेने वासना होय अने वासनाए करीने विषयने भोगवता होय अने पोताना शिष्योने पण विषय भोगवता देता होय ते आचार्य कहेवाय नहीं. माटे ब्रह्म-परब्रह्मने साक्षात्कार पामवानुं जे शुद्ध आचरण ते जेनी पासे होय अने जेने विषे पंचविषय भोगववानी वासना रूपी मायानो लेश न होय, तेनुं नाम आचार्य कहेवाय छे. अने एवा जे माया पर स्थितिवाळा शुद्ध आचरणवाळा पुरुष तेने ज सद्गुरु कहेवाय छे.

हवे गुरु शब्दनो शो अर्थ छे? तो गु एटले माया; माया एटले आत्मा–परमात्माने न जाणवा रूप अज्ञान, अंधारुं तेनुं नाम गु शब्द छे. ते अंधाराने टाळवाने अर्थे रु एटले ज्ञानरूपी प्रकाश; ते ज्ञानरूपी प्रकाश जेनी पासे होय तेने गुरु कहीए. कहेतां गु रूप जे माया तेने नाश करवाने अर्थे रु रूप जे आत्यंतिक ज्ञान एटले धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित प्रत्यक्ष भगवाननी एकांतिक भक्ति सिद्ध करावीने ब्रह्म-

રૂપ કરીને પરબ્રહ્મને સાક્ષાત્કાર પમાડવા રૂપ ગુણ જેને વિષે હોય તેને ગુરુ કહીએ તથા તેને આચાર્ય કહીએ. અને જેને વિષે કામ, લોભ, સ્વાદ, સ્નેહ, માનરૂપી દોષ હોય તથા શબ્દ, સ્પર્શ, રૂપ, રસ અને ગંધ તેની વાસના જેને હોય તેને આચાર્ય તથા ગુરુ જાણવા નહીં. અને જેને વિષે માયાનો લેશ ન હોય તેને આચાર્ય જાણવા તથા તેને જ ગુરુ જાણવા. અને એવા માયા પર સ્થિતિવાળા ગુરુ તથા આચાર્ય હોય તેના આશ્રય થકી જ જીવનો તત્કાળ મોક્ષ થાય છે.

હવે તે આચાર્ય તથા ગુરુ તે પણ બે પ્રકારના છે. એક તો ક્ષર, અક્ષરથી પર જે પરમાત્મા પરબ્રહ્મ તે જીવોના કલ્યાણ કરવાને અર્થે પોતાની સ્વ-ઇચ્છાએ કરીને રામકૃષ્ણાદિક અવતારનું ધારણ કરે છે તે પણ ગુરુ તથા આચાર્ય કહેવાય છે. અને બીજા એ પરમાત્મા રૂપ આચાર્ય તથા ગુરુ થકી જ્ઞાન પામીને સિદ્ધદશાને પામે છે તે પણ આચાર્ય તથા ગુરુ કહેવાય છે. પણ તે બેના વૃત્તાંતમાં ઘણો ભેદ છે. તેમાં જે પરમાત્માના અવતાર હોય તેને માંથે વિધિ–નિષેધ નથી અને તે તો ચ્હાય તેમ પોતાની ઇચ્છામાં આવે તેમ વર્તે છે અને પોતાના સેવક જનોના ભાવ પ્રમાણે તેની સેવાનું ગ્રહણ કરે છે અને તે તો પોતાનું પ્રત્યક્ષ ભજન કરાવે છે અને પોતાના ભક્તની સેવાને ગ્રહણ કરતા થકા નિર્લેપ રહે છે અને પોતાના સેવકોને બરાબર ધર્મ-નિયમમાં રખાવીને નિર્વાસનિક કરે છે.

અને બીજા એ પ્રત્યક્ષ પરમાત્મા થકી જ્ઞાન પામીને નિર્વાસનિક થઈને બ્રહ્મ–સ્થિતિને પામ્યા હોય એવા જે ભગવાનના સંત તે પણ ગુરુ તથા આચાર્ય કહેવાય છે. અને તે જે આચાર્ય તથા ગુરુ તે પોતે પરમાત્માની ઉપાસના અને ભક્તિએ સહિત થઈને પંચવિષયનો ત્યાગ કરીને

पोत पोताना धर्म–नियम शास्त्रमां कह्या होय तेमां दृढपणें वर्तता होय पण ते नियमने कदी चूके नहीं. अने पोताना सेवकोने धर्म–नियममां बराबर रखावता होय एवा गुण जेने विषे होय तेने आचार्य तथा गुरु जाणवा. अने जे धर्म–नियमनो त्याग करीने विषय भोगवता होय अथवा धर्ममां रहीने पण विषयने भोगवता होय तेने आचार्य तथा गुरु न जाणवा. अने जे पंचविषयना त्यागी अने काम, लोभादिक दोषे रहित कहेतां अष्ट प्रकारे स्त्रीनो त्याग राखता होय तथा द्रव्यने अडता न होय तथा दूध, दहीं, घी, गोळ, खांड, साकार ए जे छ रस तेने खाता न होय अने देह अने देहना संबंधीमां प्रीति जेने न होय अने कोई जातनुं मान जेने न होय अने रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवाननी उपासना करता होय अने जेनी पासे आत्मा–परमात्मानुं शुद्ध ज्ञान होय, अने सत्पुरुषना जे चोसठ लक्षण कह्यां छे तेणे युक्त होय. माटे आ कह्या जे गुण ते सर्वे संपूर्ण जेने विषे होय तेने आचार्य तथा गुरु जाणवा. अने तेना आश्रय थकी जीवनुं कल्याण थाय छे."

प्रश्नः–पछी पंडया अंबाशंकर हरखरामे महाराजने हाथ जोडीने कह्युं जे "हे महाराज! आपणा धर्ममां गुरु स्थापन करवा ते त्यागी होय तेने करवा के गृहस्थ आचार्य करवा?" पछी महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान बोल्या जे "अमारा धर्ममां तो माया पर ब्रह्मरूप मुक्त पंचविषयना त्यागी एवा जे साधु तेज गुरु करवा योग्य छे, अने गृहस्थ आचार्य तो करवो ज नथी. अने अमे पण त्यागी रह्या छीए अने संग पण त्यागीनो ज गमे छे. माटे अमारा धर्ममां गुरु करवा योग्य अने धर्मना चलावनारा तो त्यागीने करवा.

–अने जेने स्त्री–धननो संग छे ते मोक्षने अर्थे गुरु अथवा आचार्य करवा योग्य नथी. अने स्त्री, द्रव्य अने रसास्वादादिक विषयने भोगवे

छे, अने ते गुरु थईने फरे छे के आचार्य कहेवाय छे ते तो पाखंडी छे अने जीवने बंधन करनारा धर्मघातकी छे, केमके पोते माया थकी मुकाणा नथी ते बीजाने केम मुकावी शके? माटे आपणा धर्ममां त्यागी होय ते ज गुरु तथा सत्संगी अने मंदिरना मालिक छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत १८८ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत १८९ विषयः–वेद अनादिना केवी रीते? अने वेदनी शुद्ध समजण

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२२ ना अषाड सुदि २ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये पटेल अजुभाई वसनदासने घेरँ उत्तरादा बारनी मेडीनी आगळ चोकमां गादीतकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां घणाक धोळा पुष्पना हार धारण कर्या हता. कान उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता अने पाघमां तोरा लटकता हता. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराजनी संध्या आरती थया पछी महाराज बोल्या जे "सर्वे सांभळो एक वार्ता करीए छीए जे केटलाक अधर्मी छे ते एम कहे छे जे 'वेद तो ब्रह्माए कर्या छे पण वेद अनादिना नथी,' एम कहीने वेदमां कह्या जे वर्णाश्रमना धर्म ते थकी विपरीत वर्ते छे अने बीजाने भ्रष्ट करे छे अने पोते पण भ्रष्ट थाय छे. अने एवा अधर्मी एम कहे छे जे 'अमारुं ज्ञान तो वेदथी पर छे अने ते ज्ञानने तो वेदने गम नथी,' एम पापी छे ते कहे छे, पण जे वेद छे ते तो अनादिना छे केमके आत्यंतिक प्रलयने अंते वेदे परमात्मानी स्तुति करी छे, त्यारे परमात्माए ते वेदनी

स्तुतिने सांभळीने जगतनी उत्पत्ति करवा सारु अक्षरमां प्रवेश करीने अक्षरद्वारे मूळपुरुष सामुं जोयुं त्यारे पुरुष जाग्रतने पामीने पोताने विषे हती जे प्रकृति तेने जगाडी अने ते प्रकृतिपुरुष थकी प्रधानपुरुष थया, प्रधानपुरुष थकी महत्तत्त्व थयुं, महत्तत्त्व थकी त्रण प्रकारनो अहंकार थयो अने त्रण प्रकारना अहंकार थकी चोवीस तत्त्व थयां, चोवीस तत्त्व थकी वैराट थयो अने वैराट थकी ब्रह्मा थया छे. माटे ब्रह्मा थकी वेद थया केम कहेवाय ? केमके प्रथम वेदे स्तुति करी त्यारे जगतनी उत्पत्ति थई छे अने त्यार पछी ब्रह्मा तो थया छे माटे वेद अनादिना छे अने जे वेद ब्रह्माए कर्या एम कहेवाय छे ते तो वेदनी कविता ब्रह्माए करी छे. तेने करीने वेद ब्रह्माए कर्या एम कहेवाय छे.

जेम कोईक कवि होय ते कोई भागवतादिक ग्रंथ उपर पोते नवी कविता करे त्यारे ते ग्रंथ ते कविनो करेलो कहेवाय छे तेम ब्रह्माए मूळ अनादिना वेद हता तेना उपर फक्त काव्य कर्युं छे, तेने करीने ब्रह्माए वेद कर्या कहेवाय छे पण वेद तो अनादिना छे.

ते वेद शुं छे ? तो परमात्माना स्वरूपने परिपूर्ण पामवानुं जे ज्ञान तेनुं नाम वेद छे अने ते परमात्माना स्वरूपना ज्ञानने जे परिपूर्ण पामे छे ते वेदमूर्ति कहेवाय छे माटे परमात्माना स्वरूपने तो यथार्थ परिपूर्ण पोते परमात्मा एक जाणे छे. माटे परमात्माना मुखनी वाणी तेनुं नाम वेद छे. ते परमात्माए पोते प्रथम लक्ष्मीनारायण नामे अवतार धारण करीने पोताना स्वरूपनुं वेदरूप ज्ञान आप्युं छे, माटे जगतमां पण प्रथम परमात्मा थकी ज वेदनी प्रवृत्ति थई छे अने पछी ते उपर ब्रह्माए कविता करी छे.

वळी त्यार पछी व्यासजीए पण वेदनी कविता करी छे अने ते

वेदना ज अर्थ सारी रीते सर्वेने समजाय तेने अर्थे छ शास्त्र कर्यां छे अने ते शास्त्रना ज अर्थ सारी रीते सरळपणें सर्वने समजाय ते सारु श्रीसद्भागवतादिक पुराण कर्यां छे. माटे वेद, शास्त्र अने पुराण तेनो एक ज अर्थ छे. ते सर्वे सत्य छे अने तेथी पर कोई ज्ञान नथी.

हवे ते वेदमां शुं कह्युं छे ? तो ते परमात्माना स्वरूपना ज्ञानने पामवा सारु कर्म, उपासना अने ज्ञान कह्युं छे. ते सत्पुरुषना मुख थकी कर्म, उपासना अने ज्ञानने सिद्ध करे तो ते आत्मा परमात्माना स्वरूपना ज्ञानने पामे छे. अने तेनी मुक्ति थाय छे. अने जो असत्पुरुषना मुख थकी कर्म, उपासना अने ज्ञानने सांभळशे तो ते नास्तिक भावने पामशे. अने ते जीव नरकमां जशे.

हवे सत्पुरुष जे ते कर्म, उपासना अने ज्ञानने केवी रीते सिद्ध करावे छे ? तो प्रथम कर्मकांडनुं ज्ञान आपे छे. ते कर्म त्रण प्रकारनुं छे; कर्म, अकर्म अने विकर्म. ए त्रंण प्रकारनां कर्म छे तेमां कर्म ते शुं ? तो सकामभावे वेद विहित एटले वेदमां कह्या प्रमाणे कर्म करवां तेनुं नाम कर्म कहेवाय अने वेदनी मर्यादाने तोडीने जे कर्म करवुं तेनुं नाम अकर्म, कहेतां अधर्म-कर्म कहेवाय छे, अने कर्म तो वेद विहित श्रुति-स्मृतिमां कह्युं छे ते प्रमाणे करवुं पण तेना फळनी इच्छा न राखवी, कहेतां निष्कामकर्म करवुं तेनुं नाम विकर्म छे. माटे सत्पुरुष जे ते मुमुक्षुने अधर्म-कर्मनो त्याग करावे छे अने तेना आत्माना मोक्षने अर्थे निष्कामकर्म करावे छे अने ते निष्कामकर्मे करीने अंतःकरण शुद्ध थाय छे. पछी तेने ज्ञान आपे छे, कहेतां देह आत्मानो विवेक करावीने देहने मिथ्या करी देखाडे छे अने आत्माने सत्य कही देखाडे छे अने ते आत्माने अक्षरब्रह्म साथे एकता करावे छे, तेनुं नाम ज्ञान छे. एवुं ज्ञान अने निष्कामकर्म ए बेने जे सिद्ध करावनारा पुरुष ज्ञानदाता तेनी उपासना करवी, कहेतां तेनी सेवा करवी

तेनुं नाम उपासना छे. ते ज्ञानदाता जे ते आज्ञा वतावे ते प्रमाणे मन, कर्म, वचने वर्तवुं तेनुं नाम कर्म छे अने ते निष्कामकर्म अने ज्ञान ए बे उपासना थकी सिद्ध थाय छे.

अने ते उपासना विना तो जीवनो मोक्ष थतो ज नथी अने ते उपासना विना कोई वातनी सिद्धि थती नथी अने उपासना तो प्रथमथी ठेठ अक्षरधामने पामे तो पण दृढ करीने राखवा योग्य छे अने ते उपासनाने राखशे त्यारे ज ते अखंड स्वरूपने पामशे पण ते विना कोई सुखने पमातुं ज नथी. जेम घरने माळे छे (छापरुं नाखे छे) त्यारे प्रथम तेमां मोभ नाखे छे अने ते मोभने आधारे बे पडाळना वळीयो, वांसडा अने नळीयां रहे छे अने ते घरमां रहेनारा सुखने पामे छे; अने जो मोभने काढी नाखे तो ते घरमां रहेनारा दवाई मरे अने बे पडाळना वळीयो, वांसडी अने नळीयांना भूक्का नीकळी जाय अने तेमां रहेनारा महादुःखने पामे. तेम उपासना छे ते तो मोभने ठेकाणे छे अने कर्म अने ज्ञान छे ते तो बे पडाळने ठेकाणे छे ते मोभरूप उपासनाने आधारे कर्म अने ज्ञान रह्यां छे अने जो उपासनानो त्याग करे तो कर्म अने ज्ञान बेनो नाश थई जाय छे माटे जेने मोक्षने पामवुं होय तेने तो प्रथमथी ते ठेठ सुधी उपासना दृढ करीने राखवी पण उपासनानो कोई दहाडो त्याग करवो नहीं.

अने एकली उपासनाने राखे अने कर्म अने ज्ञाननो त्याग करे तो पण ते जीवनो मोक्ष थाय नहीं अने महादुःखने पामे. जेम घर उपर मोभ एक नाखे अने वळीयो, वांसडा अने नळीयां न चडावे तो तेने सुख थाय नहीं, तेम उपासना राखे पण जो कर्मकांडरूप धर्मनी दृढता न होय तो तेनुं अंतःकरण कोई काळे शुद्ध थाय नहीं अने अंतःकरण शुद्ध थया विना पोताना

आत्मस्वरूपनुं ज्ञान थाय नहीं अने आत्मानुं ज्ञान थया विना परमात्मानुं स्वरूप जणाय नहीं अने परमात्माने जाण्या विना मुक्ति थाय नहीं. एवी रीते सत्पुरुष जे ते कर्म, उपासना अने ज्ञान सिद्ध करावीने जीवने मुक्त करे छे.

अने हवे जे असत्पुरुष छे ते जे ते कर्म, उपासना अने ज्ञान तेमां विरुद्धपणुं देखाडीने जीवने नास्तिकभाव दृढ करावे छे. ते असत्पुरुष केवी रीते नास्तिकभाव अणावे छे? अने विरुद्धपणुं केवी रीते देखाडे छे ? तो वेदमां जीव, ईश्वर, ब्रह्म ते जे परब्रह्म जे परमात्मा तेना गुण कह्या छे तथा कर्म, उपासना अने ज्ञानना गुण कह्या छे ते एक बीजाना गुण उलट पालट छे, कहेतां अवळा छे. ते केवी रीते अवळा गुण छे? तो जीव जे ते कर्ता छे अने अकर्ताय छे अने ईश्वर पण कर्ता छे अने अकर्ता छे. तेमां जे ठेकाणे जीव कर्ता छे ते ठेकाणे ईश्वर अकर्ता छे अने जे ठेकाणे ईश्वर कर्ता छे ते ठेकाणे जीव अकर्ता छे. ते जीव कये ठेकाणे कर्ता छे? तो कर्म करवां ते ठेकाणे जीव कर्ता छे अने कर्मना फळने पामवुं ते ठेकाणे जीव अकर्ता छे, कहेतां कर्मना फळने जीव पोतानी मेळे पामी शकतो नथी. माटे फळ पामवामां जीव अकर्ता छे. अने ईश्वर छे ते जे ते जीव जेवां जेवां कर्म करे छे तेवां तेवां तेने फळ आपे छे माटे जीवने कर्मनां फळ आपवां तेने विषे ईश्वर कर्ता छे. अने ईश्वरने कांई कर्म करवुं नथी माटे कर्म करवाने विषे ईश्वर अकर्ता छे. अने ब्रह्म छे ते तो केवळ अकर्ता छे, केमके जीव, ईश्वरने विषे मायानो संबंध छे त्यां सुधी कर्ता-अकर्तापणुं कहेवाय छे अने जो जीव–ईश्वरने विषेथी माया टळी जाय तो तेने विषेथी कर्ता-अकर्तापणुं पण टळी जाय अने केवळ अकर्तारूप अक्षरब्रह्म थाय छे अने जे परमात्मा छे ते तो कर्तुमकर्तुम् अने अन्यथा कर्तुम्समर्थ छे.

हवे जीव केवो छे ? तो कर्म करे खरो पण तेनुं फळ पामवुं ते जीवना हाथमां नथी, माटे जीव पराधिन छे. अने ईश्वर छे ते जीव जेवां कर्म करे छे तेवुं फळ ईश्वर आपी शके पण तेथी ओछुं के वधारे अपाय नहीं, माटे ते पण स्वतंत्र कर्ता नथी. अने ब्रह्म तो केवळ अकर्ता छे, माटे ते थकी पण कोईनुं काम थाय नहीं. अने जे परब्रह्म परमात्मा छे ते तो कर्ता छे अने स्वतंत्र कर्ता छे, कहेतां जीव, ईश्वर, माया, पुरुष अने अक्षर ते सर्वे परमात्मानी ज इच्छा होय तेम करवाने समर्थ छे, पण परमात्मानी इच्छा विना कांई करवाने समर्थ नथी, माटे परमात्मा स्वतंत्र कर्ता छे. अने वळी अकर्ता छे कहेतां काळ, माया, पुरुषादिक पासे जगतनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय करावे छे पण पोते कांई नथी करता.

जेम राजा छे ते पोताना चाकर पासे राज्यनुं काम चलावे छे पण पोते कांई नथी करतो, तेम परमात्मा जे ते काळ, मायादिक पासे जगतनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय करावे छे, पण पोते नथी करता, माटे परमात्मा अकर्ता छे. अने वळी च्हाय तेम करवाने समर्थ छे, कहेतां जीवने ब्रह्मरूप करवाने समर्थ छे. अने ब्रह्मना भावने पाम्या होय पण ते जो प्रत्यक्ष परमात्माना वचनथी विरुद्ध वर्ते तो तेने जीव करवाने समर्थ छे, पण बीजा कोई जीव, ईश्वर, ब्रह्म ते थकी ए काम थाय नहीं. जेम राजा छे ते पोतानी इच्छामां आवे तो रांक जेवा जीव होय तेने पोताना ढोलियानो चाकर करीने राखे तो कोईनाथी हा के ना कहेवाय नहीं. अने ढोलियानो चाकर होय अने ते जो राजानी मरजी लोपे तो तेने रांक जेवो करी मूके. तेम परमात्मा जीवने ब्रह्म करे अने ब्रह्मने जीव करे एवा समर्थ छे, माटे अन्यथाकर्तुम् छे.

हवे तेज भगवान परमात्मा पोताना स्वरूपनुं ज्ञान जीवने आपीने

ब्रह्मरूप करवा सारु मायाने पार अक्षरमां रह्या थका मनुष्यरूपनुं धारण करे छे अने ते प्रत्यक्ष परमात्माने तो कांई करवुं नथी अने कांई पामवुं नथी अने तेने कोई कर्म बंधन करे एम नथी, तो पण बीजा जीवोने ज्ञान आपवा सारु मनुष्यनी पेठे सजातिपणें वर्ते छे अने जीवोने ज्ञान आपीने माया पर करे छे. पछी जे असत्पुरुष छे ते अज्ञानी मनुष्योने एम उपदेश करे छे जे 'सांभळो भाई ! कर्म करवां ते कर्म–फळने भोगव्या विना छूटको थाय नहीं एम वेदमां कह्युं छे, माटे रामकृष्णादिक भगवान तेणे दैत्यने मार्या तथा जे जे कर्म कर्यां तेने भोगववां पडशे,' एम असत्पुरुष कहे छे.

ते जीवने कर्म बंधन करे ते खरुं पण जेनी आज्ञाए करीने कर्म करे तो पहेलांना अनंत जन्मना कर्मनां बंधन ते थकी छूटीने जीव माया पर थईने अक्षरधामने पामी जाय, एवा जे प्रत्यक्ष परमात्मा तेने असत्पुरुष छे ते एम कहे छे जे 'ते कर्म करे छे ते बंधन करशे.' एम जाणीने माया पर करे एवा जे परमात्मा तेने विषे दोष देखाडीने जीवने असत्पुरुष जे ते नरकना कुंडमां नाखे छे. पण एम असत्पुरुष न समजे जे 'ए तो बद्ध जीवोने माया पर करवा सारु सजातिभाव देखाडे छे पण तेने विषे मायानो लेश नथी,' एम असत्पुरुष जाणी शके नहीं. माटे असत्पुरुष जे ते घणाक जीवनुं भूडुं करे छे. अने वळी केटलाक तो एम पण कहे छे जे–

'कृष्णने करवुं होय ते करे, जीवतुं सोचना सीदने धरे ।'

एम समजीने शुभ कर्मादिक भगवाननी प्रसन्नताना साधन तेनो पण त्याग करे छे. पछी एवा नास्तिकने साधन करावबा सारु सत्पुरुषे एम कह्युं के 'जो तुं कर्म करीश तो ज सुखने पामीश, पण कर्म कर्या विना कोई सुख मळशे नहीं. माटे कर्म ज सुखना दाता छे,' एवी रीते

कर्मने विषे आस्था बंधाववा सारु कर्मनी पुष्टि करी छे. पण पछी असत्पुरुषे कर्मने ज कर्ता ठराव्या एम अवळुं समजावीने अनादि कर्ता एवा जे परमात्मा तेने विषेथी आस्ता उठडावीने नास्तिकभाव अणाव्यो अने मोक्षनो मार्ग बंध कर्यो.

एवी रीते असत्पुरुष जे ते कर्मने ज कर्ता जाणे छे अने ते कर्मना फळना आपनारा एवा जे परमात्मा उपासना करवा योग्य अने जे थकी आत्मानुं कल्याण थाय तेनो त्याग करे छे. माटे एम समजे तो मोक्ष ज खोटो थई जाय छे, केमके जीव कर्म करे खरो पण ते कर्मनुं फळ पामवुं ते जीवने पोताना हाथमां नथी. जेम खेडूत खेतरमां खेड करे खरो पण वरसाद् वरस्या विना मोल नीपजे नहीं. ते वरसाद ईश्वरना हाथमां छे. तेम परमात्मानी उपासना अने भक्ति विना जीव पोतानी मेळे कर्म सूझे एटलां करे तो पण तेनुं कल्याण थाय नहीं. अने कदापि एकली उपासना अने भक्ति होय अने तेने कर्मकांडरूप धर्म न होय अने देह–आत्माने जुदा जाणीने आत्माने पोतानुं स्वरूप समजतो न होय तो तेनुं पण कल्याण थाय नहीं. केमके जेने ज्ञान न होय ते भगवाननी सेवा करतो करतो देहनी पण सेवा करवा मांडशे अने ते देहने कोई सारा पदार्थ आपशे तो ते भगवानने पड्या मूकीने तेनी सेवा करवा मांडशे. माटे तेनुं कल्याण पण नहीं थाय, ते सारु भगवाननी उपासना अने तेनी आज्ञारूपी कर्म अने आत्मा परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान ए त्रणे संपूर्ण जेने हशे तेनुं ज कल्याण थशे. माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण करवुं होय तेने देह पर्यंत कर्म, उपासना अने ज्ञान ए त्रणे वानां दृढ करीने राखवां.

अने ए त्रणे वानां संपूर्ण क्यारे सिद्ध थाय छे ? अने सवळां क्यारे समजाय छे ? तो ज्यारे पृथ्वी उपर परमात्मा पोते प्रगट थया होय

तथा परमात्माना एकांतिक पंचविषयना त्यागी संत ते प्रगट होय अने तेनो आश्रय करशे त्यारे ज तेनी सिद्धि थाय छे अने सवळां समजाय छे अने ते जीवनो मोक्ष थाय छे माटे सर्वे वातनी सिद्धि थवानो समो आज तमारे आव्यो छे, ते समजु हशे ते चेतशे अने मूर्ख अने आसुरी हशे ते गोथां खाशे."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १८९ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत १९० विषयः—सत्संग अने कुसंग.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ ना अषाड सुदि १२ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये पटेल मथुरभाई गेरधरभाईने घेर गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी सर्वे हरिभक्त प्रत्ये महाराज बोल्या जे "मनुष्यदेहने पाम्यो जे जीव तेने सत्संग जरूर करवो अने सत्संग छे ते अतिशय दुर्लभ छे अने सत्संगे करीने जीवनुं कल्याण थाय छे. हवे सत्संग ते शुं? तो सत्यनो संग करवो तेनुं नाम सत्संग छे. अने सत्य शुं छे? तो एक आत्मा सत्य छे अने बीजा परमात्मा रामकृष्णादिक भगवानना अवतार ते सत्य छे अने त्रीजा ते भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी निर्वासनिक संत ते सत्य छे अने चोथुं ए त्रणेनुं प्रतिपादन जे शास्त्रमां होय ते शास्त्र सत्य छे अने ए चारेनो मनकर्मवचने संग करवो तेनुं नाम सत्संग कहीए. अने ए सत्य थकी उलटुं एटले असत्य छे अने

ते असत्यनो संग करवो तेनुं नाम कुसंग छे अने ते कुसंगे करीने जीवनुं भूंडुं थाय छे अने सत्संगे करीने जीवनो मोक्ष थाय छे. ते सत्संग क्यां रह्यो छे? अने कुसंग क्यां रह्यो छे? तो माया पर एवा जे प्रत्यक्ष सत्पुरुष तेना संबंधमां सत्संग रह्यो छे. अने माया पर करे एवा जे सत्पुरुष तेने विषे दोषना देखाडनारा अने पंचविषयने भोगवनारा अने बीजाने भोगवावनारा एवा जे असत्पुरुष तेना संगमां कुसंग रह्यो छे.

हवे सत्पुरुष कोण छे? अने ते केवा छे? तो क्षर अने अक्षरना आधार एवा जे परमात्मा ते जे ते जीवोनी उपर कृपा करीने पोतानुं स्वरूप जणावीने जीवोने माया पर करवाने अर्थे अने पृथ्वी उपर एकांतिक धर्मनुं स्थापन करवाने अर्थे अने अधर्म अने असुरनो नाश करवाने अर्थे पोतानी स्व-इच्छाए करीने पोताना अक्षरधाममां अखंड रह्या थका पृथ्वी उपर रामकृष्णादिक अवतार धारण करे छे ते ज एक सत्पुरुष छे अने तेने सद्गुरु कहे छे. अने तेनां जन्म, कर्मादिक सर्वे दिव्य छे अने कल्याणकारी छे. अने अवतारादिकना जन्म कर्मादिकने दिव्य जाणीने तेनुं गान करे छे ते आत्मा मायाने तरीने ब्रह्मरूप थाय छे अने ते अक्षरधामने पामे छे.

हवे ते प्रत्यक्ष एवा जे सद्गुरुरूप परमात्मा ते जे दया करीने वेदनुं तत्त्वसार एवुं जे आत्यंतिक ज्ञान ते पोताने शरण आव्या एवा जे जीवो तेने आपे छे. ते ज्ञाननां चार अंग छे (१) धर्म (२) ज्ञान (३) वैराग्य अने (४) भक्ति, ए चारेमांथी प्रथम जीवने धर्मनो उपदेश आपे छे. ते धर्म ते शुं? तो अनादि काळ थया इन्द्रियोनी वृत्तिओ अनियमपणें वर्त्यां छे तेने करीने जीवने घणांक पाप लाग्यां छे. ते पापने बाळवाने अर्थे नियम आपे छे. ते नियम शुं तो? कान इन्द्रिये

करीने भगवाननी कथा वार्ता लीलाचरित्र तेनुं श्रवण करवुं अने जगतना पंचविषयना भोग संबंधी जे ग्राम–वार्ता तेनो त्याग करवो अने त्वचा इन्द्रिये करीने भगवानना चरणारविंदनो स्पर्श प्रीतिए करीने करवो अने ते विना विषयासक्तिए करीने स्त्री, पुरुषादिकना स्पर्शनो त्याग करवो अने नेत्रे करीने भगवान अने भगवानना एकांतिक विषयना त्यागी संत तेनां दर्शन करवां अने स्त्री आदिकनां रूप जोवां नहीं. एवी रीते इन्द्रियोनी वृत्तिओने जगतना मायिक विषयने पापरूप जाणीने त्याग करीने तेने भगवानना स्वरूपमां राखवी तेनुं नाम धर्म कहेवाय छे. अने ते धर्मे करीने इन्द्रियोनां पाप सर्वे नाश पामी जाय छे अने अंतःकरण शुद्ध थाय छे. अने एवी रीते धर्मने विषे दृढता क्यारे थाय छे ? तो सद्‌गुरु रूपे परमात्मा अने तेना संत प्रत्यक्ष मळे छे अने तेनो आश्रय जीव करे छे त्यारे धर्मने विषे निष्ठा बेसे छे पण परमात्मा अने संत मळ्या विना कोईने धर्म दृढ थतो ज नथी, माटे धर्ममां दृढता थवी ते पण भगवाननी कृपा जाणवी. अने जेने धर्मने विषे निष्ठा नथी अने जे मननी खुशीमां आवे तेम चाले छे तेने भगननो कोप जाणवो. माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण इच्छवुं तेने प्रत्यक्ष ज्ञानदाता एवा जे परमात्मा अने परमात्माना संत तेनी आज्ञा बराबर पाळवी.

अने जेने धर्मनी दृढता थई होय तेने ज्ञान थाय छे. अने पछी तेने सत्पुरुष ज्ञाननो उपदेश आपे छे जे 'देह अने आत्मा बे जुदा छे अने तेमां जे आत्मा छे ते पोतानुं स्वरूप छे अने ते आत्मा देहादिकनो दृष्टा छे अने ते आत्मा सत्य छे, अविनाशी छे, सुखरूप छे, प्रकाशवान छे अने ज्ञानरूप छे. अने जे देह छे ते मिथ्या छे, जड छे, दुःखरूप छे, नरकरूप छे अने अंधकाररूप छे.

एवी रीते देहादिक पिंड, ब्रह्मांड ते पाप रूप जाणवुं अने जेने जे जाणे तेथी ते जाणनारो जुदो होय छे. केमके ज्यां जाणनारो होय त्यां जाणवा योग्य पदार्थ होय नहीं अने ज्यां जाणवा योग्य पदार्थ होय त्यां जाणनारो होय नहीं, तेम देहने जाणनारो आत्मा ते देह नथी अने जाणवा योग्य जे देह ते आत्मा नथी. माटे दश इन्द्रियो अने पंचभूत ए जे पंदर तत्त्वनो स्थूल देह तेने जाणनारो आत्मा छे. ते आत्मा देहथी जुदो छे. तेम ज चार अंतःकरण–मन, बुद्धि, चित्त अने अहंकार अने पांच विषय शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए नवतत्त्वनो सूक्ष्म देह तेने जाणनारो आत्मा छे; माटे तेथी पण आत्मा नोखो छे.

हवे स्थूळ अने सूक्ष्म ए बे देह तेथी आत्मा जुदो तो खरो पण ते आत्मा केवो छे एम पोते पोताने जाणतो नथी. ते न जाणवा रूप जे अज्ञान ते अज्ञानने पण आत्माए जाण्युं त्यारे ते अज्ञान थकी पण आत्मा नाखो ठर्यो, केमके अज्ञानने पण आत्माए जाण्युं माटे जेने जे जाणे तेथी ते जुदो होय. एवी रीते त्रण शरीरथी नोखो पडयो एवो जे आत्मा ते केवो छे? तो त्रण देहने जाणीने तेथी नोखो पडयो एवो जे आत्मा तेने एम अनुभव थाय छे जे 'हुं अज्ञान नहीं त्यारे हुं ज्ञान छुं कहेतां हुं ब्रह्म छुं अने देहादिक सर्वे मिथ्या छे.' एम जाणीने ते देहादिकना अभिमानने छोडीने पोताना आत्माने विषे दृढ स्थिति थाय छे. एवी रीते त्रण देहातीत थईने आत्माने विषे जे 'हुं पणुं.' मानवुं तेने तुर्यापद कहेवाय छे अने तेने महाकारण देह कहीए माटे महाकारणने जाणनारो पण आत्मा छे माटे तेथी पण आत्मा जुदो छे.

एवी रीते ते देह-आत्मानो विवेक करावीने ते देहथी नोखो पाडीने आत्म-सत्ताने पमाडयो एवा जे प्रत्यक्ष सद्गुरु ते वैराग करावे छे. अने

वैराग विना माया टळती नथी. केमके एक कोरे पोते आत्मा छे अने एक कोरे देहादिक माया छे, माटे माया दृष्टिमां ज्यां सुधी आवे त्यां सुधी तेने कोईक दहाडे बंधन करे खरी माटे ते मायाने टाळवाने अर्थे चार प्रकारना प्रलयनो विचार आपे छे जे नित्य प्रलय, निमित्त प्रलय, प्राकृत प्रलय अने आत्यंतिक प्रलय; ए चार प्रकारना प्रलय वडे करीने पिंड, ब्रह्मांडादिक नाश पामी जाय छे. अने जेने एवुं ज्ञान थाय तेने जगत दृष्टिमां आवतुं नथी अने तेने जगत देखाय छे तो पण जेम झांझवा देखाय छे तेम देखाय छे पण जेम झांझवा मिथ्या छे तेम जगत मिथ्या छे अने वस्तुगते कांई नथी. ते मिथ्या भ्रांतिए करीने जो वासना रही जशे तो कोटान कोटी युग सुधी जन्म, मरणने पामवुं पडशे. एवी रीते महा पाप रूप जाणीने पिंड, ब्रह्मांडादिक सर्व पदार्थने विषे अत्यंत अरुचि करवी कहेतां तेने विषे वैरभाव करवो. अने जेने जगत-पदार्थनो अभाव थयो तेने वैराग कहीए अने एवा ज्ञानना आपनारा एवा जे प्रत्यक्ष परमात्मा अने तेना एकांतिक संत तेने विषे प्रीति करवी, तेनुं नाम भक्ति कहेवाय छे.

हवे परमात्मा केवा छे? तो चौद लोकनुं एक ब्रह्मांड कहेवाय छे ते चौद लोकनां नाम–अतल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, महातल अने पाताल–एवा सात लोक हेठां छे. अने भूर्लोक, भूवर्लोक स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक अने सत्यलोक–ए सात ऊंचा छे. ए चौद लोकनुं एक ब्रह्मांड कहेवाय छे अने एवां एवां अनंत कोटी ब्रह्मांड छे तेनो कर्ता अने कारण एक सबलब्रह्म रूप प्रकृतिपुरुष छे अने एवा अनंत कोटी प्रकृतिपुरुष छे अने ते सर्वे प्रकृतिपुरुष अक्षरब्रह्मना कोक देशने विषे लीन थई जाय छे. जेम दिवसने विषे रात्री लीन थई जाय छे, तेम अक्षरब्रह्मना प्रकाशना कोक देशने विषे अनंत

२०

कोटी प्रकृतिपुरुष रूप सबळब्रह्म ते लीनपणें रहे छे अने एवुं जे शुद्ध चैतन्य ब्रह्म अक्षर ते तो आत्मानुं-स्वरूप छे अने एवी स्थितिने पाम्या ते ब्रह्मरूप मुक्त छे. एवा अनंत कोटी अक्षरब्रह्म रूप महा मुक्त तेना स्वामी अने तेना आधार अने ते सर्वे मुक्तने अखंड सुखना आपनारा परब्रह्म परमात्मा छे. ते परमात्मा जे ते अल्प जेवा जीवोने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आपीने अक्षरब्रह्म रूप महा मुक्त पदवीने पमाडवा सारु पोते अक्षरधाममां अखंड रह्या थका स्व-इच्छाए करीने आ पृथ्वी उपर मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे. ते प्रगट भगवान अने भगवानना संत मुक्तनो जे जीव आश्रय करे छे तेने अभयपदनुं दान आपे छे.

एवा अद्भुत महिमावाळा जे भगवान अने भगवानना संत ते आज प्रगट छे अने एवो जे प्रत्यक्ष परमात्मा अने संतनो महा मोटो उपकार दया अने कृपा तेने जे जीव जाणे छे ते तो प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो आश्रय तत्काळ करे छे अने पोताना जीवात्मानुं काम सुधारी ले छे. अने एवा खरा प्रत्यक्ष परमात्मानो तो सर्वने एक वार खप छे. ते बाईने खप छे, भाईने खप छे, ब्राह्मणने खप छे, क्षत्रियने खप छे, वैश्यने खप छे, शुद्रने खप छे, ब्रह्मचारीने खप छे, वानप्रस्थने खप छे अने सन्यासीने खप छे, एवी रीते चार वर्ण अने चार आश्रमवाळा सर्वे मनुष्यने प्रत्यक्ष शुद्ध ज्ञानदातानो खप छे. केमके ते सर्वेने माथे अज्ञाने करीने जन्म-मरण रह्युं छे. ते प्रत्यक्ष परमात्माना ज्ञान विना बीजां कोटी साधन करे तो पण जन्म-मरण टळे नहीं.

त्यारे कोई एम आशंका करे जे परमात्मा विना बीजा कोई सत्पुरुष मळे तो तेने ज्ञाने करीने मृत्यु टळे के न टळे? तो त्यां कहीए छीए जे प्रत्यक्ष परमात्माना श्रीमुखना ज्ञान विना तो मृत्यु टळे ज नहीं.

केमके आत्मा अने परमात्माना स्वरूपना साक्षात्कार ज्ञान विना मृत्यु टळतुं नथी अने आत्मा अने परमात्मा तो मायाथी पर छे. माटे जे जे मायामां होय तेनाथी माया परनुं ज्ञान साक्षात्कार करावी शकाय नहीं; केमके जेनुं ज्ञान पोताने परिपूर्ण थयुं न होय तेनुं ज्ञान बीजाने केम आपी शकाय ? न आपी शकाय. तेम जेने आत्मा-परमात्मानुं ज्ञान थयुं नथी ते बीजाने आत्मा–परमात्मानुं ज्ञान केम आपी शके ? अने जेने एक वार आत्मा-परमात्मानां स्वरूपनुं साक्षात्कार ज्ञान थाय छे ते आत्मा देह मूकीने भगवानना धामने पामे छे ते पछी पाछो फरीने पृथ्वी उपर देह धरीने ज्ञान आपवा आवतो नथो. अने जे जन्म धरे छे तेने हजी परिपूर्ण ज्ञान थयुं नथी. माटे पोताने हजी परिपूर्ण ज्ञान थयुं न होय ते बीजाने क्यांथी ज्ञान आपी शके ? न ज आपी शके. माटे परमात्मा विना बीजा कोई थकी आत्मा–परमात्मानुं आत्यंतिक ज्ञान अपातुं नथी.

ते सारु 'कर्तुमकर्तुम् अने अन्यथा कर्तुम् समर्थ' एवा जे परमात्मा परब्रह्म ते पोते जीवोनी उपर कृपा करीने ज्ञान आपवा सारु पोतानी स्व-इच्छाथी अक्षरधामने विषे दिव्यमूर्तिमान रह्या थका पृथ्वीने विषे मनुष्यने दृष्टिगोचर थाय एवा रूपने धारण करे छे. पछी पोताने शरणे आव्या एवा जे दैवी जीवो तेने पूर्वे कह्यो जे धर्म तेने विषे बराबर वर्तावे छे. अने ते धर्ममांथी कोईने लगारे फेर पडे छे तो तेने परमात्मा पोते शिक्षा करे छे. ते चार वर्ण अने चार आश्रमवाळा सर्वे मनुष्योने मांथे परमेश्वरनो बांधेलो धर्मरूपी कायदो छे अने ते एक परमात्माने मांथे कोईनो कायदो नथी. केमके परमात्मा तो माया पर छे अने बीजा जीवो तो सर्वे मायामां छे. ते जे मायामां होय ते मायामां मोह पामे छे अने परमात्मानी दृष्टिमां तो माया छे ज नहीं माटे परमात्माने कोई काळे मोह थतो ज नथी. ते सारु एक परमात्माने मांथे विधि-निषेध

नथी अने परमात्मा विना बीजा देव, ब्रह्मादिक सर्वने मांथे विधि-निषेध छे अने जे परमात्मानो वाद लईने विधि-निषेधने तोडीने वर्ते छे ते तो महा पापी छे अने तेने नास्तिक जाणवो. अने तेनो जे संग ते कुसंग छे.

ते कुसंगी केवा छे? तो सत्पुरुषे जीवोना कल्याणने अर्थे धर्म, ज्ञान, वैरागादिक साधन बताव्यां छे ते साधनने कुसंगी अवळां प्रवर्तावे छे, कहेतां सत्पुरुष धर्मे करीने इन्द्रियोने नियममां रखावे छे त्यारे तेने असत्पुरुष एम उपदेश करे जे 'भाई कोई नियम राखवो ज नहीं अने जे नियम राखे छे ते तो अधूरा छे.' एम कहीने नियमने तोडावे छे अने जीवोने अधर्मने मार्गे चलावीने नरकना कुंडमां नाखे छे. अने सत्पुरुष जे ते जीवोने आत्मानुं ज्ञान करावता सारु देह–आत्मानो विवेक करावीने आत्माने पोतानुं स्वरूप मनावे छे अने देहना सुखनो त्याग करावे छे. त्यारे तेने असत्पुरुष शुं कहे छे? 'भाई सांभळो! आत्मा कोणे दीठो छे.? माटे खाधुं–पीधुं, ओढयुं–पहेर्युं ते ज खरुं छे.' एम समजावीने देहना सुखनो ज उपाय करावे छे. अने तेमां धर्म–अधर्म, पाप–पुण्यने गणता नथी अने महा अधर्मने मार्गे चलावे छे अने केटलाक भोळा लोकोने भ्रष्ट करे छे.

अने सत्पुरुष जे ते चार प्रकारना प्रलयनो विचार आपीने सर्व मायिक पदार्थने विषेथी वैराग पमाडे छे अने पदार्थनो त्याग करावे छे अने एक भगवानने विषे प्रीति करावे छे. त्यारे तेने असत्पुरुष शुं कहे छे? 'भाई! आगळ कोण जोई आव्युं छे? माटे आज सुख भोगव्युं ते खरुं छे.' एम कहीने केवळ पदार्थने विषे लोलुप करावे छे. अने सत्पुरुष जे ते सर्वे जगतना कर्ता–हर्ता एवा जे परमात्मा भगवान तेनी माहात्म्ये सहित भक्ति करावे छे. तेने असत्पुरुष शुं कहे छे? 'भाई! घट-घटमां

बोले छे ते परमात्मा छे; वळी बीजो कोण परमात्मा छे?' एम कहीने असत्पुरुष जे ते सत्शास्त्र अने सत्पुरुषना सत्सिद्धांत थकी अवळां वाक्यो बोळीने केवळ चोख्खो नरकनो मार्ग प्रवर्तावे छे.

माटे एवी जातनां वचन बोलता होय तेने असत्पुरुष जाणवा अने तेने चंडाळ तुल्य जाणीने तेना संगनो त्याग करवो. अने शुद्ध धर्म, शुद्ध ज्ञान, शुद्ध वैराग अने शुद्ध माहात्म्ये सहित परमात्मानी भक्ति ए चार साधनने दृढ करावीने ब्रह्मने विषे स्थिति करावनारा एवा जे सत्पुरुष तेने सद्गुरु जाणवा अने तेने कल्याणदाता जाणवा. अने एवा सद्गुरुरूप परमात्मा अने तेना संत तेने जीवनप्राण जाणीने तेनो दृढ आश्रय करवो अने तेनी आज्ञामां मन, कर्म, वचने वर्तवुं. अने एवा प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो आश्रय करशे त्यारे ज जीवनुं कल्याण थशे.

अने ते भगवान पण सर्व जीवनुं कल्याण करवा सारु पृथ्वी उपर प्रगट थाय छे. माटे ते प्रगट भगवान तो त्यागी गृहस्थ, बाई, भाई सर्वेना गुरु छे अने सर्वेने उपदेश आपवाने समर्थ छे अने सर्वेनी सेवाने ग्रहण करे छे ते दया करीने सेवानुं ग्रहण करे छे अने दया करीने उपदेश आपे छे. ते कोई बाई माणस होय अने ते एम कहे जे 'मारे भावे करीने थाळ करीने अथवा करावीने जमाडवा छे.' तो तेनो थाळ दया करीने जमे छे अने तेने ज्ञान आपे छे अने तेना कामादिक दोषनो नाश करे छे. अने स्त्रीओने उपदेश आपीने तेनी सेवानुं ग्रहण करीने निर्लेप रहेवाने तो एक प्रत्यक्ष परमात्मा ज समर्थ छे अने ते स्त्रीओने पण एक प्रत्यक्ष परमात्मानी ज सेवा करवा योग्य छे अने ते प्रत्यक्ष परमात्माना उपदेश थकी ज स्त्रीओनुं तो कल्याण थाय छे. पण ते परमात्मा

विना वीजा कोईने उपदेशे करीने के वीजा कोईनी सेवाए करीने स्त्री-ओनुं कल्याण थाय नहीं अने ते प्रत्यक्ष भगवान विना स्त्रीओ वीजा पुरुषनी सेवा करे छे के वीजा कोईनो उपदेश सांभळे छे तो ते स्त्री-पुरुष वे य भ्रष्ट थाय छे. ते सूझे एवा मोटा कहेवाता होय पण स्त्री आदिक विषयनी वासनावाळा होय अने तेनी सेवा करे के तेनुं ज्ञान स्त्रीओ सांभळे तो ते भ्रष्ट थाय अने स्त्री–पुरुष वे य कल्याणना मार्ग थकी पडी जाय छे, ते पूर्वे केटलाक नारदादिक मोटा मोटा स्त्रीपुरुषने परस्पर संवंधे करीने भ्रष्ट थया छे अने तेने कलंक लाग्यां छे. अने पर-मात्माना अवतार जे रामकृष्णादिक ते तो स्त्रीओने उपदेश करीने अने स्त्रीओनी सेवा ग्रहण करीने निर्लेप रह्या छे अने ते स्त्रीओनुं पण साक्षा-त्कार कल्याण थयुं छे. माटे एवा महा उपकार्यरूप जे प्रत्यक्ष परमात्मा भगवान तेने विषे जे दोष परठे छे ते तो महा पापी छे अने तेनो जे जे संग करे अने तेनी जे वात सांभळे अने तेनी वातने माने ते जीव नरकमां जाय छे. माटे जेने पोताना आत्माना कल्याणने इच्छवुं तेने एवा रामकृष्णादिकने विषे दोषना देखाडनारा जे असुर तेनो संग करवो नहीं अने तेनुं कह्युं पण मानवुं नहीं अने तेनी शंका लेशमात्र न धरतां प्रत्यक्ष सद्गुरुरूप हरि तेनो आश्रय वाई-वाई सर्वेने दृढ करवो अने वीजा पोताना सगासंवंधी स्त्री-पुरुष होय ते सर्वेने प्रत्यक्ष भगवाननो आश्रय कराववो अने सेवा करावची अने प्रत्यक्ष परमात्मा अने तेना संत जीवने मळवा घणा ज दुर्लभ छे, अने तेवो समय पोताने प्राप्त थाय त्यारे तो पोतानुं अतिशय मोटुं भाग्य मानीने प्रत्यक्ष भगवाननी अखंड सेवानो समागम राखवो. अने ते सेवा अने समागममां जे जे अंतराय करे तेने शत्रु जाणीने तेनो तत्काळ त्याग करवो अने पोतानां मा-वाप तथा नात-जात, कुळ-कुटुंव तथा पोतानो स्वभाव इत्यादिक

जे जे प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा तथा समागम करवामां अंतराय करे तेनो तत्काळ त्याग करवो अने प्रत्यक्ष भगवाननो दृढ आश्रय करवो अने पोताना आत्मानुं काम सुधारी लेवुं ए ज मनुष्यदेहनो उत्तम लाभ छे. अने एम जे नथी समजता अने प्रगट भगवान अने भगवानना संतथी जे जे छेटे रहे छे ते तो महा मूर्ख छे अने ते तो आत्मघाती छे. अने तेनुं कल्याण कोई काळे थवानुं नथी."

इति श्रीमुखसिद्धांत १९० समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत १९१ विषय :—दैवी अने आसुरी जीव शाथी थया हशे?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ ना अषाड सुदि १५ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये व्यास कुबेरजी ईश्वरने घेर दक्षिणादे वार ओरडानी आगळ चोकमां गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां मोगराना पुष्पना घणाक हार शोभी रह्या हता. अने हाथने विषे बाजु अने गजरा धारण कर्या हता अने बे कर्ण उपर पुष्पना गुच्छ शोभी रह्या हता. पाघमां बे कोरे तोरा लटकता हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी पटेल काशीभाई प्रागभाईए महाराजने प्रश्न पूछ्यो जे "दैवी अने आसुरी बे प्रकारना जीव शाने करीने थया हशे ?" पछी महाराज बोल्या जे "दैवी अने आसुरी बे प्रकारना जीव अनादिना छे. ते ब्रह्माए प्रथम सृष्टि करी ते दिवसथी ज आसुरी अने दैवी बे प्रकारना जीव उत्पन्न थया छे, एम शास्त्रमां पण लख्युं छे. माटे बे प्रकारना

जीव अनादिना छे. केमके ब्रह्माने विषे त्रण गुण रह्या हता ते तमोगुणे करीने जे सृष्टि करी तेमां आसुरी जीव उत्पन्न थया छे अने जे रजोगुणे करीने सृष्टि करी तेमां दैवी-आसुरी मिश्रित जीव उत्पन्न थया छे. अने जे सत्वगुणे करीने सृष्टि करी तेमां दैवी जीव उत्पन्न थया छे. माटे दैवी अने आसुरी बे प्रकारना जीव अनादिना छे."

पछी वळी काशीभाईए प्रश्न पूछ्यो छे जे "हे महाराज! ए आसुरी जीवनुं कल्याण थाय के न थाय?" पछी महाराज बोल्या जे "आसुरी जीवनुं कल्याण तो कोई काळे थाय नहीं अने कल्याण तो दैवी जीवनुं ज थाय छे अने जे ब्रह्माना रजोगुण थकी सृष्टिमां आव्या एवा जे दैवी-आसुरी मिश्रित जीव तेने जो आसुरी जीवनो संग थाय तो ते जीव आसुरी थई जाय छे अने जो तेने दैवी जीवनो संग थाय तो ते जीव दैवी थाय छे अने तेनुं कल्याण थाय छे, अने जे अनादिना दैवी जीव छे ते तो आसुरीनो संग करता नथी अने ते कोई काळे आसुरी थाय ज नहीं. अने जे अनादिना आसुरी जीव छे ते कोई काळे दैवी थता नथी अने तेनुं कल्याण थतुं नथी. अने जे दैवी-आसुरी मिश्रित जीव छे तेने आसुरीने संगे करीने आसुरभाव आव्यो होय अने तेने पाछो सत्पुरुषनो संग थाय तो ते जीव दैवी थाय छे अने तेनुं कल्याण थाय खरुं, पण जे अनादिना आसुरी जीव छे तेनुं तो कल्याण थतुं ज नथी.

हवे आलोकमां दैवी अने आसुरी बे प्रकारना जीव छे तेने ओळखवानी ए रीत छे जे जे दैवी जीव होय ते अंतःकरणने पोताने वश वर्तावे छे अने जे असुरी जीव छे ते अंतःकरणने वश पोते वर्ते छे. ते जे दैवी जीव छे ते तो पोताना आत्माना कल्याणने अर्थे इन्द्रियो अंतःकरणने भगवानना भजनमां जोडी दे छे अने जे

आसुरी जीव छे ते इन्द्रियो अंतःकरणने वश थईने मायानुं कार्य जे स्त्री तेने भजे छे. ते दैवी जीव भगवानने भजीने भगवानना अक्षरधाममां जाय छे अने आसुरी जीव स्त्रीने भजीने नरकमां जाय छे.

तेमां भजन करवानां त्रण अंग छे. तेमां (१) प्रीतिए करीने भजे छे (२) शूरवीरपणें भजे छे अने (३) ज्ञाने करीने भजे छे. तेमां जे दैवी जीव छे तेने प्रीतिनुं अंग होय ते प्रीतिए करीने भगवाननुं भजन, सेवा, स्मरण, ध्यान करे छे अने भगवानने आधीन थईने भगवाननी आज्ञामां वर्ते छे तथा भगवानना एकांतिक निर्वासनिक संत तेनी आज्ञामां वर्ते छे पण दैवी जीव भगवान अने भगवानना संतनी आज्ञा कोई दिवस लोपे नहीं. अने इन्द्रियो अंतःकरणने भगवाननी सेवामां जोडी दे छे. एवी रीते भगवाननी आज्ञामां वर्ते छे तेने प्रीतिवाळो दैवी जीव जाणवो.

अने आसुरी जीवने प्रीतिनुं अंग होय ते मायारूप जे स्त्री तेने विषे प्रीतिए करीने जोडाय छे अने ते आसुरी जीव स्त्रीनी आगळ प्रीतिए करीने दीन आधीनपणें वर्ते छे अने ते स्त्री थकी थई जे प्रजा तेने विषे पण अतिशय प्रीतिए करीने वश थई जाय छे अने ते प्रजाने कांईक विघ्न लागे छे त्यारे ते आसुरी जीव अतिशय परितापने पामे छे अने ते स्त्री अने स्त्री थकी थई जे प्रजा तेनी सेवामां हाजर उभो रहे छे अने तेनुं वचन लेशमात्र लोपे नहीं. एवी रीते स्त्री अने स्त्री थकी थई जे प्रजा तेने आधीन वर्ते छे तथा बुद्धिरूप जे स्त्री अने ते बुद्धिरूप स्त्री थकी उत्पन्न थई जे इन्द्रियो अंतःकरण रूप प्रजा तेने आधीन वर्ते छे अने ते इन्द्रियो अंतःकरणना विषयमां लोलुप वर्ते छे. एवी रीते आसुरी जीव मायाने विषे प्रीतिए करीने जोडाय छे.

अने हवे जे दैवी जीवने शूरवीरपणांनुं अंग होय ते शूरवीरपणें

भगवानने विषे जोडाई जाय छे, अने भगवाननी सेवा करवामां अने आज्ञा पाळवामां कोई अंतराय करवा आवे तो तेनो शूरवीरपणें नाश करे छे अने कोईनो रोक्यो रोकाय नहीं अने तेनां इन्द्रियो अंतःकरण भगवाननी आज्ञाने विषे थर-थर कंपे छे जे 'रखे भगवान अने भगवानना संतनी आज्ञा लोपाय नहीं.' एवी रीते दैवी जीव शूरवीरपणें भगवान अने भगवानना संतनी सेवा अने भक्ति करे छे.

अने आसुरी जीव होय ते शूरवीरपणें मायामांथी उत्पन्न थई जे बुद्धि तथा स्त्री तेने भजे छे अने ते स्त्रीनी आज्ञामां थर थर कंपे छे अने जेम स्त्री कहे तेम करवाने शूरवीरपणें तत्पर रहे छे अने इन्द्रियो अंतःकरण ते बुद्धिरूप जे स्त्रीनां छोकरां छे तेनी सेवामां तत्पर रहे छे कहेतां इन्द्रियो जे जे विषयनी इच्छा करे छे ते ते विषय तेने भोगवावे छे अने ते विषय भोगववामां धर्म, नियम, नीति, अनीति तथा वेदलोक तेनी मर्यादा आदिक जे जे अंतराय करे तेनो तत्काळ त्याग करे अने अनियम, अनीति, अधर्ममां प्रवर्ते तेने आसुरी जीव जाणवो.

अने जे दैवी जीव ज्ञानी छे ते ज्ञाने करीने भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संत तेने भजे छे अने दैवी भक्त ज्ञाने करीने जीवना रूपने जाणे, ईश्वरना रूपने जाणे, मायाना रूपने जाणे, ब्रह्मना रूपने अने परब्रह्मना रुपने जाणे, अने भगवान कर्ता छे अने अकर्ता छे तेने जाणे, सगुण कहेवाय छे तेने जाणे, निर्गुणने जाणे, साकार भगवान छे तेने जाणे, निराकार कहे तेने जाणे, एक देशीपणुं जाणे, सर्व देशीपणुं जाणे; एवी रीते सर्वेना रूपने जाणीने मायाना पडपंचनो त्याग करीने पोते ब्रह्मरूप थईने प्रत्यक्ष एवा जे ज्ञानदाता परमात्मा भगवान तेनी सेवा भक्ति ए करीने तेने विषे जोडाई जाय छे अने ते भगवान

विना बीजे क्यांय तेने वासना के प्रीति होय नहीं. एवो होय तेने ज्ञानी दैवी जीव जाणवो.

अने जे आसुरी जीव होय ते ज्ञाने करीने मायाने भजे छे. ते केवी रीते भजे छे ? तो ते विषय भोगववाने विषे रस, शणगारादिकने विषे कुशळ होय अने मायाना पदार्थने मेळवी बहु जाणतो होय अने जगतमां राजनीतिओने नाना प्रकारनी कामदरीओ तथा फोजदारीओ तथा वकीलातो तथा पटलाईओ तेने बहु करी जाणतो होय अने तेमां धर्म-अधर्म पाप-पुण्य, नीति, अनीति कांई न गणतां मायाना पदार्थ मेळवीने पोताने घेर गामगरास करी जाणे अने पोतानी स्त्री छोकराने अर्थे मेडाओ हवेलीओ करावी जाणे तथा स्त्री छोकरांने घराणां वस्त्र पहेराववां तथा छोकरांओने परणाववां तेणे करीने स्त्री छोकरांने लाड लडाववां तेमां डहापणदार होय अने पोते पंचविषयने भोगवीने देहे करीने सुखी रहेवुं अने स्त्री छोकरांने विषय भोगवावीने सुखी राखवां तेने विषे कुशळ कहेतां डाह्या होय पण ते आसुरी जीव भगवान भजवामां के संतना समागम करवामां के तेनी सेवा करवामां के धर्म-नियम पाळवामां समजता होय नहीं.

जेम दैवी जीव ज्ञाने करीने मायाने मिथ्या जाणीने ते मायिक विषयने भोगववामां समजता नथी कहेतां मायिक विषयने कोई दिवस भोगवता नथी तथा मायिक पदार्थ भेगां करवामां पण समजता नथी, तेम आसुरी जीव भगवान भजवामां अने धर्म पाळवामां समजे नहीं अने एवा आसुरीनुं कल्याण कोई काळे थतुं नथी केमके आसुरी जीव होय ते सत्पुरुष कल्याणदाता प्रगट थया होय तेनी पासे समागम करवा आवे ज नहीं अने कदापि आसुरी जीव सत्पुरुष पासे जाणे अजाणे

आवे तो ते सत्पुरुषने विषेथी दोषनुं ज ग्रहण करीने उलटो पापनो ज पोटलो बांधे छे. जेम कागडो छे ते गायना उपर बेसीने छांदा ज खोळे छे तथा बगलो छे ते गंगाजीमां जईने मांछला मारे छे, तेम आसुरी जीव होय ते सत्पुरुष पासे जईने दोषने ज खोळे छे पण आसुरी जीव भगवान के भगवानना निर्वासनिक संत तेनो गुण ले ज नहीं; माटे आसुरीनुं कल्याण थतुं नथी.

अने एवो आसुरी स्वभाव जेने विषे जणाय तेनो संग कल्याणना खपवाळाने करवो नहीं अने विषयना त्यागी अने धर्म, ज्ञान, वैराग अने प्रत्यक्ष भगवाननी भक्तिए युक्त एवा जे भगवानना भक्त संत तेनो समागम अने तेनी सेवा करवा अने दैवी जीव होय ते तो सत्पुरुषनो अवगुण ले ज नहीं अने दैवी जीव तो सत्पुरुषनो आशरो करीने तेनी आज्ञामां रहीने पोताना आत्मानुं काम सुधारी ले छे अने जे एवा अनादि दैवी जीव होय तेने सत्पुरुषनो समागम थया अगाउ कांईक धर्म नियमने विषे थोडी गाफलाईए करीने खोटुं होय पण ते ज्यारे प्रगट भगवान के भगवानना निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी संत मळे छे त्यारे ते दैवी जीव तत्काळ ते अधर्म-अनियमनो त्याग करीने सत्पुरुषने विषे प्रीतिए करीने तथा ज्ञाने करीने तथा शूरवीरपणें जोडाई जाय छे अने धर्म-नियमनी द्रढता करे अने तेनां इन्द्रियो अंतःकरण भगवान अने संतनी प्रसन्नता होय तेम करवा लागे छे. एवी रीते जे अनादिना दैवी जीव होय तेनां लक्षण छे माटे जेने कल्याणने इच्छवुं तेने दैवी जीवना गुण जोईने तेनो समागम करवा अने जे जीव आसुरीना स्वभावे युक्त होय तेनो संग करवो नहीं.

एवी रीते समजीने जे जीव अमारी भक्ति करशे अने अमारी आज्ञा पाळशे तथा अमारा एकांतिक संत पंचविषयना त्यागी अने निर्वास-

निक तेनी सेवा करशे अने तेनी आज्ञामां वर्तशे तेनुं साक्षात्कार कल्याण थशे. अने अमारी अने अमारा संतनी सेवा अने आज्ञा पाळ्या विना कोईनुं कल्याण थयुं नथी अने थशे पण नहीं. अने जे अनादिना दैवी जीव छे ते प्रत्यक्ष मने ओळखे छे अने अमारी आज्ञा अने अमारा *संतनी आज्ञामां दैवी जीव यथार्थ वर्ते छेअने तेनुं कल्याणथाय छे.* अने जे आसुरी जीव होय ते परोक्षपणें शास्त्रमां कह्या प्रमाणे धर्म, नियम, जप, तप करता होय अने विषयना रागीने पाखंडी एवा जे वेशधारी साधु, संन्यासी तेनी सेवा करता होय पण तेणे प्रत्यक्ष अमारी आज्ञामां रहेवाय नहीं तथा मने ओळखी पण शके नहीं तथा मारा निर्वासनिक संत तेने पण ते आसुरी जीव ओलखी शके नहीं तथा तेनी आज्ञा पण ते पाळी शके नहीं अने तेनुं कल्याण पण थतुं नथी.

माटे प्रत्यक्ष भगवान अने तेना निर्वासनिक संत तेनी आज्ञा यथार्थ पाळे छे तेज दैवी जीव छे अने तेनुं आने आ जन्मे कल्याण थशे अने जे प्रत्यक्ष अमे अने अमारा निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी धर्मानंदस्वामी तथा अक्षर मुक्तानंदस्वामी जेवा संत तेनी आज्ञा लोपे छे ते ज आसुरी जिव छे अने तेनुं कल्याण कोई काळे थतुं नथी. माटे रामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेनी आज्ञा पाळे छे अने ते प्रत्यक्ष भगवानना संत तेनी *आज्ञा पाळे छे तेनुं ज कल्याण थाय छे.*"

इति श्रीमुखसिद्धांत १९१ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत १९२ विषयः—उत्तम भक्त थवानो उपाय.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ना अषाड वदि १ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री सोजीत्रा मध्ये व्यास कुबेरजी ईश्वरने घेर दक्षिणादे वार ओरडानी रवेशमां गादीतकिया बिछावीने ते

उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराज सर्वे हरिभक्त प्रत्ये बोल्या जे "सर्वेने अमे प्रश्न पूछीए छीए ते जेने उत्तर आवडे ते करजो. ते प्रश्न ए छे जे त्रण प्रकारना भगवानना भक्त छे, ते त्रण प्रकार कया ? तो उत्तम, मध्यम अने कनिष्ठ—ए त्रण प्रकारना भक्त छे, तेमां उत्तम भक्तनां केवां लक्षण छे ? मध्यम भक्तनां लक्षण केवां लक्षण छे ? अने कनिष्ठ भक्तनां केवां लक्षण छे ? ते कहो."

पछी तेनो उत्तर हरिभक्ते करवा मांड्यो पण कोईने आवड्यो नहीं त्यारे सर्वे हरिभक्ते कह्युं जे "हे महाराज ! एनो उत्तर तो तमे करशो त्यारे थशे." पछी महाराज श्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजी बोल्या जे "भगवानना कनिष्ठ भक्त होय ते प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा, भक्ति, समागम करे; पण पोताना मननी खुशी प्रमाणे करे अने तेना मनना गमताथी बीजी रीते अमे पंडे करावीए तो तेने करे नहीं अने तेमां दरेक प्रकारनी युक्ति करीने अंते जतां पोताना मनना धार्या प्रमाणे करे पण तेथी वधारे करे नहीं. एवी रीतनां जेनां लक्षण होय तेने कनिष्ठ भक्त जाणवो.

अने जे मध्यम भक्त होय ते भगवान अने संतना गमता प्रमाणे भगवाननी सेवा, भक्ति, समागम करे पण तेमां इन्द्रियोने प्रिय लागे एवी सेवा भक्ति होय ते करवामां बहु राजी थाय अने तेने उमंगथी करे अने इन्द्रियोने प्रिय न होय तेमां राजी न थाय अने ते सेवाने करे तो खरो पण श्रद्धाए रहित अणमण तो थको करे. ते इन्द्रियोने प्रिय

अने अप्रिय ते शुं छे ? तो अमने जळनो प्यालो भरीने पावो होय तो दोडीने राजी थको पाय तथा अमने कांईक मीठा मेवा फळफळादिक जमाडवुं होय तो उमंगेथी जमाडे अने जो अमारो दिशाए जवानो लोटो उटकवो होय तथा अमारी पीचदानी उटकवी होय तो ते वेक कठण पडे अने अणमणतो थको उटके. एवी रीते प्रिय-अप्रियमां राजीपो अने कुराजीपो जेने होय अने तेने अमे जे आज्ञा करीए तेम करे तो खरो पण तेने सेवाने विषे सारो-नरसो भाव रह्यो होय तेने मध्यम भक्त जाणवो.

अने जे उत्तम भक्त होय ते तो प्रत्यक्ष भगवाननी सेवाने विषे सारो-नरसो भेद समजे ज नहीं अने तेने भगवाननी जे जे सेवा भक्ति होय तेने पोतानुं मोटुं भाग्य मानीने राजी थको करे. अने वळी उत्तम भक्त छे तेने नीची सेवा मळे त्यारे तो मनमां घणो राजी थाय. केमके भगवाननी सेवा छे तेने विषे तो ऊंचो-नीचो भाव नथी अने प्रत्यक्ष भगवाननी सर्व जे जे सेवा होय ते तो जीवनां अनंत जन्मनां पापने वाळीने भस्म करीने जीवने तत्काळ ब्रह्मरूप करे एवी छे, तो पण इन्द्रियोना जोवामां ऊंचो-नीचो भाव आवे छे. ते माटे ऊंचा भावने विषे मनने कांईक मान रहे छे अने नीचा भावने विषे निर्मानीपणुं रहे छे. जेम जे अमारो थाळ करतो होय तेना आगळ अमारा थाळनां वासण उटकतो होय ते निर्मानी रहे छे अने थाळ करनारने मान रहे छे. माटे जे उत्तम भक्त छे ते भगवाननी सेवाने विषे ऊंचो-नीचो भेद नथी समजता तथापि नीची टेळ मळे तो पोते आनंदने पामे छे अने ते तो जेम अमारी आज्ञा होय ते प्रमाणे ज करे अने तेमां ज परम आनंदने पामे एवां जेनां लक्षण होय तेने उत्तम भक्त जाणवो. एवी रीते उत्तम मध्यम अने कनिष्ठ भक्तनां लक्षण छे.

प्रश्न:–पण हवे तमने एक बीजो प्रश्न पूछुं छुं जे कनिष्ठ भक्त छे

तेने मध्यम थवानो शो उपाय छे ? अने जे मध्यम भक्त छे तेने उत्तम थवानो शो उपाय छे ? ते कहो." तेनो उत्तर कोईथी थयो नहीं. पछी महाराज बोल्या जे "सांभळो अमे तेनो उत्तर करीए जे कनिष्ठ अने मध्यम बेय भक्तने उत्तम थवानो उपाय ए छे जे तेने उत्तम भक्तना जेवा गुण पोताने विषे धारवा. ते केवी रीते गुण धारवा ? तो जेम उत्तम भक्त भगवाननी सेवा श्रद्धा माहात्म्ये सहित देहे करीने करे छे तेवी रीते भगवाननी सेवा करवानो पोताने मनमां भाव धरवो अने भावे करीने प्रथम जेवी रीते उत्तम भक्त देहे करीने भगवाननी सेवा करे छे तेवी रीते पोताने भगवाननी मूर्तिने हैयामां धारीने भगवाननी मानसिक पूजा करवी. ते एक वार सवारमां सुता उठीने आसन उपर बेसीने जेवा भगवानने पोते दीठा होय तेवाने तेवा हैयामां धारीने कहेतां मनमां भगवानने संभारीने तेने एम जाणवुं जे भगवान पोढ्या हता ते जाग्या. पछी ते भगवानने बे हाथ जोडीने माथुं चरणारविंदमां नमावीने पगे लागवुं. पछी कोमळ दातण प्रभुजीने आपवुं अने सोनानी पीचदानी पासे मूकवी अने एक गरम जळनो लोटो भरीने आगळ मूकवो. पछी एम जाणवुं जे प्रभुजीए दंत धावन करीने दातण चीरीने उल उतारी. तेने पछी पोते जळनो लोटो लईने दातणनी चीर धोवरावीने ते चीरोने प्रभुजीना हाथमांथी लई लेवी. अने प्रभुजीने मुखमंजन कराववुं अने मुखारविंद लुवा सारु एक श्वेत रूमाल आपवो. अने मुख लुई रह्या एटले चाखडीओ प्रभुजीने पहेरवा आपवी अने एक जळनो लोटो भरीने बहीर भोमिए प्रभुजी जाय त्यां पोताने भेगा जवुं. पछी जळनो लोटो मूकीने पोताने पाछुं वळवुं अने प्रभुजी बहीर भोमिए गया छे एम मनमां धारवुं. पछी जाणवुं जे बहीर भोमिए जईने प्रभुजी आव्या ते सामा दोडीने लोटो प्रभुजीना हाथमांथी लई लेवो पछी

चाजोठ उपर रेशमनो चाकळो विछावीने ते उपर प्रभुने विराजमान करवा. पछी बीजो गरम जळनो लोटो भरीने मटोडी लईने प्रभुजीना हस्त-कमळ धोवरावना अने कोगळा करावना अने चरणारविंद धोईने तं प्रभुजीना चरणारविंदने कोरे श्वेत वस्त्रे करीने लुछवा. पछी फुलेल, तेल, अत्तर, दूध, दहीं इत्यादिक पंचामृते करीने प्रभुजीनुं अंग चोळीने उना पाणीनी कुंडीओ भरीने लोटावते प्रभुजीने नवरावना अने पछी एक श्वेत वस्त्रे करीने शरीर लुईने श्वेत धोयेलो कोरो खेस प्रभुजीने पहेरवा आपवो अने एक बीजो गुलाबी कोरवाळो श्वेत खेस ओढवा आपवो. पछी रूपानी चाखडीओ पहेरवा मोढा आगळ मूकवी अने एक रूपानी छडी प्रभुजीना हस्तकमळमां आपवी. पछी एम जाणवुं जे प्रभु-जी चाखडीओ उपर चडीने पधार्या. ते एक सुंदर मंदिरमां स्हेज पलंग तथा हिंडोळाखाट विछावीने ते उपर प्रभुजीने विराजमान करवा. पछी केसर-चंदननी आड प्रभुजीना ललाटने विषे करवी अने कंकुनो चांदलो करवो अने भारे-भारे वस्त्र धारण करावनां अने ऋतु प्रमाणे पुष्प, सुवर्णा-दिकना आभूषण प्रभुजीने धरावनां. पछी दूध, पेंडा, बरफी, टोपरापाक, गुंदरपाक, पुरीओ, साकर आदिक अनंत प्रकारना मेवा मीठाई ते प्रभुजीने जमवा आपवुं. पछी जळपान करावीने सोपारी, एलची, काथो, चुनो, पान आदिक मुखवास जमवा आपवो. पछी धूप दीपे करीने आरती उतारवी अने दंडवत परकम्मा करीने पछी प्रभुजीनी स्तुति करवी जे 'हे दीनबंधु, दयासिंधु, हे भक्तवत्सल, हे अधम उद्धारण, हे पतित पावन, हे शरणागत् प्रतिपाळ हुं तमारे शरणे आव्यो छुं ते हे प्रभु ! मारा अंतरशत्रु जे काम, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान ते थकी मारी रक्षा करजो तथा शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए पांच विषयनी वासना ते थकी मारी रक्षा करजो, कहेतां विषयनी वासना टाळजो

अने तमारा चरणारविंदने विषे मारे प्रीति थजो. तथा तमारा संतने विषे प्रीति थजो अने देहने विषे अहंबुद्धि अने देह संबंधी पदार्थने विषे ममता-बुद्धि तेनो नाश करजो अने तमारा चरणनी अने तमारा संतनी मने अखंड सेवा आपजो अने ते सेवाने विषे मारे अतिशय भाव थजो अने तमारा संत पंचविषयना त्यागी तेने विषे प्रीति थजो, एटलां वानां मने दया करीने आपजो.' एवी रीते मन वडे करीने सवारमां भगवाननी मूर्तिने संभारीने मानसिक पूजा करवी अने ते भगवान जाणे आपणा उपर प्रसन्न थया ते उभा थईने आपणने बाथ-मां घालीने मळ्या ते एक वार मळवुं, बे वार मळवुं, एवी रीते जेटलो पोताने प्रेम उपजे तेटली वार भगवानने मळवुं. पछी पोतानुं काम-काज नाहवुं-धोवुं पोतानी देह क्रिया करवी.

—अने त्यारबाद पछी बीजीवार भगवाननी मानसिक पूजा करवी. तेमां मोटा भातभातना पाक, शाकादिक पकवान करीने थाळ जमाडवो अने धूपदीप, आरती, स्तुति, दंडवत परकम्मा करवुं अने पछी प्रभुजीने मुखवास, जळपान करावीने पोढाडवा बीजणो लईने वायरो नाखवो अने पगचंपी करवी अने एम जाणवुं जे "मारा आत्मारूपी मंदिरमां भगवान अखंड रह्या छे अने तेज भगवान बहार रामकृष्णादिक रूपे मनुष्यस्वरूपे दर्शन आपे छे." एम जाणीने ते प्रत्यक्ष भगवाननी मानसिक पूजा माहात्म्ये सहित गद्गद् कंठे थईने करवी.

तेवी ज रीते जेम घटे ते प्रमाणे सांजनी वखते भगवाननी मूर्तिने मनमां संभारीने मानसिक पूजा करवी अने जे एवी रीते भगवाननी मानसिक पूजानो अभ्यास करे तो ते भक्तनुं कनिष्ठपणुं अने मध्यमपणुं मटीने ते उत्तम भक्त थाय छे अने ते भक्तने पछी देहे करीने प्रत्यक्ष

भगवाननी सेवाने विषे अतिशय श्रद्धा वृद्धि पामे छे अने ते भक्तने विषे उत्तम भक्तना गुण आवीने निवास करे छे अने तेने कनिष्ठपणुं अने मध्यमपणुं टळी जाय छे अने उत्तम भक्त थाय छे. केमके जे जे काम करवुं होय ते कामनो मनमां प्रथम ठराव थाय छे पछी ते काम देहे करीने थाय छे. अने मनमां जे काम धार्युं न होय ते काम देहे करीने थतुं नथी.

माटे उत्तम भक्त थवानो एज उपाय छे जे प्रथम तो उत्तम भक्तना जेवा गुण पोताना मनमां धारवा, कहेतां उत्तमभक्त जेम प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा देहे करीने प्रत्यक्ष करे छे तेवी रीते पोते मनमां भगवाननी मूर्तिने धारीने भगवाननी मानसिक पूजा करवा मांडे त्यारे तेने पछी देहे करीने भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संतनी सेवा करवानी अडचण रहेती नथी. माटे जेने भगवानना उत्तम भक्त थवुं, होय तेने भगवाननी मानसिक पूजा नित्य नियमे सहित करवी.

अने जे भगवाननी मानसिक पूजा करे छे तेनो जीव अतिशय वळने पामे छे अने तेने भगवानने विषे अतिशय प्रेम थाय छे, अने जेने भगवानने विषे प्रेम थाय छे तेने भगवाननी सेवाने विषे कोई जातनो अंतराय रहेतो नथी अने ते भक्त भगवाननो उत्तम भक्त थईने भगवानना अक्षरधामने पामे छे. माटे जेने भगवानना उत्तम भक्त थवुं होय तेने भगवाननी मानसिक पूजा करवी एज उत्तम भक्त थवानो उपाय छे. माटे भगवानना भक्तने भगवाननी मानसिक पूजा करवी अने भगवाननी मानसिक पूजा कर्या विना भगवानना उत्तम भक्त कोई काळे थवातुं नथी.

माटे जेने उत्तम भक्त थवुं होय अने अखंड सुखने पामवुं होय

तेने अमारी मूर्तिने संभारीने तेज मूर्तिनी मानसिक पूजा प्रथम कह्युं ते प्रमाणे नित्य करवी. अने जेने भगवानने विषे खरो प्रेम होय तेना थकीज मानसिक पूजा थाय छे अने जेने भगवानमां प्रेम न होय तेना थकी भगवाननी मानसिक पूजा थती नथी. माटे जेने अमने प्रसन्न करवा होय तेने देहे करीने पोतानी श्रद्धा भक्ति प्रमाणे अमारी अने अमारा निर्वासनिक संतनी सेवा करवी अने मानसिक पूजा तो नित्य प्रेमे सहित करवी."

इति श्रीमुखसिद्धांत १९२ समाप्त।



श्रीमुखसिद्धांत १९३ विषय :–मान टाळवानो उपाय.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२२ ना अषाड वदि २ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये व्यास कुवेरजी ईश्वरने घेर दक्षिणादे वहार डेलामां गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण शोभी रह्यां हतां. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने संध्या आरतीने समये पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराजनी आरती धून कर्या केडे पटेल नरसिंहभाई द्वारकादासे प्रश्न पूछ्यो जे "हे महाराज! प्रत्यक्ष भगवान पृथ्वी उपर विराजता होय त्यारे तेनो आशरो करवामां जीवने लोकनी लाजनुं मान तथा मतपंथनुं मान आडुं आवे छे माटे ते माने करीने प्रत्यक्ष भगवाननो आशरो थतो नथी. अने सर्वे शास्त्र एम कहे छे जे 'साक्षात्कार प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिकनो दृढपणे आशरो कर्या विना जीवनुं

कल्याण थतुं नथी.' माटे प्रत्यक्ष महात्मा पुरुषनो आश्रय करवामां आडुं आवनारुं एवुं जे मान ते केम टळे? ते कृपा करीने कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "मान टळवानो तो ए उपाय छे जे बहारदृष्टिनो त्याग करीने अंतरदृष्टि करे कहेतां सत्य-असत्यनो विचार करे तो मान लेश मात्र रहे नहीं. अने जीवने बे प्रकारनी दृष्टि छे; एक बहारदृष्टि छे अने बीजी अंतरदृष्टि छे. तेमां प्रथम तो जीव मात्रनी बहारदृष्टि छे. ते बहारदृष्टिमां मान रह्युं छे अने अंतरदृष्टिने विषे लेश मात्र मान रहेतुं नथी. हवे बहारदृष्टि ते शुं? तो मिथ्या पदार्थने सत्य मानवुं तेनुं नाम बहारदृष्टि छे, कहेतां मिथ्या एवो जे स्थूळदेह तेने जीव जे ते पोतानुं रूप मानीने इन्द्रियो अंतःकरणे करीने पिंड, ब्रह्मांडादिक जे जे देखाय छे तेने विषे सत्यता भावे करीने तेने भोगववानी वासना छे ए ज जीवनी बहारदृष्टि छे. माटे ते मिथ्या खोटी दृष्टि छे.

जेम रेल्वेनी गाडीमां बेठो होय तेने एम भासे छे जे मार्गने कांठे वृक्ष होय ते चाल्या जाय छे, कहेतां चालती तो होय गाडी पण ते गाडीमां बेसनाराने जोवामां एम आवे 'जे मार्गने कांठे आंबा, राण्यो, बावळीया इत्यादिक वृक्ष होय ते दोडयां जाय छे,' एम गाडीमां बेठा होय तेनी दृष्टिमां आवे छे, पण ते मिथ्या दृष्टि छे. अने ए तो जोवा मात्र बहारदृष्टि छे. पण 'वृक्ष कोई दहाडो चाले नहीं,' एम अंतरदृष्टि करीने जुए कहेतां विचार करे तो एम खबर पडे 'जे ए तो आपणी गाडी चाली जाय छे तेणे करीने ते वृक्षादिक चालतां देखाय छे, पण ते चालतां नथी.' अने वळी गाडीमां बेसनारो विचार करे तो तेने एम अनुभव थाय जे 'अमदावादथी गाडीमां बेठा होय तेने थोडीक वार लागे त्यारे नडीयाद आवे छे अने पछी थोडीक वार थाय त्यारे वडोदरा

आवे छे अने त्यारपछी वळी सुरत आवे छे अने मुंबई आवे छे, माटे जो गाडी चालती न होय तो ते ते शहेर केम आवे ? न आवे.' माटे विचार करे तो एम जाणे जे 'आपणे वेठा छीए ते गाडी ज चाले छे पण वक्ष चालतां नथी' एम विचारदृष्टिए करीने जुए तेने दृढ अनुभव थाय छे .

तेम ए तो दृष्टांत अने तेनुं सिद्धांत ए छे जे जीव जे ते अज्ञाने करीने देह रूपी चालती गाडीमां वासनाए करीने बेठो छे तेणे करीने मिथ्या रूप जे पिंड, ब्रह्मांडादिक तेने विषे सत्यता भासे छे तथा मतपंथनुं बंधन रहे छे तथा लोकनी लाज आवे छे तथा वर्णाश्रमनुं मान इत्यादिक अनेक प्रकारनुं मान ते देहाभिमानीनी दृष्टिमां आवे छे, पण ते सर्वे मान मिथ्या छे. जेम गाडीमां वेसनाराने वृक्षादिक मिथ्या चालता देखाय छे, तेम देहरूपी गाडीने मिथ्या अहंकारे करीने पिंड, ब्रह्मांडादिकनुं मान दृष्टिमां आवे छे तथा मतपंथादिकनुं मान तथा वर्णाश्रमादिकनुं मान ते देहाभिमानीनी दृष्टिमां आवे छे.

—पण जो पोतानुं सत्यस्वरूप जे आत्मा तेनो विचार करीने अंतरदृष्टि करे तो तेने एम भासे जे 'हुं तो आत्मा छुं, चैतन्य छुं, अविनाशी छुं, अमर छुं, सुखरूप छुं ते मारे आत्माने मतपंथ वर्णाश्रम नथी तथा नात-जात, देश-गाम आत्माने छे ज नहीं अने नात, जात, वर्णाश्रम तथा मत-पंथादिक तो देहना भाव छे. ते देह तो मिथ्या छे माटे देहने लईने जे जे मान, मोटप, लाज, आवरुं माने छे ते तो सर्वे मिथ्या छे. केमके देह मिथ्या छे तो देह संबंधी जेटलुं जेटलुं मान, मोटप ते पण सर्वे मिथ्या छे अने एवुं जे मिथ्या मान ते मान जो प्रत्यक्ष भगवाननो आश्रय करवामां आडुं आवे तो ते मानने महा पापरूप जाणवुं.

—केमके माने करीने महात्मा पुरुषनो आश्रय करशे नहीं तो तेने

चोरासीमां जवानुं थशे. पछी तेने चोरासीमां कूतराना, गधेडाना, कागडाना अवतार आवशे त्यारे निर्मानीपणें घरोघर भटकवुं पडशे अने महा दुःख भोगववां पडशे अने तेमां कांई अर्थ सरसे नहीं. अने पूर्वे पण अनंतवार नीचानींचा चंडाळादिकना देह धरीने वणाकर्नी आगळ निर्मानीपणुं भोगव्युं छे अने तेमां कांई आत्मानुं सारुं थयुं नथी अने आज महात्मा पुरुष पासे निर्मानी थवानो समय आव्यो छे जे जेणे करीने जीवनुं कल्याण थाय अने चोरासी अने गर्भवासनां दुःख मटी जाय ते ठेकाणे मान रहे ते मानने तो महा पापरूप जाणवुं.

माटे जेने आत्माना कल्याणनी इच्छा होय तेने तो महात्मा पुरुष शुद्ध ज्ञानदाता प्रगट थया होय तेमां रंचमात्र मान राखवुं नहीं अने मत-पंथनुं तथा जाति, वर्ण, आश्रमादिकना माननो त्याग करीने महात्मा ज्ञानदाता प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संत तेनी आगळ निर्मानी थईने तेनो आश्रय करवो अने तेनी आगळ रंच मात्र मान राखवुं नहीं अने जेनी पासे शुद्ध ज्ञान होय अने शुद्ध नियमे सहित धर्म होय अने शुद्ध त्यागे सहित वैराग होय अने शुद्ध सेवाए सहित भक्ति होय एवा चार गुण धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवाननी भक्ति करता-करावता होय एवा जे प्रत्यक्ष महात्मा पुरुष तेने विषे सर्वे मान, मोटप मूकीने हेते करीने दृढपणें जोडाई जवुं, पण त्यां मान राखवुं घटे नहीं.

अने एवा महात्मा पुरुषने विषे जेने दोष भासे छे ते तो पोताने विषे देहाभिमाने करीने दोष होय ते दोष सत्पुरुषने विषे भासे छे. जेम वहाणमां बेसनाराने पोतानुं वहाण चालतुं होय तेने करीने कांठे वृक्षादिक होय तेने चालतां देखे छे अने जो पोतानुं वहाण चालतुं अटके

तो पछी कांठे वृक्षादिक चालतां देखातां हतां ते टळीने जेम छे तेम स्थिरायमान देखाय. तेम चालता वहाणरूप जे पोताने विषे देहाभिमाने करीने दोष होय ते दोष प्रत्यक्ष सत्पुरुषने विषे भासे छे, ते बहारदृष्टिए करीने मिथ्या दोष भासे छे. अने जो अंतरदृष्टिए करीने देहाभिमाननो त्याग करीने आत्माने पोतानुं स्वरूप जाणे तो आत्माने विषे दोष कोई नथी तो आत्माथी पर एवा जे परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान तेने विषे दोष होय ज केम ? न ज होय. एम तेने प्रत्यक्ष महात्मा पुरुषने विषे निर्दोष बुद्धि थाय छे अने तेने सत्पुरुष आगळ लेशमात्र मान रहेतुं नथी, केमके मान तो देहाभिमाने करीने रह्युं छे पण अंतरदृष्टिरूप जे आत्मा तेने विषे मान छे ज नहीं, केमके तेने आत्मा अने परमात्मा विना बीजुं कांई तेनी दृष्टिमां सत्य देखातुं नथी, माटे कोनी साथे मान राखे.

एवी रीते विचारीने अंतरदृष्टिने पामे कहेतां सत्पुरुष थकी ज्ञानने सिद्ध करे तो तेने मान टळी जाय छे. अने तेने सत्पुरुषनो आशरो करवामां लेशमात्र अंतराय रहेतो नथी, अने ते आत्मानो मोक्ष थाय छे.

माटे जेने कल्याणनो खप होय तेने पूर्वे कह्यो एवो विचार करीने जगतनी मिथ्या मान, मोटप, लाज, आबरु तेनो त्याग करीने शुद्ध ज्ञानदाता सत्पुरुष जे पंचविषय थकी मुकावीने निर्वासनिक करे तेनो दृढ आश्रय करवो, एज मनुष्यदेहनो परम लाभ छे. माटे ते लाभ पामवानो समय आज तमारे आव्यो छे माटे तमारा भाग्यनो पार नथी."

इति श्रीमुखसिद्धांत १९३ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत १९४ विषयः-मोक्षनुं सुलभ साधन

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ ना अषाड वदि ८ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये व्यास कुवेरजी ईश्वरने घेर गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने तेउपर विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्न :—पछी संध्या आरती थया केडे महाराज बोल्या "जे सर्वे सभाने अमे एक प्रश्न पूछीए छीए जे जीवना कल्याणने अर्थे शास्त्रमां अनंत साधन बताव्यां छे ते साधन करवा मांडे तो तेनो पार आवे नहीं अने ते साधन करवां ते पण घणां कठण छे. माटे तेमां एक एवुं कयुं सुलभ साधन छे जे एक साधन करे तो सुगम रीते जीवनुं तत्काळ कल्याण थाय ? ए प्रश्न छे. तेनो उत्तर जेने जेम आवडे तेम ते कहो."

पछी गाम पींपळीना व्यास भाईशंकरे कह्युं के "पंचविषयनो त्याग करे त्यारे जीवनुं कल्याण थाय." वळी पटेल मुळजीभाई अजुभाईए कह्युं के "आत्मारूप थईने तमारी भक्ति करे तो कल्याण थाय."

पछी महाराज बोल्या जे "आत्मारूप थवुं अने विषयनो त्याग करीने निर्वासनिक थवुं ए तो घणुं कठण छे."

पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए कह्युं के "माया पर एवा जे परमात्मा भगवान ते पृथ्वी उपर प्रगट विराजता होय अने कां ते भगवानना संत निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी तेने विषे दृढ हेत थाय अने तेनो विश्वास आवे तो ते जीवनुं साक्षात्कार कल्याण थाय अने ते जीव अक्षरधामने पामे."

पछी महाराज बोल्या जे "ए उत्तर खरो. अने प्रत्यक्ष सत्पुरुषने विषे जीवने प्रीति थाय तो ते प्रीतिरूपी एक साधने करीने जीवनुं कल्याण थाय छे अने सर्वेथी ते सुलभ साधन छे अने प्रत्यक्ष सत्पुरुषने विषे तो जीवने प्रीति सहेजमां थाय छे. ते सत्पुरुषने विषे प्रीति समजुने थाय अने अणसमजुने थाय, नानाने थाय अने मोटाने थाय, बाळकने थाय अने वृद्धने थाय, स्त्रीने थाय अने पुरुषने थाय. पण ते प्रत्यक्ष सत्पुरुषने विषे प्रीति केवी थवी जोईए? तो दृढ विश्वासे सहित प्रीति थाय त्यारे आने आ देहे करीने कल्याण थाय.

अने ते विश्वास केवो होय? तो जेम एक कोईक बे मित्र हता ते परदेशमांथी घणाक पैसा कमाईने आवता हता. अने ते पोतानुं गाम बे गाउ रह्युं त्यां रात रह्या. पछी राते एक जण सूई गयो अने एक जण चोकी करवा बेठो तेवामां एक सर्प आव्यो. ते जागनार पुरुषे सर्प आडी लाकडी करी त्यारे सर्पने वाचा उपजी अने ते सर्पे कह्युं के 'ते सुतेला पुरुषना गळानुं रुधिर मारे पीवुं छे, एवुं मारे तेनी पासे पूर्व जन्मनुं वेर छे.' पछी ते जागता पुरुषे कह्युं के 'तेना गळानुं रुधिर तने आपुं तो तारुं वेर वळी रहे? त्यारे सर्पे कह्युं के 'हा मारे तेना गळाना रुधिरनुं काम छे.' पछी ते पुरुषे छरी लईने ते सूतेलो हतो जे पोतानो मित्र तेनी छाती उपर चडीने छरी गळे मांडी त्यारे ते सूतेलो पुरुष जाग्यो अने आंख उघाडीने जोयुं त्यां तो पोतानो मित्र दीठो एटले पाछी आंख मींचीने सूई गयो. पछी तेना गळानी चामडी कापी अने रुधिर काढीने पडियामां घालीने सर्पनी आगळ मूक्युं, एटले पीने सर्प चाल्यो गयो. पछी ते बेय मित्र सवारे पोताने गाम आवीने सौ सौने घेर गया पण जेनुं गळुं वढाणुं छे तेणे तेना मित्रने कांई कह्युं नहीं.

पछी ते गळु वाढनारे पूछ्युं 'जेभाई आज तमारे गळे शुं थयुं छे?'

त्यारे तेणे कह्युं के 'आपणे पेले गाम रात रह्या हता त्यारे तमे छरी लईने कंईक करता हता, ते वखतनुं थयुं छे.' पछी तेणे कह्युं के 'हुं तारुं गळुं वाढतो हतो तेनी तने खबर हती तो पण कांई केम बोल्यो नहीं?' त्यारे मित्रे कह्युं जे 'हुं शुं करवा तने कांई कहुं ? केमके तुं जेम करतो होईश ते मारुं सारुं थाय तेम करतो होईश.' एवी रीते ते मित्रनो तेने दृढ विश्वास हतो जे 'ते मारुं भूंडुं करशे ज नहीं.' ए तेनुं गळुं वाढतो हतो तो पण तेने संशय थयो नहीं. तेम जे जीवने प्रत्यक्ष सत्पुरुषने विषे विश्वास होय ते सत्पुरुष गमे तेवा तेने वढे, काढी मेले, तिरस्कार करे तो पण तेने हितकारी माने अने राजी थाय. केमके जेने सत्पुरुषने विषे दृढ विश्वासे सहित प्रीति होय ते एम जाणे जे 'जे करता हशे ते मारुं सारुं थाय तेम करता हशे.' एम एक तो पाको सत्पुरुषनो विश्वास होय अने एवा विश्वासे सहित सत्पुरुषने विषे प्रीति थाय तो ते जीवनुं साक्षात्कार कल्याण थाय छे.

पण तेमां सत्य-स्वरूप एवा जे अक्षरातीत परमात्मा भगवान पृथ्वी उपर प्रगट होय, तेने विषे जे ते भावे प्रीति जीवने थाय तो ते जीवनां सर्वे साधन पूरां थई रह्यां छे अने ते जीव ते ने ते जन्मे अक्षरधामने पामे छे. ते प्रीति केवी थाय ? तो कोईने पुत्र भावे प्रीति थाय ते एम जाणे जे 'मारा पुत्र तो खरा पण आवो बीजो कोईनो पुत्र होय नहीं.' एवी रीते पुत्रमां पण सर्वोपरी पुत्र जाणीने भगवानने विषे प्रीति करे तो तेने कोई साधन फरीने करवुं पडतुं नथी अने तेने फरीने जन्म पण धरवो पडतो नथी. केमके जेने एवो प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीतिए साहित दृढ विश्वास आव्यो तो तेने विषे भग-वान कोई जातनी कसर रहेवा देता नथी केमके भगवान तेने जे जे वचन कहेशे ते ते वचन तेना जीवमां चोटी जशे अने जे जे भगवान

तेने आज्ञा करशे तेने पोताना शीर साटे पाळशे, केमके जेने विषे विश्वासे सहित प्रीति होय तेनुं वचन तेने लेशमात्र लोपाय नहीं, एज प्रीतिनुं लक्षण छे. माटे भगवानने विषे विश्वासे सहित प्रीति जेने थई तेने विषे भगवान दोष रहेवादे नहीं. ते माता देवहुतीने कपिल-देव भगवानने विषे पुत्रभावे प्रीति थई तो तेनुं साक्षात्कार कल्याण थई गयुं. अने ऋषभदेव भगवानना पुत्रोने पिताभावे ऋषभदेवने विषे प्रीति थई तो ते सर्वेनुं कल्याण थयुं. अने लक्ष्मणजीने रामचंद्रजीने विषे बंधवभावे प्रीति थई तो तेनुं कल्याण थयुं. अने हनुमानजीने भग-वानने विषे दासभावे प्रीति थई तो ते हनुमानजीनुं कल्याण थई गयुं अने अर्जुनने सखाभावे भगवानने विषे प्रीति थई तो तेनुं कल्याण थयुं अने गोपीयोने पतिभावे भगवानने विषे प्रीति थई तो ते गोपीयो सर्वेनुं कल्याण थई गयुं छे. माटे एवी रीते जे ते भावे प्रत्यक्ष भगवानने विषे विश्वासे सहित प्रीति थाय तो तेनुं कल्याण एने ए देहे थाय छे.

अने एवी असाधारण प्रीति थई न होय अने साधारण थई होय जे 'जेम बीजाना भाई छे तेम ते भगवान पण मारा भाई छे अने बीजाना दीकरा छे तेम ते भगवानने पण दीकरो जाणे अने बीजाना बाप तेम मारा पण बाप छे अने बीजाना पति तेम मारा पण भगवान पति छे,' एम साधारणपणे प्रत्यक्ष भगवानने विषे हेत थाय तो ते जीव नरक चोरासीमां तो न जाय अने तेनुं एक बे जन्मे देव, मनुष्यमां देह धर्या पछी असाधारण प्रीति भगवानने विषे थाय छे त्यारे तेनो आत्यंतिक मोक्ष थाय छे. माटे प्रत्यक्ष भगवान पृथ्वी उपर होय अने तेने विषे विश्वासे सहित प्रीति करवी ए ज एक मोक्षनुं सुलभ साधन छे.

अने भगवान प्रत्यक्ष पृथ्वी उपर न होय त्यारे ते प्रत्यक्ष भगवानना

भक्त संत पंचविषयना त्यागी अने निर्वासनिक आत्यंतिक ज्ञानने पामेला तेने विषे पोतपोताना धर्ममां रहीने विश्वासे सहित प्रीति करवी तो ते थकी पण तेनो साक्षात्कार मोक्ष थाय छे. अने ते विनानां बीजां अनंत साधन करे तथा भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संत ते विना बीजा वासनावाळा होय तेने विषे प्रीति करे अने तेनी सेवा करे तेने करीने कोई जीवनुं कल्याण थतुं नथी. ते सारु भगवान अने भगवानना निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी संत तेने विषे विश्वासे सहित प्रीति करवी ए ज मोक्षनुं सुलभ साधन छे. माटे आ समये बाई–भाईने आ सत्संगने विषे प्रीति थई छे तेना तो साक्षात्कार कल्याण थई रह्यां छे अने तेना तो भाग्यनो पार नथी."

इति श्रीमुखसिद्धांत १९४ समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत १९५ विषयः–अज्ञान अने महा अज्ञानरूपी रोग टाळवानो उपाय

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२२ ना अषाड वदि ९ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये व्यास सदाराम सुखलालने घेर आथमणें बार ओरडानी आगळ चोकमां गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगमां पुष्पना आभूषण शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज श्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजी कृपा करीने बोल्या जे "आ जीवने बे प्रकारनो रोग छे अने ते रोगे करीने जन्ममृत्युरूपी महाकष्टने पामे छे. ते रोग कयो ? तो एक तो अज्ञानरूपी रोग छे अने बीजो

महा अज्ञानरूपी रोग छे. तेमां अज्ञान ते शुं? तो पोतानुं स्वरूप जे आत्मा तेने भूलीने देहने विषे 'अहं कहेतां देह हुं छुं.' एम देहने पोतानुं रूप माने छे, तेनुं नाम अज्ञानरूपी रोग छे. अने ए आत्माना साचा हितकारी एवा जे परमात्मा भगवान तेने भूलीने ते आत्माने दुःखनां देनारां एवां जे देहनां संबंधी तथा देह संबंधी पदार्थ तेने पोतानां माने छे. अने एम जाणीने ते पदार्थने विषे मतत्वबुद्धि, तेनुं नाम महा अज्ञानरूपी रोग छे. ए बे प्रकारना रोगे करीने जीव जे ते अनादि काळनो महा पीडाने पामे छे.

हवे ते रोग क्यारे टळे? तो ए आत्माना प्रकाशक अने आत्माना आत्मा एवा जे परमात्मा भगवान ते कृपा करीने जीवना रोगने टाळवाने अर्थे पोतानी स्व-इच्छाए करीने मनुष्याकृतिनुं धारण करीने जीवना रोगने टाळे छे त्यारे रोग टळे छे. ते शा उपाये करीने रोगने टाळे छे? तो जीवने अज्ञान अने महा अज्ञानरूपी बे प्रकारनो रोग छे तेने ज्ञान-विज्ञानरूपी बे प्रकारनुं औषध आपीने रोगने टाळे छे. हवे ज्ञान ते शुं? तो आ देहने विषे वासनाए करीने आत्मा रह्यो छे ते देह मिथ्या छे अने आत्मा सत्य छे अने ते आत्मा पोतानुं स्वरूप छे, एवी रीते देहने मिथ्या जाणीने आत्माने पोतानुं स्वरूप जाणवुं तेनुं नाम ज्ञान कहेवाय छे. ते आत्मारूप कया विचारे करीने थवाय छे? तो सांख्यविचारे करीने आत्मारूप थवाय छे. ते सांख्यविचार ते शुं? तो प्रकृतिपुरुष थकी उत्पन्न थयुं एवुं जे पिंड, ब्रह्मांडादिक विश्व तेना आकार मात्र तेने मिथ्या जाणीने तेनी वासनानो त्याग करीने ते पिंड, ब्रह्मांडथी जुदो एवो जे आत्मा अखंड अविनाशी तेने पोतानुं स्वरूप जाणवुं तेनुं नाम सांख्यविचार छे. एवी रीते आत्मारूप थाय छे अने पंचविषयनो त्याग करे छे तेने अज्ञानरूपी रोग टळे छे, पण तेने महा अज्ञान रहे छे.

ते महा अज्ञानने टाळवाने अर्थे सद्‌गुरु जे ते विज्ञानरूपी औषध आपे छे ते विज्ञान शुं? तो जेम देहने विषे आत्मा रह्यो छे तेम आत्माने विषे परमात्मा भगवान रह्या छे. ते परमात्माने साक्षात्कार जाणीने तेने विषे नवधा भक्तिए करीने जोडाई जवुं तेनुं नाम विज्ञान कहेवाय छे. अने एवी रीते ज्ञान-विज्ञाने करीने अज्ञान अने महा अज्ञानरूपी बे प्रकारना रोग टळी जाय छे. अने ते आत्मानी आत्यंतिक मुक्ति थाय छे अने जन्ममरण टळीने अक्षरधामने पामे छे.

त्यारे कोईने एम आशंका थाय जे आत्माने विषे परमात्मा रह्या छे तेने पामवा क्यां छे एतो पामेला छे?' तो तेनुं एम छे जे जेम दूधमां घी रह्युं छे अने एक कुल्लामां घी भर्युं छे ते ए बेमां घणो भेद छे, तेम आत्माने विषे परमात्मा रह्या छे ते तो जेम दूधमां घी रह्युं छे तेम आत्मामां परमात्मा रह्या छे अने जे अक्षरधाममां परमात्मा रह्या छे ते तो जेम कुल्लामां घी रह्युं छे तेम रह्या छे. माटे जे कुल्लामां घी छे ते दूधमांथी नीकळेलुं छे पण चुरमामां के कंसारमां नाखवा सारु घी जोईतुं होय तो ते दूधमां घी छे ते काम आवे नहीं अने ते दूधमां घी छे तेने किंमती मळे अने तेमां खटास नाखीने तेनुं दहीं करीने तेने वलोवीने घी काढे त्यारे ते घी जमवाना काममां आवे अने जो तेनो किंमति न मळे तो ते दूध बगडी जाय अने पछी तेमांथी घी पण नीकळे नहीं अने ते बगडेला दूधने तो उकरडे नाखी देवुं जोईए.

तेम आत्मामां परमात्मा रह्या छे ते तो दूधने ठेकाणे छे. ते जेम दूधमां घी छे ते जमणना काममां आवतुं नथी तेम देहमां आत्मा अने आत्मामां परमात्मा रह्या छे तेणे करीने आत्मानो मोक्ष थतो नथी. अने जेम दूधना किंमतिए दूधमांथी घी काढ्युं तेम आत्माना किंमति

एवा जे परमात्मा भगवान रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष सद्गुरु ते जे ते सांख्य अने योगना ज्ञानरूपी खटासे करीने आत्माने विषे परमात्मा रह्या छे तेनो साक्षात्कार करावे छे त्यारे ते आत्मानो मोक्ष थाय छे. अने जेम दूधमां छास-पाणीनो भाग काढी नखाय छे अने घीने ग्रहण कराय छे तेम आत्माने विषे छासपाणी रूप जे पिंड, ब्रह्मांडादिकनी वासना तेनो त्याग थाय छे अने घी रूप जे परमात्मा तेने विषे प्रीति थाय छे अने जो प्रत्यक्ष परमात्मानो आश्रय न करे तो ते आत्मानो मोक्ष थाये नहीं. जेम दूधने किंमति न मळतां दूध बगडी जाय छे अने ते दूध कोई काममां आवतुं नथी तेम मनुष्यदेहधारी एवो जे आत्मा ते दूधरूप छे तेने प्रत्यक्ष परमात्मा अने तेना एकांतिक संतनो आश्रय न थाय तो ते आत्मा नरक चोरासीमां जाय अने जन्ममरणनां महा दुःखने भोगवे. माटे प्रत्यक्ष परमात्मा भगवान जीवने मळे अने तेनो आश्रय करे त्यारे ते जीवनुं कल्याण थाय छे. ते देव, मनुष्य अने प्रकृति-पुरुष सुधी सर्वेने प्रत्यक्ष परमात्मानो संबंध थशे अने तेनो आश्रय करशे त्यारे ते सर्वेनो मोक्ष थशे, ए सिद्धांतवार्ता छे. केमके देव, ब्रह्मादिकने विषे माया रही छे अने एक परमात्माने विषे माया नथी ते पण शास्त्रमां कह्युं छे जे 'निर्दोषमेकोहरिः।'

अर्थः—'एक हरि एवा जे परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिक ते निर्दोष छे.' माटे माया पर होय ते थकी ज माया पर थवाय छे. ते सारु परमात्मा जे ते दया करीने जीवोने मायाना बंधन थकी मुकावीने पोतानुं जे अक्षरधाम तेने पमाडवाने अर्थे कृपा करीने मनुष्यने सर्वे प्रकारे ग्रहण करवामां आवे एवा रामकृष्णादिक मनुष्य स्वरूपनुं धारण करे छे. ते प्रत्यक्ष भगवान जोवामां तो मनुष्य जेवा जणाय छे पण ते मूर्तिने विषे मायानो लेश नथी अने ते प्रत्यक्ष भगवाननी जे जे क्रिया,

लीला अने चरित्र ते सर्वे दिव्यरूप छे, कहेतां जीवोनां कल्याणने अर्थे छे. अने जीव, ईश्वरने विषे माया छे ते मायानो त्याग कराववाने अर्थे सांख्य-शास्त्रनो बोध कह्यो छे. त्यां वेदनी श्रुति छे—'घटवत् स्वर्गादि विनश्यति।'

अर्थः—'घडानी पेठे पिंड, ब्रह्मांडादिक सर्वे मिथ्या छे अने नाशवंत छे.' माटे ते पिंड, ब्रह्मांदिकनो निषेध करीने पोते आत्मा शुद्ध चैतन्य रूप थईने प्रत्यक्ष परमात्मानी मूर्तिने दिव्यरूप जाणीने तेने विषे प्रीतिए करीने जोडावुं. ते पण वेदमां कह्युं छे—'सर्वं खल्विदं ब्रह्म।'

अर्थः—'प्रत्यक्ष परमात्मा रामकृष्णादिक भगवाननी मूर्ति छे ते तो सर्वे ब्रह्म छे' कहेतां प्रत्यक्ष भगवानना अंग, अवयवो, क्रिया, लीला अने चरित्र सर्वे परमात्मारूप छे. पण तेने विषे त्याग-भाग करवा जोग नथी अने जे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे त्याग-भाग करे छे ते तो मूर्ख छे अने तेने शास्त्रना मर्म समजाया ज नथी. ते शास्त्रना शा मर्म छे? तो वेदमां एम कह्युं छे जे—'घटवत् स्वर्गादि विनश्यति। तथा सर्वं खल्विदं ब्रह्म।' एवी रीते बे वचन सत्य छे अने बोलवामां उलट पालट जणाय छे. ते सत्पुरुषना मुख थकी समजे तो सवळुं समजाय छे अने जो असत्पुरुषना मुख थकी समजे तो अवळुं समजाय छे. ते असत्पुरुष केम समजावे छे? तो असत्पुरुष जे 'घटवत् स्वर्गादि विनश्यति' नो अर्थ करे छे ते जे 'सर्वे पिंड, ब्रह्मांडना आकारनो निषेद करे छे, ते भेगु दिव्यमूर्ति अने सदाय मायापर एवा जे रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भग-वाननो आकार तेनो पण निषेध करे छे, ए मोटुं पाप छे. अने एवी रीते समजनारानुं कोई काळे कल्याण थाय नहीं. अने वळी ते असत्पुरुष 'सर्वं खल्विदं ब्रह्मनो अर्थ करे छे' तो ते श्रुतिमां तो 'एक प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनां सर्वे अंग, अवयवो ब्रह्म छे' एम कह्युं छे. ते भगवाननी

एक मूर्तिने ब्रह्म न समजतां पिंड, ब्रह्मांडादिक सर्व ब्रह्म छे. एम समजीने पोताने पण ब्रह्म माने छे अने पछी कोईनी उपासना भक्ति करता नथी अने धर्म-नियम पाळता नथी अने ते असत्पुरुष पोते भ्रष्ट थाय छे अने तेनो जे संग करे छे तेने पण भ्रष्ट करे छे अने एम समजनारा बेय नरकी थाय छे.

माटे ए श्रुतिओनो खरो अर्थ केम छे ? तो जीव ईश्वरने विषे जे पिंड, ब्रह्मांडादिक मायाना आकार छे तेनो 'घटवत् स्वर्गादि विनश्यति ' प्रमाणे निषेध करवो अने मायाना आकार सर्वेने पापरूप जाणवा अने ते मायिक आकारने विषे अत्यंत अभाव करीने पोताना आत्माने तेथी जुदो समजीने पछी सर्व प्रकारे ज्ञान आपीने मायाने दूर करावीने ब्रह्मने विषे स्थितिना करनारा एवा जे प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवाननी मूर्ति तेने विषे 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' प्रमाणे प्रत्यक्ष भगवानने विषे मायानो लेश नथी अने ते मूर्ति तो केवळ ब्रह्मरस दिव्यरूप छे अने अखंड मूर्ति छे अने अविनाशी मूर्ति छे अने ते मूर्तिने विषे पंचभूतात्मक मायानो लेश नथी अने मूर्तिनां जन्म, कर्म अने चरित्र ते सर्वे दिव्य छे अने अलौकिक छे. माटे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनां अंग अवयवो अने तेनां चरित्र तेने चिंतवने करीने पामर जेवो जीव होय ते ब्रह्मरूप महामुक्त थई जाय छे अने बीजा जीवोना देह अने तेनी क्रिया तेने चिंतवने करीने आत्मा अधोगतिने पामे छे.

माटे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिमां अने बीजा जीवोना देहमां तो घणो ज भेद छे. ते पण भागवतादिक शास्त्रमां प्रसिद्ध लखेलुं छे. जे प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिकनी मूर्तिने चिंतवने करीने गोपी, गोवाळादिक अनंत भक्त मायाने तरीने परमपदने पामी गया छे. अने ते मूर्तिनुं भजन अने सेवा

जीव जे ते पोताना कल्याणने अर्थे कर्या करे छे पण ते विना कोई जीवनी मूर्तिनुं भजन के सेवा कल्याणने अर्थे कोई करतुं नथी. अने कोई प्रत्यक्ष भगवानना भक्त माया पर थया हशे तेनी तो सेवा भगवानने संबंधे करीने करवा जोग छे पण प्रत्यक्ष भगवानना संबंध विनाना जे बीजा जीवो छे तेनी सेवा के तेनो संबंध छे ते तो केवळ नरकमां जवानो मार्ग छे.

ते सारु तो शुकदेवजी सरखा महा योगी परमहंसो तेणे पोताना देह अने देह संबंधी पदार्थ तेने महा पापरूप जाणीने तेना जतननो अने तेनो संबंधनो सर्वे प्रकारे त्याग करीने ते थकी अंत्ते वैरागने पामीने पोताना आत्माने विषे दृढ स्थिति पामीने ब्रह्मरूप थईने पछी प्रत्यक्ष जे रामकृष्णादिकनी मूर्ति तेने विषे माहात्म्ये सहित जोडाणा छे अने तेना गुण, चरित्र अने लीला तेनुं हरखे करीने गान कर्युं छे अने तेणे पोताना देहनो अने देह संबंधी पदार्थनो वारंवार निषेध कर्यो छे. जे जीवनी आंखो छे ते महा पापरूप छे अने मांसनो लोचो छे अने जीवने मोह उपजावीने नरकमां नाखनारी छे. अने जे प्रत्यक्ष भगवाननी आंख छे ते तो जीवना अनंत पापने नाश करे एवी छे अने मनोहर छे अने कमळ सरखी छे अने कामणगारी छे अने कटाक्ष मात्रे करीने जीवने ब्रह्मरूप करे एवी छे. एम शुकदेवजी सरखे प्रत्यक्ष भगवाननी आंखोनुं अतिशय प्रीतिए करीने वर्णन कर्युं छे अने ते ज प्रमाणे जीवोनां सर्वे अंगनो निषेध करीने पछी प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिकनी मूर्तिनां सर्वे अंगनुं हेते करीने महा सुख पामवाने अर्थे माहात्म्ये सहित वर्णन कर्युं के अने ते प्रत्यक्ष भगवाननी लीला अने तेनां सर्वे चरित्र अने तेनी सर्वे क्रिया अने तेनुं सर्वे बोलवुं, तेनुं बेसवुं, तेनुं खावुं, तेनुं जोवुं, तेनुं रमवुं अने तेनी शुभ क्रिया, अशुभ क्रिया आदिक जे जे प्रत्यक्ष भगवाने कर्युं ते सर्वे माहात्म्ये सहित गान कर्युं छे अने ते प्रत्यक्ष

भगवाननी लीला, चरित्र अने गाने करीने अनंत जीवोनां कल्याण थयां छे. माटे एवा जे भगवान तेनो आकार अने बीजा जीवोना आकार तेमां तो घणा ज भेद छे अने ते बेयने जे सरखा जाणे छे ते तो महा पापी छे अने तेने मूर्ख जाणवा अने जे भगवाननो आकार अने बीजा आकारने सरखा कहेतो होय तेने तो दुष्ट अने महा असुर जाणीने तेना संगनो त्याग करवो. केमके एम समजनारा सर्वे नरकमां जाय छे.

माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण इच्छवुं होय तेने एम समजवुं जे जीव, ईश्वरना शरीरना आकार जे पिंड, ब्रह्मांड तेनो निषेध करीने तेनो अभाव करीने ते थकी वैरागने पामीने तेनी वासनानो त्याग करीने, पोते शुद्ध आत्मा ब्रह्मरूप थईने पछी ए ब्रह्मना आधार अने ब्रह्मना प्रकाशक एवा जे प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिक जे पोताने मळ्या होय ते मूर्तिने विषे सर्वे प्रकारे नवधा भक्तिए करीने जोडाई जवुं अने तेनां चरित्र अने तेनी लीला तेनुं निरंतर हालतां, चालतां, खातां, पीतां, सर्वे क्रियाने विषे गान करवुं अने तेनुं चिंत्वन करवुं तेनुं नाम विज्ञान कहेवाय छे अने ते आत्मानो मोक्ष थाय छे. अने एज जीवना कल्याणनो अचळ सिद्धांत छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत १९५ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत १९६ विषय :—ध्यान करवानो समय.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ ना श्रावण सुदि १५ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये व्यास सदाराम सुखलालने घेर आथमणें बारना ओरडानी ख्वेशमां गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगने विषे पुष्पना आभूषण शोभी रह्यां हतां.

कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने जमणा हाथने कांडे हीरनी राखडीओ वांधी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने वेठी हती.

प्रश्नः–पछी संध्या आरती थया केडे भक्त पटेल मथुरभाई काळीदासे महाराजने हाथ जोडीने प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! अमारे तमारी मूर्तिनुं ध्यान करवुं होय तेनो कोई देशकाळ हशे जे आवे समये ध्यान करीए तो ध्यान सुखे थाय अने आवे समये ध्यान थाय नहीं? के ज्यारे ध्यान करीए त्यारे थाय; समयनो कांई मळे नहीं, तेनुं केम हशे? ते कहो."

पछी महाराज वाल्यो जे "ज्यारे भगवाननो भक्त प्रथम ध्यान करवा वेसे छे त्यारे अंतःकरणमां संकल्प–विकल्प थाय छे अने ध्याननुं सुख वरावर आवतुं नथी, तोपण जो एमने एम श्रद्धा राखीने ध्याननो अभ्यास थोडो थोडो नित्य घडी–घडी वच्चे घडी करवा मांडे तो तेने संकल्प–विकल्प टळी जाय छे. पछी तेने सुखेथी ध्यान थाय छे अने तेने ध्यानमां अतिशय सुख अने आनंद आवे छे. अने प्रथम ध्यान करतां संकल्प–विकल्प थाय अने ध्यानमां सुख आवे नहीं त्यारे कायर थईने ध्यानने पडयुं मूकी दे अने एम समजे जे 'आपणे तो ध्यान थाय नहीं,' तो तेने ध्यान कोई दहाडे थतुं नथी.

माटे जेने भगवाननुं ध्यान करीने निर्वासनिक थईने भगवानना एकांतिक भक्त थवुं होय तेने तो श्रद्धा राखीने पोताने मळ्या जे भगवान तेनी मूर्तिने संभारीने तेनुं नित्य ध्यान करवुं अने ध्यान करतां संकल्प थाय तो तेने विचार करीने संकल्पने टाळतां जवुं अने ध्यान कर्या करवुं. पण संकल्प थाय त्यारे कायर थईने ध्याननो त्याग करवो

नहीं अने श्रद्धा राखीने ध्यान तो कर्या करवुं. एवी रीते श्रद्धाये सहित प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनां ध्याननो अभ्यास करे छे तो तेना उपर भगवाननी कृपा थाय छे.

—अने भगवाननी कृपा थाय छे त्यारे तेने संकल्प मात्र टळीने निर्विकल्प स्थिति थाय छे अने त्यारे तेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय छे. पछी तेने वगर कर्युं अखंड भगवाननुं ध्यान थया करे छे अने तेने पंचविषयनी वासना टळी जाय छे. अने तेज भक्त भगवानना अक्षरधामने पामे छे. माटे प्रगट भगवाननुं ध्यान करवुं तेमां समयनो कोई मेळ नहीं, ए तो ज्यारे निवृत्ति आवे त्यारे एकांतमां बेसीने जेवी भगवाननी मूर्ति दीठी होय ते मूर्तिने अंतरमां संभारीने अंगोअंगनुं ध्यान करवुं.

अने ध्यान पण कोने थाय छे? तो जेने प्रगट भगवान मळे छे तेने ज ध्यान थाय छे, पण भगवान प्रगट मळ्या विना कोईने भगवाननुं ध्यान थतुं ज नथी, केमके जे वस्तु दीठी न होय ते वस्तु ध्यानमां शी रीते आवे? न ज आवे. अने वस्तु दीठी होय ते वस्तु सहेजमां ध्यानमां आवे छे. माटे जेने प्रगट भगवाननो संबंध थाय छे ते ध्यान करे तो सुखथी ध्यान थाय छे. माटे आ समये तमारे ध्यान करवानो समय आव्यो छे ते तमारा भाग्यनो पार नथी."

इति श्रीमुखसिद्धांत १९६ समाप्त ॥



श्रीमुखसिद्धांत १९७ विषयः—भगवानना धामना सुखनो प्रत्यक्ष अनुभव

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ ना श्रावण वदि ४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये व्यास सदाराम सुखलालने घेर आथमणा बारना ओरडानी रवेशमां गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो.अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी भक्त बारोट बेचर लक्ष्मीदासे प्रश्न पूछयो जे हे "महाराज! भगवानना धामना सुखनो प्रत्यक्ष अनुभव केम थाय जे भगवानना धाममां आवुं सुख छे? ते कहो." पछी महाराज बोल्या जे "तेनो एम अनुभव थाय छे जे भगवानना धाम संबंधी सुख छे ते समजणे करीने जाणवामां आवे छे. ते समजण एम छे जे भगवानना धामनुं सुख चार प्रकारे करीने पमाय छे. ते चार प्रकार पूरा सिद्ध थाय छे त्यारे अक्षरधामनुं सुख संपूर्ण छते देहे प्रत्यक्ष अनुभवमां आवे छे अने ए चार प्रकारमां जेटलुं अधुरुं होय तेटलुं तेने सुखमां फेर रहे छे.

हवे ते चार प्रकार कया? तो एक धर्म, बीजुं ज्ञान, त्रीजो वैराग अने चोथी भक्ति; ए चार साधन सिद्ध थाय छे त्यारे तेने भगवानना अक्षरधामनुं सुख साक्षात्कार दृष्टिमां आवे छे. अने ते सुखने पामीने ब्रह्मरूप महामुक्त थाय छे. अने तेने पछी चौद लोकनां जे पंचविषयनां सुख ते काग-विष्टा तुल्य थई जाय छे. हवे धर्मे करीने भगवानना धामनो अनुभव थाय छे तेने कहीए छीए जे धर्म ते शुं? तो निर्लोभ, निष्काम, निःस्वाद, निःस्नेह अने निर्मान ए पांच गुणने धर्म कहेवाय छे. अने

ए पांच गुणरूप धर्म जेने विषे होय तेने आलोकमां स्थूळदेहे करीने अखंड सुख वर्ते छे पण तेने कोई दहाडे दुःख आवतुं नथी अने पांचे गुणमांथी एके गुण ओछो होय तेटलुं तेने दुःख रहे छे.

जेम एक पोताना हक महेनतनुं द्रव्य होय तथा पोताना वतननुं द्रव्य होय, ते द्रव्यने खर्चे वापरे तेमां जेवुं निर्भयपणुं रहे छे अने शांति अने सुख रहे छे अने एक निर्लोभरूप गुणनो त्याग करीने कोईकनुं चोरीने द्रव्य लई आवे तो तेने केटलो भय लागे छे? अने अंतःकरणमां तेने परिताप थाय छे. अने चोरी कोईकना जाणवामां आवे तो तेनुं घर लुंटी ले छे अने तेने पांचमोडिया बांधीने हेडमां पूरीने मार मारे छे अने ते महा दुःखने पामे छे अने अधर्मे करीने आलोकमां जे दुःख पाम्यो ते जीव परलोकमां पण जमपुरी, चोराशी, गर्भवासादिकनां महा दुःख पामे छे.

अने तेम ज वेदनी शाखे करीने, परणीने स्त्री घरमां राखे अने स्त्री होय ते पण कुळने घटित प्रमाणे परणिने पुरुष करे तो ते स्त्री-पुरुष बेने निर्भयपणुं रहे छे अने तेने अंतरमां पण निःशंकपणुं रहे छे अने तेनी कोई दहाडे फजेती पण थती नथी अने तेने कोई दहाडे दंड पण भरवो पडतो नथी अने ते आलोकमां महा सुखने पामे छे. अने जे पुरुष परस्त्रीनो संग करे छे तथा जे स्त्री परपुरुषनो संग करे छे तेने अनंत प्रकारना भय अने फडक राखवी पडे छे अने महा दुःखने पामे अने स्त्रीनां सगां संबंधीने ते वात जाणवामां आवे तो ते पुरुषनुं माथुं वाढे अने स्त्रीनुं नाक कापे अने राजाने खबर पडे तो तेनुं घर लुंटी ले अने जगतमां पण तेनी फजेती थाय छे अने ते व्यभिचारी स्त्री-पुरुष बे आलोकमां महा दुःखने पामे छे अने मरीने घोर नरकमां पडे छे अने महा हेरान थाय छे.

अने तेम ज जे स्वाद छे ते पोताना कुळने घटित प्रमाणे खपतुं

होय तेना घरनुं खाय तथा जे वस्तु खपती होय ते खाय तथा अभक्षवस्तु तथा केफी वस्तुनो त्याग करे तो तेमां तेने निर्भयपणुं रहे छे अने ते महा सुखने पामे छे अने जेनुं खपतुं न होय तेना घरनुं अन्न खाय तथा मद्य, मांस आदिक अभक्ष्य वस्तु खाय तो तेने अनंत प्रकारना भय प्राप्त थाय छे अने तेने नात बहार मूके छे अने दारु, माटी अने केफादिके करीने बेशुद्ध थईने बुद्धि भ्रष्ट थई जाय छे अने तेने घरनां मनुष्य पण तिरस्कार करे छे अने ते आलोकमां महा दुःखने पामे छे अने मरीने कुंभीपाक नामे जे रौरव नरक तेमां पडे छे.

माटे अधर्मनो त्याग करीने जे धर्ममां दृढपणें रहीने परमेश्वरनी आज्ञामां वर्ते छे ते आलोकमां पण महा सुखने पामे छे अने परलोकमां जईने पण सुखने पामे छे माटे धर्मे करीने जे आलोकमां सुख थाय छे ते पण भगवानना धामना ज सुखनो अनुभव छे.

अने बीजो ज्ञाने करीने भगवानना धामना सुखनो अनुभव थाय छे ते जे मनुष्य देह-आत्मानो विवेक करीने देहने मिथ्या अने नाशवंत जाणीने ते देहथी नोखो अने शुद्ध चैतन्य अखंड अविनाशी एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानीने पंचविषय थकी असंगपणें वर्ते छे कहेतां आत्मारूप थईने मायिक पंचविषयनो त्याग करे छे तेने महा सुख अने शांति वर्ते छे अने देह संबंधी त्रण प्रकारना ताप जे अध्यात्म, अधिभूत अने अधिदैवादिकना जे महा दुःख ते मटी जाय छे.

जेम राम लक्ष्मणने रावण साथे युद्ध करतां शरीरमां बाण लाग्यां हतां तेने करीने मूर्छा थई गई हती, पछी हनुमानजीए विशलकरणी औषधी लावीने पाई एटले शरीरमां जेटलां शल्य लाग्यां हतां ते सर्वे एनी मेळे बहार नीसरी गयां अने मूर्छा मटी गई, तेम जे देहने पोतानुं

रूप मानीने पंचविषयने भोगववाने विषे आसक्ति करे छे तेने काम, लोभादिकरूपी जे शत्रु ते शब्द, स्पर्श, रूप, रसादिकरूपी जे बाण ते मारे छे. पछी ते विषयना बाणरूपी शल्ये करीने अचेत थईने मोक्षना मार्ग थकी पडी जाय छे. पछी तेने विशलकरणी औषधीरूप आत्माना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे त्यारे तेने विषयनी आसक्तिरूपी जे बाणना शल्य ते सर्वे नीसरी जाय छे अने तेने परम सुख शान्ति थाय छे.

जेम कोईकनो दीकरो परदेशमां गयो होय अने तेने एक ज दीकरो होय, पछी तेने कोईक आवीने एम कहे जे 'तमारो दीकरो मरी गयो,' त्यारे तेने महा दुःख थवा लागे अने तेने सुखनो तो लेश रहे नहीं अने अतिशय कल्पांतने करतो होय. पछी ते वखतमां तेना दीकराना हाथनो कागळ लईने तेनी पासेथी मनुष्य आवीने ते कागळ आपे अने ते एम कहे जे 'तमारो दीकरो हेमक्षेम छे अने आजथी त्रीजे दहाडे तमारे घेर आवशे.' एम समाचार आप्या तेनी घडीए तेने दुःख मात्र टळी गयुं अने तेने दीकराना मरणनी मिथ्या भ्रांतिनुं महा दुःख हतु ते टळीने परम शांति थाय छे.

तेम जे देहने पोतानुं रूप मानीने पंचविषयमां आसक्त थाय छे ते जीव जे ते अध्यात्मादिक त्रण प्रकारना तापमां महा संतापने पामे छे. पछी तेने पोताना आत्माना साचा सगा अने आत्माने समिपे रहेनारा एवा जे प्रत्यक्ष भगवान अने ते भगवानना निर्वासनिक विषयना त्यागी संत ते जीवने मळे अने ते आत्माना स्वरूपनुं ज्ञान करावे त्यारे तेने देह संबंधी जे आध्यात्मादिक त्रिविधिना तापनां जे महा दुःख ते सर्वे मटी जाय छे अने ते आत्मा परम सुख शांतिने पामे छे. ते एवी रीते ज्ञाने करीने जे जीवने सुख थाय छे ते पण भगवानना धामना सुखनो ज अनुभव छे.

अने त्रीजुं वैरागे करीने भगवानना धामनां सुखनो अनुभव थाय छे. ते केवी रीते वैरागे करीने सुखनो अनुभव थाय छे? तो जेने सत्पुरुषना मुख थकी चार प्रकारना प्रलयनो विचार सांभळीने पिंड, ब्रह्मांडादिकने नाशवंत अने स्वप्नवत् जाणीने ते थकी वैरागने पामीने भगवानने विषे प्रीति थाय छे त्यारे ते आत्मा महासुखने पामे छे अने तेने विषयने विषे राग जे प्रीति ते टळी जाय छे अने विषयने विषे रागे करीने जे मननुं अस्थिरपणुं हतुं ते वैरागे करीने मन स्थिर थाय अने ते वैरागवानने ब्रह्मानुभव सुखनो अनुभव थाय अने तेने जगतने विषे महा दुःख मान-अपमान अने हाण्य-वृद्धादिकने विषे समभाव थई जाय छे अने हरख-शोकातीत थईने महा मुक्त दशाने पामे छे. एवी रीते वैरागने पामे छे तेने एक भगवाननी मूर्तिनुं ज चिंतवन थाय छे अने अद्‌भूत सुखने पामे छे. माटे ए वैरागे करीने जे आलोकमां छते देहे सुख थाय छे ते भगवानना धामना सुखनो ज अनुभव थाय छे. अने आलोकमां देह छतां ज वैरागवानने दुःख मात्र टळी जाय छे.

अने चोथुं भगवाननी भक्तिए करीने भगवानना धामना सुखनो अनुभव थाय छे. ते भगवाननी भक्ति केवी छे? तो जीवने अनंत जन्मना पाप होय तेने तत्काळ बाळीने भस्म करीने जीवने शुद्ध ब्रह्मरूप करे एवी छे. ते भक्ति ते शुं? तो सर्वकारण अने सर्वाधार अने दिव्य मूर्तिमान अने सर्व सुखनां सिंधु अने क्षर, अक्षरथी पर एवा जे अक्षरातीत भगवान ते भगवान जीवोना कल्याण करवाने अर्थे कृपा करीने पृथ्वी उपर मनुष्यनुं स्वरूप धारण करे छे. ते प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपने विषे माहात्म्य ज्ञाने सहित प्रीतिए करीने जोडाई जवुं तेनुं नाम भक्ति छे. अने एवी रीतनी भक्तिए करीने तो एवुं सुख प्राप्त थाय छे जे ते सुख मन, वाणीना कह्यामां आवतुं नथी. केमके जे प्रत्यक्ष

भगवानना स्वरूपमां जोडाय छे तेने तो जेटलुं भगवानना धाममां सुख छे ते सर्वे सुख ते भक्तने प्राप्त थाय छे.

जेम कोई चक्रवर्ती राजा होय ते राजाने घेर दीकरो आव्यो ते दीकरो राजाना सर्व सुखने पामे छे तेम भगवानने विषे प्रीतिए करीने जे आत्मा जोडाई जाय छे तेने पण जेटलुं भगवानना धामनुं सुख छे ते सर्वे सुख ते भक्तने प्राप्त थाय छे केमके धर्म, ज्ञान, वैरागे करीने मायिक एवां जे सुखःदुख तेनो त्याग करीने ब्रह्मरूप थाय छे तेने पछी भक्ति प्राप्त थाय छे. अने भक्तिए करीने भगवानने विषे जोडाय छे त्यारे भगवान पण ते भक्तना उरमां निवास करीने रहे छे. माटे जेने विषे भगवान निवास करीने रहे छे तेनुं सुख तो कह्यामां आवे एवुं नथी एवुं अपरिमित सुख छे अने अविनाशी सुख छे. अने ए भगवानना सुखनी आगळ तो मोटा मोटा देवतानां सुख तेने पण नरक जेवां कह्यां छे अने ते भगवानना सुखने कोई उपमा देवाय एम नथी.

माटे धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति ए चार साधन सिद्ध करीने जे भक्त भगवानने विषे जोडाई जाय छे ते भक्तने छते देहे भगवानना धामना सुखनो प्रत्यक्ष अनुभव साक्षात्कार थाय छे अने तेने दुःखनी तो गंध रहेती नथी अने तेने आठे पहोर अने बत्रीस घडी सुखना फुवारा छूटया करे छे.

अने जेने भगवानना धामना सुखनो अनुभव थाय छे तेनुं ए लक्षण छे जे तेने भगवाननी भक्ति विना बीजा मायिक पंचविषयना सुख मात्र ते तेने खारां झेर जेवां थई जाय छे अने तेने भगवाननी मूर्ति विना बीजा कोई सुख पामवानी इच्छा रहेती नथी. माटे एवी

जे भक्त छे तेने भगवानना धामनां सुखनो प्रत्यक्ष अनुभव थाय छे. अने ते अनुभव क्यारे थाय छे? तो जेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संत मळे छे अने ते प्रत्यक्ष भगवान अने संतनो दृढ आश्रय करे छे तेने ज ए सुखनो प्रत्यक्ष अनुभव थाय छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत १९७ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत १९८ विषय :-भगवानना जन्म दिवसे उपवास करवानुं कारण

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२२ना श्रावण वदि ८ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री सोजीत्रा मध्ये बारोट भक्त वेचरदास लक्ष्मीदासने घेर उगमणा बारना ओरडानी आगळ पुष्पनो मंडप करीने तेमां गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. नीला किनखाबनो सुरवाल धारण कर्यो हतो अने जरियानी लपेटाना किनखाबनी डगली धारण करी हती. रेशमी गुढो रेटो पहेर्यो हतो अने ते उपर कसुंबल शेलुं केडे धारण कर्युं हतुं. एक जरियानी शेलुं खभे नाख्युं हतुं अने मस्तक उपर कसुंबल सोनेरी पाघ धारण करी हती अने सर्वे अंगने विषे मोगराना पुष्पनां आभूषण शोभी रह्यां हतां. ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः-पछी व्यास इच्छाराम सुखलाले प्रश्न पूछ्यो जे "हे महाराज! जे दिवस भगवाननो जन्म थाय ते दिवस तो सर्वेने अतिशय आनंद थवो जोईए अने आ तो सामु ते दिवस तो उलटो उपवास करवो पडे छे, तेनुं केम हशे?"

पछी महाराज बोल्या "जे तेनुं तो एम छे जे जगतना जीवो सर्वे पंचविषयमां ज रच्यां पच्यां रह्यां छे अने पंचविषय छे ते ब्रह्मसुख पामवामां अंतरायना करनारां छे माटे ते जीवोने ब्रह्मसुखने पमाडवा सारु भगवान प्रगट थाय छे. पछी भगवान प्रगट थया ते ज दिवस पंचविषयनो त्याग करावीने ब्रह्मसुख लेवरावे छे. माटे रसना इन्द्रियनो विषय जे रस तेनो त्याग करावीने ते रसना इन्द्रिये करीने प्रगट भगवानना जन्म, कर्म, चरित्र अने लीला तेनुं गान करवुं ते रूप रसनाए करीने ब्रह्मसुख लेवडावे छे. अने तेवी ज रीते इन्द्रियना विषय जे मायामांथी थया जे स्त्री आदिकना आकार मात्र तेने जोवानो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत तेनां दर्शन करवां, ते रूपी आंखे करीने ब्रह्मसुख लेवुं. अने काने करीने जगतना विषयादिकना शब्द सांभळवानो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवाननी कथा वार्ता, गुण, चरित्र अने लीला तेनुं श्रवण करवा रूप ब्रह्मसुख लेवुं. अने त्वचा इन्द्रिये करीने मायिक स्पर्शनो त्याग करीने भगवानना चर्णनो स्पर्श करवो ते रूपी ब्रह्मसुख लेवुं. अने नासिकाए करीने मायिक गंध विषयनो त्याग करीने भगवाननी प्रसादी, पुष्पना हार, चंदनादिकनी सुगंध लेवी ते रूपी ब्रह्मसुख लेवुं. अने मने करीने विषय भोगववाना संकल्पनो त्याग करीने भगवाननी नवधा भक्ति करवाना संकल्प करवा, ते रूपी ब्रह्मसुख लेवुं. अने चित्ते करीने विषय भोगववानां चिंतवननो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनां अंगो अंगनुं चिंतवन करवुं ते रूपी ब्रह्मसुख लेवुं. अने अहंकारे करीने देह अने देह संबंधी पदार्थनो अहंकार छे तेनो त्याग करीने भगवानना दासत्वपणांनुं अभिमान धरवुं जे 'हुं भगवाननो दास छुं' ते रूपी ब्रह्मसुख लेवुं. अने बुद्धिए करीने मायिक पदार्थनी निश्चयनो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय करवो ते रूपी ब्रह्म-

सुख लेवुं. अने हाथे करीने विषयनी क्रियानो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा करवी ते रूपी ब्रह्मसुख लेवुं. एवी रीते भगवानना जन्म दिवसने विषे दुःखरूप, पापरूप अने ब्रह्मसुखने विषे अंतरायना करनारा एवा जे मायिक पंचविषय तेनो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूप संबंधी ब्रह्मसुख लेवुं. अने इन्द्रियो अंतःकरण मायिक पंचविषयने पामवानी क्रियामां ज्यां सुधी प्रवर्ते छे त्यां सुधी तेने ब्रह्मसुख प्राप्त थतुं ज नथी अने ज्यारे मायिक विषयना सुख पामवानी क्रियानो इन्द्रियो अंतःकरण त्याग करे छे त्यारे ज तेने ब्रह्म जे परमात्मा भगवान तेनुं सुख प्राप्त थाय छे.

माटे भगवाननुं प्रगटपणुं जे दिवसथी थयुं होय ते दिवसथी ज इन्द्रियो अंतःकरणना मायिक विषयनो त्याग करावीने ते इन्द्रियो अंतःकरणने भगवानना स्वरूपमां जोडी देवा. अने एवी रीते विषयनो त्याग करीने भगवानना स्वरूपमां जोडाय छे तेने ज ब्रह्मसुख प्राप्त थाय छे अने जे विषयनो त्याग कर्या विना भगवाननी भक्ति करे छे तेने ब्रह्मसुख कोई काळे पमातुं नथी. माटे पंचविषयनो त्याग करावीने जीवने ब्रह्मसुख पमाडवा सारुं मोटा पुरुषे भगवानना जन्म दिवस तथा एकादशीना उपवास तथा चांद्रायणव्रत करवां तथा धारणां-पारणां आदिक व्रत कर्यां छे. ते सारु जेने ब्रह्मसुखने पामवुं होय तेने भगवानना जन्म दिवसना उपवास तथा एकादशी आदिक व्रतना उपवास ते जरूर करवा अने ते दिवस विषयनी क्रियानो त्याग करीने भगवाननी श्रवण, कीर्तनादिक नवधा भक्ति करवी एज जीवना मोक्षनो अचळ सिद्धांत छे. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत १९८ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत १९९ विषय :–चिदाकाशमांथी इन्द्रियो अंतःकरण आदिकनी उत्पत्ति

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२२ ना भादरवा सुदि ५ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये वारोट भक्त वेचरदास लक्ष्मीदासने घेर उगमणें चार ओरडानी रवेशमां गादीतकिया विछावेला पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने वेठी हती.

प्रश्न :–पछी महाराज वोल्या जे "आकाशमां ते कांई भेद हशे के अभेद छे?" पछी अक्षरामुक्तानंद स्वामीए कह्युं के "आकाश वस्तुगते तो अभेद छे पण स्थानकने भेदे करीने चार प्रकारना भेद कहेवाय छे. ते चार भेद कया? तो एक मूळ अनादि सत्य अने अखंड चिदाकाश छे अने ते चिदाकाश थकी महदाकाश थयो छे अने महदाकाश थकी मठाकाश थयो छे अने मठाकाश थकी घटाकाश थयो छे. एवी रीते आकाशमां भेद पड्या छे."

पछी महाराज वोल्या जे "ए आकाशना भेद शेने करीने पड्या छे? तो जे अनादि एक चिदाकाश छे तेने विषे चिदाकाशरूप एवा जे आत्मा ते अनंत रह्या छे अने ते आत्माओने विषे कारणपणें वासना-रूप सूक्ष्मरूपे आकाश रह्यो छे, ते आकाशनुं नाम महदाकाश कहेवाय छे. अने ते वासनारूप महदाकाश थकी चार अंतःकरण अने पांच विषय थया छे. ते अंतःकरणनां नाम–मन, बुद्धि, चित्त अने अहंकार. अने पांच विषयनां नाम–शव्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए पांच विषय.

तेमां शब्द थकी आकाश उत्पन्न थयो छे. ते आकाशनुं नाम मठाकाश कहेवाय छे अने ते आकाश त्रिगुणात्मक छे. ते गुणनां नाम–रजोगुण, तमोगुण अने सत्त्वगुण. तेमां तमोगुणरूप तो पोते मठाकाश छे अने तेमां एक एक गुणमां त्रण त्रण रह्या छे.

ते तमोगुणमां जे सत्त्वगुणनो भाग छे ते थकी श्रोत्र इन्द्रिय थई छे अने जे तेमां रजोगुणनो भाग छे ते थकी वाक् इन्द्रिय थई छे. अने जे स्पर्श विषय छे ते थकी वायु थयो छे ते वायु पोते तमोगुणरूप छे अने तेमां जे सत्त्वगुणनो भाग छे ते थकी त्वचा इन्द्रिय थई छे अने तेमां जे रजोगुणनो भाग छे ते थकी हस्त इन्द्रिय थई छे. अने जे रूप विषय छे ते थकी तेज थयुं छे अने तेमां जे सत्त्वगुणनो भाग छे ते थकी चक्षु इन्द्रिय थई छे अने तेमां रजोगुण छे ते थकी पाद् इन्द्रिय थई छे. अने रस विषय छे ते थकी जळ थयुं छे अने तेमां सत्त्वगुणनो भाग छे ते थकी रसना इन्द्रिय थई छे अने तेना रज अंश थकी शिश्न इन्द्रिय थई छे. अने जे गंध विषय छे ते थकी पृथ्वी थई छे अने तेमां सत्त्वनो भाग छे ते थकी नासिका इन्द्रिय थई छे अने पृथ्वीना रज अंश थकी गुदा इन्द्रिय थई छे.

एवी रीते पंचविषय थकी पांचभूत थया छे अने पांचभूत थकी दश इन्द्रियो थई छे. ते इन्द्रियो, भूत अने विषय ते सर्व मळीने वीस तत्त्व थयां अने चार अंतःकरण छे एटले चोवीस तत्त्व थयां छे. अने ते चोवीस तत्त्व मळीने ते थकी ब्रह्मांड थयुं छे अने ते ब्रह्मांड थकी पिंड थया छे. एवी रीते पिंड अने ब्रह्मांडनी उत्पत्ति थई छे.

ते पिंड, ब्रह्मांडरूप जे माया तेणे चिदाकाशरूप जे आत्मा तेने आच्छादन करी राख्यो छे. ते आच्छादनेकरीने पोतानुं स्वरूप जे आत्मा

अने आत्माना प्रकाशक एवा जे परमात्मा भगवान तेने भूलीने ते आत्मा जे ते जेवा जेवा देहनुं धारण करे छे तेने तेटलुं वळ होय छे, कहेतां जेटलो आकाशनो अवकाश जे देहने विषे होय छे तेटली तेने विषे गुरुत्वाकर्षण शक्ति आवे छे. ते आत्मा कीडीना देहनुं धारण करे छे त्यारे तेने आकाश थोडो होय छे तो ते आत्माने कीडीनो देह उपाडी शके एटली शक्ति होय छे अने ते कीडीनो आत्मा छे ते कीडीना देहनो त्याग करीने ते नो ते आत्मा हाथीना देहनुं धारण करे तो तेने विषे आकाश घणो होय छे अने ते आत्मा हाथीनो देह उपाडीने चाले तथा तेथी बीजो पण वीस पचीस मण भार उपाडीने चाले एटली तेने विषे आकर्षण शक्तिरूप आकाश होय छे. अने आत्मा तो ते नो ते होय पण कीडीना देहमां होय त्यारे एक पासेर भार पण उपाडी शके नहीं अने ते नो ते आत्मा जो विराट देहनुं धारण करे तो तेने विषे चौद लोकनुं ब्रह्मांड उपाडीने चाले एटलो आकर्षण शक्तिरूप आकाश आवे छे. अने ते आत्मा जो मूळ प्रकृतिपुरुषना देहनुं धारण करे तो ते एक आत्मा कोटि ब्रह्मांडने तोली राखे एटलो तेने विषे गुरुत्वाकर्षण शक्तिरूप आकाश आवे छे.

अने ते नो ते आत्मा जो मनुष्यदेहनुं धारण करीने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो आश्रय करीने ते थकी आत्यंतिक ज्ञानने पामे तो ते आत्मा अक्षरब्रह्मरूप थाय छे. ते अक्षरब्रह्म केवुं छे ? तो कोटी ब्रह्मांडनो आधार एवो जे मूळ प्रकृतिपुरुष छे ते एवा अनंत कोटी प्रकृतिपुरुष ते अक्षरना को'क देशने विषे लीन थई जाय छे कहेतां अनंतकोटी मूळपुरुष ते अक्षरब्रह्मनी दृष्टिमां आवता नथी.

जेम दिवसने विषे अनंत कोटि तारा मंडळ दृष्टिमां आवता नथी

तथा जेम कोईक दस-वीस गाउ ऊँचो पर्वत होय तेना उपर चड्युं होय तो तेनी दृष्टिमां पृथ्वी उपरना मनुष्य, पशु, वृक्षादिक कांई आवे नहीं. तेम आत्यंतिक ज्ञानने पामीने अक्षरब्रह्मरूप थयो जे मुक्त तेने पिंड, ब्रह्मांडादिक मायानो आकार मात्र ते दृष्टिमां आवतो नथी अने तेने तो चिदाकाशरूप एवुं जे पोतानुं शुद्ध स्वरूप अक्षरब्रह्म ए एक दृष्टिमां आवे छे. ते एवी दृष्टि क्यारे थाय छे? तो ज्यारे इन्द्रियो अंतः-करणरूप मायानो भाव ज्ञाने करीने टळी जाय छे त्यारे ते निरावरणरूप ब्रह्मदृष्टिने पामे छे. अने जेने इन्द्रियो अंतःकरणनो भाव टळ्यो न होय तेने तो पिंड, ब्रह्मांडादिक मायानो विवेक रहे छे. केमके श्रोत्र इन्द्रिय छे तेने शब्दने विषे शुभ-अशुभनो विवेक रह्यो छे अने जो कान इन्द्रिय न होय तो तेने शब्दने विषे शुभ-अशुभनो विवेक होय नहीं, केमके शब्दने पेसवानुं द्वार नाश पामे छे त्यारे ते शब्दनुं सुखदुःख पण क्यांथी पेसे? न ज पेसे. अने ज्यारे शब्दनुं सुखदुःख नाश पाम्युं त्यारे तेने राग अने द्वेषरूपी जे जन्म–मृत्युनुं बीज ते पण टळी जाय छे, केमके जे पदार्थमां राग होय तो ते पदार्थमां रागे करीने जन्म धरवो पडे छे अने जे पदार्थ उपर द्वेष होय तो ते पदार्थने विषे द्वेषे करीने पण स्मृति रहे छे तो तेने विषे पण जन्म धरवो पडे छे. माटे जेने ज्ञाने करीने इन्द्रियोना भावरूपी विवेक टळी गयो होय तेने जन्म–मृत्यु टळी जाय छे. अने ज्यां सुधी देहने पोतानुं रूप मानीने इन्द्रियोना रागद्वेषादिकने विषे वर्ते छे अने तेने करीने सुखदुःखने पामे छे त्यां सुधी तेने पिंड, ब्रह्मांडादिक रूपी जगत भासे छे.

जेम कुवाने जळे करीने वाडी पीए छे त्यां सुधी ते वाडीमां क्यारा पाळा रूपी भासे छे अने ज्यारे वरसादने जळे करीने वाडी पीए छे अने सर्वे वाडीपाळामां समथळ जळ भराई जाय छे त्यारे ते वाडीमां

पछी क्यारापाळानो विवेक रहेतो नथी. तेम आत्मारूपी जे जळ छे ते अंतःकरण रूप कुवा द्वारे थईने इन्द्रियो रूप नीकोमां प्रवर्ते छे त्यारे तेने क्यारापाळा रूप पिंड, ब्रह्मांडादिक मायाना आकार ते दृष्टिमां आवे छे अने ज्यारे वरसाद् रूपी प्रत्यक्ष भगवानना ज्ञान रूपी जळ वरसे छे त्यारे तो तेनी इन्द्रियो रूपी नीको तथा पंचविषयने विषे सत्यता अने तेनी सत्यताए करीने जगतने विषे राग अने द्वेषादिक रूप जे क्यारा-पाळा ते सर्वे टळी जाय छे अने तेने चिदाकाशरूप जे पोतानुं ब्रह्म-स्वरूप अने ब्रह्मने विषे रह्या अने ब्रह्मना प्रकाशक एवा जे परब्रह्म ते दृष्टिमां रहे छे, पण आत्माने प्रत्यक्ष परमात्मा विना बीजुं कांई तेनी दृष्टिमां मायाकृत पिंड, ब्रह्मांडादिक कोई आकार रहेतो नथी. अने ते आत्मानी प्रत्यक्ष परमात्माना ध्याने करीने दिव्यमूर्ति बंधाय छे. ते मूर्तिने भागवती तनुं कहेवाय छे. अने ते आत्मा स्थूल देहनो त्याग करीने भगवानना धामने पामे छे, ते पाछो फेर जन्मने धरतो नथी. अने जेने एवुं ज्ञान थयुं न होय ते आत्मा जन्म–मरणने पामे छे.

माटे जे प्रत्यक्ष परमात्माना अवतार रामकृष्णादिक भगवान अने तेना संत तेनो आश्रय करे छे तेने एवुं ज्ञान थाय छे अने ते आत्मानो मोक्ष थाय छे. माटे ते समो आज तमारे आव्यो छे ते तमारा भाग्यनो पार नथी." एम कहीने महाराजे वार्तानी समाप्ति करी पछी संत कीर्तन गावा लाग्या."

इति श्रीमुखसिद्धांत १९९ समाप्त।



श्रीमुखसिद्धांत २०० विषयः–वहारदृष्टि अने अंतरदृष्टि

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२२ ना भादरवा सुदि १० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये बारोट भक्त वहेचरदास लक्ष्मीदासने घेर उगमणां बार ओरडानी रवेशमां गादी-तकिये युक्त पलंग बिछाव्यो हतो ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना हार कंठमां शोभी रह्या हता. पाघमां पुष्पना तोरा लटकता धारण कर्या हता अने पुष्पना गुच्छ बे कान उपर शोभी रह्या हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराजनी संध्या आरती थया केडे महाराज बोल्या जे "सर्वे सुरत दईने सांभळो जे एक वार्ता करवी छे अने आजे वार्ता कहीशुं तेमां बे वात आवशे; एक वहारदृष्टि कहेवाशे अने ते वहारदृष्टिए करीने जणाशे जे पदार्थ ते कहेवाशे अने ते वहारदृष्टि अने वहारदृष्टिए करीने जणाशे जे पदार्थ तेनुं मिथ्यापणुं कहेवाशे. अने बीजी अंतरदृष्टि कहे-वाशे अने ते अंतरदृष्टिए करीने जणाशे जे पदार्थ ते पण कहेवाशे अने ते अंतरदृष्टि अने अंतरदृष्टिए करीने जणाशे जे पदार्थ तेनुं सत्यपणुं कहेवाशे अने अंतरदृष्टिए करीने जे निर्विकल्प स्थिति थाय छे ते कहेवाशे.

अने आ वात कहीशुं ते कोने समजाशे ? तो जे वात कहीशुं ते वात प्रमाणे पोताना मननी वृत्ति करतो जशे तेने ए वात समजाशे. ते वृत्तिने केवी रीते करवी ? तो आ अमारा हाथमां पुष्पना गुच्छ छे तेने एम कहीए जे आ गुच्छने जुवो त्यारे ते। गुच्छने जोवो अने तेमां वृत्तिने ठेरववी अने ते गुच्छ जेवो छे तेवो वृत्तिमां राखीने पछी कहीए जे 'आ बीजा हाथमां रूमाल छे ते जुवो' त्यारे तेने पण

सारी पेठे जोवो अने ते रूमालने पण वृत्तिमां राखवो. एवी रीते वृत्तिने विकास पमाडवी अने ते ते पदार्थने वृत्तिमां राखवा. एवी रीते जे जे वात करीए ते ते वातने वृत्तिमां राखशे तेने आ वात कहीशुं ते समजाशे अने तेने निर्विकल्प स्थिति थशे अने तेने महा अद्‌भूत आनंद थशे.

हवे ते वात कहीए ते सांभळो जे वहारदृष्टि ते शुं? तो आ देहने पोतानुं रूप मानीने स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देहे करीने जेटलुं जेटलुं ग्रहण करवामां आवे छे तेने सत्य मानीने तेने विषय वासनाए करीने भोगववानी जे इच्छा छे तेनुं नाम वहारदृष्टि छे. अने ते दृष्टि कल्पनामय मिथ्या दृष्टि छे तेमां स्थूळ देहे करीने तो जाडा पंचभूत जे पृथ्वी जळ, तेज, वायु अने आकाश ते दृष्टिमां आवे छे अने ते सूक्ष्म देहे करीने विराट, सूत्रात्मा अने अव्याकृतरूप जे सूक्ष्म पंचभूतात्मक जे समष्टि–सृष्टि ते जोवामां आवे छे अने कारण शरीरे करीने जगतनुं आदि बीजरूप एवो मूळ प्रकृतिपुरुष अने तेनो विस्तार ते सर्व दृष्टिमां आवे छे अने ते दृष्टि सर्वे कल्पना मय मिथ्या वहारदृष्टि छे अने ते वहारदृष्टिथी पर एवी अंतरदृष्टिरूप अक्षरब्रह्मदृष्टि छे अने ते अक्षरब्रह्मरूप जे अंतरदृष्टि ते त्रणे देहथी पर एवो जे आत्मा ते आत्माए करीने देखाय छे पण त्यां स्थूळ, सूक्ष्म अने कारणरूप जे मायानी वहारदृष्टि ते पहोंची शक्ति नथी.

जेम कोईक राजा होय अने तेने घेर सो बसो घोडा होय तेमां केटलाक घोडा तो मोटा जबरा मतवाला होय अने केटलाक तो घोडा साधारण होय अने केटलाक घोडा नाना टंकण होय. पछी राजाने गामनी भागोळे बाग बगीचे जवुं होय त्यारे नाना टंकण घोडा उपर चडीने जाय छे अने पांच गाउ छेटे जेवुं होय त्यारे जे साधारण घोडो

होय ते उपर चडीने जाय छे अने ज्यारे कोईक शत्रु सामे लडाई करीने पोतानी जीत करवी होय त्यारे तो मोटा मतवाला घोडा होय ते उपर चडीने जाय छे अने पोतानी जीत करे छे पण ते राजाने देवलोकनुं राज लईने देवलोकनुं सुख पामवुं होय त्यारे तो त्यां त्रणे प्रकारना घोडानुं जोर चालतुं नथी अने त्यां तो त्रणे प्रकारना घोडानो त्याग करीने पोते पंडे जप, तप, यज्ञादिक साधन करे त्यारे देवादिकना लोकना सुखने पामे. जेम गजने झूडे ग्रह्यो हतो त्यारे ते गजने मुकाववाने अर्थे भगवान गरुड उपर चडीने चाल्या पण पोते गरुड पूगी शक्यो नहीं अने गजने झूडे बुडाववा मांडयो पछी भगवाने गरुडनो त्याग करीने पगपाळा दोडया अने गजने मूकाव्यो.

तेम ए तो दृष्टांत अने तेनुं सिद्धांत ए छे जे आत्माने त्रण प्रकारना घोडारूप त्रण देह छे. ते आत्मा जे ते बहारदृष्टिए करीने टंकण घोडारूप इन्द्रियो उपर अस्वार थईने आलोकनां पदार्थने जाणी ले छे अने साधारण घोडारूप अंतःकरण उपर स्वार थईने मूळ मायानुं जे अनंत कोटि ब्रह्मांड तेने जाणी ले छे. अने जाणवारूप जे कारण देह ते रूप मतवाला घोडा ते उपर अस्वार थईने मूळ मायानुं कारण जे महा अंधकार त्यां सुधी प्रवेश करे छे, पण ते अंधकारथी पर एवो जे प्रकाश त्यां इन्द्रियो अंतःकरणादिक रूप जे घोडा तेनुं जोर चालतुं नथी. अने त्यां तो ते इन्द्रियो अंतःकरणादिक रूप जे घोडा तेनो त्याग करीने पोते पंडे आत्मा एकलो शुद्ध चैतन्यरूप थईने प्रत्यक्ष सद्गुरुनो आश्रय करीने ते थकी धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित भक्ति सिद्ध करे त्यारे प्रकाशने पामे छे अने तेनुं नाम अंतरदृष्टि कहेवाय छे अने ते दृष्टि सत्य छे अने सुखदाई छे. अने जे बहारदृष्टि छे ते असत्य अने दुःखदाई छे.

हवे जे जीव छे ते वहारदृष्टिने पण जाणतो नथी एवो जीव अनादिनो अज्ञानी छे. तेने सद्गुरुरूप प्रत्यक्ष परमात्मा ते अंतरदृष्टि अने वहारदृष्टिनुं ज्ञान करावे छे. तेमां प्रथम वहारदृष्टिने जणावीने आत्माने विकास पमाडे छे केमके अज्ञाने करीने आत्मा जे ते अतिशय संकोचने पामी गयो छे माटे ते वहारदृष्टिना ज्ञाने करीने विकासने पामे छे. पछी ते वहारदृष्टि रूप जे मिथ्यादृष्टि तेनो त्याग करावीने तेने विषे अक्षरब्रह्मरूप जे अंतरदृष्टि तेनो आरोपण करावे छे पछी ते अंतरदृष्टिए करीने आत्मानी दिव्यमूर्ति बंधाईने परमात्माना धामने पामे छे.

जेम धातुनी मूर्ति करवी होय त्यारे प्रथम मीणनुं पूतळुं करे छे अने ते उपर कचरो दाबे छे. पछी ते मीणने अग्निए तपावीने काढी नाखे छे अने ते पोला कचराना बीबामां धातुनो रस रेडे छे त्यारे तेनी मूर्ति थाय छे. तेम आत्माने ब्रह्मरूप करवाने अर्थे महात्मा पुरुष जे ते मीणरूप वहारदृष्टिए करीने आत्माने विकास पमाडे छे, पछी ते मीणरूप जे वहारदृष्टि तेनो त्याग करावीने ते आत्माने विषे जे जाणपणुं छे ते जाणपणांने विषे अंतरदृष्टिरूप जे ब्रह्मरस तेनो आरोप करावे छे, कहेतां तेने आत्मा-परमात्मानुं ज्ञान करावे छे. त्यारे ते आत्मानी ब्रह्ममय मूर्ति बंधाय छे.

हवे वहारदृष्टिने विकास पमाडे छे तेमां प्रथम पृथ्वीनुं ज्ञान करावे छे. जे प्रथम वन, पर्वत अने समुद्रे सहित एवी जे पचास करोड योजन पृथ्वी तेने शास्त्रना कह्या प्रमाणे जाणपणांमां जोवी. पछी तेमां वृत्तिने ठेरववी. पछी ते पृथ्वीने वृत्तिमां राखीने ते पृथ्वी करतां दश घणुं वधारे जळ छे, ते जळ पृथ्वीनी चारे बाजुए विंटायेलुं छे ते जळने जाणपणांमां जोवुं. अने जळ अने पृथ्वी ए बेने दृष्टिने ठेरवीने पछी

ते जळ थकी दश गणो अग्नि मोटो छे ते अग्नि जळने फरतो चारे बाजुए विंटायेलो छे. ते अग्निने जाणपणां रूप दृष्टिए करीने जोवो अने ते पृथ्वी, जळ अने अग्नि ए त्रणने वृत्तिमां राखवा अने पछी ते अग्नि थकी वधारे दश गणो वायु छे. ते वायु जे ते अग्निने फरतो चारे बाजुए विंटाएलो छे. ते वायुने जाणपणां रूप दृष्टिमां जोवो. अने पृथ्वी, जळ, अग्नि अने वायु ए चारे भूतने विषे वृत्तिने ठेरावीने पछी ते वायु थकी दश गणो वधारे आकाश छे. ते आकाश वायुने फरतो चारे बाजुए विंटायेलो छे, तेने जाणपणांरूप दृष्टिमां जोवो अने ते पांचे भूतने विषे वृत्तिने ठेरावीने पछी ते आकाश थकी वधारे दशगणो अहंकार छे तेने जाणपणांमां जोवो अने ते अहंकार थकी दशगणुं महत्तत्त्व वधारे छे, ते महत्तत्त्वने जाणपणांमां जोवुं. अने तेमां वृत्तिने ठेरावीने ते सर्वे पृथ्वी आदिकने वृत्तिमां राखीने पछी ते महत्तत्त्व थकी सहस्त्रगणो वधारे प्रधानपुरुष छे, ते प्रधानपुरुषने जाणपणांरूप दृष्टिए करीने जोवो. अने ते प्रधानपुरुष थकी अनंत गुणो वधारे मूळ-प्रकृतिपुरुष छे, ते प्रकृतिपुरुषने पण जाणपणांरूप दृष्टिए करीने जोवो. अने ते प्रकृति-पुरुष थकी पर अनंतकोटिगणुं वधारे अंधारुं छे. ते अंधारुं प्रकृति-पुरुषने फरतुं चारे बाजुए विंटायेलुं छे ते अंधाराने पण जाणपणांरूप दृष्टिए करीने जोवुं अने ते सर्वेने वृत्तिमां राखवुं अने तेमां वृत्तिने ठेराववी. एवी रीते पृथ्वी आदिक अष्टावरणरूप अनंतकोटि विश्व अने तेथी पर अंधकार तेने जाणपणांमां जोवुं अने ते सर्वेने वृत्तिमां राखवुं, तेनुं नाम वहारदृष्टि कहेवाय छे.

अने ए सर्वे वहारदृष्टिरूप अनंतकोटि विश्व अने तेथी पर अंधकार छे अने अंधकारथी पर एकलो प्रकाश छे अने ते प्रकाशने चिदाकाश कहे छे तथा तेने ब्रह्म कहे छे तथा अक्षरधाम कहे छे अने ते प्रकाशने

मध्ये प्रकाशना आधार एवा जे परब्रह्म परमात्मा भगवान ते रह्या छे अने ते परमात्मा दिव्य मूर्तिमान छे अने ते चिदाकाशरूप जे ब्रह्म अने ब्रह्मना आधार अने ब्रह्मना प्रकाशक एवा जे परब्रह्म तेने आत्माए करीने जोवा अने तेमां चिदाकाशरूप जे ब्रह्म तेने पोतानुं स्वरूप जाणवुं अने तेने विषे दिव्य मूर्तिमान परमात्मा अखंड रह्या छे. एवी रीते पोताना आत्माने विषे परमात्माने जाणीने ते परमात्माना स्वरूपने विषे पोताने दृढ स्थिति पामवुं अने ते ब्रह्म अने परब्रह्मने जे जोवा, तेनुं नाम अंतरदृष्टि कहेवाय छे.

अने ते जे अंतरदृष्टि छे ते सत्य छे अने ते दृष्टिए करीने जणाया जे ब्रह्म अने परब्रह्म ते पण सत्य छे अने अखंड छे अने अविनाशी छे अने बहारदृष्टिए करीने पिंड, ब्रह्माडादिक जे जे देखायुं ते सर्वे असत्य छे, नाशवंत छे अने मिथ्या भ्रांतिवत् छे.

जेम एक स्वप्नमां शहेर, बजार, आदिक अनंत पदार्थ देखाय ते सर्वे मिथ्या छे अने एक जाग्रतमां शहेर, बजारादिक जे जे पदार्थ देखाय ते सर्वे सत्य छे. तेम बहारदृष्टिए करीने जे जे पिंड, ब्रह्मांडादिक देखाय छे ते सर्वे स्वप्नवत् मिथ्या छे अने अंतरदृष्टिए करीने जे ब्रह्म अने परब्रह्म देखाय छे, ते जाग्रतनी पेठे सत्य छे.

जेम कोईक पुरुषने निद्रामां स्वप्न आव्युं होय ते स्वप्नसृष्टिनां अनंत पदार्थने एकलो देखतो होय अने ते पदार्थने लीधा-दीधाने व्यवहारे करीने स्वप्नमां बराडतो होय. पछी तेने बराडतो सांभळीने कोईक जागतो पुरुष होय ते सुतेला पुरुषने बावडे झालीने स्वप्नमांथी जगाडे त्यारे तेने स्वप्ननां पदार्थ सर्वे मिथ्या थई जाय छे अने तेने पछी जाग्रतनां पदार्थ देखाय छे अने ते पुरुष ज्यारे स्वप्नमां हतो त्यारे तेने

पोतानां घरनां पदार्थनी पण खबर रहेती नथी तथा पोतानुं गाम तथा पोतानी नात, जात, कुळ, कुटुंब इत्यादिक कोई लेशमात्र पण स्वप्नमां सांभळतुं नथी अने ते स्वप्न वखते तो तेने स्वप्ननां पदार्थ ते सत्य भासे छे.

तेम जीव जे ते मोहरूपी निद्राने विषे अज्ञानरूपी स्वप्ने करीने वहारदृष्टि वडे पिंड, ब्रह्मांडादिक जगतना मिथ्या पदार्थने देखे छे, पण तेने सत्य एवुं जे पोतानुं आत्मारूप अने आत्माना प्रकाशक एवा जे परमात्मा ते लेश मात्र तेने सांभळता नथी. अने अज्ञानरूपी स्वप्नने विषे स्वप्नदृष्टिरूप जगतना पदार्थना व्यवहारने विषे वराडवानी पेटे आसक्त थाय छे. पछी एवा बेभानी जीवोने जोईने सदाय जागता एवा जे परमात्मा भगवान ते कृपा करीने अज्ञानरूपी स्वप्नमांथी जीवने ज्ञान आपीने जगाडे छे त्यारे तेने मोहरूपी निद्रा टळी जाय छे. पछी ते पुरुष जे ते आत्मा अने परमात्माने साक्षात्कार देखे छे अने वहारदृष्टिए करीने स्वप्नवत् देखातुं हतुं जे जगत् ते सर्वे मिथ्या थई जाय छे.

ते एवुं ज्ञान क्यारे थाय छे? तो जेने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिकरूपे परमात्मा मळे छे अने कां ते प्रत्यक्ष परमात्मा थकी ज्ञान पामीने सिद्ध थया एवा जे निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी संत मळे अने ते प्रत्यक्ष परमात्मा अने तेना संतनो आश्रय जीव करे छे त्यारे तेने एवुं ज्ञान थाय छे. पछी एवा ज्ञानने पामीने जे मुक्त थयो ते मुक्त प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपने विषे नवधा भक्ति वडे करीने जोडाई जाय छे अने तेने आत्मा अने परमात्माने विषे दृढ स्थिति थाय छे. अने प्रथम वहारदृष्टिए करीने पृथ्वी जोई, पछी जळ जोयुं, पछी अग्नि जोयो, पछी वायु जोयो, पछी आकाश जोयो, पछी अंहकार जोयो, पछी महत्तत्व जोयुं, पछी प्रधान-

पुरुष जोयो, पछी अनंतकोटि ब्रह्मांडेयुक्त जे मूळ प्रकृतिपुरुष तेने जोयो, पछी तेथी पर जे अंधकार तेने जोयो, अने ते अंधकारथी पर एवो जे प्रकाश तेने जोयो, अने ते प्रकाशने मध्ये प्रकाशमान अने प्रकाशना आधार एवा जे परमात्मा परब्रह्म दिव्यमूर्ति तेने जोया.

पछी ते परमात्माने जोईने विचार करवा लाग्यो त्यारे तो तेने अंतरदृष्टि थई गई पछी जे अगम अने अतिशय पर अने अतिशय परोक्ष हतुं ते प्रत्यक्ष प्रकाशने विषे परमात्मानुं दर्शन थयुं. पछी ते परमात्मानुं दर्शन थतां वेंत त्यांथी एवो दाव लाग्यो ते बहारदृष्टि अने बहारदृष्टिए करीने देखातुं हतुं जे पृथ्वी, जळादिक सहित अनंतकोटि ब्रह्मांड अने तेथी अनंतकोटि गणो अंधकार ते सर्वे हडफ लईने जीवनी वृत्तिमांथी नीकळी जाय छे, कहेतां ते एम जाणे छे जे "कोई दिवस पिंड, ब्रह्मांडादिक अष्टावरणरूप माया हती ज नहीं." अने तेने पिंड, ब्रह्मांडादिक अतिशय परोक्ष थई जाय छे अने जे सर्वेथी पर प्रकाश हतो ते तो पोतानुं स्वरूप देखायुं, अने ते प्रकाशने मध्ये जे मूर्ति हती ते ज मूर्ति प्रत्यक्ष पोताने ज्ञानदाता रूपे देखाय छे एवी रीते जे परोक्ष हतुं ते प्रत्यक्ष थयुं अने प्रत्यक्ष हतुं ते परोक्ष थई गयुं.

जेम ऋतुने भेदे करीने शियाळो, उनाळो अने चोमासुं आवे छे. ते शियाळामां शितनुं प्रत्यक्षपणुं होय छे अने चोमासानुं अने उनाळानुं परोक्षपणुं होय छे. अने ज्यारे उनाळो आवे छे त्यारे तापनुं प्रत्यक्षपणुं होय छे अने शियाळानुं अने चोमासानुं परोक्षपणुं होय छे. अने ज्यारे चोमासुं आवे छे त्यारे वरसादनुं प्रत्यक्षपणुं होय छे अने शियाळानुं अने उनाळानुं परोक्षपणुं थाय छे. तेम एक बहारदृष्टि छे अने एक अंतरदृष्टि छे. ते बहारदृष्टिमां जीव वर्तता होय त्यारे तेने पिंड,

ब्रह्मांडादिक जगत ते प्रत्यक्ष भासमान थाय छे अने तेने आत्मा अने परमात्मा ते परोक्ष थाय छे, कहेतां ते तेनी दृष्टिमां आवता नथी अने ज्यारे अंतरदृष्टि थाय छे त्यारे आत्मा अने परमात्मा प्रत्यक्ष देखाय छे अने तेने जगतरूप माया तेनुं परोक्षपणुं थई जाय छे.

वळी जेम दिवसने विषे रात्रीनुं परोक्षपणुं थई जाय छे. अने जेम जाग्रतने विषे स्वप्ननुं परोक्षपणुं थई जाय छे अने वळी जेम कोईनां मावाप मरी गयां होय अने तेने जेम तेना मावापनुं परोक्षपणुं थई जाय छे ते मावाप तेने पाछां देखातां नथी. तेम ज्यारे अंतरदृष्टि थाय छे त्यारे तेने वहारदृष्टिए करीने देखातुं हतुं जे जगत तेनुं परोक्षपणुं थई जाय छे कहेतां तेने कोई दिवस जगत पाछुं दृष्टिमां आवतुं नथी. अने जेम दिवसने विषे सूर्यनुं प्रत्यक्षपणुं होय छे तेम अंतरदृष्टिने विषे आत्मा अने आत्माना प्रकाशक एवा जे परमात्मा ते प्रत्यक्ष देखाय छे अने तेने विषे तेने दृढ स्थिति थाय छे अने ए स्थिति पाछी कोई दिवस टळती नथी अने एवी स्थिति जेने थाय छे तेज अक्षरधामने पामे छे माटे जेने अंतरदृष्टिए करीने निर्विकल्प स्थितिने पामवुं होय तो तेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संतनो आश्रय करवो अने जेणे प्रत्यक्ष भगवान अने संतनो आश्रय कर्यो छे ते तो अंतरदृष्टिने पामी रह्यो छे. केमके क्षर, अक्षरथी पर एवा जे परब्रह्म परमात्मा तेनुं दर्शन तेने साक्षात्कार थाय छे. माटे प्रत्यक्ष भगवान अने तेना संतनो आश्रय करीने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्ते अने नवधा भक्ति संबंधी जे जे क्रिया करे छे ते सर्वे अंतरदृष्टि छे. अने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतना आश्रय विनानां जे जे साधन करे छे तथा जे जे क्रिया करे छे ते सर्वे वहारदृष्टि छे.

माटे जेने पोताना आत्मानो मोक्ष करवानी इच्छा होय तेने आ समे

प्रत्यक्ष भगवान अने संतनो आश्रय करीने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं अने ते प्रमाणे वर्तशो तो तमारां साक्षात् कल्याण थशे एमां जराय संशय नथी." एम कहीने महाराजे वार्तानी समाप्ति करी पछी घोडीए अस्वार थईने गाजते वाजते महाराज पोताने मंदिर-उतारे गांधीनी धर्मशाळामां पधार्या.

इति श्रीमुखसिद्धांत २०० समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २०१ विषय :-निश्चयात्मक अने अनिश्चयात्मक बुद्धि

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ ना भादरवा सुदि १३ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम सोजीत्रा मध्ये वारोट भक्त वहेचरदास लक्ष्मीदासने घेर आथमणा वारना ओरडानी रवेशमां गादी-तकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता. पाघमां तोरा लटकता हता अने बे कान उपर गुच्छ धारण कर्या हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराज बोल्या जे "सर्वेने एक प्रश्न पूछीए छीए जे बे प्रकारनी बुद्धि छे, तेमां एक निश्चयात्मक बुद्धि छे अने अनिश्चयात्मक बुद्धि छे. तेमां अनिश्चयात्मक बुद्धि क्यांथी उपजी छे? अने तेनी स्थिति क्यां छे? अने निश्चयात्मक बुद्धि क्यांथी उपजी छे? अने तेनुं स्थानक क्यां छे? ते कहो."

पछी तेनो उत्तर करवा मांड्यो पण कोईथी थयो नहीं पछी महाराज बोल्या जे "सांभळो तेनो उत्तर अमे करीए छीए जे अनिश्चयात्मक

बुद्धि छे ते तो मूळमाया थकी उपजी छे अने तेनुं स्थानक सुषुप्ति छे अने निश्चयात्मक बुद्धि छे ते तो प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो आश्रय अने तेना ज्ञान थकी उपजे छे अने ते निश्चयात्मक बुद्धिनुं स्थानक ब्रह्म अने परब्रह्म छे अने ते बुद्धि एक प्रकारनी छे. अने जे अनिश्चयात्मक बुद्धि छे ते अनंत शाखा वाळी छे अने ते एक एक शाखाने विषे अनंत भेद रह्या छे अने ते अनिश्चयात्मक बुद्धिने विषे अनंत दुःख, दोष अने क्लेश रह्या छे अने अनिश्चयात्मक बुद्धिवाळा जे जीव ते जन्म, मरण, गर्भवास अने चोरासीमां महा दुःखने पामे छे.

माटे ते जीवोना दुःखने टाळवाने अर्थे जगत कर्ता एवा जे परमात्मा ते रामकृष्णादिक रूपे प्रगट थाय छे. पछी ते प्रत्यक्ष परमात्मा अने तेना संतनो जे जीव आश्रय करे छे ते निश्चयात्मक बुद्धिने पामे छे अने ते आत्मानी ब्रह्म अने परब्रह्मने विषे स्थिति थाय छे अने तेनो आत्यंतिक मोक्ष थाय छे. अने ज्यां सुधी अनिश्चयात्मक बुद्धि होय त्यां सुधी जीवनो मोक्ष थाय नहीं. अने प्रत्यक्ष परमात्मा अने तेना संत मळ्या विना अनिश्चयात्मक बुद्धि कोई जीवनी टळती नथी. अने निश्चयात्मक बुद्धि थती नथी. माटे निश्चयात्मक बुद्धि थवानो आज तमारे समो आव्यो छे ते तमारा भाग्यनो पार नथी."

इति श्रीमुखसिद्धांत २०१ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २०२ विषयः–'अमे अधमोद्धारण अने पतितपावन छीए.'

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ ना भादरवा वदि २ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये वारोट भक्त वहेचरदासने घेर आथमणें वार ओरडानी आगळ गादीतकिया नखावीने पलंग उपर विराजमान थया हता. सोनेरी कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां

हतां अने पुष्पना हार कंठमां शोभी रह्या हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती. अने मुस्तक उपर पाघमां केवडानो डोडो धारण कर्यो हतो.

पछी संध्या आरती थया केडे महाराज सर्वे पोताना भक्तजन प्रत्ये कृपादृष्टि करीने बोल्या जे "शास्त्रमां एम कह्युं छे जे जेवो 'संग करे तेवो रंग चडे छे' अने ते शास्त्रना शब्द जगतमां प्रवर्त्या छे जे 'संग तेवो रंग चडे' पण तेमां अमने एम जणाय छे जे संग करे तो पण रंग चडे नहीं एवा पण जीव छे. जेम जे लोढा उपर काट चडी गयो होय तो ते लोढाने पारसमणीनो स्पर्श थाय तो पण तेनुं सोनुं थाय नहीं, तेम जेनुं काम, लोभादिकने विषे अतिशय आसक्तिए करीने अंतःकरण मलीन थई गयुं होय तेने सत्संगनो रंग चडतो नथी अने सत्संगमां आवतो होय अने सत्पुरुषना भेगो रहेतो होय तो पण जो तेने कामादिक दोषना संकल्पनो वेग अंतःकरणमां वर्ततो होय तो तेने सत्पुरुषना संगनो रंग चडे नहीं, केमके तेना अंतःकरणमां कामादिक दोषना संकल्परूपी कुसंग रह्यो छे ते सत्संगनो रंग लागवा देतो नथी.

जेम राजानी राणीनी गोली होय ते राणी भेगी रात दहाडो रहेती होय तो पण तेने ते राणीनो संग लागतो नथी केमके राणीने तो एक पोताना पुरुषने विषे ज स्नेह होय अने ते पोताना पुरुषने राजी करवा सारु लाज, मरजाद राखे छे अने कोई बीजा पुरुष साथे हांसी मश्करी करे नहीं. अने ते राणी पोताना पुरुषने विषे पतिव्रतानो धर्म पाळे छे. अने ते राणीना संगमां तेनी गोली रहेती होय पण ते तो घणाक पुरुषने चिंतव्या करे छे अने तेने व्यभिचारनो तो नियम ज नहीं अने

ते तो पर पुरुष साथे हांसी मश्करी कर्या करे पण ते गोलीने राणीनो संग लागतो नथी. अने तेम ज ते गोलीना धणी गोला होय ते पण राजाना संगमां रात दहाडो रहेता होय पण तेने राजानो संग लागतो नथी. तेम एवा गोला अने गोलीओना जेवा आकरा कामादिक दोषे करीने अंतःकरण भ्रष्ट थई गया होय एवा जे पापी जीव तेने सत्संगनो रंग चढतो नथी. केमके ते सत्संगमां आवतो होय तो पण तेनुं मन तो कामादिक दोषे करीने विकार पामीने विकल्प सरखुं भमतुं होय. माटे तेना अंतःकरणमां ज्ञानवार्ता तो उत्तरे ज नहीं. अने ज्ञान अंतःकरणमां उतर्या विना रंग चडतो नथी.

जेम एक फुटलुं कुलडुं होय अने एक साजुं कुलडुं होय, ते बे कुलडामां तेल रेडे तो साजा कुलडामां तेल रहे छे अने फुटेला कुलडामां तेल रहेतुं नथी. तेम कामादिकदोषे करीने फुटेला कुलडानी पेठे जेना इन्द्रियोनी वृत्तियो नियममां न होय तेना अंतरमां सत्पुरुषनुं आपेलुं ज्ञान रहेतुं नथी अने जेनी इन्द्रियो नियममां होय छे अने जेने कामादिक दोष टाळवानी इच्छा होय तेने सत्संगना ज्ञाननो रंग चडे. अने जेने कामादिक दोष टाळवानी तो इच्छा न होय अने सामु एम होय जे 'चालोने महाराज पासे जईए अने त्यां स्त्री-पुरुष घणाक भेगा थाय छे माटे तेनां मोढां जोईशुं अने लाग आवशे तो हांसी मश्करी पण करीशुं,' एवा संकल्पवाळा जे पापी पुरुष तथा एवी संकल्पवाळी जे पापीणी स्त्रीओ तेने कोई दहाडे सत्संगनो रंग चडतो नथी अने ते तो मरीने घोर नरकमां जाय छे. अने जे एवी रीते पाप दृष्टिए करीने स्त्री-पुरुष एकबीजानां मोढां जुवे छे तेने तो जमनादूत लोढाना सोया ऊना करीने तेनी आंखोमां परोवे छे अने तेने काळी चीसो नखावे छे. माटे सत्संग करता होय पण एवी दुष्ट बुद्धि राखीने करे तो तेने कोई काळे

सत्संगनो रंग चडतो नथी अने तेनुं कल्याण कोई काळे थतुं नथी.

अने साजा कुलडानी पेठे जेनी इन्द्रियो नियममां होय छे अने जेने कामादिक दोष टाळवानी इच्छा होय छे तेने तत्काळ सत्संगनो रंग चडे छे अने ज्ञानरूपी तेले करीने कुलडारूप अंतःकरण भराईने ते आत्मा पूर्णकाम थाय छे. अने तेने प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय थाय छे अने तेनुं साक्षात्कार कल्याण थाय छे.

जेम राजानी राणीने संगे तेनी दीकरीओ होय तथा बीजा राजाना भाई भत्रीजानी दीकरीओ होय तथा ते राजाना कारभारी उमरावो होय तेनी वहु दीकराओ होय ते सर्वेने राणीनो संग लागे छे अने ते कोई भेगा रहेता होय अने कोई राणीथी जुदा रहेता होय तो पण तेने राणीनो संग लागे छे. अने राजाने संगे पण जे कुळवान एवा जे ते राजाना कारभारी तथा तेना भाई भत्रीजा ते कोई भेगा रहेता होय अथवा कोई नोखा (आव्या-गया) रहेता होय पण तेने राजानो संग लागे छे अने तेने रूडा गुण आवे छे. अने ते जे गोला अने गोलीयो ते राजा अने राणीना भेगां रात दहाडो रहेता होय तो पण ते राजानो के राणीनो रज मात्र संग लागतो नथी अने तेने विषे रूडा गुण आवता नथी. अने जे जातवंत अने कुळवान होय तेने संगनो रंग चडे छे केमके तेने रूडा गुण शीखवानो खप छे तो तेने गुण रूडा आवे छे अने गोलाने अने गोलीने तो रूडा गुण शीखवानो खप नथी माटे तेने रूडा गुण आवता नथी अने तेने तो एम सामु होय जे राजा के राणी ते आपणने वश थाय तो तेने पण भूंडा कर्म शीखवाडीए. अने जो मुर्ख राजा के राणी होय तो ते गोला अने गोलीने वश थाय तो तेने भूंडा कर्म शीखवे अने भ्रष्ट करे.

तेम एवा गोला-गोलीओ जेवा जीव होय ते काम, लोभ, स्वादादिक

दोषना संकल्पे युक्त थका सत्संग करवा आवे तो तेने सत्संगनो रंग चडतो नथी अने ते सत्पुरुषना भेगो रहेतो होय तो पण जेनी इन्द्रियो नियममां न होय अने जेने काम, लोभ, स्वादादिक दोष टाळवानी इच्छा नथी अने निर्वासनिक थवानो विचार जेने नथी तेने कोई काळे सत्पुरुषना संगनो रंग लागतो नथी अने जेनी इन्द्रियो नियममां होय छे अने जेने कामादिक दोष टाळवाने निर्वासनिक थवानी इच्छा होय छे. अने जेने पोताना कल्याणने अर्थे भगवान अने भगवानना संतने प्रसन्न करवा होय छे तेने ज सत्पुरुषना संगनो रंग चडे छे. अने एवो शुद्ध अंतःकरण वाळो होय अने जेनी इन्द्रियो नियममां होय अने सूझे तो सत्पुरुषना भेगो रहेतो होय अने सूझे तो गृहस्थाश्रममां (नोखो आव्यो-गयो) रहेतो होय तो पण तेने सत्पुरुषनो रंग चडे छे अने तेना कामादिक दोष टळी जाय छे अने तेनी वासना टळीने निर्वासनिक थाय छे. अने ते आत्मा प्रत्यक्ष भगवानना निश्चयने पामीने अक्षरधामने पामे छे.

जेम देडको छे ते कमळना थडमां रहेतो होय तो पण तेने कमळना पुष्पनी सुगंधी आवती नथी. केमके तेने सुगंधीनी इच्छा नथी अने तेने कादव खावानो स्वभाव छे. अने भमरो छे ते कमळथी छेटो रहेतो होय पण तेने कमळना पुष्पनी सुगंधनी इच्छा होय तो ते कमळनी सुगंध ले छे. तेम कामादिक दोषे युक्त थका तथा पंचविषयने भोगववानी इच्छाए युक्त पाप बुद्धिए करीने जे सत्संगमां आवता होय एवा जे स्त्री-पुरुष तेने सत्संगनो रंग चडतो नथी अने ते सत्पुरुषना भेगा रहेता होय तो पण तेनुं कल्याण थतुं नथी. अने जेनी इन्द्रियो नियममां होय अने जेने कामादिक दोष टाळवानी इच्छा होय एवां जे स्त्री-पुरुष ते अमारो सत्संग करशे तो तेने सत्संगनो रंग चडशे अने तेनुं कल्याण साक्षात्कार थशे. अने जे पाप बुद्धिए आवतां हशे तेनुं कल्याण कोई

काळे नहीं थाय, माटे जेने पोताना कल्याणनी इच्छा होय तेने पांच वर्तमान राखीने इन्द्रियोने नियममां करीने अमारा अने अमारा संतनी पासे आवजो तो तमारां कल्याण थशे अने इन्द्रियोने नियममां कर्या विना अने वर्तमान पाळ्या विना कल्याण थशे नहीं. अने ते अमारी पासे पण आवशो नहीं."

पछी बारोट घेलजीए महाराजने हाथ जोडीने कह्युं जे "हे महाराज! तमो तो अधमोद्धारण छो अने पतित पावन छो. माटे तमारी पासे आवशे तेनुं कल्याण तमे केम नहीं करो? करशो."

पछी महाराज बोल्या जे "अधमोद्धारण अने पतित पावन छीए तो खरा ते सूझे एवो जीव अधम होय अने नीच कुळमां जन्म पाम्यो होय अने जन्मथी जे अनंत पाप कर्यां होय पण ते जीव अमारी पासे आवीने पछी अमारी आज्ञाए करीने ते पाप कर्म अने क्रियानो त्याग करीने इन्द्रियोने नियममां राखीने अमारी भक्ति करे तो ते अधमनुं पण कल्याण थाय छे. ते पण गीतामां कह्युं छे—

अपि चेत् सो दुराचारो भजते मामनन्य भावे ।

अर्थः—'नीच कुळमां जन्म्यो होय अने तेणे घणाक दूराचरण कर्यां होय पण ते जो अनन्य भावे प्रत्यक्ष भगवाननुं भजन करे तो ते जीव साधुनी गतीने पामे छे.' ते अनन्य भाव ते शुं? तो प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतना आश्रय विना अने तेनी आज्ञा विना बीजो कोई आधार न रहे अने एक भगवान अने संतनो आधार जेने होय तो एवा अधमनो उद्धार थाय छे. अने एम न होय अने प्रत्यक्ष भगवान अने संतना आश्रय विना अने तेनी आज्ञारूपी धर्म पाळ्या विना कल्याण करता होय तो अवतारे अवतारमां वेकनां (थोडानां) कल्याण थाय छे अने वेकनां कल्याण नथी थतां. तेनुं कारण ए.ज छे जे आज्ञामां वर्ते

छे तेनुं कल्याण थाय छे, ते अधम होय तेनुं पण कल्याण थाय छे. अने धर्मवाळो होय तेनुं पण थाय छे. अने प्रत्यक्ष भगवान अने संतनी आज्ञा अने आश्रय न करे अने ते धर्मवाळो जीव होय अने उच्च कुळवान होय तो पण तेनुं कल्याण कोई काळे थतुं नथी. अने अधम जीव होय अने ते अमारी आज्ञा प्रमाणे वर्ते अने ते बीजुं कांई समजतो न होय तो पण तेनुं कल्याण थशे."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत २०२ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत २०३ विषय :–कृष्णावतारनी लीला अने भगवान भक्तने गरीब केम बनावे छे ?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२२ ना भादरवा वदि ३ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये पटेल नरसिंभाई द्वारकादासने घेर उत्तरादे बार ओरडानी पडसाळमां गादी-तकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने बे कान उपर गुच्छ शोभी रह्या हता. कंठमां पुष्पना हार धारण कर्या हता अने पाघमां तोरा लटकता हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी बारोट भक्त बेचरदास लक्ष्मीदासे महाराजने प्रश्न पूछ्यो जे "हे महाराज ! कृष्णावतारमां भगवाने मोरना पिच्छनो मुगट धारण कर्यो अने गुंजानी माळाओ पहेरी अने वांसडानी मोरली वगाडी अने खभे कामळीने हाथमां लाकडी लईने गायो चारी अने आहिरने घेर मोटा थया ते एवा मोटा अने सर्वना कर्ता हर्ता भगवान तेणे एवी लीला केम करी ? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "भगवान छे ते तो अनंत कोटी ब्रह्मांडना पति छे अने लक्ष्मीना तो स्वामी छे अने सुखना तो सागर छे अने ए भगवानना सुख आगळ तो देवादिकनां सुख पण नरक जेवां छे, तो आलोकनां सुख तो शी गणत्रीमां? माटे भगवानने तो मोरना पिच्छनो मुगट अने हिरा, मोती, मणी आदिक जडौ मुगट ए बे बरोबर छे. अने गुंजानी माळा अने मोतीनी माळाओ ए बे बरोबर छे. अने गायो चारवी अने राज्य करवुं ते बे बरोबर छे. माटे आलोकना पदार्थमां भगवानने कोई सारुं-नरसुं नथी.

अने भगवान जे जे पदार्थ ग्रहण करे छे ते तो जीवोना कल्याण करवाने अर्थे ग्रहण करे छे. ते जे जे जीवोनो जेवो भाव होय तेवी सेवानुं ग्रहण करे छे अने ते जीवोनुं कल्याण करे छे. माटे जे जीवने प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध थाय छे ते जीव जे ते पोताना घरमां जे जे समृद्धि होय तेणे करीने भगवाननी सेवा करे छे. पछी भगवान जे ते भक्तनो भाव जोईने ते भक्तने अलौकिक सुख आपवा सारु तेना पदार्थने अतिशय वखाणता थका तेनी सेवाने ग्रहण करे छे अने ते भक्तने विषे पोतानो सजातिभाव देखाडीने तेने पोताने विषे प्रीति करावे छे अने ते भक्तजनोने पोताने विषे कोई जातनो अंतराय न रहे तेवी रीते पोते भगवान वर्ते छे पण भक्तजनने विषे भगवान विजातिभाव रज मात्र नथी जणावता. अने भगवान विजातिभाव जणावे तो कोई जीवने भगवानमां हेत थाय नहीं अने कोईनुं कल्याण पण थाय नहीं.

माटे श्रीकृष्ण भगवान जे ते व्रजवासी जे गोपीगोवाळ तेने सजाति भावे वर्त्या छे अने तेना भाव प्रमाणे तेना समृद्धि जे दूध, दहीं तेने जम्या तथा गुंजानी माळाओ तथा मोरना पिच्छना मुगट तथा वांसडानी

वांसळी, खभे कांवळी, लाकडी, गायो चारवी इत्यादिक क्रिया करी तथा सेवा करी तेने भगवाने ते भक्तजनोने सुख आपवा सारु अतिशय वखाणता थका ग्रहण करी छे अने ते व्रजवासीओने सजातिभाव देखाडीने सर्वे अंतरायनो त्याग करावीने तेनी वृत्तियोने पोताने विषे जोडावीने भगवाने पोताना साधर्म्यपणांने पमाडया. माटे एवुं अलौकिक काम भगवाने कर्युं ते सारु ते मोरना पिच्छाने अने गुंजानी माळाओने अने कांवळीने अने वांसळीने अने दूध-दहींने शास्त्र-पूराण अने मोटा पुरुषे अतिशय वखाण्यां छे.

अने वळी पोताना भक्तोने अतिशय गरीब जेवा रबारी भरवाड कर्या तेनुं पण एज प्रयोजन छे जे जे गरीब होय तेने प्रगट सत्पुरुषनो समागम करवामां कोई जातनो अंतराय रहेतो नथी. अने जो प्रगट भगवाननो समागम करवामां अने सेवा करवामां जो जराय लोक लाजे करीने अथवा मोटप माने करीने तथा कोई वाते अंतराय रहे तो तेनुं आत्यंतिक कल्याण थाय नहीं. माटे जेने लोक वहेवारमां झाझी लाज, आबरु, मोटप, मान तथा द्रव्य, कुळ, कुटुंबादिक घणुंक होय तो तेने अंतरायनो त्याग करीने गरीबनी पेठे प्रत्यक्ष सत्पुरुष भगवाननी सेवामां जवातुं नथी अने जो अंतराय रहे तो जीवनुं कल्याण थाय नहीं. माटे भगवाने पोताना भक्तोने गरीब कर्या हता अने तेना भाव प्रमाणे ते भक्तजनोए जे जे सेवा करी तेने भगवाने बहु ज वखाणी वखाणीने ग्रहण करी.

माटे ते भगवाननी सेवामां जे जे वस्तु काम आवे ते वस्तु ज अतिशय वखाणवा योग्य छे अने ते विनाना सर्वे पदार्थ निंदा करवा योग्य छे अने पापरूप छे. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २०३ समाप्त ॥



श्रीमुखसिद्धांत २०४ विषयः—तृष्णारूपी अंतःकरणनो खाडो भरवानी रीत

श्रीहरिक्रुष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ना भादरवा वदि ६ ने दिवस महाराज श्रीहरिक्रुष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये पटेल नरसिंहभाई द्वारकादासने घेर उत्तरादा वारना ओरडानी आगळ चोकमां गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो.अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया केडे महाराज बोल्या जे " जीव छे ते देहने पोतानुं रूप मानीने विषयने भोगवे छे पण तेने करीने जीव तृप्तिने पामतो नथी. अने देहे करीने सुखियो थवाने इच्छे छे पण तेमां कोई काळे जीवने सुख थतुं नथी; ऊलटो जीव विषय भोगववे करीने वधारे वधारे दुःख पामतो जाय छे. केमके देह छे ते आत्मानुं स्वरूप नथी अने मायिक पदार्थ छे ते पण आत्माने लेशमात्र सुख करे एम नथी अने मायिक पदार्थ तो आत्माने ऊलटां महा दुःख देनारां छे.

—पण जीवने ज्यां सुधी अज्ञान होय त्यां सुधी काने करीने स्त्री-आदिकना शब्द सांभळीने सुख माने छेअने त्वचाए करीने स्त्रीआदिकना स्पर्शमां सुख माने छे अने नेत्रे करीने स्त्रीआदिकनां रूप जोईने तेमां सुख माने छे. इत्यादिक इन्द्रियोए करीने मायिक विषय भोगवीने सुख माने छे पण ते मायिक पंचविषयने सुखे करीने जीवने अंतःकरणमां तृप्ति थती नथी. अने स्थूळ देहमां भूख लागी होय अने पोताना आहार प्रमाणे अन्न खाय तो स्थूळ देहनी भूख निवृत्ति पामे छे अने तरस लागी होय अने जळ पीए तो तरस निवृत्ति पामे छे, इत्यादिक आलोकनां

पदार्थे करीने स्थूळदेहरूपी खाडो भराय छे पण सूक्ष्मदेह जे अंतःकरण ते रूपी महदाकाशनो खाडो ते भरातो नथी. केमके स्थूळदेह पृथ्वी थकी थयो छे अने पंचविषयनां पदार्थ ते पण पृथ्वी थकी थयां छे. माटे पृथ्वीमां खाडो पडयो होय ते खाडो तो पृथ्वीनी माटी, पथरे करीने भराय छे. पण जे आकाशनी पोलनो खाडो ते पृथ्वीनां पदार्थे करीने भराय नहीं.

तेम अंतःकरण तो महदाकाशरूप आकाशनो खाडो छे ते खाडो पृथ्वीरूप जगतनां पंचविषयनां पदार्थ तेने करीने कोई काळे भराय नहीं. केमके आकाशना दशमा भागमांथी वायु थयो छे अने वायुना दशमा भागमांथी अग्नि थयो छे अने ते आकाशना सोमा भागमांथी अग्नि थयो छे अने अग्निना दशमा भागमांथी जळ थयुं छे अने ते जळ अग्निना दशमा भागमांथी अने वायुना सोमा भागमांथी अने आकाशना हजारमा भागमांथी जळ थयुं छे अने ते जळना दशमा भागमांथी पृथ्वी थई छे. ते पृथ्वी आकाशना दश हजारमा भागमांथी थई छे अने पृथ्वीना केटलाक थोडाक भागमांथी जगतना पंचविषयनां पदार्थ थयां छे. माटे एवडो मोटो जे आकाश ते पृथ्वी थकी थयां जे पदार्थ तेने करीने केम भराय? न ज भराय.

जेम दस हजार मण दाणानो कोठार होय तेमां एक सेर दाणा नाखीए तेने करीने ते कोठार भराय नहीं, तेम आकाशरूप अंतःकरणनो तृष्णारूपी महदाकाशनो खाडो ते जगतनां पदार्थ जेटलां छे तेटलां वधाय पदार्थने भोगवे तो पण ते तृष्णारूपी आकाशनो खाडो भराय नहीं. अने मायिक पंचविषयनां पदार्थने तो जीव जेम जेम भोगवे छे तेम तेम तृष्णा वधारे वधारे वधती जाय छे, पण तेने करीने जीवने तृप्ति थती नथी. ते पण कह्युं छे जे

ज्युं ज्युं मुक्तत भोगव्युं तृष्णा वढत अपार ।
मुक्त कहे पावक विषे ज्युं होमत घृत धार ॥

अर्थः—'जेम जेम विषयभोगने जीव भोगवे छे तेम तेम तृष्णा वधती जाय छे. कोनी पेठे ? के जेम अग्निमां घी जेम जेम होमे छे. तेम तेम अग्निनी ज्वाळा वधती जाय छे, पण विषयभोगे करीने तृष्णा मटती नथी.'

केमके जीवे आ ब्रह्मांडने विषे जेटली जातना जीव छे ते सर्वेने पेट पोते एकले जन्म धर्या छे अने सर्वे जीवोने पोते स्त्रीना देह धरीने पोताना पुरुष कर्या छे अने ते ने ते जीवे पुरुषना देह धरीने सर्वे जातनी स्त्रीओने भोगवी छे, तो पण जीवने रज मात्र तृप्ति थई नथी. केमके जीवे केटलाक फेरा ईन्द्र थईने देवलोकमां जईने ईन्द्राणी आदिक घणीक अपसराओ भोगवी छे. अने बीजा भोग पण अनंत भोगव्या छे. अने ते जीव पाछो पुन्य खूटे त्यारे मृत्युलोकमां आवीने ते जीव कूतरानो जन्म धरे छे त्यारे ते कूतरीने विषे पण आसक्त थाय छे पण तेने एम ज्ञान नथी रहेतुं जे 'ईन्द्रलोकमां जईने ईन्द्राणीओने भोगवी छे ते हवे कुतरीओने नहीं भोगवुं' एम तेना मनमां तृप्ति थती नथी. अने जेवो ईन्द्राणीने विषे आसक्त थतो हतो तेवो ने तेवो कूतरीने विषे पण जीव आसक्त थाय छे. तेम ज अनंत प्रकारना रस खाधा छे तो पण जीवने तृप्ति थई नथी. एवी रीते पांचे विषयने जीवे अनंत युग थयां भोगव्यां छे तो पण विषय भोगववानी तृष्णारूपी खाडो ते अधूरो छे.

जेम फुटेलो कुलडो होय तेमां सात समुद्रनुं जळ रेडीए तो पण ते कुलडो रज मात्र भराय नहीं, तेम जगतनां पदार्थ सूझे एटलां भोगवे तो पण फुटेला कुलडारूप जे अंतःकरण तेमां तृप्ति थती नथी. अने ते

अंतःकरणरूपी खाडो ते जीवने महा पीडा करे छे अने ते तृष्णारूपी अंतःकरणनो खाडो ते जीवने कांई ठरीने बेसवा देतो नथी.

ते उपर एक कल्पित द्रष्टांत छे जे एक वाणियाने घेर पोताने काम घणुंक हशे ते काम करावववा सारु ते वाणिये भूतने वश कर्युं. पण ते भूते वाणियाने कह्युं के 'मने काम नहीं वतावे तो हुं तने खाईश.' पछी ते वाणिये भूतने काम वताववा मांडयु ते जे जे काम वतावे ते ते कामने घणाक भूत भेगा करीने घडीकमां करी नाखे अने ते भूते तो काम मात्र खूटाडयुं. पछी वाणियाने कह्युं के 'काम वताव नीकर तने खाईश.' पछी वाणियो तो मुंझाणो अने ज्यां वाणियो जाय त्यां भूत वांसे फरतुं फरे अने ते वाणिये भूतने सुख सारु वश कर्युं हतुं पण तेमांथी तो ऊलटुं महा दुःख थयुं. पछी तो ते वाणियो रघवायो थईने फरतो फरतो एक संतनी पर्णकुटि हती त्यां जई चडयो त्यारे त्यां ते भूत आवी शक्युं नहीं.

पछी ते वाणिये विचार कर्यो जे 'आ साधु मारुं दुःख टाळशे,' एम जाणीने ते साधुने वाणिये हाथ जोडीने कह्युं जे 'हे महाराज! आ एक भूत मारी वांसे थयुं छे, ते मने एम कहे छे जे 'काम वताव नीकर तने खाईश.' ते जेटलुं काम वतावुं छुं ते काम तो एक घडीकमां करी नाखे छे, ते काम मात्र खूटाडयुं अने हवे मने खावा तैयार थयुं छे माटे कृपा करीने ते थकी मारी रक्षा करो.' पछी ते साधुए कह्युं के 'हुं कहुं एम कर, जे ते भूत पासे एक मोटो वांस मंगाव अने ते वांसने तारा फळिया वच्चे खोडाव. पछी ते भूतने एम कहे जे ' ते वांसडा उपर चड अने उतर; एमने एम कर्या कर, ए मारे काम छे.' पछी ते काम खूटशे नहीं अने तुं महा सुखियो थईश.' पछी ते वाणिये ते प्रमाणे कर्युं

त्यारे ते भूत हारपामीने वाणियाने वश थईने पगे लाग्युं, अने ते वाणियाने भूते कह्युं के 'हवे तने कोई दहाडो नहीं खाउं,' एवी रीते संतना उपदेशे करीने वाणियो महा सुखियो थयो.

तेम जीवने अंतःकरणरूपी भूत वश थयुं छे. ते भूतने शुं करवा वश कर्युं छे? तो जीवने अज्ञान, मोह अने पंचविषयनी वासना छे ते वासनाए करीने जे तृष्णारूपी महदाकाशनो खाडो तेने भरवाने अर्थे धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित भक्ति सिद्ध करीने ब्रह्मरूप थईने परब्रह्मने साक्षात्कार पामवारूप जीवने माथे घणुंक काम छे, ते काम करावबा सारु परमात्माए दया करीने जीवोने अंतःकरणरूपी भूत वश करी आप्युं छे. ते जे जीव धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति रूपी काम अंतःकरणरूपी भूतने न बतावे तो ते अंतःकरणरूपी भूत जीवने खावा तैयार थाय छे कहेतां धर्म, ज्ञानादिक साधन जीव नथी करतो ते जीवने अंतःकरण जे ते विषयनुं चिंतवन करावीने जीवने पाप कर्म करावीने नरकमां लई जाय छे अने यमपुरी, चोरासी अने गर्भवासादिकनां महा दुःख पमाडे छे अने जीवने क्यांय ठरीने बेसवा देतुं नथी. पछी जीव जे ते एवी रीते स्वर्ग, मृत्यु अने पाताळने विषे भटकतां भटकतां तेने मनुष्यनो देह आवे अने ते मनुष्यदेहमां कोई प्रत्यक्ष भगवान के भगवानना एकांतिक निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी संत मळे अने तेनो आश्रय जीव करे त्यारे तेने अंतःकरणरूपी भूत शांति पामे छे अने ते जीव महा सुखने पामे छे.

पछी ते जीव सत्पुरुषनी प्रार्थना करे छे जे 'हे महाराज! अंतःकरणरूपी भूत मने बहु दुःख आपे छे अने तेने करीने मने स्वर्ग, मृत्यु अने पाताळने विषे अनंत फेरा अने बहु काळ भटकाव्यो छे. माटे ते थकी

मारी रक्षा करो.' पछी सत्पुरुष जे ते कृपा करीने जीवने अंतःकरण-रूपी भूत वश करवानो उपाय बतावे छे. ते शो उपाय बतावे छे? तो पंचविषयने भोगववानी इच्छा रूप जे सर्वे काम तेनो त्याग करीने निवृत्तिने पामीने वांसडारूप भगवाननी मूर्ति तेने आत्मारूपी पोतानी फळीमां रोपवी कहेतां प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने पोताना आत्माने विषे धारीने ते मूर्तिनी नवधा भक्तिए सहित मूर्तिनुं ध्यान करवुं अने ते मूर्तिनुं अंगोअंगनुं चिंतवन रूपी वांसडे अंतःकरण रूपी भूतने चडाववुं अने उतारवुं एवी रीते जे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करे छे त्यारे तेनुं अंतःकरण शान्त थाय छे अने तेनुं तृष्णारूपी दुःख मटी जाय छे अने ते जीवनुं कल्याण थाय छे.

केमके महदाकाशरूप जे अंतःकरणनो खाडो ते पृथ्वी थकी उत्पन्न थयां जे जगतनां पदार्थ तेने करीने तो ते खाडो भराय नहीं पण ते महदाकाशथी पर एवुं जे चिदाकाश ते चिदाकाशना कोक देशने विषे महदाकाश तो लीन थई जाय छे एवो जे चिदाकाश तेने पोतानुं स्वरूप जाणवुं केमके जीवात्मानुं व्यतिरेक स्वरूप चिदाकाशरूप जे अक्षरब्रह्म ते छे. ते चिदाकाशरूप अक्षरब्रह्मरूप पोताना आत्माने जाणीने चिदाकाशरूप जे अक्षरब्रह्म ते तो जेना अंगनो प्रकाश छे एवा जे परमात्मा परब्रह्म प्रत्यक्ष भगवान तेनी मूर्ति तेनुं पोताना आत्माने विषे ध्यान करवुं एवी रीते चिदाकाशरूप जे अक्षरब्रह्म ते रूप थईने प्रत्यक्ष भगवाननुं ध्यान करे छे त्यारे तेने महदाकाशरूप जे अंतःकरणनो तृष्णारूपी खाडो ते भराईने छलकी जाय छे अने तेनी दृष्टिमांथी त्रण प्रकारना आकारना भेद ते टळी जाय छे. अने चिदा-काशरूप पोतानो आत्मा अने आत्माना प्रकाशक एवा जे परमात्मा ए बे तेनी दृष्टिमां रहे छे अने ते पूर्णकाम थाय छे अने तेने चौद

लोकनां पंचविषयनां मायिक सुख ते कागविष्टा तुल्य थई जाय छे अने एवी रीतना ज्ञानने जे आत्मा पामे छे ते आत्मा जीवनमुक्त कहेवाय छे.

ते एवुं ज्ञान क्यारे थाय छे? तो प्रत्यक्ष परमात्मा अने तेना एकांतिक पंचविषयना त्यागी संत जीवने मळे छे त्यारे एवुं ज्ञान थाय छे. ते पण पूर्वे जेने जेने प्रत्यक्ष भगवान अने संत मळ्या छे तेने ज एवुं ज्ञान थयुं छे अने तेनी ज मुक्ति थई छे.

माटे आज पण जेने अमारो प्रत्यक्ष संबंध थयो छे तेने तो पोताना आत्माने चिदाकाशरूप जाणीने प्रत्यक्ष अमारी मूर्तिनुं ध्यान करवुं तो तेने ध्याने करीने अंतःकरणरूपी महदाकाशनो तृष्णारूपी खाडो ते भराईने पूर्णकाम थशे अने ते जीवनमुक्तनी स्थितिने पामशे. पण ते प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिना ध्यान विना बीजा अनंत साधन करे अने अनंत ज्ञान कथे, भेख ले, वैरागे राखे, संन्यासी थाय, परमहंस थाय तो पण तेने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिना ध्यान अने भक्ति कर्या विना महदाकाशरूप अंतःकरणनो तृष्णारूपी खाडो ते कोई काळे तृप्त थाय नहीं.

जेम कोईकने मांथे सरकारनुं करज होय ते करजने लेवा सारु सरकार तेना उपर चार मोशल मूके. ते करज वसुल करे नहीं त्यां सुधी ते मोशल तेने दुःख आपे छे. अने ज्यारे ते सरकार पासे जईने करज वसुल करे त्यारे ते राजा मोशल उठाडी ले छे. पछी तेना उपर सरकारनी महेरवानी थाय तो ते ना ते सिपाई चाकरी करवा लागे छे. तेम जीवने माथे आत्मा अने परमात्माना स्वरूपने जाणवा रूपी परमात्मानुं फरज छे. ते आत्मा अने परमात्माना स्वरूपने जणाववा सारु परमात्माए अंतःकरणरूपी चार मोशल जीवना उपर मूक्या छे. ते ज्यां सुधी जीव आत्मा अने परमात्माना स्वरूपने नथी जाणतो त्यां सुधी

ते जीवने अंतःकरणरूपी मोशल ते जन्म, मृत्यु, गर्भवास अने चोरासामां अपार दुःख दीधा करे छे अनें ते जीवने क्यांय ठरीने बेसवा देता नथी. अने ज्यारे जीव जे ते सद्गुरुने शरणे जाय छे त्यारे ते अंतःकरण कांईक शांति पामे छे. पछी ते जीव जे ते सद्गुरुना ज्ञाने करीने आत्मारूप थईने प्रत्यक्ष परमात्मानो दृढ आश्रय करीने ते प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने उरमां राखे छे त्यारे ते परमात्मा पोताना ज्ञानरूपी हुकमे करीने जे अंतःकरणरूपी चार मोशल तेने उठाडी ले छे अने ते जीवने ब्रह्मरूप करीने तेने पोतानी सेवा करावबा सारुं तेना ते अंतःकरणरूपी मोशल ते जीवने दुःख देता अळसावीने ते जीवने सुख देवा सारु अने जीवने परमात्मानी भक्तिमां सहाय करवाने अर्थे ते जीवनी सेवामां सोंपे छे. पछी ते अंतःकरणरूपी परमात्माना सिपाई ते जीवात्माना चाकर थईने रहे छे अने जीवात्माने महा अलौकिक एवुं जे ब्रह्मानंदसुख तेने पमाडे छे.

माटे जेने प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध थाय छे तेने अंतःकरणरूपी मोशल उठे छे अने ते जीवनुं कल्याण थाय छे. माटे आ समये जेने महा सुखिया थवुं होय अने अंतःकरणरूपी मोशल उठाडवा होय अने भगवानना धामने पामवुं होय तेने प्रत्यक्ष भगवाननो दृढ आश्रय करवो अने जे प्रत्यक्ष भगवाननो आश्रय करशे ते बुद्धिवाळो छे अने तेनुं कल्याण थशे. अने जे आवो दुर्लभ समय चुकशे ते तो अति मूर्ख हशे अने ते जीव नरकमां जशे. माटे आ समये जेने मनुष्यदेह आव्यो छे तेने अमारो समागम करीने अथवा अमारा निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी साधु तेनो समागम करीने पोताना आत्मानुं काम सुधारी लेवुं."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत २०४ समास ॥

श्रीमुखसिद्धांत २०५ विषयः–या मतिः सा गति र्भवेत।

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२२ ना भादरवा वदि ९ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये भक्त नरसिंहभाई द्वारकादासने घेर उत्तरादे बार ओरडानी आगळ गादी-तकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण कर्या हतां अने कंठमां पुष्पना हार धारण कर्या हता. पाघमां तोरा अने केवडानो डोडो धारण कर्या हता अने कंकुनो चांदलो ललाटने विषे शोभी रह्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी पटेल लल्लुभाई देशाईभाईए प्रश्न पूछ्यो जे "हे महाराज! एक स्त्रीपुरुष बे जणां छे तेमां जे पुरुष छे ते तो निर्वासनिक निष्कामी अने भगवाननो भक्त छे, माटे ते पुरुष तो देह मूकीने भगवानना अक्षरधाममां जशे अने ते तो पाछो जन्मने नहीं धरे अने जे स्त्री छे तेने तो पुरुषने विषे अतिशय प्रीति छे अने पतिव्रतानो धर्म पाळे छे पण ते स्त्रीने ते पुरुषने विषे कामनी वासना छे. माटे ते स्त्रीने तो जन्म धरवो पडशे. पण ते स्त्रीने तेना पुरुषने विषे अतिशय प्रीति छे माटे जेने विषे प्रीति होय तेने विषे जन्म धरवो पडे छे एम शास्त्रमां कह्युं छे जे–

'या मतिः सा गति र्भवेत्'।

ए श्रुतिनो अर्थ जे 'ज्यां मति कहेतां जेने ज्यां प्रीति होय तेने त्यां जन्म धरवो पडे छे.' माटे ते स्त्रीने तेना पुरुषने विषे प्रीति छे अने ते पुरुषने तो जन्म धरवो पडे एम नथी माटे ते स्त्रीने अने ते पुरुषने शी रीते संबंध थशे? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "एनो उत्तर तो एम छे जे जेने विषे

जेने प्रीति होय तेना जेवा गुण अने तेना जेवुं शरीर अने तेना जेवी बुद्धि तेनी तेने प्राप्ति थाय छे, पण कांई तेने पेट जन्म धरवो पडे एम नथी. अने जेने विषे जेने प्रीति होय तेना जेवा गुण अने तेना जेवो स्वभाव ते तेने प्राप्त थाय छे. माटे ते स्त्रीने बीजो जन्म आवशे त्यारे तेने तेना पुरुषना जेवा निष्कामादिक गुण आवशे अने ते पुरुषने जेम सत्पुरुषने विषे अने सत्संगने विषे प्रीति छे तेम ते स्त्रीने पण पोताना पुरुषना जेवो देह आवशे अने तेने सत्पुरुषने विषे अने सत्संगने विषे प्रीति थशे अने ते पुरुष जेम ज्ञानने पामीने भगवानना धामने पाम्यो तेम ते स्त्री पण बीजे जन्मे ज्ञानने पामीने भगवानना धामने पामशे. पण कांई ते पुरुषने ते स्त्री सारु जन्म धरवो पडे एम नथी.

माटे एवा निर्वासनिक भगवानना भक्त होय तेने विषे जेने प्रीति थाय छे तो ते जीवनुं एक बे जन्मे कल्याण थाय छे अने जेने प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीति थाय छे तो तेनुं कल्याण ते ने ते देहे करीने थाय छे. ते गमे तेवा भावे प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीति करे तो तेनो साक्षात्कार मोक्ष थाय छे, ते कृष्णावतारमां गोपीयोए काम भावे भगवानमां प्रीति करी तो ते सर्वनो मोक्ष थई गयो छे अने पांडवे स्नेहभावे भगवानमां प्रीति करी तो तेनो मोक्ष थई गयो छे. अने रामावतारमां वांदराए मूढपणें भगवानमां प्रीति करी हती तो ते सर्वेनुं कल्याण थई गयुं छे. माटे प्रत्यक्ष भगवानने विषे जेने जे ते भावे प्रीति थाय तो ते सर्वे जीवोनां कल्याण थाय छे.

पण ते भगवान अने भगवानना भक्तने विषे कोने प्रीति थाय छे ? तो परमात्माए जीवोनां कल्याण करवाने अर्थे धर्मरूपी नीति बांधी छे. ते धर्मरूपी नीतिने जे पाळे छे तेने ज भगवान अने भग-

३०

वानना भक्त संतने विषे प्रीति थाय छे अने ते जीवनुं कल्याण थाय छे अने धर्मरूपी नीतिने जे नथी पाळतो अने अधर्मे करीने अनीतिमां वर्ते छे ते जीवने भगवान अने भगवानना संतमां प्रीति थती ज नथी अने तेनुं कल्याण पण थतुं नथी. माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण करवानी इच्छा होय अने आलोकमां अने परलोकमां महा सुखिया थवुं होय तेने परमेश्वरनी आज्ञारूपी जे धर्म तेने विषे दृढपणें रहेवुं अने जे धर्मरूपी नीतिमां रहेशे तेने भगवान अने भगवानना भक्त संतने विषे प्रीति थाय छे अने ते जीव भगवानना धामने पामशे.

अने आलोकमां पण जे धर्मरूपी नीतिमां वर्तशे तो तेने अचानक वगर धार्युं सुख प्राप्त थाय छे अने तेने दुःख टली जाय छे अने जे अधर्मे करीने अनीतिमां वर्ते छे ते जीवने अचानक दुःख प्राप्त थाय छे अने तेने सुख मात्र नाश पामी जाय छे. ते वगर धार्युं नीतिवानने सुख अने अनीतिवानने दुःख प्राप्त थाय छे. जेम नाळियेरीनी उपर ऊँचु नाळियेर होय छे अने तेनी काछली अतिशय कठण होय छे अने तेमां क्यांय थईने जळ प्रवेश करी शके एम नथी तो पण तेमां जळ भराई जाय छे तेम धर्मरूपी नीतिवान छे तेने कोई सुखनुं साधन न होय कहेतां तेने गाम-गरास न होय तो पण तेने वगर धार्युं सुख प्राप्त थाय छे. अने जेम कोठाने हाथी आखुं गळी जाय छे अने तेने पाछुं पूंठे आखुंने आखुं काढी नाखे छे पण तेमांथी तेनो गर्भ नाश पामी जाय छे. तेम अनीतिवानने अनंत प्रकारनां सुखनां साधन होय कहेतां तेने गाम-गरास, धन-माल होय पण ते सर्वे तेनुं अचानक तत्काळ नाश पामी जाय छे अने तेने महा दुःख आवी पडे छे. माटे जेने महा सुखिया थवुं होय तेने भगवाननी आज्ञारूपी धर्म पाळवो. त्यां एक साखी छे.

ज्यां सुमति त्यां संपत्ति नाना, ज्यां कुमति त्यां विपत्ति निधाना ॥

अर्थः—'सुमति एटले नीतिरूप धर्म ज्यां छे त्यां नाना प्रकारनी संपत्ति भेगी थई छे अने कुमति एटले ज्यां अनीतिरूपी अधर्म छे त्यां विपत्ति एटले नाना प्रकारनां दुःख प्राप्त थाय छे.' माटे जेने महा सुखिया थवुं होय अने जन्म-मरणनां दुःख टाळीने भगवानना धामने पामवुं होय तेने परमेश्वरनी आज्ञारूपी जे धर्म तेने दृढ करीने पाळवो अने जे धर्म राखशे तेने ज अमारे विषे प्रीति थशे अने ते आत्मानुं कल्याण थशे. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे." पछी मशाल थई अने भक्त-जन महाराजनी आरती करवा लाग्या.

इति श्रीमुखसिद्धांत २०५ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २०६ विषयः—आ सभा तो अक्षरधामनी छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ ना भादरवा वदि १०ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम सोजीत्रा मध्ये भक्त सुतार छगनने घेर उगमणें वार ओरडानी ओशरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं होय तेने तो अमारां अने अमारा निर्वासनिक संतनां दर्शन करवा आववुं त्यारे घेरथी ज एवो विचार करीने चालवुं जे 'मारे तो भगवान अने संतने निरखीने अंतरमां उतारवा छे अने ते भगवान अने संतनां दर्शने करीने मारां अनंत जन्मनां जे पाप ते नाश थई जशे, माटे मारे एक भगवान अने संतनां ज दर्शन करवां छे. पण त्यां जईने आडुं-अवळुं मोढुं करीने बीजां कोईनां मोढां नथी जोवां अने महाराज अने संत जे जे वातो

करशे तेने एकाग्र चित्त करीने सांभळवी छे अने ते वातोने अंतरमां उतारवी छे अने कथा-कीर्तनमां मारे वच्चे बोलवुं नथी अने एक भगवान अने भगवानना साधुना ज शब्द सांभळवा छे.'

एम समजीने संसार वहेवारना डोळनो त्याग करीने जे दर्शने आवे छे तेने ज दर्शननो लाभ थाय छे अने तेने डगले डगले यज्ञनुं फळ थाय छे. माटे एवी रीते माहात्म्य समजीने अमारां अने संतनां दर्शन करीने जगतनी मान-मोटप मूकीने भगवानना भक्त आगळ निर्मानी थईने सभामां ज्यां मार्ग मळे त्यां बेसी जवुं, केमके आ सभा तो अक्षरधामनी छे अने अमारा भक्त छे ते तो मोटा ब्रह्मादिकने पण पूजवा योग्य छे. अने अमारी अने अमारा संतनी वार्ता पण शिव, सनकादिक, नारद, व्यास, वाल्मिक पण सांभळवाने इच्छे छे अने सांभळीने अद्‌भूत आनंदने पामे छे. माटे एवी सभामां तो अति निर्मानी थईने वार्तामां चित्त देवुं.

एम समजीने दर्शने आवे छे तेने अलौकिक लाभ थाय छे अने तेने ज्ञान पण थाय छे अने तेने भगवान अने भगवानना संतने विषे प्रीति थाय छे अने ते अक्षरधामने पामे छे अने जे आवी सभामां बेसीने जगतनो डोळ करे छे अने पुरुष स्त्रीओनां मोढां जुए अने स्त्रीओ पुरुषनां मोढां जुए ते तो महा पापी छे अने तेने आसुरी जीव जाणवा. पण तेने दर्शननो लाभ के ज्ञानवार्तानो लाभ थतो नथी अने तेना आत्मानुं तो उलटुं भूंडुं थाय छे केमके जगतना जेवी अहीं रीत नथी अने अहीं तो माया पर रीत छे. अने जगतमां जे कथा, वार्ता, कीर्तन थाय छे अने त्यां स्त्री–पुरुष भेगा थईने स्त्री–पुरुष एक बीजानां मोढां जुए छे अने हांसी–मश्करी करे छे, तेवी रीते अमारी पासे नथी.

—अने अमारी पासे आवीने तो काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, स्नेह, मानादिक जे जीवना अंतरशत्रु तेने टाळवा अने धर्म, ज्ञान, वैराग, भक्ति आदिक जे कल्याणकारी गुण ते शीखवा अने पंचविषयनी वासनानो त्याग करवो. अने जे निर्वासनिक थाय छे तेने ज अमारो अने अमारा संतनो अखंड संबंध रहे छे अने ते अमारा अक्षरधामने पामे छे. ते सारु सावधान थईने सत्संग करवो." एवी रीते महाराजे पोताना भक्तने शीक्षाना वचन कह्यां.

इति श्रीमुखसिद्धांत २०६ समाप्त।



श्रीमुखसिद्धांत २०७ विषय :–देहमां जीव अने जीवमां भगवान

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ ना भादरवा वदि १२ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये सुतार भक्त विठ्ठल कल्याणने घेर उत्तरादे चार ओरडानी ओशरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी पटेल जेसंगभाई ईश्वरदासे हाथ जोडीने प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! आ देहने विषे जीव केम रह्यो हशे? अने जीवने विषे भगवान केवी रीते रह्या छे? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "प्रथम तो देहनुं स्वरूप जाणवुं. ते देह केवो छे? तो मायाना जे चोवीस तत्त्व तेनो देह छे. ते तत्त्व कयां? तो दश इन्द्रियो, पांच भूत, पांच विषय अने चार अंतःकरण; ए जे चोवीस तत्त्व तेनो देह छे. तेमां जीवना देहने पिंड कहे छे अने ईश्वरना देहने

ब्रह्मांड कहे छे, ते जेटली ब्रह्मांडमां वस्तु छे तेटली पिंडमां पण वस्तु छे. अने पिंडमां रह्यो जे चैतन्य तेने जीव कहे छे अने ब्रह्मांडमां रह्यो तेने ईश्वर कहे छे. अने ए जीव अने ईश्वर बेयना आधार अक्षरब्रह्म छे अने ते अक्षरब्रह्मना आधार परमात्मा परब्रह्म भगवान छे.

जेम गरवामां दीवो मूक्यो होय तेम जीव देहमां रह्यो छे; अने जेम गरवाना फांकोरामां थईने दीवानो प्रकाश बहार नीसरे छे तेम चोविस तत्त्वनी वृत्तियोए करीने जीव जे जे बहार क्रिया करे छे . अने जेम दीवो गरवामां रह्यो छे तो पण गरवा थकी जुदो छे तेम जीव देह थकी जुदो छे; एवी रीते देहमां जीव रह्यो छे.

—अने जीवमां भगवान केम रह्या छे? तो जेम नेत्रमां सूर्य रह्यो तेम जीवमां भगवान रह्या छे. ते जेम सूर्यना प्रकाश विना नेत्र कांई देखावाने समर्थ नथी तेम भगवानना अंगनो प्रकाश जे अक्षरब्रह्म जे ज्ञान ते विना जीव जे ते कांईए करवाने समर्थ नथी. एवी रीते जीवमां भगवान रह्या छे.

—पण जीवने ज्यां सुधी अज्ञान छे त्यां सुधी ए जीव भगवानने जाणतो नथी. अने पंचविषयनी वासनाए करीने देहमां जीव बंधाई रह्यो छे तेणे करीने जन्ममृत्युने पामे छे. जेम दीवो जे ते दीवटने विषे वळगी रहे त्यां सुधी दीवानो अग्नि जे ते पोतानुं स्वरूप जे सूर्य तेने पामतो नथी. अने ज्यारे दीवेट, कोडीयुं अने गरवानो त्याग करे त्यारे पोतानुं कारण स्वरूप जे सूर्य तेने पामे छे, तेम जीव जे ते स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देहनी वासना तेनो त्याग करे त्यारे पोतानुं कारण स्वरूप जे अक्षरब्रह्म तेने पामे अने जीव ब्रह्मरूप थाय छे अने तेने जन्ममृत्युनां दुःख टळी जाय छे अने सर्वोपरि मोटपने पामे छे.

जेम दीवो दीवेट, कोडीयुं अने गरवानो त्याग करे तेने कोई आवरण रहेतुं नथी अने पोताना शुद्ध स्वरूपने पामे छे. अने तेने वधवुं-घटवुं ते मटी जाय छे. अने ज्यां सुधी दीवो पोताना शुद्ध स्वरूपने पामे नहीं अने ते दीवाना अग्निमां कोईक घणुंक वळतण नाखे तो ते अग्नि वृद्धि पामे अने वळतण न नाखे त्यारे पाछो ते अग्नि घटी जाय छे पण ते अग्निनी वृद्धि अखंड रहे नहीं. तेम जीवने ज्यांसुधी वासना होय त्यां सुधी तेने कोईक मोटा पुरुष मळे तेनो आशरो जीव करे अने ते पासेथी जेटलुं जेटलुं ज्ञान पामे छे तेटली तेटली मोटपने जीव पामे छे पण मायिक पदार्थे करीने जेटली मोटप छे ते सर्वे अंते नाश पामवानी छे.

जेम अग्नि तेल, घी अने लाकडा तेने करीने वृद्धि पामे छे अने ते वळी रहे त्यारे पाछो ते अग्नि घटी जाय छे. तेम जीव जे ते वासनाए करीने मायिक मोटपने पामे छे अने वळी ते मोटप नाश थई जाय छे अने जन्ममृत्युने भोगवे छे. अने ज्यारे मायिक मोटपनी इच्छानो त्याग करीने निर्वासनिक थईने पोतानुं शुद्ध स्वरूप जे अक्षरब्रह्म तेने पामे छे त्यारे सर्वोपरि अने अविनाशी मोटपने जीव पामे छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २०७ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २०८ विषयः—मनुष्यदेहे करवानुं कार्य.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ना भादरवा वदि १३ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये काछिया भक्त हरखजी माधवदासने घेर उगमणें बार ओरडानी ओशरीमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. श्वेत खेस अने अंगरखुं धारण कर्यां हतां अने

मुस्तके गुलाबी रंगनो फेंटो बांध्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "जेने परमेश्वरे मनुष्यदेह आप्यो छे तेने एम विचार करवो जे 'मने दुर्लभ एवो जे मनुष्यदेह ते प्राप्त थयो छे माटे तेने करीने मारे शुं करवानुं छे ?' एवो विवेक विचार करीने जोईए तो 'आ देहनां जे धन-माल, स्त्री-छोकरां, राज्य ए सर्वे नाशवंत छे अने ए सर्वे मायिक पदार्थ छे ते कोई एमांथी जीवना भेगुं आवे एम नथी. माटे ते सारु हुं शुं जतन करुं ?' एम समजीने ते मायिक पदार्थनी ममता मूकीने पोताने अविनाशी आत्मा समजीने ते आत्माना साचा सगा अने अविनाशी सुखना आपनारा भगवान छे तेमां प्रीति करवी एज जीवने अविनाशी सुख पामवानो उपाय छे पण ते विना आत्मा मायिक सुखे करीने सुखियो थाय एवो नथी. माटे अधर्मनो त्याग करीने आत्माना आत्मा एवा जे परमात्मा भगवान अने भगवानना संत तेनो आशरो करीने भगवाननुं भजन स्मरण करे त्यारे ज जीवने सुख थाय छे पण ते विना बीजा अनंत उपाय करे तो पण पंचविषयमां जीव कोई काळे तृप्ति पामे नहीं. माटे पंचविषयनो त्याग करीने भगवान भजे त्यारे ज जीवने सुख थाय.

माटे अमारा आश्रित थया होय तेने तो अविनाशी एवुं जे भगवानना धामनुं सुख तेने पामवानी इच्छा राखवी अने तेनुं जतन करवुं अने ते सुखनो अतिशय लोभ राखवो अने ते सुख सत्संगे करीने पमाय छे. ते सत्संग आज तमने प्राप्त थयो छे. माटे आळस अने प्रमादनो त्याग करीने देह छते ज पंचविषयनी वासनानो त्याग करीने निर्वासनिक थईने अक्षरधामने पामवुं.

पण मनुष्यदेहे करीने पशुनी पेठे विषय भोगववा ज नहीं, मनुष्यदेहे करीने तो सर्वे इन्द्रियोने पंचविषय थकी पाछी वाळीने नियममां राखवी अने तेथी पोताना आत्माने जुदा असंगी समजवो अने प्रतिलोभ दृष्टि करीने पोताने प्रत्यक्ष मळ्या एवा जे भगवान तेनां स्वरूपनुं ध्यान करवुं अने पोताना धर्ममां दृढपणें वर्तवुं. पछी भगवाननी इच्छा होय त्यां सुधी देह रहे अने देह पडशे त्यारे भगवान पोताना धामने पमाडशे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २०८ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २०९ विषय :-आत्माने विषे भगवान रह्या छे त्यारे उपासनादिक करवानुं कारण शुं ?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ ना भादरवा वदि १४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री सोजीत्रा मध्ये काछिया भक्त रणछोड नरोत्तमने घेर उत्तरादे बार ओरडानी ओशरीमां गादी-तकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी पटेल रणछोडभाई गिरधरभाईए हाथ जोडीने प्रश्न पूछयो जे "हे महाराज ! एम कहे छे जे सर्वेना आत्माने विषे भगवान रह्या छे. माटे आत्माने विषे भगवान रह्या होय त्यारे ते भगवानने पामवा सारु जप, तप, व्रत, उपवासादिक करवानुं शुं काम ? तथा तीर्थे जवानुं शुं फळ ? अने गुरु कर्यानुं शुं काम ? तथा जन्म-मरणनो भय कोने ? अने पूर्वे तो नारद सनकादिक भगवानना भक्त संत थई गया छे तेने तो भगवानने पामवा सारु बहु जप, तपादिक कष्ट सहन कर्यां छे ते कष्ट शुं करवा कर्यां हशे ? केमके आत्माने विषे भगवान रह्या छे ते जेने

पामवुं छे ते तो जीवनी भेगा छे माटे देहने मूकशे त्यारे ते जीव भगवान भेळा धामने पामशे. ए वात अमने समजाती नथी ते कृपा करीने समजावो."

पछी महाराज बोल्या जे "आत्माने विषे जे भगवान रह्या छे, तेने करीने जीवनुं कल्याण थतुं नथी अने ए तो कर्मना फळने आपवा सारु साक्षीरूपे भगवान रह्या छे अने भगवान तो साक्षीरूपे रह्या थका न्यारा छे. हवे न्यारा एवा जे भगवान तेनी जड अने चैतन्य बे प्रकृतिओ छे अने जड प्रकृति ते माया छे अने चैतन्य प्रकृति ते जीव छे. ते जड अने चैतन्य ए बेना प्रकाशक साक्षीरूपे भगवान रह्या छे. ते भगवान साक्षीरूपे रह्या थका जीव जे ते शुभ अने अशुभ जेवां जेवां कर्म करे छे तेवां तेवां कर्मनां फळने भगवान पमाडे छे पण ए साक्षीरूपे आत्माने विषे रह्या छे तेणे करीने जीवनुं कल्याण थतुं नथी.

अने जीवनुं कल्याण तो प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक मनुष्यरूपे भगवान जीवने मळे अने पोताना स्वरूपनो ज्ञाने करीने निश्चय करावे त्यारे जीवनुं कल्याण थाय छे पण साक्षीरूपे आत्माने विषे भगवान रह्या छे तेने करीने जीवनुं कल्याण थतुं नथी. अने जे भगवान साक्षीरूपे आत्माने विषे रह्या छे ते जीव शुभ-अशुभ क्रिया करे तेने 'हा केना' केहता नथी. केमके जगतमां केटलाक जीव चोरी, छिनाळी, दारू, माटी आदिक भूंडा कर्म करे छे अने तेने करीने अनंत प्रकारनां संतापने पामे छे पण तेने साक्षीरूपे रह्या जे भगवान ते भूंडा कर्मनी ना पाडता नथी.

अने साक्षीरूपे भगवान रह्या छे तेने जीव पोतानी मळे जाणतो पण नथी, केमके दृश्य होय ते द्रष्टाने जाणवाने समर्थ नथी. माटे देह दृश्य छे. अने तेनो द्रष्टा जीव छे. ते जीव देहने जाणे पण देह जीवने

જાણી શકે નહીં. તેમ જીવના દ્રષ્ટા ભગવાન છે. તે ભગવાનને જીવ જાણી શકે એમ નથી. જેમ દેહને સુખદુઃખ થાય છે તેને જીવ જાણે છે અને જીવને સુખદુઃખ થાય છે તેને દેહ જાણવાને સમર્થ નથી, તેમ જીવને સુખદુઃખ થાય છે તેને ભગવાન જાણે છે પણ જીવ ભગવાનને જાણવાને સમર્થ નથી અને જીવ તો પરતંત્ર છે કેમકે જીવ જ્યારે સુષુપ્તિમાં જાય છે ત્યારે ચોર આવીને તેના ઘરમાંથી સર્વે લઈ જાય છે તથા કોઈક તલવારે માથું કાપી નાખે છે, તો પણ તેનું જીવને ભાન રહેતું નથી. માટે જીવ તો પરાધીન–કાળકર્મને વશ છે.

અને ભગવાન છે તે તો જડ અને ચૈતન્ય એવી જે બે પ્રકૃતિઓ તેથી સદાય પર છે અને સ્વતંત્ર છે અને તે ભગવાનને કોઈનો આધાર નથી અને ભગવાન તો સ્વયં આધાર છે અને કૃપાસિંધુ છે. તે કૃપા કરીને જીવના કલ્યાણને અર્થે યુગ યુગને વિષે પૃથ્વી ઉપર પધારે છે ત્યારે તે ભગવાનને જીવ દેખી શકે છે પણ ભગવાન તો સદાય અક્ષરધામને વિષે છે, તે મર્મને તો અમારા એકાંતિક ભક્ત સાધુ જાણે છે અને જીવ છે તે અધર્મનો ત્યાગ કરીને તે પ્રત્યક્ષ ભગવાનનો આશરો કરે ત્યારે જન્મ–મરણનાં દુઃખ થકી મૂકાય અને જીવનો મોક્ષ થાય પણ તે વિના જીવનો મોક્ષ થાય નહીં. એવી રીતે ભગવાનના સર્વે અવતાર થઈ ગયા તેનો એ સિદ્ધાંત છે અને અમારો પણ એજ સિદ્ધાંત છે.

—અને જે શાસ્ત્રના મર્મને નથી જાણતા એવા જે બ્રહ્મકોદાળ આસુરી જીવ અને ઉપરથી સાધુના વેશધારી એવા જે દુષ્ટ પાપી તે એમ કહે છે જે ‘ ઘટઘટમાં ભગવાન રમી રહ્યા છે અને પાપ–પુન્ય પણ કોને છે ? અને વળી વિધિ–નિષેધનું પણ શું કામ છે ? અને જપ, તપ વ્રતાદિકે કરીને કોને પામવું છે ? અને જીવ જે તે બ્રહ્મમાંથી આવ્યો છે તે દેહને

मूकशे त्यारे ब्रह्ममां ब्रह्म मळी जशे अने जन्म–मरणनां दुःख थकी मूकाई जशे.' एम अति नीच अने पापी छे ते कहे छे. अने एवा पापी छे ते एम समजीने निःशंक थईने विषयने भोगवे छे अने मा-व्हेननो पण टाळो राखता नथी. अने मोढेथी एम कहे छे 'इन्द्रियो इन्द्रियोनां काम करे छे अने अमे तो असंगी छीए.' एवी रीतना ज्ञानना कथनारा अने तेने माननारा वेय देहने मूकीने अतिशय दुःखने पामशे अने ते तेना एकोतेर परिया सहित नरकमां पडे छे. अने एवा जे नीच अने पापी तेना वचननी जेने जेने प्रतीति आवे तेना पण आत्मानुं भूंडुं थाय छे अने अधोगतिने पामे. माटे जेने कल्याणने इच्छवुं होय तेने एवा पापीनो संग करवो नहीं.

अने वेदांत शास्त्रमां चोवीस तत्त्व कहीने पचीसमा भगवानने कह्या छे ते तो वेदांत शास्त्रने करनारे एम समजीने कह्युं छे जे जीव विनानां तत्त्व होय नहीं. माटे तत्त्व भेगो जीवने गण्यो छे अने पचीसमा भगवानने कह्या छे अने योगशास्त्रमां चोवीस तत्त्व अने पचीसमो जीवने कह्यो छे अने छव्वीसमा परमात्माने कह्या छे. माटे शास्त्रना अर्थ भूलीने जगतमां अज्ञानी गुरु छे ते भूंडां कर्म करे छे अने निःशंक थईने विषयने भोगवे छे अने परमेश्वरनी लेश मात्र पण शंका धरता नथी अने मनमां एम समजे छे जे 'अमे परमेश्वर छीए' माटे एम कहेनारा ते तो महा पापी अने चंडाळ छे. ते महा दुःखने पामशे.

माटे जेने पोताना आत्मानुं रूडुं करवुं होय तेने एवा अधर्मीना संगथी छेटे रहेवुं अने वळी एम समजवुं जे 'पूर्वे जे जे भगवानना अवतार थई गया छे तथा नारद, सनकादिक जे जे भगवानना भक्त संत थई गया छे तेनां वचन ते सत्य छे.' एम जाणीने पोताना धर्ममां

रहीने ज्ञान, वैराग, भक्तिने पामीने पंचविषयनी वासना थकी मुकावुं अने जे वासना मूके छे तेने ज जन्म–मरणनां दुःख टळे छे अने तेना आत्मानुं कल्याण थाय छे.

अने उंधी समजणवाळा जे अज्ञानी ब्रह्मकोदळ तेने मते तो मोक्ष पण खोटो थाय छे. केमके परब्रह्म परमात्मा एवा जे भगवान तेने जन्म–मरण ठेराव्युं जे सर्वे रूपे भगवान थया छे. माटे भगवानने पण जन्म–मृत्यु ठर्युं अने ए पण समजी समजीने समजशे तो पोताने भगवान मानशे तो पण जन्म-मरण तो रहेशे माटे एम जोतां पण एनो मोक्ष खोटो ठरे छे.

अने श्रीकृष्ण भगवानने विषे जे जे भावे जीव जोडाया तो ते सर्वे जन्म–मरणनां दुःख थकी मूकाईने भगवानना धामने पाम्या अने ऋषभदेव भगवानना पुत्र जे भरतजी ते अतिशय वैरागवान हता अने भगवानने प्रसन्न करवा सारु भरतखंडनुं राज्य त्याग करीने वनमां गया हता तो पण जो दयाए करीने मृगलामां स्नेह कर्यो तो तेने मृगलीने पेट जन्म धरवो पडयो, अने नारदे भोळपे करीने राजानी दाकरीनो हाथ जोयो तो ते पापे करीने मांकडानुं मोढुं थयुं अने जगतमां पण पण अपकीर्ति थई अने मोटुं लांछन लाग्युं. अने श्रीकृष्ण भगवाने गोपीयो संगे विहार कर्यो तो पण ब्रह्मचारी कहेवाया अने गोपीयोए पतिभावे करीने श्रीकृष्णमां स्नेह कर्यो, तो पण ते गोपीयो वेदनी श्रुतियो कहेवाई अने देहने मूकीने परमपदने पामी.

माटे श्रीकृष्ण सदाय माया पर हता तो तेना भक्त माया पर थया. अने ते भगवानने मायानुं कार्य मोह पमाडवाने समर्थ नथी. अने ए भगवान तो कृपा करीने गोपीओने पोताना दास जाणीने तेने

फुलमां सुगंध एक थई गई छे अने तलमां तेल एक रस छे अने जेम दूधमां घी रह्युं छे; तेम जीव देहमां देहरूप थई रह्यो छे ते जीवात्माने ज्ञानरूपी विवेके करीने देहथी नोखो पाडवो. हवे ज्ञान ते शुं? तो चोवीस तत्त्वरूप जे माया ते थकी आत्माने नोखो समजवो. जेम तलने घाणीमां पीलीने तेमांथी तेलने जुदुं काढे छे तेम चोवीस तत्त्वरूप जे माया ते थकी ज्ञानरूप जे घाणी तेने करीने आत्माने जुदो करवो.

ते केवी रीते जुदो करवो? तो शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध ए जे पंचविषय ते थकी आत्मा जुदो छे. अने श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, रसना अने घ्राण ए जे पांच ज्ञान इन्द्रियो ते थकी पण आत्मा जुदो छे. अने वाक्, पाणि, पाद, पायु अने उपस्थ ए जे पांच कर्म इन्द्रियो ते थकी पण आत्मा जुदो समजवो. अने पृथ्वी, जळ, तेज, वायु अने आकाश ए जे पांचभूत ते थकी पण आत्माने जुदो समजवो. अने मन, बुद्धि, चित्त अने अहंकार ए जे चार अंतःकरण ते थकी पण आत्मा जुदो छे. अने इन्द्रियो अंतःकरणना जे चौद देवता ते थकी पण आत्मा जुदो छे. ते देवतानां नामः—मनना देव चंद्र, बुद्धिना देव ब्रह्मा, चित्तना देव वासुदेव, अहंकारना देव रूद्र, श्रोत्रना देव दिग्पाल, त्वचाना देव वायु, चक्षुना देव सूर्य, रसनाना देव वरूण, नासिकाना देव अश्विनीकुमार, वाक्ना देव अग्नि, हाथना देव ईन्द्र, पगना देव विष्णु, शिश्नुना देव प्रजापति अने गुदाना देव यम; ए जे चौद देव ते थकी पण आत्मा जुदो छे. तेमां पांच भूत अने पांच विषय ते तमोगुण थकी थया छे अने दश इन्द्रियो रजोगुण थकी थई छे अने चार अंतःकरण अने चौद देवता ते सत्त्वगुण थकी थया छे. माटे 'त्रण गुणनुं कार्य जे चोवीस तत्त्वात्मक जे पिंड, ब्रह्मांडादिकरूप जे माया तेथी हुं चैतन्य आत्मा जुदो छुं.' एम समजवुं.

ते आत्मा केवो छे? तो अहंकार रहित आत्मा ते अखंड छे, अविनाशी छे अने सुखरूप छे, अने पिंड, ब्रह्मांडादिक जे माया छे ते दुखःरूप छे, पापरूप छे, नाशवंत छे अने स्वप्नवत् छे एम समजीने मायाना पदार्थने पामवानी इच्छानो त्याग करीने पोताने शुद्ध चैतन्य आत्मा मानीने सदाय हालतां-चालतां, खातां-पीतां सर्वे क्रियामां देह थकी पोताना आत्माने जुदो समजवो, कहेतां पंचविषयना पदार्थमां आसक्ति क्यारेय करवी नहीं. एवी रीते बीजो विवेक ज्ञाने करीने जाणवो.

हवे त्रीजो विवेक वैरागे करीने कहीए छीए जे वैराग विवेक पामवाने अर्थे उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय ए त्रणनां रूप जाणवां जोईए छीए, माटे तेने जाणवानी रीत कहीए छीए जे भगवाननी इच्छा जे उत्पत्ति करवी ते इच्छाने अक्षरे जाणी पछी ते अक्षरनी इच्छाए करीने प्रकृतिपुरुष जाग्रत थयो अने ते प्रकृति-पुरुषना योगे करीने प्रधान-पुरुष थया अने प्रधान पुरुष थकी महत्तत्व थयुं. ते महत्तत्व थकी विराट थयो छे अने ते विराट थकी ब्रह्मादिक देव थया छे. ए ब्रह्मादिक देव थकी मनुष्य, पशु, पक्षी, झाड पहाडादिक सर्वे विश्व थयुं छे. एवी रीते तपासी जोईए तो भगवाननो संकल्प कहेतां भगवानना धामना सुखनो एक लेश गंध ते प्रकृतिपुरुषमां आव्यो छे अने ते प्रकृतिपुरुषना सुखमांथी लेश प्रधानपुरुषमां आव्यो छे.

एवी रीते उतरतां उतरतां मनुष्यने तो ते भगवानना धामना सुखनो लेश पण नथी अने तेमां जीव सुख जेवुं माने छे ते तो मिथ्या भ्रांति छे. जेम झांझवानां जळ देखाय खरां पण तेने ऊँडुं के छीछरुं, खारुं के मोळुं कहेवाय नहीं. केमके ते झांझवामां मुद्दल जळ ज नथी. तेम प्रकृतिना कार्यमां सुख जेवुं जणाय छे पण झांझवानां जळनी पेठे

मिथ्या छे. अने वळी सूर्य अस्त पाम्या पछी जेम झांझवा देखाता नथी, तेम प्रलय समये जगत देखातुं नथी, माटे जगतनां सुख मिथ्या छे. एवी रीते समजीने मायानुं कार्य जे पंचविषयनां पदार्थ ते थकी वैरागने पामवुं. अने रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतमां प्रीति करवी. एवी रीते वैरागे करीने त्रीजो विवेक कह्यो.

हवे चोथो विवेक भक्तिए करीने कहीए छीए, जे प्रकृतिपुरुष थकी उत्पन्न थयां जे देव, मनुष्य तेमां तारतम्यता छे कहेतां एकथी एक उतरतां छे. माटे आलोकमां कोई मोटो चक्रवती राजा होय ते जेम आपणा उपर राजी थाय तेम तेनी आज्ञामां वर्तवुं अने ते राजानी आज्ञा पाळतां अने राजा प्रसन्न थतां बीजी वस्ती कुराजी थती होय तो पण ते सर्वेनो भय न राखतां राजानो पक्ष राखवो अने राजा जे रीते राजी थाय ते रीते वर्तवुं. केमके जेना उपर राजानी महेरवानी होय तो तेने वस्ती कांई करवाने समर्थ नथी. अने राजाना करतां जो कोई देव प्रसन्न थता होय तो ते राजानो भय न राखतां देव प्रसन्न थाय तेम करवुं. अने देवना करतां ब्रह्मा प्रसन्न थता होय तो ईन्द्रादिक देवनो पक्ष मूकीने ब्रह्माना पक्षमां रहेवुं. अने ब्रह्माना करता विराजपुरुष प्रसन्न थता होय तो ते ब्रह्मानो पक्ष पड्यो मूकीने तेनो भय न राखतां विराजपुरुषना पक्षमां रहेवुं. अने विराट कर्ता महत्तत्त्व प्रसन्न थता होय तो विराटनो पक्ष मूकीने महत्तत्त्वना पक्षमां रहेवुं. अने प्रधानपुरुष राजी थता होय तो महत्तत्त्वनो पक्ष मूकीने प्रधानपुरुषना पक्षमां रहेवुं. अने प्रधानपुरुषना करतां प्रकृतिपुरुष राजी थता होय तो प्रधानपुरुषनो पक्ष मूकीने प्रकृतिपुरुषना पक्ष राखवो अने प्रकृतिपुरुषना करतां अक्षरब्रह्मरूप मुक्त प्रसन्न थता होय तो प्रकृतिपुरुषादिक सर्वेनो पक्ष मूकीने तेनो भय न राखतां अक्षरब्रह्मरूप मुक्तनो पक्ष राखवो.

अने ए राजाथी ते अक्षरब्रह्मरूप मुक्त ए सर्वेना स्वामी अने सर्वेना आधार एवा जे परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान ते प्रसन्न थता होय तो तेने ते अक्षरथी लईने देव, मनुष्यादिक सर्वेनो पक्ष मूकीने प्रत्यक्ष परमात्मानो पक्ष राखवो अने तेनी आज्ञा पाळवी अने तेने प्रसन्न करवा अने ते प्रत्यक्ष भगवान मळ्या पछी ते विना बीजा सर्वे मत पंथ तथा बीजा देव ते सर्वेनो त्याग करीने प्रत्यक्ष मनुष्याकृति भगवान ते जेम प्रसन्न थाय तेवी रीते वर्तवुं, तेनुं नाम एकांतिक भक्ति कहेवाय छे. अने ते एवी रीतनी एकांतिक भक्तिए करीने जीवनी आत्यंतिक मुक्ति थाय छे अने ए भक्तिए करीने चोथो विवेक जाणवो.

अने एवी रीते प्रत्यक्ष भगवानने विषे दृढ निष्टा थई तेने कांई करवुं रहेतुं नथी अने ते तो देह छतां ज अक्षरब्रह्मरूप मुक्त थई रह्यो छे. अने एवा जे मुक्त ते तो जेनुं अन्न जमे छे तथा तेने कोई जळ पाय छे तथा तेने कोई वस्त्र ओढाडे छे तो ते सर्वेनुं कल्याण थाय छे तथा ते मुक्त नदी–तळावमां नहाय छे तथा जे जे स्थानकमां निवास करे छे ते स्थानक सर्वे तीर्थ कहेवाय छे अने एवा मुक्त तो भगवानने पण अतिशय दुर्लभ छे, कहेतां वहाला छे. माटे घणाक जन्मना शुभ संस्कार होय छे तेने ज एवा संतनो संग मळे छे अने जीवनुं साक्षात्कार कल्याण थाय छे." एटली वार्ता करीने पछी महाराज घोडीए अस्वार थईने पोताना मंदिरमां पधार्या.

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत २१० समाप्त ॥



श्रीमुखसिद्धांत २११ विषयः—ॐ मांथी जगतनी उत्पत्ति केवी रीते?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ना आसो सुदि ४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये पटेल शंकरभाई झवेरभाईने घेर उत्तरादे बार ओरडानी आगळ चोकमां गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी श्रीहरिकृष्ण महाराज बोल्या जे " सर्वे सांभळो! एक वार्ता करवी छे. अने आ वार्ता करीशुं तेमां एक अक्षरे करीने प्रथम समजवानी रीत कहेवाशे. अने ते एक अक्षरनो अर्थ वाणी पर छे ते अर्थ वाणीए करीने प्रथम कहेवाशे. अने ते वाणीए करीने एक अक्षररूप जे अर्थ तेने सिद्ध करावीने पछी ते वाणीनो त्याग करावाशे अने एक अक्षररूप जे वाणी पर अर्थ तेने विषे स्थिति करावाशे.

हवे ते वात कहीए तेने सुरत राखीने सांभळजो जे एक अक्षररूप जे सर्वेनुं कारण ॐ कार छे. ॐ कार एटले शुं? तो देह चतुष्टयातीत; देह चतुष्टयातीत एटले स्थूळ, सूक्ष्म, कारण अने महाकारण ए जे चार देह तेथी पर एवा जे ब्रह्म अने ब्रह्मना प्रकाशक एवा परब्रह्म तेनुं नाम देह चतुष्टयातीत कहेवाय छे. माटे ते देह चतुष्यातीत एवा जे ब्रह्म अने परब्रह्म तेने साक्षात्कार जाणवा अने तेने जाणीने पामवा, तेनुं नाम देह चतुष्टयातीत एवो जे एकाक्षर रूप जे ॐ कार तेनो अर्थ सिद्ध थयो जाणवो.

हवे ॐ कार रूप जे ब्रह्म अने परब्रह्म तेने साक्षात्कार क्यारे पमाय छे? तो ए चार देहना रूपने जाणीने तेथी पर थवाय छे त्यारे ते ॐ कार

रूप जे ब्रह्म अने परब्रह्म तेने पमाय छे. हवे तेने पामवानी रीत कहीए छीए जे ॐ कार रूप जे एक अक्षर ते थकी चार अक्षर थया छे अने ते चार अक्षर थकी बावन अक्षर थया छे. अने ते बावन अक्षरनी पाछी मेळवणी करीए तो ॐ कार रूप एक अक्षर रहे छे. तेम ॐ कार रूप एवा जे ब्रह्म अने परब्रह्म ते थकी चार अक्षर रूप चार देह थया छे, कहेतां ॐ कार रूप जे परमात्मा तेणे जीवोने पोतानुं स्वरूप जणाववाने अर्थे चार अक्षररूप चार देह उत्पन्न करी आप्या छे. अने ते चार देहे करीने आत्मा अने परमात्मानुं स्वरूप जणावीने पछी ते चार देहनो लय करावे छे. पछी ते आत्माने विषे ॐ कार रूप जे परमात्मा ते एक रहे छे अने ते आत्मानी मुक्ति थाय छे, कहेतां ते जन्म-मरण रहित थईने परमात्माना सरखा सुखने पामे छे.

हवे ॐ कार रूप एवो जे एक अक्षर ते थकी चार अक्षर रूप चार देह थया छे. ते चार देहने जणावीए छीए जे ॐ कार रूप जे एक अक्षर ते सर्वे अक्षरनुं बीज छे पण ते एक अक्षरे करीने ज्ञान थाय नहीं, तेथी एक अक्षररूप जे ॐ कार ते थकी चार मात्रा रूप चार अक्षर थया छे. ते मात्रा रूप चार अक्षरना नाम–(१) अ कार (२) उ कार (३) म कार अने (४) अर्धमात्रा ए चार अक्षर ॐ कार मांथी थाय छे. अने ए चार अक्षरने पाछा व्याकरणमां सांधे छे त्यारे तेनो पाछो ॐ कार एक अक्षर थाय छे.

तेम ॐ कार रूप जे परमात्मा तेणे पोताना स्वरूपने जणाववाने अर्थे चार अक्षररूप चार देह जीवोने सर्जी आप्या छे. तेमां अ कारने ठेकाणे जाडा पंचभूतनो स्थूळदेह छे अने उ कारने ठेकाणे झींणा पंचभूतनो बीजो सूक्ष्मदेह छे अने म कारने ठेकाणे त्रीजो वासनामय

कारणदेह छे, कारण एटले स्थूळ अने सूक्ष्म जेमांथी उपज्या छे एवो वासनामय जीव चैतन्य तेनुं नाम कारणदेह छे.

अने चोथो अर्धमात्राने ठेकाणे ए त्रण देहथी जुदो एवो जे आत्मा ते आत्माने विषे अहंवृत्ति तेनुं नाम अर्धमात्राने ठेकाणे चोथो महाकारण देह छे. अहंवृत्ति एटले त्रण देहनुं बीज छे, कहेतां अहंवृत्तिरूप जे आत्मा ते थकी स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देह उत्पन्न थया छे. हवे अहंवृत्ति एटले शुं? तो परमात्माने जाण्या विना पोताना आत्माने विषे जे 'हुं आत्मा, हुं ब्रह्म,' एम समजवुं तेनुं नाम अहंवृत्तिरूप महाकारण देह छे. ए अहंवृत्ति रूप जे महाकारण देह ते थकी स्थूळ, सूक्ष्म, अने कारण ए त्रण देह अने त्रण देहे करीने भासमान थयुं एवुं जे अखिल विश्व ते उत्पन्न थयुं छे.

माटे ए सर्वेना रूपने जाणीने तेनी जेम उत्पत्ति थई छे तेम तेने पाछुं लय करवुं. अने पछी ते त्रण देहथी जुदो पोताना आत्माने जाणीने ते आत्मानी अहंवृत्ति ज्यांथी उत्पन्न थई हती एवा जे ॐ कार रूप परमात्मा तेने विषे लय करी देवी, कहेतां परमात्माने जाण्या नो'ता तेथी आत्माने अहंवृति उत्पन्न थई हती माटे ते परमात्माने जाणीने ते अहंवृत्ति परमात्माने विषे जोडी देवी, कहेतां परमात्माना दासत्वपणांनी अहंवृत्ति धरवी जे 'हुं ब्रह्मरूप एवो परमात्मानो दास छुं.' एवी रीते चार देहथी जुदो पडीने परमात्मा प्रत्यक्ष ज्ञानदाता सद्गुरुनी मूर्तिने विषे जोडाय छे तेने ॐ कार रूप जे देह चतुष्टयातीत परमात्मा तेनो अर्थ सिद्ध थाय छे. अने तेनी मुक्ति थाय छे.

हवे चार मात्रा रूप जे चार देह तेनुं ज्ञान करावीए छीए जे अ कार मात्रारूप जे जाडा पंचभूतनो स्थूळदेह तेने प्रथम जणावीए छीए जे

अ कार मात्रा रूप जे जाडा पंचभूत एटले पृथ्वी, जळ, तेज, वायु अने आकाश ए पांच भूतनो स्थूळदेह छे. ते पांच भूतनी पचीस प्रकृति थई छे. तेमां पृथ्वीना पांच भाग–हाड, मांस, नाडी, त्वचा अने रोम, ए पांच भाग देहमां पृथ्वीना छे. अने जळना पांच भाग–वीर्य, मूत्र, श्वेद, लाळ अने लोही, ए पांच भाग देहमां जळना छे. अने अग्निना पांच भाग–क्षुधा, तृषा, निद्रा, आळस अने कान्ति, ए पांच देहमां अग्निना भाग छे. अने वायुना पांच भाग–चलन, वलन, धावन, प्रसारन अने आकोचन, ए पांच देहमां वायुना भाग छे. अने आकाशना पांच भाग–केड, उदर, हृदय, कंठ अने मुस्तक (तेनीपोल) ए पांच देहमां आकाशना भाग छे. एवी रीते जाडा पांच भूतनी पचीस प्रकृतिनो स्थूळदेह थयो छे.

अने ईश्वरनो स्थूळ देह विराट तेने विषे महत् पंचभूत छे; ते मोटी पृथ्वी, मोटुं जळ, मोटो अग्नि, मोटो वायु अने मोटो आकाश, ए पांचभूत ईश्वरना देहमां महत् छे अने ते ईश्वरना देहने ब्रह्मांड कहेवाय छे. अने ए महत् पंचभूत थकी सर्वे जीवोना देह थया छे, ते जीवोना देहने पिंड कहेवाय छे अने ते जीवोना देहने विषे अल्प पंचभूत कहेवाय छे माटे ए पांच भूत थकी पिंड, ब्रह्मांडादिक उत्पन्न थयां जे जे पदार्थ मात्र ते सर्वे अ कार मात्रानुं कार्य छे; अ कार मात्रानुं कार्य एटले मिथ्या छे. माटे मिथ्या रूप जे पंचभूतात्मक पिंड, ब्रह्मादिक सर्वे पदार्थ मात्र ते थकी आत्माने जुदा जाणवो, केमके जेने जे जाणे छे तेथी ते जाणनारो जुदो होय, माटे पंचभूतात्मक पिंड, ब्रह्माडने आत्माए जाण्युं, माटे ते पिंड, ब्रह्मांडने जाणनारो आत्मा ते पिंड, ब्रह्मांडथी जुदो छे. एवी रीते आत्माने निश्चय थयो अने पिंड, ब्रह्मांडादिकनी वासनानो त्याग कर्यो एटले पिंड, ब्रह्मांडादिकने मिथ्या जाण्युं.

हवे उ कार मात्रा थकी झीणा पंचभूतनो बीजो सूक्ष्मदेह उत्पन्न थयो

छे. ते सूक्ष्मदेहमां सूक्ष्म पंचभूतनी पचीस प्रकृति थई छे. तेमां सूक्ष्म आकाशना पांच भाग–अंतःकरण, मन, बुद्धि, चित्त अने अहंकार, ए देहमां पांच सूक्ष्म आकाशना भाग छे. हवे सूक्ष्म वायुना पांच भाग–प्राण, अपान, व्यान, उदान अने समान, ए देहमां पांच सूक्ष्म वायुना भाग छे. हवे सूक्ष्म अग्निना पांच भाग–श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, रसना अने घ्राण, ए पांच ज्ञानेन्द्रियो ते देहमां सूक्ष्म अग्निनो भाग छे. हवे सूक्ष्म जळना पांच भाग–वाक्, पाणि, पाद, पायु अने उपस्थ, ए पांच कर्मेन्द्रियो ते देहमां सूक्ष्म जळना भाग छे. हवे सूक्ष्म पृथ्वीना पांच भाग–शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध, ए पांच विषय देहमां सूक्ष्म पृथ्वीना भाग छे.

एवी रीते उ कार मात्रा थकी उत्पन्न थयो एवो जे पांच भूतनी पचीस प्रकृतिनो बीजो सूक्ष्मदेह तेने पण आत्माए जाण्यो, माटे ते थकी पण आत्मा जुदो छे, केमके जेने जे जाणे तेथी ते जुदो होय. माटे सूक्ष्मदेहने पण आत्माए जाण्यो माटे तेने जाणनारो आत्मा ते सूक्ष्मदेहथी जुदो छे. हवे अ कार अने उ कार ए बे मात्रा भेगी थई त्यारे तेनो ओ एक अक्षर थयो.

हवे त्रीजी म कार मात्रा छे. ते त्रीजी म कार मात्रानो त्रीजो कारणदेह थयो छे. ते कारणदेह केवो छे ? तो आत्माने पोताना स्वरूपनुं अज्ञान छे, तेनुं नाम कारणदेह छे, कहेतां 'स्थूळ अने सूक्ष्म ए बे देहथी तो हुं जुदो खरो. पण हुं केवो छुं? एम मने मारा स्वरूपनी खबर नथी.' एवुं जे पोताना स्वरूपनुं अज्ञान ते रूप अंधारुं तेनुं, नाम म कार मात्रा रूप त्रीजो कारणदेह छे. ते कारणदेह एटले अज्ञान, ते अज्ञानने पण आत्माए जाण्युं. त्यारे सद्‌गुरुए जणाव्युं के 'तुं अज्ञान नहीं; तुं तो अज्ञानने जाणनारो अज्ञानथी जुदो छे,' केमके जेने जे जाणे

तेथी ते जुदो होय. माटे अज्ञानने पण आत्माए जाण्युं. माटे अज्ञान आत्मा नहीं.

त्यारे आत्मा केवो छे ? तो अज्ञानथी विलक्षण छे, एटले ज्ञानरूप आत्मा छे. जेम कह्युं के फलाणो माणस चोर नहीं त्यारे ते शाहुकार ठर्यो, तेम आत्मा अज्ञान नहीं माटे आत्मा ज्ञानरूप छे. एवी रीते सद्गुरुए अनुभव कराव्यो त्यारे ते आत्माने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान थयुं के 'हुं स्थूळदेह नहीं, सूक्ष्मदेह हुं नहीं, कारणदेह जे अज्ञान ते पण हुं नहीं; अने हुं तो त्रण देहने जाणनारो त्रण देहनो साक्षी अने तेथी जुदो एवो आत्मा छुं, ब्रह्म छुं' एवो अनुभव त्रण देहने जाणनाराने थाय छे. एवी रीते म कार मात्रानो लोप थयो त्यारे अ कार अने उ कार बे मळीने ओ थयो हतो ते ओ ने मांथे म कारनो अनुस्वार चड्यो त्यारे अ कार, उ कार अने म कार ए त्रण मात्रा भेगी थई तेनो एक अक्षर ओं थयो.

हवे चोथी अर्धमात्रा रही; अर्धमात्रा एटले चोथो महाकारण देह छे, महाकारण एटले 'हुं आत्मा, हुं ब्रह्म' एवुं जे आत्माने विषे अहंपणुं, तेनुं नाम अर्ध मात्रा रूप चोथो महाकारण देह छे, हवे तेमां जे 'हुं पणुं' छे ते मायानो भाग छे. माटे 'हुं पणाए' रहित ब्रह्मरूप थवाय छे त्यारे माया टळे छे पण ज्यां सुधी 'हुं पणुं' होय त्यां सुधी जन्म-मरण टळतुं नथी. ते आत्माने विषे जे 'हुं पणुं' ते क्यारे टळे ? तो अहंकारे रहित एवा जे प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिक तेने विषे दृढ दासपणुं थाय छे त्यारे अहंकार टळी जाय छे अने ते आत्मा अहंकारे रहित ब्रह्मरूप मुक्त थाय छे पण प्रत्यक्ष भगवानना दास थया विना बीजां कोटी साधन करे, भेख ले, संन्यासी थाय, परमहंस थाय, ऊँधे मांथे तप करे, तो पण प्रगट भगवानना दास थया विना अहंकार

रूप जे माया ते कोई काळे टळती नथी. ते उपर गीताना पांचमा अध्यायमां १४ श्लोक–

दैवी ह्येषा गुणमयि मम माया दूरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥

अर्थः–श्रीकृष्ण भगवान कहे छे जे 'दैवी अने गुणमयि एटले सत्त्वगुणनी संपत्ति जे धर्म, ज्ञान, वैरागे करीने आत्माने विषे स्थितिए करीने हुं ब्रह्म अने तेनुं कार्य जे स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ते रूप जे मारी माया, कहेतां मने नथी जाण्यो ते रूप जे माया ते मने जाण्या विना दुःखे करीने पण तराय नहीं. अने मने पामे कहेतां मारो आश्रय करे तो ते तत्काळ मायाने तरीने मारा धामने पामे.'

वळी गीताना १८मा अध्यायमां ६६ श्लोकमां कह्युं छे–

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥

अर्थः–श्रीकृष्ण भगवान अर्जुनने कहे छे के 'तारा मन कल्पित एवा जे सर्व धर्म तेनो त्याग करीने मारा चरणनो आश्रय कर. हुं तने सर्व पाप थकी मुकावीश.' कहेतां स्थूळ, सूक्ष्म, कारण अने महाकारण ए चार देह रूप जे सर्वे पाप ते थकी मुकावीश.

हवे तेमां भगवाने शुं कह्युं छे? तो जेम कोई पुरुष अंधारे घरमां बेठो होय. ते पुरुष सूर्यने एम कहे जे 'सूर्य, तुं मारुं अंधारुं टाळ.' त्यारे ते सूर्ये कह्युं के 'तुं घरमांथी बहार नीसरीने मारुं दर्शन कर पछी हुं तारुं अंधारुं दूर करीश,' कहेतां सूर्यनुं दर्शन करशे एटले मूळ अंधारुं ज नथी पछी अंधारुं काढवुं शुं छे? अने सूर्यना दर्शन विना तो सर्वे अंधारुं ज छे. माटे टळे केम? तेम ए तो दृष्टांत अने तेनुं सिद्धांत ए छे जे भगवाने अर्जुनने कह्युं के 'मारा आश्रय विना सर्वे माया ने माटे

तरीने जवुं क्यां ? अने मने पाम्यो एटले माया ज नथी. माटे तरवुं शुं छे ? ते सारु प्रत्यक्ष भगवानना आश्रय थकी ज महाकारण रूप जे अहंवृत्ति ते टळे छे. अने ते आत्मा ब्रह्मरूप थईने मोक्षने पामे छे अने जन्म-मरणे रहित थाय छे अने अखंड स्थितिने पामे छे. अने ते मुक्त चारे देहनां रूपने जाणीने तेथी असंगीपणें वर्ते छे.

ते चारे देहनां रूपने जाणवानी रीत कहुं छुं जे (१) प्रथम स्थूळ देह पचीस प्रकृतिनो छे, तेनी जाग्रत अवस्था, विश्वाभिमानी जीव, नेत्र स्थानक, स्थूळभोग, वैखरीवाचा, रजोगुण अने अ कार मात्रा; एवी रीते स्थूळाभिमानीना आठ स्थान, भोगादिक छे; माटे तेने जाणनारो आत्मा तेथी जुदो छे. (२) अने बीजो सूक्ष्म देह, तेनी स्वप्न अवस्था तेजसाभिमानी आत्मा, कंठस्थानक, वासनामय भोग, मध्यमवाचा, सत्त्वगुण, उ कार मात्रा; एवी रीते लिंगाभिमानीना आठ स्थान, भोगादिक छे; तेने जाणनारो आत्मा तेथी जुदो छे. (३) अने त्रीजो कारण देह, तेनी सुषुप्ति अवस्था, प्राज्ञाभिमानी आत्मा, हृदय स्थानक, आनंद भोग, पश्यंतिवाचा, तमोगुण, म कार मात्रा; एवी रीते कारणाभिमानीना आठ स्थान, भोगादिक छे; तेने जाणनारो आत्मा तेथी जुदो छे. (४) अने चोथो महाकारण देह, तेनी तूर्यावस्था, प्रत्यगात्माभिमानी आत्मा, मूर्ध्निस्थानक, परमानंद भोग, परावाचा, शुद्ध सत्त्वगुण, अर्धमात्रा; एवी रीते महाकारणाभिमानीना आठ स्थान, भोगादिक छे, माटे तेने जाणनारो आत्मा ते महाकारण देहथी पण नोखो छे. एवी रीते अकार, उ कार अने म कार ए त्रण मात्रा अने अर्धमात्रा एटले त्रण मात्रा जे थकी थई छे एवी जे अर्धमात्रा ते मात्राने 'अहं ब्रह्मास्मिन्' अभिमानी आत्मा जाणवो.

माटे ए सर्वेने जाणीने ते चार देहथी पोताना आत्माने जुदो जाणीने

शुद्ध ब्रह्मरूप थईने पछी जेणे एवी रीतनुं ज्ञान आपीने शुद्ध ब्रह्मरूपनी स्थितिने पमाड्यो एवा सद्गुरु प्रत्यक्ष परमात्मा भगवान रामकृष्णादिक तेनी मूर्तिनुं पोताना ब्रह्मस्वरूपने विषे ध्यान करवुं अने तेनो आश्रय, ध्यान अने सेवा तेणे करीने अहंवृत्तिरूप जे महाकारण देह तेनो लय थई जाय छे. अने ते आत्मा अहंवृत्तिये रहित शुद्ध ब्रह्मरूप महा मुक्त थाय छे अने ते अखंड स्थितिने पामे छे. अने वाणी पर जे ॐकाररूप जे देह चतुष्टयातीत अक्षरब्रह्म तेने विषे परब्रह्मने अखंड देखे छे. अने एवी रीतना ज्ञानने पामीने ब्रह्मरूप थईने प्रत्यक्ष परब्रह्मने पाम्यो जे मुक्त ते पछी कोई दहाडे मायाने देखतो नथी.

—माटे प्रत्यक्ष भगवानना दास थईने तेनी आज्ञामां वर्तवुं अने तेनी भक्ति अने ध्यान करवुं ए ज महाकारण देह टळ्यानो उपाय छे. माटे ते विना महाकारण देहरूप महा माया टळती नथी अने ते महाकारणरूप महा माया टळ्या विना जन्म-मरण पण टळतुं नथी. ते महाकारण ते शुं ? तो प्रत्यक्ष परमात्मा रामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेनी उपासना अने भक्ति विना 'तत्वमसि' आदिक महा वाक्यना वाच्यार्थनी सिद्धिए करीने 'अहं ब्रह्मास्मिन्, अहं ब्रह्मास्मिन्' एम जे वचन बोलवा शीखवुं तेनुं नाम महाकारण देह छे.

माटे जेने ते महाकारणरूप माया टाळवी होय अने जन्म-मरणे रहित थवुं होय तेने तो क्षर, अक्षरथी पर एवा जे प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक परमात्मा तेनो आश्रय करवो तो ते आत्मानो आत्यंतिक मोक्ष थाय छे. अने कोई समे परमात्मा पृथ्वी उपर प्रत्यक्ष न होय त्यारे तो ए प्रत्यक्ष भगवानना अवतारनी मूर्तिओ होय तेनो आश्रय राखीने शास्त्रमां कह्युं होय ते प्रमाणे वर्तवुं अने प्रत्यक्ष भगवान पोताने

मळे एवी इच्छाने राखीने परोक्षपणे परमात्मानी नवधा भक्ति कर्या करवी अने ते भक्तिने विषे निष्कामभाव राखवो कहेतां पोताने प्रत्यक्ष भगवान मळे एटली इच्छा राखवी पण ते विना मायिक पंचविषयना पदार्थने पामवानी इच्छा न राखवी. अने जे पंचविषयना त्याग करता होय अने बीजाने विषयनो त्याग करावता होय अने रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवाननी उपासना करता होय अने बीजाने उपासना करावता होय एवा जे साधु तथा ब्राह्मण तेनो समागम करवो. अने जे भगवानना अवतारने मानता न होय अने जे पंचविषयने भोगवता होय अने बीजाने विषय भोगववानी मोकळप मूकता होय एवा जे पापी मिथ्या ज्ञानी ब्रह्मकोदाल तेना संगनो त्याग करीने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेनुं भजन करवुं.

एवी रीते समजीने भजन करे छे तेने पछी अंतरयामी भगवान छे ते कृपा करीने प्रगट थईने दर्शन आपे छे. जेम प्रह्लादने भगवाने दर्शन आप्युं हतुं तथा ध्रुवने दर्शन आप्युं हतुं. इत्यादिक घणांक भक्तोए निष्कामभाव राखीने भक्ति करी छे तेने अर्थे भगवाने प्रगट थईने तत्काळ दर्शन आप्यां छे. माटे निष्कामभाव राखीने जे भगवाननी भक्ति करशे तेने जरूर भगवान दर्शन आपशे अने ते आत्मानो मोक्ष थशे. माटे ते अतिशय दुर्लभ समय ते आज तमारे सर्वने प्राप्त थयो छे ते तमारा भाग्यनो पार नथी. पण समजशे तेने लाभ छे."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत २११ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत २१२ विषय:-प्रगट सत्पुरुषने ओळखवानी रीत

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२२ ना आसो सुदि ६ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये पटेल नारणभाई रामदासने घेर दक्षिणादे वार ओरडानी आगळ गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां, कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे जीवने एक सुखनुं साधन छे अने एक दुःखनुं साधन छे. ते सुखनुं साधन कयुं छे? अने दुःखनुं साधन कयुं छे? तो एक पारको द्रोह करवो अने बीजुं पंचविषय भोगववानी तृष्णा राखवी. ए बे दोषने विषे महा दुःख रह्युं छे. जेम रात्रीने विषे अपार अंधारुं रह्युं छे अने ते अंधाराने विषे लेशमात्र पण दिवसनो प्रकाश होय नहीं तेम द्रोह अने तृष्णाने विषे अपार दुःख रह्युं छे अने ते द्रोह अने तृष्णावाळा पुरुषने सुखनो तो छांटो रहतो नथी. अने एक जेने संतोष होय अने बीजुं अद्रोहपणुं होय कहेतां कोई जीवने दुभवतो न होय; ए बे गुणने विषे अपार सुख रह्युं छे.

जेम सूर्यना प्रकाशने विषे लेशमात्र रात्रीनुं अंधारुं रहेतुं नथी तेम संतोष अने अद्रोहने विषे अपार सुख रह्युं छेअने ते सुखने विषे दुःखनो तो लेश नथी अने ते संतोषी अने अद्रोही पुरुष सुखना समुद्रमां अखंड झील्या करे छे अने द्रोहनो करनारो अने तृष्णावाळो पुरुष दुःखना दरियामां सदाय बुडया करे छेअनेते द्रोह अने तृष्णा असत्पुरुषना संगने विषे रह्यां छे अने अद्रोह अने संतोष ए सत्पुरुषना संगमां रह्यां छे.

हवे ते सत्पुरुषनां केवां लक्षण होय? अने असत्पुरुषनां केवां लक्षण होय? तो सत्पुरुषने विषे चार गुण होय छे. ते चार गुणे करीने सत्पुरुषने ओळखवा. ते चार गुण कया? तो एक तो सत्पुरुषने विषे वरसादना जेवो गुण होय छे अने बीजो हीराना जेवो गुण होय छे अने त्रीजो सूर्यना जेवो गुण होय छे अने चोथो सोनाना जेवो गुण होय छे.

हवे तेमां वरसादनो गुण केवो छे? तो ज्यारे वरसाद वरसे छे त्यारे सर्वे जीव प्राणीमात्रनां मन प्रफुल्लित थाय छे अने वनस्पति सर्वे नवपल्लव थाय छे, तेम ज्यारे पृथ्वी उपर सत्पुरुष प्रगट थाय छे त्यारे ते सत्पुरुष ज्ञानरूपी वरसाद वरसावे छे, तेने करीने मुमुक्ष जीव जे ते मोटा उल्लासने पामे छे अने ते सत्पुरुषना ज्ञानरूपी जळे करीने अद्रोह अने संतोषरूपी रस वडे करीने जीव तृप्त थई जाय छे. अने मुमुक्षु जीव मात्र जे ते महा सुखने पामे छे. अने जे असत्पुरुषना संगी छे तथा जे आसुरी जीव छे ते सत्पुरुषना ज्ञानरूपी जळे करीने ऊलटा संतापने पामे छे. जेम वरसादना जळे करीने बीजी सर्वे वनस्पति तो लीली अने प्रफुल्लीत थाय छे पण एक जवासो सूकाई जाय छे. तेम सत्पुरुष प्रगट थईने ज्ञानरूपी वरसाद वरसावे छे त्यारे जे मुमुक्षु अने दैवी जीव होय छे ते तो मोटा उल्लासने पामे छे अने संतोष अने अद्रोहादिक गुणे करीने पूरणकाम थई जाय छे. अने जे जीव आसुरी अने असत्पुरुषना शिष्य छे ते तो सत्पुरुषना ज्ञानरूपी जळे करीने ऊलटा जवासानी पेठे बळीने खाख थई जाय छे.

पछी ते आसुरी जीव जे ते सत्पुरुषनो द्रोह करे छे अने ते द्रोहे करीने तृष्णा अतिशय वृद्धि पामे छे अने ते द्रोह अने तृष्णाए करीने असत्पुरुषना संगी आसुरी जीव महा दुःखने पामे छे. अने जे मुमुक्षु

अने दैवी जीव छे ते तो सत्पुरुषना ज्ञानरूपी वरसादे करीने महा आनंदने पामे छे अने तेना कल्याण थाय छे. माटे सत्पुरुषने विषे एक तो वरसादना जेवो गुण होय छे, ते सत्पुरुष जे ते सर्वे मनुष्यने ज्ञान आपीने महा सुखिया करी मूकता होय.

अने बीजो सत्पुरुषने विषे हीराना जेवो गुण छे. ते हीरानो केवो गुण छे? तो हीराने लोढानी एरण उपर मूकीने एक मोटो अधमणनो घण लेईने ते हीरा उपर मारे तो पण ते हीरो रंचमात्र भागे नहीं अने चपटाय पण नहीं. अने बहु बळीयो आदमी होय अने ते ताणीने घा करे तो ते हीरो एरणमां अने घणमां पेसी जाय पण भागे नहीं, ते हीरो खरो कहेवाय छे.

तेम सत्पुरुष प्रगट थाय छे त्यारे ते सत्पुरुषने असत्पुरुष जे ते निंदा, द्रोहादिके करीने अनंत प्रकारनी उपाधी करे छे पण तेनी उपाधीए करीने सत्पुरुषनो प्रताप सामुं वधतो जाय छे. जेम हीरा उपर घणना घा मारे छे त्यारे ते हीरानुं खरुं प्रमाण थाय छे अने ते हीरो अमूल्य कहेवाय छे, तेम आसुरी जीव सत्पुरुषनो जेम जेम द्रोह करे छे तेम तेम सत्पुरुषनो प्रताप वृद्धि पामतो जाय छे.

अने मुमुक्षु अने दैवी जीव छे ते सत्पुरुषनो दृढ आश्रय करीने शीर साटे भजन करवा लागे छे. जेम हीरा उपर घणना घा पडया अने हीरो भाग्यो नहीं ते हीराने जेम शाहुकार अतिशय जतन करीने राखे छे अने ते हीराने विषे कोई दिवस साचा खोटानो संशय करे नहीं, तेम अनंत प्रकारनी उपाधीओ आसुरी जीव करे तो पण जेनो प्रताप रंचमात्र ओछो थतो नथी अने तेणे करीने सामुं प्रताप वृद्धि पामतो जाय छे त्यारे एम जाणवुं जे 'ते सत्पुरुष खरा.' एम जाणीने मुमुक्षु जीव जे ते शाहुकारना हीरानी पेठे सत्पुरुषनुं अतिशय जतन करे छे.

—अने जेम हीरा उपर ताणीने घणना घा मारतां ते हीरो घणमां अने एरणमां पेसीने तेमां खाडो पाडे छे तेम सत्पुरुषनो जे आसुरी जीव अतिशय द्रोह करे छे ते द्रोहना करनारानो वहेलो नाश थाय छे. ते पूर्वे रामचंद्रजीनो रावणे द्रोह कर्यो तो तेनो कुळ-कुटुंब सहित नाश थई गयो छे अने श्रीकृष्ण भगवाननो कंस, जरासंघ, शिशुपाळ आदिक जेणे जेणे अतिशय द्रोह कर्यो ते सर्वेनो समूळो नाश थई गयो छे अने सत्पुरुष (रामकृष्णादिक)नो प्रताप वृद्धि पाम्यो छे. एवी रीते हीराना जेवो गुण सत्पुरुषने विषे छे तेणे करीने सत्पुरुषने ओळखवा.

अने त्रीजो सत्पुरुषने विषे सूर्यना जेवो गुण होय छे अने असत्पुरुषने विषे दीवा-मशालना जेवो गुण होय छे. ते दीवा-मशालनो गुण केवो छे? तो दीवाने थोडोक वायु लागे तो ते दीवो ओलाई जाय छे अने मशालने पण झाझो वायु लागे तो मशाल पण ओलाई जाय छे. अने ते दीवा-मशालनो प्रकाश पण रात्रीने विषे अंधारामां सारो लागे छे पण दीवा-मशाल सूर्यना प्रकाशमां शोभे नहीं अने सूर्यने तो गमे तेटलो वायु लागे तो पण तेनो प्रकाश ओलाय नहीं अने झांखो पण थाय नहीं, तेम सूर्यरूप जे सत्पुरुष ते प्रगट थाय छे त्यारे दीवा-मशालरूप जे असत्पुरुष ते झांखा थई जाय छे.

—पछी ते असत्पुरुष जे ते सत्पुरुषथी छेटे रहीने तेनी निंदा करे छे अने पोताना शिष्योने एम कहे छे जे 'तमे कोई तेनी पासे जशो नहीं,' एम कहीने सत्पुरुषथी पोताना शिष्योने छेटे राखे छे. अने तेना शिष्यो आगळ पोतानो खोटो खोटो ढोंग करीने प्रताप देखाडे छे. जेम दीवो-मशाल रात्रीने विषे शोभता होय पछी सूर्य उगे त्यारे झांखा पडवा लागे त्यारे ते दीवा-मशालने घरमां अंधारुं होय त्यां लई जाय.

पछी एम कहे जे 'जुओ दीवानो प्रकाश केवो छे?' अने वळी दीवो एम कहे जे 'तमे कोई बहार सूर्यने अजवाळे जशो नहीं केम के सूर्य अमारी निंदा करे छे अने अमारो प्रकाश झांखो करी नाखे छे, माटे सूर्यने अजवाळे बहार जवुं नहीं.'

त्यारे ते दीवाने कोई एम के जे 'दीवाभाई चालोने सूर्यने अजवाळे आपणे जईए. ते सूर्य तमारी निंदा नहीं करे, सूर्य तो ऊलटो आपणने वधारे प्रकाश आपशे, पण सूर्य तो कोईनो प्रकाश अलसावतो नथी.' एम कोई कहे तो पण कांई दीवाने हा पडे जे 'सूर्यना अजवाळामां मारो प्रकाश रहेशे?' तेम सूर्यरूप एवा जे सत्पुरुष ते प्रगट थया होय त्यारे तो दीवा—मशालरूप जे असत्पुरुष जे ते अज्ञानरूपी रात्रीने विषे प्रकाश जणावे छे, पण तेने वायुरूप विषयनो संबंध थाय छे त्यारे तेनो प्रकाश ओलाई जाय छे, कहेतां विषयमां भ्रष्ट थाय छे. पछी तेने जगतमां पण कोई माने नहीं. जेम दीवो—मशाल ओलाई जाय त्यारे तेनो रात्रीमां पण प्रकाश देखाय नहीं, तेम असत्पुरुष विषयने संबंधे करीने भ्रष्ट थाय छे तेने पछी अज्ञानी जीव पण माने नहीं, तो सूर्यरूप सत्पुरुष प्रगट थाय त्यारे तो असत्पुरुषने माने ज कोण? न ज माने.

पछी ते असत्पुरुष पोताना शिष्योने एम कहे जे 'तेनी (सत्पुरुष) पासे जशो नहीं अने जो तेनी पासे जशो तो आपणो धर्म रहेशे नहीं. माटे आपणे तेनी पासे जवुं नहीं अने तेनुं मोढुं पण जोवुं नहीं अने जो तेनुं मोढुं जोशो तो तमारा धर्ममांथी पाडी नाखशे. एवी रीते तेनी पासे कळा छे माटे तेनी पासे जवुं नहीं.' जेम दीवो एम कहे जे 'सूर्यनुं मोढुं जोवुं नहीं, नहींतर आपणो प्रकाश झांखो

करी नाखशे, एवी सूर्य पासे जादु विद्या छे. तेम असत्पुरुष जे ते सत्पुरुष प्रगट थाय त्यारे एम कहे जे ' एनी पासे जशो नहीं नहींतर तेनी पासे एवी मोहनी विद्या छे जे तमे एना थई जशो, माटे एनी पासे जवुं नहीं.' एम कहीने असत्पुरुष जे ते पोताना शिष्योने रोकी राखे छे.

—तो पण तेमांथी जो कोई सत्पुरुषना ज्ञानरूपी प्रकाशमां आवी जाय अने ते दैवी जीव होय तो ते जीव सत्पुरुषने विषे प्रीति करे छे. पछी ते सत्पुरुष पासे आव्या न होय तेने असत्पुरुष एम कहे जे 'जुवो भाई ! अमे कहेता न होता जे तेनी (सत्पुरुषनी) पासे जशो नहीं, अने जो पेलो आपणो सेवक गयो तो तेने आपणा (अज्ञानरूपी) धर्ममांथी पाडीने भ्रष्ट (ज्ञानी) करी मूक्यो. माटे ते हवे आपणने माननारो नथी. ते सारु तमे हवे जेटला अमारा सेवक छो तेटला सम खाओ जे ' कोईए ते (सत्पुरुष)नी पासे जवुं नहीं.' पछी तेना सेवक सम खाय छे अने माळा उपाडे छे. एवी रीते असत्पुरुष जे ते पोताना सेवकोने सोगन खवडावे छे.

—तो पण जे दैवी अने मुमुक्षु जीव होय ते तो सूर्यरूप जे सत्पुरुषनो ज्ञानरूपी प्रकाश तेने देखीने रही शके नहीं, माटे ते तो सत्पुरुषनी पासे जाय छे अने तेनुं ज्ञान सांभळीने सत्पुरुषनो आश्रय करे छे अने ते जीव महा सुखियो थाय छे. अने जे आंख विनाना आंधळा पुरुषनी पेठे आसुरी जीव होय ते तो असत्पुरुषमां बंधाई रहे छे. पछी ते पुरुष द्रोह अने तृष्णा वडे करीने महा दुःखने पामे छे. अने ते जीवे कांईक सुकृत कर्युं होय जप, तप, तीर्थ, व्रत कर्युं होय तथा परोक्ष भगवाननी भक्ति करी होय ते सर्वे नाश पामी जाय छे अने ते सत्पुरुषना द्रोहनो करनारो मरीने घोर नरकमां जाय छे. अने सूर्यरूप एवा जे सत्पुरुष

तेनो प्रताप रंचमात्र ओछो थतो नथी. एवी रीते सूर्यना जेवो गुण प्रत्यक्ष सत्पुरुषने विषे होय तेणे करीने प्रत्यक्ष सत्पुरुष ओळखाय छे.

अने चोथो सोनाना जेवो गुण सत्पुरुषने विषे होय छे. ते सोनानो केवो गुण छे? तो सोनाने सूझे एटला वर्ष पृथ्वीमां दाटी मूके पण ते सोनाने पृथ्वीनो डाघ अडे नहीं. अने बीजी धातुने पृथ्वीमां घणां वर्ष दाटी मूके तो ते धातु धूळ भेगी धूळ थई जाय, तेम प्रत्यक्ष भगवान छे ते तो सोना जेवा छे. ते भगवान जे ते धूळरूप जे पंचविषय तेमां सूझे एटला दहाडा रहे तो पण भगवानने विषयनो गंध अडे नहीं. माटे प्रगट भगवान रामकृष्णादिक तेने विधि-निषेध कांई पाळवुं पडतुं नथी. केमके भगवाननी दृष्टिमां तो स्त्री के पुरुष एवो भेद नथी. माटे प्रत्यक्ष भगवान स्त्री, पुरुष बेयने ज्ञान आपीने कल्याण करवाने समर्थ छे.

—अने भगवान विना बीजा सूझे एवा मोटा देव, ब्रह्मादिक जेवा होय के मोटो अक्षरब्रह्मरूप मुक्त थया होय तो पण ते जो विषयनो संबंध राखे तो ते भ्रष्ट थई जाय. ते पूर्वे नारद महा मुक्त हता अने भगवाननुं मन कहेवाता हता तो पण जो तेणे राजानी दीकरीना हाथनो स्पर्श कर्यो त्यां तो पोतानुं मन विकारने पाम्युं अने पोताने परणवानुं मन थयुं अने मोटी फजेती थई. अने ब्रह्माए जो पोतानी दीकरीनुं मोढुं एकांतमां जोयुं त्यां तो कामे व्याकुळ थईने वांसे दोडया अने कलंक लाग्युं; ए आदिक घणा मोटा मोटाने विषयना संबंधे करीने कलंक लाग्यां छे. अने श्रीकृष्ण भगवान गोपीयो साथे रास रम्या अने घणीक स्त्रीयो भेगा रहीने अनंत प्रकारनी लीला करी तो पण ते श्रीकृष्ण ब्रह्मचारी कहेवाया अने ते सर्वे स्त्रीयोनुं पण कल्याण थई गयुं. माटे एवी रीते स्त्री-पुरुष बेमां रहीने ते बेयनुं कल्याण करवाने अने निर्लेप रहेवाने एक भगवान समर्थ छे. माटे एवी रीते चार गुण जेने विषे होय तेने सत्पुरुष जाणवा.

—अने एवा सत्पुरुषना सत्संगे करीने द्रोह अने तृष्णारूप महा दोष ते टळीने पूर्णकाम थवाय छे. अने ते आत्मा महा सुखने पामे छे. अने ज्यारे ते सत्पुरुषनुं परोक्षपणुं थाय छे त्यारे महा दुःखना देनारा एवा जे द्रोह अने तृष्णाना वधारनारा असत्पुरुष तेनुं बळ वृद्धि पामे छे अने तेना संगी जीवो महा दुःखने पामे छे. पछी ते जीवोना दुःख टाळवाने अर्थे वळी सत्पुरुष प्रगट थाय छे अने प्रगट थईने असत्पुरुषना मतनुं खंडन करे छे. अने ज्ञानरूपी जळ वरसावीने द्रोह अने तृष्णानो नाश करे छे अने अद्रोह अने संतोषरूपी गुण आपीने जीवने महा सुखिया करे छे. माटे जेने महा सुखिया थवुं होय तो तेने असत्पुरुषना संगनो त्याग करीने प्रत्यक्ष सत्पुरुषनो दृढ आश्रय करवो, एज सर्वे जीवनी हीतवार्ता छे."

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत २१२ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत २१३ विषयः—जीवनमुक्त अने विदेहीमुक्तनी समज

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२२ ना आसो सुदि ७ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये गांधी मनोरनी धर्मशाळा मध्ये पाट उपर गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी कसुंवल वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगमां पुष्पना आभूषण शोभी रह्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराजनी संध्या आरती थया केडे सर्वे सभा प्रत्ये भगवान *श्रीहरिकृष्ण महाराज बोल्या* जे "*जीव जेवो संग* करे छे तेवो जीवने रंग चडे छे. ते जो पामर जीवनो संग करे तो पामरना जेवा गुण आवे छे अने विषयीनो संग करे तो विषयी थई जाय छे अने मुमुक्षुनो संग करे

तो तेने विषयीनो त्याग करवानी इच्छा थाय छे, अने मुक्तनो संग करे तेने मायानुं आवरण टळीने ब्रह्मने विषे परब्रह्मना स्वरूपनो साक्षात्कार अनुभव थाय छे अने ते आत्मानी आत्यंतिक मुक्ति थाय छे.

हवे एवा मुक्त पण बे प्रकारना छे. ते बे प्रकारना मुक्त कया? तो एक जीवनमुक्त छे अने बीजो विदेहीमुक्त छे. हवे जीवनमुक्तनां शा लक्षण छे? अने विदेहीमुक्तनां शा लक्षण छे? तो जे जीवनमुक्त होय ते तो सर्व प्रकारे मायानो त्याग करीने पंचविषयनी वासनाए रहित वर्तता होय पण मायिक पंचविषयने क्यारेय भूलमां पण भोगवे नहीं अने ब्रह्मरूप थईने परब्रह्मने साक्षात्कार देखता होय अने परब्रह्मनुं भजन अने ध्यान करता होय अने ए स्थितिने क्यारेय चुकता न होय. जेम कमळनुं पान होय ते जळनी उपरने उपर रहे पण क्यारेय जळमां बुडे नहीं. अने वळी जेम माछलुं होय ते जळमांने जळमां रहे छे पण क्यारेय जळनी बहार जाय नहीं. तेम जीवनमुक्त छे ते मायिक पंच-विषयमां कोई दिवस लेवाय नहीं अने कमळना पाननी पेठे सदाय माया पर वर्त्या करे अने माछलांनी पेठे जळरूप जे ब्रह्म अने परब्रह्म तेना स्वरूपने विषे अखंड वर्त्या करे पण ए स्थितिने क्यारे भूले नहीं. अने ते जीवनमुक्त पुरुष जे ते संसार व्यवहारनो त्याग करीने पोता जेवा विरक्त मुक्त होय तेनी मंडळी बांधीने रहेता होय. एवां लक्षण जेने विषे जणाय तेने जीवनमुक्त जाणवा.

अने जे विदेहीमुक्त छे ते तो मायामां रह्या थका पण मायाथी विरक्त वर्ते छे. जेम जळकुकडी छे ते जळमां प्रवेश करीने पाछी आकाशमां उडी जाय छे. तेम विदेहीमुक्त छे ते मायामां प्रवेश करीने अनंत जीवोनां कल्याण करीने पाछा आकाशरूप जे ब्रह्म अने परब्रह्म तेने विषे अखंड वर्त्या करे छे.

અને તે વિદેહીમુક્ત અને જીવનમુક્ત બેય ભેગા રહેતા હોય પણ જે જીવનમુક્ત છે તે તો માયાનો ત્યાગ કરીને બ્રહ્મ અને પરબ્રહ્મના સ્વરૂપને વિષે અખંડ વર્ત્યા કરે છે અને જે વિદેહીમુક્ત છે તે માયામાં પ્રવેશ કરીને તેથી નિર્લેપ રહીને બ્રહ્મ અને પરબ્રહ્મના સ્વરૂપમાં અખંડ વર્ત્યા કરે છે.

જેમ જળકુકડી અને માછલું બે ભેગાં જળમાં રહેતાં હોય પણ જળકુકડી જળમાં રહીને પાછી આકાશમાર્ગે ઉડવાને સમર્થ છે અને માછલું તો જળનો ત્યાગ કરીને આકાશમાં જવાને સમર્થ નથી અને જો માછલું જળકુકડીનો વાદ લઈને જળથી વહાર નીસરવા જાય તો તે માછલાના પ્રાણ નાશ પામે. અને જળકુકડીને તો જળમાં અને આકાશમાં બેય ઠેકાણે જવાની ગતિ છે. અને બીજાં પક્ષી છે તે પણ વૃક્ષ ઉપર જે જળકુકડીના ભેગાં રહેતાં હોય તો પણ તે પક્ષી જળકુકડીનો વાદ લઈને જળકુકડી ભેગાં જળમાં પ્રવેશ કરવા જાય તો તે પક્ષીના પ્રાણ નાશ પામે.

તેમ જે વિદેહીમુક્ત છે તેને માથે વિધિ-નિષેધ નથી અને તે તો ચાહે તેમ કરવાને સમર્થ છે. અને જે જીવનમુક્ત છે તે તો માયાનો ત્યાગ કરીને બ્રહ્મ અને પરબ્રહ્મના સ્વરૂપને વિષે ગુલતાન કરે છે પણ તે જો વિદેહીમુક્તનો વાદ લઈને માયાનું ગ્રહણ કરવા જાય કહેતાં વિષયને ભોગવે તો તે તત્કાળ બ્રહ્મ-સ્થિતિમાંથી પડી જાય. જેમ માછલું જળ-કુકડીનો વાદ લઈને જળથી વહાર જાય તો તેના પ્રાણ નાશ પામે, તેમ જીવનમુક્ત વિધિ-નિષેધનો ત્યાગ કરીને વિષયને ભોગવે તો તે બ્રહ્મ-સ્થિતિમાંથી પડી જાય છે. માટે જીવનમુક્ત છે તે અખંડ માયિક પંચ-વિષયનો ત્યાગ કરીને દેહ પર્યંત વિધિ-નિષેધના ધર્મમાં વર્તે છે અને દેહનો ત્યાગ કરીને વિદેહીમુક્તના સાધર્મ્યપણાંને પામે છે. અને તે જીવન-મુક્ત દેહ મૂકીને ભગવાનના ધામમાં જાય છે અને તે વિદેહીમુક્તની સ્થિતિને પામે છે તે પાછો ફેર પૃથ્વી ઉપર જન્મને ધરતો નથી.

अने आलोकमां जे विदेहीमुक्त छे ते तो स्वयं पोते परमात्मा छे अने जे जीवनमुक्त छे ते तो विदेहीमुक्तरूप जे परमात्मा तेना भक्त छे अने विदेहीमुक्तरूप जे परमात्मा छे ते तो जीवोनां कल्याण करवाने अर्थे पोतानी स्व-इच्छाए करीने पृथ्वीने विषे वारंवार प्रगट थाय छे अने ते विदेहीमुक्तरूप जे प्रत्यक्ष परमात्मा तेनो आश्रय जे जीव करे छे ते जीवने ज्ञान आपीने जीवनमुक्तनी पदवीने पमाडे छे.

ते एवा विदेहीमुक्त कोण छे? अने जीवनमुक्त कोण छे? तो राम-कृष्णादिक भगवानना अवतार कहेवाय छे अने जेनुं भजन थाय छे ते विदेहीमुक्त छे. अने नारद, सनकादिक, शुकजी, ध्रुव, प्रह्लाद, अंबरीश, अर्जुन, जनकादिक ते सर्वे जीवनमुक्त छे. माटे विदेहीमुक्तरूप जे प्रत्यक्ष भगवान ते पृथ्वी उपर होय तेना आश्रम थकी ज जीवनमुक्त थाय छे, पण ते विना जीवनमुक्त थवातुं नथी. माटे ते जीवनमुक्त थवानो आज तमारे समय आव्यो छे माटे तमारा भाग्यनो पार नथी."

इति श्रीमुखसिद्धांत २१३ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २१४ विषय :–क्षर, अक्षर अने अक्षरातीतनां रूप.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२२ना आसो सुदि ८ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये पटेल लालाजी कसियाभाईने घेर उत्तरादे वार ओरडानी आगळ चोकमां गादतिकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता.सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराजनी संध्या आरती थया केडे पटेल रणछोडभाई रूगनाथदासे प्रश्न पूछयो जे "हे महाराज! क्षर, अक्षर अने अक्षरातीत ए त्रणनां शुं रूप छे? ते कृपा करीने कहो." पछी महाराज बोल्या जे "ल्यो एनां रूप कहीए ते सांभळो जे क्षरनुं तो ए रूप छे जे दस इन्द्रियो अने चार अंतःकरण अने इन्द्रियो अंतःकरणना ग्रहण करवामां जे जे पदार्थ आवे छे ते सर्वे क्षर छे एटले नाशवंत छे, कहेतां प्रकृतिपुरुष थकी उत्पन्न थयुं जे पिंड, ब्रह्मांडादिक मायिक आकार मात्र ते सर्वे क्षरनुं रूप छे. अने इन्द्रियो अंतःकरणरूप जे मायानुं टोळुं तेथी पर अने तेनो द्रष्टा एवो जे चैतन्य, निराकार, जाणनारो अने व्यापक आत्मा ते अक्षर छे अने ते अक्षररूप एवो जे आत्मा तेने अनादिनुं पोताना स्वरूपनुं अज्ञान छे ते अज्ञानने टाळवाने अर्थे ते आत्माने धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति सिद्ध करावीने जगतनो भास मिथ्या करावीने पंचविषयनी वासना टळावीने आत्माने ब्रह्म-स्थितिना पमाडनारा एवा जे प्रत्यक्ष सद्गुरुरूप हरि ते अक्षरातीत छे, परमात्मा छे, परब्रह्म छे.

ते अक्षरातीत कोण छे? तो रामकृष्णादिक भगवानना अवतार ते अक्षरातीत परब्रह्म परमात्मा छे, पण ते विना बीजो कोई अक्षरातीत नथी अने ते प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो आश्रय करीने तेने विषे भक्तिए करीने जोडाया जे जे मुक्त ते सर्वे अक्षर छे अने ते प्रत्यक्ष भगवान अने प्रत्यक्ष भगवानना भक्त ते विना पिंड, ब्रह्मांडादिक प्रकृतिनुं कार्य मात्र ते सर्वे क्षर छे कहेतां मिथ्या छे. एवी रीते क्षर, अक्षर अने अक्षरतीत तेनां प्रत्यक्षरूप छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २१४ समाप्त।



श्रीमुखसिद्धांत २१५ विषय :–अंतरदृष्टि अने बहारदृष्टि

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२३ ना कारतक सुद ८ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्णभगवान गाम श्री खंभात मध्ये श्रीहाटकेश्वर महादेवनी धर्मशाळामां पाट उपर गादीतकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. किनखाबनो सुरवाल पहेर्यो हतो अने सोनेरी लपेटानी डगली धारण करी हती. मस्तक उपर कसुंबल सोनेरी मोटी पाघ धारण करी हती अने कंठमां पुष्पना घणाक हार शोभी रह्या हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अनेपोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराजनी संध्या आरती थया पछी कृपादृष्टि करीने महाराज श्रीहरिकृष्ण परमात्मा बोल्या जे "सर्वे सांभळो! आज एक वार्ता करीशुं तेने जे समजशे तेने पछी कांई समजवानुं बाकी रहेशे नहीं. अने ते वात पराने पार कहेवाशे अने ते वात समजवामां अतिशय सहेली छे अने ते प्रमाणे चालवुं अने पाळवुं ते पण सुगम छे. अने पूर्वे जे जे मुक्त थई गया छे ते पण आ जे वात करीशुं तेने समजवे करीने ज थया छे पण ए वात समज्या विना कोई मुक्त थयो नथी अने थशे पण नहीं. अने ए वातने विषे चारे वेद अने छ शास्त्रनो सिद्धांत कहेवाशे. पण शास्त्रना जे मर्म छे ते माया पर एवा जे परमात्मा अने तेना संत तेना समागम विना पोतानी मेळे कोई देव, ब्रह्मादिक पण समजता नथी अने प्रत्यक्ष सत्पुरुषना समागम विना तो वेद, शास्त्र ऊलटा अवळां पडे छे, माटे जीवना मोक्षने अर्थे सत्पुरुषनुं जरूर काम पडे छे.

हवे वेद, शास्त्रमां जे मर्म छे तेने कहुं छुं जे वेद, शास्त्रने विषे एम कह्युं छे जे बहारदृष्टिनो त्याग करी अंतरदृष्टि करे ते आत्मानो मोक्ष थाय छे; ते अंतरदृष्टि ते शुं? अने बहारदृष्टि ते शुं? तो प्रकृतिपुरुष

थकी उत्पन्न थयुं एवुं जे पिंड, ब्रह्मांडादिक नामरूप तेने विषे जे वासनाए करीने प्रीति करवी तेनुं नाम बहारदृष्टि छे. अने ते मायिक नामरूपनुं निराकरण करीने कहेतां नामरूप पिंड, ब्रह्मांड तेने मिथ्या जाणीने तेनी वासनानो त्याग करीने ते पिंड, ब्रह्मांडथी जुदो एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप जाणीने ते आत्माना आत्मा एवा जे परमात्मा तेनुं आत्मामां ध्यान करवुं तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे.

—एम वेद, शास्त्रमां कह्युं छे तेने सत्पुरुषना समागम विना पोतानी मेळे शास्त्रमांथी सांभळीने बहारदृष्टिरूप जे मायानां नामरूप तेनो त्याग करवा जाय छे ते भेगो माया पर अने आत्माने विषे रहेवावाळा एवा जे रामकृष्णादिक परमात्मा भगवान तेनी मूर्तिनो पण त्याग करे छे. पछी अंतरदृष्टि करवा सारु आंखो मींचीने पोताना हैया सामुं ऊधुं घाली रहे छे. अने ते मनमां एम जाणे छे जे 'अमे अंतरदृष्टि करीए छीए अने तेने करीने अमारी मुक्ति थशे.' पण ते तो केवळ बहारदृष्टि छे. अने तेना तो आत्मानुं अतिशय भूंडुं थाय छे. केमके प्रकृतिपुरुष थकी उत्पन्न थया एवा जे मायाना आकार-नामरूप-तेनो त्याग करवो कहेतां मायिक नामरूपने मिथ्या जाणवुं ए तो ठीक पण ते भेगुं प्रकृतिपुरुषथी पर एवुं जे आत्मानुं व्यतिरेक स्वरूप अक्षरब्रह्म अने ए अक्षरब्रह्मना आधार अने अक्षरब्रह्ममां अखंड रहेनारा एवा जे परमात्मा परब्रह्म प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक तेनी मूर्तिने मिथ्या जाणीने तेनो त्याग करे छे ए मोटुं पाप छे. केमके ते तो माया पर रह्या थका पोतानी इच्छाए करीने जीवोने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान करावीने तेने ब्रह्मरूप करवाने अर्थे रामकृष्णादिक मनुष्य स्वरूपनुं धारण करे छे. ते मूर्तिनुं तो ध्यान, भजन अने सेवा करवां तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे, एम वेद, शास्त्रमां तो कह्युं छे.

—पण पोतानी मेळे मायानां नाम रूपने मिथ्या जाणीने त्याग करवा जाय छे ते भेगो माया पर प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्ति तेने पण मिथ्या जाणीने त्याग करे छे ए मोटुं पाप छे. माटे ते तो मायानो त्याग करीने एकलो वनमां रहेतो होय तो पण तेनी तो बहारदृष्टि छे. अने ते तो ध्यान करे छे त्यारे हैयामां केवळ अंधारुं घोर देखाय छे पण तेने कोई दहाडे पतंगीया जेटलो पण प्रकाश देखातो नथी अने तेने कल्याणनो मार्ग सूझतो नथी. केमके कल्याणना मार्गना बतावनारा एवा जे प्रगट भगवान तेनो तो ते त्याग करे छे माटे एम समजनारा केवळ बहारदृष्टिवाळा छे अने भूला पड्या छे.

जेम कोई पुरुषनी गायने घी थोडुंक थतुं हशे माटे तेणे कोईकने पूछ्युं के 'मारी गायने घी वधारे थाय तेनो कोई उपाय हशे?' त्यारे ते पुरुषे कह्युं के 'ते गायने आठ दिवस सुधी नित्य अच्छेर अच्छेर घी पाय तो तारी गायने घी वधारे थाय.' पछी ते गायना धणीए एम विचार कर्यो जे 'ते गाय रोज अच्छेर घी करे छे.' माटे आठ दिवस सुधी गायने दोही नहीं. पछे नवमे दिवस गायने दोवा गयो पण गायना आंचळमां तो दूध सूकाई गयुं ते दूध मुद्दल टींपुय नीसर्युं नहीं अने अच्छेर घी थतुं हतुं ते पण ऊलटुं नाश पाम्युं. पछी पेला बताव-नारा पुरुषने तेणे कह्युं के 'मारी गायने तो तें ऊलटी वसुकावी.' त्यारे ते पुरुषे कह्युं के 'में कह्युं हतुं ते प्रमाणे तें गायने घी पायुं?' त्यारे तेणे कह्युं के 'हा, मारी गाय रोज अच्छेर घी करती हती माटे में आठ दिवस सुधी गायने दोही नहीं, माटे गायना पेटमां घी रह्युं के नहीं? एवी रीते में तो कर्युं. पछी ते पुरुषे कह्युं' के 'ए तो तें अवळो उपाय कर्यो माटे गाय वसुकी गई. घी तो तेनुं ते पण ते घीने बहारथी नाळे करीने पायुं होत तो तारी गायने घी वधारे थात.'

—माटे अवळे उपाये जेम गाय वसुकी गई, तेम शास्त्रे कह्युं के 'आत्माना मोक्षने अर्थे बहारदृष्टिरूप जे मायाना पदार्थ तेनो त्याग करीने कहेतां मायिक पदार्थने विषे आसक्तिरूप जे बहारदृष्टि तेनो त्याग करीने आत्माने विषे रहेवावाळा एवा जे रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवान तेनी मूर्तिनुं आत्मामां ध्यान करवुं तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे,' एम वेद, शास्त्रमां कह्युं छे. पछे ते मर्मने जाण्या विना पोतानी मेळे एम समजे जे 'बहार देखाय छे ते सर्वे मिथ्या छे अने आत्मामां जे देखाय ते सत्य छे,' एम जाणीने मायानां नामरूप पदार्थ तेनो त्याग करे छे ते भेगा प्रत्यक्ष भगवानना रामकृष्णादिक अवतार तेनो पण त्याग करे छे ए मोटुं पाप छे. अने एम समजनारा यमपुरीना अधिकारी छे.

—केमके क्षर, अक्षरथी पर एवा जे परमात्मा प्रत्यक्ष रामकृष्णादिकनी मूर्तियो छे माटे तेनो जे त्याग करे छे ते तो महा पापी छे अने तेने तो असुर जाणवा अने तेनुं कल्याण कोई काळे थतुं नथी. केमके जेने पामवे करीने मुक्ति थाय एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेनो त्याग करे छे ए पाप छे. जेम ठाकोरजीना मंदिरमां झाडु काढवा जाय ते झाडु भेगी ठाकोरजीनी मूर्तिने काढी नाखे ते केवो मूरख कहेवाय! तेम परमात्माना मंदिर रूप जे आत्मा तेने विषे झाडु रूप जे मायिक पदार्थनी वासना तेनो त्याग करवाने अर्थे शास्त्रे कह्युं के 'नामरूपने मिथ्या जाणीने तेनो त्याग करवो,' एम सत्पुरुषे शास्त्रमां लख्युं छे. ते शास्त्रने सांभळीने मायिक पदार्थनो निषेध करवा जाय छे ते भेगुं प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनो पण निषेध करे छे ए मोटुं थाय छे. माटे सत्पुरुषना मुख थकी समजे त्यारे शास्त्रमां कह्या प्रमाणे अंतरदृष्टि अने बहारदृष्टिनी खबर पडे छे.

माटे केम समजे तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे? अने केनुं नाम वहारदृष्टि छे? तेने कहुं छुं जे काने करीने मायिक जगतना शब्द सांभळवा ते सर्वे वहारदृष्टि छे अने ते दृष्टि पापरूप छे. अने ए वहारदृष्टिरूप जे जगतना जीवोना बधाय शब्दो तेने मिथ्या अने पापरूप जाणीने तेनो त्याग करीने पछी माया पर जे ज्ञानदाता प्रत्यक्ष भगवान तेना मुखना शब्दो तेने प्रीतिए करीने एकाग्रह थईने पोताना कानमां भरवा, कहेतां प्रगट भगवान जे जे शब्द बोले तेने प्रीतिए सहित सांभळवा, तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे. अने आंखे करीने मायिक आकार जे पिंड, ब्रह्मांडादिक तेने देखावा तेनुं नाम वहारदृष्टि छे अने ते दृष्टि पापरूप छे. माटे ते मायिक पिंड, ब्रह्मांडादिकना आकारने मिथ्या अने पापरूप जाणीने तेनो त्याग करीने शुद्ध वृत्ति करीने पछी प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने आंखे करीने तदाकारपणें जोई रहेवुं कहेतां एकाग्र वृत्तिए करीने प्रगट भगवाननी मूर्तिनुं दर्शन करवुं, तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे.

—अने जीह्वाए करीने मायिक खट रसादिक रस खावा तेनुं नाम वहारदृष्टि छे अने ते पापरूप छे. माटे ते बधा रसनो त्याग करीने तेनो अभाव आणीने पछी प्रत्यक्ष भगवानना थाळनी प्रसादीनो रस तेने प्रीतिए करीने जमवो, तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे. अने त्वचाए करीने स्त्रीयादिक मायिक पदार्थना स्पर्श करवा तेनुं नाम वहारदृष्टि छे अने ते दृष्टि पापरूप अने जीवने नरकमां नाखनारी छे. अने ए सर्वे स्त्रीयादिक मायिक पदार्थना स्पर्शनो अभाव आणीने तेनो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनो प्रीतिए करीने स्पर्श करवो, तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे. अने नासिकाए करीने मायिक पदार्थ जे अत्तर, तेल, फूलेलादिकनो सुगंध लेवो तेनुं नाम वहारदृष्टि छे अने ते दृष्टि पापरूप छे. अने ते मायिक सुगंधनो त्याग करीने तेनो अभाव आणीने पछी प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने चड्यां जे

चंदन, पुष्पादिक तेनो प्रीतिए करीने सुगंध लेवो अने तेमां प्रीति जोडी देवी, तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे.

–अने वाणिये करीने जगत वहेवार संबंधी जे बोलवुं ते सर्वे बहारदृष्टि छे अने ते पापरूप छे. अने जगत वहेवार संबंधी बोलवानो त्याग करीने पछी प्रत्यक्ष भगवानना वाणीए करीने गुण गावा, तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे. अने हाथे करीने जगत वहेवार संबंधी जे लेवा–देवानी क्रिया करवी तेनुं नाम बहारदृष्टि छे अने ते जगत वहेवारनी लेवा–देवानी क्रियानो त्याग करीने पछी प्रत्यक्ष भगवान अने प्रत्यक्ष भगवानना भक्त तेनी सेवा हाथे करीने करवी, तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे; अंतरदृष्टि एटले ब्रह्मदृष्टि; ब्रह्मदृष्टि एटले परमात्माने देखवानी दृष्टि; तेनुं नाम अंतरदृष्टि कहेवाय छे. अने पगे करीने मायिक पदार्थने पामवा सारु जवुं तेनुं नाम बहारदृष्टि छे; बहारदृष्टि एटले मिथ्या खोटी दृष्टि, खोटी एटले झांझवानां जळ, स्वप्ननुं सुखडुं तेम कांई नहीं, तेनुं नाम बहारदृष्टि छे. अने ते बहारदृष्टिमां कोईने तृप्ति थती नथी. माटे ते मायिक पदार्थने पामवा सारु जवा–आववानो त्याग करीने पछी प्रत्यक्ष भगवान अने प्रत्यक्ष भगवानना संत तेने दर्शने चालीने जेवुं–आववुं तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे.

–अने मने करीने मायिक पंचविषय पामवाना संकल्प करवा तेनुं नाम बहारदृष्टि छे. अने मनमांथी मायिक पदार्थने पामवाना संकल्पनो त्याग करीने पछी प्रत्यक्ष भगवानने प्रसन्न करवाना संकल्प करवा, तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे. अने बुद्धिए करीने मायिक पंचविषयना पदार्थनो निश्चय करवो तेनुं नाम बहारदृष्टि छे. अने ते बुद्धिमांथी मायिक पदार्थना निश्चयनो त्याग करीने पछी प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो

बुद्धिए करीने निश्चय करवो, तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे. अने चित्ते करीने मायिक पंचविषयनुं चिन्तवन थाय छे तेनुं नाम बहारदृष्टि छे. अने ते मायिक पंचविषयना चिन्तवननो त्याग करीने पछी प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनुं चित्ते करीने चिन्तवन करवुं, तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे. अने अहंकारे करीने नात-जात, वर्णाश्रमादिकनुं अभिमान धरवुं तेनुं नाम बहारदृष्टि छे अने ते अभिमाननो त्याग करीने पछी प्रत्यक्ष भगवानना दासत्व-पणांनुं अभिमान धरवुं, तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे.

एवी रीते अंतरदृष्टिने अने बहारदृष्टिने जाणीने बहारदृष्टिनो त्याग करीने कहेतां जगत संबंधी पंचविषयनी वासनानो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिकनी मूर्तिनी सेवा, लीला अने चरित्रने विषे जोडाई जवुं ए ज अंतरदृष्टिने पामी रह्यो छे कहेतां तेनो मोक्ष साक्षात्कार थाय छे अने तेनां साधन सर्वे पूरां थई रह्यां छे. अने सर्वे शास्त्रनो ए ज सिद्धांत छे अने वेदनो पण ए ज सिद्धांत छे. तेना उपर वेदनां प्रमाण—

'घटवत् स्वर्गादि विनश्यति ॥१॥ सर्वं खल्विदं ब्रह्म इति श्रुतिः' ॥२॥

अर्थः—'घटवत् स्वर्गादि विनश्यति' एटले प्रकृतिपुरुष थकी उत्पन्न थयुं एवुं जे स्वर्गादि सर्वे जगत ते सर्वे घटनी पेठे नाशवंत छे कहेतां मिथ्या भ्रांतिवत् बहारदृष्टि छे.' माटे ते सर्वे मायिक नामरूपनुं निराकरण करीने कहेतां नामरूपने मिथ्या जाणीने ते थकी निर्वासनिक थईने पछी 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' एटले 'प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवा-ननी मूर्तिना अंग अवयवो सहित सर्वे ब्रह्म छे. कहेतां प्रत्यक्ष भगवा-नना हाथ ते पण परमात्मा छे, परमात्माना पग पण परमात्मा छे, परमात्मानी आंख पर परमात्मा छे, परमात्मानी वाणी पण परमात्मा छे, परमात्माना कर्ण ते पण परमात्मा छे, परमात्मानां मन, बुद्धि, चित्त अने

अहंकार ते पण परमात्मा छे, अने प्रत्यक्ष भगवानना वस्त्राभूषण आदिक शणगार ते पण परमात्मारूप छे. अने तेना संबंधने पाम्या जे जे मुक्त तथा जे जे स्थानक तथा जे जे पदार्थ ते सर्वे परमात्मारूप छे एटले कल्याणकारी छे. माटे जे जे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनी सेवाने विषे जोडाणा छे ते अंतरदृष्टिने पामी रह्या छे अने तेनी आत्यंतिक मुक्ति थाय छे.

—अने एम नथी समजता अने सत्पुरुषना समागम विना पोतानी मेळे शास्त्रने समजवा जाय छे तो तेने शास्त्र अवळुं समजाय छे. ते केम अवळुं समजाय छे? तो जीवने मायिक पदार्थनी वासना तजाववा सारु वेदमां कह्युं के 'नामरूप सर्वे जे जे इन्द्रियो, अंतःकरणना ग्रहण कर्यामां आवे ते मिथ्या छे अने अनुभवरूप जे आत्मा तेमां देखाय ते सत्य छे,' एम शास्त्रमांथी सांभळीने पछी ते पोतानी मेळे कहेशे के 'बहारदृष्टिए करीने जे जे देखाय ते तो मिथ्या छे अने जे आत्मामां देखाय ते सत्य छे,' एम जाणीने मायिक आकारनो निषेध करे छे ते भेगुं माया पर एवा जे दिव्यमूर्ति परमात्मा जीवोना कल्याण करवाने अर्थे प्रगट थया जे रामकृष्णादिक भगवान तेनो पण निषेध करे छे. अने ते एम कहे छे जे 'जे बहार देखाय छे ते तो मिथ्या छे अने आत्मामां देखाय ते सत्य छे,' एम जाणीने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवानना अवतारनी मूर्ति तेनो आकार अने बीजो आकार तेने सरखा माने छे ते तो पापी छे अने अतिशय अज्ञानी छे.

अने ते एम कहे छे जे 'बहार जे जे देखाय तेनुं तो अमे भजन करीए नहीं,' एम समजीने पाप बुद्धिवाळा छे ते दिव्यमूर्ति एवा जे रामकृष्णादिक प्रगट भगवाननी मूर्तियो तेनी सेवा, दर्शन के नाम लेता

नथी. अने भगवान विना बीजा मायिक पदार्थनुं तो रातदिवस नाम लीधा करे छे. केमके मिथ्या ज्ञाने करीने वासना तो टळी नहीं माटे पोताना दीकरानुं नाम ले छे, भाईनुं नाम ले छे, बापनुं नाम ले छे, भूख्यो थाय त्यारे रोटलानुं नाम ले छे, तरस लागे त्यारे पाणीनुं नाम ले छे, लूगडांनुं नाम ले छे, बळदनुं नाम ले छे, भेंसनुं नाम ले छे, गाडीनुं नाम ले छे, घोडानुं नाम ले छे; अने त्यागी होय तो पण ते तुंबडीनुं नाम ले छे, कोपीननुं नाम ले छे, कठारीनुं नाम ले छे, टोपीनुं नाम ले छे. एवी रीते नावा-धोवा, खावा-पीवा, पहेरवा-ओढवा, आदिक मायिक पदार्थनां तो रातदहाडो नाम लीधा ज करे छे पण जेने करीने आत्मानुं कल्याण थाय एवा जे एक प्रगट भगवान रामकृष्णादिक जेने भजने पाप मात्र बळीने भस्म थई जाय तेनुं एक नाम स्मरण के भजन करता नथी, माटे ते तो महा पापी छे अने ज्ञानहीन छे.

—केमके खरा ज्ञानी तो नारद, सनकादिक, शुकदेव, जडभरत, व्यास, वाल्मिकादिक मुनियो तेणे तो मायिक आकार मात्र जे पिंड, ब्रह्मांडादिक तेनो निषेध करीने पोते निर्वासनिक थईने ब्रह्मस्थितिने पामीने पछी प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवाननी मूर्तियोनुं रटण, पूजन, वंदन अखंड कर्युं छे. अने प्रगट भगवाननी लीलाचरित्र अने तेनी सर्वे चेष्टा तेनुं प्रीतिए करीने गान कर्युं छे. अने ते प्रत्यक्ष मूर्ति भगवानने विषे अंतरवृत्तिए करीने ध्यानमां सलग्नपणें जोडाई गया छे. अने पूर्वे जे जे मुक्त थई गया छे ते पण प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे जोडाववे करीने ज थया छे पण प्रत्यक्ष भगवाननी भक्तिना ध्यान विना कोई मुक्त थयो नथी. केमके ते विना कोई मुक्त थयो होत तो तेनुं शास्त्रमां नाम होत! माटे रामकृष्णादिक भगवानना भक्त विना बीजा कोईनी शास्त्रमां मुक्ति थई लखी नथी. अने चार वेद छ शास्त्र अने अढार पुराण अने बीजा

ऋषियोनी केटलीक स्मृतिओ तेने विषे तो रामकृष्णादिक प्रगट भगवानना स्वरूपना ज गुण महिमा अने चरित्र गाया छे.

अने जे आजना मूर्ख मिथ्या ज्ञानी थया छे ते एम कहे छे जे 'बहार देखाय ते तो मिथ्या छे अने आत्मामां देखाय ते सत्य छे.' पण मूर्खा एम नथी विचार करतां जे बहार तो कांई छे ज नहीं अने जे जे बहार देखाय छे ते तो आत्माने विषे ज देखाय छे. पण ज्यां सुधी आत्माने पोताना स्वरूपनुं अज्ञान छे त्यां सुधी तेने बहार-मांही एवो भेद समजाय छे. पण बहार तो कांई वस्तु नथी, केमके जीवात्मानुं स्वरूप तो सर्वव्यापक छे अने ते आत्मा विना एक अणुं पण क्यांय खाली नथी. माटे जे जे पदार्थ देखाय छे ते सर्वे आत्मामां ज देखाय छे. पण जीवने पोताना स्वरूपनुं अज्ञान छे ते अज्ञाने करीने उत्पन्न थयुं एवुं जे मिथ्या स्वप्नवत् जगत तेने विषे जीवने सत्यपणांनी प्रतीति छे एज जीवनी बहारदृष्टि छे.

—अने ज्यारे जीवने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिकरूप जे परमात्मा मले छे अने ते जीवने आत्मा परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान करावीने ब्रह्मदृष्टि-रूप जे जीवमां जगतनी सत्यता छे तेने मिथ्या करावे छे अने आत्मा परमात्माने विषे नास्तिकभाव छे तेने मटाडीने आत्मा परमात्माना स्वरूप-नी सत्यता दृढ करावे छे त्यारे ते आत्मा जे ते मायाना पदार्थनी पोताना जीवमां सत्यताए करीने वासना हती तेनो त्याग करे छे, कहेतां जगतना पदार्थने मिथ्या स्वप्नवत् जाणीने ते मायिक पिंड, ब्रह्मांडथी पोताना आत्माने जुदो मानीने ते आत्माने विषे रह्या एवा अने आत्माना प्रकाशक कहेतां अज्ञानरूपी अंधकारमां जीव हतो तेने ज्ञान आपीने प्रकाश कर्यो एवा जे आत्माना प्रकाशक ज्ञानदाता प्रत्यक्ष भगवान तेने विषे नवधा-

भक्तिए करीने जोडाई जाय छे, तेनुं नाम अंतरदृष्टि छे; पण ते विना बीजी अंतरदृष्टि नथी.

अने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवाननी मूर्तिने मूकीने जे एम कहे छे जे 'कोईक बीजा निरंजन निराकार भगवान छे,' एम मानीने ऊधुं घालीने आंखो मींचीने ध्यान करवा बेसे छे ते तो महा मूरख छे अने अतिशय अज्ञानी छे. अने एम समजनाराने असुर जाणवा. अने तेने कोई काळे पतंगीया जेटलो पण प्रकाश देखातो नथी. अने तेनुं कोई दहाडे कल्याण पण थतुं नथी. अने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिनो त्याग करीने आंखो मींचीने एकांत पकडीने बेसी रहेतो होय, परमहंस कहेवातो होय, साधु कहेवातो होय पण ते सर्वे बहारदृष्टिवाळा छे अने अज्ञानी छे.

अने जे एम समजतो होय जे 'निरंजन अने माया पर एवा जे परमात्मा अने वेद जेने नेति नेति कहे छे ते परमात्मा रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष छे.' एम जाणीने भगवाननी मूर्तिने आंखो उघाडीने जोई रहे छे, कहेतां दर्शन करे छे तो ते पण अंतरदृष्टि छे. अने ते मूर्तिने संभारीने आंखो मींचीने ध्यान करे तो ते पण अंतरदृष्टि छे. अने ते प्रत्यक्ष भगवाननी लीला, चरित्र, गुण, महिमा तेनुं श्रवण, कीर्तन करवुं ते पण अंतरदृष्टि छे. अने ते प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा, स्मरणादिक जे जे नवधाभक्ति करवी ते सर्वे अंतरदृष्टि छे. अने एवा अंतरदृष्टिवाळानुं ज साक्षात्कार कल्याण थाय छे. अने अमने पण एवा अंतरदृष्टिवाळा कहेतां प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिकने विषे दृढ उपासनावाळा भक्त ते ज गमे छे अने तेने देखीने हुं घणो प्रसन्न थाऊं छुं. अने तेने हुं वारे वारे बोलावुं छुं. अने ते मने कांईक पूछे तो हुं तेने तत्काळ तेनो उत्तर

आपुं छुं. अने तेना उपर मारी बहु ज कृपा थाय छे. अने ते मने कांईक फळ, पुष्पादिक पदार्थ आपवा आवे तो हुं तेने राजी थको लउं छुं अने एवाने कदापि संपत्ति न होय अने ते मने कांई आपे नहीं अने ऊलटुं मारी पासेथी अन्न, वस्त्रादिक देह निर्वाहने अर्थे मागी लीए पण जो तेने प्रत्यक्ष भगवानने विषे दृढ परमात्मापणांनी प्रतीति होय तो तेणे मारी संपूर्ण सेवा करी एम मानुं छुं अने तेनुं हुं साक्षात्कार कल्याण करुं छुं.

अने जेने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिकने विषे जगतकर्तापणांनी प्रतीति नथी अने ते मने कांईक पदार्थ आपवा आवे अथवा मारी सूझे तेटली सेवा करे पण ते मने गमे नहीं. अने एवा पुरुष सामुं जोता तो मारी आंख कळवा मांडे छे. अने ते साथे तो मारे बोलवानुं मन ज थाय नहीं. अने ते मने कांईक प्रश्न पूछे तो हुं तेने अवळो जवाब दउं छुं. अने ते मारी पासे बेठो होय तो हुं एम जाणुं जे 'हवे क्यारे अहींथी उठी जशे.' एवो तेना उपर मारे अभाव वर्ते छे. अने ते कोईक मारां वखाण करे तेने हुं एम जाणुं जे ते मने गाळो दे छे. एम प्रत्यक्ष रामकृष्णादिकने विषे सर्वोपरि परमात्मापणांनी प्रतीति जेने नथी तेना उपर मारे अभाव वर्ते छे.

ते अभाव शा सारु वर्ते छे? तो कांई स्वार्थ माटे अभाव नथी वर्ततो, पण ते एना आत्मानुं भूंडुं करे छे अने तेनो जे जे संग करशे तेनुं पण ते भूंडुं करशे. अने ते तो पोताना-आत्मानो घात करनारो आत्मघाती छे. माटे एवा आत्मघाती नास्तिक साथे अमारे बने ज नहीं, केमके तेनुं कल्याण कोई काळे थतुं नथी, माटे पोताना कल्याणनो जेने खप नथी तेनुं अमारे काम शुं? एवा पापी तो छेटे सारा. अने एवा नास्तिक होय ते ज्ञान कथे त्यारे एम कहे जे 'जगतनो कर्ता तो

अहीं आवतो नथी अने कोईने देखातो नथी. अने ए तो कांई उंचो आभलामां छे.' एम समजे छे ते ज बहारदृष्टिवाळो छे अने ते महा पापी छे अने नास्तिक छे. माटे मोक्षना खपवाळाने एवा नास्तिकनो संग करवो नहीं.

--अने जेने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिकने विषे जगतकर्तापणांनी प्रतीति छे अने ते प्रत्यक्षने भजने करीने मुक्ति माने छे. अने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक विना बीजो कोई कर्ता नथी एम समजीने प्रत्यक्ष पोताने मळ्या जे भगवान तेनी उपासना, भक्ति, सेवा, स्मरणादिक जे जे नवधा भक्ति करे छे ते ज अंतरदृष्टिवाळा छे अने तेनुं ज साक्षात्कार कल्याण थाय छे. माटे आ वार्ता सर्व शास्त्रनो सार छे अने कहेवा समजवामां सहेला जेवी छे पण वात पराने पार छे. अने आ वात कही एटलुं समज्यो तेने पछी कांई समजवानुं बाकी नथी.

माटे मायाना आकार मात्रनुं निराकरणपणुं करीने, कहेतां मिथ्या जाणीने पछी माया पर एवा जे आत्मा अने परमात्मा तेने सत्य जाणवा; तेमां आत्माने पोतानुं स्वरूप जाणवुं अने रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवानना अवतार तेने परमात्मा जाणवा एज अंतरदृष्टि छे. अने चार वेद अने सर्वे शास्त्रनो एटलो ज सार छे अने ते विना बीजी सर्वे बहारदृष्टि छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २१५ समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत २१६ विषयः—ज्ञानी अने अज्ञानीनी क्रियामां भेद.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना मागशर सुदि १ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री पीज मध्ये जोशी गणपतभाई जगजीवनने घेर उगमणे बार मेडा उपर गादीतकियेयुक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. किनखाबनो सुरवाल अने डगली धारण कर्यां हतां अने गुढा रंगनो रेटो केड उपर पहेर्यो हतो अने ते उपर कसुंबल शेलुं तारालुं बांध्यु हतुं अने एक शेलुं खभा उपर धारण कर्युं हतुं. कंठने विषे पुष्पना हार शोभी रह्या हता अने गुलाबना पुष्पना बाजु अने गजरा धारण कर्या हता. पाघमां बे कोरे फूलना तोरा लटकता हता अने बे कर्ण उपर पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान कृपा दृष्टि करीने पोताना भक्तजन प्रत्ये बोल्या जे "ज्ञानी अने अज्ञानी ए बेयनी क्रियामां घणो भेद छे. केमके ज्ञानी करतां अज्ञानीनां इन्द्रियो अंतःकरण घणाक अतिशय विपरीतभावे वर्ते छे. ते केवी रीते विपरीतभावे वर्ते छे ? तो अज्ञानी जे ते काने करीने पोतानुं ऊलटुं अतिशय भूंडुं थाय अने जीवने पाप लागे एवा शब्द सांभळे छे, त्वचाए करीने पोतानुं भूंडुं थाय एवो स्पर्श करे छे, आंखे करीने पण जीवनुं भूंडुं थाय एवां रूप जुवे छे, रसनाए करीने पण पोताने बंधन थाय अने महा पाप लागे एवा रस खाय छे. एवी रीते दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरणे करीने अज्ञानी जीव जे ते पोतानुं भूंडुं थाय एवी क्रिया करे छे अने ते पापे करीने अज्ञानी जीव जन्म, मरण अने चोराशीनां महा दुःख पामे छे.

अने परमेश्वरे तो जीवनी उपर घणीक कृपा करीने जीवने इन्द्रियो

अंतःकरण सर्जी आप्यां छे. केमके ते इन्द्रियो अंतःकरणे करीने प्रत्यक्ष परमात्मा पुरुषोत्तमनो आश्रय करे अने तेनी आज्ञामां इन्द्रियोने वर्तावे अने मायिक पंचविषयनो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवाननुं भजन करे तो ते जीवनुं कल्याण थाय छे अने ते जीव महा अविनाशी सुखने पामे छे. माटे एवो जे भगवाननो महा मोटो उपकार अने भगवाननी कृपा तेने जीव भूलीने पछी कुसंगे करीने ते इन्द्रियोए करीने पंचविषयमां आसक्त थाय छे अने ते पापे करीने जीव जे ते संसारने विषे जन्म, मरण अने गर्भवासनां वारंवार महा दुःखने पामे छे, ते दुःख कह्यां जाय एवां नथी. अने बाल अवस्थामां जीवने बहु दुःख थाय छे तथा जोवन अवस्थामां पण काम, लोभादिक अंतरशत्रु जीवने दुःख आपे छे अने अंत समे पण अनंत प्रकारनी आधि-व्याधिना रोग प्रगट थाय छे अने अंत समे जीवने महा दुःख थाय छे. ते दुःख ते कोईथी कह्यां जाय एवां नथी. अने ते दुःखने तो एक भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संत ते विना बीजो कोई टाळवाने समर्थ नथी.

जेम कोई पुरुषने दश-वीस शत्रु होय अने ते शत्रुए तेने मारी पकडीने केदमां नाख्यो होय. पछी ते एकलो पुरुष ते शत्रुने पूगी शके नहीं. पण ते एकला पुरुषनो जे धणी राजा होय ते राजाने पोकार करे अने ते राजा तेने शत्रु थकी मुकावे तो ते पुरुष शत्रु थकी मूकाय अने ते सुखियो थाय, पण ते विना एकलो पुरुष दश-वीस शत्रु मुकाववाने समर्थ नथी. तेम एकला पुरुषने ठेकाणे तो जीवात्मा छे अने दश-वीस शत्रुने ठेकाणे इन्द्रियो अंतःकरण छे. ते इन्द्रियो अंतःकरणे जे ते जीवने काम, क्रोध, लोभादिक दोषरूपी शस्त्रे करीने मारीने केद कर्यो छे अने पंचविषयरूपी हेडमां पूरी दीधो छे अने तेणे करीने महा दुःखने पामे छे. माटे एवा महा दुःखिया जीवना पोकारने सांभळीने राजाने ठेकाणे

जगत्कर्ता भगवान छे ते भगवान जीवना उपर कृपा करीने ते शत्रु थकी मुकाववाने अर्थे रामकृष्णादिकरूपे प्रगट थाय छे. ते प्रगट भगवान अने ते भगवानना निर्वासनिक संत ते जीवने मळे अने तेनो आश्रय जे जीव करे ते जीवने भगवान अने भगवानना संत ते धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्तिरूपी महा बळ आपीने जीवने महा बळने पमाडे छे त्यारे ते जीव जे ते इन्द्रियो अंतःकरणरूपी शत्रुनो पराजय करीने पोते ब्रह्मरूप थईने महा सुखने पामे छे अने भगवाननी एकांतिक भक्ति करीने अक्षरधामने पामे छे.

माटे जेने महा शत्रु थकी मूकाईने परमपदने पामवुं होय अने अविनाशी सुखने पामवुं होय तेणे तो प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संत तेनो आश्रय करवो अने तेनी आज्ञामां बराबर वर्तवुं. अने ते थकी ज्ञान पामीने इन्द्रियोरूपी शत्रुने नियममां करीने अंतःकरणने वश करवुं अने ए सर्वे थकी वैराग पामीने पोताना आत्माने ब्रह्मरूप मानीने भगवाननुं भजन करवुं. अने एवी रीते समजे अने जे भगवाननुं भजन करे छे ते जीव जे ते ब्रह्मरूप थईने आत्यंतिक मोक्ष जे अक्षरधामने तेने पामे छे.

—पण प्रगट भगवान कां ते भगवानना निर्वासनिक संत तेना आश्रय विना अने तेनी आज्ञा पाळ्या विना जीवनुं कल्याण थवानो अने भगवानना धाममां जवानो बीजो कोई उपाय नथी. ते सूझे तो आज प्रगट भगवान अने भगवानना संतनो आश्रय करो अने आज्ञा पाळो अने सूझे तो कोटी युग केडे समजो अने गमे तो एक वार कहे भगवान अने भगवानना संतनो आश्रय करो अने सूझे तो लाख वार कहे करो पण एटलुं कर्या विना जीवने छूटको नथी.

माटे पोताने मनुष्यनो देह अने प्रगट कल्याणकारी भगवान के

भगवानना निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी संत तेनो संग मळवो घणो दुर्लभ छे ते पण सुंदरविलासमां कह्युं छे—

मात मले पुनि तात मले, सुत भ्रात मले युवती सुखदायी;
राज मळे गजबाज मळे, सब साज मळे मनमां चित्त पाई;
भूरलोक मले सुरलोक मले, विधिलोक मळे वैकुंठ हि जाई,
ओर तो साज मले सब सुंदर पण संत समागम दुर्लभ पाई ॥१॥

एवी रीते भगवान अने भगवानना संतनो समागम अतिशय दुर्लभ छे. माटे ते समो आज तमारे प्राप्त थयो छे ते तमारा भाग्यनो पार नथी. माटे सावधान थईने पोताना आत्मानुं कल्याण करी लेवुं. एज तमारा हितनी वार्ता छे." एम कहीने महाराजे वार्तानी समाप्ति करी. पछी ते गणपतभाईना घरनां सर्वे मनुष्ये महाराजनी पूजा करीने महाराजनो आश्रय कर्यो.

॥ इति श्रीमुखसिद्धांत २१६ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत २१७ विषयः—मनुष्य स्वरूप भगवानने ओळखवानी रीत अने अष्टांगयोग.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ना मागशर सुदि ४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पिज मध्ये जोशी गणपतभाई जगजीवनने घेर उगमणे चार ओरडानी आगळ चोकमां गादीतकिये युक्त पलंग बिछाव्यो हतो ते उपर बिराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां पुष्पना हार पहेर्या हता. पाघने विषे फूलना तोरा लटकता हता अने बे कर्ण उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ संतमंडळ तथा देश देशना घणांक हरिभक्तनी मोटी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी गणपतभाईनो दीकरो हरनारायण तेणे महाराजने प्रश्न पूछयुं जे "हे महाराज! भगवाननुं मनुष्य स्वरूप ते केम ओळख्यामां आवे जे 'आ भगवान छे?' ते कृपा करीने कहो." पछी महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान कृपा दृष्टि करीने बोल्या जे "भगवाननुं स्वरूप तो भगवान थकी ज ओळखाय छे अने कां ए भगवानना एकांतिक संत ते थकी भगवान ओळखाय छे, पण ते विना मनुष्य स्वरूप भगवान ते ओळखाय नहीं.

जेम कोईक परदेशमांथी मनुष्य आव्युं होय अने तेने ओळखवुं होय तो ते मनुष्य पंडे एम कहे जे 'मारी फलाणी जात छे.' अने कां तेना भेगुं तेना देशमांथी मनुष्य आव्युं होय ते ओळखावे त्यारे ते परदेशी मनुष्य ओळखाय पण ते विना ते परदेशी मनुष्य ओळखाय नहीं. तेम भगवान पण परदेशी मनुष्यनी पेठे अष्ट आवरणथी पर एवुं जे अक्षरधाम तेना वासी छे. माटे ते भगवान पोते पंडे कृपा करीने पोतानुं स्वरूप ओळखावे त्यारे ज ते मनुष्य स्वरूप भगवान ओळखाय छे अने कां ते भगवान पोताना बीजा धामोमांथी पोताना संतने भेगा तेडी आव्या (जन्म धरावता) होय ते भगवानना भक्त संत ते प्रगट भगवाननुं स्वरूप ओळखावे त्यारे प्रगट भगवाननुं स्वरूप ओळखाय छे.

—पण ते विना कोई बुद्धि बळे करीने तथा शास्त्रने जाणवे करीने तथा अनंत प्रकारनी विद्याए करीने प्रगट भगवानने ओळखवा जाय पण तेने भगवान नथी ओळखाता. केम के बुद्धिए करीने जो भगवान ओळखाता होय तो कृष्णावतारमां ब्रह्मा केवा बुद्धिवाळा हता पण ते प्रगट श्रीकृष्ण मनुष्य स्वरूप तेने पोतानी बुद्धिए करीने ओळखी शक्या नहीं अने उलटो भगवानना मनुष्य चरित्र जोईने मोह थयो. तथा

ईन्द्रने पण मोह थयो छे. इत्यादिक घणाक मोटा मोटाने प्रगट भगवानना स्वरूपनो पोतानी मेळे ओळखवा गया छे तो ते सर्वेने मोह थयो छे पण पोतानी बुद्धि बळे करीने कोईने प्रगट भगवान ओळखाणा नथी. अने जेने ते प्रगट भगवान तथा ते प्रगट भगवाननी भेगा रहेनारा एना एकांतिक पंचविषयना त्यागी संत तेनो जेने विश्वास होय तो ते प्रगट भगवाननुं स्वरूप ओळखावे छे त्यारे ज तेने ओळखाय छे पण ते विना प्रगट भगवान ओळखाय नहीं. केमके ब्रह्मादिकने प्रगट भगवानना मनुष्य चरित्रने विषे मोह थयो छे तो बीजा मनुष्यने मोह थाय तेमां शुं कहेवुं ? माटे तेने तो मोह थाय ज. ते सारू प्रगट भगवानना स्वरूपनो निश्चय ते तो प्रगट भगवान अने ते भगवानना भक्त संत ते करावे छे त्यारे ज निश्चय थाय छे, ए सिद्धांत वार्ता छे.

ते केवी रीते भगवान अने भगवानना संत प्रगट मनुष्य स्वरूप भगवान ओळखावे छे ? तो ज्ञाने करीने निश्चय करावे छे. ते ज्ञान शुं ? तो धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति सिद्ध कराववा रूप अष्टांग योग सधावे छे. अने अष्टांग योगे करीने जीवने ब्रह्मरूप करीने ब्रह्मने विषे परब्रह्मनुं साक्षात्कार दर्शन करावे छे. अने जीव, ईश्वर, मायाना भेद टळावीने ब्रह्म अने परब्रह्म ए बे ज तेनी दृष्टिमां रहे छे त्यारे तेने प्रत्यक्ष मनुष्य स्वरूप भगवानने विषे सर्वोपरि पुरुषोत्तमपणांनो निश्चय थाय छे.

हवे ते अष्टांग योग ते शुं ? तो यम, नियम, आसन, प्राणयाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा अने समाधि–ए आठ साधननुं नाम अष्टांग योग कहेवाय छे. हवे तेनां लक्षण कहुं छुं. (१) तेमां पहेलुं यम ते शुं ? तो अधर्म, अनीति, कूड, कपटादिक जे दुष्ट कर्म तेनो त्याग करीने

पोत पोताना वर्णाश्रमना धर्ममां रहीने भगवान भजवा अने अधर्म कोई दिवस करवो नहीं, तेनुं नाम यम कहेवाय छे. (२) अने बीजुं नियम ते शुं ? तो उत्तम पंचविषयना भोगनो त्याग करवो, तेनुं नाम नियम कहेवाय छे. (३) अने त्रीजुं आसन एटले शुं ? तो पवित्र स्थानकमां रहेवुं कहेतां भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी संत ज्यां रहेता होय त्यां दृढ मन करीने रहेवुं, तेने आसन कहीए. (४) अने चोथुं प्राणायाम एटले शुं ? तो आहार, विहारादिक युक्त करीने प्राणने स्थिर करवो कहेतां सर्वे मायिक पंचविषय थकी संतोष पामवुं, तेने प्राणायाम कहीए.

—अने (५) पांचमुं प्रत्याहार एटले शुं ? तो देह—आत्मानो विवेक करीने देहने मिथ्या जाणीने आत्माने सत्य जाणवो अने स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देहनी जे चोवीस वृत्तियो तेने आत्माने विषे लय करवी अने आत्माने अक्षरने विषे एक करवो अने ते अक्षरने पोतानुं स्वरूप मानवुं, तेनुं नाम प्रत्याहार कहेवाय छे. (६) अने छट्ठुं ध्यान एटले ब्रह्मना प्रकाशक अने ब्रह्मना आधार एवा जे प्रत्यक्ष भगवान ज्ञानदाता रामकृष्णादिक तेनी मूर्तिनुं ध्यान करवुं अने ते ध्यान करतां जे जे पदार्थमां वृत्तियो जाय ते ते पदार्थने चार प्रकारना प्रलयनो विचार करीने नाशवंत, दुःखरूप अने स्वप्नवत् जाणीने पिंड, ब्रह्मांडादिक थकी वैरागने पामीने भगवानना स्वरूपमां वृत्तियोने राखीने अंगोअंगनुं चिंतवन करवुं, तेनुं नाम ध्यान कहीए. (७) अने सातमुं धारणा एटले शुं ? तो प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिमां मननी वृत्ति अखंड रह्या करे पण भगवाननी मूर्ति विना वृत्ति क्यांय जाय नहीं, तेने धारणा कहीए.

(८) अने आठमी समाधि एटले शुं ? तो पोताना आत्माने विषे

प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय करीने दृढ स्थिति थाय अने ते भगवाननी मूर्तिने अखंड देख्या करे पण प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपना मनुष्य चरित्रने विषे कोई दिवस संशय थाय नहीं अने इन्द्रियो अंतःकरणनी वृत्तियो भगवानना स्वरूपमां लीन थई जाय अने पिंड, ब्रह्मांडादिक पंचविषयनो संकल्प न थाय–जेम सुषुप्तिमां देहनी विस्मृति थई जाय छे तेम पिंड, ब्रह्मांडादिक पंचविषयनी विस्मृति थई जाय–अने एक भगवानना स्वरूपनी स्मृति रहे त्यारे चित्तनो निरोध थाय छे अने एवी रीते चित्तनो निरोध थईने जे प्रत्यक्ष भगवाननुं स्वरूप ओळखाय छे ते ज स्वरूप ओळखाणुं छे अने तेनो निश्चय टळतो नथी, तेने समाधि कहीए.

–तेमां यम, नियम, आसन अने प्राणायाम ए चार साधने करीने तो एक धर्म सिद्ध थाय छे अने प्रत्याहाररूपी एक साधने करीने आत्मनिष्टारूपी ज्ञान सिद्ध थाय छे. अने ध्यानरूपी एक साधने करीने वैराग सिद्ध थाय छे. अने धारणारूपी एक साधने करीने नवधाभक्तिरूपी साधनभक्ति सिद्ध थाय छे. अने समाधिरूपी एक साधने करीने प्रेमलक्षणारूपी सिद्धभक्ति सिद्ध थाय छे. एवी रीते प्रत्यक्ष भगवान तथा प्रत्यक्ष भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी निर्वासनिक संत ते अष्टांग योग रूप साधने करीने धर्म, ज्ञान, वैरागे सहित प्रेमलक्षणा भक्ति सिद्ध करावे छे. अने भक्तिए करीने प्रत्यक्ष भगवानना मनुष्य स्वरूपने विषे सर्वोपरि पुरुषोत्तम अक्षरातीतपणांनो निश्चय थाय छे अने ते जीव ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामे छे.

माटे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो विश्वास अने तेने विषे प्रीति जेने होय तेने ज मनुष्य स्वरूप भगवान ओळखाय छे. अने

जेने प्रत्यक्ष भगवान अने प्रत्यक्ष भगवानना निर्वासनिक संत तेनो विश्वास अने हेत न होय तेने कोई काळे प्रगट भगवाननुं स्वरूप ओळखातुं नथी. माटे एवी रीते भगवान अने भगवानना संत थकी ज्ञान पामे छे तेने ज प्रगट भगवाननुं स्वरूप ओळखाय छे अने तेनो निश्चय कोई काळे डगतो नथी.

—अने ते ज्ञान विना जे ढोंग करीने केटलाक समाधिओ करीने कंकु काढे छे तथा साकर काढे छे तथा लवींग काढे छे तथा समाधिमां माळा लावे छे तथा फूलना हार लावे छे. इत्यादिक वस्तु समाधि करीने देखाडे छे ते सर्वे कपट छे; पण ते कोई काळे सत्य नथी. माटे पडपंच करे छे ते पापी छे ते एवा ढोंग करीने जगतना भोळा लोकोने विश्वास अणावीने तेनी पासेथी स्त्री, द्रव्य अने रसास्वादरूपी विषयने भोगवे छे. अने पोते पण भ्रष्ट थाय छे अने तेनो जे विश्वास करे तेने पण भ्रष्ट करे छे अने ते बेय मरीने नरकमां जाय छे, माटे ते समाधिओ खोटी छे.

अने म्होरे कही जे ज्ञान समाधि ते सत्य छे. ते समाधि प्रगट भगवान अने प्रगट भगवान थकी ज्ञान पामीने पंचविषयनो त्याग करीने निर्वासनिक थया एवा जे भगवानना संत तेनी पासेज होय छे, पण ते विना बीजा मनुष्य, देव, ब्रह्मादिक कोई पासे ते समाधि होय नहीं. माटे प्रगट भगवान अने भगवानना संत थकी ज भगवाननुं मनुष्य स्वरूप ओळखाय छे, अने तेज सत्य छे. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

इति श्रीसुखसिद्धांत २१७ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत -२१८ विषय:-"तमने अमे सर्वोपरि पुरुषोत्तम जाणीए छीए."

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२३ ना मागशर सुदि ५ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री पिज मध्ये जोशी गणपतभाई जगजीवनने घेर उगमणें वार ओरडानी ओशरीमां गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगने विषे पुष्पना आभूषण धारण कर्यां हतां. केसरनी आड ललाटने विषे करी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः-पछी गाम सोजीत्राना व्यास कुबेरजी ईश्वरे महाराजने प्रश्न पूछयुं जे "तमने अमे सर्वोपरि पुरुषोत्तम जाणीए छीए अने क्यारेक मनुष्यचरित्र जोईने संशय थई जाय छे तेनुं शुं कारण हशे? अने ते संशय मटीने कोई काळे संशय न थाय एवो निश्चय केम थाय? ते कृपा करीने कहो."

पछी महाप्रभुजी बोल्या जे "प्रथम यथार्थ उत्तम निर्विकल्प निश्चय थयो ज नथी अने भगवाननो दिव्यभाव अने मनुष्यभाव जाण्यो नथी. तथा निर्गुणपणुं अने सगुणपणुं जाण्युं नथी तथा साकारपणुं अने निराकारपणुं जाण्युं नथी तथा भगवाननां अनंत ऐश्वर्य, अनंत शक्तियो तेने जाण्यां नथी तथा भगवाननो अपरिमित महिमा छे तेने जाण्यो नथी माटे निश्चयमां संशय थाय छे. अने ए तो श्रवण मात्रे ज भगवानपणांनो निश्चय छे.

जेम कोईक पुरुषे कह्युं जे 'कोईक देशमां केरी छे.' त्यारे तेने सांभळीने केरीनुं यथार्थ ज्ञान थाय नहीं; ए तो एक श्रवण इन्द्रियनुं ज्ञान थयुं जे केरी एवुं नाम जाण्युं. पण नानी छे के मोटी छे? काळी

छे के धोळी छे? पाणी जेवी छे के पाणा जेवी छे? लोट जेवी छे के जार, बाजरी जेवी छे? एम कांई खबर न पडी. ए तो पांचे इन्द्रिये तपासी जुए त्यारे खबर पडे. ते काने करीने सांभळे त्यारे केरी एवुं नाम जाणे अने नेत्रे करीने जुए त्यारे नानी–मोटी, काळी–धोळी खबर पडे अने हाथे करीने अडे त्यारे टाढी–उनी, नरम–कठण जणाय अने नाके करीने सुंघे त्यारे सुगंध दुर्गंध जणाय अने जीह्वाए करीने चाखे त्यारे खाटी–खारी, गळी, मोळी, तीखी, कडवी जणाय. माटे पांच इन्द्रिये तपासे त्यारे केरीनुं यथार्थ ज्ञान थाय छे, पण एक श्रवण मात्रे करीने केरीनुं यथार्थ ज्ञान थाय नहीं. तेम भगवाननो सर्व प्रकारे माहात्म्य ज्ञाने सहित निश्चय थाय त्यारे यथार्थ निश्चय थयो कहेवाय अने त्यारे भगवाननां मनुष्यचरित्र जोईने संशय थाय नहीं.

अने वळी निश्चय पण बे प्रकारनो छे; एक निर्विकल्प निश्चय अने बीजो सविकल्प निश्चय. तेमां पण उत्तम, मध्यम अने कनिष्ट भेद छे. ते बे मळीने छ भेद थया. तेमां कनिष्ट सविकल्प निश्चय जेने होय तेने भगवान मनुष्यना जेवी क्रिया करे त्यां सुधी निश्चय रहे पण मनुष्यना करतां अधिक वर्ते तो कनिष्ट सविकल्प निश्चयवाळाने संशय थाय. अने मनुष्यना करतां बमणां, तमणां काम, क्रोध, लोभादिकने विषे भगवान प्रवर्ते त्यां सुधी निश्चय रहे अने तेथी अधिक जणाय तो संशय थाय, तेने मध्यम सविकल्प निश्चयवाळो जाणवो. अने भगवानने सर्व कर्ता, सर्व भोक्ता जाणे तेने उत्तम सविकल्प निश्चयवाळो जाणवो. अने भगवानने सर्व कर्ता, सर्व भोक्ता जाण्या, अने सविकल्पपणुं केम कहेवाणुं? तो एणे विराट जेवा भगवानने जाण्या, माटे सविकल्प एवो भेद आव्यो. अने एम समजे तेने पंचविषयना राग टळे नहीं अने तेना विषयनुं भगवान खंडन करे तो तेने भगवानना निश्चयमां संशय थाय अने अवगुण आवे.

—अने जे निर्विकल्पमां कनिष्ट छे ते तो भगवानने सर्व कर्ता थका अकर्ता अने सर्व भोक्ता थका असंगी अने निर्लेप जाणे अने ब्रह्मरूप समजे अने जे जे भगवानना संबंधने पामे ते पण ब्रह्मरूप निर्गुण भावने पामे, एम समजे तेने निर्विकल्पमां कनिष्ट निश्चयवाळो जाणवो. अने ए कनिष्ट निश्चय केम कहेवाणो ? तो एणे भगवानने सबळब्रह्म जेवा जाण्या माटे कनिष्टपणुं कहेवाणुं. अने मध्यम निर्विकल्प निश्चयवाळो भगवानने अक्षर जेवा जाणे. ते अक्षर केवुं छे ? तो सर्व व्यापक, सर्वाधार अने सर्वना उरमां वासुदेव रूप अंतरयामि रह्या छे एम जाणे, अने पोते पण प्रतिलोम दृष्टि करीने वासुदेवनी उपासना करे तेने मध्यम निर्विकल्प निश्चयवाळो जाणवो. तेमां मध्यम एवो भेद केम पडयो ? तो एणे अक्षर जेवा भगवानने जाण्या, तेने करीने मध्यम एवो भेद पडयो.

—अने जे उत्तम निर्विकल्प निश्चयवाळो छे ते तो सर्व व्यापक सर्वाधार एवा जे अक्षरब्रह्म जेना एक एक रोम रोम प्रत्ये अनंत कोटी ब्रह्मांड अणुंनी पेठे उडे छे ते अक्षरने तो पोतानुं रूप माने अने सर्व-कारण, सर्वोपरि अने जेनो महिमा अपरिमित छे एवा जे पुरुषोत्तम भगवान ते 'अक्षर एवो जे हुं ते मारे विषे अखंड दिव्य मूर्तिमान रह्या छे अने ते ज भगवान अनंत जीवोना कल्याण करवा सारु कृपा करीने माया पर अक्षरमां अखंड रह्या थका पृथ्वी उपर प्रगट थाय छे अने ते ज भगवान मारा आत्माने विषे रह्या थका बहार दर्शन आपे छे,' एवी रीतनी समजणवाळा जे होय तेने उत्तम निर्विकल्प निश्चयवाळा जाणवा. अने ते भक्त भगवानना साधर्म्यपणाने पामे छे. अने आलोकमां छे तो पण तेने मायानुं आवरण नथी अने एनां दर्शने करीने तथा तेनी सेवाए करीने अनंत जीवोनो उद्धार थाय छे."

—माटे आवी रीते समजीने निश्चय करे तेने भगवान सूझे एवां

चारित्र करे तो पण तेने कोई काळे संशय थाय नहीं. ते सारु ज्ञाने करीने दृढ निश्चय करवो एज तमारा हितनी वार्ता छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २१८ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २१९ विषय :-शंकर-रामानुजनो सिद्धांत अभेद केवी रीते ?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२३ ना पोष वदि ५ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये सोनी बाई काशीबाने घेर गादीतकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पीळा पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती. अने संध्या आरतीने समये महाराजनी आगळ मशालनो प्रकाश थई रह्यो हतो.

प्रश्नः-पछी महाराज श्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजी बोल्या जे "सर्व सभाने अमे प्रश्न पूछीए छीए जे 'आ जीव कहे छे ते जीव छे के नथी?' एक तो ए प्रश्न छे. अने कदापि तमे एम कहेशो जे जीव छे, तो ते 'जीव एक छे के अनेक छे.?' ए बीजुं प्रश्न छे. अने 'परमात्मा भगवान जगतकर्ता छे तेना अवतार पृथ्वी उपर थाय छे के नथी थता?' ए त्रीजुं प्रश्न छे. अने शंकरस्वामीए एम कह्युं जे 'जीव नथी अने सर्वे एक ब्रह्म छे; बीजुं कांई नथी.' अने रामानुजे एम कह्युं छे जे 'जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म अने परब्रह्म एवा पांच भेद छे.' माटे शंकरस्वामीए कह्युं के 'जीव नथी अने परमात्माना अवतार पण थता नथी;' ते कई समजणे कह्युं के 'जीव नथी.'? अने रामानुजे कह्युं के 'जीव छे अने परमात्माना अवतार थाय छे.' ते कई समजणे कह्युं छे? अने शंकर-रामानुज बेय

सत्पुरुष छे माटे जे कह्युं छे ते ठीक ज कह्युं हशे. पण जीव पोतानी मेळे शास्त्रने समजवा जाय छे तो बुद्धिनो ठा रहेतो नथी अने भमी जवाय छे. माटे केम समजे तो बेयनुं बोलवुं सवळुं समजाय अने बुद्धि भमे नहीं ? ते कहो."

पछी तेनो उत्तर कोईथी थयो नहीं पछी महाराज श्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजी बोल्या जे "ल्यो अमे एनो उत्तर करीए छीए जे बे प्रकारनी दृष्टि छे, तेमां एक सिद्ध-दृष्टि छे अने एक असिद्धि-दृष्टि छे. ते सिद्ध-दृष्टिवाळा तो ब्रह्मरूप मुक्त छे अने असिद्ध-दृष्टिवाळा सर्वे जीवो छे. ते जीव अनंत अपार छे अने ते जीव अनादिना छे अने अनादिना अज्ञानी छे, कहेतां परमात्माने अनादिना जाणता नथी. ते परमात्माने न जाणवारूप जे अज्ञान तेणे करीने जीवोने जगतनो भास थयो छे. ते उपर वेदनुं वचन–

आत्माज्ञानात् जगत् भाति इति श्रुतिः।

अर्थः–'आत्मा जे जीव तेने परमात्माना स्वरूपनुं अज्ञान छे तेणे करीने जगतनी उत्पत्ति थई छे.' माटे असिद्ध एवा जे जीवो तेने सिद्ध करवाने अर्थे सिद्ध एवा जे परमात्मा ते पोते पोताना अक्षरधाममां रह्या थका पोतानी स्वइच्छाए करीने जगतने विषे प्रगट थाय छे अने प्रगट थईने आसिद्ध एवा जे जीवो तेने सिद्ध करवा सारु वेदोक्त धर्मना ज्ञाने करीने उपदेश आपे छे अने कर्म, उपासना अने ज्ञान ए त्रणनुं प्रतिपादन करे छे अने जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म अने परब्रह्म ए पांच भेद देखाडे छे.

–तेमां जीव अने ईश्वर ए बेयनी दृष्टिमां माया छे, पण तेमां ईश्वर समर्थ छे अने सवज्ञ छे अने जीव असमर्थ छे अने अल्पज्ञ छे. माटे जीव जे असमर्थ अने अल्पज्ञ छे तेने ज्ञान आपीने ईश्वर जेवो समर्थ अने

सर्वज्ञ करवा सारु प्रत्यक्ष एवा जे सद्गुरुरूप परमात्मा ते उपदेश निमित्ते पोते ईश्वररूपे बोल्या के 'हे शिष्य! ॐ सोऽहं तत्त्वमसि।' अर्थः– प्रत्यक्ष परमात्मा सद्गुरु कहे छे के 'हुं ईश्वर छुं ते मारां त्रण शरीर जे विराट, सूत्रात्मा अने अव्याकृत तेथी जुदो हुं ब्रह्म छुं. अने तुं पण जो तारां त्रण शरारथी जुदो था तो तुं पण ब्रह्मरूप छुं.' पछी ते शिष्ये कह्युं के 'हुं मारा त्रण शरीर थकी शी रीते जुदो थई शकुं?' पछी सद्गुरुए कह्युं के 'तुं मारी सेवा, भक्ति कर अने हुं कहुं ते प्रमाणे धर्म पाळ अने जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म अने परब्रह्म तेनां रूप वतावुं ते प्रमाणे ज्ञान समज एटले त्रण शरीरथी जुदो थईने तारा ब्रह्मस्वरूपने पामीश अने तारी मुक्ति थशे.'

पछी शिष्ये पोताना आत्माना कल्याणने अर्थे ते ईश्वररूप प्रत्यक्ष परमात्मानी सेवा, भक्तिरूप उपासना करवा मांडी. अने त्रण शरीरथी जुदो थवाने अर्थे ते सद्गुरुए बताव्युं जे अहिंसा अने ब्रह्मचर्यादिक– अंतःकरणनी शुद्धिने अर्थे धर्म–तेने पाळवा मांडयो. अने सद्गुरुए कह्यां जे जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म अने परब्रह्मना रूप तेनुं श्रवण, मननादिक साधन तेने करवा लाग्यो.

–माटे सद्गुरुनी सेवा, भक्ति करवी तेनुं नाम वेदनो उपासना कांड छे. अने अंतःकरणनी शुद्धिने अर्थे सद्गुरुना कह्या प्रमाणे काम, लोभादिक दोषने टाळवा तथा शब्दादिक पंचविषयनो त्याग करवो तथा अहिंसा अने ब्रह्मचर्यादिक धर्म पाळवा तथा सद्गुरुना उपदेशनुं श्रवण मननादिक साधन करवुं, ते सर्वेनुं नाम कर्मकांड छे. अने जीव, ईश्वर, मायानां रूपने जाणीने मायाने मिथ्या करीने जीव-ईश्वरनो भेद टाळीने ब्रह्म-दृष्टिने पामवुं अने ते ब्रह्मने पोतानुं रूप जाणीने तेने विषे स्थिति

पामवी अने ब्रह्मना प्रकाशक एवा जे परब्रह्म तेनां स्वरूपनो साक्षात्कार करवो, तेनुं नाम वेद्नो त्रीजो ज्ञानकांड छे.

पछी ते प्रत्यक्ष सद्गुरु थकी कर्म, उपासना अने ज्ञान जेणे सिद्ध कर्यां तेने ब्रह्म अने परब्रह्मना स्वरूपनो साक्षात्कार थयो. अने तेनी दृष्टिमांथी जीव, ईश्वर, मायाना भेद टळी जाय छे, कहेतां तेने जीव, ईश्वर, माया जगत कांई देखातुं नथी. पछी ते स्थितिने पामीने शिष्य बोल्यो के 'हे स्वामीन्! तमारी कृपा थकी अहं ब्रह्मास्मिन् कहेतां हुं ब्रह्मरूप एवो तमारो दास छुं.' अने एवुं ज्ञान थयुं त्यारे तेने जीव; ईश्वर, माया, जगत, कर्म, उपासना सर्वे टळी जाय छे अने ब्रह्मने जाणनारो ब्रह्मरूप थाय छे. ते पण वेद्मां कह्युं छे–

'ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति ।'

अर्थः–'वह्मने जाणनारो ब्रह्मरूप थाय छे.' एवी रीते ब्रह्म-स्थितिने आत्मा पाम्यो तेनी दृष्टिमां जगत मिथ्या छे, जीव मिथ्या छे, गुरु मिथ्या छे, शिष्य मिथ्या छे, कर्म मिथ्या छे अने उपासना मिथ्या छे; पण ते कोने ? के जेने एवी स्थिति थई तेने सर्व मिथ्या छे. माटे शंकरस्वामीए कह्युं के 'जीव, ईश्वर, माया कांई नथी अने सर्वत्र एक ब्रह्म छे,' ते शंकरस्वामी ब्रह्म-स्थितिमां बोल्या छे जे 'जीव तथा जगत त्रणे काळमां नथी,' एम कह्युं ते पण सत्य ज कह्युं छे.

–अने रामानुजे कह्युं छे के 'जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म, परब्रह्म ए पांचे भेद अनादिना छे,' एम कह्युं ते पण सत्य कह्युं छे. केमके जो जीव न होय अने सर्वे एक ब्रह्म होय तो उपदेश केने करवो रह्यो ? माटे जीव छे, माया छे, माया एटले अज्ञान. ते अज्ञान जीवने अनादिनुं छे. अने ते अज्ञानने टाळवा सारु शंकरस्वामीए पोताना शिष्योने अहिंसा अने ब्रह्मचर्यादिक धर्म पळाव्या छे अने श्रवण, मननादिक साधन कराव्यो

छे. अने जेणे पोतानी आज्ञा पाळी नहीं तेने शंकरस्वामीए विमुख करीने काढी मूकया छे. माटे जो शंकरस्वामीनी समजणमां जीव न होय अने सर्वे एक ब्रह्म होय तो धर्म-नियम केने पळावे? अने विमुख केने करे? माटे जीव छे ए वात सत्य छे. अने सद्गुरुनी कृपाए करीने जीवने ज्ञान थाय त्यारे ते जीव ब्रह्मना भावने पामे छे. अने जे ब्रह्म-स्थितिने पाम्यो तेनी दृष्टिमां जीव तथा जगत नथी, कहेतां जे आत्मा ब्रह्मरूप थयो तेने पोतानुं जीवपणुं टळी जाय छे अने तेने जगतना लोकभोगनी वासना टळी जाय छे.

जेम कोई दरिद्री होय तेने कोई राजा महेरवानी करीने लाख बे लाख रूपिया आपे तो तेनुं दारिद्रपणुं नाश पामे छे. तेम जीवने अज्ञान-रूपी दरिद्र अनादिनुं छे तेणे करीने दीन थईने चोराशीमां जन्म-मरणने पामे छे. अने मिथ्या एवां जे मायिक पंचविषयनां सुख तेमां वासनाए करीने आसक्ति राखे छे. पछी तेने सद्गुरुरूपे प्रत्यक्ष परमात्मा मळे अने ते कृपा करीने धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्तिरूपी संपत्ति आपे छे त्यारे ते जीवनुं जीवपणुं टळी जाय छे अने अज्ञाने करीने मिथ्या जगतनां मायिक पदार्थने वासनाए करीने भोगवतो हतो ते ज्ञानरूपी संपत्तिये करीने पूर्णकाम थाय छे अने पंचविषयना सुखनो त्याग करे छे. एवी रीते जे ब्रह्मस्थितिने पाम्यो तेनी दृष्टिमां जीव तथा जगत नथी अने तेने जीव, ईश्वर अने माया ए त्रणनो भेद टाळी जाय छे. माटे ईश्वर जाणीने जे प्रत्यक्ष सद्गुरुनी उपासना भक्ति करतो हतो ते उपासना तो मिथ्या थई जाय छे, कहेतां गुरुने विषे विराटरूप ईश्वरपणांनो जे भाव हतो ते भाव तो टळी जाय छे.

—पण जे ब्रह्मरूप थयो तेने परब्रह्मनी उपासना तो अखंड रहे छे,

केमके ब्रह्मरूप थाय पछी तेने परब्रह्म ओळखाय छे. ते पण गीताना अध्यायमां कह्युं छे श्लोक—

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न सोचति न कांक्षति ।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्ति लभते पराम् ॥

अर्थः—'ब्रह्मरूपने प्रसन्न छे आत्मा कहेतां मन ते जेनुं अने हर्ष अने शोक ते गया छे जेना अने सर्वे जीव प्राणीमात्र उपर समान छे दृष्टि ते जेनी, एवो जे आत्मा ते परमात्मा (एवा जे श्रीकृष्ण) ने जाणवा—भजवानो अधिकारी छे.' केमके प्रथम ज्यारे शिष्य ब्रह्मस्थितिने पामे छे त्यारे शिष्य एम कहे छे जे 'हे गुरु ! हवे हुं अने तमे बेय एक रूप छीए.' त्यारे गुरुए कह्युं के 'हुं अने तुं बेय एक नथी; तुं भूल मां हुं तो तारा ब्रह्मस्वरूपनो प्रकाशक एवो परब्रह्म छुं. अने तुं तो ब्रह्मरूप एवो मारा अंगनो प्रकाश छुं, एम जाण.'

—त्यारे शिष्ये कह्युं के 'प्रथम तमे मने एम कह्युं हतुं जे 'हुं विराट-रूप ईश्वर छुं. ते विराटरूप ईश्वरनुं स्वरूप तो ब्रह्मरूपनी स्थितिमां मिथ्या देखाय छे, तेनुं केम समजवुं ?' त्यारे गुरुए कह्युं के 'विराटरूप ईश्वरनुं स्वरूप तो मिथ्या छे ते मिथ्या स्वरूपनो धारणानो करनारो जे आत्मा ते सत्य एवुं जे ब्रह्म तेने केम जाणी शके ? न जाणी शके. अने तने में प्रथम कह्युं जे हुं ईश्वर छुं ए तो तारी दृष्टिमां मायानुं आवरण हतुं ते ज्यां सुधी मायिक दृष्टि होय तेने मनुष्य स्वरूप परमात्माने विषे माया पर परमात्माना स्वरूपनी हा पडे नहीं. केमके वेदमां कह्युं छे जे—

यतो वाचो निवर्तते अप्राप्य मनसा सह ।

अर्थः—'इन्द्रियो अंतःकरणना ग्रहण कर्यामां आवे एवा परमात्मा नथी.' माटे जीवने ज्यां सुधी इन्द्रियो अंतःकरणने विषे पंचविषयनी वासनाए करीने मायानुं आवरण होय त्यां सुधी तेने प्रत्यक्ष परमात्माना

स्वरूपनो निश्चय थतो नथी. माटे हवे तुं तारी स्थितिमां विचार कर जे तारी दृष्टिमां जीव ईश्वर, माया कांई देखाय छे ? नथी देखातुं. त्यारे जेने ज्ञाने करीने तुं एवो मायापर ब्रह्मरूप थयो तो ते ज्ञानदातामां माया केम होय ? न ज होय. माटे हुं तो ब्रह्मनो प्रकाशक एवो परब्रह्म छुं, एम जाण.'

पछी एवी रीतनी ब्रह्मस्थितिने पाम्यो एवो जे मुक्त ते एम जाणे छे जे आत्यंतिक ज्ञानना आपनारा प्रत्यक्ष सद्गुरु ते ज परब्रह्म छे, परमात्मा छे, दिव्यमूर्ति छे, अजन्म्या छे, अखंड मूर्ति छे, अने ते सद्गुरुनी मूर्ति विना बीजुं मायिक आकारमात्र तथा जीव, ईश्वरना आकार ते सर्वे मिथ्या छे. एवी रीते जे ब्रह्मस्थितिने पाम्यो तेनी दृष्टिमां जीव, ईश्वर, माया कांई नथी. अने एवी स्थितिने पाम्यो तेने मते परमात्माना अवतार पण नथी थता, केमके तेनी दृष्टिमां जगत ज नथी तो जगतना विना जन्म केम संभवे ? माटे पोताने जन्म नथी तो पोताना स्वामी एवा जे परमात्मा एने जन्म केम होय ? न ज होय. अने जेनी मायिक दृष्टि छे तेने जीव, ईश्वर, माया, जगत सर्वे छे अने तेने अर्थे परमात्माना अवतार थाय छे एम कहेवाय छे. अने परमात्मा तो अजन्म्या छे पण पोतानी इच्छाए करीने जीवोने जन्म्या एवा देखाय छे.

माटे शंकर स्वामीए सिद्ध स्थितिमां कह्युं के 'जीव, ईश्वर, माया नथी,' ते पण सत्य कह्युं छे. अने जे परमात्मा आवता-जता नथी अने अवतार धरता नथी अने अजन्म्या अने अक्षरधाममां अखंड रह्या छे ते ज आ प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक ज्ञानदाता परमात्मा छे अने ते ज परमात्मा पोताना ब्रह्मधामने विषे अखंड रह्या थका प्रत्यक्ष दर्शन आपे छे. माटे शंकरस्वामीए कह्युं के 'आ रामकृष्णादिक ते कोई दहाडे अवतार धरता नथी,' ते सत्य कह्युं छे. अने रामानुजे उपदेश देवाने अर्थे आसिद्धने

सिद्ध करवा सारु कह्युं के 'जे परमात्मा माया पर अने अक्षरातीत छे अने अजन्म्या अने दिव्यमूर्ति छे ते ज पोतानी स्व-इच्छाए करीने जीवोना कल्याण करवाने अर्थे रामकृष्णादिक अवतारनुं धारण करे छे,' ते पण सत्य कह्युं छे.

—केमके जो जीव न होय तो उपदेश कोने करवो? माटे जीव छे. अने ते जीव घणाक छे, केमके जीव घणाक न होय अने जीव एक होय तो एकनी मुक्ति थाय तो सर्वेनी मुक्ति थवी जोईए अने तेनुं जन्म-मरण टळी जाय तो वांसे पछी जगत रहेवुं न जोईए. अने मुक्त तो घणाक थई गया छे अने जे मुक्त थयो ते तो पाछो जन्मने धरतो नथी अने जगतमां तो जीव घणाक देखाय छे. अने जीवने अच्युत अने अखंड कह्यो छे, माटे जीवना ककडा के भागला थता नथी. अने जो जीवना ककडा थता होत तो तो थोडाक ककडानी मुक्ति थात अने थोडाक ककडा जन्म-मरणने पामत. पण तेम तो जीव छेदाय-भेदाय एवो नथी, एम सर्वे शास्त्र अने वेद कहे छे. माटे जीव जुदा जुदा घणाक छे.

एवी रीते सत्पुरुषना मुख थकी शास्त्रने सांभळे तो सर्वे शास्त्र सवळां समजाय अने सत्पुरुषना समागम विना तो शास्त्रने सांभळीने नास्तिक थई जवाय छे. माटे खरा सत्पुरुषनो समागम करवो, तेनुं नाम ज सत्संग छे अने एवा सत्संगे करीने तत्काळ मुक्ति थाय छे. माटे ते सत्संग आज तमने सर्वेने प्राप्त थयो छे ते तमारा भाग्यनो पार नथी."

इति श्रीमुखसिद्धांत २१९ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २२० विषयः-शास्त्रोना मर्म, आचार्योनी परख आदिक छ प्रश्नना उत्तर.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना पोष वदि ९ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये सोनी बाई दीवाळीने घेर गादीतकिया नखावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानीं वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पीळां अने धोळा पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी पंडया महाशंकर श्रीखेडेथी आव्या तेणे पंडया नरसिंहराम वजेरामना लखेलां छ प्रश्ननो खरडो ते महाराजना हस्तकमळमां आप्यो अने एम कह्युं के "हे महाराज! तेना प्रश्ननो उत्तर करी आपो." पछी महाराज बोल्या जे "ल्यो एना उत्तर करीए ते सांभळो जे प्रथम प्रश्न ए छे जे 'मनुष्यने पोताना कल्याणने वास्ते सर्वथी सारामां सारुं शुं करवुं? अने मागवुं शुं? अने केनी पासे मागवुं?' ए प्रश्न. हवे तेनो उत्तर जे आत्माना मोक्षने अर्थे वेद प्रमाणे निष्कामकर्म करवुं. त्यारे तमे कहशो जे 'कर्म तो बंधनकर्ता छे?' एम कहशो तो तेनो उत्तर जे ते कर्मना त्रण भेद छे. (१) वेदमां कह्या प्रमाणे फळनी इच्छा राखीने कर्म करवुं तेनुं नाम सकामकर्म छे अने ते कर्म बंधनकारी छे. अने तेनुं फळ स्वर्ग कहेतां उत्तमभोग प्राप्त थाय छे.

—अने (२) कर्म तो तेनुं ते वेदमां कह्या प्रमाणे करवुं पण इच्छाए रहित ज्ञान पामवाने अर्थे करवुं तेनुं नाम निष्कामकर्म छे. अने जे निष्कामकर्म छे ते तो ज्ञानरूप छे, केमके निष्कामकर्म करतां करतां ज्ञान थाय छे अने ज्ञान थयुं एज मोक्ष छे. ते धर्मशास्त्रमां पण कह्युं जे—

कर्मणा जायते ज्ञानं, ज्ञानान्मोक्षमवाप्यते ।

अर्थः–' निष्कामकर्म करवा थकी ज्ञान थाय छे अने ज्ञाने करीने मोक्ष थाय छे.' हवे निष्कामकर्म ते शुं? तो प्रत्यक्ष परमात्मानी आज्ञाए करीने मोक्ष पामवा सारु जे जे करवुं तेनुं नाम निष्कामकर्म छे. ते पण भगवद् गीतामां कह्युं छे–

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥

एवी रीते प्रत्यक्ष सद्‌गुरुनी आज्ञा प्रमाणे वेद-विहित निष्कामकर्म करवुं एज मनुष्य मात्रने जरूर करवानुं छे.

–अने (३) त्रीजुं कर्म शास्त्रथी अवळुं करवुं तेनुं नाम निषेधकर्म छे. अने ते कर्मनुं फळ नरक छे. अने वळी एक अकर्म छे, कहेतां शुभ के अशुभ कांई न करवुं तेनुं फळ पण नरक छे, केमके कांई न करवुं एम जाणीने शुभ के अशुभ कर्म नहीं करे तो पण अशुभ कर्म तो एनी मेळे देह धारी मात्रने थया ज करे छे. जेम खेतरमां सारुं धान तो वाविए अने तेनी रक्षा करीए त्यारे थाय छे अने नकारुं खडसलादिक तो एनी मेळे थाय छे. तेम शुभ कर्म तो करे त्यारे थाय अने देहनिर्वाहने अर्थे अशुभ कर्म तो एनी मेळे रातदिवस थया ज करे छे. अने वळी जेम वस्त्रने धोवरावीए छीए त्यारे उजळां थाय छे अने मेलुं तो एनी मेळे थाय छे. अने वळी जेम घरमांथी झाडुं काढीए छीए त्यारे घर शुद्ध थाय छे अने कचरो तो घरमां एनी मेळे भराय छे. तेम शुभ कर्म तो दाखडो करीए त्यारे थाय छे अने अशुभ कर्म तो एनी मेळे थाय छे. केमके इन्द्रियो अंतःकरण पोत पोताना विषयमां प्रवर्तवारूप कर्म ते थयां ज करे छे. ते जेने शुभ-अशुभनो विवेक नथी तेने तो अशुभ कर्म थयां ज करे छे अने तेनुं फळ अधोगति छे. माटे मनुष्यने पोताना कल्याणने वास्ते सर्वथी सारामां सारुं एवुं जे निष्कामकर्म ते जरूर करवुं.

अने 'मागवुं शुं?' ए प्रश्न. तेनो उत्तर जे मागवी शान्ति. हवे शान्ति ते शुं? अने शान्ति शाथी थाय? तो ज्ञाने करीने शान्ति थाय छे. ते पण कह्युं जे–

ज्ञानाद् ध्रुवा परमं शान्ति ।

अने अज्ञान छे एज अशान्ति छे. अने ते अज्ञाने करीने जन्म, मरण, गर्भवास अने चोराशीनां महा दुःख भोगववां पडे छे. माटे ए सर्व दुःखने टाळे एवी शान्ति ते मागवी.

हवे 'शान्ति मागवी केनी पासे?' ए प्रश्न. तेनो उत्तर जे पूर्ण पुरुषोत्तम एवा जे परमात्मा प्रत्यक्ष सद्गुरु तेनी पासे शान्ति मागवी, केमके अपूर्णपणुं छे एज अशान्ति छे. माटे पूर्ण होय ते ज पूर्ण करे छे, पण अपूर्ण थकी पूर्ण थवाय नहीं. माटे मनुष्य, देव, ब्रह्मा अने प्रकृति-पुरुष सुधी सर्वे अपूर्ण छे अने अशान्तिवाळा छे. अने प्रकृतिपुरुषथी पर जे अक्षरब्रह्म ते पण शान्ति करवारूप ज्ञान आपी शकतुं नथी, केमके ब्रह्म तो निराकार छे अने तेनी दृष्टिमां जीव, ईश्वर, माया जगत छे ज नहीं, माटे केने ज्ञान आपे? न आपे. ते सारु ब्रह्म तो जेनो प्रकाश छे एवा जे परब्रह्म परमात्मा प्रत्यक्ष सद्गुरु ते ज एक पूर्णकाम छे. माटे अपूर्ण एवा जे जीवो तेने आत्यंतिक ज्ञान आपीने पूर्णकाम करीने परम शान्तिरूप जे मोक्ष ते आपे छे. माटे प्रत्यक्ष सद्गुरु पासे शान्ति मागवी. अने गायत्रीमां पण परमात्मा पासे ज्ञाने करीने शान्ति ज मागवानुं कह्युं छे, माटे परमात्मा पासे मागवुं.

हवे बीजुं प्रश्न जे 'वेद मार्गने रस्तेथी चालवुं ते ठीक छे के पुराण मार्गथी चालवुं ते ठीक छे?' तेनो उत्तर जे वेद, शास्त्र अने पुराण तेनो एक ज मार्ग छे, पण नोखो मार्ग नथी. केमके परमात्माना स्वरूपनो जे पूर्ण बोध तेनुं नाम वेद छे अने वेदना अर्थने साक्षात्कार देखाडी आपवुं

तेनुं नाम शास्त्र छे अने ते वेद, शास्त्रने ज्ञाने करीने परमात्मा प्रगट थईने पोते शिष्योने उपदेश आप्यो अने परमपदने पमाडया तेमां जे गुरु शिष्यनी क्रिया, चेष्टा अने लीला ते सर्वे लखाणी तेनुं नाम पुराण छे. माटे वेद, शास्त्र अने पुराण तेनो एक ज मार्ग छे. पण अविरुद्ध क्यारे समजाय? तो पूर्णकाम एवा जे परमात्मा तेज प्रगट थईने समजावे कां तेना एकांतिक संत ते समजावे त्यारे समजाय छे. ए प्रश्ननो एज उत्तर छे.

हवे त्रीजुं प्रश्न जे 'कोई कर्ता छे तेनी शक्तिथी ज दुनियानी अंदर सर्वत्र थाय छे के बीजा कोई जोगथी थाय छे?' ए प्रश्न. तेनो उतर जे कर्ता छे तेनी शक्तिथी ज सर्वत्र थाय छे, पण ते विना बीजा कोईनुं कर्युं थतुं नथी. त्यारे तमे कहेशो जे 'सर्वे कर्तानुं कर्यु थाय छे त्यारे पाप-पुन्य, सुख-दुःख ए सर्वे कर्ता करे छे के शुं?' हवे तेनुं तो एम छे जे जेम राजा छे तेना राज्यमां राजानुं कर्यु थाय छे. माटे ते राजाए पोतानो हुकम चलाववाने अर्थे सर्वे वस्तीने सुख करवा सारु कायदो कर्यो छे. ते कायदा प्रमाणे चाले छे ते शाहुकार कहेवाय छे अने ते सुखने पामे छे. अने ते कायदाने जे लोपे छे ते चोर कहेवाय छे अने दुःखने पामे छे अने तेने राजा सजा करे छे. तेम परमात्मा सर्वेना राजाधिराज छे. ते परमात्माए जीवोने सुखिया करवाने अर्थे वेदरूपी कायदो कर्यो छे. ते वेदरूपी कायदा प्रमाणे निष्कामकर्म अथवा सकाम-कर्म करे छे ते आत्मा सुखने पामे छे. अने जे ते वेदरूपी कायदानो त्याग करीने पोताना मननी खुशी प्रमाणे चाले छे ते दुःखने पामे छे. अने ते परमात्मा जे ते पोतानी शक्ति जे काळ, कर्म, माया अने पुरुष ए द्वाराए शुभ-अशुभ कर्मनां फळने पमाडे छे. जेम राजा पोताना चाकरो पासे राज्यनुं काम चलावे छे, तेम परमात्मानी इच्छा विना कोई बीजा-नुं कर्युं थतुं नथी. ए प्रश्ननो एज उत्तर छे.

हवे चोथुं प्रश्न जे 'कर्म करवाथी जे कांई सारामां सारुं फळ पेदा करवुं ते थवानुं के कर्म रहितथी बनी शके खरुं? अने तेम होय तो कया शास्त्रने आधारे?' ए प्रश्न. हवे तेनो उत्तर जे कर्म करवाथी ज फळ मळे छे ते ज खरुं छे. अने कर्म कर्या विना तो कोई वातनी सिद्धि थती नथी. ते कर्म पण वेद-विहित महात्मा पुरुषनी आज्ञाए करीने करे त्यारे तेने वांच्छित फळ मळे छे. अने कर्मनो त्याग करवानुं कह्युं हशे ते तो अशुभ कर्मनो त्याग करवानुं कह्युं छे तथा कर्मना फळनी इच्छानो त्याग करवानुं कह्युं छे; पण शुभ कर्मनो तो क्यारेय त्याग करवो नहीं. अने ते शुभ कर्मे करीने ज मनोरथ सिद्ध थाय छे ते ज खरुं छे. ए प्रश्ननो एज उत्तर छे.

हवे पांचमुं प्रश्न जे 'आचार्योए शिष्योने कल्याण जे छेवटपद तेने पामवाने अर्थे कयो उपदेश करवो? अने जे उपदेशथी जे रीतथी शिष्ये चालवुं ते रीतथी बीजी रीते आचार्योए चालवाने क्युं शास्त्र हशे?' ए प्रश्न हवे तेनो उत्तर जे आचार्योए शिष्योने छेवटपद पामवाने वेदांतना महावाक्यनो उपदेश करवो. ते महावाक्यना बे अर्थ छे; एक वाक्यार्थ छे अने बीजो लक्षार्थ छे. हवे वाक्यार्थनुं महावाक्य जे 'अहं ब्रह्मास्मि।' अर्थः—जे त्रण देहातीत एवुं जे निर्गुण, निराकार, सर्वव्यापक, एकरस चैतन्य, प्रकाशवान ब्रह्म जे तुर्यापद तेने विषे दृढ स्थिति थाय छे ते एम कहे छे जे 'हुं ब्रह्म छुं. अने हुं विना बीजुं जीव, ईश्वर, माया कांई नथी.' एम जाणे छे तो पण तेने जन्म, मरणनुं कारण जे अर्धमात्रारूप अहंवृत्ति ते नथी टळती. केम के निराकारपणे अद्धर-पद्धर ब्रह्ममां रहेवातुं नथी. माटे 'अहं ब्रह्मास्मि' पद सिद्ध कर्युं होय अने माया दृष्टिमांथी टळी गई होय तो पण ज्यां सुधी महा वाक्यना लक्षार्थने सिद्ध कर्यो न होय त्यां सुधी देह धरवो पडे छे.

हवे लक्षार्थनुं महावाक्य एम छे जे 'तव दासोऽहं दासोऽहं सोऽहं।' अर्थः-'ब्रह्मरूप एवो हुं परब्रह्म प्रत्यक्ष ज्ञानदाता सद्गुरु परमात्मा तेनो दास छुं' एवी रीते परमात्माने विषे दासपणुं दृढ थाय छे त्यारे ज जन्ममरणनुं कारण अर्धमात्रारूप महामाया ते टळे छे ते पण भगवद् गीतामां भगवाने कह्युं छे–

सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥
ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति ।
समः सर्वेषु भूतेषु मद् भक्तिं लभते पराम् ॥
दैवी ह्येषा गुणमयि मम माया दुरत्यया ॥
मामेव ये प्रपद्यते मायामेतां तरन्ति ते ॥

एवी रीते ब्रह्मरूप थईने परब्रह्म प्रत्यक्षने पामवुं ए ज छेवट पद पामवानो उपदेश आपवो. ए प्रश्नो ए ज उत्तर छे.

हवे पांचमां प्रश्नमां बीजुं प्रश्न जे 'शिष्यने जे उपदेशथी अने जे रीतथी चालवुं तेथी बीजी रीते आचार्ये चालवाने क्युं शास्त्र हशे?' हवे तेनो उत्तर जे जेम महेताजीनुं वृत्तांत अने निशाळीयानुं वृत्तांत एक नथी, केम के निशाळीयाए महेताजीने नमवुं, सेवा करवी अने पूछवुं अने जे विद्यानो पाठ आपे तेनुं श्रवण, मनन अने निदध्यास करवो अने तेनी आज्ञामां वर्तवुं. अने महेताजीने तेमांथी कांई न करवुं. तेम आचार्योए शिष्योना संशयोने दूर करवा अने पोतानी सेवा तेना भाव प्रमाणे कराववी अने शिष्योने पोतानी आज्ञामां वर्ताववा अने पोते तो पोतानी इच्छामां आवे तेम वर्तवुं, केम के माया पर कर्तुम् कर्तुमन्यथाकर्तुम् समर्थ होय तेने ज आचार्य पदवी घटे छे. माटे तेना आचरण प्रमाणे शिष्यने आचरण न करवुं केम के [illegible] शिष्ये

शंकरस्वामीना जेवुं आचरण कर्युं तो तेने विमुख करीने काढी मूक्या. माटे गुरु-शिष्यनुं वृत्तांत जुदुं छे. ए प्रश्ननो एज उत्तर छे.

हवे छट्ठुं प्रश्न जे 'आचार्ये पोताना कल्याणने माटे प्रथम के छेवट कयो रस्तो पकडवो ?' ए प्रश्न. हवे तेनो उत्तर जे आचार्यने पोताना कल्याणमां कांई अधुरुं न होय एज खरा आचार्य छे. अने ते आचार्यने प्रथमथी ते छेवट सुधी ए रस्तो पकडवो जे शिष्योनुं कल्याण थाय एवो उपदेश निरआळसु थईने करवो, एज आचार्यनुं कल्याण छे, एटले रूडुं कहेतां आचार्यनो एज धर्म छे. पण ते विना बीजुं कांई आचार्यने कल्याण पामवामां अधुरुं नथी, केमके जेने विषे मायानो लेश न होय तेने ज आचार्य पद्वी घटे छे अने तेने ज गुरुपणुं घटे छे. अने ते विनाना अधुरा-विषयनी वासनावाळा-होय अने ते आचार्य थईने फरे छे के गुरु थईने फरे छे ते तो पापी छे अने कहेवा मात्रना आचार्य छे अने कहेवा मात्रना गुरु छे, पण माया पर स्थिति न होय ते खरा आचार्य के खरा गुरु कहेवाय नहीं. माटे खरा आचार्य अने खरा गुरु होय तेने तो शिष्योनुं कल्याण करवानो निरआळसु थईने उपदेश करवो एज तेनुं कल्याण छे."

एवी रीते विस्तारना भयथी संक्षेपमात्र प्रश्नना उत्तर लख्या छे अने सर्व संशयमात्र समागमथी टळशे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २२० समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत २२१ विषयः–कर्म, उपासना अने ज्ञाननी सिद्धि.
सर्वं खल्विदं ब्रह्म ।

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवंत १९२३ ना महा सुदि ५ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये सोनी गीरधरनी मातुश्री बाई धोळीने घेर पुष्पना हिंडोळा उपर विराजमान थया हता. सर्वे वसंती केसरीयां वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां, केसरनी अर्चा अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी संध्या आरती थया केडे महाराज सर्व सभा प्रत्ये बोल्या जे "सर्व सभाने अमे एक प्रश्न पूछीए छीए जे कर्म, उपासना अने ज्ञान ए त्रण छे ते वेदमां कह्या प्रमाणे कर्म, उपासना अने ज्ञान ए सिद्धांत छे के कल्पित छे ? तेनो उत्तर ब्राह्मणमंडळ करो." पछी अद्वैत-ज्ञानना-मत मांहेनो एक ब्राह्मण हतो ते बोल्यो के "कर्म, उपासना अने ज्ञान ए त्रणे सिद्धांत छे."

पछी महाराज बोल्या जे "अद्वैब्रह्मतना ज्ञानवाळा एम कहे छे जे 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म ।' एवी रीते सर्वे ब्रह्म छे, कहेतां जे जीव नथी, ईश्वर नथी अने मनुष्य, पशु, पंखी, कीट, पतंग, सर्व रूपे भगवान ज थया छे, एम कहे छे. अने वेदमां तो एम कह्युं छे जे 'जीवनी वच्चे अने परमात्मानी वच्चे अंतराय छे.' तेने टाळवो तेनुं नाम तो कर्म छे. ते अंतराय पोतानी मेळे टळतो नथी. केमके पोतानी मेळे टळतो होय तो कोई जीव अंतराय रहेवा शुं करवा दीये ? अने जन्म-मरणनां दुःख शीद पामे ? माटे, काम, लोभादिक जीवना अंतरशत्रु ते पोतानी मेळे टळता नथी. ते सारु गुरु करवो पडे छे. अने ते गुरुनी आज्ञा पाळवी

तेनुं नाम कर्मकांड छे. अने ते गुरुनी सेवा करवी तेनुं उपासनाकांड छे. अने जेने जीव नथी जाणतो तेने जणावी दीये छे तेने यथार्थ जाणवुं तेनुं नाम ज्ञान छे.

माटे सर्वे एक ज परमात्मा होय तो अंतराय शानो होय ? अने अंतराय न होय त्यारे आज्ञा कोईनी शुं करवा पाळवी पडे ? अने सेवा शुं करवा करवी पडे ? अने (सर्वरूपे) परमात्मा पोते एक ज छे तो तेने ज्ञान केनुं पामवुं छे ? केमके पोते पोताने कांई भूले, जे पोते पोताने जाणवुं पडे ? ते पोते पोताने भूले त्यारे तो ते परमात्मा अज्ञानी ठरे, माटे परमात्मा अज्ञानी नथी. तेनुं केम समजवुं ? ते कहो."

पछी केटलाक विद्वान ब्राह्मण बेठा हता तेणे उत्तर करवा मांड्यो पण कोईथी यथार्थ उत्तर थयो नहीं. पछे महाराज बोल्या जे "जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म अने परब्रह्म एवा पांच भेद अनादिना छे. तेमां जीव मायाने आधिन छे अने ईश्वर मायानो नियंता छे, अने ब्रह्मने विषे मायानो लेश नथी. अने जे परब्रह्म छे ते तो जीव, ईश्वर, माया अने ब्रह्म ए चारना आधार छे अने कर्ता छे अने तेथी पर छे. अने ते परब्रह्म प्रत्यक्ष रामाकृष्णादिक तेज परमात्मा छे. अने ते प्रत्यक्षनो आश्रय जे जीव करे छे ते जीवने ज्ञाने करीने मायानुं आवरण टळावीने ब्रह्मरूप करे छे. अने ते जीव अनादिनो अज्ञानी छे अने परमात्माथी जुदो छे. तेने प्रत्यक्ष परमात्मा पोताना अन्यथा कर्तुम्पणांना गुणे करीने ब्रह्मरूप करे छे अने पोताना धाममां लई जाय छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २२१ समास ।

श्रीमुखसिद्धांत २२२ विषय :–मोक्ष तो प्रगट भगवानने संगे ज थाय छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२३ ना चैत्र सुदि ४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये शाह रणछोडभाई मोरलीदासने घेर दक्षिणादे वारना चोकमां गादीतकिया बीछावीने विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण शोभी रह्यां हतां. ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी शाह रणछोडभाई मोरलीदास तथा बाई पार्वतीबा ए बे जणे महाराजनी पूजा चंदन तथा पुष्प तथा धूपदीपे करीने आरती उतारी अने भेट सामग्री मूकीने हाथ जोडीने महाराजने कह्युं जे "हे महाराज! अमारा आत्मानुं कल्याण करजो." पछी महाराज बोल्या जे "कल्याण तो माया पर भगवाननो मनकर्म वचने समागम करवो एज कल्याणनो मार्ग छे अने ते विना चौद लोकमां कांई मोक्षनो मार्ग नथी अने देव, ब्रह्मादिक अने पुरुष, प्रकृति आदिक सुधी सर्वे लोकमां कामनी ज वार्ता थाय छे पण मोक्षनी वार्ता नथी अने मोक्ष तो प्रगट भगवानने संगे करीने ज थाय छे तथा तेना एकांतिक साधु पंचविषयना त्यागी तेनो समागम ते ज अतिशय दुर्लभ छे अने एवो सत्संग ज्यारे पोताने प्राप्त थाय त्यारे पोताना अतिशय ज मोटा भाग्य समजवां अने तेनी ज्ञानवार्ता सांभळवामां अतिशय ज श्रद्धा राखवी अने जेने श्रद्धा नथी तेने तो सत्संग करवामां घणी खोट जाय छे अने मोक्षमां पण घणो फेर रही जाय छे.

जेम समुद्रने विषे स्वाति वरसे छे त्यारे छीपो उपर आवीने ते

स्वातिना बिंदुने झीले छे. तेमां जे अतिशय उंचे उडीने ले छे तेमां अमूल्य मोती थाय छे अने जे थोडीक उडीने ले छे तेनुं मोती किंमतमां आवे एवुं पांचसो, सातसो, हजार, बे हजार रूपियानुं मोती थाय छे अने पाणी उपर पडी पडी झीले छे तेनां तो खोटां फटकीयां मोती थाय छे ते तो टकानां त्रणसो खपे. तेम प्रगट भगवाननी ज्ञानवार्ता ते स्वातिना बिंदु जेवी छे. अने संसाररूपी समुद्र छे तेमां मुमुक्षु जीव छे ते छीपने ठेकाणे छे. तेमां जे खरेखरी श्रद्धा राखीने जे अमारी वार्ता सांभळशे ते तो आ देहे ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामशे अने जे मध्यम श्रद्धावाळा छे ते तो मोटा प्रकृतिपुरुषना लोकथी ओरा (नीची कोटीना) प्रधानपुरुषना लोक तथा विराट, ब्रह्मादिक ईन्द्रादिकना लोकने पामे छे अने कनिष्ठ श्रद्धावाळा छे ते तो आलोकमां कोईक मोटा चक्रवर्ती राजा थाय छे.

अने मध्यम श्रद्धावाळा छे ते तो त्रण चार जन्मे धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित भगवाननी भक्ति सिद्ध करीने अक्षरधामने पामे छे अने कनिष्ठ श्रद्धावाळा छे ते तो देवमां अने मनुष्यमां घणांक जन्म धरे छे अने ज्यारे उत्तम श्रद्धाने पामे त्यारे ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामे छे. माटे प्रगट भगवान मळ्या होय तो पण श्रद्धामां घणोक फेर रहे छे.

अने आलोकमां पण बे प्रकारनी सृष्टि छे; तेमां एक जीवसृष्टि छे अने बीजी ईश्वरसृष्टि छे. तेमां जीवसृष्टिवाळा छे ते तो देहोऽहंबुद्धिए वर्ते छे अने देहना सगासंबधी, नातजात हुं मारुं तेमां हरखशोक हाण्य-वृद्ध तेमां जीव कलेशने पामे छे अने त्रिविध तापमां बळ्या करे छे, केमके मायिक पदार्थ छे ते तो सर्वे नाशवंत छे माटे नाशवंत पदार्थमां कोई काळे सुख होय ज नहीं. अने जे अंतरदृष्टिवाळा छे ते तो एक

परमेश्वरने ज सत्य माने छे अने पोताने आत्मारूप मानीने देहने मिथ्या देखे छे अने जाती, वर्ण जे ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र ते पण जन्म्या पछी मावापे समजाव्युं जे 'आ तारुं नाम, आ तारुं घर, आ तारी जात, आ तारुं गाम, आ तारां सगां, आ तारा काका, आ तारी वहेन, आ तारी स्त्री' इत्यादिक जे आलोकना व्हेवारना शब्द ते तो उपरथी मावापे चोटाडया छे अने आत्मा तो अजन्म्या, अरूप, अविनाशी छे.

अने जीवे वासनाए करीने जेटला चोराशीमां जीव छे ते सर्वेने पेट जन्म धर्या छे अने जीवे पुरुषना देह धरीने सर्वेने पोतानी स्त्रीओ करी छे अने स्त्रीना देह धरीने चोराशीमां सर्वे जीवोने पोताना धणी कर्या छे. एवी रीते अंतरदृष्टिवाळा समजीने जेम चोराशी लाख जातना सगपणने हमणां नथी मानता ते मज आदेहना संबंधीने पण पोताना संबंधी मानता नथी अने पोते स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देह थकी नोखो अने शुद्ध एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानीने परमेश्वरे वर्ण, आश्रमना धर्म कह्या छे ते धर्म प्रमाणे रहीने परमेश्वरनुं भजन स्मरण करे अने जे एवी रीते पोताना आत्मानो मोक्ष थाय तेवा उपायमां निरंतर वर्त्या करे अने जगतना सुखदुःख, हरखशोक, हाण्यवृद्ध ते सम थई जाय छे, केमके ए तो 'ईश्वरनी इच्छा हशे तेम थशे,' एम समजीने हरख, शोकादिकनो धणी थतो नथी अने आ जगतनां नाशवंत पदार्थ अने ते पदार्थ संबंधी जे सुख ते पण नाशवंत छे तेनी इच्छा नथी राखता केमके आलोकनां सुख छे ते तो ज्यारे त्यारे जरूर नाश थई जशे. माटे परमेश्वरना भक्त ते मायिक सुखने नथी इच्छता अने भगवानना भक्त तो अविनाशी एवुं जे अक्षरधाम तथा अविनाशी एवुं जे भगवानना स्वरूप संबंधी सुख तेने ज इच्छे छे अने ते सुख ते अतिशय दुर्लभ छे; पण आ समये आ सत्संगमां जेने

जेने प्रतीति आवी छे तेने ए सुख अतिशय सुगम छे; केमके ते सुखना दाता आज प्रगट छे तेनी आज्ञाए करीने अधर्मनो त्याग करीने भगवान भजे ते तो आलोकमां पण सुखिया थाय छे अने देहने मूकीने भगवानना धामने पामे छे अने अपार सुखने पामे छे; केमके जेने प्रगट भगवान अने भगवानना संतनो संबंध थाय छे ते ज ते सुखने पामे छे. अने पूर्वे गोपी, गोवाळ, गुह राजा भील तथा वांदरा तेने प्रगट भगवाननो संबंध थयो तो ते पण मोटी पदवीने पामी गया छे माटे प्रगट भगवान अने भगवानना संतनो संबंध थाय छे ते तो भगवानना पार्षद थई रह्या छे अने तेना मोक्षमां कांई लेशमात्र अधुरुं नथी अने देहनुं निमित्त होय त्यां सुधी देह रहे छे अने ज्यारे देहने मूके छे त्यारे ब्रह्ममय देह धरावीने भगवानना धामने पमाडे छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २२२ समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत २२३ विषय :-जीवनो दुःखने भगवान विना बीजा कोई टाळवाने समर्थ नथी.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२३ ना अषाड वदि १०ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री खंभात मध्ये त्रवाडी पीतांबर उत्तरामने घेर गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. किनखावनो सुरवाल अने डगली धारण कर्यां हतां अने मस्तके सोनेरी पाघ वांधी हती. गूढा रंगनो रेटो पहेर्यो हतो अने कसुंबल शेलुं केडे वांध्यु हतुं. एक खभे शेलुं नाख्युं हतुं अने कंठमां पुष्पना हार पहेर्या हता. गुलाबना पुष्पना बाजुबंध अने गजरा धारण कर्या हता अने पाघमां तोरा धारण कर्या हता. कान उपर गुच्छ धारण कर्या हता अने कंकुनो

ચાંદલો કર્યો હતો અને પોતાના મુખારવિંદની આગળ સાધુ તથા દેશ દેશના હરિભક્તની સભા ભરાઈને બેઠી હતી.

પછી શ્રીહરિકૃષ્ણ ભગવાન બોલ્યા જે "જ્ઞાનીના કરતાં અજ્ઞાનીની ઇન્દ્રિયો અતિશય વિપરીત ભાવે વર્તે છે. તે કેવી રીતે વર્તે છે? તો અજ્ઞાનીને શ્રોત્રે કરીને ઉલટું બંધન થાય છે એવા શબ્દને સાંભળે છે અને ત્વચાએ કરીને પોતાનું ભૂંડું થાય એવો સ્પર્શ કરે છે અને નાસિકાએ કરીને જીવને ગંધ લેતાં આવડતી નથી. એવી રીતે અજ્ઞાની જીવની દશ ઇન્દ્રિયો અને ચાર અંતઃકરણની વૃત્તિઓ વિપરીત ભાવે વર્તે છે અને જીવને શત્રુની પેઠે દુઃખ દે છે અને જન્મમરણનાં દુઃખને ભોગવાવે છે અને પરમેશ્વરે પોતાને ભજવા સારુ જીવને ઇન્દ્રિયો અંતઃકરણ કૃપા કરી સર્જી આપ્યાં છે. તે ભગવાનનો મહા ઉપકાર તેને જીવ ભૂલીને પોતાના આત્માનું સ્વરૂપ ભૂલીને પછી કુસંગે કરીને ઇન્દ્રિયોને વશ થઈને પંચવિષયની આસક્તિએ કરીને આ સંસારમાં જન્મમૃત્યુને વારંવાર પામે છે.

તેમાં કેટલાંક તો ગર્ભમાં માતાના ઉદરમાં દુઃખ થાય છે તથા જન્મ સમયનાં દુઃખ પણ કહ્યાં જાય એવાં નથી અને બાળ અવસ્થાનાં દુઃખ પણ અપાર છે અને જોબન અવસ્થામાં કામ, લોભાદિક શત્રુ પણ જીવને અતિ દુઃખ દે છે અને અંત સમયે પણ અનંત પ્રકારના રોગ પ્રગટ થાય છે તે સમયે પણ જીવને મહા કષ્ટ થાય છે. તે કષ્ટ કોઈથી કહ્યાં જાય એવાં નથી, તે દુઃખને તો એક ભગવાન વિના બીજો કોઈ ટાળવાને સમર્થ નથી. જેમ કોઈ એક પુરુષ બળવાન હોય તેને દસ વીસ પુરુષ ભેગા થઈને તે એકલાને ઝાલીને તેને ખૂબ મારીને તેના બળને ઘટાડી નાખે છે. પછી તે પુરુષ પૂગવાને સમર્થ થતો નથી. તેને કોઈક એ સર્વેને મારે એવો સમર્થ રાજા હોય તે સહાય કરે ત્યારે તે ઝાઝા શત્રુ થકી મુકાય.

तेम एकला पुरुपने ठेकाणे तो आत्मा छे अने इन्द्रियो, अंतःकरण, पंचभूत अने पंचविषय ते तो झाझा शत्रुने ठेकाणे छे. तेणे जीवने काम, क्रोध, लोभादिक शस्त्रे करीने हरवी नाख्यो छे माटे इन्द्रियो अंतःकरणने पूगवाने समर्थ थतो नथी, एने तो राजाने ठेकाणे एक भगवान छे ते मुकाववाने समर्थ छे. ते जीवने मळे अने धर्म, ज्ञान, वैराग, भक्तिरूपी महाबळ आपे, त्यारे जीव इन्द्रियो रूपी शत्रुनो पराजय करीने अपार सामर्थीने पामे छे, त्यारे जीव ब्रह्मरूप थईने भगवानना धामने पामे छे. माटे जेने पोताना कल्याणनो खप होय तेने तो प्रत्यक्ष भगवान तथा भगवानना एकांतिक साधु ते थकी ज्ञानने पामीने इन्द्रियोने नियममां करीने, अंतःकरणने वश करीने ए सर्वे थकी वैरागने पामीने पोताना आत्माने ब्रह्मरूप मानीने भगवाननुं भजन करे छे ते ज साक्षात आत्यंतिक मोक्ष जे अक्षरधाम तेने पामे छे; पण ते विना भगवानना धामने पामवानो बीजो उपाय नथी, ते सूझे तो आज करो अने सूझे तो कोटि युग केडे करो अने सूझे तो एकवार कहे करो अने सूझे तो लाखवार कहे समजो पण ज्यारे त्यारे समजशो त्यारे ज मोक्ष थशे. ”

इति श्रीमुखसिद्धांत २२३ समाप्त।



श्रीमुखसिद्धांत २२४ विषय :–प्रगट भगवाननुं स्वरूप

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना श्रावण सुदि २ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री खंभात मध्ये पटेल वेचर कुबेरने घेर उत्तरादे बारना चोकमां विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तके सोनेरी पाघ धारण करी हती अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां अने ललाटने विषे

केसरनी अर्चा अने ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाप्रभुजी कृपा करीने सर्वेने पोताना स्वरूपनो अडग निर्विकल्प निश्चय थाय ते सारु वार्ता करता हता जे जे आवी रीते भगवानना स्वरूपने समजे तो तेने कोई रीते भगवानना स्वरूपमां संशय थाय नहीं अने तेना अंतरमां प्रकाश थाय अने तेने मोक्षना मार्गमां कांई अंतराय रहेतो नथी. हवे ते भगवान केवा छे ? तो जेम आलोकमां कोईक चक्रवर्ती राजा होय अने ते पोतानी राजगादीए बेठो थको कामदार पासे अनंत परगणांनां काम करावे छे अने सर्वे प्रजानी रक्षा करावे छे अने सर्वेने पोताना हुकम प्रमाणे वर्तावे छे अने पोतानी आज्ञा लोपे तेने दंड आपे छे अने सर्वे रैयत राजाने जमे भरे छे.

तेम राजाने ठेकाणे तो भगवान पुरुषोत्तम छे ते सदाय पोताना अक्षरधाममां दिव्य सिंहासन उपर अनंत मुक्ते विंटाणा थका अखंड विराजमान छे. ते भगवान केवा छे ? तो दिव्य मूर्तिमान छे अने अनंत ऐश्वर्य, अनंत पराक्रमे युक्त छे अने पोतानी इच्छाए करीने पुरुष, प्रकृति अने काळ ते द्वाराए अनंत कोटी ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय करावे छे. माटे भगवानने कर्ता कह्या छे. अने जेम राजा पोते नथी करता अने कामदार पासे करावे छे, तेम भगवान पुरुषोत्तम पोते नथी करता अने कामदारने ठेकाणे पुरुष, प्रकृति अने काळ ते द्वाराए उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय करावे छे पण पोते नथी करता, माटे भगवानने अकर्ता कह्या छे. अने पुरुष, प्रकृति, प्रधानपुरुष, महत्तत्त्व, विराटपुरुष, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ऋषि, प्रजापति, देव, दैत्य, मनुष्य, पशु, पक्षी आदिक जीव प्राणीमात्र सर्वेमां तारतम्यताए अंतरजामी भगवान रह्या छे.

माटे भगवानने सगुण कह्या छे अने वळी अनंत जीवोना कल्याण करवाने अर्थे पृथ्वी उपर प्रगट थाय छे त्यारे अनंत जीवोनां कल्याण करवाने अर्थे सत्य, शौचादिक दिव्यगुणनुं धारण करे छे, माटे भगवानने सगुण कह्या छे अने ते ज भगवानना स्वरूपने विषे रज, तम अने सत्त्व ए जे मायिक गुण ते बीजा जीवोनी पेठे नथी अने भगवानने विषे रज, तम अने सत्त्वगुण जणाय छे ते तो अनंत जीवोना कल्याणने अर्थे जणाय छे अने अनंत जीवोने निर्गुण करवा सारु भगवान पण ए गुण धारण करे छे.

जेम कोईकना पगमां कांटो वाग्यो होय पछी ते बीजो कांटो लईने कांटाने काढी नाखे छे. तेम जीवोने त्रण गुणरूपी चैतनमां कांटो वाग्यो छे. ते कांटाने काढवा सारु भगवानने विषे गुण जणाय छे पण भगवानने विषे तो मायिक गुण नथी अने भगवान मनुष्य जेवा जणाय छे. तो पण निर्गुण अने दिव्यमूर्ति छे, माटे भगवानने निर्गुण कह्या छे. अने ए भगवानने साकार कहे छे ते केवी रीते कहे छे? तो नित्य प्रलयमां देव, दैत्य, मनुष्यादिक ए सर्वेनो नाश थाय छे अने निमित्त प्रलयमां ब्रह्मानी सुषुप्ति तेमां दश लोकनो नाश थई जाय छे अने प्राकृत प्रलयमां चौद लोकनुं ब्रह्मांड सर्वे तथा महत्तत्त्व तथा प्रधानपुरुष ए सर्वे प्रकृतिनुं कार्य प्रकृतिमां लीन थई जाय छे अने आत्यंतिक प्रलयमां प्रकृति जे ते पुरुषमां लीन थई जाय छे अने पुरुष पण अक्षरना प्रकाशमां लीन थई जाय छे. पछी एक अक्षर रहे छे अने ते अक्षरमां भगवान सदाय अखंड मूर्तिमान थका रहे छे तथा अनंतकोटी अक्षरधामने पाम्या एवा जे अक्षरमुक्त ते रहे छे, माटे भगवानने साकार कह्या छे. अने भगवाननी मूर्तिने विषे मायामांथी थया जे चोवीस तत्त्व ते नथी अने भगवान मनुष्याकृति धारण करे त्यारे मनुष्य जेवा जणाय छे, तो पण दिव्यमूर्ति छे अने जेने जेने ते भगवाननी मूर्तिनो संबंध थाय छे ते पण

दिव्यभावने पामी जाय छे, माटे भगवाननी मूर्तिने विषे मायिक आकार नथी. ते सारु भगवानने निराकार कह्या छे. माटें आवी रीतना शास्त्रना मर्मने नथी समजता पछी विवाद करे छे अने तेने करी बुद्धि मलीन थई छे. पछी तेने प्रगट भगवान ओळख्यामां आवता नथी.

इति श्रीमुखसिद्धांत २२४ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २२५ विषयः-विश्वनो प्रलय अने जीवनो मोक्ष

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२३ ना श्रावण सुदि ३ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये पटेल लालभाई कानदासने घेर उत्तरादे वारना चोकमां बिराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठने विषे पुष्पना घणाक हार धारण कर्या हता. पुष्पना गजरा, बाजु, तोरा अने गुच्छ धारण कर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी यदुराम भटे महाप्रभुजीने हाथ जोडीने प्रश्न पूछ्यो जे "आ विश्वनो प्रलय ते केम थाय छे ? अने जीवनो मोक्ष केम थाय ? अने मायाना बंधन थकी मूकाईने भगवानना धामने जीव केम पामे छे ? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "सारुं पूछ्युं, सांभळो तेनी वात करीए जे जेम समुद्रमां मोटुं मांछलुं होय ते झींणा जीवने गळी जाय छे अने तेथी वळी मोटा मगरमच्छ होय ते मोटा मोटा मांछलाने गळी जाय छे. अने महा मच्छ छे ते तो अनंत मगरमच्छने पण गळी जाय छे. ए तो द्रष्टांत अने तेनुं सिद्धांत ए छे जे विश्वना प्रलयने समये मोटा मांछलाने ठेकाणे विराट छे. ते देव, दैत्य, ऋषि, प्रजापति, मनुष्य, पशु, पक्षी आदिक सर्वेने विराट गळी जाय छे अने मोटा मगरमच्छने ठेकाणे प्रकृतिपुरुष छे ते

पोतानुं कार्य जे चोवीस तत्त्व, प्रधानपुरुषादिक अनंत तेने गळी जाय छे. अने महामच्छने ठेकाणे अक्षर छे. ते एवा अनंत कोटी प्रकृतिपुरुषने गळी जाय छे अने एवा जे अक्षर तेने विषे दिव्य मूर्तिमान थका भगवान सदाय विराजमान छे. अने ते भगवानना साधर्म्यपणाने पाम्या एवा अनंत कोटि पार्षद ते अखंड भगवानना सेवामां हजुर रह्या छे.

पछी उत्पत्ति समये ए भगवाननी इच्छाए करीने अक्षर अन्वय थका पुरुष, प्रकृति द्वाराए अनंत कोटि प्रधानपुरुष, महत्तत्त्व तथा अनंत कोटि विराट तथा अनंत कोटि ब्रह्मा, विष्णु, शिव, देव, दैत्य, मनुष्यादिक ए सर्वेनी उत्पत्ति करे छे. पछी ते ब्रह्मांडमां सर्वोपरी, सर्वकारण, सर्वातीत एवा जे भगवान पुरुषोत्तम ते जीवो उपर कृपा करीने मनुष्याकृतिनुं धारण करे छे त्यारे ते भगवाननो जेने संबंध थाय छे अने ते भगवानने विषे नवधा भक्तिए करीने जे जे जीव जोडाय छे ते सर्वेनां कल्याण थाय छे अने मायाने तरीने भगवानना धामने पामे छे, पण ते विना कोई काळे मायाने तरे नहीं अने जीवनुं कल्याण थाय नहीं माटे जीवनुं कल्याण तो प्रत्यक्ष भगवानमां जोडाय त्यारे थाय छे ए सर्वे शास्त्रनो सिद्धांत छे अने अमारो पण एज सिद्धांत छे माटे तमारा मोटां भाग्य छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २२५ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २२६ विषयः—प्रगट भगवानमां प्रीति करवानी रीत.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना श्रावण सुदि ४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये पटेल खुशाल आशारामने घेर दक्षिणादे बारना घरमां विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी श्रीहरिकृष्ण भगवान बोल्या जे "सांभळो एक तमारा हीतनी वात करीए जे जे भगवानना भक्त होय तेने भगवानने विषे प्रीति करवी ते आत्मारूप थईने करवी. केमके जेम कोईक मळमूत्रनो भर्यो थको देवनी पूजा करे तो तेनी उपर देव प्रसन्न थाय नहीं अने नाही धोईने पूजा करे तो ते देव प्रसन्न थाय. तेम पंचभूतनो विकार जे हाड, मांस, लोही, नाडीओ, त्वचा, रोम, परू, पाच आदिक महा मलीन वस्तुनो भरेलो एवो जे देह ते रूप थईने भगवाननी भक्ति करे छे तेना उपर भगवान अतिशय प्रसन्न थता नथी. माटे भगवानमां प्रीति करवी ते तो आत्मारूप थईने करवी.

ते आत्मा केवो छे? तो सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देह अने जाग्रत, स्वप्न अने सुषुप्ति ए त्रण अवस्था अने रज, तम अने सत्त्व ए त्रण गुण, ते थकी आत्मा नोखो छे. अने देहादिक सर्वे जड छे अने नाशवंत छे अने आत्मा छे ते तो अभेद छे, अच्छेद छे, अविनाशी छे, सुखरूप छे; तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं पण मायिक एवो जे पंचभूतनो देह तेने पोतानुं रूप मानवुं नहीं, अने आत्मा छे ते पंचविषयने सुखे करीने सुखी थाय एवो नथी अने ए तो पोते ज सुखरूप छे, एवुं पोताना स्वरूपने जाणीने मायिक जे पिंड, ब्रह्मांडादिक तेने नाशवंत अने दुःखरूप जाणीने तेने विषे वैराग पामीने तेनी वासनानां मूळ उखाडीने ब्रह्मरूप थईने भगवानमां प्रीति करवी तो तेना उपर भगवाननी कृपा थाय छे.

अने अमे वात करी ते वात समजीने ते प्रमाणे अमारे विषे अने अमारा संतने विषे हेत करशे तो ते साथे अमारे अखंड संबंध रहेशे अने अमारी पण तेना उपर अतिशय कृपा थाय छे, पण देहरूप थईने जे अमारे विषे हेत करे छे तो ते अविनाशी एवुं जे अमारुं धाम तथा

अविनाशी एवुं जे अमारुं सुख तेने नथी पामतो तथा अलौकिक एवो जे अमारो महिमा तथा अलौकिक एवुं जे मारुं स्वरूप ते पण देहोऽहं बुद्धिवाळाने जाण्यामां नथी आवतुं केमके देहोऽहं बुद्धिवाळो अतिशय भगवाननो महिमा जाणे तो पुरुषप्रकृति जेवा भगवानने जाणे अने देहोऽहं-बुद्धिए करीने भगवानमां प्रीति करे तो ते प्रकृतिपुरुषना धामने पामे पण आत्यंतिक मोक्ष जे अक्षरधाम तेने देहोऽहं बुद्धिवाळा पामता नथी अने भगवानना स्वरूपनो निर्विकल्प निश्चय पण देहोऽहं बुद्धिवाळाने थतो नथी.

माटे नित्य प्रलय, निमित्त प्रलय, प्राकृत प्रलय अने आत्यंतिक प्रलय ए चार प्रकारना ज्ञानप्रलये करीने पछी पोताना आत्माने अने अक्षरने अभेदपणें मानीने ते अक्षरने विषे भगवाननी मूर्तिने धारीने प्रतिलोम द्रष्टि करीने भगवान प्रगट जे पोताने मळ्या होय तेने विषे प्रीति करवी अने एवी रीते समजीने जे जे अमारे विषे हेत करशे तेने ज अमारो अखंड संबंध रहेशे अने एज अमारो साचो भक्त छे अने एकांतिक भक्त छे अने एवाने देखीने अमे अतिशय राजी थईए छीए."

इति श्रीमुखिसद्धांत २२६ समास ।

श्रीमुखसिद्धांत २२७ विषयः–संसारनां दुःखथी जीवनी मुक्ति अने तेनुं कल्याण.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२३ ना श्रावण सुदि ५ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये पटेल आशाराम रणछोडभाईने घेर उत्तरादे बारना घरमां हिंडोळा उपर गादी तकिया नखावीने विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण धारण कर्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी भट्ट शिवशंकरे प्रश्न पूछ्यो जे "हे महाराज! जीवने संसार वळग्यो छे अने तेमां जन्ममरणनां दुःखने पामे छे ते थकी केम मूकाय? अने जीवनुं कल्याण केम थाय? ते कहो."

पछी महाप्रभुजी बोल्या जे "जीवनुं कल्याण तो सत्संगे करीने थाय छे अने संसार थकी पण सत्संगे करीने मूकाय छे अने जन्ममरणनां दुःख टळी जाय छे. हवे ते सत्संग ते शुं? तेने कहीए छीए जे सत्य एवा जे भगवानना एकांतिक निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी संत तेनो मनकर्मवचने संग करवो, तेनुं नाम सत्संग छे. माटे तेना चरित्रनुं श्रवण कीर्तन नित्ये सत्पुरुष एवा जे संत तेना मुख थकी सांभळवुं अने तेमां नित्य नित्य नवो प्रेम राखवो. अने सेवा आदिक नवधा भक्ति माहात्म्ये सहित निष्कामभावे करीने करवी, कहेतां धर्म, अर्थ अने काम तेनी वासनानो त्याग करीने पोताना आत्माना कल्याण सारु अने भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे भगवाननी नवधा भक्ति करवी तो तेना अनंत जन्मनां महा पाप होय ते सर्वे भक्ति अने सत्संगरूपी अग्निए करीने बळी जाय छे अने तेने भगवानना धामनी प्राप्ति थाय छे. माटे आ समये तमने जे सत्संग मळ्यो छे एवो सत्संग मळवो घणो ज दुर्लभ छे.

अने जेवुं सत्संगे करीने जीवनुं रूडुं थाय छे तेवुं तो जप, तप, व्रतादिक साधने करीने थतुं नथी अने आवो सत्संग तो अनंत जन्मना शुभ संस्कार होय छे तेने मळे छे अने सर्व साधननुं फळ आवो सत्संग मळवो ते ज छे. अने आ जे वार्ता अमे करी छे ते सर्वे शास्त्रनुं रहस्य छे केमके पूर्वे पण जे जे भगवानना पदने पामी गया छे ते पण आवे सत्संगे करीने पामी गया छे अने आज पण जे जे भगवानना पदने पामशे ते पण सत्संगे करीने पामशे. माटे जेने आज सत्संगमां प्रतीति

आवी छे, कहेतां आ धर्मानंदस्वामी तथा अक्षरमुक्तानंदस्वामीने विषे जेने प्रीति थई छे तेना भाग्यनो पार नथी अने ते तो सर्वे साधनना पारने पामी रह्या छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २२७ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २२८ विषयः—छ शत्रु थकी जीवनी मुक्ति

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२३ना श्रावण सुदि ५ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये त्रवाडी बेचरभाई उत्तमभाईने घेर उगमणां बारना चोकमां विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तके सोनेरी पाघ धारण करी हती. पुष्पना आभूषण सर्वे अंगने विषे धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी श्रीहरिकृष्ण भगवान कृपा करीने बोल्या जे "आ जीवना शत्रु कोण छे? तो काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, स्नेह अने मान ए छ शत्रु छे ते जीवने महा दुःख दे छे अने तेमां काम अने लोभ ए बे जन्म धरावे छे अने स्वाद अने स्नेह ए बे शत्रु ते हाडमांसनो लोचो एवो जे देह तेमां स्थिति करावे छे अने मान अने क्रोध ए बे मृत्युनां दुःखने पमाडे छे. एवी रीते ए छ शत्रु जीवने अनादिकाळना दुःख देता आवे छे अने वारंवार जीवने जन्ममृत्युनां दुःखने पमाडे छे अने तेने करीने जीव अतिशय संतापने पामे छे अने ते संताप थकी जीव पोतानी मेळे कोई काळे छूटवाने समर्थ नथी थतो."

पछी धर्मानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! ए छ शत्रु थकी जीव केम मूकाय?"

त्यारे महाप्रभुजी बोल्या जे " ए शत्रुना नाशना करनारा भगवान अने भगवानना संत छे, ते ज्यारे जीवने कृपा करीने प्रगट मळे अने ते आत्माना स्वरूपनुं तथा परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान आपीने अधर्मनो त्याग करावीने इन्द्रियो नियममां राखावे अने ज्ञाने करीने सूक्ष्म शरीरना अने कारण शरीरना विषय तेने बाळी नाखे छे त्यारे ज जीव जन्ममृत्युनां दुःख थकी मूकाय छे. पण जो कोई एके इन्द्रियने मोकळी मेले तो बीजी सर्वे इन्द्रियो जीवने जरूर दुःख दे छे.

त्यां दृष्टांत छे—जेम वीस कोसनो प्रवाह चाल्यो जतो होय अने तेमां छिद्र पडवा न दे अने जराक छिद्र पडे अने तरत बंध करे तो पाणी ठेकाणे पूगे अने जो छिद्र पडे अने बंध न करे तो पाणी सर्वे वहार अवथे जाय अने पाछुं बंध कर्युं पण बंध थाय नहीं. तेम त्यागीने तो सर्वे इन्द्रियो नियममां होय ते ज त्यागीनुं कल्याण थाय छे अने भगवानना धामने पामे छे अने जो एके इन्द्रिय मोकळी मेले तो तेनो वेग विषय उपर अति आकरो वीस कोसनो थाय छे केमके अज्ञानी जीवनी इन्द्रियोनी वृत्तिओ नोखी नोखी जती होय त्यारे तेनी वृत्तिमां बळ होय नहीं. जेम अडधा कोसनो के पा कोसनो प्रवाह होय तेमां तो कांईए वेग होय नहीं, तेम अज्ञानी जीवनी वृत्तिओ तो फाटेली नोखी नोखी जती होय तेमां वेग होय नहीं अने एनी वृत्तिओ तो सदाय भ्रष्ट होय तेने कोई कहेतुं नथी.

—अने त्यागीनी इन्द्रियो नियममां होय. माटे ते जो एके इन्द्रियने मोकळी मेले तो तेमां वेग भराय छे. ते जो नारदे त्यागीनो धर्म मूकीने कन्यानो हाथ जोयो त्यारे भ्रष्ट मन थई गयुं अने सौभरीये नेत्र इन्द्रिये करीने माछली-माछलानो संग जोयो तो बुद्धि भ्रष्ट थई गई

अने श्रृंगिऋषिए जो एक रसना इन्द्रिये करीने रस चाख्यो तो योग थकी पडया. तो बीजा जीवनी शी गणत्री! माटे भगवानना भक्तने तो एवो ठराव करवो जे स्त्री छे ते पापरूप छे अने जीवने बंधनकारी शत्रु छे, माटे कोई शत्रुनो संग करशो नहीं. अने तेवी ज रीते लोभ, स्वाद, स्नेह, मान अने क्रोध ए पांच दोषने पण शत्रुरूप जाणीने तेनो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनी आज्ञा प्रमाणे वर्तशे तो तेना शत्रुनो तत्काळ नाश थई जशे अने ब्रह्मरूप थईने छते देहे मुक्त थशे अने देहने मूकीने भागवती तनुये करीने भगवानना धाममां रहेशे अने अखंड सुखने पामशे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २२८ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत २२९ विषय :—भगवाननुं दिव्य स्वरूप अने मनुष्य स्वरूप.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना श्रावण सुदि ६ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये शाह रणछोडभाई मोरलीदासने घेर दक्षिणादे बारना ओरडानी रवेशमां विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मुस्तके गूढा रंगनी पाघ बांधी हती. पुष्पना हार धारण कर्या हता अने फूलना गजरा अने बाजु-बंध धारण कर्या हता. पाघमां तोरा लटकता हता अने कान उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी मोटी सभा भराईने बेठी हती.

पछी सर्वे सभा प्रत्ये श्रीहरिकृष्ण महाराज कृपा करीने बोल्या जे " अमे आजे वात करीशुं ते वातने समजाय तो तेने कोई काळे प्रगट भगवानना चरित्रने विषे संशय थाय नहीं अने तेने भगवानना

स्वरूपनो निश्चय टळे पण नहीं. ते वात करीए छीए तेने सुरत दईने सांभळो जे भगवानना दिव्य स्वरूपने जाणे छे तो तेने प्रगट भगवानना चरित्रमां संशय थाय नहीं. हवे भगवाननुं दिव्य स्वरूप केवुं छे? तो आ नेत्रे करीने देखवामां आवे एवुं नथी अने वाणीए करीने वर्णव्यामां आवे एवुं नथी अने त्वचाए करीने स्पर्श करवामां आवे एवुं नथी अने नासिकाए करीने सुंघवामां आवे एवुं नथी अने पगे करीने त्यां जवाय एम नथी अने मनना संकल्पमां आवे एम नथी अने चित्तना चिंतवनमां आवे एम नथी. एवी रीते मायिक इन्द्रियो अंतःकरणे करीने दिव्य स्वरूपनुं प्रमाण थाय एम नथी. त्यां श्रुति छे–

'यतो वाचो न निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सह ॥'

एवुं भगवाननुं स्वरूप इन्द्रियो अंतःकरण थकी अगोचर कह्युं छे. अने तेज भगवान सर्वकारण छे, सर्वाधार छे, छे सर्वनियंता अने सर्वोपरी महाराजाधिराज छे. जेम आलोकमां कोईक मोटो चक्रवर्ती राजा होय छे ते राजानी संपत्ति, धन-माल, हाथी घोडा, गाम, शहेर, परगणां तेनी गणतरी थाय नहीं अने तेना गामनी पण गणतरी थाय नहीं. अने ते ते गामना पटेल पण अपार होय अने गामनी वस्ती सर्वे पटेलने वजे वेरो आपे अने पटेल राजाने आपे अने पटेल राजाने एम प्रार्थना करे जे 'तमे अमारे गाम पधारो अने अमाराथी जेवी तमारी चाकरी थशे तेवी करशुं.' तेम राजाने ठेकाणे तो भगवान पुरुषोत्तम, पूरणब्रह्म, अक्षरातीत दिव्यमूर्ति थका सदाय अक्षरधाममां छे अने अनंत कोटि पार्षदे विंटाणा थका अने अनंत ऐश्वर्य, अनंत शक्तिओ अने अनंत दिव्य अलौकिक प्रतापे युक्त थका विराजमान छे अने पोताना भक्त जनने सदाय सुख आपे छे अने कर्तुमकर्तुम् अन्यथा कर्तुम् समर्थ छे; अने अनंत कोटि ब्रह्मांडना अधिपति छे.

अने जेम राजाना ढोलियाना चाकर होय तेने ठेकाणे तो अक्षर छे अने परगणाना दिवानने ठेकाणे तो प्रकृतिपुरुष छे अने पटेलने ठेकाणे तो ब्रह्मा, विष्णु, अने शिव छे. अने ते ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रत्ये एक एक ब्रह्मा, विष्णु अने शिव छे अने मनुष्य, ऋषि, प्रजापति, देव, दैत्य ए सर्वे ब्रह्मा, विष्णु अने शिवने भजे छे अने ब्रह्मा, विष्णु, शिव छे ते मूळ प्रकृतिपुरुषने भजे छे अने प्रकृतिपुरुष अक्षरने भजे छे अने अक्षरब्रह्मद्वारे ए सर्वे भगवान पुरुषोत्तमने भजे छे अने भगवाननी प्रार्थना करे छे जे '*हे महाराज कृपा करीने अमारा ब्रह्मांडमां पधारो अने दया करीने अमने दर्शन दो.*'

पछी ते भगवान पुरुषोत्तम कृपा करीने पोताना अलौकिक प्रतापने छूपावीने ज्यां जेवुं कार्य त्यां तेवा देहनुं धारण करे छे अने जेवा देहनुं धारण करे छे ते प्रमाणे चेष्टा करे छे पण बीजी रीते नथी करता. अने जो देवमां देहनुं धारण करे तो देवना जेवी चेष्टा करे छे अने मनुष्य-देह धारण करे त्यारे मनुष्यना जेवी ज चेष्टा करे छे अने पशुमां देह धरे तो पशुना जेवी चेष्टा करे छे. ते नृसिंह अवतार थयो त्यारे सिंहना जेवी चेष्टा करी अने मच्छ, कच्छादिकनुं धारण कर्युं त्यारे जळमां ज फर्या अने मच्छ, कच्छना जेवी चेष्टा करी अने मनुष्यमां भगवान देह धारण करे छे त्यारे मनुष्यना जेवी चेष्टा करे अने मनुष्यना जेटली ज आवरदा, बळ तेनुं भगवान धारण करे छे; पण अधिकपणें न वर्ते. ते जो सत्युगमां देहनुं धारण करे तो सत्युगनी आयुष्य प्रमाणे देह राखे अने सत्युगना मनुष्य जेम देहनी क्रिया करे तेम भगवान पण देहनी क्रिया करे अने त्रेतायुगमां देहनुं धारण भगवान करे त्यारे त्रेतायुगना मनु-ष्यनी पेठे ज सर्वे क्रिया, बळ अने आयुष्य ते धारण करे छे अने द्वापरमां देह धारण करे त्यारे द्वापरना मनुष्य प्रमाणे देहनुं बळ, आयुष्य

अने क्रिया ते प्रमाणे ज करे छे अने कळियुगमां देह धारण करे छे त्यारे कळि प्रमाणे आयुष्य अने कळि प्रमाणे बळ अने कळिना मनुष्यने जेम काम, क्रोध, लोभ, मान, स्वाद, स्नेह, पक्षपात, पारकु-पोतानुं होय तेम भगवान पोताने विषे जणावे छे, पण भगवानना ए सर्वे दिव्य गुण छे अने अनंत जीवना कल्याणने अर्थे छे पण बीजा मनुष्यनी पेठे काम, क्रोधादिक भगवानने विषे न होय अने भगवानना संबंधने जे जे पामे तेना पण काम, क्रोध, लोभादिक सर्वे दोष मात्र टळी जाय छे अने ते ब्रह्मरूप थई जाय छे, तेने दिव्यदृष्टिवाळा एकांतिक साधु जाणे छे.

ते कामभोगे करीने व्रजनी गोपीयो श्रीकृष्णमां जोडाणी तो ब्रह्मरूप थईने भगवानना धामने पामी गई. माटे कामभावे, लोभभावे, स्नेहभावे, स्वादभावे जे जे भावे भगवानमां जोडाय तो ते सर्वे ब्रह्मरूप थई जाय छे अने अक्षरधामने पामे छे. माटे भगवान तो मनुष्य जेवा जणाय छे अने दिव्यभाव जणावे तो कोई जीव भगवाननुं दर्शन करवाने पण समर्थ थाय नहीं अने जो मनुष्यनो संकल्प कहेवा मांडे तो कोई मनुष्य पासे उभो पण रहे नहीं अने जो पोतानां ऐश्वर्य देखाडे तो कोई सेवा करवा पण ढुकडुं आवी शके नहीं.

माटे भगवानने तो पोताना दिव्य गुण छे तेने छुपाडवा उपर ज निरंतर दृष्टि रहे छे अने दरेक कोई कार्यमां उतावळा थई जाय तो पोताने विषे दिव्यभाव जणाई आवे छे अने कोईक समये पोताना भक्तने कृपा करीने जणावे छे. जेम श्रीकृष्णे अर्जुनने विश्वरूप देखाडयुं त्यारे ते अर्जुन जोवाने समर्थ थयो नहीं अने आकुळ व्याकुळ थई गयो. माटे दिव्य स्वरूप जो भगवान देखाडे तो जीवने ठीक न पडे अने सुख न आवे अने कोईने प्रीति पण न थाय अने कोई जीवनुं

कल्याण पण थाय नहीं. केमके आ सूर्य छे तेने शास्त्रमां नारायण कह्या छे *पण सूर्यना दर्शने करीने कोईनुं कल्याण थतुं नथी अने* राम, कृष्ण, ऋषभ, कपिलदेवादिक मनुष्य स्वरूप भगवान तथा नारद, सनकादि साधु ते तो मनुष्य जेवा जणाय छे अने तेमां प्रकाश पण कांई देखातो नथी अने जो अंधारामां बेठा होय त्यारे दिवो मशाल होय त्यारे दर्शन थाय पण तेना दर्शन थकी अनंत जीवनां कल्याण थाय छे अने जे जे एने वचने करीने अधर्मनो त्याग करीने धर्मने मार्गे चाले छे ते सर्वेना मोक्ष थाय छे तथा जे जे नवधा भक्तिए करीने ए मनुष्य मूर्तिनी सेवा करे छे ते दिव्यरूप थई जाय छे अने अक्षरधामने पामे छे.

माटे दिव्य स्वरूप अने मनुष्य स्वरूप ते एक ज छे; ते मनुष्य जेवा जणाय छे ते तो अनंत जीवोना कल्याणने अर्थे कृपा करीने जणाय छे पण सदाय दिव्यरूप ज छे. माटे दिव्यरूप अने मनुष्यरूपने जे जाणे ते तो तेने कोई रीते भगवानना स्वरूपमां संशय थाय नहीं अने सूझे एवा भगवान चरित्र करे तो पण कोई रीते संशय थाय नहीं अने एने भगवानना सर्वे चरित्र दिव्य जणाय अने अधिक अधिक भगवाननो महिमा जणातो जाय अने भगवानमां दिवसे दिवसे स्नेह वधतो जाय छे अने पोताना हृदयमां प्रकाश पण दिवसे दिवसे अधिक थतो जाय छे. माटे आवी रीते दिव्यभाव अने मनुष्यभावने जाण्या विना भगवानना स्वरूपनो निश्चय छे तो पण देश, काळ अने योगे करीने संशय थया विना रहे नहीं. माटे भगवानना भक्तने आ वात जरूर समजवानी छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २२९ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत २३० विषयः—मायानुं रूप.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२३ ना श्रावण सुदि ८ने दिवस श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये सुथार रणछोडभाईने घेर उगमणें वार घरना चोकमां गादीतकिया नखावीने ते उपर विराजमान थया हता. धोळो सुरवाल अने अंगरखुं धारण कर्युं हतुं अने गुढा रंगनी पाघ वांधी हती अने गूढो रेंटो पहेर्यो हतो. केडे कसुंबल शेलुं बांध्युं हतुं अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगने विषे धारण कर्यां हतां. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने जमणा हाथने विषे रूमाल धारण कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाप्रभुजी कृपादृष्टि करीने सर्वे सभा प्रत्ये बोल्या जे "सर्वे शास्त्र अने सर्वे सत्पुरुषना रहस्य तेनी आज अमे वात करीशुं. ते वात समजाय तो कल्याणने अर्थे कांई बाकी समजवुं रहेतुं नथी ते सर्वे एकाग्र चित्ते करीने सांभळो जे माया माया कहे छे ते मायानुं शुं रूप छे? तो देहने विषे अहंबुद्धि अने देह संबंधी पदार्थने विषे ममत्वबुद्धि एज मायानुं रूप छे. ते मायाने टाळवी. ते देहने विषे अहंबुद्धि केम टळे? अने पदार्थने विषे ममत्वबुद्धि केम टळे? तो आत्माने ज्ञाने करीने देहने विषे अहंबुद्धि टळे छे अने वैरागे करीने अने भगवानना महिमाए करीने पदार्थने विषे ममता बुद्धि टळी जाय छे अने ज्यारे अहंग्रंथी अने ममत्वग्रंथी टळी त्यारे मायाने तरी रह्यो छे. अने पूर्वे पण जे जे मोक्षने मार्गे चाल्या छे तेणे पण भगवान पासे प्रार्थना करीने एज मांग्युं छे जे 'देहने विषे अहंबुद्धि अने देहसंबंधी पदार्थने विषे ममत्वबुद्धि ए जे माया ते थकी रक्षा करजो अने तमारा चरणारविंदने विषे प्रीति थजो अने तमारी सेवाने विषे ममत्व थजो अने तमारा एकां-

तिक साधु तेनो संग देजो अने तेने विषे आत्मबुद्धि थाओ.' एम पूर्वे पण भगवानना भक्ते भगवान पासे माग्युं छे.

माटे आज पण जेने जेने पोताना आत्माना मोक्षनी इच्छा होय तेने एवी रीते ज भगवान पासे मागवुं अने जेने भगवान अने भगवानना साधुने विषे आत्मबुद्धि थाय त्यारे ज तेने देहने विषेथी अहंबुद्धि टळे अने पदार्थने विषेथी ममता टळे पण ते विना कोई काळे टळे नहीं अने भगवान अने भगवानना जे संत तेमां आत्मबुद्धि क्यारे थाय ? तो धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति ए चार वाना दृढ थाय त्यारे भगवान अने भगवानना जनने विषे आत्मबुद्धि थाय छे.

हवे ए चारनां रूप कहीए छीए जे प्रथम धर्मे करीने तो इन्द्रियो अंतःकरणने विषय थकी पाछा वाळीने नियममां करवा अने आत्माने विचारे करीने जेम आ जगतनी तथा देहनी जेम उत्पत्ति छे तेने सांख्य-शास्त्रने ज्ञाने करीने सर्वेनुं चार प्रकारना प्रलय वडे करीने निराकरण करवुं अने एक अक्षरब्रह्म एवा जे सत्, चित् अने आनंदरूप जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं अने ते आत्माने विषे परमात्मा पुरुषोत्तम ते सदाय साकार मूर्तिमान थका विराजमान छे अने ते भगवान पुरुषोत्तम सर्व-कारण सर्वाधार ते अक्षरधाममां रह्या थका अनंत जीवोनां कल्याणने अर्थे प्रगट थाय छे, ते भगवाननी मूर्तिने हृदयमां धारीने ते मूर्तिने विषे एकाग्र चित्ते करीने तेने विषे जोडाई रहेवुं अने ज्यारे ए भगवाननी मूर्तिमां जोडाणो त्यारे तेनां सर्वे साधन संपूर्ण थई रह्यां छे अने जप, तप, व्रत, दान ए सर्वेनुं पण एज फळ छे जे ज्ञानप्रलये करीने आत्मारूप थईने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिमां जोडावुं अने एवी रीते भगवाननी मूर्तिमां जोडाय छे त्यारे निराकार एवो जे आत्मा तेनो भगवानना ध्याने करीने ब्रह्ममय देह बंधाय छे.

जेम पारेवाना ईंडामां जळ निराकार छे पण तेने साकार पारेवुं सेवे छे तो तेनो आकार वंधाईने ते पारेवा जेवुं थाय छे अने पारेवुं न सेवे तो ईंडानो रस पृथ्वीमां लय थई जाय. तेम भगवानननी मूर्तिमां जोडाय त्यारे ज साकार ब्रह्ममय तनुं वंधाय अने भगवानना साधर्म्य-पणांने पामे अने जो ज्ञान प्रलये करीने भगवानननी मूर्तिमां न जोडाय तो ब्रह्म सुषुप्तिमां लीन थाय छे, ते पाछो कोई काळे नीसरतो नथी. जेम ईंडु फुटयुं तेनुं पाळुं पारेवुं थाय नहीं अने गर्भमां होय त्यां सुधी पारेवुं थवानी लालच. अने गर्भमांथी वहार पण ते पारेवानो आधार होय तो साकर पारेवुं थाय छे. तेम जीव पण मायाने विषे छे त्यां पण भगवाननो आधार छे; केमके भगवान देह सर्जी आपे छे अने ज्ञान पण भगवान थकी ज पामे तो मायाने तरीने ब्रह्ममय देह वंधाईने अक्षर-धामने पामे छे अने जो प्रत्यक्ष साकार मूर्तिमान जे भगवान तेना आशरा विना ज्ञान प्रलये करीने कहे छे जे 'हुं ब्रह्म छुं' ते तो ब्रह्मना कोक देशमां लीन थई जाय छे.

माटे सत्पुरुषनो समागम करीने, शुद्ध उपासना पामीने जो भग-वानने विषे जोडाय तो आ समये अहंममत्वरूप मायाने तरवी ते कांई कठण नथी, केमके प्रगट भगवाननो आशरो ए तो नावमां वेसीने समुद्र तरवो एवुं सुगम छे अने परोक्षपणें भगवान भजवा ते तो जेम वाहु-बळे करीने समुद्र तरवो ते कोई काळे तराय नहीं अने वचमां प्राण जाय. तेम प्रगटने मूकीने परोक्ष भगवानने भजे छे तेनुं कल्याण थतुं नथी, केमके परोक्षपणें तो असत्पुरुष रहे छे ते तो ऊलटा विषयने चाळे चडावे छे. माटे मनुष्यदेह ते तो वृथा जाय छे अने संसाररूपी समुद्रमां जन्म-मृत्यु अने चोरासीमां जाय छे; माटे ज्यारे त्यारे प्रगट भगवान अने भगवानना एकांतिक निर्वासनिक संत ते मळे अने तेना स्वरूपनो

निश्चय थाय अने ते भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करवुं, तेने करीने माया तरवी ते कांई कठण नथी ए सर्वे शास्त्रनो सिद्धांत छे अने अमारो पण एज सिद्धांत छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २३० समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत २३१ विषय :–पामर, विषयी, मुमुक्षु अने मुक्तनां लक्षण

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२३ ना श्रावण वदि १० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये सुथार लक्ष्मीराम देवचंदने घेर उगमणें बारणे ओरडानी आगळ चोकमां गादीतकिया बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता. पायमां तोरा लटकता हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया पछी महाप्रभुजी बोल्या जे "आ जगतमां चार प्रकारना जीव छे ते कया ? तो पामर, विषयी, मुमुक्षु अने मुक्त. हवे तेनां लक्षण कहीए ते सांभळो जे जे पामर छे तेने तो आहार, मैथून, निद्रा अने भय तेमां ज मूढपणें भरपूर होय अने जे विषयी छे ते तो पंचविषयने भोगवे पण शास्त्रनी मर्यादामां रहीने भोगवे अने लोकनी लाज, मोटप, कीर्त्ति वधारवानी इच्छा वर्ते. अने जे मुमुक्षु छे तेने तो आस्तिकपणुं होय अने अधर्मथी डरीने चाले अने धर्ममां दृढ रहे अने सत् शास्त्रनो विश्वास राखे अने एकादशी आदिक व्रत उपवास करे अने विषयनो त्याग करवो गमे अने विषयना त्यागी जे साधु तेनो समागम करे अने तीर्थे जवुं तथा भगवानना दर्शने जवुं तेमां श्रद्धा

होय अने जन्म-मरणनां दुःख थकी मूकावे एवा सत्पुरुषने खोळ्या करे, ए मुमुक्षुनां लक्षण कह्यां.

अने जे मुक्त होय तेने तो आ संसारनां सुख गमे ज नहीं अने प्रारब्ध कर्मने योगे संसारमां रह्यो होय तो पण उदास थको रहे, तेने संसार गमे नहीं अने धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति तेने दृढ राखे पण कोई काळे डगे नहीं अने प्रगट भगवानने श्रवणे सांभळे तो तत्काळ जगतना अनंत बंधनने तोडीने तथा मत पंथना बंधनने तोडीने प्रगट भगवान पासे जई पूगे, पण कोईनो रोक्या रोकाय नहीं. तेने मुक्त जाणवो.

अने ए चार प्रकारना जीवोनां लक्षण कह्यां तेमां पामर अने विषयी ते तो भगवानने मार्गे चाले ज नहीं अने जो कोईक रीते लोभे, लालचे करीने सत्संग थाय तो पण भालना कूवा जेम थाय. ते भालना कूवामां उपर पाणी मीठुं अने ऊंडुं खोदे तो खारुं झेर पाणी नीसरे, तेम विषयी अने पामर जीव सत्संगी थया होय अने तेना गमता प्रमाणे विषय भोगववा दईए त्यां सुधी तो सत्संगी रहे पण जो विषयनुं खंडन करीए तो भालना कूवानी पेठे तरत हेठेथी खारुं पाणी आवी जाय तेम अधर्मने मार्गे चाले अने सत्पुरुषनो द्रोह करे.

अने जे मुक्त अने मुमुक्षु छे तेने तो भगवान विना बीजुं कांई गमे ज नहीं अने भगवान तेने सूझे एवा भीडामां ले तो पण कोई रीते पाछा पडे नहीं अने ते तो काने करीने भगवानना जश सांभळीने ज परम आनंदने पामे अने त्वचाए करीने भगवाननो स्पर्श करीने ज सुख माने अने नेत्रे करीने भगवानना दर्शन करीने ज तृप्त थाय अने जीभे करीने भगवाननी प्रसादी तथा भगवानना जश गाईने सुख माने एवी रीते दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरण तेने करीने भगवा-

नमां जोडाय पण भगवान विना बीजे क्यांय ए लोभाय ज नहीं अने पामर अने विषयी ते तो इन्द्रियना जे मायिक विषय तेमां लोलुप होय अने तेने कोई रीतनो नियम होय नहीं, माटे जेने भगवान भजवा होय तेने पामर अने विषयी जीवना संगनो त्याग करीने मुमुक्षु अने मुक्त तेनो संग करीने पोताना आत्मानुं काम सुधारी लेवुं.

अने आ समये तो अमने मन अर्पण करे तो ते पामर होय तथा विषयी होय तेनुं पण साक्षात्कार कल्याण थाय अने आ ने आ देहे पामरपणुं अने विषयीपणुं मटीने ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामे माटे जेने आ समये आ सत्संगमां प्रतीति आवी छे तेना भाग्यनो पार नथी."

इति श्रीमुखसिद्धांत २३१ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत २३२ विषयः–स्वधर्म अने परधर्म.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२३ ना श्रावण वदि ११ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभातमध्ये नाथाभाई गवडनी वहु दिवाळीवाने घेर दक्षिणादे बारना आगळ चोकमां ढोलिया उपर विराजमान थया हता. श्वेत हीरकोरी धोतियुं पहेर्युं हतुं अने श्वेत अंगरखुं पहेर्युं हतुं. गुलाबी कोराळो श्वेत खेश खभे नाख्यो हतो अने मस्तके कसुंबल ताराळो फेंटो बांध्यो हतो. कंठमां गुलाबना हार पहेर्या हता अने कान उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ धारण कर्या हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश-देशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "जगतमां मनुष्य एम कहे छे जे पोतानो धर्म मेलीने परधर्मनुं आचरण न करवुं. ते परधर्म ते शुं? तेने कहीए ते सांभळो जे आ जगत त्रण गुण थकी उत्पन्न थयुं छे. तेमां रजो

गुणनी दस इन्द्रियो अने तमो गुणनां पंचभूत अने पंचविषय अने सत्त्वगुणनां चार अंतःकरण अने चौद देवता, एवी रीते त्रण गुणात्मक विश्व छे. अने आत्मा छे ते तो जेम देहमां चोवीस तत्त्व छे, तेम पंचवीसमो जीवात्मा छे. ते पोतानुं रूप छे अने देहनो प्रकाशक छे, जाणनारो छे अने ज्ञानरूप छे अने हृदयने विषे रह्यो थको सुख दुःख मान-अपमान हरख-शोकादिक ए सर्वेनो करनारो द्रष्टा छे. अने वळी ते आत्मा केवा छे? तो सुखरूप छे अने देह तो दुःखरूप छे अने आत्मा छे ते तो अविनाशी छे अने देह छे ते तो नाशवंत छे. माटे आत्माने अने देहने घणो ज विरुद्ध भाव छे. ते आत्मा जे पोतानुं स्वरूप तेने भूलीने अने नाशवंत जे देह तेना सुख सारु जे कांई क्रिया करे छे ते सर्वे परधर्म छे.

अने स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देह अने जाग्रत, स्वप्न अने सुषुप्ति ए त्रण अवस्था तेने ज्ञान प्रलये करीने पछी शुद्ध स्वरूप एवो जे आत्मा अक्षरब्रह्म ते रूप थईने परमात्मा एवा जे पुरुषोत्तम भगवान तेनुं भजन, स्मरण, ध्यान, पूजन, वंदनादिक जे जे मोक्षने अर्थे करवुं ते पोतानो धर्म छे. माटे जे भगवानना भक्त होय तेने तो आ प्रकृतिनुं कार्य जे पिंड अने ब्रह्मांड ते सर्वेनुं प्रमाण करवुं अने मायिक सुख जे ते सर्वेने तपासी जोवां जे 'ए मारा आत्माने शुं सुख करे एम छे?' तेनुं प्रमाण करीने जोवुं. पछी नाशवंत अने दुःखरूप एवुं जे मायिक सुख तेनो त्याग करीने अविनाशी एवुं जे भगवान संबंधी सुख तेने ज पामवानी इच्छा राखवी एज पोतानो धर्म छे अने देहादिकना भाव जे विषयासक्ति ते थकी मुकावे अने आत्मानो साक्षात् मोक्ष करे ते ज पोतानो धर्म छे, अने विषय भोगवता होय अने ते बापदादानो धर्म कहेवातो होय तो पण ते परधर्म छे.

त्यारे कहेशो जे वापदादानो धर्म केम मुकाय ? तो जीवना वापदादा तो भगवान अने भगवानना एकांतिक साधु जे नारद, सनकादिक, शुकजी, जडभरत ते छे अने बीजा तो देहना वापदादा छे ते तो चोरासीमां अनंत वापदादा कर्या छे; ते कया वापदादानो धर्म पाळवो.

अने देहनो संबंध तो मिथ्या छे. माटे ते देहनो धर्म ते पोतानो धर्म नथी अने पंचविषयथी मुकावीने आत्मानो मोक्ष करे ते ज पोतानो धर्म छे. अने जे अधर्मने मार्गे चाले छे ते तो महा पापीया छे अने महा दुष्ट छे अने परमेश्वरना द्रोही छे; केमके परमेश्वरनी आज्ञाने लोपीने अवळे मार्गे चाले छे अने वेदमां वर्णाश्रमना धर्म बांधेला छे ते पण परमेश्वरना बांधेला छे. ते पण परमेश्वरना वचनने लोपे छे; ते तो परमेश्वरना द्रोही कहेवाय अने ते तो अतिशय दुःखने पामे छे अने जे परस्त्रीना संगना करनारा छे तेने तो यमदूत अतिशय लोढानी स्त्रीओ करीने बाथ भरावे छे. एवी रीते अधर्मीने यमदूत अतिशय कष्ट आपे छे अने महा चीसो नखावे छे.

माटे जे दैवी जीव होय अने जेने पोताना आत्मानुं रूडुं करवुं होय तेने तो अधर्मनो त्याग करीने परमेश्वरनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं ते ज पोतानो धर्म छे अने जे जे परमेश्वरनी आज्ञा प्रमाणे वर्त्या छे ते ज सुखने पाम्या छे अने जे जे परमेश्वरनी आज्ञा लोपीने अधर्मने मार्गे चाल्या छे ते ज महा दुःखने पाम्या छे. माटे आ वार्ता एक वार कहे समजो के लाखवार कहे समजो के आज समजो के लाख वरस केडे समजो अने ज्यारे अधर्मनो मार्ग मूकीने धर्मने मार्गे चालशो त्यारे ज सुख थशे अने त्यारे ज आत्मानो मोक्ष थशे. पण ते विना कोई काळे सुख थाय नहीं. माटे धर्ममां रहीने भगवान भजवा अने विषयनी

वासना मूकवी एज पोतानो धर्म छे अने विषय भोगववा एज परधर्म छे. ए सर्वे शास्त्रनो सिद्धांत छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २३२ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत २३३ विषयः—ब्राह्मण थवुं घणुं कठण छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना श्रावण वदि ११ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये पटेल खुशाल आशारामने घेर दक्षिणादे वारना ओरडाना चोकमां विराजमान थया हता. किनखावनो सुरवाल अने डगली धारण कर्यां हतां अने गूढो रेटो पहेर्यो हतो अने सोनेरी पाघ बांधी हती. कसुंबल शेलुं केडे बांध्युं हतुं अने एक शेलुं खभे नाख्युं हतुं. ललाटने विषे केसरनी अर्चा करीने ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी श्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजी बोल्या जे "एक वार्ता करीए ते सर्वे सांभळो जे ब्राह्मण थवुं ते तो कठण छे केमके ज्यारे जन्मने पामे छे त्यारे चारे वर्ण सरखा छे. केम जे सर्वे जन्मे त्यारे आभडछेट लागे छे पण कांई बीजा वर्णने लागे अने ब्राह्मणने न लागे एम नथी. माटे जन्मे त्यारे तो शूद्र कहेवाय अने ज्यारे संस्कारने पामे त्यारे द्विज थाय छे. ते संस्कार तो चारे वर्णने कह्या छे अने वेद भणे त्यारे विप्र कहेवाय अने आत्मा परमात्माने जाणे त्यारे ब्राह्मण थाय छे कहेतां ब्रह्मरूप थईने परब्रह्म पुरुषोत्तम एवा जे भगवान तेने साक्षात्कार पामे तेने ब्राह्मण जाणवा. ते उपर श्लोक छे जे—

जन्मना जायते शूद्र संस्कारात् द्विज उच्यते ।
वेदाभ्यासेन भवेत् विप्रः ब्रह्म जानाति ब्राह्मणाः ॥

एवी रीते साक्षात् प्रत्यक्ष भगवानने माहात्म्ये सहित ओळखीने तेनुं भजन करे ते ज शुद्ध ब्राह्मण छे. हवे ते भगवाननुं महात्म्य केम समजवुं? तो जेनी राखी पृथ्वी अध्धर रही छे अने डोलावी डोले छे अने जेनी शक्ति माया छे अने जे भगवानना वरसाव्या मेघ वरसे छे अने जेनी आज्ञाए करीने औषधीओ ऋतुने पामीने फळे छे अने समुद्र पाळ विनानो मर्यादा नथी लोपतो. अने जेनी शक्ति काळ छे, जेनी शक्ति माया छे, जेनी शक्ति पुरुष छे, जेनी शक्ति अक्षर छे. ए आदिक अनंत शक्तिओ अने अनंत ऐश्वर्ये युक्त- एवा सर्वकारण जे भगवान ते कृपा करीने आज अनंत जीवोनां कल्याण करवा सारु मनुष्य जेवा थईने सुख आपे छे. अने एम समजवुं जे 'मारा भाग्यनो पार नथी अने हुं तो कृतार्थ थयो छुं अने मारा जप तप सर्वे पूरां थई रह्यां छे अने हवे मारे कांई करवुं रह्युं नथी.' एम समजीने प्रगट भगवाननो आशरो दृढ राखवो तो ते सर्वे शास्त्रने भणी रह्यो छे अने सर्वे शास्त्रना अर्थने पण जाणी रह्यो छे अने एवी रीते प्रत्यक्ष भगवानने ने ओळखे अने जप, तप व्रतादिक अनंत साधन करे तेने करीने कल्याण थतुं नथी. कल्याण तो प्रत्यक्ष भगवानना आशरा वती थाय छे. ते गीतामां कह्युं छे जे—

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।

ए श्लोकमां पण पूर्वे कह्युं ए ज अर्थ छे. माटे आ समये आ भरतखंडना मनुष्यना भाग्यनो पार नथी अने पूर्वे जे जे गोपी गोवाळने योग बन्यो हतो तेथी आज तमारे कोटी गणो योग बन्यो छे, केमके आ समयनी जे वात छे ते तो अलौकिक छे. ते मर्मने तो अमारा खरेखरा एकांतिक भक्त छे ते जाणे छे पण बाह्यदृष्टिवाळाने समजवामां आवे नहीं. अने पूर्वे पण जे जे भगवानना अवतार थया

छे तेने पण बाह्यदृष्टिवाळा जे लोक वहेवारमां बुद्धिवाळा तेने ओळख्यामां आवता नथी. ए तो जेने अनंत जन्मनां सुकृत उदय थाय तेने ज प्रत्यक्ष भगवान ओळखाय छे अने ते ज अधर्मनो त्याग करीने प्रगट भगवाननो आशरो करे छे अने तेनां ज भगवान कल्याण करे छे अने तेनां ज शास्त्रमां नाम लखाय छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २३३ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २३४ विषयः–पृथ्वी आदिकना आधार भगवान केवी रीते?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२३ ना श्रावण वदि १२ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये पटेल कुबेर तथा हरगोवनने घेर आथमणा बारना चोकमां विराजमान थया हता अने सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तके कसुंबल फेंटो बांध्यो हतो. कंठमां गुलाबना पुष्पनां हार पहेर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी गाम सरवईना भक्त दुदाभाईए प्रश्न पूछ्यो जे "हे महाराज! आ पृथ्वी छे ते शाने आधारे रही छे? अने भगवाननुं धाम केवुं छे? अने केने आधारे रह्युं छे? ते कहो."

पछी महाप्रभुजी बोल्या जे "ए वात छे ते तो अलौकिक छे. ते जे मायिक दृष्टिवाळा छे तेने समजवामां आवती नथी अने जेने साक्षात्कार भगवाननो संबंध थयो छे अने ते थकी ज्ञान पामीने दिव्यदृष्टि जेनी थई छे तेने अमे वात कहीशुं तेने साक्षात्कार ज्ञाने करीने देखाशे. ते वात कहीए ते सांभळो जे आ पृथ्वी छे ते जळमांथी थई छे अने ते पृथ्वीने जळनो आधार छे अने जळ छे ते अग्नि थकी थयुं

छे अने ते जळने अग्निनो आधार छे. अने अग्नि छे ते वायुमांथी थयो छे अने अग्निने वायुनो आधार छे अने वायु छे ते आकाशमांथी थयो छे अने ते वायुने आकाशनो आधार छे अने आकाश अहंकारमांथी थयो छे माटे आकाशने अहंकारनो आधार छे अने अहंकार छे ते महत्तत्त्व-मांथी थयो छे अने ते अहंकारने महत्तत्त्वनो आधार छे अने महत्तत्त्व छे ते प्रधानपुरुषमांथी थयुं छे माटे महत्तत्त्वने प्रधानपुरुषनो आधार छे अने प्रधानपुरुष छे ते मूळ प्रकृतिपुरुष थकी थयेलो छे, माटे प्रधान-पुरुषने मूळ प्रकृतिपुरुषनो आधार छे. अने अक्षर छे ते भगवानना अंगनो प्रकाश छे, माटे अक्षरने भगवाननो आधार छे. ते सारु सर्वा-धार एक भगवानने कहे छे.

अने जे अक्षर छे तेना बे स्वरूप छे ते एक तो चैतन्यमय प्रकाश छे तेने ब्रह्म कहे छे, चिदाकाश कहे छे, अक्षर कहे छे अने ते भगवानने रह्यानुं धाम छे. अने तेज अक्षर बीजेरूपे करीने मूर्तिमान थका भग-वान पुरुषोत्तमनी सेवामां रहे छे. जेम वरुणदेव मूर्तिमान छे अने तेनुं कार्य जे जळ ते निराकार छे. ते ज्यारे रामचंद्रजीए समुद्रने कांठे जईने बाण साध्युं त्यारे समुद्र मूर्तिमान आवीने हाथ जोडीने ऊभो रह्यो अने वळी सूर्य मूर्तिमान छे अने तेनो प्रकाश निराकार छे अने दीवो मूर्ति-मान छे अने तेनी ज्वाला निराकार छे. तेम अक्षरना पण बे स्वरूप छे. एक तो धामरूपे निराकार छे अने वळी बीजे रूपे करीने भगवाननी सेवामां मूर्तिमान थका रहे छे."

पछी वळी गाम खंभातना भट्ट प्राणशंकरे प्रश्न पूछ्यो जे "हे महाराज ! ए अक्षरधामना पति एवा जे पुरुषोत्तम भगवान अने ते भगवानना साधर्म्यपणाने पाम्या एवा जे अनंतकोटी मुक्त ते त्यां शुं जमता हशे ?"

पछी महाप्रभुजी बोल्या जे " ए जे जमवानी वासना छे ते ज पाप छे अने ते पाप थकी मुकावुं एज मुक्त थयो छे अने ज्यां सुधी जमवानी वासना छे तेने जन्म-मरण पण टळतुं नथी अने जे जमवुं छे ते तो मायिक एवो जे देह तेनो भाव छे, पण आत्मा नथी जमतो अने सुख-दुःख, मान-अपमान, क्षुधा-पिपासा आदिक सर्वे देहना भाव छे पण आत्माना भाव नथी अने आत्मा तो अच्छेद, अभेद, अविनाशी, सत्तारूप, सुखरूप अने जाणनारो दृष्टा छे अने ज्यारे मायिक गुणे रहित थाय छे त्यारे ज भगवानना धामने पामे छे अने ज्यारे भगवानना धामने पामशे त्यारे ते अलौकिक सुखने पामशे अने ते सुखनुं प्रमाण मायिक दृष्टिवाळाथी थाय एम नथी अने मायिक दृष्टिवाळाने तो ए सुख जाण्यामां पण आवतुं नथी. जेम विष्टामां कीडा पडया होय ते विष्टामां सुख मानीने कलोल करे अने एम समजे जे 'अमे सर्वे सुखने पाम्या छीए.'' पण एने मनुष्यना सुख जाणवामां न आवे; केमके एनी कोई काळे मनुष्यना सुखमां दृष्टि पूगे ज नहीं. तेम मायिक दृष्टिवाळानी भगवानना सुखमां दृष्टि पूगती नथी. ए तो ज्ञाने करीने जेनी निरावरण दृष्टि थई होय ते भगवानना सुखने जाणे अने भगवानना धामनुं सुख तो अलौकिक छे.

ते ए सुखनुं दृष्टांत आ लोकमां दईए एम नथी अने ते सुखनो लेश गंध प्रकृतिपुरुषने आवे छे तेने करीने अनंत ऐश्वर्यने पामे छे अने अनंत कोटी ब्रह्मांड करवानी शक्तिने पामे छे अने ते प्रकृति-पुरुषना सुखमांथी ते अनंत कोटि ब्रह्मांडमां अनंत कोटि प्रधानपुरुष अनंत कोटि विराटादिक ईश्वर तथा अनंत कोटि ब्रह्मा, विष्णु, शिव, देव, दैत्य, ऋषि, गांधर्व, मनुष्य, पशु, पंखी ए सर्वे सुख पामे छे. माटे पूर्वे मोटा मोटा राजा सर्वे राज अने वैभवनो त्याग करीने वनमां तप

करवाने जता अने नारद, सनकादिक, शुकजी, जडभरत आदिक केटलाक भगवानना सुखने पामवा सारु देहनो अनादर करीने अतिशय तप करता ते सर्वे भगवानना धामना सुख सारु समजीने करता अने आज पण जेने जेने सुखिया थवुं होय अने अमारे संगे रहेवानी इच्छा होय तेने स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देह थकी नोखो एवो जे आत्मा तेने पोतानुं रूप मानीने मायिक एवा जे पंचविषयना सुख तेमां त्याग करे तेने ज अमारो अखंड संबंध थाय छे अने जेने मायिक पंचविषयनी वासना होय अने ते अमारा भेगा रहेता होय तो पण अम थकी करोड गाऊ छेटे छे अने जेणे पंचविषयनो त्याग कर्यो छे अने अमारी आज्ञाए करीने अम थकी छेटे जाय तो पण अम थकी अणुं मात्र छेटे नथी अने एना उरमां अमे अखंड निवास करीने रहीए छीए; ए अमारो सिद्धांत छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २३४ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २३५ विषय :-अन्यक्षेत्रे कृतं पापं... वज्रलेपो भविष्यति ॥

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२३ ना श्रावण वदि १३ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये पटेल भगत वेचर कुबेरने घेर उत्तरादा बारना चोकमां विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी कृपा करीने महाप्रभुजी बोल्या जे "तमारा सर्वेना अति हितनी वार्ता छे ते कहीए छीए-

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं तीर्थक्षेत्रे विनश्यति ।
तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्रलेपो भविष्यति ॥

ए श्लोकनो एम अर्थ छे जे 'बीजे स्थानके पाप कर्यां होय अने ते तीर्थे जाय अने अधर्मनो त्याग करीने धर्ममां देह पर्यंत वर्ते तो आगळनां पाप सर्वे नाश पामे अने तीर्थमां जईने पाप करे तो ते पाप कोई काळे छूटे नहीं.' अने वळी एनो बीजो अर्थ ए छे जे 'चोरासीमां सावज, दीपडा आदिकना अनंत देह धरीने अनंत पाप कर्या छे ते मनुष्यदेह पामीने अधर्मनो त्याग करीने धर्ममां रहीने सत्पुरुषनो आशरो करीने भगवान भजे तो सर्वे पाप नाश थई जाय अने मनुष्य-देह पामीने जो पाप करे तो ते पाप कोई काळे छूटे नहीं.' अने वळी बीजो अर्थ छे जे 'सत्पुरुषने संगे करीने चोरी छिनाळी वटलवुं वट-लाववुं आदिक अवळा उपदेशे करीने जे पाप कर्यां होय ते भगवान के भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी एवा जे साधु तेना संगे करीने अधर्मनो त्याग करीने तेनो आशरो करे तो पूर्वना पाप सर्वे नाश पामे अने भगवान के भगवानना भक्त तेनो जो द्रोह करे तो तेनुं एवुं पाप लागे ते मोरे (पहेला) परोक्ष भगवाननी भक्ति करी होय अने धर्म पाळ्यो होय ते सुकृत सर्वे नाश थई जाय अने प्रगट भगवान अने तेना भक्तना द्रोहनुं एवुं पाप लागे जे ते कोई काळे छूटे ज नहीं अने कुसंगनां पाप प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतने संगे करीने नाश पामे छे.'

ते कुसंगे करीने शुं पाप लागे? तो व्यभिचारी वटलेला एवा जे असत्पुरुष तेना जे शब्द सांभळ्या होय तेने करीने इन्द्रियनी वृत्ति भ्रष्ट थाय छे अने असत्पुरुषना स्पर्शे करीने त्वचा इन्द्रियनी वृत्ति भ्रष्ट थाय छे अने असत्पुरुषनी प्रसादी जमवे करीने जीह्वा इन्द्रियनी

वृत्ति भ्रष्ट थाय अने असत्पुरुपने चड्यां जे चंदन पुष्प तेनी सुगंधीए करीने नासिका इन्द्रियनी वृत्ति भ्रष्ट थाय छे. एवी रीते असत्पुरुपने संगे करीने दस इन्द्रियो अने चार अंतःकरण ते भ्रष्ट थाय छे. ते कोई काळे भगवान सन्मुख चालतां नथी अने विषय वासनाए करीने जीवने चोरासीमां वारंवार जन्ममरणने पमाडे छे. माटे असत्पुरुपनो जे संग ते जेवो कोई जीवने दुःखनो पमाडनारो नथी.

ते असत्पुरुष केवा होय? तो उपरथी धर्मवाळा जणाता होय अने कंठीओ डोकमां नाखता होय अने जीवोने धीरववा सारु तिलक करे तथा रुद्राक्षनी माळाओ कंठमां नाखे अने एवा ठगारा असत्पुरुष होय ते मिथ्या धर्मनी ओथ लईने तथा शास्त्रनी ओथ लईने उपरथी भक्तिनो आटाटोप जणावीने पछी जेने शास्त्रनुं ज्ञान नथी तथा सत्पुरुपनो समागम जेने नथी मळ्यो एवां जे भोळा लोक तथा विश्वासी लोक तेने प्रथम भक्तिनो भाव जणावीने पछी छाना उपदेश करीने धर्म थकी पाडी नाखे छे.

ते छाना उपदेश केवी रीते करे छे? तो तमने कहेशे काळ मारो अने सहुमां ब्रह्म भाळो अने ऊंचनीच कोण छे? सहु भेगां बेसीने खाओ अने वळी कहेशे जे भगवानने जाणो छो? पेदा करे ते भगवान छे. तो विर्यथी सर्व पेदा थाय छे माटे विर्य तेज भगवान छे; बीजो कोई भगवान नथी. एवी जातना महा अधाधुंम खोटा उपदेशने करे छे अने एवा अवळा उपदेश दईने परस्त्रीओना संग करीने तेनुं माहात्म्य देखाडीने इन्द्रियो धोईने चरणामृत करीने पाय छे अने भोळा लोकोने भ्रष्ट करे छे. तेनुं कारण ए छे जे विषय भोगववा सारु केवळ मिथ्या भक्तिनी ओथ लईने युक्ति करे छे; केमके असत्पुरुषनुं लक्षण एज छे जे

सारुं सारुं खावुं अने स्त्री आदिक विषय भोगववा. अने जे एवा असत्पुरुष छे तेनो जे जे संग करे तेना एकोत्तेर परियां नरकमां जाय छे अने अधर्मनो सर्ग छे ते कुटुंबे सहित असत्गुरुना विषे निवास करीने रहे छे अने आलोकने विषे ते घणाक हेरान थाय छे अने मरीने पण ते रौरव नरकमां पडे छे अने महा दुःखने पामे छे अने भयंकर एवा जे यमना दूत तेने प्रहार करीने काळी चीसो नखावे छे. इत्यादिक महाकष्टने असत्गुरु अने तेना शिष्य पामे छे अने वेहाल थाय छे.

माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण इच्छवुं होय तेने एवा असत्पुरुषनो त्याग करीने सत्पुरुषनो समागम करवो अने पूर्वे नारद, सनकादिक, शुकजी, जडभरत तथा कपिलदेव, दत्तात्रय, ऋषभदेव तथा रामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेनो शो मत छे ते पण सर्वे सत् शास्त्रमां लखेलो छे. तेनी तपास करीने जोवुं अने जो विषय भोगवीने कल्याण थतुं होय तो पूर्वे मोटा मोटा राजा सत्पुरुषनो उपदेश ग्रहण करीने, राज्यनो त्याग करीने वनमां तप करवा शुं करवा जाय ? अने नारद, सनकादिक आदिक अनंत तेणे महा ज्ञानने पामीने भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे निरंतर तप कर्यां छे माटे विषय भोगवे कल्याण थतुं होय तो शुं करवा तप करे? अने विषय तो कूतरा, गधेडा, वांदरा, बोकडा, पाडा क्यां नथी भोगवता ? एमां क्यां मा, वेहेन, दीकरीनो टाळो रहे छे ? अने वटलवुं वटलाववुं तेनो क्यो मेळ रहे छे ? माटे धर्म थकी भ्रष्ट थईने सर्वेने भेगा थई खावुं तथा व्यभिचार करवो ते तो असत्पुरुषनो धर्म छे पण साचा मार्गी तथा साचा ब्रह्मज्ञानी तथा साचा वैष्णव छे तेनो स्थापन करेलो धर्म एवो नथी.

अने साचा सत्पुरुषनो मत तो पंचविषयनो त्याग करीने भगवानने

मार्गे चालवुं अने जो अजाणे स्त्रीनो शब्द संभळाई जाय तो उपवास करीने कानने दंड देवो अने अजाणे स्त्रीनो हाथ अडी जाय तो ते हाथने कापी नाखवो अने अजाणे स्त्री सामी दृष्टि जाय तो ते आंखने फोडी नाखवी. अने जे काळ मारवानुं कह्युं छे ते काळ तो मृत्युनुं नाम छे. ते पंचविषयनी वासना टाळीने जन्म मृत्युरूपी काळने मारवो कहेतां जन्म मृत्यु टळे त्यारे काळ मूवो कहेवाय. अने ब्रह्म भाळवानुं कह्युं छे ते तो एम कह्युं छे जे स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देहथी नोखो अने शुद्धरूप अने प्रकाशवान एवो जे ब्रह्मरूप आत्मा तेने अंतरदृष्टि करीने ध्यानमां बेसीने जोवो. पछी ते प्रकाशरूप आत्मा देखाय अने ते आत्माने विषे परमात्मा देखाय अने तेने जन्ममरणनां दुःख मटी जाय त्यारे ब्रह्म भाळ्यो कहेवाय. एवी रीते ब्रह्म भाळवानुं कह्युं छे पण भेगा बेसीने अढारे वर्णने खावुं एम नथी कह्युं अने साचा मार्गी तथा साचा ब्रह्मज्ञानीनो मत तो एम छे जे 'चोरी छिनाळी न करवी तथा वटलवुं वटलाववुं नहीं, जीव हिंसा न करवी, दारु मांस न खावा, तथा कूड कपट आदिक अधर्मना सर्गनो त्याग करवो अने केवळ आत्मारूप थईने परमात्माने भजवा एज साचा मार्गीनो तथा साचा ब्रह्मज्ञानीनो मत छे अने ते अमने एवा अतिशय वाला छे.

माटे आज पण जेने जेने कल्याणनो खप होय ते अमारे वचने करीने अधर्मनो त्याग करे तो ते महा पापी होय अने महा दुष्ट कर्म कर्यां होय तो पण ए जो अमारे वचने करीने दुष्ट कर्मनो त्याग करीने नियम धारण करे तो तेने ब्रह्मरूप करीने अमारा अक्षरधाममां लई जईए. माटे आ समये तो कोटी जन्मे, जपे, तपे, करीने पण काम न थाय ते जो आज अमारी वातमां सुरत राखीने सांभळे तो तेने श्रवण मात्रे करीने पंचविषयनो राग उखडी जाय छे. माटे जेने जेने अनंत

जन्मनो सुकृत भेगां थाय छे तेने ज अमारो संबंध मळे छे पण थोडा पुन्यवाळाने नथी मळतो."

इति श्रीमुखसिद्धांत २३५ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २३६ विषय :—यदा यदा . . . सर्व धर्मान्परित्यज्य श्लोकमां मर्म

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ना श्रावण वदि १४ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये पटेल बेचर कुबेरने घेर उत्तरादे बारना घरना चोकमां विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तके कसुंबल फेंटो धारण कर्यो हतो. पुष्पना हार धारण कर्या हता अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाप्रभुजी बोल्या जे—

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानि र्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे "ज्यारे धर्म ग्लानि पामे छे अने अधर्म वृद्धि पामे छे" त्यारे श्रीकृष्ण भगवान कहे "हुं प्रगट थाउं छुं अने अधर्मनो नाश करुं छुं अने धर्मनुं स्थापन करुं छुं." अने वळी अर्जुनने एम कह्युं छे जे—

सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥

ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे "सर्व धर्मनो त्याग करीने मारे शरणे आव; हुं तने सर्वे पाप थकी मुकावीश." माटे एक ठेकाणे कह्युं जे "धर्म स्थापवा प्रगट थाउं छुं." अने वळी कह्युं जे "धर्मनो त्याग करीने हुं कहुं एम कर." माटे परस्पर विरुद्ध आव्यो ए केम हशे ? ए प्रश्न सर्वे

साधुने पूछीए छीए." पछी साधुए उत्तर करवा मांड्यो पण थयो नहीं. पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए हाथ जोडीने कह्युं जे "हे महाराज ! तमे उत्तर करशो त्यारे थशे." पछी महाप्रभुजी बोल्या जे "धर्म तो बे प्रकारनो छे; एक तो अलौकिक धर्म छे अने बीजो लौकिक धर्म छे. तेमां जे लौकिक धर्म छे तेनुं फळ तो नाशवंत छे अने अल्प छे अने ते सारु भगवानना अवतार नथी थता; भगवानना अवतार तो अलौकिक जे भागवत धर्म जे साक्षात्कार भगवानना धामने पमाडे ते सारु भगवान प्रगट थईने ते भागवत धर्मनुं स्थापन करे छे.

माटे गुणने विषे वर्ततो एवो जे अर्जुन तेने लौकिक धर्मनी दृष्टिए करीने भागवत धर्म समज्यामां आवतो न हतो अने भागवत धर्मना नाश करनारा अने अविद्याए करीने मदोन्मत्त एवा जे कौरव तथा जे कौरवना पक्षना तेमनो भगवानने नाश करवो हतो अने साधु जे धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित भक्ति इत्यादिक गुणे युक्त जे भगवानना भक्त साधु जे जगतना उद्धाररूप तेनी जे रक्षा करवी तेने अर्थे भगवाननुं प्रगट-पणुं छे. ते पण गीतामां कह्युं छे जे—

परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

ए श्लोकनो पूर्वे कह्यो ए अर्थ छे. माटे प्रगट भगवाननुं जे वचन तेने जे ग्रहण करवुं एज परम भागवत धर्म छे अने तेमां संशय करवो एज भागवत धर्मनो द्रोह छे.

माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण इच्छवुं तेने तो प्रगट भगवानना वचनमां ज दृढ विश्वास राखवो त्यारे ज मोक्ष थाय अने बीजा जे अन्य धर्म छे तेने तो कोटि युग सुधी पाळ्या करे अने भगवानना

स्वरूप अने भगवानना वचन थकी तो विरुद्ध वर्ते तो तेने मांथेथी जन्म-मरण अने चोरासी ते कोई काळे टळता नथी."

पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए पूछ्युं जे "हे महाराज! ए भागवत धर्मने दृढ केम पमाय?" त्यारे महाप्रभुजी बोल्या जे "जेम कोईक विद्या भणवी होय त्यारे जेनी पासे ते विद्या होय एवा जे महेताजी तेनी पासे जाय अने तेनी सेवा करे अने ते महेता कहे ते प्रमाणे अभ्यास करे त्यारे ते विद्या जेटली महेताजीनी होय ते निशाळीयामां आवे छे. तेम भागवत धर्म भगवान अने भगवानना एकांतिक विषयना त्यागी संत तेनी पासे छे. ते भगवान अने संतनो मन-कर्म-वचने दृढ आशरो करे अने ते भगवान अने संतनो विश्वास राखे अने जेम कहे तेम करे अने तेने वचने करीने अधर्मनो त्याग करीने भगवान अने संतनी आज्ञा प्रमाणे वर्ते तो ते भागवत धर्मने पामे छे अने तेने कल्याण-ना मार्गमां कोई विघ्न आवे नहीं."

इति श्रीमुखसिद्धांत २३६ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २३७ विषयः—व्यष्टि समष्टिनां रूप अने उत्पत्ति प्रलय

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना श्रावण वदि ३० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये पटेल बेचर कुबेरने घेर उत्तरादे बारना घरना चोकमां विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठमां पुष्पना हार पहेर्या हता. पाघमां तोरा लटकता हता अने कान उपर फूलना गुच्छ धारण कर्या हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाप्रभुजी बोल्या जे "भगवान छे ते पोतानी जड अने चेतन एवी जे शक्तिओ तेने करीने आ जगतने विषे समष्टि अने व्यष्टि–बे प्रकारनी सृष्टिने सर्जी छे. तेमां समष्टि जे विराट, सूत्रात्मा अने अव्याकृत तेने सृजे छे अने व्यष्टि जे स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण तेने सर्जता हता. तेमां समष्टिने विषे पंचभूत छे तेनी महत् एवी संज्ञा छे अने व्यष्टिने विषे पंचभूत छे तेनी अल्प एवी संज्ञा छे. अने समष्टि सृष्टिवाळाने ईश्वर कहे छे अने ते सर्वज्ञ छे अने व्यष्टि देहोने विषे पंचभूत छे ते अल्प छे अने ते अल्पज्ञ छे अने ते व्यष्टि देहनो धारण करनारो तेने जीव कहीए.

अने ए जे समष्टि अने व्यष्टि ए जे देह छे तेने एवी रीते सर्जे छे जे अनादि, अखंड, सर्वज्ञ, अनंत, स्वयं ज्योति अने सर्व आकार मात्रनी प्रवृत्तिना कारण एवा जे प्रकृतिपुरुष तेने विषे भगवान अक्षरब्रह्मरूपे प्रवेश करीने प्रधानपुरुष, काळ अने महत्तत्त्वादिक चोवीस तत्त्व तेने करीने ईश्वरना देह जे विराट, सूत्रात्मा अने अव्याकृत तेने प्रगट करे छे. एवी रीते समष्टि अने व्यष्टिने उत्पन्न करे छे.

अने प्रलय करे त्यारे ए सर्वे तत्त्व अने प्रधानपुरुष ए सर्वे जे थकी उपज्या छे एवी जे मूळ माया तेने विषे लय करे छे अने मूळ मायाने पुरुषने विषे लय करे छे अने पुरुषने अक्षरनाकोक एक देशने विषे लय करे छे.

अने वळी ते ज रीते उत्पन्न करे छे अने उत्पन्न करेली एवी जे समष्टि ते थकी व्यष्टि देहनी सृष्टिने सर्जे छे. तेनी रीत कहीए छीए जे महत् भूतमां जे महत् पृथ्वी छे ते पृथ्वी अन्न, खड आदिक, रूपे थईने ते सर्वे व्यष्टि जीवोना देहोने विषे अस्थि आदिक पृथ्वीने पोषण करे छे

अने ते ते देहोने नाश वखते अल्प पृथ्वी ते महत् पृथ्वीमां लय पामे छे. एवी रीते महत् पंचभूत ते व्यष्टि जीवोना देहने पोषण करे छे. अने समष्टिनुं जे महत् जल ते व्यष्टि देहोने विषे रुधिरादिरूपे करीने पुष्टि करे छे अने ते देहोना नाशने समये अल्प जळ ते महत् जळमां लय पामे छे. अने समष्टि जे महत् अग्नि तेने करीने व्यष्टि देहोमां जठराग्नि रूपे करीने अन्नादिकने पचावे छे. अने ते देहना नाशने वखते महत् अग्निमां लय पामे छे. अने समष्टि देहनो जे महत् वायु तेने करीने व्यष्टि देहोमां प्राणवायुए करीने सर्वे देहने स्थिति राखे छे; अने ते देहना नाशने समये महत् वायुमां लय पामे छे. अने समष्टि देहनो जे महदाकाश तेने करीने व्यष्टि देहना शरीरना अवकाशरूप आकाशमां आवे छे अने ते देहोना नाशने समये महदाकाशमां लय पामे छे. अने समष्टि देहनो जे विराटनो धारणनो करनारो अहंकार तेने करीने व्यष्टि देहोमां अहंकाररूपे करीने धरी रह्यो छे अने ते देहोना नाशने वखते महत् अहंकारमां लय पामे छे अने समष्टि देहनो जे महत्तत्व तेमांथी व्यष्टि देहोमां चित्तरूपे करीने चिंतवन करावे छे अने ते देहोना नाशने वखते महत्तत्वमां लय पामे छे अने समष्टि देहवाळो जे प्रधानपुरुष ते व्यष्टि देहोने विषे मनरूपे करीने जीवने संकल्प विकल्प करावे छे अने ते देहोना नाशने समये प्रधानपुरुषमां मन लय पामे छे. अने अनादि एवी जे मूळमाया ते सर्वे जीवोनी बुद्धिरूपे करीने रही छे अने मूळमायानो नियंता पुरुष छे. एवी रीते समष्टि अने व्यष्टि ए बे सृष्टिने पोते भगवान अक्षरातीत पुरुषोत्तम ते पोतानी जे जड चेतन बे शक्तियो तेने करीने तेना आधार थईने सर्वे विश्वने पोतानी सत्ताए करीने धारण करी रह्या छे. तेने जे मुमुक्षु जाणे छे ते मुक्त थाय छे.

हवे तेने जाणवानी रीत कहीए जे स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण

अने जाग्रत, स्वप्न अने सुषुप्ति एवी जे जीवनी त्रण अवस्थाओ अने विराट, सूत्रात्मा अने अव्याकृत ए त्रण ईश्वरना देह अने उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय ए त्रण ईश्वरनी अवस्था ते सर्व थकी पर अने सर्वेना कारणपणें आधाररूप जे भगवाननो ब्रह्मरूप प्रकाश व्यापक स्वरूप तेने सर्व माया थकी पर जाणीने ते ब्रह्म संगाते पोताना आत्माने मनद्वाराए एकत्वपणुं करीने पछी जगतनी जेम उत्पत्ति छे तेम प्रलय करीने माया थकी असंगीपणें जाणपणांमां प्रकाशरूप ते सर्वोपरी द्रष्टा स्थितिए रहीने ते चैतन्यनी दृष्टिने पामीने पोतानी मायानुं आवरण दूर करवुं.

जेम आकाशनी दृष्टिने पाम्यो तेने चार भूतनी उपाधि दृष्टिमां आवती नथी, तेम मूळ प्रकृतिपुरुष थकी पर एवुं जे सर्व व्यापक अक्षरब्रह्म तेनी दृष्टिने पामवुं अने तेनुं आवरण जे मूळ प्रकृतिपुरुष तथा प्रधानपुरुष अने काळ अने महत्तत्त्वादिक चोवीस तत्त्व ए सर्वे मायानी उपाधि तेने व्यापक ब्रह्मदृष्टि वडे करीने टाळी नाखवी अने सर्व व्यापक एवुं जे ब्रह्मस्वरूप तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं अने जे ब्रह्मस्वरूप छे ते कोटि ब्रह्मांडना द्रष्टा छे अने ते ब्रह्मांडमां अणुंअणुं प्रत्ये जेम रहेला छे, तेम अक्षरब्रह्मना अणुंअणुंने विषे परिपूर्ण अने दिव्यमूर्ति एवा जे सनातन परब्रह्म जे पुरुषोत्तम स्वरूप ते रह्या छे अने जेणे सिद्ध करेली जे ब्रह्माकार दृष्टि ते सर्वज्ञ अने पूरणकाम एवा जे एक परमात्मा तेने देखे छे; ते सर्व साधनना अंतने पाम्यो छे अने एज अमारो परम रहस्य छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २३७ समाप्त ।

શ્રીમુખસિદ્ધાંત ૨૩૮ વિષયઃ-દુર્લભો માનુષો દેહો ......।

શ્રીહરિકૃષ્ણાય નમોનમઃ-સંવત ૧૯૨૩ ના ભાદરવા સુદિ ૧ને દિવસ મહારાજ શ્રીહરિકૃષ્ણ ભગવાન ગામશ્રી ખંભાત મધ્યે પધાન વાની દીકરી ઓમાવાને ઘેર ઉગમણેં ઘરના ચોકમાં વિરાજમાન થયા હતા. સર્વે કસુંવલ વસ્ત્ર ધારણ કર્યાં હતાં અને પુષ્પના હાર પહેર્યા હતા અને તોરા અને ગુચ્છ ધારણ કર્યા હતા. બાજુબંધ અને ગજરા ધારણ કર્યા હતા અને કંકુનો ચાંદલો કર્યો હતો અને પોતાના મુખારવિંદની આગળ સાધુ તથા દેશ દેશના હરિભક્તની સભા ભરાઈને બેઠી હતી.

પછી મહાપ્રભુજી કૃપા કરીને બોલ્યા જે "જેને પોતાના મોક્ષનો ખપ હોય તેને તો તપાસીને જોવું જે 'આ મનુષ્યદેહમાં શું લાભ છે? આ મનુષ્યદેહે કરીને હું શું કરું છું?' અને શાસ્ત્રમાં તો મનુષ્યદેહને અતિશય દુર્લભ કહ્યો છે. અને દેવતા પણ મનુષ્યદેહને ઇચ્છે છે અને દેવ લોકમાં સુખ તો મનુષ્યના કરતાં ઘણાં છે અને દેવલોકમાં જે અતિ ઉતરતે અધિકારે દેવ છે તેને આલોકમાં ચક્રવર્તી રાજા હોય તેના કરતાં કોટિ ગણા વધારે સુખ છે. પણ માયિક સુખ જે તુચ્છ અને નાશવંત તેને પામવા સારુ દેવતા મનુષ્યદેહને નથી ઇચ્છતા. અને મનુષ્યદેહનો લાભ તો અવિનાશી એવું જે ભગવાનના ધામને પામવું અને ફરીને જન્મ, મૃત્યુનાં દુઃખ ન થાય એજ મનુષ્યદેહનો લાભ છે.

માટે ભગવાનના ભક્તને તપાસી જોવું જે આ શ્રોત્ર ભગવાને સર્જી આપ્યા છે તે શ્રોત્રે કરીને શું કરવાનું છે? અને નેત્ર ભગવાને સર્જી આપ્યાં છે તેને શું જોવા સારુ આપ્યાં છે? અને જીહ્વા ભગવાને શા સારુ સર્જી આપી છે? અને હાથ ભગવાને સર્જી આપ્યા છે તે હાથે કરીને શું કરવાનું છે? એવી રીતે દસ ઇન્દ્રિયો અને ચાર અંતઃકરણ એ સર્વેને

तपासीने जोवुं अने भगवान भज्यामां शुं लाभ छे ? अने विषय भोगववामां शुं लाभ छे ? एवी रीते प्रमाण करीने पछी विषयसुखने नाशवंत जाणीने तेनो त्याग करीने इन्द्रियो अंतःकरणने भगवानना स्वरूपमां जोडी देवा ए ज मनुष्यदेहनो लाभ छे.

पण नाशवंत दुःखरूप अने कोटि कोटि क्लेश युक्त एवा जे पापरूप पंचविषय भोगववा ते सारु मनुष्यदेहने न खोवो. केमके आ मनुष्यदेह वारंवारं मळतो नथी. ए तो चोरासी लाख योनि जन्म धरी धरीने कोई काळे पार आवे नहीं. केमके झाडना तथा पहाडना अवतार आवे जेनी घणीक आवरदा तेनो कोई काळे पार न आवे. माटे मनुष्यदेह तो अतिशय दुर्लभ छे. तेने अज्ञाने करीने तथा अधर्मीने संगे करीने खोटा विषय भोगवीने मनुष्यदेहने वृथा न खोवे. अने जे जे इन्द्रियो अंतःकरणे करीने विषय भोगवे छे तेने यमपुरीमां अपार मार खावा पडे छे अने चोरासीमां वारंवार जन्ममृत्युने पामे छे.

माटे जेने करीने पोताना जीवात्माने बंधन थाय ते मार्गनो त्याग करवो अने तेना संगनो पण त्याग करवो अने जो तपास एम न करे तो मनुष्यदेहनी अमूल्य आयुष्य छे अने पळनो पण निरधार नथी तेमां जे भोळप राखे छे ते अज्ञाने करीने राखे छे. केमके राजा जनक जेवा महा ज्ञानी भगवानना भक्त तेने तो एम कह्युं छे जे—

दुर्लभो मानुषो देहो देहिनां क्षणभंगुरः ।
तत्रापि दुर्लभं मन्ये वैकुंठप्रिय दर्शनम् ॥

माटे आ देहनो पळ मात्रनो पण निरधार न करवो अने अतिशय सावधान थईने परमेश्वर भजीने पोताना आत्मानुं काम सुधारी लेवुं. जेम विजळीना झबकारामां मोती परोवी लेवुं. तेम आ मनुष्यदेह छे

ते तो विजळीना झबकारा जेवो छे, तेने करीने पोताना आत्मानुं काम सुधारी लेवुं अने प्रत्यक्ष भगवाननो आशरो करीने धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति सिद्ध करीने पंचविषयनी वासनाने टाळीने ब्रह्मरूप थईने भगवानना धामने पामवुं ए ज मनुष्यदेहनो लाभ छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २३८ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २३९ विषय :–प्रगट भगवाननुं माहात्म्य

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना भाद्रवा सुदि २ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये वारोट जसवाने घेर दक्षिणादा वारना घरना चोकमां विराजमान थया हता. श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तके कसुंबल फेंटो वांध्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाप्रभुजी बोल्या जे "जे भगवानना भक्त होय तेने तो देह-आत्मानो विवेक करीने भगवान भजवा. ते केवी रीते विवेक करवो? तो आ शरीरमां हाडकां छे ते तो पृथ्वीनो भाग छे अने देहमां रुधिर छे ते तो जळनो भाग छे अने आ देहमां जठराग्नि छे ते तो अग्निनो भाग छे अने देहमां प्राणवायु छे ते तो वायुनो भाग छे अने देहमां आकाश छे ते तो महदाकाशनो भाग छे. अने शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध—ए पांच तनमात्रा अने पंचभूत ते तमोगुणनो भाग छे. अने दश इन्द्रियो छे ते रजो गुणनां छे. अने चार अंतःकरण अने इन्द्रियो अंतःकरणना चौद देवता ते सत्त्व गुणना छे. अने ए सर्वेथी आत्मा छे ते तो नोखो छे. केमके आत्मा देहमांथी चाल्यो जाय त्यारे देह कांई करवाने

समर्थ नथी अने देह तो जड छे, नाशवंत छे. माटे तेथी नोखो पोताना आत्माने मानीने, ब्रह्मरूप थईने परब्रह्म जे प्रत्यक्ष पोताने मळ्या जे भगवान तेनुं भजन करे तो तेनो मोक्ष थाय छे अने देहरूप थईने जे जे जप, तप, व्रतादिक करे छे तेना सर्वे साधन वृथा थई जाय छे अने जे *ब्रह्मरूप थईने भगवाननी भक्ति करे छे ते ज अविनाशी सुखने पामे छे.*

अने जे उपरथी धर्म पाळे छे अने कोईक थोडुंक पुन्य करे अने एम जाणे 'जे मारुं कल्याण थई रह्युं छे.' जेम कोईकने हळदरनो गांठीयो जडे अने ते पोते एम माने जे 'हुं गांधी छुं' तेम अल्पज्ञानने पामीने मोक्ष माने छे ते तो अज्ञानी छे. केमके मोक्ष तो पंचविषय थकी मुकाय त्यारे थाय छे.

ते पंचविषय थकी केम मुकाय? तो ज्यारे प्रत्यक्ष भगवान मळे अने तेना स्वरूपनो निर्विकल्प उत्तम निश्चय थाय त्यारे पंचविषय थकी मुकाय छे पण कोई एम जाणे जे शास्त्रमांथी शीखीने तथा जप, तप, व्रत, साधन करीने मुक्त थवाय, तो ते साधने मुक्त थवातुं नथी; मुक्त तो माया पर अने सर्वे कारण एवा जे भगवान ते ज्यारे मनुष्यरूप थईने पोताने मळे अने ते ज्ञान आपीने पंचविषयना मूळ उखाडी नाखे अने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान करावे त्यारे ज जीव मुक्त थाय छे, पण परोक्ष थकी कोईनो मोक्ष थतो नथी; केमके भगवानना स्वरूपना ज्ञान विना कोई काळे मोक्ष थाय नहीं अने परोक्षपणें रामकृष्णादिक अवतार थई गया ते रामचंद्रजी त्रेतायुगमां थया ते केवडा ऊंचा हता? अने केवुं स्वरूप हतुं? अने कृष्णावतार द्वापरमां थयो. ते केवा हता? अने केवडा ऊंचा हता? अने परोक्ष भगवाननो केवी रीते निश्चय थाय? अने केम करी ध्यानमां आवे? माटे परोक्षपणें करीने कोई रीते कल्याण थाय नहीं

अने अंतरयामीपणें करीने सर्वेना आत्मामां रह्या छे. ते केवी रीते रह्या छे? तो कर्मना फळ आपवारूपे रह्या छे पण ते अंतरयामीरूप जे भगवान रह्या छे तेने करीने कोईनो मोक्ष थतो नथी. जेम पाणी छे ते पृथ्वीमां रह्युं छे ते पीवाना उपयोगमां नथी आवतुं, पीवाना उपयोगमां तो प्रगट पाणी तळावमां के नदीमां के कूवामां होय ते पीवाना उपयोगमां आवे.

अने वळी बीजुं दृष्टांत जेम दीवाना प्रकाशमां छेटे दारु अथवा कांटाना उपाडा ते मूक्या होय पण ते कोई काळे बळे नहीं अने ते दीवो प्रगट जो लगारेक अड्यो होय तो सर्वे दारु तथा कांटा ते बळीने भस्म थई जाय. तेम प्रगट भगवान मळे त्यारे ज जीवनो मोक्ष थाय छे अने ते भगवान पण जीवोना कल्याणने अर्थे कृपा करीने प्रगट थाय छे अने ते भगवानना स्वरूपनो जेने जेने निश्चय थाय छे अने जे आशरो करे छे ते सर्वेनो मोक्ष थाय छे. ते च्हाय तो ऊंच कुळनो होय अने च्हाय तो नीच जातिनो होय अने च्हाय तो ब्राह्मण होय अने च्हाय तो क्षत्रिय होय पण सर्वेनो मोक्ष प्रगट भगवानना स्वरूपना निश्चये करीने थाय छे.

अने जेने जेने प्रगट भगवाननो आशरो थयो होय तेने कोई रीते मोक्षनो संशय राखवो नहीं. अने एने तो एम समजवुं जे 'जे मारां दर्शन करशे तेनां कल्याण थशे अने रामावतारमां अने कृष्णावतारमां जेने जेने मळ्या तेना सर्वेना मोक्ष थया ते ज आज मने प्रत्यक्ष मळ्या छे माटे हुं तो कृतार्थ थयो छुं. अने मने जे प्रत्यक्ष भगवान मळ्या छे ते भगवाननी आज्ञाए करीने जळ उपर पृथ्वी रही छे अने मने मळ्या जे भगवान तेनी आज्ञाए करीने सूर्य, चंद्र उदय अस्थपणाने पामे छे अने आ प्रत्यक्ष भगवानना वरसाव्या मेघ पण वरसे छे अने तेमां गाजवीज थाय छे, एवा

अनंत ऐश्वर्य छे ते सर्वे मने मळ्या जे भगवान तेना ज कर्या थाय छे,' पण ते विना बीजा कोईने आ विश्वनो कर्ता समजे ज नहीं अने 'अनंत कोटि ब्रह्मांडनी उत्पत्ति स्थिति अने प्रलय ए सर्वे मने मळ्या एवा जे भगवान तेनी ज इच्छाए करीने थाय छे.' एवी रीते जेने भगवाननो माहात्म्ये सहित निश्चय थाय तेना काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान आदिक अंतरशत्रु ते सर्वे टळी जाय छे अने पंचविषयना राग पण तेना टळी जाय छे. जेम कोईकने दसवीस कागदी लींबु चुसाव्या होय अने तेना दांत अंबाई जाय छे अने तेथी कांई चवाय नहीं. तेम भगवानना माहात्म्यरूपी खटाई जेने चडे छे. ते पण गोपीओए कह्युं छे जे 'अमने श्रीकृष्ण भगवानना चरणनो स्पर्श थयो छे ते दिवसथी आ संसारनां सुख तो नरक तुल्य थई गया छे.' माटे प्रगट भगवानना संबंधे करीने ज मोक्ष थाय छे अने आज पण जेने जेने प्रत्यक्ष मळ्या छे ते सर्वेनां कल्याण थई ज रह्यां छे अने ते सर्वे ब्रह्मनी मूर्तिओ छे अने ते सर्वे अक्षरधामना वासी छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २३९ समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत २४० विषय :–सुबुद्धि–कुबुद्धिनी परीक्षा

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२३ ना भादरवा सुदि ३ ने दिवस महाराज श्री हरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये सोनी कीलाभाईनी दीकरी काशीबाने घेर उगमणे बार घरना चोकमां विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना हार अने बाजुबंध धारण कर्या हता. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाप्रभुजी बोल्या जे "आ जीवने एक कुबुद्धि छे अने एक सुबुद्धि छे. ते कुबुद्धि केम थई छे ? अने सुबुद्धि केम थई छे ? तो जीवे अनंत कोटि कल्प थयां विषय भोगव्या छे तेने करीने कुबुद्धि थई छे अने आ जीवे सत्पुरुषनो समागम करीने परमेश्वरने अर्थे दान, पुण्य, भजन, स्मरण जे जे सुकृत कर्यां छे तेने करीने जीवने सुबुद्धि थई छे. तेमां जे दैवी जीव छे तेने तो प्रगट भगवाननो तथा प्रगट भगवानना संतनो समागम थाय तो ते समागमे करीने आसुरी बुद्धिनो त्याग करीने सुबुद्धि राखीने रूडा धर्म पाळीने परमेश्वरनो दृढ आशरो करीने पोताना आत्मानुं काम सुधारी ले छे.

अने जे आसुरी जीव छे तेनी तो कोई काळे सुबुद्धि थती ज नथी अने ज्यां सुधी एनुं गमतुं सत्पुरुष करवा दे त्यां सुधी सारो रहे पण तेनी कुबुद्धिने सत्पुरुष मुकावे तो ऊलटो द्रोह करे. जेम भाल देशनो कूवो उपर सारो होय अने जो ऊंडो खोदे तो खारुं झेर पाणी नीसरे, तेम सत्पुरुष ज्यारे कुबुद्धि मुकावे तो तेने वधारे कुबुद्धि थती जाय. माटे कुबुद्धिवाळा जे आसुरी जीव तेनो कोई काळे संग करवो नहीं अने सत्पुरुषनो समागम करी कुबुद्धिनो त्याग करीने भगवाननुं भजन करवुं.

अने आ जगत तो सर्वे स्वार्थी छे ते ज्यां सुधी स्वार्थ सरे त्यां सुधी सौने प्रीति रहे अने ज्यारे स्वार्थ टळे त्यारे शत्रु थाय छे. ते वीस वरसनी स्त्री होय अने तेने पत नीसरे के कोड नीसरे तो ते स्त्री शत्रु जेवी लागे अने पुरुष पण जो वीस वरसनो होय अने तेने कोड के पत थाय तो स्त्रीने पण शत्रु जेवो पुरुष लागे. ते मज सारां सारां खावानां पदार्थ पण जीह्वा उपर रहे एटली घडी सारुं लागे अने पछी ते रसमां अनंत रोग रह्या छे अने घणाक दुःख रह्यां छे अने जीह्वा इन्द्रियने

अज्ञाने करीने सारुं लागे छे पण आत्माने तो दुःखना देनारां छे अने जन्ममरणनां कष्ट पमाडनारा छे. एवी रीते दस इन्द्रियो अने चार अंतःकरण ए सर्वेना विषयनुं प्रमाण करवुं अने ए सर्वेथी नोखो एवो जे जीवात्मा तेने पोतानुं रूप मानवुं. ते आत्मा केवो छे? तो सुखरूप छे अने अविनाशी छे अने अच्छेद, अभेद, अजर अने अमर अने प्रकाशरूप एवुं जे 'अक्षरब्रह्म ते मारुं स्वरूप छे.' एम जेने प्रगट भगवान मळ्या होय तेने मानवुं अने जड एवा जे 'पंचविषय अने पंचभूतनो विकाररूप अने त्रण गुणनुं कार्य एवो जे देह तेने सुखे करीने हुं सुखियो थाउं एवो नथी अने हुं तो एक परमात्मा पुरुषोत्तम प्रगट भगवान तेने सुखे करीने सुखियो थाउं एवो छुं.' माटे पंचविषयनी आसक्तिनो त्याग करीने श्रवणे करीने भगवानना शब्दमां लोभावुं अने त्वचाए करीने भगवानना स्पर्शमां लोभावुं अने नेत्रे करीने भगवानना स्वरूपमां लोभावुं अने रसनाए करीने भगवानना महाप्रसादमां लोभावुं अने नासिकाए करीने भगवानना हार चंदनना सुगंधमां लोभावुं. अने एवी रीते दस इन्द्रियो अने चार अंतःकरण तेणे करीने एक भगवानमां ज लोभाय ते ज साचा भगवानना भगत छे. अने जे जे एवी रीते प्रत्यक्ष भगवानना अवतार ज्यारे ज्यारे थाय छे, तेमां जे लोभाय छे ते सर्वे परमपदने पामे छे अने तेने जन्ममरणनो फेरो रहेतो नथी. ए तो ब्रह्मरूप थईने भगवानना धामने ज पामे छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २४० समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २४१ विषय :–अनंत जन्मनां सुकृत भेगां थाय तेने ज अमारो संबंध थाय छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२३ ना भादरवा सुदि ४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये पटेल कुबेर रणछोडने घेर आथमणा बारना घरना चोकमां विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तके कसुंबल फेंटो बांध्यो हतो. कसुंबल खेस खभे धारण कर्यो हतो अने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी मोटी सभा भराईने बेठी हती अने रात्री पहोर एक गई हती.

पछी महाप्रभुजी बोल्या जे "सर्वे सांभळो, एक वार्ता करीए छीए जे आ जगतने विषे एक अविनाशी वस्तु छे अने एक नाशवंत छे. तेमां जे मायाकृत प्रकृतिनुं कार्य सर्वे नाशवंत छे अने ते सर्वेनो धारण करनारो आत्मा ते अविनाशी छे. माटे भगवानना भक्तने नाशवंतमां मोह न पामवो अने अविनाशीमां लोभावुं.

हवे नाशवंत ते शुं? तो देहना सगांसंबंधी तथा धन, दोलत, राजपाट आदिक आलोकनां सर्वे वैभव तथा देवलोकनां सर्वे वैभव तथा ब्रह्मानालोकनां वैभव तथा विराटपुरुषनां तथा प्रकृतिपुरुषनां वैभव तथा मूळपुरुष आदिक प्रकृतिनुं कार्य सर्वे नाशवंत छे. ते नाशवंत पदार्थनी इच्छा भगवानना भक्तने न राखवी अने जो भगवानना भक्तने नाशवंत पदार्थनी इच्छा होय तो तेने मोटी खोड जाणवी. केमके जेम कोईक रांकने पादशाह प्रसन्न थईने कहे जे 'तुं माग जे माग ते आपुं.' त्यारे तेणे डुगळीना गांठीया माग्या. पछी पादशाहे जाण्युं जे महा मुर्ख अने पापी छे, जे गामगरास, धनमाल कांई न माग्युं अने

डुंगळी मागी. एम कहीने अति कुराजी थईने काढी मूक्यो. तेम जेने साक्षात्कार प्रगट भगवाननो आशरो थयो तेने रांकनी पेठे मायिक नाशवंत पदार्थनी इच्छा न राखवी अने तेने तो अविनाशी जे पोतानो आत्मा तथा अविनाशी एवा जे परमात्मा तथा अविनाशी एवुं जे भगवाननुं धाम तथा ते भगवान संबंधी जे सुख तेनी इच्छा राखवी. अने सर्वेना कारण एवा जे भगवान ते आ मने साक्षात्कार मळ्या छे अने तमे पण तेमज समजो छो माटे तमारा भाग्यनो पार नथी अने तमारो महिमा कहेवाने कोई समर्थ नथी अने तमारां चरित्र तो गाई गाईने अनंत जीवोनो मोक्ष थशे; केमके पूर्वे जेने जेने भगवाननो संबंध थयो छे अने धर्म पण दृढ पाळवानां नियम लीधां छे अने भजन स्मरण पण सर्वे करो छो माटे तमारा महिमानो कोई पार पामे एम नथी अने तमारो महिमा मायिक दृष्टिवाळाने जाण्यामां आवे एम पण नथी अने तमारो महिमा तो आ अमारा साधु जाणे छे माटे जेने अमारो योग थयो छे ते आ जन्मने पुण्ये करीने नथी थयो; ए तो अनंत जन्मनां सुकृत भेगां थाय छे तेने ज अमारो संबंध थाय छे अने तेने ज अमारी आज्ञा पाळवी गमे छे, पण पामर पशुने अमारी आज्ञा नथी गमती. अने पामर पशुने तो शिष्नु अने उदर परायण प्रीति होय. अने आ वात तो दैवी अने मुमुक्षुने गमे छे. माटे जेम चिंतामणी होय अने अनंत प्रकारनुं जतन करीने राखे तेम आ जे अमारी आज्ञा छे तेने शीर साटे राखवी केमके शीर जाय तेनो खरखरो नहीं पण आज्ञा लोपाय एथी मोटी हाणय बीजी नथी. अने प्रत्यक्ष भगवाननी आज्ञा पाळवी ए जेवो कोई लाभ नथी. केमके पूर्वे पण जे जे भगवाननी आज्ञा प्रमाणे वर्त्या छे ते ज मोटी मोटी पदवीने पाम्या छे अने जेणे जेणे आज्ञा लोपी छे ते सर्वे अतिशय कष्टने पाम्या छे. माटे जे जे

पोताना सगा होय तेने पण एम कहेवुं जे 'अधर्मनो त्याग करीने परमेश्वरनी आज्ञा प्रमाणे वर्तशो तो ज सुखिया थशो अने जो परमेश्वरनी आज्ञा प्रमाणे नहीं वर्तो तो यमपुरीनां तथा जन्ममरणनां दुःखने पामशो अने घणां हेरान थशो.' एवी रीते सर्वने शीखामण देवी अने पोताने पण दृढपणें वर्तवुं. अने जेने जेने प्रगट भगवाननो संबंध थयो छे तेने तो अतिशय महा निर्भय रहेवुं अने जन्ममरणनी शंका राखवी नहीं. अने अंत समय थशे त्यारे जे निर्वासनिक हशे तेने तो कांइए अंतरमां पीडा नहीं थाय अने जेने कांई जगतनी आसक्ति छे तेने प्रथम आसक्तिने तोडाववा सारु थोडीक पीडा जेवुं जणावीने पछी अमारा स्वरूपनुं दर्शन आपीने तेजोमय एवो जे दिव्य देह तेने पमाडीने अमारा अक्षरधाममां लई जईशुं. अने अविनाशी सुखने पमाडीशुं; ते कोई काळे पाछुं जन्ममरणनां दुखने न पामे. ते गीतामां कह्युं छे जे—

न तद् भासयते सूर्यो न शशांको न पावकः।
यद् गत्वा न निवर्तन्ते तद् धाम परमं मम ॥

ए श्लोकमां पूर्वे कह्युं एम ज अर्थ छे. माटे हवे तो नाशवंत सुखनी इच्छानो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवानना ज वचनमां विश्वास राखीने अविनाशी सुखनी इच्छा राखवी."

इति श्रीमुखसिद्धांत २४१ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत २४२ विषयः—*'मन होय हाथ तो जाय दाराने साथ.'*

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ना भादरवा सुदि ५ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये दवे शुभराय शंकरजीने घेर उगमणां वारना चोकमां विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तके कसुंबल फेंटो बांध्यो हतो

अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाप्रभुजी कृपा करीने एम बोल्या जे "जगतमां केटलाक एम कहे छे जे 'मन होय हाथ तो जाय दाराने साथ,' एवो जे शब्द छे ते सत्पुरुषनो नथी, ए शब्द तो असत्पुरुषनो तथा व्यभिचारी अति पापीनो छे. अने नारदने तथा ब्रह्माने तथा शिवने ए आदिक केटलाक मोटा मोटाने तो मन हाथ न रह्युं अने मननो विश्वास कर्यो तो कलंक लाग्यां. ते कलंक शास्त्रमां प्रसिद्ध लख्यां छे. अने जेणे जेणे मन जीत्यां होय ते तो जीवन पर्यंत सत्पुरुषना आपेला जे नियम तेने दृढ पाळे छे, पण ते नियम थकी भ्रष्ट थता नथी. अने जे जे सत्पुरुषनी आज्ञानुं उल्लंघन करे छे ते तो जरूर भ्रष्ट थाय छे.

--अने ते सत्पुरुषनी आज्ञा ते शुं छे? तो चोरी, छिनाणी, दारु, माटी, वटलवुं, वटलाववुं ए सर्वेनो त्याग करवो अने दंभ, कूड, कपटादिकनो त्याग करवो. अने पोतानी मा, बहेन, दीकरी ते जवान अवस्थावाळी होय तेनी संगाते पण आपत्तिकाळ पड्या विना एकांतमां न रहेवुं अने एकला भेगा चालवुं नहीं अने जो सत्पुरुषनी आज्ञा लोपीने कुसंग करीने अधर्मने मार्गे चाले तो जेम भांग अने दारु पीए तो डाह्यो होय अथवा मूर्ख होय ते बेय गांडा थाय, तेम पंडित होय तथा ज्ञानी होय तथा इन्द्रिय जीत होय ते सर्वे परमेश्वरनी जो आज्ञा लोपे तो तेनी मति भ्रष्ट थया विना रहे ज नहिं, ए सर्वे शास्त्रनो सिद्धांत छे, ते कोई काळे पण मिथ्या थाय नहीं.

जेम कोईक शाहुकार वहाणमां माल भरीने कमाववा सारु समुद्र मध्ये जतो होय ते जो चमकना डुंगर समुद्रमां छे तेथी छेटे रहीने मार्गे

चाले तो निर्विघ्ने समुद्र पार जाय अने जो मार्ग भूलीने चमकना डुंगर पासे जाय तो वहाणना खीला सर्वे चमक सामां तणाई जाय, ते भेळुं वहाण सर्वे माल सहित तणाई जाय अने लोढाना खीला चमकने योगे करीने गळी जाय त्यारे वहाणनां पाटियां विखराई जाय अने माल पण सर्वे समुद्रमां डूबी जाय अने ते शाहुकार पण समुद्रमां डूबी जाय.

ए दृष्टांतनुं सिद्धांत ए छे जे शाहुकारने ठेकाणे तो जीव छे अने भगवाननी भक्तिरूपी तथा भगवानना निश्चयरूपी माल छे अने धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति ते परमेश्वरनी आज्ञारूपी वहाण छे अने खीलारूपी इन्द्रियो छे अने संसाररूपी समुद्र छे अने शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, रूपी चमकनो डुंगर छे. ते पंचविषयनो इन्द्रियोने संबंध थाय छे त्यारे ते इन्द्रियो विषयमां तणाई जाय छे अने इन्द्रियो ज्यारे विषयमां जाय त्यारे परमेश्वरनी आज्ञा जे धर्म ते रूपी जे वहाण तेनां पाटियां सर्वे विखराई जाय छे अने परमेश्वरनो निश्चय अने ज्ञान, वैराग, भक्ति ते रूपी जे माल ते पण सर्वे नाश पामी जाय छे अने जीवरूपी जे शाहुकार ते पण संसाररूपी समुद्रमां डूबी जाय छे अने चोरासीमां अपार दुःखने पामे छे. अने झाड पहाडना भूंडा भूंडा अवतार आवे छे ते कोई काळे छूटको थतो नथी.

माटे जे मुमुक्षु होय अने जेने पोताना जीवात्माना मोक्षनी इच्छा होय अने जन्ममरणनां दुःख थकी मुकावुं होय तेने तो अनादि जे सत्शास्त्रनी मर्यादा तथा वेद्मां कह्या छे जे वर्णाश्रमना धर्म तथा प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेनां मुखनां जे वचन ते प्रमाणे दृढपणें वर्तवुं. पण मोटाओनी मर्यादा उल्लंघन न करवी तो तेनुं ज

कल्याण थाय छे. माटे आ अमारुं वचन छे ते तमारा आत्मानुं अति हित करे एवुं छे. माटे तेने जतन करीने राखजो तो तमने कल्याणना मार्गमां कोई विघ्न नहीं थाय. ते सारु धर्ममां रहीने अमारी भक्ति करजो ए अमारो रहस्य सिद्धांत छे ते तमने कह्यो."

इति श्रीमुखसिद्धांत २४२ समाप्त।

——:*×*:——

श्रीमुखसिद्धांत २४३ विषयः—गुणना वेगे करीने बुद्धिमां ठा रहेतो नथी.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना भादरवा सुदि ६ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये दवे भक्त बापुजी मयारामने घेर उत्तरादा बारना चोकमां गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. किनखावनो सुरवाल अने डगली पहेर्यां हतां अने कसुंबल पाघ बांधी हती. गूढो रेटो पहेर्यो हतो अने कसुंबल शेलुं केडे बांध्युं हतुं अने एक शेलुं खभे नाख्युं हतुं. सर्वे अंगने विषे पुष्पनां आभूषण धारण कर्यां हतां अने ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाप्रभुजी बोल्या जे " सांभळो एक वात करीए जे आ जीवनी बुद्धि त्रिगुणात्मक छे ते गुणने वेगे करीने बुद्धिनो एक ठा रहेतो नथी अने तेने भगवानना स्वरूपना निश्चयनो पण एक ठा रहेतो नथी. ते जेवो जेवो संग करे तेवो तेवो रंग चडे छे. जेम ढेफुं होय ते गंगाजळे पलळे अने लघुशंकाने जळे पण पलळे, तेम जेनी त्रिगुणात्मक बुद्धि होय तेने सत्संगनो जोग होय त्यां सुधी सारो रहे अने कुसंगनो जोग थाय त्यारे अतिशय नठारा थई जाय. एवी रीते त्रिगुणात्मक जेनी

अने तेम आज पण जेने जेने गुणात्मक बुद्धि होय तेने पांच दहाडा तथा दस दहाडा मन, कर्म, वचने शुद्धभावे अमारो संग करे तो तेनी निर्गुण बुद्धि थाय.

माटे पोताना कल्याणने अर्थे सत्संगे करीने गुणात्मक बुद्धिने सुधारी लेवी पण पोताना जीवात्माना मोक्षमां विघ्न आवे एवी बुद्धि न राखवी. अने आ समय तो एवो आव्यो छे जे कोई पामर अने पशु जेवो जीव होय ते पण जो मन, कर्म, वचने करीने सत्संग करे तो आने आ देहे करीने ब्रह्मरूप थईने भगवानना धामने पामे छे. माटे आज आ सभामां वात थाय छे तेवी कोई लोकमां तथा कोई धाममां थती नथी अने ब्रह्मादिक देव पण अंतरीक्षथी आवीने सांभळे छे माटे तमारा पूण्यनो पार नथी अने तमारा महिमाने कोई कहेवाने समर्थ नथी अने तमारां जेने जेने दर्शन थशे तेनां पण कल्याण थशे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २४३ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत २४४ विषयः-कल्याण केम थाय?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना भादरवा सुदि ७ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये डोळीया भक्त काशीनाथ सोमेश्वरने घेर उत्तरादा वारना चोकमां गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगने विषे धारण कर्यां हतां, कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने जमणा हाथने विषे रूमाल धारण कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी अखंडानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे "हे महाराज! कल्याणनुं शुं रूप छे? अने कल्याण केम थाय? ते कहो."

पछी महाप्रभुजी बोल्या जे "कल्याण तो अनंत प्रकारनुं छे. ते केटलाक तो लोटनी चपटी दीधे करीने कल्याण माने छे अने केटलाक दान-पूण्ये करीने कल्याण माने छे अने केटलाक वर्णाश्रमना धर्म पाळवे करीने कल्याण माने छे अने केटलाक नातो जमाडीने कल्याण माने छे अने केटलाक तीर्थाटन करीने कल्याण माने छे अने सदाव्रत आपीने केटलाक कल्याण माने छे अने केटलाक उपवासादिक व्रते करीने कल्याण माने छे. पण ए सर्वे कल्याणना उपकरण छे.

अने साचुं कल्याण तो ए छे जे पंचविपयनी वासना टाळीने ब्रह्मरूप थईने परब्रह्मने भजवा. अने अनंत साधन करे पण वासना होय त्यां सुधी जन्ममरण टळे नहीं. माटे पंचविषयनी वासना टाळीने भगवान भजवा ए कल्याणनुं रूप छे अने ते विना बीजां कल्याण छे ते तो मायिक फळने आपे. ते फळ नाशवंत छे. अने लोकमां रूडानुं नाम कल्याण कहे छे, पण साचुं कल्याणनुं रूप तो पंचविपयनी वासना टळीने आत्यंतिक मोक्षने पामवुं तेज एक कल्याणनुं रूप छे.

हवे ते कल्याण केम थाय ? तो आत्यंतिक ज्ञानना आपनारा एवा जे महात्मा पुरुष ते ज्यारे जीवने प्रगट मळे अने तेनो जीव दृढ आशरो करे अने ते महात्मा पुरुष कृपा करीने धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित भक्ति सिद्ध करावीने वासना टळावीने ब्रह्मरूप करे त्यारे आत्यंतिक कल्याण थाय. माटे माया पर एवा जे भगवान के भगवानना एकांतिक निर्वासनिक साधु ते जीवने प्रगट मळे त्यारे ज कल्याण थाय पण ते विना थाय नहीं, ए सिद्धांतवार्ता छे."

इति श्रीमुखिसद्धांत २४४ समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत २४५ विषयः—सत्पुरुप अने असत्पुरुपना देह चोविस तत्वना छे तो पण घणो भेद छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना भादरवा सुदि ८ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये दवे मलकारचंद गंगादत्तनी वहेन वाई वेणीवाने घेर उत्तरादा वारना चोकमां गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना हार पहेर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने वेठी हती.

पछी महाप्रभुजी वोल्या जे "सांभळो एक वात करीए जे सत्पुरुप अने असत्पुरुप वेयना देह तो त्रण गुणना थयेला छे. तेमां रजोगुण थकी दस इन्द्रियो थई छे अने तमोगुणना पंचभूत अने पंचविषय थया छे अने सत्त्वगुणना चार अंतःकरण अने चौद देवता थया छे. एवी रीते चोविस तत्त्वना सत्पुरुपना देह अने असपुरुपना देह ए वेयना थया छे.

पण सत्पुरुपमां अने असत्पुरुपमां तो अतिशय भेद छे, केमके सत्पुरुप छे ते तो माया पर वर्ते छे अने त्रण गुणना जे देह तेने पोतानुं रूप मानता नथी अने अद्‌भूत आनंदमां सदाय वर्त्या करे छे. जे असत्पुरुप छे ते तो देहने ज पोतानुं रूप माने छे अने पंचविषयमां लोलुप वर्ते छे. जेम रांकनां अने राजानां वेयनां घर धूड पाणानां होय, पण जे रांकनां घर छे तेमां तो राखना ढगला तथा फूटेला हांडलां ते होय तथा तूटेला खाटला अने फाटेला गोदडांना गाभा होय अने ओरड उपर छाज होय अने जे राजाना घरमां तो भारे भारे अनंत प्रकारनी रिद्धिसिद्धि होय.

ए दृष्टांत एनुं सिद्धांत ए छे जे सत्पुरुपना अने असत्पुरुपना देह

तो त्रण गुणना छे पण असत्पुरुष छे तेना अंतरमां काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान आदिक अनंत दोष भर्या होय अने पंचविषयने भोगवता होय. अने जे सत्पुरुष छे तेमां तो अनंत शुभ गुण रह्या होय अने पंचविषयनी वासनाए रहित्त वर्तता होय अने माया पर स्थितिए युक्त थका देहमां रहीने भगवाननी भक्ति संबंधी क्रिया करे अथवा अनंत बीजा जीवोना कल्याणने अर्थे क्रिया करे, पण अज्ञानी बहार-दृष्टिवाळा छे तेना ओळख्यामां आवता नथी. केमके जेम असत्पुरुष मोढे करीने खाय तेम सत्पुरुष मोढे करीने खाता होय अने जेम असत्पुरुष नेत्रे करीने जुए तेम सत्पुरुष पण नेत्रे करीने जुए, एवी रीते असत्पुरुष अने सत्पुरुष बेय इन्द्रियो वडे क्रिया करता होय तेने करीने बाह्यदृष्टि-वाळा अज्ञानी जीव ओळखी शके नहीं.

अने जे असत्पुरुष क्रिया करे छे ते तो देहने पोतानुं रूप मानीने विषयने विषे आसक्तिए करीने क्रिया करे छे अने जे सत्पुरुष छे ते तो अधर्मनो नाश करवाने अर्थे अने अनंत जीवोना मोक्षने अर्थे क्रिया करता होय, पण देहने ममत्वे करीने सत्पुरुषनी कोई क्रिया न होय अने जे असत्पुरुष होय ते तो श्रोत्रनी वृत्तिए करीने शब्दमां एक रस थई रह्या होय अने त्वचानी वृत्तिए करीने स्पर्शमां आसक्तिए करीने जोडाई रह्या होय अने नेत्रनी वृत्तिए करीने रूपमां जोडाई रह्या होय. एवी रीते असत्पुरुषनी इन्द्रियो अंतःकरण ते पंचविषयने योगे करीने विकारने पामीने तेमां एक रस थई जाय छे.

जेम श्वेत वस्त्रने गळीना रंगमां बोळे त्यारे श्वेत मटीने श्याम थई जाय छे, तेम जीव छे ते तो श्वेत वस्त्र जेवो शुद्ध छे पण पंचविषयरूपी गळीने रंगे करीने भ्रष्ट थई गयो छे अने वळी ते उपर पंचविषयना पट

देतो रहे छे. जेम कोईक द्रव्यने ऊंडुं दाटीने तेना उपर पाणानी सला मूकीने उपर चुनानो धावो आपीने वळी ते उपर सीसुं ढाळे अने ते उपर वळी चुनानो धावो आपे. तेम असत्पुरुष छे ते अनंत पापे युक्त छे अने वळी तेना उपरअशुभशब्दने सांभळवे करीने तथा स्त्री आदिकना अशुभ रूपने कुमतिए करीने जुए छे तेने करीने असत्पुरुष अने तेना संगना करनारा, ते जन्ममरणनां महा कष्टने पामे छे.

अने श्रोत्र इन्द्रिय छे ते आकाश थकी थई छे अने त्वचा इन्द्रिय वायुथी थई छे अने नेत्र इन्द्रिय छे ते अग्निथी थई छे अने रसना इन्द्रिय जळ थकी थई छे. एवी रीते पांच ज्ञान इन्द्रियोने विषे पांच भूत रह्या छे. अने तेमां श्रोत्र इन्द्रियने अने वाक् इन्द्रियने एकता छे. केमके सारुं नरसु मोढे बोलाय तेने श्रोत्रे करीने ग्रहण करे छे. अने त्वचाने अने हस्त इन्द्रियने एकता छे, केमके त्वचानी रक्षा हस्त करे छे. अने नेत्र अने पगने एकता छे, केमके पग छे ते रूपने पमाडे छे. अने रसनाने अने शिष्नुने एकता छे; केमके खारा, खाटा, गळ्या, चिकणा जे रस जमे तो शिष्नुने एकता छे. अने इन्द्रियमां वायु भराय अने विर्यपात थया विना रहे ज नहीं, ए सिद्धांत वार्ता छे. अने घ्राणने अने गुदाने एकता छे, ते गुदानी दुर्गंध घ्राणने जणाय छे. एवी रीते पांच कर्म इन्द्रियोने अने पांच ज्ञान इन्द्रियोने परस्पर संबंधे करीने पंचविषयने भोगवे छे. एवी रीते अनादिनो जीवने इन्द्रियो वडे करीने पंचविषय भोगव्यानो ढाळ छे. ए ज असत्पुरुषपणुं छे.

माटे जेने पोताना जीवात्मानो मोक्ष करवानी इच्छा होय तेने प्रथम तो सत्पुरुषनो समागम करीने पछी तेने वचने करीने इन्द्रियोने नियममां करवां. केमके इन्द्रियोने अनादिकाळनो विषयनो संबंध छे ते घडिकमां निर्वासनिक थाय नहीं. जेम आंकेला खूंटडाने तरत सांतीडे

जोडे तो कोई काळे चाले नहीं. ए तो प्रथम तरीलामां नाखे अने पछी जीहें पलोटे अने हळवे हळवे अभ्यासे करीने सांतीडा, गाडा, भरतीयां ताणे छे. तेम प्रथम तो नियमे करीने इन्द्रियोने वश करवां अने जेनी इन्द्रियो नियममां नथी अने कहे छे जे 'हुं सिद्धदशाने पाम्यो छुं.' ते तो महा दंभी छे अने धर्म घातकी छे अने एवा दुष्ट पापीने तो शस्त्रे करीने माथु कापी नाखीए तो अतिशय मोटुं पुण्य थाय छे. केमके एवा जे दुष्ट गुरु ते तो अनंत जीवोनुं भूंडुं करे छे. एवा अधर्मी थकी मुमुक्षुने जरूर दूर रहेवुं अने जे जे अधर्मीनो संग करे तो तेनुं जरूर भूंडुं थाय. जेम भांग के दारू पीये तो जरूर गांडो थाय तेम अधर्मीनो संग करे तो जरूर भूंडुं थई जाय.

माटे अमारो तो ए ज सिद्धांत छे जे पंचविषयनो रागी होय तेना संगनो त्याग करीने इन्द्रियोने नियममां करीने आत्मरूप थईने अंतरदृष्टि करीने भगवाननुं स्वरूप हृदयमां धरीने निरंतर अखंड खातां–पीतां सर्वे क्रियामां जाणपणांमां रहीने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनी अखंड स्मृति राखवी. अने एवी रीते सर्वे इन्द्रियोनी वृत्तिओ भगवानना स्वरूपमां जोडाय त्यारे ते भगवानना स्वरूपने विषे जोडावे करीने इन्द्रियो निर्गुण भावने पामी जाय छे. पछी ते इन्द्रियोमां ज्ञानरूपी प्रकाश थाय छे अने पंचविषयनी वासनानां मूळ उखडी जाय छे. पछी अखंड एक भगवाननुं स्वरूप ज देखाय छे. तेने सिद्धदशावाळो जाणवो तथा ब्रह्मरूप जाणवो. अने ज्यांसुधी विषयनो राग होय त्यांसुधी तेनुं आत्यंतिक कल्याण थाय नहीं, ए तो विषयनो राग टळे त्यारे ज तेनो मोक्ष थाय छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २४५ समाप्त।



श्रीमुखसिद्धांत २४८ विषयः– जैनमतनो सिद्धांत अने केवळपद प्राप्ति.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२३ ना भादरवा सुदि ९ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये पटेल लालाजी किसाभाईने घेर उगमणें बारना घरना फळियामां गादीतकिये युक्त विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्या हतां. अने पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता. कान उपर गुच्छ धारण कर्या हता अने पाघमां तोरा लटकता हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाप्रभुजी बोल्या जे "आज जैनमतनो सिद्धांत कहीए." त्यारे गाम श्री पींपळीना वीरजी भक्ते कह्युं "बहु सारु वात करो." पछी महाराज बोल्या जे "जीव छे ते स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण एवा जे त्रण देह तेने धरी रह्यो छे. तेमां स्थूळदेह छे तेनी पुष्टि ते विषयनी क्रियाए करीने छे अने स्थूळनी पुष्टि थाय छे तेनो राग सूक्ष्म देहमां रह्यो छे. माटे जेवी वासना होय तेवी क्रियानो संकल्प थाय तो तेने भोगव्यामां जीव पाप-पुण्य जोता नथी. अने पोतानो संकल्प जेवो छे तेने पूरो पाडवो ए सूक्ष्मदेहनी पुष्टि छे. अने जे कारणदेह छे तेनी पुष्टि ए छे जे अशीलता कहेतां कोई काळे वासना टाळवानो संकल्प नथी कर्यो अने वासनाने विषे सदाय भरपूर रह्या करे छे.

वळी जीवने जाग्रत, स्वप्न अने सुषुप्ति ए त्रण अवस्था छे. तेमां जाग्रत अवस्था ते कई? तो पंचविषय संबंधी जे ज्ञान यथार्थ रहे अने स्वप्न अवस्थामां तो पंचविषयनुं ज्ञान छे तो खरुं पण अयथार्थपणें रहे छे अने सुषुप्ति अवस्थामां तो शून्यभावने पामी जाय छे.

एवी रीते जगतना जीव त्रण देहमां अने त्रण अवस्थामां वर्ते छे अने मोहरूपी निद्रामां जन्म-मरणनां दुःखने पामे छे.

अने जे ज्ञानी छे ते तो त्रण अवस्था थकी अने त्रण देह थकी व्यतिरेक वर्ते छे एवी जे निर्गुण स्थिति तेने पाम्या छे अने ते मोहरूपी निद्रामां नथी आवता. त्यां श्लोक जे–

'या निशा सर्व भूतानां तस्यां जागर्ति संयमी'।

एनो एम अर्थ छे जे जगतना जीव भगवाननी कोरे सूता छे, कहेतां भगवानने नथी भजता अने ज्ञानी पुरुष छे ते भगवाननी कोरे जाग्या छे कहेतां निरंतर भगवाननुं भजन करे छे अने जगतना जीव छे ते पंचविषयनी कोरे जाग्या छे, कहेता विषयने भोगवे छे अने ज्ञानी पुरुष छे ते पंचविषयनी कोरे ऊंध्या छे, कहेतां विषयने नथी भोगवता. अने जेने भगवानना स्वरूपनुं ज्ञान नथी तेने तो सदाय सुषुप्ति अवस्था जाणवी अने एनी दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरण आदिक चोवीस तत्त्व ए सर्वेमां मोहरूपी तम व्यापी रह्यो छे. तेने करीने एने सर्वकारण, सर्वनियंता, सर्वाधार अने अलौकिक अपरिमित प्रताप ते छे जेनो एवा जे प्रगट भगवान तथा ते भगवानना एकांतिक संत ते मोहरूपी निद्राए करीने ओळखाता नथी.

अने जेम कोईक पुरुषने स्वप्न लाध्युं होय ते जाणे क्यांक देह धर्यो अने त्यां अनंत प्रकारना विषय भोगव्या ते जाग्रत अवस्थाने भूलीने भोगव्या. तेम मोहरूपी निद्रामां आत्माना स्वरूपने भूलीने एना श्रोत्रनी वृत्ति स्त्री आदिकना शब्दमां जोडाणी छे अने त्वचानी वृत्ति स्त्री आदिकना स्पर्शमां जोडाणी छे अने नेत्रनी वृत्ति स्त्री आदिकना रूपमां जोडाणी छे अने रसनानी वृत्ति सारुं सारुं खावामां जोडाणी छे अने घ्राणनी वृत्ति गंधमां जोडाई गई छे एवी रीते दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरण तेने करीने पंचविषयमां ए जीव लोलुप थई रह्यो छे.

जेम दूध अने पाणी एक रस थई जाय ते कोई रीते नोखुं पडे नहीं पण हंस होय तो ते दूध पाणीने नोखुं करे; केमके हंसनी चांचमां खटाश होय तेने करीने दूधना कोकडा वळी जाय. पछी ते दूधनां कोकडां हंस खाई जाय अने पाणी पड्युं रहे. तेम जीव पंचविषयमां एक रस थई गयो छे ते कोई रीते नोखो थई शके नहीं ते एने तो हंस एवा जे माया पर परमात्मा ते ज्यारे मनुष्यरूप थईने पृथ्वी उपर वीचरता होय ते जीवने मळे पछी ते ज्ञानरूपी खटाशे करीने स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण तेमां जीव एक रस थई गयो छे ते थकी नोखो पाडे छे अने केवळपदने पमाडे छे.

ते केवी रीते केवळपदने पमाडे छे? तो तप, दया, शीळ अने भाव ए चार साधन करावीने केवळ रूप करे छे. तेमां प्रथम तो तपे करीने स्थूळदेहरूपी जे माया तेने टळावे छे. ते तप ते शुं? तो इन्द्रियोने विषय भोगववा देवा ज नहीं, तेनुं नाम तप कहेवाय. ते तपे करीने दश इन्द्रियो अने पंचभूतने नियममां करावे छे. अने ते तपवाळा पुरुषने दया राखवी अने तपस्वी पुरुषने जो दया न होय तो ते थकी घणा मनुष्यने ताप थाय ते थकी हिंसा थाय छे. माटे सर्वे जीव प्राणी मात्रने विषे आत्मानो भाव राखीने तेनी उपर दया राखीने यथा योग्य रक्षा करवी. पण कोई जीव उपर क्रुर दृष्टि न करवी. तेने करीने सूक्ष्म शरीर जीताय छे. अने शील जे अंतःकरणना सूक्ष्म राग कहेतां पंचविषयनी वासना तेनो त्याग करीने ध्यानमां बेसाडे छे. ते केवी रीते बेसाडे छे? तो निवृत्ति पर जग्या होय त्यां पवित्र धावळीनुं जे आसन ते उपर सिद्ध आसन वळावीने भाव वडे करीने चोवीस आहार करावे छे.

हवे श्रोत्र.इन्द्रियनी वृति छे तेनी प्रतिलोभ दृष्टि करीने तेना

विषयनो त्याग करीने पोते द्रष्टा थईने वृत्तिने आत्माने विषे जोडी देवी अने त्वचा इन्द्रियनी वृत्ति छे तेने स्पर्श विषयनो त्याग करीने पोते द्रष्टा थईने ते वृत्तिने आत्माने विषे प्रतिलोम दृष्टि करीने ते वृत्ति आत्माने विषे लय करवी अने चक्षु इन्द्रियनी वृत्ति छे तेने रूप विषय थकी पाछी वाळीने पोते द्रष्टा थईने प्रतिलोम दृष्टि करीने ते वृत्तिने आत्माने विषे लय करवी अने रसना इन्द्रियनी वृत्ति छे तेने नाना प्रकारना जे रस विषय ते थकी पाछी वाळीने तेनो द्रष्टा थईने प्रतिलोम दृष्टि करीने ते वृत्तिने आत्माने विषे लय करवी अने घ्राण ईन्द्रियनी वृत्ति छे तेने गंध विषयनो त्याग करीने पोते तेनो दृष्टा थईने प्रतिलोम दृष्टि करीने ते वृत्तिने आत्माने विषे लय करवी. एवी रीते दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरण अने पांच विषय अने पांच भूत ए चोवीस तत्त्वनी जे वृत्तिओ तेने पोत पोताना विषय थकी पाछी वाळीने तेनो पोते द्रष्टा थईने प्रतिलोम दृष्टि करीने ते वृत्तिओने आत्माने विषे लय करवी.

पछी पोते एकलो केवळ रह्यो तेनुं नाम केवळ कहेवाय अने ते केवळपदने पाम्यो कहेवाय छे अने चोवीस तत्त्वनी वृत्तिओने प्रति-लोभ दृष्टि करीने आत्माने विषे लय करवी तेनुं नाम चोवीस आहार कहेवाय छे. एवी रीते तप, दया, भाव अने शील तेने सिद्ध करीने चोवीस तत्त्वनी वृत्तिओने प्रतिलोम दृष्टि करीने आत्माने विषे लय करीने चोवीस आहार करीने केवळी थईने पछी ध्यानमां बेसीने पोताना आत्माने विषे एवा ज्ञानना करावनारा एवा जे परमात्मा भगवान तेनुं भावे करीने ध्यान करवुं.

पछी एवी रीते ध्यान करतां करतां आत्माने विषे परमात्मा साक्षा-त्कार देखाय छे. पछी परमात्माने विषे भावे करीने जोडाय छे त्यारे

पोते पण तदाकार भावने पामी जाय छे अने अखंड अविनाशी सुख जे केवळपद तेने पामे छे अने एने सातमीनो सिद्धांत कहे छे.

अने 'कर्मे करीने जे केवळी थाय' एम कह्युं छे, ते पण आ कह्युं जे तप, दया, शील अने भाव तेने सिद्ध करवा रूप जे कर्म तेने करीने केवळी थाय. अने वळी 'कर्मनो त्याग करे त्यारे केवळी थाय' एम कह्युं छे ते तो विषयासक्तिरूप जे कर्म तेनो त्याग करे त्यारे केवळी थाय, कहेतां वासनारूपी कर्म खपावे जे वासना टाळे त्यारे केवळी थाय. अने कर्मे करीने जीव बंधाणो छे ते पण अनादिकाळनो जे पंचविषयनी वासना जीवने छे ते वासनारूपी कर्मे करीने बंधाणो छे. एवी रीते केवळपदने पमाडनारा अने सर्वेना मतना सिद्धांतने जाणनारा अने सर्व जगतना कर्ता हरता अने सर्वेना आधार एक ज भगवान छे, ते ज भगवान आज तमने प्रत्यक्ष मळ्या छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २४६ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २४७ विषयः—त्रण प्रकारनो कुसंग.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना भादरवा सुदि १० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री सोजीत्रा मध्ये वा माली-याई वानी भाणीवाने घेर गादीतकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता. पाघमां तोरा लटकता हता अने कान उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ खोस्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाप्रभुजीनी आरती करीने साधु कीर्तन बोली रह्या त्यारे श्री-

हरिकृष्ण महाराज बोल्या जे "सांभळो एक वात करीए जे जेवुं कुसंगे करीने जीवनुं भूंडुं थाय छे तेवुं बीजुं शेनेय करीने नथी थतुं. ते कुसंग कयो ? तो कुसंग त्रण प्रकारना छे. तेमां एक तो बहारनो कुसंग छे, बीजो सत्संगमां कुसंग छे अने त्रीजो इन्द्रियो अंतःकरणनो कुसंग छे. ए त्रण कुसंगे करीने जीव जे ते जन्म-मरणनां दुःखने पामे छे.

हवे बहारनो कुसंग ते कयो ? तो सत्पुरुषनो जे सिद्धांत तेने भूलीने विषयनी आसक्तिए करीने शास्त्रना अर्थ अवळा समजावीने धर्म थकी भ्रष्ट करे छे. अने वळी ते कुसंगी केवो छे तो उपरथी तो विश्वासु जीवने धीरवबा सारु कंठीयो माळा राखे अने तिलक रूडां बनावे अने उपरथी वेश सारा राखे पण सत्पुरुष तथा सद्धर्म तेना तो ए कुसंगी द्रोहना करनारा छे. तेने ओळखीने तेनो त्याग करवो. ते पूर्वे रावण पण पुलस्तऋषिना दीकरानो दीकरो हतो अने वेदनी जटायो करीने पोताने हाथे मांथा कापीने शिवने चडाव्यां हतां. तो पण जो प्रत्यक्ष प्रमाण एवा जे रामचंद्रजी तेनो जो द्रोह कर्यो तो अतिशय दुःख पाम्यो अने कुटुंबे सहित नाश पाम्यो. अने जरासंघ, कंस, शिशुपाळ, दुर्योधन, कर्ण ए सर्वे परोक्षपणें भगवाननी भक्ति करता अने सदाव्रत आपता अने दान-पुण्य बहु करता अने ब्राह्मण साधुने तो मोढे मागे ते आपता पण प्रत्यक्ष श्रीकृष्णने न ओळख्या तो सर्वे असुर भावने पाम्या. माटे प्रगट भगवानना द्रोही होय तेने तो दुष्ट जाणीने तेनो त्याग करवो.

अने सत्संगमां कुसंग ते कयो ? तो जेने पंचविषयमांथी एके विषय जे लोभ, काम, स्वाद, स्नेह, मान—ए पांच मांहेलो एके जेमां होय अने ते सत्संगमां होय तो पण तेनो सत्संग ज्यारे त्यारे टळी जशे. अने तेने तो ज्यांसुधी मोटा पुरुष नभावे त्यांसुधी नभे अने ज्यारे तेना

स्वभावने न मूकी शके अने मोटा पुरुषनो अवगुण ले अने सत्संगने मूके. जेम भाल देशमां कूवो होय तेने उपरथी पाणी मीठुं होय अने जो ऊंडु खोदे तो पाणी खारुं झेर जेवुं नीसरे. तेम पंचविषयना लालचु सत्संगी थया होय तेना विषयनुं जो मोटा पुरुष खंडन करे तो सामा द्रोह करे.

माटे एवा पंचविषयना लालचुं सत्संगमां होय तेने कुसंग जाणवो केमके एनो जे जे संग करे तेनुं पण भूंडुं करे. ते कई रीते भूंडुं करे छे ? तो पोताने विषयनी आसक्ति होय ते आसक्तिने दंभे करीने कोई विश्वासी भोळाने जणाववा दे नहीं अने भगवानना माहात्म्यनी ओथ लईने पोते पण विषयने भोगवे अने बीजा विश्वासीने विषय भोगवावे अने धर्म थकी भ्रष्ट करे. माटे जे जे पंचविषयना रागी छे ते सत्संग-मां कुसंग छे.

अने अंतरनो कुसंग ते कयो ? तो इन्द्रियो अंतःकरणमां जे पंच-विषयना सूक्ष्म राग ते अंतरनो कुसंग छे. अने तेने ज्यारे स्त्रीनो संबंध थाय तथा द्रव्यनो संबंध थाय तथा सारुं सारुं खावानो योग थाय तथा स्नेह, मान आदिक पदार्थनो एकांतमां संबंध थाय त्यारे जे जे अंतरमां राग होय तेनुं अंतःकरण भ्रष्ट थया विना रहे ज नहीं. माटे जेने जेने पोताना कल्याणनी इच्छा होय तेने तो इन्द्रियो अंतःकरणने परमेश्वर-नी आज्ञारूपी जे नियम तेने विषे अतिशय दृढ करीने राखवा पण कोई काळे ते नियमने मूकवा नहीं. अने जेनां इन्द्रियो नियममां नथी ते अमारा नथी अने अमारा योगमां रह्या छे तो पण अम थकी लाख गाऊ छेटे छे. अने जे जे अमारा वचन प्रमाणे वर्ते छे अने ते आज्ञाए करीने हजार गाऊ छेटे जाय तो पण अमारा समीपमां छे. अने अमे तो अनंत ब्रह्मांडना जीवोना अंतःकरणने अहीं देखीए छीए. जेम हथेलीमां पाणीनुं

टींपु देखाय. तेम सचराचर सर्वे जीव मात्रने अमे जाणीए छीए अने अमारी कृपा जेना उपर थई होय अने सिद्धदशाने पाम्या होय एवा जे साधु ते पण सर्वना अंतःकरणने जाणे.

अने जे जे पुरुष अमारा दर्शन मूकीने स्त्रीओना मों सामु जुए छे तेने तो अतिशय नीच अने चंडाळ तुल्य जाणवो. केमके चंडाळ अने नीच होय ते ज स्त्रीओमां मोह पामे छे. केमके स्त्रीनो देह छे ते तो हाड, मांस, नाडियो, त्वचा, लोही, वीर्य, मूत्र, विष्टा आदिक जे नकारी वस्तु तेनो भरेलो छे. माटे एवी नठारी वस्तुमां मोह पामे छे तेने पण नठारा जाणवा. अने जे स्त्री छे ते पण अमारां दर्शन मूकीने पुरुषना दर्शन करे छे ते स्त्रीओने पण अति नीच जाणवी. केमके पुरुषना देह छे ते पण भूंडी भूंडी वस्तुमांथी थया छे अने पुरुषना देहमां पण विष्टा रुधिर, लोही, परु, पाच, आदिक नकारी वस्तु भरी छे. अने धोळी चामडीने देखीने स्त्री पुरुषमां मोह पामे छे अने पुरुष स्त्रीमां मोह पामे छे ए बेयने महा दुष्ट जाणवा अने जे भगवानना भक्त होय तेने तो हाडमांसनो लोचो जे देह तेने पोतानुं रूप मानवुं ज नहीं, अने पोतानुं रूप तो अछेद्य, अभेद, अविनाशी एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानीने पोताना इष्ट देव जे प्रत्यक्ष भगवान तेनी आज्ञा प्रमाणे निरंतर वर्तवुं.

अने एम समजवुं जे 'जेनी आज्ञामां चंद्रमा, सूर्य निरंतर फरे छे अने जेनी शक्ति काळ छे, माया छे, पुरुष छे, अक्षर छे एवा अनंत ऐश्वर्ये युक्त जे भगवान ते मने प्रत्यक्ष मळ्या छे अने ते मारा आत्माने विषे पण मूर्तिमान थका अखंड रह्या छे. वळी एवा जे भगवान तेनुं जो वचन लोपाशे तो मने मोटुं दुःख थशे अने जन्म, मरण गर्भवासना

दुःखने घणीकवार पमाशे.' एवी रीते भगवानना अलौकिक महिमा समजीने पोतानुं माथुं जाय तो पण आज्ञा लोपवी नहीं.

माटे जे अमारी आज्ञा प्रमाणे वर्तशे तेने तो कांई करवुं रह्युं नथी, केमके एना प्रारब्ध तो अमे छीए. ते एना त्रण प्रकारना जे कर्म सचित, प्रारब्ध, क्रियेमाण ते सर्वे टळी जाय छे अने ते त्यागी छे तथा गृहस्थ छे तो पण ब्रह्मरूप ज जाणवो अने एने दर्शने करीने बीजा जीवनां कल्याण थाय छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २४७ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २४८ विषयः–निवृत्तिमार्ग अने प्रवृत्तिमार्ग.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२३ ना भादरवा सुदि ११ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये दवे हरिशंकर रूगनाथने घेर आथमणा बारना चोकमां गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने ललाटने विषे केसरनी अर्चा करीने चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती अने घणाक दीवा दीवीओ करीने महाराजनी मोटी आरती करीने धून्य करीने सर्वे सभा बेठी.

प्रश्नः–पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पूछयो जे "हे महाराज ! निवृत्तिमार्ग ते कोने कहीए ? अने प्रवृत्तिमार्ग ते कोने कहीए ? ते कहो." पछी महाराज बोल्या जे "निवृत्तिमार्ग छे अने प्रवृत्तिमार्ग छे तेने ज्ञानी छे ते जाणे छे पण जे बहारदृष्टिवाळा होय तथा लौकिक दृष्टिवाळा अने अज्ञानी छे तेने तो निवृत्तिमार्ग अने प्रवृत्तिमार्ग ते

ओळखाता नथी. माटे निवृत्तिमार्ग ते कयो? तो निष्काम भावे करीने भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे करीने प्रवृत्तिनी क्रिया करे छे तो पण तेने सदाय निवृत्तिमार्गवाळा जाणवा. अने पोताने मनने जाणे करीने तथा माने करीने जो एकांतमां बेसीने ध्यान करे तो पण तेने प्रवृत्तिमार्गवाळा जाणवा. केमके सत्पुरुषना समागम विना कोई काळे पंचविषयना राग टळता नथी अने विषयना राग तो ज्ञाने करीने टळे छे. ते ज्ञान तो सत्पुरुष थकी पमाय छे, पण ते विना पोताने जाणे ज्ञान थाय नहीं. जेम महेताजी विना निशाळीयाने विद्या आवे नहीं, तेम माया पर एवा जे ज्ञानदाता ते विना कोई जीव ज्ञानने पामे नहीं.

अने जो दंभे करीने गमे एटलो निवृत्ति परायण रहेतो होय तो पण तेने प्रवृत्तिमार्गमां बूड्यो जाणवो अने जगतमां केटलाक ब्रह्मकोदाळ छे ते मिथ्या ज्ञाननी ओथ लईने ब्रह्मना स्वरूपने जाण्या विना केवळ देहाभिमाने करीने निवृत्तिमार्ग पकडीने बेठो होय अने मनमां एम समजे जे 'अमे कर्म थकी मूकाणा छीए अने साधन सर्वे अमारां थई रह्यां छे.' एम जे कहे छे ते तो महा पापी छे. अने वासना न टळी होय अने मनमां एम समजे जे 'मारे माथे जन्ममरण नथी.' एम समजीने आळसु थईने प्रमादरूपी मायाने विषे वज्र पासमां बंधाय छे. माटे एवी असत्य समजणे करीने निवृत्ति माने छे ते तो महा मूर्ख छे अने कल्याणना साचा मार्ग थकी भूला पड्या छे अने कर्म मार्गने विषे सदाय बूड्या छे अने एवा दंभी छे तेने भोळा लोक निवृत्तिमार्गवाळा जाणीने तेमां जे जोडाय छे ते पण पोताना आत्मानो नाश करनारा छे अने तेने पण देहाभिमानी मूरख जाणवा अने एवा जे देहाभिमानी जीव छे ते तो देह संबंधी जे क्रिया तेमां अतिशय तत्पर रहेता होय.

अने अनंत जन्मना पाप कर्मने बाळीने भस्म करे अने जीवने

ब्रह्मरूप करे एवा जे भगवान प्रगट पुरुषोत्तमनी नवधा भक्ति तेने एवा दुष्ट प्रवृत्ति माने छे अने तेमां दोषने देखे छे तेनुं कारण शुं छे? तो एने देहाभिमान छे ते कोई करता नथी अने देहाभिमाने करीने एकांत पकडीने बेसी रहेता होय पण ते प्रवृत्तिमार्गवाळा छे. अने पंचविषयनी आसक्ति अने देहाभिमान मूकीने भगवाननी आज्ञाए करीने भगवाननी भक्ति संबंधी जे जे क्रिया करे छे ते सर्वे निवृत्तिमार्गवाळा छे.

माटे जेने अमने प्रसन्न करवा होय तेने तो देहे करीने विषयासक्तिनो त्याग करीने नवधा भक्ति करवी अने नवधा भक्ति छे ते तो अनंत जन्मना महा पाप तेने बाळीने भस्म करे एवी छे. माटे एतो अनंत जन्मना सुकृत उदय थाय छे तेने ज अमारी सेवा मळे छे तथा अमारा संतनी सेवा मळे छे पण थोडा पूण्यवाळाने सेवा मळती नथी अने जेना जेना उपर अमे कृपा करीए छीए तेने ज अमारी सेवा आपीए छीए तथा अमारा साधुनी सेवा आपीए छीए अने जे जे सेवा अंगीकार करीए छीए तेने ज अमारी सेवा आपी छे अने एज अमारी कृपा छे. अने पूर्वे भगवानना भक्त जे जे मोटपने पाम्या छे ते पण प्रगट भगवाननी सेवाए करीने ज मोटी पदवीने पाम्या छे, अने ते ज निवृतिमार्गवाळा कहेवाय छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २४८ समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत २४९. विषयः-भ्रष्ट बुद्धि टळे त्यारे ज मोक्ष थाय.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ना भादरवा सुदि १२ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री सोजीत्रा मध्ये वाई भटीवाने घेर आथमणें वार ओरडानी ओशरीमां गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषण धारण करीने रोझी घोडीए अस्वार थईने ढोल नगारां शरणाई साथे गाजते वाजते गाम वहार आवीने एक वडनुं वृक्ष हतुं त्यां हिंडोळो वांध्यो हतो ते उपर महाराज ऊगमणें मुखारविंदे विराजमान थया अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी सभा भराईने वेठी हती.

पछी महाराज वोल्या जे "सर्वे सांभळो, एक वात करीए जे जीवनी दुराचरणे करीने भ्रष्ट बुद्धि थई गई छे ते भ्रष्ट बुद्धिए करीने पोतानुं स्वरूप जे अछेद, अभेद्य, सुखरूप, सत्तारूप अने अक्षररूप कहेतां अविनाशी तेने भूलीने जड, दुःखरूप अने नाशवंत एवो जे देह 'ते हुं' अने नाशवंत एवा जे 'देह संवंधी पदार्थ ते मारां' एवी रीते मिथ्या अहंममता भ्रष्ट बुद्धिए करीने थई गई छे. तेने करीने देहने नाशे जीव अविनाशी छे तोपण देह भेगो नाश पामे छे अने जीव सुखरूप छे तोपण पदार्थ नाश पामे त्यारे पण महा दुःखियो थाय छे अने संतापने पामे छे. एवी रीते अनादि काळनो वारंवार जन्ममरणने पामे छे. ते एवी रीते पोतानी मेळे ते जीव जन्ममरणनां दुःख थकी मुकावाने समर्थ नथी थतो. माटे एने तो दयाना सिंधु एवा जे परमात्मा ते पोते कृपा करीने मनुष्यरूपे थईने एने ज्ञान आपे त्यारे अज्ञाने करीने जे भ्रष्ट बुद्धि थई गई हती ते ज्ञाने करीने सुबुद्धि थाय छे.

તે જ્ઞાન કેવી રીતે આપે છે? તો પ્રથમ તો નિયમે કરીને વિષયનો ત્યાગ કરાવે અને પછી ચોવીસ તત્ત્વનાં જે રૂપ તેને નોખાં નોખાં દેખાડીને પછી તે થકી નોખો એવો જે પચ્ચીસમો જીવાત્મા તેનું સ્વરૂપ દેખાડીને પછી એને વૈરાગે કરીને દેહ સંબંધી જે પદાર્થ તેમાંથી પ્રીતિ તોડાવે છે અને પોતાની જે નવધાભક્તિ તેને કરાવીને જીવને અનંત જન્મનાં ભ્રષ્ટ બુદ્ધિએ કરીને પાપ લાગ્યાં છે તે સર્વે નાશ પમાડે છે. પછી એને ભગવાનના સ્વરૂપને વિષે અતિશય પ્રીતિ થાય છે ત્યારે જ જીવનો મોક્ષ થાય છે, પણ તે વિના કોઈ કાળે જીવનો મોક્ષ થતો નથી.

માટે મોક્ષ તો સત્પુરુષ જ્યારે પોતાના સ્વરૂપનું કૃપા કરીને જ્ઞાન કરાવે છે ત્યારે જ થાય છે. તે જુવોને પૂર્વે પણ જે જે અવતાર થઈ ગયા ત્યારે તેનો જેને જેને યોગ થયો છે ત્યારે તે સર્વનાં કલ્યાણ થયાં છે તે શાસ્ત્રમાં લખાણાં છે, પણ તે વિના કોઈનાં કલ્યાણ થયાં નથી અને શાસ્ત્રમાં પણ નથી લખાણાં.

માટે જેને પૂર્વે જે સત્પુરુષનો સંબંધ થયો હતો તેજ આજ તમારે સંબંધ થયો છે. તે તમારા જીવના મોક્ષનો સમય આજ આવ્યો છે. માટે પૂર્વે ભગવાનના અવતાર થયા છે, તેની લીલાઓ શાસ્ત્રમાં લખી છે. તે લીલાને વિચારી જુવો તો આજ પ્રત્યક્ષ અમારા સ્વરૂપમાં અતિશય હેત થશે અને અંતરમાં પ્રકાશ થશે અને તમારા આત્મા પણ તમને સુખરૂપ દેખાશે; અને તે આત્માને વિષે પરમાત્મા પ્રત્યક્ષ અમારું સ્વરૂપ તે પ્રકાશમાં દિવ્ય મૂર્તિ દેખાશે અને અદ્ભૂત આનંદને પામશે."

ઇતિ શ્રીમુખસિદ્ધાંત ૨૪૧ સમાપ્ત ।

श्रीमुखसिद्धांत २५० विषयः-पंचविषयनी वासना केम टळे ?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना भादरवा सुदि १३ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये दवे मंछाराम तथा काशीरामने घेर आथमणा वारनी ओशरीमां गादीतकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण धारण कर्यां हतां. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी श्रीकृष्णभाईए प्रश्न पूछयो जे "पंचविषयनी वासना केम टळे ?" त्यारे महाराजे तेमने कह्युं जे "तमे वर्तमान दृढ राखो छो तो खरा पण वर्तमाननी खबर तो नथी." पछी महाराज बोल्या जे जेम कोईक घायलने चमक थयो होय. पछी तेने पडदा बांधीने कोईने देखवा दे नहीं अने जो मोकलो मेले तो चमक वधारे थाय अने मरी जाय अने पडदामांने पडदामां रहे तो साजो थाय. तेम जीवने पंचविषयना घा वाग्या छे तेने करीने चमक चाल्यो छे. तेने सत्पुरुष पोताना स्वरूपना निश्चयरूपी पाटा बंधावे छे अने नियमरूपी पडदो बंधावे छे अने कोई विषयनो पडछायो पडवा देता नथी तथा कोई विषय ढुकडा आववा देता नथी.

ते नियमरूपी पडदो केवी रीते बंधावे छे ? तो स्त्री आदिकना शब्द न सांभळवा, रागरंग वाजींत्रादिक पण न सांभळवा अने खारुं, खाटुं, गळ्युं, चीकणुं आदिक खटरसनो त्याग राखवो. ए आदिक अनंत प्रकारनी करप लावे छे. त्यारे तेना घा रुझाय छे अने तृष्णारूपी चमक मटे छे अने वासनारूपी महा पीडा ते नाश पामे छे. अने वळी त्वचाए करीने

स्त्री आदिकना स्पर्शनो त्याग करवो, नेत्रे करीने स्त्री आदिकनारूपनो त्याग करवो, रसनाए करीने अयोग्य रसनो त्याग करवो अने नासिकाए करीने अयोग्य गंधनो त्याग करवो. एवी रीते पंचविषयना त्यागरूपी पडदा बंधावीने सत्पुरुष पोताना स्वरूपना निश्चयरूपी पाटा बंधावे, तो एक भगवानना स्वरूप विना प्रकृतिनुं कार्य कांई सत्य न देखे अने एक भगवानने ज सत्य देखे. पछी तेने पंचविषयना घा रुझाई जाय छे अने तेनो धर्म अतिशय दृढ थाय छे अने ते पछी ब्रह्मादिकनो पाड्यो पण भगवानना मार्ग थकी पडे नहीं.

अने ज्ञानरूपी तेना अंतरमां प्रकाश थाय छे अने जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म अने परब्रह्म तेना स्वरूपने देखे छे अने ए सर्वेना रूपने जाणीने पोते ब्रह्मरूप थईने परब्रह्म पुरुषोत्तम एवा जे प्रत्यक्ष भगवान ते विना प्रकृतिनुं कार्य मात्र ते सर्वेने विषे तेने अत्यंत वैराग थाय छे अने अमारा स्वरूपने विषे अतिशय प्रीति थाय छे. माटे अमारा नियमने अति दृढ करीने राखशो तो तमारे कल्याणना मार्गमां कांईए विघ्न नहीं थाय अने संसाररूपी जे समुद्र तेने सहेजे तरी जशो. अने पूर्वे जे जे मोटी पदवीने पाम्या छे ते पण मोटाओनी आज्ञा पाळवे करीने पाम्या छे. माटे ते पदवीने आज पण अमारे वचने करीने पामशो."

इति श्रीमुखसिद्धांत २५० समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत २५१ विषय :–मतपंथनो त्याग करी प्रगट सत्पुरुष पासे जाय तो ज मोक्ष थाय.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२३ ना भादरवा सुदि १४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोणज मध्ये जोशी देवशंकर कुवेरजीने घेर आथमणा बारनी ओशरीमां गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी सारथी झवेर भक्ते महाराजने हाथ जोडीने कह्युं जे "केटलाक मुमुक्षु छे ते मतपंथनी आडे करीने तमारी पासे आवता नथी अने तेथी तमारा स्वरूपनो निश्चय थतो नथी. अने तेने अंतरमां हेत छे अने नक्की निश्चय थया विना शान्ति थती नथी. माटे 'अमारे निश्चय केम थाय ? अने अमारुं सारुं केम थाय?' एवी रीते कोई मुमुक्षुए मने कहेवडाव्युं छे, ते तेनुं सारुं केम थाय ? अने निश्चय केम थाय ? ते कहो."

त्यारे महाराज बोल्या जे जे मुमुक्षु तथा मुक्त जीव होय ते जे ते भगवानने ज्ञाने करीने ओळखे छे ते सारु महात्मा पुरुष प्रगट थया होय तेनुं ज्ञान कल्याणना खपवाळाने जरूर सांभळवुं अने जे मुक्त अने मुमुक्षु जीव होय तेने परोक्ष भगवाननी आस्ता होय अने तेना शास्त्र पण तेणे सांभळ्या होय तेने करीने ज्ञानमां पण ते समजे. जेम कोईकनो कागळ परदेशथी आव्यो होय तेने वांचीने जे बुद्धिवाळा होय ते कागळना लखनारानी बुद्धिनुं प्रमाण करे छे, तेम जे मुमुक्षु अने मुक्त होय ते पण सत्पुरुषनुं ज्ञान सांभळीने ते सत्पुरुषने ओळखे छे. ते माटे कल्याणना खपवाळाने सत्पुरुष पासे जईने ज्ञान सांभळवुं.

अने दैवी अने मुमुक्षु जीव होय अने ते जो कोईक मतपंथमां तथा मोटप मानमां बंधाई रहे अने सत्पुरुष प्रगट थया होय तेनुं ज्ञान न सांभळे तो तेने सत्पुरुष कोई काळे ओळखाय नहीं. अने मतपंथना अहं ममत्वे करीने सत्पुरुषनो अवगुण आवे तो तेने बुद्धि दोषित थई जाय छे अने पूर्वनुं सुकृत होय ते पण दिवसे दिवसे नाश पामतुं जाय अने दैवी अने मुमुक्षु होय ते अंतरमां मुझाया करे.

माटे एम समजीने बुद्धिमान थईने महात्मा पुरुषनो अवगुणनो त्याग करीने तेना गुणनुं ग्रहण करवुं. अने अवगुण तो क्यारे लईए? तो कांईक अधर्म करता करावता होय तो अवगुण लेवो. पण तेवी तो कोई वात न होय अने अमथो अवगुण लेवो ते तो असुरनो स्वभाव छे. एम विचारीने तेना अवगुणनो त्याग करीने तेनुं ज्ञान सांभळवुं.

त्यारे तमे कहेशो जे बीजुं तो सर्वे सारुं छे, पण भगवान कहे छे एटलुं हैये बेसतुं नथी. तो एनुं तो एम छे जे आलोकमां पण कोईक सारा मनुष्य होय ते खोटुं बोलता नथी तो मोटा पुरुष जेने हजारो लोक मानता होय अने जेने विषे परिपूर्ण ज्ञान होय ते खोटुं बोले नहीं अने जेम होय तेम कहे. अने कोई अधर्मी, दुष्ट होय अने ते भगवान न होय अने कहेवा जाय के 'हुं भगवान छुं' तो तेने जीव कोई माने नहीं अने तेनी तो फजेती थाय छे. ते तो कोईने पण मोटुं देखाडी शके नहीं अने तेनी पासे सर्वे मतना सिद्धांतनुं ज्ञान पण होय नहीं. अने जे भगवान होय ते तो सर्वे मतना सिद्धांतने जाणता होय अने ते पासे जे जे दैवी अने मुमुक्षु जीव आवे तेने ज्ञान आपीने तेना अंतरना संशय मात्रने टाळीने पंचविषयना राग उखाडीने शांति पमाडे अने जे आसुरी जीव होय तेने तो ज्ञान कोई जातनुं होय नहीं अने

ते प्रगट भगवानने ओळखे पण नहीं अने आसुरी जीव होय ते ऊलटो भगवाननो द्रोह ज करे.

ते पूर्वे पण जुवोने क्यां सर्वे मनुष्ये प्रगट भगवानने ओळख्या छे ? अने आज तो भगवाननी इच्छाए करीने घणुंसारुं छेअने पूर्वे तो घणा घणा उपद्रव हता. एम विचारीने क्षणभंगुर एवो जे मनुष्यदेह तेमां भगवान प्रगट थया छे अने तेने नहीं ओळखाय तो बहु ज भूंडुं थशे. केमके भगवान प्रगट थया न होय 'अने परोक्षनी भक्ति करतां करतां कोईक दिवस प्रगट भगवान मळशे' एम लालच होय अने परोक्ष भक्ति करतां करतां कोईक दिवस पण ते ज प्रगट भगवान थया अने तेने न ओळखाय अने ऊलटो द्रोह थाय तो तेमांथी बहु ज भूंडुं थाय. एम विचारीने कल्याणना खपवाळाने अतिशय विचार करवो.

त्यारे तमे कहेशो जे 'जो भगवान होय तो अमने कोईक चमत्कार देखाडीने विश्वास करावे' तो मानीए. तो एम तो कोई अवतारादिकनी रीत नथी. ते तो मनमां विचारीने जुवो तो खबर पडशे. माटे जे मुमुक्षु अने दैवी जीव होय तेने ज ज्ञाने करीने प्रगट भगवाननो निश्चय थाय छे. त्यारे तमे कहेशो जे 'भगवान ते तो समाधि करावे ?' तो समाधि बे प्रकारनी छे. तेमां एक तो ज्ञान समाधि छे; ते समाधि सत्य छे. ते मुक्त तथा मुमुक्षु जीव होय अने तेने प्रगट भगवाननो संबंध थाय पछी ते भगवान तेने ज्ञाने करी अष्ट आवरण भेदावीने आत्माने विषे अक्षरनी स्थिति करावे छे. पछी ते अक्षरने विषे जे भगवान रह्या छे तेने साक्षात्कार देखाडीने दिव्यद्दष्टि करावे छे त्यारे ते भक्त अक्षरधामने विषे दिव्यमूर्ति थका अनंत ऐश्वर्य अने अनंत प्रताप अने अनंद पार्षदे युक्त थका प्रत्यक्ष भगवानने देखे छे. पछी ते भक्तने अक्षरधाम अने

मान आपे अने चहाय तो कोई अपमान करे अने चहाय तो कोई पूजा करे अने चहाय तो कोई धूड नाखे तोपण लेशमात्र मनमां हरख-शोकने पामे नहीं.

अने एम समजे जे 'पूजा करे छे ते एना कल्याण सारु करे छे अने जे धूड नाखे छे ते एने खोट जशे अने हुं तो अखंडानंद अने ब्रह्मानंद एवो अविनाशी जे आत्मा ते मारुं स्वरूप छे.' एवी रीतनी ज्ञान स्थितिने पाम्या होय तोपण भगवाननी प्रसन्नताने अर्थे देहे करीने नवधाभक्तिने अतिशय दृढपणें करीने कर्या करता होय अने एम समजता होय जे 'आ प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा मळी छे तथा भगवानना जे जे भक्त तेनी सेवा मळी छे ते मारा उपर भगवाननी अतिशय कृपा.' एवी रीतनी समजण होय पण एवा जे ब्रह्मरूप साधु ते ए भक्तिने प्रवृत्ति न माने अने देह संबंधी जे पदार्थ जोईए तेने प्रवृत्ति माने छे पण तेमां पोताना चित्तने न जोडे.

अने कोईक भगवानना भक्तने रोगादिक संबंधी पीडा थती होय तो तेनी सेवा अतिशय तत्पर थईने करे अने तेनी सारु कोईक पदार्थ जोईतो होय अने ते पदार्थ लेवामां कांईक लोकमां त्यागीना धर्ममां विरोध जेवुं होय, तोपण भगवानना भक्तनी सेवामां दोष न माने. केमके गृहस्थ छे तेने पोतानां स्त्री छोकरां सगांसंबंधी तेमां जो आत्मबुद्धि छे तो तेने अर्थे अनंत प्रकारना अधर्म कर्म करीने तेने खवरावे छे पण ते तेमां दोष गणता नथी अने ते संबंधी अनंत प्रकारना भूंडां कर्म करे एवा होय, तोपण तेनो अवगुण लईने तेनो संग मूकता नथी अने ते सगांसंबंधी अतिशय भूंडां शब्द बोलीने तिरस्कार करे तोपण ते सगां-संबंधीमां आत्मबुद्धि छे तो तेनो तेने दोष नथी आवतो अने तेना

संगनो त्याग करवानो संकल्प नथी थतो. अने जे ज्ञाने करीने भगवाननो महिमा समज्या होय एवा जे ब्रह्मवेत्ता साधु ते तो भगवान तथा भगवानना भक्त तेनी जे सेवा प्रवृत्तिमां रहीने करवी पडे तेने ज मोटो लाभ माने छे.

अने भगवान अने भगवानना साधु ते पोताने वगर वांके गमे एटलो तिरस्कार करे तोपण पोते लेशमात्र पण मुंझाय नहीं. अने तेनो अवगुण ले नहीं अने एम माने जे 'मारा उपर कृपा करीने मारामां दोष हता ते मने ओळखाव्या. माटे मारा आत्माना अतिशय हितकारी छे.' एम समजीने भगवानना भक्तनो अति महिमा समजे एवी रीतनी समजणवाळा जे साधु होय तेने आत्माना स्वरूपना ज्ञान पामेला जाणवा. अने एवा जे ब्रह्मरूप साधु तेना देहने टाढ पण वाय अने तडको पण लागे अने भूख तरस पण लागे अने शरीरमां रोग दुःख पण थाय, पण ज्ञाने करीने तेथी पोतानुं स्वरूप नोखुं माने अने 'टाढ-तडको, भूख-तरस, सुख-दुःख ए सर्वे देहना भाव छे अने हुं तो देहथी नोखो सदाय असंगी छुं.' जेम नीली काचनी कोठी होय तेमां कोईक पुरुष श्वेत वस्त्र पहेरीने पेठो होय, तेने बीजा वहारना मनुष्य ते देखे नीलो पण ते पंडे पोते एम कोई काळे न समजे जे 'हुं नीलो छुं.' ते तो एम समजे जे 'हुं तो श्वेत वस्त्रवाळो छुं अने नीलापणुं जणाय छे ते तो कोठीना भाव छे अने हुं तो कोठीथी नोखो छुं.'

ए दृष्टांतनुं सिद्धांत ए छे जे आत्मनिष्ठाने पाम्या एवा जे ब्रह्मस्वरूप साधु ते तो 'सुख-दुःख, मान-अपमान ए सर्वे देहना भाव छे अने हुं जे आत्मा ते तो सदाय सुखरूप छुं अने अक्षर छुं.' एम जाणे छे. एवी रीते देह थकी सदाय असंगी जे ब्रह्मरूप साधु तेनो जे जे मन, कर्म, वचने संग करे तेने पण ब्रह्मरूप करे छे. अने सर्वे जीव प्राणी

मात्र उपर ते सदाय दया राखे अने यथा योग्य पोताना धर्मने अनुसारे तेना आत्मानुं रूडुं करे एवा आत्मारूप वर्तता होय तेना गुण छे.

अने जे वेशधारी देहाभिमानी उपरथी तो साधुना वेश शोभाय मान राखता होय अने तिलक पण सारां बनाव्यां होय अने कंठीयो अने माळाओ सारी राखता होय अने तुवडीओ तथा कठारीओ सारी रंगदार राखता होय, लुगडां पण रूडां भगवा चटकीदार रंगीने पहेरता होय अने मोढे करीने आत्माना स्वरूपनुं निरुपण निरंतर करता होय पण जो अष्ट प्रकारे ब्रह्मचर्यव्रत न राखता होय अने कोईक प्रकारे स्त्रीनो संबंध राखता होय तथा द्रव्यादिक पदार्थ राखता होय तथा सारां सारां भोजन जमता होय तथा देहनी सारु जो गृहस्थमां स्नेह करता होय अने देहनुं ज अतिशय जतन करता होय तथा त्यागपणांनुं मान राखता होय एवा जे पंचविषयना रागी तेने देहाभिमानी जाणवा अने तेने महा नीच अने पापी जाणवा पण तेने त्यागी न जाणवा. अने जो वेदान्त शास्त्र मोढे कही जता होय तथा योग शास्त्र पण मोढे कही जता होय अने चार महावाक्यना शब्दनो निरंतर अभ्यास करता होय अने एकांत जग्यामां बेसीने ध्यान करता होय, तोपण जो पंचविषयनो त्याग न राखता होय अने पंचविषयमांथी एके विषयनुं ग्रहण करता होय तो तेने देहाभिमानी जाणवा अने रागी जाणवा. अने जे पोताना जीवना कल्याणने इच्छता होय तेने एवा दुष्टना संगनो सर्वे प्रकारे त्याग करवो.

अने जो तेने साधु जाणीने तेनो संग करे तो तेने धर्ममांथी भ्रष्ट करे अने तेना घरनी स्त्रीओ तेने पण व्याभिचारणीओ अने भ्रष्ट करे. माटे पंचविषयना जे रागी एवा जे वेशधारी साधु तेनो त्याग करवो.

अने गृहस्थ होय तेने आत्माना भावे करीने कोई भूल्यो होय तेने

अन्न आपवुं, ते पण पुरुषने हाथे करीने आपवुं; पण बाईओने तो ते साधु सामी दृष्टि करवी ज नहीं अने बाईओने तो एवा दुष्टनो संग थवा देवो ज नहीं, केमके पंचविषयनो जे राग छे ते ज जीवने बंधन छे अने पंचविषयना रागथी जे मूकाय तेनो ज मोक्ष थाय.

अने पंचविषयना रागे करीने जन्म-मृत्युनां दुःखने पामे छे. केमके आत्मा छे ते तो अविनाशी छे अने देह छे ते जड छे, पण पंचविषयमां ज्यांसुधी राग छे त्यांसुधी जन्म-मृत्युनां दुःखने पामे छे. जेम लीला काष्टने बळवानो स्वभाव नथी, तोपण जो सुका काष्ट भेगुं दोरडीए बांधीने बाळे तो सुका काष्ट भेळुं लीलुं काष्ट पण बळे. तेम अविनाशी एवो जे आत्मा ते पण ज्यांसुधी सुका काष्टरूप जे देह तेने विषे पंचविषयनी वासनारूप दोरडीए करीने बंधाणो छे, त्यांसुधी जन्म-मृत्युनां दुःखने पामे छे अने ज्यारे धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित भक्तिए करीने पंचविषयना रागने उखाडे ते ज ब्रह्मरूप थाय छे अने आत्यंतिक मोक्षने पामे छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २५२ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २५३ विषयः—गुरुमां भेद अने सर्वोपरि गुरु.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना भादरवा वदि १ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री रोणज मध्ये जोशी बहेचर दाजीरामने घेर आथमणां बारना चोकमां विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना हार धारण कर्या हता. पाघमां फूलना तोरा लटकता हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पूछयो जे "हे महाराज! गुरु ते कोने कहीए?"

त्यारे महाराज बोल्या जे गुरु तो तेने कहीए जे गो कहेतां इन्द्रियोने अधर्मनो त्याग करावीने भगवानना स्वरूपमां जे जोडावे अने पंचविषयनी वासना टळावीने जीवने ब्रह्मरूप करे, तेनुं नाम गुरु कहेवाय. ते एवा गुरु तो एक सर्वोपरि परमात्मा भगवान छे. ते भगवान जे ते अक्षरमुक्तने उपदेश करे छे अने अक्षरमुक्त छे ते मूळ प्रकृतिपुरुषना गुरु छे अने ते मूळ प्रकृतिपुरुष विराटना गुरु छे अने विराट ब्रह्मा, विष्णु, शिवना गुरु छे अने ब्रह्मा, विष्णु, शिव छे ते मरिच्यादिकना गुरु छे अने मरिच्यादिक छे ते ईन्द्रादिक देवना गुरु छे अने देव छे ते मनुष्यादिकना गुरु छे अने ते सर्वे गुरु कह्या ते जे ते आ मृत्युलोकमां देह धरे छे. पछी ते सर्वे गुरुरूप थईने जीवोने उपदेश करीने पोत पोताना लोकने पमाडे छे.

जेम आ लोकमां जे विद्याना भणावनारा महेताजी छे ते जे ते मोटा निशाळीयाने भणावे छे. एवी रीते एकबीजा उतरता उतरताने भणावे छे अने जेटली जेनी विद्या तेटली ते भणावे छे पण पोतानाथी अधिक विद्या आपवाने समर्थ नथी थता अने सर्वे विद्या आपवाने तो एक महेताजी समर्थ छे, तेम सर्वोपरि गुरु तो एक अक्षरातीत, पुरुषोत्तम भगवान छे अने बीजा गुरु तो ए भगवानने भजीने तथा एनी आज्ञाए करीने ए जेटली जेटली सामर्थीने पाम्या होय तेटलुं तेटलुं ज्ञान शिष्यने आपी शके, पण आत्यंतिक ज्ञान तथा आत्यंतिक मोक्ष ते गुरु न आपी शके; आत्यंतिक मोक्ष तो एक सर्वोपरि पुरुषोत्तम भगवान कां ते भगवान थकी ज्ञान पामेला साधु ते आपवाने समर्थ छे.

माटे ते भगवान ज्यारे मनुष्यदेहनुं धारण करे छे अने पृथ्वी उपर

अनंत जीवोना कल्याणने अर्थे विचारता होय त्यारे तेने शरणे जे जे जीव आवे तेने आत्यंतिक ज्ञान आपीने तेनो आत्यंतिक मोक्ष करे छे. अने बीजा जे गुरु छे ते तो ज्यारे आत्यंतिक मोक्षना पमाडनारा न होय त्यारे ते गुरु करवा. जेम काळ पडे त्यारे जेवा तेवा दाणा खाईने काळ उतारवो पण ज्यारे सकाळ थाय अने कोईक दूधपाक अने जलेबी आदिक सारां सारां भोजन जमाडनारो मळे त्यारे ते ना पाडे जे 'हुं सारां सारां भोजन नहीं जमुं अने हुं तो मोरनी (आगळनी) मारी जारनी राबडी रंधावीश.' एम कहे ते मूर्ख कहेवाय अने बुद्धिवाळा तेने पापी अने अभागीयो जाणे. तेम कृपा करीने सर्वोपरि परमात्मा पुरुषोत्तम भगवान प्रगट थाय छे अने ते दया करीने अधर्मनो सर्ग जे काम, लोभादिक जे दोष ते थकी मुकावीने एना मोक्ष सारु इन्द्रियोने नियममां रखावीने भगवान सन्मुख चोटाडवी अने जन्ममरणनां दुःख थकी मुकावीने एना मोक्ष सारु इन्द्रियोने नियममां रखावीने मोक्ष करवो, ए ज अमारे अहीं आव्यानुं कारण छे, पण एमने कोई द्रव्य आपे के घरेणां आपे तथा सारी सारी रसोईओ आपे तो पण अधर्मनो त्याग करीने एना मोक्षने अर्थे जतन न करे तो ते उपर प्रसन्न थता नथी. अने एना मोक्षने अर्थे अमारी आज्ञा प्रमाणे वर्ते तेनी उपर अमे प्रसन्न थईए छीए.

माटे अमे तो तमारा आत्माना हितकारी छीए अने अमारे तो पंचविषय थकी जीवने मूकावीने ब्रह्मरूप करीने अक्षरधामने पमाडवा, एज सिद्धांत छे. माटे जे मुमुक्षु होय तेने तपास करीने सर्वे अंतरायनो त्याग करीने प्रत्यक्ष हरि साक्षात् तेनो दृढ आशरो करवो ए ज बुद्धिवाळा छे अने प्रत्यक्षने मूकीने परोक्षमां बंधाई रहे छे ते तो पशु छे अने महा मूर्ख छे.

इति श्रीमुखसिद्धांत २५३ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २५४ विषयः-उपदेष्टा, उपासना आदिक पांच प्रकारनी शुद्धि.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२३ना भादरवा वदि २ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री लीवाली मध्ये महादेव श्रीभीमनाथना दहेरानी आगळ चोकमां दक्षिणादे मुखारविंदे विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तके कसुंबल फेंटो धारण कर्यो हतो. सर्वे अंगने विषे पुष्पनां आभूषण धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाप्रभुजीए वार्ता करी जे जेने आत्यंतिक मोक्ष पामवो होय तेने पंच प्रकारनी शुद्धि थाय तो तत्काळ ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामे. ते पंच प्रकारनी शुद्धि ते कई ? तो सर्वोपरि अक्षरातीत जे पुरुषोत्तम भगवान ते ज ज्यारे ज्यारे पृथ्वी उपर पधारे छे त्यारे त्यारे ते थकी उपदेश पामवो अथवा ते भगवान थकी ज्ञानने पामीने सिद्धदशाने पाम्या होय एवा जे ब्रह्मरूप एकांतिक साधु ते थकी उपदेश पामवो एनुं नाम उपदेष्टानी शुद्धि करीए.

अने उपासना करवा योग्य तो सर्वकारण सर्वाधार एवा जे परब्रह्म पुरुषोत्तम भगवान तेनी उपासना करवी. ते उपासनानी शुद्धि कहेवाय.

अने उपासनानो करनारो जे उपासक तेने पृथ्वी, जळ, तेज, वायु, आकाश, अहंकार, महत्तत्त्व अने मूळ प्रकृति जे माया तेथी पर जे अक्षरब्रह्म तेने पोतानुं स्वरूप मानीने शरीरमां जे हाडकां आदिक पृथ्वीनो भाग छे तेने पृथ्वीमां लय करीने पछी पृथ्वीने जळमां लय करीने जळनो भाग जे शरीरमां रुधिर आदिक तेने महत् जळमां लय करीने ते महत् जळने अग्निमां लय करवुं अने शरीरमां जे जठराग्निनो

भाग छे तेने महत् अग्निमां लय करीने ते महत् अग्निने वायुमां लय करवो अने शरीरने विषे प्राणवायुनो भाग छे तेने महत् वायुमां लय करवो अने महत् वायुने आकाशमां लय करवो अने शरीरने विषे पोलाण आदिक आकाशनो भाग छे तेने महदाकाशमां लय करी देवो अने महदाकाशने अहंकारमां लय करवो अने शरीरमां जे अहंपणुं तेने विराटमां लय करीने विराटने महत्तत्त्वमां लय करी देवो. अने शरीरमां जे चित्त छे तेने महत्तत्त्वने विषे लय करीने महत्तत्त्वने मूळ मायाने विषे लय करवुं. अने शरीरमां जे बुद्धि छे तेने मूळ मायामां लय करीने पछी मूळ मायाने प्रकृतिपुरुषमां लय करवी अने प्रकृतिपुरुषने अक्षरना प्रकाशने विषे लय करवो. अने एवी रीते ज्ञान प्रलये करीने अक्षरब्रह्मना भावने पामीने माहात्म्य ज्ञाने युक्त नवधाभक्तिये करीने ते भगवानमां जोडावुं. तेने उपासकनी शुद्धि जाणवी.

अने शुद्ध उपदेष्टा थकी ज्ञानने पाम्या एवा जे धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये युक्त भक्तिए करीने प्रत्यक्ष भगवानने विषे जोडाणा एवा जे शुद्ध संप्रदायवाळा भगवानना भक्त तेनो जे मन, कर्म, वचने संग करवो तेने संगनी शुद्धि जाणवी.

अने निवृत्ति पर एवुं जे भगवतधाम जेने विषे कोई प्रकारना उपद्रवे रहित अने महामायाने कापे एवी ज्ञान प्रकाशे एवी जे भगवाननी कथा ते जे स्थानकने विषे थती होय अने भगवानना कीर्तन थता होय तथा भगवानने प्रसन्न करवा सारु व्रत उत्सव ते जे स्थानकने विषे थतां होय ते स्थानके दृढ मने करीने रहेवुं, तेने स्थानकनी शुद्धि जाणवी तथा अष्टावरण पर जे अक्षरब्रह्म ते विषे रहेवानी भावनाए करीने मायानुं आवरण टाळवुं अने ब्रह्माकार दृष्टि थईने एक रस चैतनरूप अक्षरब्रह्म ते स्थानकने विषे रह्यानी भावना अखंड राखवी.

जेम आकाशनी दृष्टिने पाम्यो होय तेने चार भूत दृष्टिमां आवता नथी. तेम चेतननी दृष्टि अष्टावरण पर जे अक्षरब्रह्म तेनी स्थितिने पाम्यो तेने प्रकृतिनुं कार्य कांई नजरमां आवतुं नथी. तेने स्थानकनी शुद्धि कहीए.

एवी रीते पांच प्रकारनी शुद्धिने जे जे भक्तजन पामे छे, ते सिद्ध-दशाने पामीने आत्यंतिक मोक्ष जे अक्षरधाम तेने पामीने अखंड भगवाननी सेवामां रहे छे.

इति श्रीमुखसिद्धांत २५४ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत २५५ विषय :—ब्रह्मविद्या अने पंच कोशात्मक माया.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना भादरवा वदि ३ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री देवातज मध्ये पुराणी जगन्नाथ दाजीभाईने घेर उत्तरादा बारना चोकमां विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण धारण कर्यां हतां. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने जमणा हाथने विषे मोग-राना पुष्पनो गुच्छ अने रूमाल धारण कर्या हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देश देशना हरिभक्तनी मोटी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे " सर्वे सांभळो एक वात करवी छे अने आ वात कहेशुं तेनुं नाम ब्रह्मविद्या कहेवाय अने ते ब्रह्मविद्याने सम-जवे करीने मायानो जे अंधकार ते जीवने तत्काळ टळी जाय छे. जेम सूर्य ऊगे अने रात्री टळी जाय तेम आ कहीशुं जे ब्रह्मविद्या तेने समजवे करीने ज्ञानरूपी प्रकाश थाय अने ब्रह्मरूप पोतानो आत्मा साक्षात्कार देखाय अने ते ब्रह्मने विषे परब्रह्म जे भगवान ते देखाय.

ते ब्रह्मविद्याने कहीए छीए जे आ स्थूळ शरीर छे ते अन्नमय कोष छे. ते अन्नमय कोषमां प्राणमय कोष रह्यो छे. ते जेवो अन्नमय कोष मनुष्यने आकारे छे, तेवो ज तेमां प्राणमय कोष छे ते मनुष्यने आकारे छे. जेम एक मनुष्यने आकारे पोलुं धातुनुं पूतळुं कर्युं होय अने तेमां एक बीजुं पूतळुं मूक्युं होय अने त्रीजुं पूतळुं मूक्युं अने वळी एक चोथुं मूक्युं होय अने पांचमुं मूक्युं होय. तेमां एक अन्नमय कोष छे. ते अन्न थकी ज उपज्यो छे अने अन्न थकीज वृद्धि पामे छे अने ते अन्नमय कोषने प्राणमय कोषनो आधार छे. ते प्राण होय त्यां सुधी अन्नमय कोष वृद्धि पामे अने जो प्राण बंध थाय तो अन्नमय कोष जे स्थूळ देह ते नाश थई जाय.

अने प्राणमय कोषने मनोमय कोषनो आधार छे; केमके मन संकल्प करे तेटलुं ज प्राणवायुए करीने हरवा फरवा अने क्रिया करवाने समर्थ थाय. केमके अन्ननो कोळीयो तेने हाथे करीने मोढामां मूके पण जो मनने गमतुं होय तो प्राण तेने गळा हेठे उतारे अने जो मनने न गमतुं होय तो पाछुं कोळीयाने काढी नाखे. अने प्राणने तो आहार मात्र जेवुं तेवुं जोईए अने सारुं नरसुं तो मनने छे. ते जेणे मन जीत्युं होय ते तो जेवो तेवो आहार आपीने प्राणने संतोष पमाडे अने जेणे मन जीत्युं नथी तेना प्राण कोई काळे संतोष पामता नथी. माटे प्राणमय कोषने मनोमय कोषनो आधार छे.

अने मनोमय कोषने विज्ञानमय कोषनो आधार छे. ते विज्ञान बुद्धिमां रह्युं छे. केमके मन तो हजारो संकल्प करे, पण तेमांथी बुद्धि जे निश्चय करे ते काम कराय छे. तेमां जेणे सत्पुरुषनो आशरो करीने अधर्मना त्यागनो बुद्धिमां निश्चय कर्यो होय तेनुं मन कोई दिवस

अधर्मनो संकल्प करे ज नहीं अने जेने सत्पुरुषनो आशरो नथी तेनुं मन अनंत अधर्मना संकल्प करे छे. माटे मनोमय कोषने विज्ञानमय कोषनो आधार छे. अने एक करता एक बळवान घणो छे अने सूक्ष्म छे.

अने विज्ञानमय कोषने आनंदमय कोषनो आधार छे. अने आनंदमय कोष छे ते अतिशय सुखरूप छे, केमके कोईने झाटडाना घा वाग्या होय अने ते सुषुप्तिमां जाय तो झाटकाना घानी पीडा टळी जाय छे अने ज्ञाने करीने देहथी नोखो आत्मा जाणीने सुख-दुःखने सम कर्युं होय तोपण सुख-दुःख आवे ते जणाया विना रहे नहीं अने सुझे घटलुं दुःख होय अने आनंदमय कोष जे सुषुप्ति तेमां जाय ते लेश मात्र दुःख जणाय नहीं. माटे विज्ञानमय कोषने आनंदमय कोषनो आधार छे अने ते आनंदमय कोष छे ते सर्वेथी बळवान छे अने अतिशय सूक्ष्म अने अनादिनो छे.

ते आनंदमय कोष आदिक पांचे कोषने जीवात्मानो आधार छे अने ते जीवात्मा सुखरूप छे अने जीवात्मा पांच कोषमां रह्यो थको ते सर्वेने प्रकाशे छे, पण जीव विना पांचे कोष कांईए करवाने समर्थ नथी अने जीव विना पांचे कोष जड छे अने जीवात्मा अविनाशी छे, चेतन छे अने जाणपणेयुक्त छे. अने जीवात्माना प्रकाशक अक्षरब्रह्म छे. जेम नेत्रना प्रकाशक सूर्य छे, ते नेत्रनो प्रकाश पोतानी पासे होय अने जो अंधारी रात होय तो पोतानुं शरीर पण देखाय नहीं. तेम जीवात्माना अक्षरब्रह्म प्रकाशक छे अने अक्षरना प्रकाशक प्रगट पुरुषोत्तम भगवान छे अने जे आत्यंतिक ज्ञान ते ज अक्षरनुं साक्षात् स्वरूप छे अने ते आत्यंतिक ज्ञान भगवान पुरुषोत्तमनी पासे छे.

माटे ते भगवान कृपा करीने अनंत जीवोना उद्धार करवा सारु

पृथ्वी उपर मनुष्यदेह धारण करे अने ते भगवाननो संबंध जेने थाय अने ते भगवान थकी आत्यंतिक ज्ञानने पामे तेज साक्षात्कार अक्षर-ब्रह्मरूप् थाय छे. अने जीवात्मा तो कारणपणें वस्तुताये अक्षर छे, पण तेने ज्यां सुधी प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध न थयो होय त्यां सुधी जीव कांई करवाने समर्थ नथी. माटे प्रत्यक्ष भगवान जेने आत्यंतिक ज्ञान आपे ते अनंत ऐश्वर्य अने सामर्थ्यने पामीने सर्वज्ञ थया छे. ते थकी अनंत जीव ज्ञानने पामीने भगवानने मार्गे चाले छे.

माटे प्रत्यक्ष भगवान तेज अक्षरना प्रकाशक छे अने प्रत्यक्ष भगवान थकी जे आत्यंतिक ज्ञानने पाम्यो तेज अक्षर साक्षात् छेअने ते अनंत कोटि ब्रह्मांडना कर्ता जे मूळपुरुष तेना आधार छे, तेना प्रकाशक छे, पण प्रत्यक्ष भगवान थकी आत्यंतिक ज्ञानने पाम्या एवा जे प्रत्यक्ष अक्षरमुक्त ते ज सर्वना आधार छे अने सर्वना कारण छे, सर्वना प्रकाशक छे. माटे प्रत्यक्ष भगवान अने प्रत्यक्ष अक्षररूप मुक्त तेना संबंध थकी सामर्थ्यने पामीने पुरुष जे ते अनंत कोटि ब्रह्मांडनी उत्पत्ति करे छे.

ते पुरुष केवा छे ? तो जेम जीव जे ते आनंदमय कोषमां रह्यो थको पांच कोषने प्रकाशे छे, तेम पुरुष छे ते पोताना धाममां रह्या थका मायाना कार्य जे अनंत कोटि ब्रह्मांड तेमां रह्या जे जीव ते जीव जीव प्रत्ये जे जीवनो जेवो देह तेवुं बळ तथा तेवी तेने बुद्धि ते सर्जी आपे छे. ते हाथीना जीवने हाथीनां स्थूळ प्रमाणे बळ अने बुद्धि आपे छे अने एनो ए जीव कीडीना शरीरने धारण करे त्यारे कीडीना जेटलुंबळ अने कीडीना जेवी बुद्धि तेने सर्जी आपे अने वींछी अने बीजा घणाक प्रकारना जीव ए सर्वेने बुद्धि अने बळ सर्जी आपे छे अने मनुष्यने मनुष्य प्रमाणे बळ अने बुद्धि सर्जी आपे छे. एवी रीते अनंत कळाओ ए पुरुषमां

रही छे, पण ए सर्वे बहारदृष्टिए करीने पुरुष मायामां जोडाणो थको क्लेशने पामे छे. जेम पाणीना कळशीया, तपेली भूमिमां नाखे तो ते पाणी नाश पामी जाय छे, तेम ए पुरुष मायामां जोडाणो थको बहारदृष्टिए करीने दुःखने पामे छे.

अने ज्यारे सर्वेथी प्रतिलोम दृष्टि करीने पोताना प्रकाशक जे अक्षरब्रह्म तेने पोतानुं स्वरूप माने तो ते अक्षरभावने पामे अने पछी अक्षरना प्रकाशक जे पुरुषोत्तम भगवान तेमां जोडाय तो ए पुरुषने मूळमायानुं आवरण टळी जाय. अने तेमज जीव पण पांच कोषमां अन्वयपणें जोडाणो छे तेने करीने जन्ममरणनां दुःखने पामे छे अने ज्यारे अक्षरभावने पाम्या एवा जे मुक्त जे परमात्माने पमाडे एवा एकांतिक साधु ते जीवने मळे तथा परमात्मा भगवान ते प्रत्यक्ष जीवने मळे अने तेमां जीव जोडाय पछी अन्नमयकोष तथा प्राणमयकोष ए बे कोषने सत्पुरुषना आपेला जे नियम तथा त्याग तथा तप तेने करीने जीतवा अने आत्मज्ञाने करीने तथा वैराग्ये करीने मनोमयकोष तथा विज्ञानमयकोष ए बे जीताय छे.

अने प्रतिलोम दृष्टिए करीने अक्षरना भावने पामीने पछी ते अक्षरने विषे परमात्मा पुरुषोत्तम भगवान साक्षात्कार देखाय त्यारे ए जीवने जे अष्ट प्रकारनी माया पांच कोषरूपे वळगी छे ते सर्वे टळी जाय अने केवळपदने पामे छे अने भगवानना साधर्म्यपणांने पामे, कहेतां जेम भगवान काळ, कर्म अने माया थकी रहित छे, तेम ते भक्त पण काळ, कर्म अने माया थकी रहित थाय छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २५५ समाप्त।

શ્રીમુખસિદ્ધાંત २५८ વિષય :-ક્રિયમાણ, પ્રારબ્ધ અને સંચિત કર્મ.

શ્રીહરિકૃષ્ણાય નમોનમઃ-સંવત १९२३ના ભાદરવા વદિ ४ને દિવસ મહારાજ શ્રીહરિકૃષ્ણ ભગવાન ગામ શ્રી દેવાતજ મધ્યે પુરાણી જગન્નાથ દાજીભાઈને ઘેર ઉત્તરાદા વારના ચોકમાં વિરાજમાન થયા હતા. સર્વે જરિયાની વસ્ત્ર ધારણ કર્યાં હતાં અને પુષ્પના હાર ધારણ કર્યા હતા અને પોતાના મુખારવિંદની આગળ સાધુ તથા દેશ દેશના હરિભક્તની સભા ભરાઈને બેઠી હતી.

પ્રશ્નઃ-પછી મહારાજની ગાડીના સારથી ભક્ત ઝવેરભાઈએ પ્રશ્ન પૂછ્યો "જે હે મહારાજ ! ત્રણ પ્રકારના કર્મ જે સંચિત, પ્રારબ્ધ અને ક્રિયમાણ તેનાં શું રૂપ છે?" ત્યારે મહારાજ બોલ્યા જે "એનાં રૂપ કહીએ તે સાંભળો જે કર્મ તે શું કહેવાય? તો દસ ઇન્દ્રિયો અને ચાર અંતઃકરણ તેને કરીને શુભ અથવા અશુભ જે જે ક્રિયા કરાય છે તેને કર્મ કહીએ. તે કેવી રીતે કર્મ થાય છે? તો જે કાને કરીને ભૂંડા ભૂંડા સ્ત્રી આદિક વિષયના શબ્દ સાંભળે તેને કરીને ભૂંડાં કર્મ થાય છે અને જો કાને કરીને ભગવાનના યશ સાંભળે તો રૂડાં કર્મ થાય છે. અને ત્વચાએ કરીને સ્ત્રી આદિકના સ્પર્શ કરે તો ભૂંડાં કર્મ થાય છે. અને જો ત્વચાએ કરીને પ્રત્યક્ષ ભગવાનના ચરણનો સ્પર્શ કરે તો રૂડાં કર્મ થાય છે. અને નેત્રે કરીને સ્ત્રી આદિકના ભૂંડાં ભૂંડાં રૂપ જુએ તો ભૂંડાં કર્મ થાય છે અને ભગવાનના દર્શને કરીને રૂડાં કર્મ થાય છે. અને જીહ્વાએ કરીને દારુ, માંસ આદિક ભૂંડા ભૂંડા અશુભ રસ જમે તો ભૂંડાં કર્મ થાય છે અને જો ભગવાનનો પ્રસાદ જીભે કરીને જમે તો રૂડાં કર્મ થાય છે.

અને વાણીએ કરીને ભગવાનનું ભજન, સ્મરણ, નામ, કીર્તન, કથા

वार्ता करे तेने करीने रूडां कर्म थाय छे अने जो भूंडा शब्द जे कोईकने वसमुं लागे तथा स्त्री आदिकना नाम लईने भूंडां शब्द बोलवा तेने करीने भूंडां कर्म थाय छे. अने हाथे करीने असत्पुरुषनी सेवा करे तथा जीव हिंसा आदिक अशुभ क्रिया करे तेने करीने भूंडां कर्म थाय छे, अने जो सत्पुरुषनी सेवा करे तो रूडां कर्म थाय छे. अने पगे करीने स्त्री आदिकना विषय सारु चालीने जाय तेने करीने भूंडां कर्म थाय छे अने भगवान तथा भगवानना भक्त साधु तेने दर्शने चालीने जाय तेने करीने रूडां कर्म थाय छे. अने शिष्नु इन्द्रिये करीने स्त्री आदिकना स्पर्श थकी वीर्यपात तथा कोईक देवमंदिर आदिक पवित्र जग्यामां लघु कराय तेने करीने अशुभ कर्म थाय छे. अने खट रसादिकनो त्याग करीने शिष्नु इन्द्रिय थकी वीर्यपात थवा न देवो तेने करीने शुभ कर्म थाय छे. अने गुदा इन्द्रिये करीने घणा आहारे करीने सत्पुरुष पासे तथा देवमंदिरमां वायु छूटे तेने करीने अशुभ कर्म थाय छे अने सूक्ष्म आहार करवो तथा वायु करे एवा जे खाधाना फरसाण खारा-खाटा तेनो त्याग करीने गुदा इन्द्रिय थकी वायु न छुटवा देवो तेने करीने शुभ कर्म थाय छे.

अने मने करीने स्त्री आदिक पंचविषयना संकल्प करे तेने करीने भूंडां कर्म थाय छे अने धर्म, ज्ञान, वैराग भक्ति संबंधी जे मनमां संकल्प करे तेने करीने शुभ कर्म थाय छे. अने बुद्धिए करीने मायिक पदार्थनो जे निश्चय करवो तेने करीने भूंडां कर्म थाय छे. अने जे आत्माना स्वरूपनो निश्चय करवो अथवा भगवानना स्वरूपनो निश्चय करवो तेने करीने रूडां कर्म थाय छे, अने चित्ते करीने स्त्री आदिक पंचविषयनुं चिंतवन करे तेने करीने भूंडां कर्म थाय छे, अने जो भगवाननी मूर्तिनुं चिंतवन करे तथा भगवान अने भगवानना संत तेनी सेवा संबंधी चिंतवन करे

तेने करीने शुभ कर्म थाय छे. अने अहंकारे करीने देह अने देह संबंधी पदार्थ तेनी जे अहंवृत्ति तेने करीने भूंडां कर्म थाय छे अने जो पोताना आत्मा संबंधी अहंपणुं धरे तथा परमात्मा भगवानना दासत्वपणांनी अहंवृत्ति धरे कहेतां ' हुं आत्मा छुं अने भगवाननो दास छुं ' एवुं अभिमान धरे तेने करीने शुभ कर्म थाय छे.

एवी रीते दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरण तेने करीने जे शुभ अथवा अशुभ क्रिया करवी तेने क्रियमाण कर्म कहेवाय.

ते आ जीव अज्ञाने मायामां अनादिकाळनो अवराणो छे अने सत्पुरुषनो संग कोई दिवस थयो नथी अने कुसंगे करीने अनंत पाप– अशुभ कर्म करतो ज आव्यो छे. केमके सावजनो अवतार आव्यो हशे त्यारे अनंत जीव मार्या हशे तथा दीपडाना, वगलाना, सर्पना अवतार आव्या हशे त्यारे पण अनंत पाप कर्यां हशे अने मनुष्यमां राजानो अवतार आवे अने जो अधर्मीनो संग होय तो घणाक पाप करे छे. ते एवी रीते जीवे घणाक क्रियमाण पाप कर्म कर्यां छे ते सर्वे कर्म भेगां थयां तेने प्रारब्ध कर्म कहीए.

अने ते कर्मना भोगना भोगवावनारा परमात्मा भगवान छे. ते सर्वे कर्म जो जीवने भोगवावे तो जीव भोगवी शके नहीं, अने अतिशय दुःख पामे. अने देहनो पण नाश थई जाय. माटे परमेश्वर कृपा करीने जीव जेटला खमी शके तेटला प्रारब्धनो देह बंधावे छे अने बीजा कर्मने संचीत राखे छे. जेम खेडु होय ते घणाक दाणा नीपजावे छे, ते क्रियमाण कहेवाय. अने ते दाणाने कोठामां नाखीने नित्य खाय तेने प्रारब्ध कहेवाय. अने खातां खातां बाकी वधे तेने खाणमां नाखे तेने संचीत कहेवाय. तेम जीव जे ते एवी रीते क्रियमाण, प्रारब्ध

अने संचित त्रण प्रकारना कर्म करीने जन्म मृत्युनां दुःखने पामे छे अने स्वर्ग, मृत्यु अने पाताळ ए त्रण लोकमां त्रण प्रकारना कर्म जे रजोगुण, तमोगुण अने सत्त्वगुण तेने करीने जीव जे ते त्रिविध तापमां बळ्या करे छे.

अने ते त्रिविध ताप थकी जीव जे ते पोतानी मेळे कोई काळे मुकावाने समर्थ थतो नथी. अने त्रिविध तापमां रह्या एवा जे गुरु तेना उपदेश थकी पण जीव जे ते त्रिविध तापथी मुकातो नथी. माटे ए तो त्रिविध ताप थकी पर एवा जे परमेश्वर तथा परमेश्वरना एकांतिक संत ते कृपा करीने अनंत जीवोना कल्याण करवा सारु पृथ्वी पर प्रगट थया होय अने तेनो जीवने संबंध थाय अने तेनो दृढ आशरो करे तो ते थकी जीव जे ते त्रिविधना ताप थकी मुकाय छे. ते जे जे पोताने आशरे आवे तेने तो प्रथम नियमे करीने अधर्म जे अशुभ कर्म तेनो त्याग करावे छे अने पोताना स्वरूपनो निश्चय अने पोतानुं भजन तथा ध्यान तेने करीने संचीत कर्मने बाळी नाखे अने प्रारब्ध छे तेने भोगवावीने देहने मूकावीने जीवने ब्रह्मरूप करीने अक्षरधामने पमाडे छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २५६ समाप्त।

——:*×*:——

श्रीमुखसिद्धांत २५७ विषय :–आत्यंतिक मोक्ष पामवानुं मुख्य साधन.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना भादरवा वदि ५ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री देवातज मध्ये पुराणी जीवराम दाजीभाईने घेर उत्तरादा बारना चोकमां विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए प्रश्न पूछ्यो जे "हे महाराज! जीवनो आत्यंतिक मोक्ष थाय तेनुं मुख्य साधन शुं छे?" त्यारे महाराज बोल्या जे "जीवने प्रथम तो सत्पुरुष कल्याणकारीनो संबंध थवो जोईए. पछी ते निर्बीजसांख्य अने निर्बीजयोग तथा सबीजसांख्य अने सबीजयोग ए चार प्रकारना ज्ञाने करीने जीवनो आत्यंतिक मोक्ष थाय छे. अने जो एकला निर्बीजसांख्यनुं ज्ञान होय अने बीजा त्रणनुं ज्ञान न होय तो ते पा ज्ञानी कहेवाय; तेने करीने आत्यंतिक मोक्ष न थाय अने निर्बीजसांख्य अने निर्बीजयोग ए बेनुं ज्ञान होय तो अडधो ज्ञानी कहेवाय अने निर्बीजसांख्य, निर्बीजयोग अने सबीजसांख्य ए त्रणनुं ज्ञान थाय तो ते पूणो ज्ञानी कहेवाय अने चारेनुं संपूर्ण ज्ञान थाय त्यारे ते पूरो ज्ञानी कहेवाय.

हवे ते चार प्रकारना ज्ञानने कहीए छीए तेमां प्रथम निर्बीज-सांख्यना ज्ञानने कहीए तेमां प्रथम बे प्रकारनी सृष्टि छे. ते एक ईश्वर सृष्टि छे अने बीजी जीव सृष्टि छे. तेमां ईश्वर सृष्टि कई? तो आ चौद लोकनो विराट ते ईश्वर सृष्टि कहेवाय छे अने जीवना स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण एवा त्रण देह कहेवाय अने ईश्वरना विराट, सूत्रात्मा अने अव्याकृत ए त्रण देह छे अने जीवना देहमां अल्पभूत छे अने ईश्वरना देहमां महत्‌भूत छे. अने ईश्वरना देहना महत् पंचभूत छे ते थकी जीवना देह उपज्या छे. अने पृथ्वी, जळ, तेज, वायु, आकाश, अहंकार, महत्तत्त्व, प्रधानपुरुष अने मूळप्रकृति ए अष्ट आवरणरूप उपाधी ज्यां सुधी ईश्वरने वळगी छे अने जीव ज्यांसुधी पृथ्वी, जळ, तेज, वायु, आकाश, अहंकार, चित्त, मन, बुद्धि–अष्ट प्रकारनी जे माया तेमां जीव जोडाणो छे, त्यांसुधी जीव अने ईश्वर बेय बद्ध कहेवाय छे अने जन्म मृत्युने पामे छे. अने ते जीवना देहमां जे आ अल्प आवरण छे तेने ज्ञान

પ્રલયે કરી જેમાંથી ઉપજ્યા છે તેમાં લય કરીને સત્તારૂપ થવું અને ઇન્દ્રિયો અંતઃકરણના જે વિષય તેનો ત્યાગ કરવો. અને ઈશ્વરના દેહમાં જે મહત્ આવરણ છે તેને ચાર પ્રકારના પ્રલયે કરીને ઈશ્વરને જુદા સમજવા અને અષ્ટ આવરણરૂપ જે માયા તે દૃષ્ટિમાં ન આવે તેને નિર્બીજસાંખ્યનું જ્ઞાન સિદ્ધ થયું જાણવું.

હવે નિર્બીજયોગને કહીએ છીએ જે જ્ઞાનરૂપી પ્રલયે કરીને સર્વેને નાશ પમાડીને પછી જ્ઞાનરૂપ પોતાના આત્માને માનીને પ્રતિલોમ દૃષ્ટિ કરીને સ્થિરાયમાન આસને બેસીને બ્રહ્મરૂપ જે અક્ષર તે રૂપ થઈને એ 'અક્ષર હું છું' એમ ધારવું. પછી જ્ઞાનરૂપ આત્માને એમ અક્ષરને વિષે એકત્વપણું કરવે કરીને અક્ષરના તદ્આકાર ભાવને પામે છે કહેતાં અક્ષરના ગુણ તેને વિષે આવે છે અને શુદ્ધ બ્રહ્મરૂપ થાય છે અને ભગવાનને પામવાનો અધિકારી થાય છે. તે ઉપર શ્લોક છે જે–

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न शोचति न कांक्षति ।
समः सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते पराम् ॥

એનો એમ અર્થ છે:–જે પંચવિષયની વાસના મૂકીને સર્વે ભૂતને વિષે સમદૃષ્ટિ કરીને કહેતાં કોઈ માયિક પદાર્થમાં મોહને નથી પામતો અને પ્રસન્ન થકો બ્રહ્મરૂપ થયો છે, તેજ ભગવાનની ભક્તિનો અધિકારી છે. માટે એવી રીતે પંચવિષયની વાસના મૂકીને જ્ઞાન પ્રલયે કરીને અક્ષરને વિષે એકત્વપણું કરીને બ્રહ્મરૂપ થયો છે, તે પુરુષ જે તે નિર્બીજસાંખ્યને અને નિર્બીજયોગને પામ્યો કહેવાય છે.

હવે સબીજસાંખ્યને કહીએ છીએ જે નિર્બીજસાંખ્ય અને નિર્બીજ-યોગના જ્ઞાનના પમાડનારા એવા જે પ્રત્યક્ષ સત્પુરુષ પરમાત્મા ભગવાન તેનો મહિમા જાણવો જે તે ભગવાન કેવા છે? તો ક્ષર અને અક્ષર એ બેયના

आधार छे अने ते भगवान मनुष्य जेवा जणाय छे तो पण दिव्यमूर्ति छे अने अनंत ऐश्वर्य, अनंत पार्षद अने अनंत शक्तिओए युक्त छे अने अनंत कोटि ब्रह्मांडना कर्ता छे जे प्रकृतिपुरुष तेना आधार छे अने जेनी शक्ति काळ छे, जेनी शक्ति माया छे, जेनी शक्ति अक्षर छे; एवा अनंत प्रतापे युक्त अने कर्ता थका अकर्ता छे. अने जे सगुण अने निर्गुण, अन्वय अने व्यतिरेक, दिव्यभाव अने मनुष्यभाव, साकार अने निराकार, 'एवां अनंत ऐश्वर्य छे एवा जे भगवान तेज आ मने प्रत्यक्ष मळ्या छे,' एवी रीते प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो माहात्म्य ज्ञाने सहित जे निर्विकल्प उत्तम निश्चय थाय तेने सबीजसांख्य कहीए.

हवे सबीजयोगने कहीए जे जे भगवान पोताने मळ्या तेनी मूर्तिने पोताना आत्माने विषे धारीने प्रतिलोम दृष्टि करीने ते स्वरूपनुं ध्यान करवुं. तेवी रीते माहात्म्ये सहित प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनुं ध्यान करे तेने अनंत प्रकाशे युक्त प्रत्यक्ष मूर्ति ते पोताना आत्मा जे अक्षर तेने विषे देखाय छे. अने ते प्रत्यक्ष मूर्तिने ध्याने करीने तदात्मक भावने पामे छे अने अपार सुखने पामे छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २५७ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २५८ विषय :-झाड, पहाड अने मनुष्यादिकना देहमां जीव केवी रीते आवे छे ?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना भादरवा वदि ६ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री देवातज मध्ये पुराणी जगन्नाथ दाजीभाईने घेर उतरादा बारना चोकमां विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी कृष्णभाईए प्रश्न पूछयो जे “ हे महाराज ! जे जीव छे ते झाड, पहाड, पशु, पंखी, मनुष्यादिकना देहमां केवी रीते आवता हशे ? अने केवी रीते ते ते भावने पामता हशे ? ” पछी महाराज बोल्या जे “ सांभळो, एनो उत्तर करीए जे पुरुष प्रकृति रूप बे भगवाननी शक्ति छे, ते सर्वे जीव प्राणीमात्रना कर्मना फळने पमाडे छे. ते पुरुष अने प्रकृति ए बे मळीने पुरुषोत्तमनी इच्छाए करीए जीवोनी जे जे वासना ते ते जीवनी तेवी बुद्धि अने जेवां जेनां कर्म ते ते रूप अने ते ते जातिने पमाडे छे. ते जो पाडामां जन्म धरावे तो पाडाना भावने तथा रूपने पमाडे छे अने हाथीमां देह धरावे तो हाथीना भावने अने रूपने पमाडे छे अने झाडमां देह धरावे तो झाडना साधर्म्यपणांने पमाडे अने कीडीमां देह धरावे तो कीडीना भाव अने तेनुं रूप अने ते प्रमाणे बळ अने तेना जेटलो आहार अने तेना जेवी बुद्धि ते भावने पमाडी आपे छे. एवी रीते पशु, पंखी, मनुष्य तथा देव, ब्रह्मादिक तथा चोरासीमां जेनां जेवां कर्म ते प्रमाणे ज्यां ज्यां जन्म धरावे त्यां त्यां तेवा तेवा रूपने अने तेवी तेवी बुद्धिने पमाडे, एवी अनंत कळाओ प्रकृति-पुरुषने पुरुषोत्तम भगवाने आपी छे, तेने करीने अनंत कोटि ब्रह्मांडनो वहेवार पुरुषोत्तमनी इच्छाए करीने पुरुष-प्रकृति कर्या करे छे.

अने ए पुरुष-प्रकृतिना कारण एवा जे परमात्मा पुरुषोत्तम भगवान तेना स्वरूपनुं जीवने ज्ञान थाय त्यारे ते जीवने चोरासीमां अनंत जन्म धरवा ते रूपी मायानुं आवरण टळे अने गर्भवास अने मृत्यु समानां जे महा दुःख ते थकी मूकाईने मोक्षने पामे. ते परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान केम थाय ? तो जीवनो मनुष्यदेह होय अने भगवान पण कृपा करीने अनंत जीवोनो उद्धार करवा सारु पृथ्वी उपर प्रगट थया होय अने ते भगवान पोताना स्वरूपनुं ज्ञान करावे कां तेना स्वरूपने

जाणनारा एवा जे एकांतिक साधु तथा हरिभक्त ते थकी परमात्मानुं ज्ञान पमाय ए ज मोक्षने पामवानो मार्ग छे, पण ते विना बीजो मोक्षने पामवानो मार्ग नथी. ए सिद्धांत वार्ता छे.

अने बीजा जे जे परोक्षपणें मोक्षना मार्ग शास्त्रमां कह्या छे तथा तीर्थमां मोक्षना मार्ग कह्या छे ते तो जीवने ओधार दीधा छे पण ते थकी कोईनो मोक्ष थयो नथी अने ते सत्शास्त्रमां लखाणा पण नथी अने पूर्वे जे जे प्रगट सत्पुरुषने पाम्या छे तेनां ज कल्यांण थयां छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २५८ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत २५९ विषयः–मनुष्याकृति भगवाननो निश्चय करवानी रीत.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२३ ना आसो सुदि ५ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये सोनी किलाभाईने घेर उत्तरादा बारना हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां अने कंठने विषे पुष्पना हार धारण कर्या हता. बे हाथने विषे पुष्पना बाजुबंध अने गजरा धारण कर्या हता अने पाघमां तोरा धारण कर्या हता. बे कान उपर गुच्छ धारण कर्या हता ललाटने विषे केसरनी आड करी हती अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाप्रभुजी कृपा करीने बोल्या "जे भगवानना स्वरूपने जाणवुं घणुं दुर्लभ छे. ए तो पंडे भगवान अने भगवानना निर्वासनिक एकांतिक संत ते जेने समजावे त्यारे समजाय छे. ते समजवानी रीत कहीए ते सांभळो जे जेम शहेरनो राजा छे ते पण गरासीयो कहेवाय छे अने गाममां गामोटी होय ते गरासीयो कहेवाय अने ढोरनो चारनारो ते पण गरासीयो कहेवाय अने बाघरी पण गरासीयो कहेवाय अने झांपडो

પણ ગરાસીયો કહેવાય છે. એ દૃષ્ટાંતનું સિદ્ધાંત એ છે જે રાજાને ઠેકાણે તો સર્વકારણ સર્વાધાર એવા જે પુરુષોત્તમ ભગવાન તે છે અને પ્રકૃતિ-પુરુષ પણ ભગવાન કહેવાય છે અને પ્રધાનપુરુષ પણ ભગવાન કહેવાય છે અને વિરાટ પણ ભગવાન કહેવાય અમે બ્રહ્મા, વિષ્ણુ અને શિવનું પણ ધણીપણું કહેવાય છે તથા ઈન્દ્રનું પણ ધણીપણું કહેવાય છે.

એ સર્વે કહ્યા તેમાં એક સર્વોપરિ પુરુષોત્તમ ભગવાન વિના બીજા અવિદ્યા માયાત્મક અધુરીયા ગરાસીયા છે અને સાચા ગરાસીયા અને સાચા ભગવાન તો એક જ પુરુષોત્તમ ભગવાન છે અને બીજા કહ્યા તે તો જીવને આવરણના કરનારા છે અને જીવને પોતામાં જોડાવનારા છે. અને તે જીવના શત્રુ છે અને સકામી છે. અને જે અનંત કોટિ બ્રહ્માંડના રાજાધિરાજ એવા જે પુરુષોત્તમ ભગવાન છે તે તો અતિશય કૃપાળુ છે તે જીવની ઉપર દયા કરીને જીવને અવિદ્યા માયા થકી મુકાવવા સારુ પોતે પૃથ્વી ઉપર પધારે છે ત્યારે જે દૈવી જીવ હોય તે તો સર્વે ભગવાનને આશરે આવે છે અને ચોરી, છિનાળી, દારુ, માટી આદિક જે અવિદ્યા માયા તેનો ત્યાગ કરીને પરમેશ્વરનું ભજન સ્મરણ કરે છે.

પછી તેને દેખીને જે અવિદ્યા માયાના જીવ છે તે અતિશય દુઃખ પામે છે અને મુમુક્ષુને ભગવાનના માર્ગ થકી પાડવા સારુ અનંત ઉપાય કરે છે અને અવિદ્યા માયા છે તે પ્રથમ ગામના પટેલમાં તથા બીજા મનુષ્યમાં તથા મા બાપમાં માયા પ્રવેશ કરીને ભગવાનના માર્ગ થકી પાડ્યાના ઉપાય કરે છે પણ તેનો પાડ્યો જો ન પડે તો નાતિલામાં અવિદ્યા માયા પ્રવેશ કરે છે અને નાતિલાનો પાડ્યો ન પડે તો પછી સગા ભાઈ, મા, બાપ તથા સાસુ, સસરો તથા સ્ત્રી, છોકરાં તેમાં પ્રવેશ કરે છે પણ તેનો પડ્યો ન પડે તો પછી અવિદ્યા માયા છે તે હાથ ઘસીને કલ્પાંત કરે છે, જે 'હાય ! મારા હાથમાંથી ગયો.'

माटे भगवानना खरेखरा भक्त होय अने जेने पोताना जीवात्मानो मोक्ष करवो होय तेने तो पिंड अने ब्रह्मांड सर्वेने अविद्या मायारूप जाणीने स्थूळ, सूक्ष्म अने कारण ए त्रण देह थकी पोताना आत्माने नोखो समजीने ते आत्माने विषे परमात्मा एवा जे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना एकांतिक विषयना त्यागी संत तेने ज एक साचा हितकारी मानीने तेनी ज आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं.

जेम राजनीतिनो भणेलो राजा होय तो पोताना राज्यमां पोताना हुकम प्रमाणे सर्वेने वर्तावे छे पण कोईनो दाब्यो दबातो नथी. तेम राजाने ठेकाणे तो भगवानना भक्त छे ते प्रत्यक्ष भगवान थकी अथवा ते भगवानना एकांतिक साधु ते थकी राजनीति शीखीने दश इन्द्रियो तथा चार अंतःकरण ए सर्वेने अधर्मनो मार्ग त्याग करावीने ते सर्वेने भगवाननी सेवामां जोडी दे छे. ते काने करीने भगवाननी कथा सांभळे अने नेत्रे करीने भगवान अने संतना दर्शन करे अने मोढे करीने भगवानना यश बोले अने हाथे करीने भगवाननी सेवा करे. एवी रीते दश इन्द्रियो अने चार अंतःकरण ए सर्वेने भगवाननी सेवामां जोडी दे.

ते एवी रीते त्यागी होय अने ते भगवानमां इन्द्रियो अंतःकरण जोडी दे तो तेना अनंत जन्मनां पाप बळी जाय छे अने ब्रह्मरूप थाय अने भगवानना धामने पामे छे. अने गृहस्थ होय अने ते पण इन्द्रियो अंतःकरण भगवानमां जोडी दे तो गृहस्थनां पण पाप सर्वे बळी जाय छे अने ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामे छे. माटे जेने भगवानने प्रसन्न करवा होय तेने तो पोताना वर्णाश्रमना धर्ममां रहीने इन्द्रियोने नियममां करवा अने ज्ञाने करीने देह थकी नोखो एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप मानवुं. ते आत्मा ब्राह्मण नथी, क्षत्रिय नथी, वैश्य नथी, शुद्र नथी अने आत्माने देश नथी, गाम नथी अने आत्मा तो असंगी छे.

अने देह तो डगलाने ठेकाणे छे अने सगां-संबंधी, नात-जात, देश-गाम नाम-ठाम ए सर्वे देहरूपी डगलाना छे पण आत्मानुं कोई नथी एवी रीते आत्मनिष्ठा दृढ करीने अंतःकरण वश करवुं.

अने वैरागे करीने परमेश्वर विना प्रकृतिनुं कार्य सर्वे नाशवंत अने दुःखरूप जाणवुं अने माहात्म्ये सहित भगवानमां अतिशय स्नेह करवो. अने एवी रीते धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति तेने करीने भगवानने भजे ते तो भगवाननो एकांतिक भक्त कहेवाय अने अनन्य भक्त कहेवाय अने तेने ब्रह्मरूप जाणवो. जेम साकरनुं नाळियेर होय तेनो गोळो, चोटली अने काचली सर्वे साकरनुं छे अने ते सर्वे खवाय; तेमां त्याग भाग करवा जेवुं नथी. तेम भगवान जीवोना कल्याणने अर्थे मनुष्य-देहनुं धारण करे छे त्यारे ते मनुष्य जेवा जणाय तो पण भगवान दिव्यमूर्ति छे, पण भगवानना स्वरूपमां कोईए मायिक भाव परठवो नहीं अने भगवान तो दिव्यरूप ज छे.

अने तेमज धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित भक्तिएयुक्त एवा जे एकांतिक साधु तथा एवा जे हरिभक्त ते सर्वे दिव्यरूप अने ते विना सर्वे नाशवंत छे अने एवा जे भगवानना एकांतिक भक्त ते देह मूकीने भगवानना धाममां जाय छे त्यारे ब्रह्मादिक देव तथा विराटपुरुष तथा प्रधानपुरुष तथा मूळ प्रकृतिपुरुष ए सर्वे जेम भगवान सारु भेट, सामग्री लावे तेम ज एवा जे भगवानना एकांतिक भक्त ते सारु पण भेट सामग्री लावे छे अने ते भक्त भगवानना धाममां जाय छे त्यारे अद्‌भूत आनंदने पामे छे अने सर्वोपरी सुखने पामे छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २५९ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २६० विषयः-श्रीकृष्ण भगवान अर्जुनने वश थया तेनुं प्रयोजन.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना आसो सुदि ६ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री खंभात मध्ये शाह अंबालाल रणछोडभाईने घेर आथमणा बारना ओरडानी रवेशमां गादीतकिया नखावीने विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तक उपर कसुंबल पाघ बांधी हती. पुष्पना आभूषण धारण कर्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाप्रभुजीनी आरती धून करी सर्व सभा बेठी पछी भक्त बहेचर लक्ष्मीदासे महाराजने प्रश्न पूछयो जे "श्रीकृष्ण भगवान अर्जुनने वश थया ते पूर्व जन्मनो कोई संस्कार हशे के आ जन्मनो संस्कार तेने करीने वश थया हशे?"

पछी श्रीहरिकृष्ण महाराज बोल्या जे "सांभळो तेनी वात करीए जे भगवान तो कोईने वश थाय एवा नथी अने ए तो सदाय पूर्णकाम छे अने अखंडानंद छे, ते पोतानुं धार्युं करे एवा छे. ते भगवान आ पृथ्वीने विषे ज्यारे ज्यारे अधर्म वृद्धि पामे छे अने धर्मनो लोप थाय छे त्यारे भगवानना अवतार थाय छे.

ते बे प्रकारे अवतार थाय छे. तेमां रावण, कुंभकर्ण, कंस, शिशुपाळ, जरासंघ, हिरण्यकशिपु आदिक राजामां राक्षस प्रगट थाय छे ते धर्मनो नाश करे छे अने साधुने कष्ट आपे छे तेना नाशने अर्थे भगवानना अवतार राजामां थाय छे अने कालनीमी आदिक तथा अश्वस्थामा आदिक केटलाक धर्म घातकी गुरुरूप प्रगट थाय छे अने अधर्मनो सर्ग एवा जे काम, लोभ, स्वाद, स्नेह, मान, मोह, क्रोध, दंभ, कपट, छळ,

असुया, मत्सर ए आदिक जे अधर्मनो सर्ग ते प्रगट थाय छे त्यारे एकांतिक धर्मनो नाश करे छे अने धर्म, ज्ञान, वैराग, भक्ति तेने कष्ट आपे छे त्यारे भगवानना अवतार थाय छे. ते अधर्मना सर्गने नाश करवा सारु ज्ञानरूपी शस्त्र धारण करे छे अने अधर्मना सर्गने ज्ञानरूपी शस्त्रे करीने कापी नाखे छे अने एकांतिक धर्मनुं स्थापन करे छे.

ते भगवान जे जे समये अधर्मनो नाश करवा सारु पृथ्वी उपर पधारे छे; ते भगवाने जे जे संकल्प धार्यो होय ते ते समये भगवानना उपयोगमां जे जे आवे छे तेनी उपर भगवान प्रसन्न थाय छे. ते कृष्णावतारमां कंस, जरासंघ, शिशुपाळ, दुर्योधन, दुःशासन, कर्ण ए आदिक महा दुष्ट हता तेने मारवा हता तेमां अर्जुन उपयोगमां आव्यो. माटे पोतानो ते संकल्प सत्य करवा सारु अर्जुनने वश थया अने अर्जुनमां भगवान प्रवेश करीने असुरनो नाश कर्यो. अने अर्जुन पण भगवानना भक्त हता अने अनंत जन्मनां अर्जुनने सुकृत भेगां थयां हतां. ते पोतानो संबंध करावीने अर्जुननो मोक्ष कर्यो.

त्यारे कोई कहेशे अर्जुन भगवानना भक्त पूर्वना होय तो भगवानने अढार अध्याय गीताना शुं करवा करवा पडे? तो ए तो बीजा जीवोना कल्याणने अर्थे कर्या छे अने वळी मुक्तने पण भगवाननी इच्छा विना पोतानी मेळे ज्ञान थाय नहीं, केमके एक भगवान ज पोते स्वतंत्र छे अने बीजा जे पोताना भक्त छे तेने तो पोते भगवान जेटलुं जणावे तेटलुं जाणी शके पण पोताने जाणे जाणवाने कोई समर्थ नथी. ते पण श्रीकृष्ण भगवाने अर्जुनने कह्युं छे जे 'हुं तो अनादि स्वतःसिद्ध छुं अने सर्वनो कर्ता छुं अने अनंत कोटि ब्रह्मांडनी उत्पत्ति अने प्रलय ते मारी इच्छाए थाय छे अने सूर्य, चंद्रमा सर्वे मारा कर्या थया छे. अने तुं पण

अनादिनो छे पण तने तुं जाणतो नथी हुं तो तने पण जाणुं छुं अने सर्वे जीव प्राणी मात्रना अंतरने प्रकाशुं छुं.'

माटे भगवानने अर्थे जप, तप, व्रत, दान तथा नवधा भक्ति ते निष्कामभावे अनंत जन्मथी कर्ता होय तेने भगवान पोतानो संबंध करावीने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आपीने तेनो मोक्ष करे छे. ते शास्त्रमां कह्युं छे जे–

अनेक जन्म संसिद्धो ततो यान्ति परां गतिम्।

माटे भगवान ज्यारे ज्यारे पृथ्वी उपर पधारे छे त्यारे मुमुक्षु तथा मुक्त तेने भगवान जन्म धरावे छे अने ते द्वारे पोते जे जे समये धार्युं होय तेवी सेवा भक्तजन पासे करावे छे. ते रामावतारमां वांदराओ पासे तथा हनुमानजी आदिक नलनील, जांबुवान, सुग्रीव आदिक पासे सेवा करावी अने कृष्णावतारमां पांडवो पासे सेवा करावी. माटे ज्यारे ज्यारे भगवाननो अवतार थाय छे त्यारे भगवान भक्त पासे जे जे पोतानी आज्ञाए करीने सेवा करावे छे ते समये भक्तिरूप थाय छे. ते भगवाने अर्जुनने कह्युं जे–

सर्व धर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

ए श्लोकमां एम कह्युं छे जे 'सर्व धर्मनो त्याग करीने मारा चरणने पाम, हुं तने सर्व पाप थकी मुकावीश अने हुं कहुं एम कर.' एम अर्जुनने श्रीकृष्ण भगवाने कह्युं. पछी ते प्रमाणे अर्जुने निःशंक थईने कर्युं तो भगवान अर्जुनने वश थया."

माटे जे समय अर्जुनने आव्यो हतो ते समय आज तमारे आव्यो छे. ते समयने ओळखी लेवो अने भगवाननी जेम मरजी होय तेम करवुं अने पोते भगवानने वश थाय तो भगवान पण पोताने वश थाय छे. ते सावधान थईने पोताना सुख सारु आ देहे करीने तो भगवाननी ज

नां परमात्मा आवे एवा नथी. ते सारु परमात्माना स्वरूपने
रा एवा जे सद्गुरु ते जीवोने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान चार
करीने करावे छे. ते जेम मकाई अने पाणके करीने मोतीनुं ज्ञान
ाम चार ऐश्वर्यने जाणवे करीने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान
कार थाय छे.

ा चार ऐश्वर्य क्यां? तो (१) माया (२) जीव (३) ईश्वर अने
ह्म ए चार ऐश्वर्य छे. तेमां प्रथम मायाए करीने परमात्माने
छे के परमात्मा केवा छे? तो परमात्मा साकार मूर्तिमान छे.
तै केवी छे? तो मनुष्याकार द्विभूज मूर्ति छे, त्यारे तेमां शंका
'परमात्मा मनुष्य जेवा छे, तेथी मनुष्य जेम मरी जाय छे तेम
मा मरी जता हशे?' त्यारे ज्ञानीए कह्युं के 'परमात्मा मनुष्यनी
ारे एवा नथी अने परमात्मानी मूर्ति तो मनुष्यना सरखा आकारे
ा मनुष्यना शरीरमां आत्मा अखंड अविनाशी छे, तेवी अखंड
ाशी मूर्ति छे,' त्यारे वळी अज्ञानीने संशय थयो जे 'परमात्मा
ा जेवा अखंड अविनाशी तो खरा पण त्यारे जेम आत्मा सुख-
ा पामे छे तेम परमात्मा सुखदुःखने पामता हशे'

त्यारे ज्ञानीए कह्युं के, '*आत्मा जेवा अविनाशी छे अने ईश्वर* परमात्मा समर्थ अने सर्वज्ञ छे.' त्यारे तेमां वळी शंका थई के
ा जेवा समर्थ तो खरा पण ईश्वरने जेम विराट, सूत्रात्मा, अने अव्या-
'पी महत् माया वळगी छे, तेम परमात्माने पण माया वळगी हशे?'
ज्ञानीए कह्युं के 'परमात्मा ईश्वर जेवा समर्थ अने ब्रह्म जेवा
ा छे अने तेनी दृष्टिमां तो माया ज नथी अने परमात्मा तो
ाकर्तुम् अने अन्यथा कर्तुम् समर्थ छे.

—अने ते परमात्मा मायाना जेवा आकारे छे कहेतां मनुष्यना जेवी परमात्मानी मूर्ति छे, पण ते मूर्तिने विषे मनुष्यपणुं नथी. एटले जेम मनुष्य मरी जाय छे. तेम परमात्मानी मूर्ति नाश पामे अने मरी जाय एवी नथी; अने परमात्मानी मूर्ति तो जीवात्मा जेवी अविनाशी छे अने अखंड छे. पण जीव जेम पराधीन छे अने सुखदुःखने पामे छे तेम परमात्मा पराधीन नथी अने सुखदुःखने पामता नथी अने परमात्मा तो आत्मा जेवा अविनाशी छे अने ईश्वर जेवा समर्थ छे, स्वतंत्र छे अने सर्वज्ञ छे; पण ईश्वरने विषे जेम महत् माया रही छे अने उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय करवा रूप उपाधी वळगी छे तेम परमात्माने विषे मायानो लेश नथी. अने परमात्मा तो ईश्वर जेवा समर्थ छे अने ब्रह्म जेवा निर्लेप अने निरंजन छे, कहेतां अज्ञान जे माया तेने रहित छे, पण ब्रह्म जेम निराकार अने अक्रियवान छे तेम परमात्मा निराकार अने अक्रियवान नथी. परमात्मा तो कर्तुमकर्तुम् अने अन्यथा कर्तुम् समर्थ छे.

माटे मोतिने ओळखवा सारु मकाई अने पाणकानी उपमा दीधी हती. पण मकाई अने पाणकाथी मोति जुदु छे अने मकाई-पाणकाए करीने मोतीनी ओळखाण पडी, तेम मकाई पाणाकारूप जीव, ईश्वर, माया अने ब्रह्म तेने जणावे करीने प्रत्यक्ष परमात्मानुं स्वरूप ओळखाय छे, पण परमात्मा तो ए सर्वेथी जुदा छे. माटे मायानो भाव प्रत्यक्ष परमात्मानी मूर्तिने विषे जणाय तो पण मायानो लेश परमात्मानी मूर्तिने विषे नथी, कहेतां मनुष्य जेम मरी जाय छे तेम प्रत्यक्ष परमात्मा मरी जता देखाय तो पण परमात्मा मरता नथी अने ए तो अखंड मूर्ति छे.

अने जीवना जेवा भाव प्रत्यक्ष परमात्माने विषे जणाय तो पण जीवपणांनो लेश परमात्माने विषे नथी. अने ईश्वरना जेवो भाव प्रत्यक्ष परमात्माने विषे जणाय तो पण ईश्वर जे विराटरूप ते थकी परमात्मा

घणा जुदा छे. अने ब्रह्मनो भाव प्रत्यक्ष परमात्माने विषे जणाय तो पण ब्रह्म तो जेनो प्रकाश छे अने परमात्मा तो ब्रह्मना पण प्रकाशक छे अने ब्रह्मना आधार छे. माटे जीव, ईश्वर, माया अने ब्रह्म ए परमात्माना चार ऐश्वर्य छे. अने तेने जणावे करीने पांचमा परमात्माना स्वरूपनो निश्चय थाय छे.

अने ते मायादिक चार ऐश्वर्यने जणाववा ने अर्थे चार वाणीना भेद पड्या छे. ते चार वाणी कई ? तो परा, पश्यन्ति, मध्यमा, अने वैखरी, ए चार प्रकारनी वाणी छे. तेमां जे प्रथम मायानुं वर्णन करवुं तेनुं नाम वैखरी वाणी कहेवाय छे. अने जीवात्मानुं वर्णन करवुं तेनुं नाम मध्यमा वाणी कहेवाय छे. अने विराट ईश्वरनुं वर्णन करवुं तेनुं नाम पश्यन्ति वाणी कहेवाय छे. अने ब्रह्मना स्वरूपनुं वर्णन करवुं तेनुं नाम परावाणी कहेवाय छे. अने ए चार वाणीए करीने चार ऐश्वर्य जणाय छे अने चार ऐश्वर्यने जाणवे करीने पांचमा परमात्मा जणाय छे.

ते पांचमा परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिक तेनां लीला चरित्र अने महिमाना गुण गावा ते तो चारे वाणीथी पर एवी पांचमी अनुपम वाणी कहेवाय छे. माटे गुणमयी एवी जे वेदनी श्रुतिओ ते चार वाणीए करीने गुणमय एवा जे परमात्माना चार ऐश्वर्य तेनुं वर्णन करे छे. तेने करीने निर्गुण एवा जे परमात्मा तेना स्वरूपनो साक्षात्कार निश्चय थाय छे अने परमात्माना स्वरूपनो साक्षात्कार निश्चय थयो एटले चारे वाणी लय पामी जाय छे. जेम मोति ओळखाणुं एटले पछी मकाई अने पाणको ए कांई कहेवापणुं रहेतुं नथी, तेम प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो निश्चय थयो एटले पछी जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म तेना स्वरूपने जणाववारूप जे चार वाणी तेनुं कांई कहेवापणुं रहेतुं नथी. एवी रीते गुणमयी एवी जे वेदनी श्रुतिओ ते गुणथी

પર એવા જે પરમાત્મા તેના સ્વરૂપનું સાક્ષાત્કાર પ્રતિપાદન કરે છે. કેમકે જ્યાંસુધી પ્રત્યક્ષ પરમાત્મા નથી જાણ્યા ત્યાંસુધી વેદની શ્રુતિઓ ગુણમયી કહેવાય છે અને ત્યાંસુધી ચાર વાણીના ભેદ કહેવાય છે. અને એ ચારવાણીએ કરીને ચાર ઐશ્વર્યને જાણીને પ્રત્યક્ષ પરમાત્માના સ્વરૂપનો નિશ્ચય થયો એટલે ગુણનો લય થઈને તેની તે શ્રુતિઓ નિર્ગુણભાવને પામી જાય છે. માટે વેદની શ્રુતિએ કરીને પ્રત્યક્ષ પરમાત્મા શ્રીકૃષ્ણના સ્વરૂપનું વર્ણન કરવું તે તો ચાર વાણીથી પર એવી નિર્ગુણરૂપ પાંચમી અનુપમ વાણી છે.

અને પ્રત્યક્ષ પરમાત્માના સ્વરૂપને જાણ્યા વિના એકલી માયાનું વર્ણન કરવું તેનું નામ વૈખરી વાણી કહેવાય છે અને પ્રત્યક્ષ ભગવાનના સ્વરૂપને જાણીને પછી તે ભગવાનની સેવામાં જે જે માયાનાં પદાર્થ કામ આવે અને તેનું પરમાત્માની મૂર્તિ ભેગું વર્ણન કરવું, તે તો અનુપમ વાણી છે. અને પ્રત્યક્ષ ભગવાનના સંબંધ વિના એકલા જીવ ચેતનનું વર્ણન કરવું તેનું મધ્યમા વાણી છે અને પ્રત્યક્ષ ભગવાનના સંબંધને પામ્યા એવા જે જીવ ભગવાનના ભક્ત ગોપી, ગોવાળાદિક તેનું વર્ણન કરવું તે તો અનુપમ વાણી છે; અનુપમ એટલે એને કોઈ ઉપમા દેવાય નહીં એવી અમુલ્ય ચિંતામણીરૂપ વાણી છે. અને પ્રત્યક્ષ ભગવાનના સંબંધ વિના એકલા વિરાટરૂપ ઈશ્વરનું વર્ણન કરવું તેનું નામ પશ્યન્તિ વાણી છે અને પ્રત્યક્ષ ભગવાનના સ્વરૂપને જાણવાને અર્થે ઈશ્વરનું વર્ણન કરવું તે તો અનુપમ વાણી છે. અને પ્રત્યક્ષ ભગવાનના સંબંધ વિના એકલું બ્રહ્મનું વર્ણન કરવું તેનું નામ પરાવાણી છે અને પ્રત્યક્ષ ભગવાનના સાક્ષાત્કાર સ્વરૂપને પામીને બ્રહ્મરૂપ થઈને પછી તે મુક્ત જે તે બીજા જીવોને પ્રત્યક્ષ ભગવાનના સ્વરૂપને જણાવવા સારુ માયાનુંરૂપ કહી દેખાડે છે તે પણ અનુપમ વાણી છે, જીવનુંરૂપ કહી દેખાડે તે પણ અનુપમ વાણી છે, ઈશ્વરનું સ્વરૂપ કહી

देखाडे ते पण अनुपम वाणी छे अने ब्रह्मना स्वरूपने कही देखाडे ते पण अनुपम वाणी छे अने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनुं वर्णन करे छे तथा प्रत्यक्ष भगवानना जन्म, कर्म अने चरित्र तेनुं वर्णन करे छे ते सर्वे अनुपम वाणी छे.

अने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपने पाम्या विना अने जाण्या विना तथा प्रत्यक्ष भगवानने जाणवानी इच्छा विना स्वार्थने माटे शास्त्र भणीने तथा वेद, पुराणने भणीने जे पुरुष मायानुं वर्णन करे छे, ते पण वैखरी वाणी छे अने जीवनुं वर्णन करे छे तो पण वैखरी वाणी छे अने ईश्वरनुं वर्णन करे छे ते पण वैखरी वाणी छे. अने ब्रह्मना स्वरूपनुं वर्णन करे छे ते पण वैखरी वाणी छे अने तेनी वाणीए करीने कोई जीवनुं रूडुं थतुं नथी.

माटे प्रत्यक्ष परमात्माने जाणवा–पामवाने अर्थे प्रथम मायानुं रूप जाणवुं जोईए छीए, पछी जीवनुं स्वरूप जाणवुं जोईए, पछी ईश्वरनुं स्वरूप जाणवुं जोईए, पछी ब्रह्मनुं स्वरूप जाणवुं जोईए; एवी रीते जीव, ईश्वर, माया अने ब्रह्म ए चारेयना स्वरूपने प्रथम जाणे छे तेने पछी प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे. एवी रीते वेदनी श्रुतिओ चार ऐश्वर्यनुं वर्णन करे छे ते भेगुं परमात्माना स्वरूपनुं वर्णन थाय छे, पण ते चार ऐश्वर्य विना वेद परमात्मानुं वर्णन नथी करी शकता. माटे जेम मकाई अने पाणकाने जाणवे करीने मोतिनुं ज्ञान जंगली माणसने थयुं तेम जीव, ईश्वर, माया अने ब्रह्म तेना स्वरूपने जाणवे करीने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनुं साक्षात्कार ज्ञान थाय छे अने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपने ज्ञाने करीने जीवनुं आत्यंतिक कल्याण थाय छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २६१ समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत २६२ विषयः-मोक्षना मार्गमां बुद्धिवान अने बुद्धिहीन

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२३ ना आसो वदि ११ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये भक्त व्यास कुबेरजी ईश्वरने घेर दक्षिणादा बारना चोकमां गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगने विषे गुलाब अने चंपाना पुष्पनां आभूषण शोभी रह्यां हतां. ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज श्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजी कृपादृष्टि करीने बोल्या जे " बे प्रकारना मनुष्यना वर्ग छे, तेमां एक बुद्धिवाळा मनुष्यनो वर्ग छे अने बीजो बुद्धिहीन मनुष्यनो वर्ग छे. हवे तेमां जे बुद्धिमान मनुष्य होय तेने तो कोईक थोडीक वात करे तो तेमांथी घणोक अर्थ समजी जाय अने जे बुद्धिहीन मनुष्य होय तेने तो घणीक वात करे तो तेमांथी थोडोक अर्थ मांड मांड समजी शके. एवी रीते बुद्धिवाळा अने बुद्धिहीन, बे प्रकारना मनुष्यमां घणो भेद छे.

अने तेमज कल्याणना मार्गमां बुद्धिवाळा अने बुद्धिहीन बे प्रकारना मनुष्य छे अने तेमां जे बुद्धिवाळा मनुष्य होय ते सत्संग करवा आवे त्यारे तेने अमे थोडीक ज्ञानवार्ता करीए तो ते वातनो घणोक अर्थ समजीने ते प्रमाणे वर्तवानो मनमां ठराव करीने तेवी रीते वर्तवा लागे छे. पण पछी तेमां लेश मात्र फेर पडवा दे नहीं, ते पोतानुं शरीर जाय तो पण अमे करी जे आज्ञा तेमां फेर पडवा दे नहीं अने तेमां जेवी रीते समजवानुं कह्युं होय तेवी रीते दृढपणें समजवानी मनमां गांठ

वाळे. पछी ते समजणने मोटा ब्रह्मादिक फेरववा आवे तो पण तेनी समजण फरे नहीं. एवी रीतना मनुष्य होय तेने बुद्धिवान कहीए.

अने जे मूर्ख मनुष्य होय तेने तो अमे घणीक ज्ञानवार्ता करीए पण ते तो जराय समजी शके नहीं अने तेने धर्म नियमनो पण ठराव रहे नहीं अने समजणनो पण तेने ठा रहे नहीं, एवो जे मनुष्य होय तेने मूर्ख अने बुद्धिहीन कहीए अने एवा मूर्ख होय ते महा दुःखने पामे छे अने जे बुद्धिवाळा होय ते महा अद्‍भुत सुखने पामे छे. जेम उत्तम वर्ण जे ब्राह्मण, वाणिया के पाटीदार तेनी बहु दीकरीओ होय अने ते बाळ अवस्थामांथी विधवा थाय, त्यारे तेने मनमां एम ठराव थाय जे 'मारे हवे आ संसारमां कोई पुरुष करवा जोग नथी,' एम समजीने पोताना वर्णाश्रमनो धर्म शास्त्रमां कह्यो होय तेमां दृढपणे रहीने परमेश्वरनी भक्ति करे अने ते उत्तम कुळनी विधवा बाई होय ते एक वखत अन्न खाय अने गळ्युं, चीकणुं खाय नहीं. अने चोमासाने विषे धारणां—पारणां तथा चांद्रायणादिक व्रत करे अने कोई साथे हांसी—मश्करी करे नहीं अने व्यभिचारी एवा जे पुरुष तथा स्त्रीओ तेमनी सोबत क्यारेय पण करे नहीं अने पोताना मा-बाप, सासु-ससरा आदिक समीप संबंधी होय तेनी आज्ञामां वर्ते अने धर्मवाळा अने भगवानना भक्त बाईओ हरिजन होय तेनो समागम करे अने परमेश्वरनी भक्ति अखंड कर्या करे. एवी रीतनी समजणवाळी जे विधवा बाई होय तेने बुद्धिवान कहीए अने ते आलोकमां महा सुखने पामे छे अने तेने कोईक सत्पुरुषनो सत्संग थाय तो परलोकमां तेना आत्मानुं कल्याण थाय छे.

अने उत्तमकुळमां जे बुद्धिहीन अने मूर्ख होय अने ते विधवा थाय तो पण ते तो धर्म नियममां कांई रहे नहीं अने तेने सौ देखतां तो

पुरुष थाय नहीं पछी छानो पुरुष करवाना मनमां संकल्प करे अने जे मूर्ख रांडेली होय ते सारां सारां खावानां घी, गोळ, खांड, साकर, दूध, दहीं तेने पेट भरी भरीने खाय. पछी ते विधवा बाईओ मचेला पाडा जेवी थाय छे. अने तेना मा-बाप पण जे मूर्ख होय ते एम जाणे जे 'दीकरी नानाथी रांडी छे माटे कांई बायडी कई हाणीमाणी नथी ते सारु तेने सारुं सारुं खवरावीए पीवरावीए.' अने तेने हवे चूडलो तो पहेराय नहीं माटे तेने सोनारूपानी चीपो करावीने हाथमां नखावे छे. अने कोटमां हांसडीयो नखावे छे अने आंगळीओमां वींटीओ नखावे छे अने वळी नानाथी रांडी होय ते बेक दहाडा मांथे चोटला रखावे छे अने जे मूर्ख रांडेलीयो होय ते एवी फजेती थवाना शणगार करे छे अने तेनी अंते जतां फजेती पण जरूर थाय छे अने ते मूर्ख अने बुद्धि विनानी रांडेलीओ छे ते आलोकमां महा दुःखने पामे छे अने परलोकमां तेनुं कल्याण कोई काळे थाय नहीं अने ते तो मरीने वेश्याने घेर जन्मने पामे छे तथा कुतरीओनो अवतार धरे छे तथा कुभारने घेर गधेडीओ थाय छे.

माटे जगतमां जे मूर्ख रांडेलीओ होय तथा ते मूर्ख विधवा बाईओना मावाप होय ते बेय महा दुःखने पामे छे अने जे बुद्धिवाळी विधवा बाई होय ते तो एवां फजेतीनां काम करे ज नहीं अने ते बुद्धिवाळी विधवा बाईओ जे ते महा सुखने पामे छे अने तेनुं कल्याण थाय छे.

अने तेमज जे पुरुष भगवानना भक्त होय तेने पण धर्म, नियम, दृढ करीने राखवा जोईए. अने पंचविषयनो त्याग पण जरूर करवो जोईए. अने तेमां वळी जे संसारनो त्याग करीने भेख लीधो होय तेने विशेषे करीने दृढपणें पंचविषयनो त्याग करवो जोईए अने जे पंच-विषयनो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवाननुं भजन करे छे ते ज त्यागीनुं

कल्याण थाय छे अने परमपदने पामे छे.अने एवा त्यागी साधु संन्यासी ब्रह्मचारी परमहंस होय तेना उपर अमे पण घणा घणा प्रसन्न थईए छीए. अने जे त्यागी थईने विषयने भोगवे छे के विषय भोगववानी मनमां इच्छा राखे छे ते तो त्यागी पुरुष तथा विधवा बाईओ ते वेय मूर्ख छे अने बुद्धिहीन अने पापी छे. अने ते तो चंडाळ तुल्य छे अने तेने अमारो सिद्धांत रंचमात्र समजाणो ज नथी.

अने जे जे गृहस्थ हरिभक्त मोक्षना खपवाळा होय तेने पण निर्वासनिक तो जरूर थवुं अने कोई जगतनां मायिक पदार्थमां मोह पामवो नहीं, केमके जगतनां पदार्थ सर्वे मिथ्या छे अने महा पाप करवानां कारण छे, केमके अविनाशी सुखने पमाडनारा एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेना भजनमां जगतनां पदार्थ अंतरायना करनारा छे अने ते जगतनां पदार्थ सर्वे एक सरखां छे अने दुःखरूप अने पापरूप छे. जेम विष्टा तथा काखना वाळ ते बेय नठारा छे अने त्याग करवा योग्य छे पण ते राखवा जेवा नथी, तेम जगतना पदार्थ विष्टा जेवा तथा काखना वाळ जेवा छे. ते अहीं विष्टाना कीडाथी ते ब्रह्मा पर्यंतनां सुख ते सर्वे एक सरखां छे अने नरकरूप छे माटे नरक ते त्याग करवा योग्य छे. ते मारु भगवानना भक्त थईने ते नरकरूप जगतना पदार्थने पामवानी इच्छा राखे छे, ते तो महा मूर्ख छे अने पशु तुल्य छे.

अने जे विवेकी अने बुद्धिवाळा भगवानना भक्त होय ते तो भगवाननी भक्ति अने भगवानने विषे प्रेम अने भगवानना संतनो समागम ते विना बीजुं कांई मनमां इच्छे ज नहीं, ते ज खरो भगवाननो भक्त कहेवाय अने तेनी उपर ज अमारी खरे खरी कृपा थाय छे. माटे भगवानना भक्तने एक भगवान ज वहाला राखवा अने जगतना पदार्थनी वासनानो

त्याग करवो; केमके भगवान क्यां अने जगतनां पदार्थ क्यां? ए बेमां तो घणा ज भेद छे. माटे ते बेय जे सरखा माने छे ते तो महा मूर्ख छे; केमके जे भगवानने विषे प्रीति राखे छे अने जगतना पदार्थने विषे पण प्रीति राखे छे, तेने तो हजी कांई समज्यामां आव्युं ज नथी अने ते तो अविवेकी छे अने मूर्ख छे.

केमके पूर्वे पण जे जे भगवानना भक्त थई गया छे, तेणे पण भगवानने पामवाने अर्थे अने भगवानने प्रसन्न करवा सारुं जगतनां सर्वे पदार्थनो त्याग करीने वनमां जईने महा तप कर्यां छे. ते चित्रकेतु राजाए करोड स्त्रीओनो, पोताना सर्वे राज्यनो अने देहना सुखनो त्याग करीने वनमां जईने भगवान भज्या छे अने प्रह्लादे पण भगवान भजवा सारु केटलीक कष्टि सहन करी छे अने ध्रुवजीए भगवानने पामवा सारु केवुं कठण तप कर्युं छे अने मोरध्वजे भगवानने प्रसन्न करवाने अर्थे माथे करवत मुकाव्युं हतुं अने हरिश्चंद्र राजा पण भगवानने प्रसन्न करवाने अर्थे नीचने घेर वेचाणो हतो. एवी रीते भगवानने पामवाने अर्थे घणाक भगवानना भक्तोए पोताना राज्यनो, देहना सुखनो अने जगतना मायिक पदार्थनो त्याग करीने भगवान भजीने अभयपद जे भगवाननुं धाम तेने पामी गया छे. माटे आज पण जे जे बुद्धिवाळा भगवानना भक्त हशे अने जेने आने आ देहे करीने अक्षरधामने पामवुं होय तेने तो पोताना देहना सुखनो अने जगतना पदार्थनो त्यागज करवो अने निर्वासनिक थईने एक मारे विषे अचळ प्रीति करवी अने जेणे एवी रीते समजीने अमारे विषे प्रीति करी तेनुं तो साक्षात्कार कल्याण थई रह्युं छे अने तेने तो कांई करवुं रह्युं नथी."

इति श्रीमुखसिद्धांत २६२ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २६३ विषय :–संप्रदायो जुदा जुदा होवा छतां तेमनो ध्येय एक केवी रीते ?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२३ ना आसो वदि १२ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री सोजीत्रा मध्ये भक्त वहेचरदास लक्ष्मीदासने घेर उगमणा वारना ओरडानी आगळ चोकमां गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे श्वेत वस्त्र धारण कर्यां हतां अने मस्तके कसुंबल तारालो फेंटो बांध्यो हतो. कंठने विषे गुलाबना पुष्पना हार धारण कर्या हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज पोतानी मेळे कृपा करीने बोल्या जे "जे अज्ञानी जीव छे ते जे ते पूर्वे सत्पुरुष थई गया छे तेना सिद्धांतने भूलीने जीव जे ते एक बीजाना धर्मने निंदे छे; अने एक बीजा वादविवाद करे छे. तेमां जे जैनमतवाळा छे ते श्रीकृष्ण भगवाननी निंदा करे छे. अने श्रीकृष्ण भगवान तो केवा छे? तो सदाय अनादि माया पर छे अने अधमोद्धारण छे, पतीतपावन छे अने भक्तवत्सल छे अने ते श्रीकृष्ण भगवानने विषे व्रजनी स्त्रीओ पतिभावे करीने जोडाणीओ तो ते मायाने तरीने भगवानना धामने पामी गई अने वेदनी श्रुतिओ कहेवाणी. माटे एवा जे सर्व जगतना कर्ता हर्ता भगवान श्रीकृष्ण तेने जैनमतवाळा अज्ञानी छे ते एम कहे छे जे 'ए तो त्रीजा नरकमां पडया छे.'

अने जे वैष्णव मतवाळा छे ते जैनमतने निंदे छे तथा केटलाक अज्ञानी छे ते शिवने निंदे छे अने शैवी छे ते विष्णुने निंदे छे. अने ब्रह्मज्ञानी छे ते विधि–निषेधने खोटा कहे छे तथा व्यासजीनां भागवतादिक शास्त्रने खोटा कहे छे अने उपासनावाळा छे ते वेदांतने खोटुं कहे छे तथा ब्रह्मज्ञानने पण खोटुं कहे छे अने शंकराचार्यवाळा

छे ते रामानुजने निंदे छे अने रामानुजना छे ते शंकराचार्यना मतने निंदे छे. अने हिंदु छे ते मुसलमानने निंदे छे अने मुसलमान छे ते हिंदुने निंदे छे. अने तेमां कोई एक एम कहे छे जे 'भगवान तो निराकार छे' अने कोई कहे छे जे भगवान साकार छे.' अने कोई कहे छे जे 'भगवान तेजना बिंब जेवा छे.' अने कोई कहे छे जे 'भगवान सगुण छे' अने अने कोई कहे छे जे 'भगवान निर्गुण छे.' कोई कहे छे जे 'भगवान कर्ता छे' अने कोई कहे छे जे 'भगवान अकर्ता छे.' कोई कहे छे जे 'अद्वैतमत साचो छे' अने कोई कहे छे जे 'द्वैतमत साचो छे अने कोई कहे छे जे 'विशिष्टाद्वैतमत साचो छे अने कोई कहे छे जे 'शुद्धाद्वैतमत साचो छे.'

अने एवी रीते सौ सौना मतना पोत पोताना सत्पुरुषना अंतरना सिद्धांतने भूलीने अज्ञाने करीने सत्पुरुषना बांधेला जे धर्म तेनी निंदा करे छे अने तेनी निंदाए करीने जीवनी बुद्धि भ्रष्ट थई जाय छे. केमके सर्वेना कारण अने मोक्षना दाता एवा जे परमात्मा भगवान ते तो सर्वेना एक ज छे. पण कांई एम तो नथी जे जैनमतना भगवान जुदा छे अने विष्णुमतवाळाना भगवान जुदा छे अने शंकराचार्यना मतवाळाना भगवान जुदा छे अने रामानुजना मतना भगवान जुदा छे अने हिंदुना भगवान जुदा छे अने मुसलमानना भगवान जुदा छे. एवी रीते सर्वेना जुदा जुदा तो भगवान कांई जणाता नथी अने सर्वे जीव प्राणी मात्रना भगवान तो एक ज जणाय छे, केमके सर्वे जीवनो जळ, पृथ्वी आदिके करीने सरखो ज निभाव थाय छे. माटे जो सर्वेना नोखा नोखा भगवान होय तो एकनी एक स्थिति सर्वेनी रहेत नहीं, ते सारु सर्वेना भगवान एक ज छे. अने ते भगवान सर्वेने भजवा, पामवा, उपासना करवा अने सेववा योग्य छे.

अने वळी जो सर्वेना नोखा नोखा घणा भगवान होय तो आ जगतनी स्थिति एक रीतनी रहेत नहीं, केमके एक भगवान कहेशे 'हुं उत्पत्ति करीश.' तो बीजो भगवान कहेशे 'हुं प्रलय करीश;' वळी एक भगवान कहेशे 'हुं उनाळे शियाळो करीश.' तो एक भगवान कहेशे 'हुं चोमासे उनाळो करीश.' अने एक भगवान कहेशे 'हुं दिवसनी रात्री करीश.' तो बीजो भगवान कहेशे 'हुं रात्रीनो दिवस करीश.' एवी रीते जो घणाक भगवान होय तो परस्पर एक बीजाने लडाई थाय अने आ जगतनी एक रीतनी स्थिति रहेत ज नहीं. अने आ जुवोने सर्वे जगतनी स्थिति एक रीतनी बराबर रहे छे, पण तेमां रंच मात्र फेर पडतो नथी केमके सर्वे क्रियाना प्रवर्तावनारा अने सर्वेना कारण एक ज भगवान छे.

अने ते ज भगवानने मायानो आकार नथी माटे वेदांत शास्त्र भगवानने निराकार कहे छे. अने अक्षरधामने विषे दिव्य साकार मूर्तिमान भगवान सदाय विराजमान छे माटे योगशास्त्र भगवानने साकार कहे छे. अने मायामांथी थया एवा जे रज, तम अने सत्त्व त्रण गुण ते भगवानने विषे नथी माटे निर्गुण कह्या छे. अने भगवानने विषे अनंत कल्याणकारी गुण रह्या छे माटे भगवानने सगुण कह्या छे. अने प्रकृतिपुरुष द्वाराए अनंतकोटि ब्रह्मांडनी उत्पत्ति, स्थिति अने प्रलय करावे छे पण पोते नथी करता माटे भगवान अकर्ता कह्या छे अने ए प्रकृतिपुरुष जे ते भगवाननी इच्छा विना कांई करवाने समर्थ नथी माटे भगवानने कर्ता कह्या छे. एवी रीते सर्वे गुणना गुणी अने सर्वेने भजवा योग्य अने सर्वेने उपासना करवा योग्य एक ज भगवान छे.

अने पूर्वे जे जे भगवानना अवतार थई गया अथवा सत्पुरुष थई गया तेणे पण वासनावाळा जीवोने पंचविषय थकी मुकावीने तेनां

कल्याण करवा सारु नोखा नोखा धर्म बांध्या छे. ते नोखा नोखा धर्म बांध्यानुं शुं कारण ? तो ज्यारे ज्यारे सत्पुरुष प्रगट थईने घणाक जीवोने ज्ञान आपीने पंचविषय थकी मुकावीने तेनो मोक्ष करीने पछी ते सत्पुरुष स्वधाममां जाय छे त्यारे पछी तेना मतमां असत्पुरुष प्रगट थाय छे. केमके सत्पुरुषना प्रतापे करीने घणाक मनुष्य तेने आशरे आव्या होय अने ते मनुष्य ते सत्पुरुषनो महिमा जाणीने अन्न, धन, वस्त्रादिके करीने पूजा बहु करे ते सत्पुरुष तो माया पर होय ते पोते कोई पदार्थमां बंधाय नहीं अने पोताना आश्रितोने पण पोते प्रगट होय त्यांसुधी बंधावा दे नहीं. अने पछी तो पदार्थनो योग थये कोई देव, ब्रह्मादिक पण उगरवाने समर्थ नथी तो मनुष्यनी शी गणतरी जे पदार्थनो योग थाय अने न लोपाय ? ए तो लोपाय ज. माटे पदार्थना योगे करीने सत्पुरुष गया केडे असत्पुरुष जरूर थाय छे. ते असपुरुष जे ते विषय विषे लोलुप थाय छे अने विषयने भोगवे छे अने धर्मने भ्रष्ट करी नाखे छे.

पछी ते मतमां कल्याण थतुं नथी त्यारे भगवान जे ते जीवोना कल्याण करवाने अर्थे अने धर्मने शुद्ध करवाने अर्थे फरीने प्रगट थाय छे अने प्रगट थईने विषयनुं खंडन करे छे त्यारे आगळना पोताना ज धर्मना हता पण ते तो पदार्थने योगे करीने पंचविषयना बंधाणी थई गया छे माटे ते तो ते प्रत्यक्षने माने ज नहीं. केमके जो ते प्रत्यक्ष सत्पुरुषने माने तो पोताना विषयनुं खंडन करे. अने पोते तो ते विषयने जीवनं प्राण मान्या होय ते मूकी शकाय नहीं माटे ते तो ते प्रत्यक्ष कल्याणकारीनो ऊलटो अतिशय द्रोह करे छे.

पछी ते सत्पुरुष तो समर्थ छे माटे बीजा धर्मनुं स्थापन करे छे अने अनंत जीवोनां कल्याण करे छे. पण जे मोर (पहेला) पोताना ज

सर्वोपरी जे भगवान तेने पामवा सारु धर्मनुं स्थापन कर्युं छे. माटे सर्वे धर्म अमारा छे.

अने अमे जैनमतना सिद्धांत कही देखाडीए छीए तथा वैष्णवना सिद्धांत कही देखाडीए छीए तथा रामानुजना तथा शंकराचार्यना तथा वेदांतिना तथा हिंदु, मुसलमान आदिक सर्वेना सिद्धांतने कही देखाडीए छीए अने सर्वेना मोक्षनो मार्ग एक ज प्रतिपादन करी आपीए छीए अने सर्वेना वादविवाद तथा वढवाड, अळसावीए छीए, केमके ज्ञानमां वढवाड नथी अने वढवाड तो अज्ञानने विषे रही छे पण ज्यां परिपूर्ण ज्ञान छे ते ठेकाणे वढवाड नथी माटे आ समये तो आत्यंतिक ज्ञाननी प्रवृत्ति छे ते जेने सांभळीने बाकी तेने कांई समजवुं रहेतुं नथी.

माटे जेने पोताना आत्माना मोक्षनो खप होय अने जे दैवी अने मुमुक्षु जीव होय तेने अमारा साथे बने छे अने तेने अमारी साथे अतिशय प्रीति थाय छे अने तेनुं कल्याण थाय छे. अने जेने मोक्षनो खप न होय अने जे आसुरी जीव होय तेने अमारा साथे कोई काळे बने ज अने तेनुं कल्याण पण कोई दहाडो थाय ज नहीं.

माटे आ जे अमे वार्ता करी छे तेने जे पूर्वापर चित्त दईने समजशे अने ते वातने विचारशे तेने मोक्षना मार्गमां कोई विघ्न आवशे नहीं अने तेना अंतरमां ज्ञानरूपी प्रकाश थशे, अने ते ज्ञान प्रकाशे करीने तेने अमारा स्वरूपनो निश्चय थशे अने तेने पंचविषयनी वासना टळी जशे अने तेने जन्ममरणनां दुःख टळीने परम शान्ति थशे. माटे आ वार्ताने सर्वे संभारी राखजो."

इति श्रीमुखसिद्धांत २६३ समाप्त।

———+:———

श्रीमुखसिद्धांत २६४ विषयः—पंचविषय जन्म-मृत्युनुं कारण होवा छतां जीवे मित्र मान्या छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना आसो वदि १३ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये पटेल भक्त नरसिंहभाई द्वारकादासने घेर उत्तरादा वारना ओरडानी ओशरीमां गादीतकिये युक्त ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने गुलाब अने चंपाना पुष्पनां आभूषण धारण कर्यां हतां. पाघमां केवडानो डोडो धारण कर्यो हतो अने ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती. अने संत कीर्तन बोलता हता.

पछी महाराज बोल्या जे "कीर्तन राखो अने अमे एक वार्ता करीए छीए तेने सुरत दईने सांभळजो. जे जेम कोई शत्रु तलवार काढीने मारवा सारु आवतो होय त्यारे तेना जीवने केवो भय लागे छे अने ते थकी भागी जवाय छे, तेम पंचविषय छे ते जीवना महा शत्रु छे केमके विषयनी वासनाए करीने तथा विषयने भोगववे करीने जीव जे ते कोटि कोटि फेरा जन्ममृत्युने पाम्यो छे अने महा दुःखने भोगवे छे, पण ते शत्रुनी जीवने खबर नथी. केमके बीजो वहारनो शत्रु होय ते तो एकवार माथुं कापे छे, पण बीजे जन्मे ते शत्रु माथुं कापवा आवी शकतो नथी, तो पण तेनो केवो भय राखे छे अने तेना लागमां आवतो नथी. तेम पंचविषय छे तेने तो जीवने अनंत फेरा मार्यो छे अने वळी मारवाने तैयार थई रह्यो छे. ते जो विषयने जीव शत्रु जाणे तो ते थकी तत्काळ भागवुं जोईए पण ते जीवे विषयने शत्रु जाण्या नथी

अने भागतो पण नथी. माटे ते जीव अज्ञानी छे अने गाफल छे ते विषयनो संग राखे छे.

अने ते विषय तो केवा छे ? तो जे एक विषयनो संग करे तेना प्राणने तत्काळ नाश करे एवा बळवान छे तो जेने पंचविषयनो संबंध होय तेना तो अतिशय भूंडा ज हाल थाय छे केमके मृगलाने एक शब्दनो विषय छे तेने तो पारधी घंटाल वगाडे छे त्यारे ते शब्दमां मोह पामीने मृगला पारधीनी पासे आवे छे. पछी तेने पारधी जे ते तीर, बंदुके करीने मारी नाखे छे. माटे एक शब्दने विषये करीने मृगलां जे ते प्राणने खोवे छे. अने हाथीने स्पर्शनो एक विषय छे तो तेने कागळनी हाथणी देखाडे छे, त्यारे ते तेमां मोह पामीने स्पर्श करवा जाय छे. पछी पारधीए अजाडी खोदी मूकी होय तेमां पडीने प्राणने खोवे छे. अने तेनो खाईमां राडो नाखी नाखीने जीव जाय छे. अने पतंगीयाने जो रूपनो एक विषय छे तो ते अग्निमां पडीने बळी मरे छे. अने माछलाने जो रसनो एक विषय छे तो तेने ढीमर घउंनी कणकने लोढाना आंकडियामां चोटाडीने पाणीमां नाखे छे, त्यारे माछलां जे ते रसनी आसक्तिए करीने ते कणकने खावा जाय छे पछी ते लोढाना आंकडिया गळायां सोंसरा नीसरी जाय छे अने तेना प्राणने खोवे छे. अने भमराने जो एक गंधनो विषय छे तो ते भमरो जे ते सुगंध लेवा सारु कमळना पुष्पमां पेसे छे पछी ते कमळ बीडाई जाय छे त्यारे तेमां भमरो जे ते मूंझाईने मृत्यु पामे छे. एवी रीते ए पांचेने एक एक विषयनी आसक्ति छे तो ते भूंडे हाले मृत्युने पामे छे, तो जेने पांचे विषयनी आसक्ति होय तेना तो शा हाल थाय ? ए तो अतिशय महा कष्टने ज पामे अने तेने तो काळी चिसो नाखतां पण ते कष्टनो पार आवशे नहीं.

माटे जेने महा सुखिया थवुं होय तेने तो जीवना अनादिकाळना महा शत्रु जे पंचविषय तेनो देहे करीने त्याग करवो अने अंतरमां जेने पंचविषयना राग होय तेने टाळवाने अर्थे आत्मा अने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान सिद्ध करवुं. अने ज्यारे आत्मा अने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान साक्षात्कार थाय छे त्यारे अंतरमांथी पंचविषयनी वासना टळी जाय छे अने जन्ममृत्यु थकी मूकाईने महा सुखने पामे छे अने ते जीव मोक्षने पामे छे.

हवे ते आत्मा अने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान केम थाय? तो ज्यारे आत्माना आत्मा एवा जे परमात्मा भगवान ते ज्यारे कृपा करीने जीवने प्रत्यक्ष मळे अने कां ते परमात्माना एकांतिक पंचविषयना त्यागी संत ते मळे तो ते जीवने ज्ञान करावे त्यारे आत्मा अने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे. अने ज्यारे ज्ञान जीवोने थाय छे त्यारे सर्वे इन्द्रियो अंतःकरणनी वृत्तिओ भगवानना स्वरूपमां जोडाई जाय छे अने ते आत्मा परम शांतिने पामे छे अने पांच विषयना राग टळीने अक्षरब्रह्मरूप मुक्त थाय छे.

माटे मुक्त थवानो समय आज तमारे आव्यो छे; केमके पोताने मनुष्यनो देह अने भगवान अने भगवानना संतनुं प्रगटपणुं ए तो घणाक जन्मनां महा सुकृत होय त्यारे तेनो योग बने छे. माटे एवो महा दुर्लभ लाभ जाणीने अमारा जे आश्रित होय तेने पंचविषयने महा शत्रु जाणीने त्याग करवो. अने ज्यां विषयनो बहु योग होय त्यांथी भागी छूटजो ए अमारी आज्ञा छे. ते जे अमारा होय ते पाळजो अने ए आज्ञा पाळशे तेने अने अमारे अखंड संबंध रहेशे अने जे ते आज्ञा नहीं पाळे तेने अने अमारे घणुं छेटुं थशे अने ते महा दुःखने

पामशे. माटे जेने महा सुखिया थवुं होय तेने पंचविषयनो त्याग करीने पंचविषयना त्यागी एवा जे संत तेना समागममां रहीने मारी भक्ति करवी ए सर्वे जीवनी हितवार्ता छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २६४ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २६५ विषयः—प्रगट सत्पुरुषने संगे करीने ज अहंकाररूपी माया तराय छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२३ ना आसो वदि १४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये व्यास कुवेरजीनी बेन बाई जनकबाने घेर उगमणा बारना ओरडानी आगळ गादीतकियेयुक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया पछी महाराज कृपा करीने बोल्या जे "भगवाननी मूर्तिने विषे अहंकार नथी अने ते भगवान विना बीजा सर्वेने विषे अहंकार रह्यो छे. अने अहंकार छे ए ज माया छे अने जन्ममरणनुं कारण छे. अने अहंकार जेने टळे छे ते मुक्त थाय छे. ते अहंकार क्यारे टळे छे? तो निरअहंकारी एवा जे परमात्मा अने तेना एकांतिक संत तेने विषे जीव जोडाय छे त्यारे तेनो अहंकार टळी जाय छे, पण प्रत्यक्ष परमात्मा अने तेना संतने विषे जोडाणा विना बीजां कोटि साधन करे तोय अहंकार टळे नहीं अने प्रत्यक्ष परमात्मा अने तेना संत मळ्या विना तो जेम जेम साधन करतो जाय छे तेम तेम अहंकार वधतो जाय छे.

ते जीव साधने करीने जेम जेम मोटपने पामे छे तेम तेम तेनो अहंकार वधतो जाय छे. ते जेम वस्तीना करतां राजाने अहंकार वधारे होय छे अने राजाना करतां देवताने अहंकार वधारे होय छे अने देवताना करतां ब्रह्माने अहंकार वधारे होय छे अने ब्रह्माना करतां विराटने अहंकार वधारे होय छे अने विराटना करतां प्रधानपुरुषने अहंकार वधारे होय छे अने प्रधानपुरुषना करतां मूळप्रकृतिपुरुषने वधारे अहंकार होय छे अने मूळप्रकृतिपुरुष करतां तूर्यापदने पाम्या एवा जे आत्मनिष्ठ-पुरुष तेने वधारे अहंकार होय छे.

अने जेने जेटलो अहंकार छे तेटलुं तेने बंधन छे. ते बंधन थकी कोई पोतानी मेळे छूटवाने समर्थ नथी अने अहंकार टळ्या विना जन्म-मरण टळीने अक्षरधामने पमातुं नथी. माटे जेने अहंकार टाळीने अक्षरधामने पामवुं होय तेने शुद्ध ज्ञानदाता एवा जे परमात्मा प्रत्यक्ष पृथ्वी उपर होय तेनो आश्रय करीने तेनी आज्ञामां वर्तवुं एज अहंकाररूपी महामायाने टळवानो उपाय छे, पण प्रगट भगवान अने संतना आश्रय विना बीजां कोटि साधन करे तो पण अहंकाररूपी माया टळे नहीं. ते उपर गीतानो श्लोक छे.

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्तिते ॥

अर्थ:—श्रीकृष्ण भगवाने कह्युं के 'दैवी अने गुणमयी एवी जे मारी माया केहेतां मारा स्वरूपने जीव नथी जाणतो ते रूप मारी माया ते मने जाण्या विना दुःखे करीने तराय नहीं. अने मने पामे तो ते तत्काळ मायाने तरी जाय.'

माटे प्रगट भगवान अने भगवानना संतनो आश्रय करवो एज एक

अहंकाररूपी मायाने तरवानो उपाय छे. माटे ते मायाने तरवानो समय आज तमारे आव्यो छे ते तमारा भाग्यनो पार नथी. केमके ते समय जीवने मळवो घणो दुर्लभ छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २६५ समाप्त।

———:※:———

श्रीमुखसिद्धांत २६६ विषयः–भगवानना धाममां जीव सकारपणें रहेता हशे के निराकारपणें रहेता हशे ?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२३ ना आसो वदि अमासने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये पटेल भक्त मथुरभाई काळीदासने घेर दक्षिणादे वार ओरडानी ओशरीमां संध्या आरती समये गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराजे सर्वे साधु तथा हरिभक्तने प्रश्न पूछयो जे "आ लोकमां तो सर्वे मनुष्य तथा चोरासी लक्ष योनियो छे ते सर्वेना आकार देखाय छे पण जे भगवानना धाममां जाय छे तेनो केवो आकार हशे? अने ते साकारपणें रहेता हशे? के निराकारपणें रहेता हशे ? ते कहो."

पछी तेनो उत्तर कोईथी थयो नहीं त्यारे महाराज बोल्या जे "एनो उत्तर अमे करीए छीए जे जे भक्त भगवानना धाममां जाय छे ते भगवानना साधर्म्यपणांने पामीने जेवा भगवान दिव्य मूर्तिमान छे तेवो ते भक्त दिव्य मूर्तिमान थको भगवानने विषे अद्वैतपणांने पामीने भगवाननी उपासना करे छे अने भगवानने विषे अद्वैत थया

विना तो भगवानना धाममां जवातुं ज नथी अने चार वेदमां तथा छ शास्त्रमां तथा अढार पुराणमां ए सर्वेमां एम कह्युं छे जे 'परमात्माने विषे अद्वैत थईने परमात्मानी उपासना करवी ए ज मुक्ति छे.' एम प्रतिपादन कर्युं छे.

अने शंकर स्वामीए पण केवळ अद्वैतनुं प्रतिपादन कर्युं छे अने रामानुजे विशिष्टाद्वैतनुं प्रतिपादन कर्युं छे अने वल्लभाचार्ये शुद्धाद्वैतनुं प्रतिपादन कर्युं छे अने माधवाचार्ये द्वैताद्वैतनुं प्रतिपादन कर्युं छे. माटे सर्वेना ए ज मत छे जे परमात्माने विषे अद्वैतपणांने पामीने परमात्मानी उपासना करवी ए ज मुक्ति छे, पण ज्यां सुधी परमात्माने विषे द्वैतभाव होय त्यां सुधी आत्यंतिक मोक्ष जे परमात्मानुं अक्षरधाम तेने पमाय नहीं.

माटे भगवाननो भक्त भगवानरूप थईने, कहेतां भगवान जेवा सर्वे दोष रहित छे तेवो निर्दोष थईने भगवानने भजे छे अने जेवा प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक मूर्तिमान भगवान छे तेवाने तेवा अनंत कोटि मुक्ते विंटाणा थका अक्षरधाममां भगवान रहे छे अने सर्वे मुक्त भगवाननी मूर्ति सामु जोई रहे छे अने अपार सुखने पामे छे. ते सुखनुं वर्णन थाय एम नथी, एवुं अपरिमित सुख छे माटे जे जे परमात्माने विषे अद्वैतपणें जोडाय छे तेज ते सुखने पामे छे. ते वेदमां कह्युं छे जे—

देवो भुत्वा देवान् भजेत्।

अर्थः— जे 'देवरूप थईने देवने भजवा,' कहेतां देव जे परमात्मा ते जेवा वासनाए रहित ब्रह्मरूप थईने परमात्माने भजवा. माटे परमात्मारूप थईने परमात्माने विषे जोडाय छे त्यारे ते भक्तनो भगवान सरखो दिव्य आकार बंधाय छे अने भगवानना ध्याने करीने जे आकार बंधाणो छे ते तेनी ज उपासना करे छे, पण ते विना ते रही शकतो नथी.

जेम परमेश्वरने न जाणता एवा जे अज्ञानी जीवो तेणे अज्ञानरूपी जे माया ते मायारूप थईने मायानुं ध्यान कर्युं तो ते जीवने मायानो आकार बंधाणो छे अने ते मायाथी जीव छे तो नोखो पण मायाने विषे अद्वैतपणाने पामी गया छे. ते देहथी नोखो छे, तो पण जे देहमां जीव पोते रहेतो होय ते देहने कहेशे जे 'आ देह ते हुं छुं अने देहनां सगां ते मारां सगां छे अने देहनी जात ते मारी जात छे.' एम देहने पोतानुं रूप मानीने जेने ध्याने करीने देह बंधाणो छे एवी जे माया ते मायानी उपासना करे छे अने मायाना पदार्थने पामवा सारु अनंत उपाय करे छे अने ते विना क्षण मात्र जीव रही शकतो नथी, केमके ते मायाने विषे अद्वैतपणे जोडाने करीने ते मायानो देह बंधाईने मायारूप थई गयो छे, माटे मायाना पदार्थने भजे छे. अने मायाना पदार्थने भजे छे त्यारे ज तेने मायानो अखंड संबंध रहे छे.

अने जो मायाना पदार्थनो त्याग करे तो तेने मायाने विषे एकता भाव छे ते टळी जाय. अने परमात्मा विना सर्वे मायाना पदार्थ मात्रनो अभाव करीने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे जोडाय तो तेने भगवानना सरखो आकार बंधाय छे अने तेने भगवाननी मूर्ति विना बीजे क्यांय वृत्ति जाय नहीं अने अखंड ते भगवाननी उपासना कर्या करे छे अने जे प्रत्यक्ष परमात्माने विषे दृढ उपासनाए करीने नथी जोडाई जतो तेने मायानो आकार कोई काळे टळतो नथी. माटे मायानो अभाव करीने प्रत्यक्ष परमात्माने विषे जोडाय छे तेनो भगवानना सरखो दिव्याकार बंधाय छे. अने ते दिव्याकारने पामीने मूर्तिमान थका अनंत कोटि मुक्त ते अखंड भगवाननी उपासना कर्या करे छे, पण ते उपासनानो त्याग करता नथी. अने उपासनानो त्याग कोई काळे थतो पण नथी, ए सिद्धांत वार्ता छे."

माटे जेने अविनाशी महा सुखने पामवुं होय तेने मायिक पंचविषयनो त्याग करीने पोताने अखंड अविनाशी आत्मा मानीने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना एकांतिक निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी धर्मानंद स्वामी जेवा संत तेने विषे प्रीतिए करीने जोडाई जवुं अने तेनी आज्ञामां वर्तवुं अने जे पंचविषयनो त्याग करीने भगवान अने भगवानना संतने विषे प्रीति करे छे तेनी भागवती तनु बंधाय छे अने ते अक्षरधामने पामशे.

इति श्रीमुखसिद्धांत २६६ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत २६७ विषय :—देह पहेलो के जीव ? अने जीव एक छे के जुदा जुदा?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ ना कारतक वदि १३ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री डभासी मध्ये पटेल भक्त लालदास हिरजीने घेर आथमणा वारना ओरडानी आगळ चोकमां गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगने विषे गलगोटाना पीळा पुष्पनां आभूषणो शोभी रह्यां हतां. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा वणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया केडे महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान सर्वे सभा प्रत्ये कृपादृष्टि करीने बोल्या जे "सर्वे सुरत दईने सांभळजो आज एक वार्ता करवी छे अने आज वार्ता करीशुं तेने समजशे तेनो ज मोक्ष थशे, पण ते वार्ता समज्या विना बीजा कोटि साधन करे तो पण तेनो मोक्ष थाय नहीं. ते वार्ता कहीए छीए जे आत्माना मोक्षने अर्थे ज

वेदनुं ज्ञान पामवुं जोईए छे पण ते वेदनुं ज्ञान समजवुं घणुं कठण छे अने ते ज्ञान समज्या विना जीवनो मोक्ष थतो नथी. अने जे वेदनुं ज्ञान छे ते परमात्माना श्रीमुखनी ज वाणी छे, पण ते वेदनुं ज्ञान सर्वेने समजवुं घणुं कठण छे. माटे ते वेदना अर्थने जाणवा सारु गौतमादिक महत् ऋषिओए छ शास्त्र कर्यां छे. ते शास्त्रे करीने वेदनो अर्थ साक्षात्कार देखाय छे; ते माटे ए छ शास्त्रने छ दर्शन कहे छे. ते उपर शास्त्र प्रकारनो श्लोक–

द्वौ तर्कौ चैव मीमांसौ द्वौ योगाविति षट् बुधः ।
वेदार्थ दर्शकत्वेन दर्शनानि प्रपच्यते ॥ १ ॥

अर्थ:–बे तर्क दर्शन–एक न्यायशास्त्र अने बीजुं वैशेषिकशास्त्र अने बे मीमांसा, एक पूर्व मीमांसा अने बीजुं उत्तर मीमांसा; पूर्व मीमांसा एटले धर्म शास्त्र अने उत्तर मीमांसा एटले वेदान्त शास्त्र अने बे योगशास्त्र एक सांख्यशास्त्र अने बीजुं पातांजली शास्त्र; ए छ शास्त्र वेदना अर्थने देखाडे छे माटे तेने पंडितपुरुष षट् दर्शन कहे छे. ए छमांथी एक न्यायशास्त्र छे तेनो मत एम छे जे 'जे वस्तु आद्य होय ते अंते रहे छे एटले आद्य वस्तुनो नाश थतो नथी.'

माटे तमने सर्वेने हुं पूछुं छुं जे एक आ जीव छे अने एक जीवनो देह छे. ए बे एक हशे के जुदा जुदा हशे ? ते कहो." पछी सर्वे बोल्या जे "देह अने जीव तो बेय जुदा जुदा छे." पछी वळी महाराज बोल्या जे "देह अने जीव जुदा तो खरा पण ते जीव देहना भेगो उत्पन्न थयो छे ? के देहना मोरनो छे ? के देहना केडे वांसेथी थयो छे? ते कहो."

तेनो उत्तर कोईथी थयो नहीं पछी महाराज बोल्या जे "एनो उत्तर एम छे जे जीवात्मा तो अनादिनो छे, पण ते जीवे आवा चोरासीमां अनेक देह धारण कर्यां छे. हवे कोईने एम शंका थाय जे जीवे

अनेक देह धारण कर्या छे अने जीव देहनी पहेलो छे तेनुं प्रमाण शुं? तो तेनुं प्रमाण ए छे जे देह तो पंचभूतनो विकार छे. ते पंचभूत तो जड छे. माटे जड पदार्थनो तो धर्म एवो छे जे पोतानी मेळे जुदुं पडयुं होय तो भेगुं थई शके नहीं अने भेगुं पडयुं होय तो जुदुं थई शके नहीं. जेम वे पथरा भेगा पड्या होय तो ते पोतानी मेळे जुदा थई शके नहीं अने जुदा पड्या होय तो पोतानी मेळे भेगा थई शके नहीं अने जो कोई जीवतो पुरुप जुदा होय तेने भेगा करे अने भेगा होय तेने जुदा करे त्यारे थाय पण ते विना जुदा के भेगा थाय नहीं. तेम पंचभूतना झींणा झींणा परमाणुओ जुदा जुदा छे. ते परमाणुओ जड छे; तेनो जे देह बंधाय छे ते पहेलो चैतन्य आत्मा न होय तो जड वस्तुनो एनी मेळे देह बंधाय नहीं. माटे देहनी मोरनो पहेलो चैतन्य आत्मा छे. ते आत्माए आर्कपण करीने देह उत्पन्न कर्यो छे. ते उपर वेदनुं प्रमाण (श्रुति)–

तस्मादात्मन आकाश संभूत आकाशाद्वायु,
वायोरग्नि अग्नेराप अद्भ्यः पृथ्वी,
पृथिव्या औपधय औपधिभ्योऽन्नमन्नात्पुरुपः ॥

अर्थ:–आत्मा थकी आकाश उत्पन्न थयो छे अने आकाश थकी वायु थयो छे, वायु थकी अग्नि थयो छे, अग्नि थकी जळ थयुं छे, जळ थकी पृथ्वी थई छे, अने पृथ्वी थकी औपधि थई छे अने औपधि थकी अन्न थयुं छे अने अन्न थकी पुरुप एटले देह थयो छे.

एवी रीते चेतन्य आत्मा जे ते देह थया पहेलो हतो तेने आर्कपण करीने आकाश, वायु, अग्नि, जळ, पृथ्वी तेनां परमाणुंओ जुदां जुदां हतां तेने भेगां करीने तेनो देह उत्पन्न करीने ते देहमां आत्मा रह्यो छे. माटे देहना पहेलो जीवात्मा छे अने ते देहमां आत्मा होय त्यांसुधी देह सचेतन रहे छे अने आत्मा देहमांथी नीसरी जाय छे त्यारे देह नाश

पामे छे अने पंचभूतना परमाणुओ झींणा झींणा थईने पाछा ऊडी जाय छे. माटे जीव देहना पहेलो छे ए वात सिद्ध छे अने ते वातने जे कोई अज्ञाने करीने खोटी कहे तो ते मूर्ख कहेवाय.

अने वळी केटलाक वेद धर्मथी विरुद्ध मतवाळा छे ते एम कहे छे जे 'आत्माने आ पहेलो वहेलोज जन्म थयो छे, पण आगळ जन्म न हतो अने हवे आ देहमांथी आत्मा नीकळशे एटले फरीने जन्म नहीं थाय अने जो आत्माने आ देहना पहेलो आगळ जन्म होय तो अमने सांभरे नहीं ? माटे पूर्वनुं कांई पण सांभरतुं नथी. ते सारु एम जाणीए छीए जे आत्माने पूर्वे जन्म न हतो. अने पूर्वे जन्म न हतो माटे हवे पाछळ पण जन्म पण नहीं थाय.' तो ए वात खोटी छे. केमके आत्माने पहेलो जन्म हतो पण ते सांभरतो नथी तेथी तुं एम कहे छे जे 'मारे जन्म न हतो.' पण ते सांभरे तो नहीं ? केम सांभरे नहीं तो जीवने अज्ञान छे माटे सांभरतो नथी.

तेनुं दृष्टांत जे जेम तुं नानो छ महिनानो अणसमजु बाळक हतो ते दहाडे तुं शुं करतो हतो ते कांई सांभरे छे ? नथी सांभरतुं; माटे ते सांभरतुं नथी ते सारु तुं एम कहीश जे मारे बाळपणुं न हतुं एम कहीश तो तुं मूर्ख कहेवाईश, केमके बाळपणुं तो जरूर हतुं, पण ते अज्ञान अवस्था हती माटे सांभरतुं नथी. तेम जीवने आगळ पूर्वे जन्म हतो पण जीवने अनादिनुं अज्ञान छे माटे सांभरतुं नथी अने पूर्वे जन्म हतो तो पाछळ जन्म पण जरूर थशे. केमके आद्य होय ते अंते रहे छे एवो वेद शास्त्रनो न्याय छे ते कोई काळे मिथ्या थाय नहीं. एवी रीते जीवने मांथे अनेक फेरा जन्म-मरण छे ए वात सिद्ध छे.

हवे एक बीजुं पूछुं छुं के आ सर्व देह छे ते बधाय देहमां जीव

एक छे के देह देह प्रत्ये जुदाजुदा घणाक जीव छे? ते कहो." पछी एक शुष्क वेदांति ब्राह्मण बेठो हतो तेणे कह्युं के "सर्वे देहमां जीव तो एक ज छे." पछी महाराज बोल्या जे "सर्वे देहमां एक जीव नथी. जीव तो देह देह प्रत्ये जुदा जुदा छे, अनेक छे. केमके जुदा जुदा न होय अने सर्वेनो एक ज जीव होय तो एक जीवनो मोक्ष थाय त्यारे सर्वेनो मोक्ष थवो जोईए अने एकना मननुं बीजाने जणावुं जोईए, एक पाप करे तो सर्वेने पाप लागवुं जोईए अने एक मरी जाय तो सर्वेने मरी जवुं जोईए. पण ते तो कांई तेमांथी थतुं नथी. माटे जीव जुदा जुदा घणाक छे ए वात पण सिद्ध छे. अने जे मूर्ख छे अने अतिशय अज्ञानी छे अने जेने घणांक पाप कर्यां छे ते एम कहे छे जे 'सर्वेनो एक जीव छे.' पण जीव जुदा जुदा अनेक छे.

अने सर्वे जीवना आधार अने सर्वेना प्रकाशक एवा परमात्मा भगवान ते एक छे अने सर्वे जीवोने प्रकाश करे छे. जेम आपणी आंखो जुदी जुदी अनेक छे अने ते आंखनो प्रकाशक सूर्य ते एक छे, तेम जीव अनेक छे अने ते जीवोना प्रकाशक सूर्यनी पेठे परमात्मा भगवान एक छे अने ते परमात्मा माया पर छे अने अजन्म्या छे. अने जीव सर्वे मायामां छे अने जन्म-मरणने पामे छे.

ते जन्म-मरणने जीव शेने करीने पामे छे? तो जीवने आत्मा परमात्माना स्वरूपनुं अज्ञान छे तेने करीने जन्म-मरणने पामे छे. त्यां वेदनी श्रुति छे–

'आत्माज्ञानात् जगत्भाति ।'

अर्थः–जीव जे ते आत्मा परमात्माना अज्ञाने करीने जगतमां जन्म मरणने पामे छे. ते अज्ञान जीवने अनादिनुं छे. माटे न्यायशास्त्रमां कह्युं छे जे 'जे आद्य होय ते अंते रहे छे पण तेनो नाश थतो नथी'

माटे जीवने अनादिनुं अज्ञान छे. ते अज्ञान नाश पामवानुं नहीं अने अज्ञान गया विना जीवनो मोक्ष थाय नहीं. त्यां वेदनी श्रुति—

'ऋते ज्ञानान्मुक्तिः'

अर्थः—ज्ञान विना मुक्ति थाय नहीं. अने जो एम कहीए जे 'जीव तो प्रथम शुद्ध अने ज्ञानी हतो अने पछी अज्ञान थयुं छे. माटे अज्ञान नाश थशे अने जीव मोक्षने पामशे.' एम कहीए तो तेमां पण एक बाद आवे छे. जे जीव पहेलो शुद्ध अने ज्ञानी हतो, तेने पछी अज्ञान थयुं छे; त्यारे ते शुद्ध अने ज्ञानी थशे तो पण ते पाछुं तेने वळी पूर्वना स्वभाव प्रमाणे अज्ञान उपजशे केमके एकवार शुद्ध हतोः तेने अज्ञान थयुं तो तेने फरीने पण अज्ञान थाय खरुं. माटे एवी रीते होय तो मोक्ष ज खोटो ठरे छे. केमके अनादिनुं अज्ञान कहीए तो जे अनादि होय तेनो नाश थाय नहीं अने 'पहेलो जीव शुद्ध हतो अने पछी अज्ञान थयुं' एम कहीए तो जेने एकवार अज्ञान थयुं तेने फरीने पण अज्ञान थाय खरुं, माटे एवी रीते मोक्षनो मार्ग खोटो थई जाय छे.

त्यारे कोई एम कहेशे जे 'जीव मुद्दल नथी अने सर्वेमां एक परमात्मा ज छे; बीजुं कोई नथी.' एम कहेशे तो त्यां पण एक मोटो बाध आवे छे. ते शो बाध आवे छे तो एक परमात्मा ज सर्वेमां होय अने जीव मुद्दल न होय तो वेदना कर्मकांड, उपासनाकांड अने ज्ञान-कांड ते खोटा थाय, केमके कर्म एटले कोईकनी आज्ञा कोईकने पाळवी. अने उपासना एटले शिष्ये गुरुनी सेवा करवी. अने ज्ञान एटले जे वस्तुने जीव नथी जाणतो तेने गुरु जणावे ते प्रमाणे जाणवुं.

माटे ते जो एक सर्वेमां परमात्मा ज होय तो कोण कोनी आज्ञा पाळे? अने कोण कोनी सेवा करे? अने कोण कोने जाणे? एवी रीते

जो सर्वेमां एक ज परमात्मा ज होय तो वेदशास्त्र सर्वे खोटां ठरे छे अने जन्ममरण, सुखदुःख, अज्ञान, मोह, माया, कर्म, उपासना, ज्ञान ते सर्वे परमात्माने माथे ठरे. अने आ भूलेला सरखा जीव जणाय छे. ते परमात्मा पोते पोताने ज भूली जाय अने पोते पोताने माने नहीं. वळी पोते पोताने मनावे छे अने पोते पोता साथे लडाई करे छे अने पोताने पोते मानतो नथी अने पोते पोतानी चोरी करे छे अने वळी पोते पोताने केदमां नाखे छे. एवी रीते परमात्मा ज पोते महा क्लेशने पामे के शुं? माटे ए वात पण खोटी ठरे छे. अने परमात्मा तो सर्वथी जुदा छे पण परमात्मा एवा अज्ञानी होय नहीं.

माटे एवी रीते मोक्षनो मार्ग पोतानी मेळे कोई मोटा देव ब्रह्मादिकने पण जडतो नथी. अने जीव पोतानी मेळे जेम जेम छूटवानो उपाय करे तेम तेम ऊलटो बंधातो जाय छे. माटे जीवनो मोक्ष थवो ए तो घणुं ज कठण काम छे, ते सारु सर्वे जीवना जीवन अने सर्वेथी पर अने सर्वेना प्रकाशक एवा जे परमात्मा भगवान ते ज पोते पोतानी स्व-इच्छाए करीने माया पर रह्या थका जीवोने ज्ञान आपीने मोक्ष करवाने अर्थे मनुष्य स्वरूपनुं धारण करीने ज्ञान आपीने जीवोने माया पर करे छे त्यारे ज ते जीवोनुं अज्ञान टळे छे अने मोक्षने पामे छे, पण ते विना मोक्ष थतो नथी.

त्यारे तेमां कोईकने एम शंका थाय जे "जीवने अनादिनुं अज्ञान छे ते न्याय शास्त्रमां तमे एम कहेता हता जे 'जे अनादि होय तेनो तो नाश थाय नहीं' अने वळी कहो छो जे 'प्रगट भगवान मळे अने ते ज्ञान आपे तो अज्ञाननो नाश थाय अने जीवनी मुक्ति थाय.' एम कह्युं तेनुं केम हशे?" एम शंका थाय तो तेनो उत्तर एम छे जे माया पर एवा

जे एक अद्वैत परमात्मा छे ते केवा छे? तो कर्तुमकर्तुम् अने अन्यथा कर्तुम् समर्थ छे. ते कर्तुपणांनो जे परमात्माने विषे गुण छे तेने करीने तो परमात्माए जगतनी उत्पत्ति करी छे; केमके जगतनी उत्पत्तिनी पहेलां जीव महा मायाने विषे घोर सुपुप्तिमां हता त्यारे ते वखते जीवोने कर्म पण न हतुं अने देह पण न हतो. केमके देह विना कर्म थाय नहीं अने कर्म विना देह धराय नहीं. माटे कर्म पण न हतुं अने देह पण न हतो, माटे समर्थ एवा जे परमात्मा तेणे कृपा करीने माया पर करवा सारु जगतनी उत्पत्ति करीने देह सर्जी आप्या छे. तेनी उपर प्रमाण—*श्रीमद्भागवतना दशम स्कंधमां ८७ मा अध्यायमां वीजो श्लोक—*

बुद्धीन्द्रिय मनः प्राणान् जनानामसृजत् प्रभुः ।
मात्रार्थं च भवार्थं च आत्मने कल्पनाय च ॥ २ ॥

प्रभु जे हरि ते जे जन जे जीव तेमनां बुद्धि, इन्द्रियो, मन अने प्राण ते सर्जी आपे छे, ते शा माटे? के विषयादिक भोग भोगववाने अर्थे अने जन्म लेवाने अर्थे अने जन्म लईने कर्म करवाने अर्थे एटले परलोकमां जईने भोग करवाने अर्थे अने अंते अकल्पनाय एटले सर्व लोक भोगादिक थकी वैराग पामीने पोताना मननी कल्पनानो नाश थवाने माटे, एटले मोक्षने अर्थे परमात्मा जे ते देह सर्जी आपे छे.

एवी रीते परमात्माए पोताना सत्य संकल्परूपी कर्तापणांना गुणे करीने प्रथम जगतनी उत्पत्ति करी छे, तेने करीने परमात्मा कर्ता कहेवाय छे. अने ते सृष्टि सर्ज्या पछी जीव जेवां जेवां कर्म करे छे तेवां तेवां फळ तेने विराज पुरुषरूप ईश्वर आपे छे. पण परमात्मा पोते नथी आपता अने पोते तो पोताना अक्षरधामने विषे अखंड रह्या थका अनंत कोटि मुक्तने दर्शन आपे छे; पण पोते बीजुं कांई नथी करता, माटे परमात्मा अकर्ता कहेवाय छे.

अने पोताना अन्यथाकर्तापणांना गुणे करीने जीवोने जे अनादिनुं अज्ञान अने मायानुं बंधन छे तेने रामकृष्णादिक अवतारनुं धारण करीने जीवोने ज्ञान आपीने जे अज्ञान अनादिनुं छे तेनो नाश करे छे. अने जीवोने ब्रह्मरूप करीने मायानुं बंधन टाळीने पोताना प्रत्यक्ष स्वरूपनुं ध्यान करावीने भागवतीतनुं एटले दिव्यमूर्ति धरावीने पोताना साधर्म्य-पणांने पमाडे छे, कहेतां जेवा पोते परमात्मा काळ कर्म मायाए रहित छे तेवो तेनो भक्त काळ कर्म मायाए रहित थाय छे. माटे परमात्माना अवतार जे रामकृष्णादिक भगवान तेने आश्रये करीने ज जीवनी मुक्ति थाय छे, पण ते विना बीजां कोटि साधन करे तो पण जीवनुं अज्ञान अने मायानुं बंधन ते टळे नहीं ते उपर एक प्राकृत साखी छे.–

छूटयाना उपाय करे, तेम तेम जीव बंधाय,
आप वळे छूटे नहीं, छोडे त्रिभुवनराय.

वळी ते उपर गीताना १८ मा अध्यायमां ६६ मो श्लोक

सर्व धर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥

वळी गीताना अध्यायनो श्लोक

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥

एवी रीते वेद, शास्त्र अने पुराणादिकने विषे कहेलुं छे जे कर्तुम-कर्तुम् अने अन्यथाकर्तुं समर्थ एवा जे परमात्मा ते ज प्रत्यक्ष मनुष्य स्वरूपनुं धारण करीने जीवोने ज्ञान आपे छे, त्यारे ज जीवनो आत्यंतिक मोक्ष थाय छे. ते पूर्वे पण जेना जेना मोक्ष थया छे ते पण प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवान जेने मळ्या छे अने तेनो आश्रय करीने ते थकी ज्ञान पाम्या छे तेना ज मोक्ष थया छे.

माटे आजे पण जे प्रत्यक्ष अमारो आश्रय करीने अमारा थकी ज्ञान पामशे त्यारे तेनो आत्यंतिक मोक्ष थशे अने आज नहीं समजाय तो आगळ पण प्रत्यक्ष परमात्मा पृथ्वी उपर हशे अने तेनो आश्रय करशे त्यारे ज तेनो पण मोक्ष थशे, पण प्रत्यक्ष परमात्मा मळ्या विना कोई जीवनो मोक्ष थयो नथी अने थशे पण नहीं, ए सिद्धांत वार्ता छे.

माटे आ वार्ता सर्वे जीव प्राणी मात्रने जरूर एकवार समजवानी छे अने आ वार्ता जेने समजाणी तेने तो मोक्षना मार्गनो मुद्दो हाथ आव्यो जाणवो अने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवानना अवतारनो आश्रय मूकीने कहेतां तेनो त्याग करीने बीजां अनंत साधन करे तथा अनंत ज्ञान कथे, वैराग राखे, भेख ले, संन्यासी थाय, परमहंस थाय, ऊंधे मांथे तप करे पण ते सर्व तेना साधन वृथा छे अने तेने करीने तेने कांई पण सिद्धि थती नथी; केमके जे सर्वेथी पर अने अक्षरातीत परमात्मा परब्रह्म छे ते दिव्यमूर्तिमान छे अने जेथी पर कोई नथी; तेना तेज परमात्मा पोते रामकृष्णादिक अवतारनुं धारण करे छे अने तेनो आश्रय जे जे जीव करे छे तेनो ज साक्षात्कार आत्यंतिक मोक्ष थाय छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २६७ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २६८ विषयः—भगवान साकार के निराकार ? वगेरे प्रश्नो.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ ना कारतक वदि १४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री डभासी मध्ये भट्ट परसोत्तम बापुजीने घेर उत्तरादे बार मेडीनी रवेशमां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. नीला किनखापनो सुरवाल धारण कर्यो हतो अने सोनेरी डगली पहेरी हती. नीला रंगनो सोनेरी रेंटो धारण करीने

ते उपर कसुंबल सोनेरी कोरना छेडानुं शेलुं बांध्युं हतुं अने एक शेलुं खभे नाख्युं हतुं. सोनेरी कसुंबल पाघ मस्तक उपर धारण करी हती अने पीळा पुष्पना हार कंठमां धारण कर्या हता. पाघमां तोरा बे कोरे लटकता हता अने हाथने विषे पुष्पना बाजु अने गजरा धारण कर्या हता. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी ते सभामां जामनगरनो पुराणी ब्राह्मण बेठो हतो तेने महाराजे प्रश्न पूछयो के "परमात्मा भगवान छे ते मूर्तिमान छे के निराकार छे? ते कहो." पछी ते ब्राह्मण कह्युं के "भगवान निराकार छे अने साकार पण कहेवाय छे." त्यारे महाराज बोल्या जे "केवी रीते भगवान निराकार छे अने केवी रीते साकार छे? पछी ते ब्राह्मणे कह्युं के निराकार तो सर्व व्यापक छे अने ते भगवान विना अणुंपण खाली नथी अने ते भगवानमांथी रामकृष्णादिक अवतार थाय छे तेने करीने भगवान साकार कहेवाय छे." पछी महाराज बोल्या जे "निराकार थकी साकार केम थाय?" त्यारे ते ब्राह्मणे कह्युं के "निराकार थकी जेम सृष्टि थई छे तेम रामकृष्णादिक भगवानना अवतार थाय छे." पछी महाराजे पूछयुं जे "सृष्टि थई छे तेवी ज रीते रामकृष्णादिक भगवानना अवतार होय त्यारे तो सर्वे सरखा कहेवाय, माटे सर्वेनुं भजन करवुं जोईए, तो सर्वेनुं तो भजन कोई करतुं नथी अने रामकृष्णादिकनुं भजन थाय छे तेनुं शुं कारण हशे?" पछी ते ब्राह्मणे हाथ जोडीने कह्युं के "हे महाराज! जेम होय तेम यथार्थ तमे अमने समजावो."

त्यारे महाराज बोल्या जे "निराकार थकी तो सृष्टि थाय ज नहीं ए तो सिद्धांत समजवो; केमके निराकार तो सर्वे ठेकाणे रहे ते पोता

विना बीजे क्यांय खाली जग्या होय नहीं. माटे सृष्टिने उपजवानो माग न मळे. अने वळी वेदमां परमात्माने निरंजन अने निर्अवकाश कह्या छे. जे निरअवकाश कहेतां परमात्माने विषे पोल नथी अने निरंजन कहेतां परमात्माने विषे माया नथी ते सारु परमात्माने विषे सजाति, विजाति अने स्वगत भेद नथी. माटे एवी रीते निराकार परमात्मा होय तो सृष्टि थवी न जोईए.

त्यारे हवे तेनुं केम समजवुं ? अने परमात्मा केवा छे तो मूर्तिमान परमात्मा छे. ते दिव्यमूर्ति छे जे जेने विषे मायानो लेश नथी अने निर्अवकाश मूर्ति छे. अने ते मूर्तिना अंगनो प्रकाश छे तेने ब्रह्म कहे छे' ते सर्व व्यापक छे. "

पछी वळी ते ब्राह्मणे प्रश्न पूछयो जे "हे महाराज परमात्मा मूर्तिमान छे त्यारे ते परमात्मा क्यां रहेता हशे ?" पछी महाराज बोल्या जे "परमात्मा माया अने जगत तेथी पर रहे छे. ते जगत क्यां सुधी छे ? तो कान-इन्द्रिय अने दिग्पाळ देव छे त्यां सुधी जगतनो शब्द छे. अने कान गयो एटले शब्द न मळे अने त्वचा छे तो स्पर्शनुं सुखदुःख छे अने त्वचा गई एटले स्पर्श न मळे. अने नेत्र छे तो रूप देखाय छे अने आंख गई एटले रूप न मळे अने रसना छे तो रस छे माटे रसना गई एटले रस न मळे अने नासिका छे तो गंध छे अने नाक गयुं एटले गंध न मळे अने वाणी छे तो बोलवुं छे अने मुख गयुं एटले बोलवुं न मळे अने हाथ छे तो लेवुं-देवुं छे अने हाथ गया एटले लेवुं-देवुं न मळे अने पग छे तो जवुं-आववुं छे अने पग गया एटले जवुं-आववुं गयुं अने मन छे तो संकल्प-विकल्प छे अने मन गयुं एटले संकल्प न मळे. एवी रीते इन्द्रियो अंतःकरणनी वृत्तिओमां जगत छे अने ते वृत्तिओनो त्याग करीने निवृत्ति थवुं ते निवृत्तिरूप अक्षरधाम

छे अने ते अक्षरधामने विषे भगवान रह्या छे. ते निवृत्तिने क्यारे पमाय छे ? तो ते परमात्मा प्रत्यक्ष मळे अने तेनो आश्रय जीव करीने ते थकी आत्यंतिक प्रलयना ज्ञानने जाणे त्यारे ज ते जीव निवृत्तिना पदने पामे छे. अने निवृत्तिने पाम्यो ए ज भगवाननुं धाम छे अने तेमां भगवान अखंड निवास करीने रह्या छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २६८ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २६९ विषय :–मन जीतवानो उपाय.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ ना मागसर सुदि २ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री डभासी मध्ये करशनदास परभुदासने घेर उगमणे बार ओरडानी आगळ गादी तकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पीळा पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी महाराजनी संध्या आरती थया केडे गाम सोजीत्राना भक्त देसाईए एक प्रश्न पूछयो जे " हे महाराज ! मन जीतवानो शो उपाय हशे ? ते कृपा करीने कहो."

पछी महाराज बोल्या जे " धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित प्रत्यक्ष परमात्मानी भक्ति करवी अने पछी ए चार साधन सिद्ध करीने जे स्वरूप पोताने प्राप्त थयुं होय तेनुं आत्माने विषे ध्यान करे, तेनुं मन वश थाय छे अने तेने जन्ममरण टळी जाय छे. पण ते विना बीजां कोटि साधन करे तोय मन वश थाय नहीं.

तेमां धर्मे करीने तो इन्द्रियो जीताय छे अने ज्ञाने करीने देहा-

भिमान टळे छे, कहेतां जेने पोताना आत्माना स्वरूपनुं ज्ञान थाय छे तेने देहनो अहंकार टळी जाय छे अने आत्मज्ञान थयुं होय तोपण तेने पंचविषयमां राग रहे छे अने ते राग ज्यारे चार प्रकारना प्रलयनो विचार करीने पिंड ब्रह्मांडादिकने नाशवंत अने दुःखरूप जाणीने तेथी वैरागने पामे त्यारे टळे.

पछी एवा ज्ञानना आपनारा अने निर्वासनिक करनारा एवा जे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत तेने विषे दृढ प्रीति करे त्यारे ते निर्वासनिक थईने ब्रह्मरूप थाय छे. अने ब्रह्मरूप थईने परब्रह्मने विषे प्रीति करे तेने पिंड ब्रह्मांडादिक लोकभोगनी वासना तो टळी जाय खरी, तोपण तेने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे ध्याने करीने सलग्नपणें जोडाणो न होय त्यांसुधी मन वश थतुं नथी अने मन वश थया विना जन्ममरण टळे नहीं.

ते पूर्वे नारद तथा भरतजी तेणे धर्म, ज्ञान, वैराग अने भगवानने विषे दृढ प्रीति करी हती, तोपण ते प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे ध्याने करीने सलग्नपणें जोडाणां न हता, तो तेनुं मन विकारने पाम्युं अने तेने जन्म धरवा पड्या. माटे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे ध्याने करीने जोडाय छे तेनुं मन वश थाय छे अने तेने जन्ममरण टळी जाय छे. ते सारु जेने मन जीतवुं होय तेने धर्म, ज्ञान, वैरागने दृढ करीने प्रत्यक्ष भगवाननी नवधा भक्तिए करीने भगवाननी मूर्तिमां जोडाई जवुं ए ज मन जीतवानो उपाय छे, पण ते विना बीजो उपाय नथी. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे. माटे जेने मन वश करीने परमपदने पामवुं होय, तेने भगवान अने भगवानना निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी संत तेने विषे प्रीतिए करीने जोडाई जवुं."

इति श्रीमुखसिद्धांत २६९ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २७० विषय :-पातांजली योग दर्शन.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ना मागशर सुदि ११ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री विरोल मध्ये पटेल मथुरभाई रणछोडभाईने घेर आथमणा वारना ओरडानी आगळ गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पीळा पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराजनी संध्या आरती थया पछी श्रीहरिकृष्ण महाराज कृपा-करीने बोल्या जे " सर्वे सांभळो एक वात करवी छे अने आ वात करशुं तेने जे समजशे ते जीवनो मोक्ष थशे. ते वात कहीए छीए जे परमेश्वरे जीवोनी मुक्ति करवाने अर्थे वेद कर्या छे अने ते वेदना ज्ञानने साक्षात्कार करवाने अर्थे छ शास्त्र कर्यां छे तेनो श्लोक—

द्वौ तर्कौ चैव मीमांसौ द्वौ योगाविति षट् बुधः ।
वेदार्थ दर्शकत्वेन दर्शनानि प्रपच्यते ॥ १ ॥

अर्थः—बे तर्कदर्शन एक न्यायशास्त्र अने बीजुं वैशेषिकशास्त्र, बे मीमांसा, एक पूर्वे मीमांसा एटले धर्मशास्त्र अने बीजुं उत्तर मीमांसा एटले वेदांतशास्त्र अने बे योगशास्त्र, एक सांख्यशास्त्र अने बीजुं पातांजली शास्त्र; ए छ शास्त्र वेदना अर्थने साक्षात्कार देखाडे छे.

माटे हवे ए छ शास्त्रमांथी एक पातांजली योग दर्शननी वात आज करीए छीए. अने ए शास्त्रनुं पातांजली एवुं नाम शाथी पडयुं छे? तो तेना कर्ता पातांजली ऋषि छे, माटे ते ऋषिने नामे करीने ते शास्त्रनुं नाम पातांजली पडयुं छे. अने ए योग एवुं नाम शुं करवा पडयुं छे? तो

जीवने परमेश्वरनो वियोग अनादिकाळनो छे. तेने करीने जीव जन्म-मरणने पामे छे. ते जीवने हवे परमेश्वरनो योग थाय तो जन्ममरण टळे. ते योग परमेश्वरनो जीवने थाय तेनी रीत बधीए आ पातांजली शास्त्रमां कही छे. माटे ए शास्त्रनुं योगदर्शन एवुं नाम पडयुं छे.

हवे परमेश्वरनो योग थवामां जीवने अंतराय शुं छे? तो जीवने विषे छ दोष छे अने परमेश्वर ए छ दोषे रहित छे. ते छ दोष कया? तो (१) अविद्या (२) अस्मिता (३) राग (४) द्वेष (५) अभिनिवेश अने (६) कर्मविपाक. ए छ दोष जीवने विषे छे. ते छ दोषनो जीव त्याग करे त्यारे ते जीवने परमेश्वरनो योग थाय छे, पण ते विना परमेश्वरने पमातुं नथी.

हवे ए छ दोषने ओळखावीए छीए जे अविद्या एटले शुं? तो सत्यने असत्य मानवुं अने असत्यने सत्य मानवुं, कहेतां पोतानुं सत्य स्वरूप जे आत्मा अने आत्माना प्रकाशक एवा जे परमात्मा परमेश्वर तेने भूलीने असत्य एवो जे देह अने असत्य एवां जे देह संबंधी पदार्थ तेने साचां मानीने तेने विषे अहं ममत्व करे छे अने तेने करीने जन्म, मरण, गर्भवास अने चोरासीनां मह्वा दुःखने भोगवे छे, एनुं नाम अविद्या कहेवाय छे. माटे ए दोष जीवने विषे छे अने परमेश्वरमां ए दोष नथी.

अने बीजो दोष अस्मिता एटले जीवमात्र अंतःकरणने 'हुं' एवुं कहे छे, पण अंतःकरणथी तो आत्मा जुदो छे अने अंतःकरण तो अविद्या मायानुं छे. माटे ए दोष जीवमां छे अने परमेश्वरमां ए दोष नथी; केमके परमेश्वरनी मूर्तिने विषे तो मुद्दल मायानो भाग ज नथी. माटे परमेश्वरने अंतःकरण नथी, तेथी परमेश्वर 'हुं' एम कहेता नथी.

अने त्रीजो दोष राग छे. राग एटले मिथ्या सुखमां प्रीति तेनुं

नाम राग छे, कहेतां खोटा देहने पोषण करे एवां जे पंचविषयनां पदार्थ तेने भोगववानी घणी इच्छा राखे छे. माटे ए दोष जीवने विषे छे अने परमेश्वरने कोई पदार्थमां प्रीति नथी एटले परमेश्वर पूर्णकाम छे, माटे ए दोष परमेश्वरने विषे नथी.

अने चोथो दोष द्वेष छे एटले रागवान पदार्थ होय अने तेनो कोई भंग करे अथवा नाश थाय त्यारे जीव क्रोध करीने विरूप थई जाय छे कहेतां बेभानी थई जाय छे. ए दोषजीवमां छे अने परमेश्वरमां ए दोष नथी. केमके कोई पदार्थमां राग होय त्यारे द्वेष थाय छे. माटे परमेश्वरने राग नथी तेथी कोई उपर द्वेष पण नथी.

अने पांचमो दोष अभिनिवेश छे. अभिनिवेश एटले जीवने देह मूकती वखते अतिशय मुंझवण थाय छे कहेतां बेभान थईने घणा वलोपात करे छे. माटे ए दोष जीवमां छे अने परमेश्वरमां, ए दोष नथी, केमके परमेश्वरने देह धरवो पडतो नथी तेम मूकवो पण पडतो नथी. अने परमेश्वर तो अखंड मूर्ति छे कहेतां परमात्मानी मूर्तिने विषे पंचभूतात्मक मायानो भाग नथी माटे परमात्मानी मूर्तिने विषे देह-जीव एवो भेद नथी; परमात्मानी तो मूर्ति ज परमात्मा छे. जेम साकरनुं नाळियेर होय तेनो गोळो, काचली अने चोटली सर्वे साकरनुं छे, तेम परमात्मानी मूर्ति साकरना नाळियेरनी पेठे तेनां इन्द्रियो, अंतःकरण सर्वे परमात्मा छे. माटे ते परमात्मानी मूर्ति अखंड अविनाशी छे. ते सारु परमात्माने विषे अभिनिवेशरूपी दोष नथी. अने जीवनो देह तो जेम नाळियेरनुं नाळियेर होय तेमांथी फोडीने गोळानुं ग्रहण कराय छे अने काचली अने चोटली नाखी देवाय छे. तेम जीवनो देह काचली-चोटलीनी पेठे मिथ्या छे, एटले उपजे छे अने नाश थाय छे

अने तेमां गोळारूपी जीव चैतन्य आत्मा छे ते सत्य छे. माटे जीवने देह धरवो पडे छे अने मूकवो पडे छे. तेथी जीवने विषे अभिनिवेशरूपी दोष छे.

अने जीवने विषे छट्ठो कर्मविपाकरूपी दोष छे. कर्मविपाक एटले जीवे कर्यां जे कर्म तेना भोग सुखदुःख ते जीवने भोगववुं पडे छे अने परमेश्वरने कर्मनो भोग भोगववो पडतो नथी. माटे ए दोष जीवने विषे छे पण परमेश्वरने विषे ए दोष नथी.

माटे ए छ दोष टाळवाने अर्थे अने परमात्माना स्वरूपने पामवाने अर्थे योगनुं ज्ञान सिद्ध करवुं ते योगनां आठ अंग छे. ते आठ अंग कया? तो (१) यम (२) नियम (३) आसन (४) प्राणायाम (५) प्रत्याहार (६) ध्यान (७) धारणा (८) समाधि; ए योगनां आठ अंग कहेवाय छे.

हवे तेनां रूप कहीए छीए जे यम एटले शुं? तो यमना पांच भेद छे (१) अहिंसा (२) सत्य (३) अस्तेय (४) ब्रह्मचर्य (५) अपरिग्रह; ए पांचने यम कहीए. हवे ते पांचनां रूप कहीए छीए जे अहिंसा एटले कोईना आत्माने मन, वाणी अने कायाए करीने पीडा थाय एम करवुं नहीं, तेनुं नाम अहिंसा कहेवाय छे. अने सत्य एटले मन तथा वाणीए करीने यथार्थपणे वर्तवुं, कहेतां वाणीए करीने जुठुं न बोलवुं अने मनमां अधर्म–अनीतिनो संकल्प न करवो तेनुं नाम सत्य कहेवाय छे. अने अस्तेय एटले कोईनी पारकी वस्तु चोरवी नहीं कहेतां धणीयाती वस्तु कोईनी माग्या विना लेवी नहीं तथा जोराए लेवी नहीं, तेनुं नाम अस्तेय कहेवाय. अने ब्रह्मचर्य एटले गृहस्थ पुरुषने परस्त्री संगनो त्याग करवो, अने सधवा स्त्री होय तेने परपुरुषना संगनो त्याग करवो, अने विधवा स्त्री होय तेने पुरुष मात्रना संगनो त्याग करवो अने त्यागी एवा जे साधु ब्रह्मचारी संन्यासी परमहंस आदिक जेणे

संसारनो त्याग कर्यो होय तेने अष्ट प्रकारे स्त्री मात्रनो त्याग करवो तेनुं नाम ब्रह्मचर्य कहेवाय छे. अने अपरिग्रह एटले पंचविषयना उत्तम पदार्थ अने भोगनो त्याग करवो कहेतां इन्द्रियोने प्रिय लागे एवा जे उत्तम पदार्थ तेनुं ग्रहण करवुं नहीं. तेनुं नाम अपरिग्रह कहेवाय छे.

एवी रीते पांच प्रकारनुं जे योगनुं पहेलुं अंग यम तेने जे बराबर पाळे छे ते महाव्रतधारी योगी कहेवाय छे अने ए योगनुं अंग पहेलुं जे यम तेने जे दृढ करे छे तेने अष्टांगयोग सिद्ध थाय छे. अने जे यम-नियमने पाळ्या विना जे योग साधवा बेसे छे अने ध्यान करे छे, पण तेने कोई दहाडो योग सिद्ध थतो ज नथी अने ध्यान पण तेने थतुं ज नथी अने यम-नियम पाळ्या विना जे एम कहे जे 'हुं योग साधुं छुं,' एम कहेनाराने पाखंडी जाणवो. अने जे आ कह्युं पांच प्रकारनुं यम तेने बराबर पाळीने विषयासक्तिनो त्याग करे छे तेने खरो योगी जाणवो. अने एवा योगीने तत्काल योग सिद्ध थाय छे, कहेतां तेने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो निश्चय अने माहात्म्ये सहित प्रीति थाय छे अने तेनो मोक्ष थाय छे. माटे जेने परमात्माने पामवुं होय तेने प्रथम पांच प्रकारनुं यम तेने बराबर पाळवुं अने यम-नियमादिक आठ योगनां जे अंग छे ते परमात्माना ज ए आठे गुण छे. ते परमात्मानो गुणने पोताना आत्माने विषे धारण करवा ए ज जीवने परमात्माना योग थयो कहेवाय छे कहेतां यम, नियमादिक आठमांथी जेटला गुण जीवमां आवे छे तेटला तेना आत्मामां परमात्मा निवास करे छे. अने जेटला गुण जीवमां आवे छे तेटला दोष ते जीवना टळे छे. अने ज्यारे आठे अंग योगनां सिद्ध थाय छे त्यारे जीवने विषे जे दोष छे ते बधाय दोष टळी जाय छे अने ज्यारे दोष टळे छे त्यारे ते आत्माने विषे परमात्मा साक्षात्कार निवास करीने अखंड रहे छे. अने परमात्मा

ज्यारे अखंड आत्मामां रहे छे त्यारे ज ते आत्मानी जन्म-मरणे रहित एवी आत्यंतिक मुक्ति थाय छे. माटे योगनां आठ अंग जीवने जरूर सिद्ध करवाना छे, तेथी पूर्वे कह्युं जे पांच प्रकारनुं यम तेने बराबर सिद्ध करवुं.

पछी योगनुं बीजुं अंग जे नियम छे तेने सिद्ध करवुं.

हवे नियम एटले शुं ? तो नियम पण पांच प्रकारनुं छे. ते पांच प्रकार कया ? तो (१) शौच (२) संतोष (३) स्वाध्याय (४) तप (५) ईश्वर प्रणिधान, ए पांच प्रकारनुं नियम छे. तेमां शौच एटले शुं ? तो शौच बे प्रकारनुं छे. एक बाह्यशौच छे एटले माटी तथा जळ ते थकी स्थूळ शरीरना मळ धोवा कहेतां शरीर जळे करीने शुद्ध राखवुं तथा घर लींपवे करीने पवित्र राखवुं तेनुं नाम बाह्यशौच कहेवाय छे. अने बीजुं आभ्यांतर शौच एटले सौहार्दिक बडे करीने राग, द्वेष, काम, क्रोध, लोभादिक वगेरे अंतःकरणना मळ धोवा कहेतां काम, लोभादिक दोषनो त्याग करवो तेनुं नाम आभ्यांतर शौच कहेवाय छे. अने बीजुं संतोष राखवो एटले सर्व पदार्थने विषे पूर्णता राखी मनने ते थकी पाछुं वाळवुं, कहेतां कोई पदार्थने पामवानी इच्छा राखवी नहीं, तेनुं नाम संतोष कहेवाय छे. अने त्रीजुं तप करवुं एटले पोत पोताना स्वधर्म प्रमाणे यथार्थ वर्तवुं तेनुं नाम तप कहेवाय छे. अने चोथुं स्वाध्याय करवो एटले ॐकार पूर्वे उच्चार करीने वेदना मंत्र भणवा कहेतां गायत्री आदिक वेदना मंत्रनो जप करवो तथा वेद, शास्त्रने भणवा-वांचवानो अभ्यास करवो, तेनुं नाम स्वाध्याय कहेवाय छे. अने पांचमुं ईश्वर प्रणिधान करवुं एटले जे जे शुभ कर्म करवुं ते परमात्माने अर्पण करवुं कहेतां फळनी इच्छाए रहित निष्कामभावे परमात्मा प्रसन्न थाय ते सारु शुभ कर्म करवुं, तेनुं नाम ईश्वर प्रणिधान कहेवाय छे.

एवी रीते योगनुं अंग बीजुं नियम छे. ते नियम जे यथार्थ पाळे छे तेनुं अंतःकरण शुद्ध थाय छे अने तेने तमोगुण अने रजोगुण ते नाश पामी जाय छे अने तेने शुद्ध सत्त्वगुणनो प्रकाश थाय छे अने ते आत्मा योगांगी थाय छे, कहेतां परमात्माना स्वरूपनुं ध्यान करवानो अधिकारी थाय छे. माटे योगना करनारा योगीने प्रथम यम अने नियम ए बेय अंगने सिद्ध करवां अने पछी तेने परमात्मानुं ध्यान करवा बेसवुं तो तेने ध्यान करवामां सुख आवे छे.

हवे त्रीजुं योगनुं अंग आसन वाळवुं एटले ध्यान करवा बेसवुं तेने अर्थे बेठक सिद्ध करवी कहेतां स्वस्तिकासन, दंडासन, पद्मासन इत्यादिक चोरासी आसन कहेवाय छे अने ते आसन अभ्यासवडे आवडे छे अने ए आसन स्थिर थाय छे त्यारे तेने ध्यानमां जेटली वार बेसवुं होय तेटली वार बेसाय छे, पण आसन स्थिर थया विना ध्यानमां झाझावार रहेवातुं नथी. माटे ध्यान करनारा योगीने आसन स्थिर करवुं.

हवे चोथुं योगनुं अंग प्राणायाम करवा एटले प्राणने स्थिर करवो. ते प्राणने स्थिर करवाने अर्थे प्रथम आहार-विहारादिक देहनी चेष्टा क्रिया ते युक्त करवी, कहेतां आहार-विहारादिक झाझु न करवुं तेम अतिशय थोडुं पण न करवुं. एवी रीते अवश्य घटे तेटलुं करवुं अने पछी प्राणायाम करवुं. ते प्राणायाम करवाना त्रण भेद छे. (१) पूरक (२) कुंभक अने (३) रेचक. एटले नासिकाए करीने श्वासने ताणीने भीतर श्वासने भरवो तेनुं नाम तो पूरक कहे छे, ते श्वासने घडामां जळनी पेठे भीतर रोकी राखवो तेनुं नाम कुंभक कहेवाय छे. अने भीतरना श्वासने पाछो बहार काढवो तेनुं नाम रेचक कहेवाय छे. एवी रीते आहार-विहार युक्त करीने प्राणने स्थिर करवो तेनुं नाम प्राणायाम कहेवाय छे. ए प्राणायाम करवा थकी चित्तना क्लेश मटी जाय छे.

हवे पांचमुं योगनुं अंग प्रत्याहार छे, प्रत्याहार एटले पोत पोताना विषयो थकी इन्द्रियोने पाछी वाळीने पोताना आत्माने विषे जोडी राखवी, कहेतां एम विचार करवो जे 'हुं आत्मा छुं, सुखरूप छुं, ज्ञानरूप छुं, अने जे देहादिक पिंड ब्रह्मांड छे ते मिथ्या छे, दुःखरूप छे, पापरूप छे, नाशवंत छे.' एम समजीने इन्द्रियोनी वृत्तिओने आत्मा सन्मुख करवी. अने इन्द्रियोनी वृत्तिओ ज्यारे वहारना विषयो उपर जती नथी त्यारे तेनुं चित्त स्थिर थाय छे अने चित्त स्थिर थाय छे त्यारे पछी कोई इन्द्रियो विषय उपर जती नथी, केमके चित्तनी पाछळ सर्वे इन्द्रियो जाय छे. माटे प्रथम विषयो उपरथी चित्तने पाछुं वाळवुं अने चित्त पाछुं वळतां सर्वे इन्द्रियो विषय थकी पाछी आवे छे अने इन्द्रियो पाछी वळतां इन्द्रियोनी वृत्तिओ स्थिर थाय छे. एवी रीते प्रत्याहारनो अभ्यास करवा थकी इन्द्रियो वश थाय छे अने इन्द्रियो वश थई तेने पछी परमात्मानुं अखंड ध्यान थाय छे. माटे एवी रीते आत्मा-अनात्मानो विचार करीने विषय थकी इन्द्रियोने निवृत्ति पमाडवी अने ते वृत्तिओने अखंड आत्मा सन्मुख राखवी, तेनुं नाम प्रत्याहार कहेवाय छे.

हवे छट्ठु योगनुं अंग ध्यान एटले पोताना आत्माने विषे रहेवा-वाळा अने आत्माना प्रकाशक एवा जे परमात्मा रामकृष्णादिक भगवान प्रत्यक्ष ज्ञानदाता सद्गुरु तेनी मूर्तिने आत्मामां धारीने ते मूर्तिनुं एकेकुं अंग संभारी संभारीने ते ते अंगनुं पोताना मनमां चिंतवन करवुं अने ते मूर्तिमां मनने घडी घडी बे बे घडी स्थिर करवुं, तेनुं नाम ध्यान कहेवाय छे.

हवे योगनुं सातमुं अंग धारणा छे. धारणा एटले प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने समग्रपणें एकतार आत्मामां जोई रहेवुं अने ते मूर्तिमांथी अंतःकरणनी वृत्ति क्यांय जाय नहीं, तेनुं नाम धारणा कहेवाय छे.

हवे आठमुं योगनुं अंग समाधि छे. समाधि एटले शुं ? तो प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे ध्यान-धारणारूप जे संकल्प-विकल्प ते टळीने ध्येयाकार वृत्ति थई जाय कहेतां प्रत्यक्ष सद्‌गुरु परमात्मानी मूर्तिने विषे निर्विकल्प निश्चय अने माहात्म्ये करीने सलग्नपणें एक तार जोडाई जवुं तेनुं नाम समाधि कहेवाय छे.

एवी रीते आठ अंगे सहित योग सिद्ध थयो ते आत्मा ब्रह्मरूप थाय छे अने तेने विषे परमात्मा अखंड निवास करीने रहे छे. अने ते आत्माने विषे जे छ दोष छे तेनां बीज बळी जाय छे. पछी फरीने तेने जन्ममरण रहेतुं नथी अने जे पुरुषे आठ अंगे सहित योग सिद्ध कर्यो कहेतां प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय जेने थयो ते पुरुष कोई विषय सिद्धिमां मोह पामतो नथी तथा तेने एम दृढ समजण रहे छे जे 'सर्वे देह इन्द्रियादिक जड पदार्थोथी हुं चैतन्य आत्मा जुदो छुं अने सर्वेना अधिष्टाता कहेतां सर्वेना कारण, आधार अने प्रकाशक एवा जे परमेश्वर परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान ते सर्वेथी जुदा छे.' एम शुद्ध विवेकवाळो थाय छे.

अने एवी रीते विवेकवाळो थईने देह इन्द्रियो वगेरेने अनित्य, अशुद्ध अने दुःखरूप जाणे छे तेटला माटे तेना उपर वैराग राखे छे. अने ते वैरागे करीने अंतःकरणमांथी दोषनां बीज क्षय पामे छे अने दोष क्षय पाम्या एटले ते आत्माने विषे परमात्मा अखंड निवास करीने रहे छे ते योगी प्रकृतिना बंधनथी छूटीने मुक्त थाय छे. अने मुक्त थईने परमात्माना स्वरूपने विषे अखंड जोडाई जाय छे, कहेतां तेने अखंड परमात्मा विना बीजुं कांई सांभरतुं नथी. अने तेने देह मूकीने फरीने जन्ममरण रहेतुं नथी.

माटे जेने पोताना आत्माना मोक्षनी इच्छा होय अने जन्म, मृत्यु अने चोरासीनां महा कष्टने टाळवुं होय तेने आ कह्यो जे अष्टांग योग तेनो जरूर अभ्यास करवो अने योगनो अभ्यास करशे तेने जरूर परमात्माना स्वरूपनी प्राप्ति थशे पण योगनो अभ्यास कर्या विना कोई दहाडे परमात्मानी प्राप्ति थती नथी. माटे योग राखवानी मोटी जरूर छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २७० समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत २७१ विषयः–पंचदेवमां कोण मोटा ? अने वैकुंठ, गोलोकादिक पांच धामना भेद.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ ना मागशर वदि ६ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री कावीठा मध्ये पटेल भक्त रेवनदास वालाभाईने घेर उत्तरादा वारना ओरडानी ओशरीमां गादीतकिये युक्त पलंग बीछाव्यो हतो ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. कुमकुमनो चांदलो कर्यो हतो अने संध्या आरतीने समये पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी मोटी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी महाराज श्रीहरिकृष्ण महाप्रभुजी कृपादृष्टि करीने सभा प्रत्ये बोल्या जे " आज तो कांईक प्रश्न पुछो तो वार्ता करीए." पछी ते गामना विप्र उपाध्याय रेवाशंकर सेवकरामे प्रश्न पूछयुं जे "हे महाराज ! शीव अने विष्णु ए बे छे तेमां कोण मोटा हशे अने कोण नाना हशे ? अने शास्त्रमां तो विष्णु पुराणने विषे विष्णुने भगवान कह्या छे अने शीवने विष्णुना भक्त कह्या छे अने शीवे विष्णुनी

भक्ति अने स्तुति करी छे. अने शीवपुराणने विषे शीवने भगवान कह्या छे अने विष्णुने तेना भक्त कह्या छे अने विष्णुए शीवनी भक्ति अने स्तुति करी छे; एम कह्युं छे. माटे तेनुं केम समजवुं? ते कृपा करीने कहो."

पछी महाराज बोल्यो जे "बहु सारु प्रश्न पूछ्युं. हवे सांभळो तेनो उत्तर करीए छीए जे सर्वोपरि अक्षरातीत परब्रह्म परमात्मा जगतकर्ता परमेश्वर एक छे. ते परमेश्वरना पांच अंग छे; अंग एटले परमेश्वरना पांच गुण छे. ते पांच गुण कया? तो एक सूर्यरूपे गुण छे, बीजो शक्तिरूपे गुण छे. त्रीजो विष्णुरूपे गुण छे, चोथो गणपतिरूपे गुण छे अने पांचमो शीव रूपे गुण छे; ए पांचदेव रूपे परमात्माना पांच गुण छे अथवा परमात्माना पांच अंग पण कहेवाय छे.

हवे ए पांचना रूप कहुं छुं जे सूर्य एटले आत्यंतिक प्रलयने विषे जगतनो अंधकार हतो कहेतां जगत नो'तुं अने जीव महाकारण रूप मायाने विषे घोर सुषुप्तिमां हता तेने परमात्माए जगतनी उत्पत्ति करीने अने प्रकाश कर्यो कहेतां जीवोने बुद्धि, इन्द्रियो, मन, प्राणादिक सर्जी आप्यां. तेनो श्रीमद् भागवतने विषे ८७ अध्यायमां २ श्लोक—

बुद्धीन्द्रिय मनः प्राणान् जनानामसृजत् प्रभुः ।
मात्रार्थं च भवार्थं च आत्मने कल्पना च ॥

अर्थः—'प्रभु जे परमात्मा ते जे ते जन जे जीव तेमनां बुद्धि, इन्द्रियो, मन अने प्राण तेने सर्जी आपे छे. ते शा माटे? तो विषयादिक भोग भोगववाने अर्थे अने वारे वारे जन्म लेवाने अर्थे अने जन्म लईने कर्म करवाने अर्थे एटले कर्म करीने परलोकमां जईने भोग करवाने अर्थे अने अंते पोताना मननी कल्पनानो त्याग थवाने अर्थे एटले मोक्षने काजे सर्जी आपे छे.' एवी रीते परमात्माए जगतने प्रकाश्युं छे माटे परमात्मानुं नाम सूर्य कहेवाय छे.

—अने तेना ते परमात्मा जे ते पोतानी एक आकर्षण शक्तिए करीने अनंत कोटी ब्रह्मांडने आधार आपीने पोते तोळी रह्या छे, माटे परमात्मानुं बीजुं नाम शक्ति कहेवाय छे.

—अने तेज परमात्मा सर्वे जीवोना इन्द्रियोना गण तेने देवरूपे प्रकाश करे छे, माटे परमात्मानुं त्रीजुं नाम गणपति कहेवाय छे.

—अने तेज परमात्मा अनंत कोटी विश्वना जीव प्राणी मात्र तेनुं भरण-पोषण करे छे अने ते अंतरयामी रूपे सर्वेमां व्यापीने रह्या छे अने जे जीवनुं जेवुं कर्म ते प्रमाणे तेने फळ आपे छे, माटे परमात्मानुं चोथुं नाम विष्णुं कहेवाय छे.

—अने तेना ते परमात्मा जे ते जीवोना मोक्ष करवाने अर्थे चार प्रकारना प्रलयनुं ज्ञान करावीने लोक भोगादिकथी वैराग पमाडीने मुक्ति आपे छे अने कल्याण करे छे, माटे परमात्मानुं पांचमुं नाम शीव कहेवाय छे तथा शंकर पण कहेवाय छे; शंकर एटले प्रलयनुं ज्ञान करावे छे माटे शंकर कहेवाय छे अने कल्याण करे छे माटे शीव कहेवाय छे.

एवी रीते एक परमात्मा छे तेणे जगतनो प्रकाश कर्यो तेथी सविता एटले सूर्यनारायण कह्या छे. अने पोतानी शक्ति एटले पोताना सामर्थ्ये करीने अनंतकोटी ब्रह्मांडने तोळी रह्या छे तेथी परमात्माने शक्ति कह्या छे. अने सर्वे जीवोना इन्द्रियोना गणने प्रकाश करे छे तेथी परमात्माने गणपति कह्या छे. अने सर्वे जीवोने भरण-पोषण करे छे अने कर्मफळ आपे छे तेथी परमात्माने विष्णु कह्या छे. अने प्रलयनुं ज्ञान करावीने जीवोना कल्याण करे छे तेथी परमात्माने शंकर तथा शीव कह्या छे. एवी रीते पांचदेव रूप परमात्मा एक छे पण तेमां कांई भेद नथी तथा कोई नाना मोटा नथी एक ज छे.

हवे शास्त्रने विषे कह्युं छे के 'एक बीजानी भक्ति करी छे अने एक बीजानी स्तुति करी छे.' तेनुं एम छे जे प्रथम परमात्माए जगतनी उत्पत्ति करीने पछी ते जगतना जीवोने ज्ञान आपीने मोक्ष करवाने अर्थे पोते अक्षरधाममां अखंड रह्या थका पृथ्वी उपर अवतार धारण करे छे. ते परमात्माए अवतार धारण करीने प्रथम ब्रह्माने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आप्युं. ते शेने करीने ज्ञान आप्युं? तो पंचदेवरूप पोताना पांच ऐश्वर्य छे तेने करीने परमात्माए पोताना स्वरूपनुं ज्ञान ब्रह्माने कराव्युं छे.

ते प्रथम तो ब्रह्माने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान नो'तुं माटे प्रत्यक्ष परमात्माने ओळखतो नो'तो. पछी परमात्मा पोते सद्गुरुरूपे परोक्ष रहीने पोताना परब्रह्म स्वरूपनुं ज्ञान ब्रह्माने आप्युं; परोक्ष एटले ब्रह्मा जे स्वरूपने नथी जाणतो, कहेतां प्रत्यक्ष मूर्तिने परमात्मा नथी जाणतो. माटे ते स्वरूपने ओळखाववा सारु प्रथम पोतानो जगतनी उत्पत्ति करवारूप सूर्यनो गुण कहेतां पोतानुं सूर्यरूप तेनुं वर्णन कर्युं के परमात्मा परमेश्वर केवा छे? तो सूर्यरूप छे, जेने आ विश्वने प्रकाश कर्यो छे. एवी रीते सूर्यरूप परमात्मानो महिमा कह्यो अने तेनी भक्ति पोते करी बतावी अने तेनी स्तुति करी बतावी छे. पछी ते सूर्यरूप परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान ब्रह्माने थयुं. ते सर्वे ज्ञान ब्रह्माए लखी राख्युं.

पछी प्रत्यक्ष परमात्माए पोतानुं शक्तिरूपे वर्णन कर्युं अने तेनी भक्ति अने स्तुति करी. ते शक्तिरूप परमात्मानुं ज्ञान पण ब्रह्माने थयुं. ते ज्ञान पण ब्रह्माए लखी राख्युं. पछी गणपतिरूप परमात्माए पोतानुं वर्णन करीने ब्रह्माने ज्ञान कराव्युं अने तेनी भक्ति अने स्तुति करी देखाडी. पछी ते गणपतिरूप परमात्मानुं ज्ञान पण ब्रह्माने थयुं. ते ज्ञानने पण ब्रह्माए लखी लीधुं. पछी विष्णुरूपे पोते पोताना स्वरूपनुं

वर्णन कर्युं अने तेनी भक्ति अने स्तुति करी देखाडी. पछी ते विष्णुरूप परमात्मानुं ज्ञान पण ब्रह्माने थयुं. ते ज्ञानने पण ब्रह्माए लखी लीधुं. पछी शंकररूपे परमात्माए पोताना स्वरूपनुं वर्णन कर्युं अने तेनी भक्ति अने स्तुति करी देखाडी. पछी ते शंकररूप परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान पण ब्रह्माने थयुं त्यारे तो ब्रह्मानी दृष्टिमांथी जगत टळी गयुं, कहेतां कोई आकारमात्र दृष्टिमां रह्यो नहीं अने एक ब्रह्माकार दृष्टि थई गई.

पछी ब्रह्माए विचार कर्यो जे 'आवुं माया पर ज्ञान आपीने मने ब्रह्मरूप जेणे कर्यो एवा जे आ प्रत्यक्ष ज्ञानदाता सद्‌गुरु ते ज पोते पंचदेवरूपे परमात्मा छे पण ते विना बीजो कोई परमात्मा नथी. केमके बीजा जीवो तो सर्वे मायामां छे. मांटे तेने माया पर एवा जे परमात्मा तेना स्वरूपनुं ज्ञान होय नहीं. अने जीवो तो बधाय जगतनी उत्पत्ति पहेला घोर सुषुप्तिमां हता माटे तेने जगतनी उत्पत्तिनुं ज्ञान होय नहीं. अने ज्यारे जगतनो प्रलय थाय छे त्यारे पण कोई जीवनो आकार रहेतो नथी माटे प्रलयनुं ज्ञान पण ते कोई जीवोने होय नहीं माटे उत्पत्ति, प्रलयादिकनुं ज्ञान जेनी पासे परिपूर्ण होय ते तो साक्षात्कार पोते परमात्मा भगवान छे.' एम जाणीने ब्रह्माने प्रत्यक्ष सद्‌गुरुने विषे भगवानपणांनो निश्चय थयो. तेना उपर श्लोक–

उत्पत्तिं विनाशं च लोकानां गतिमगतिं च ।
वेत्ति विद्यामविद्यां च स वाच्यो भगवानिति ॥

अर्थ :–भगवान केवा छे ? तो 'जगतनी उत्पत्ति अने प्रलयने जाणे तथा लोकनी गतिने अने अगतिने जाणे तथा विद्याने अने अविद्याने जाणे ए छ ऐश्वर्यने जाणे ते भगवान कहेवाय छे,' कहेतां भगवान विना बीजो ए छ वानाने जाणतो नथी.

जेम बापना जन्मने छोकरो जाणे नहीं अने छोकराना जन्मनी बापने यथार्थ खबर होय छे. तेम जगतना जीवोने जगतनी उत्पत्ति आदिकनी खबर होय नहीं. माटे जगतना पिता एवा जे परमात्मा भगवान तेने जे जगतनी उत्पत्ति प्रलयादिकनी यथार्थ खबर छे. एवी रीते ब्रह्माने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनो निश्चय थयो.

पछी ते ज्ञान पण ब्रह्माए लखी राख्युं. ते ज्ञाननुं नाम वेद कहेवाय छे. ते वेदने विषे पांचदेवरूपे परमात्मानुं वर्णन कर्युं छे. ते पांचे देवनुं पांचदेवरूप एवा जे परमात्मा तेणे पोते ज पोताना स्वरूपनुं वर्णन कर्युं छे. अने ब्रह्माने पोतानी भक्ति अने स्तुति अने सेवा करवा शीखवाडवा सारु परमात्माए पोते पोताना स्वरूपनी भक्ति, स्तुति अने सेवा करी देखाडी छे. ते जेम कोईक विद्वान होय ते पोताना छोकराने विद्या प्रथम शीखवे छे त्यारे पोते एम कहे छे जे 'एकडे एक, बगडे बेय,' एम वारे वारे कह्या करे छे. तेम परमात्मा पोतानो महिमा पोते एक ज जाणे छे, कोई जाणतो नथी. माटे पोतानो महिमा कहेवाने अर्थे पांचदेवरूपे ब्रह्माने पोतानुं ज्ञान कराव्युं छे. माटे परमात्मा पोते पांचदेवरूप छे.

माटे प्रथम परमात्माए सूर्यरूपे परमात्मानुं वर्णन कर्युं त्यारे सूर्यने सर्वोपरि जगतकर्ता भगवान कह्या अने बाकी चार देव रूप पोते परमात्मा छे तेणे ब्रह्माने उपासना, कर्म, ज्ञान शीखवाडवा सारु सूर्यनी उपासना भक्ति, सेवा, स्तुति करी छे. एटली वात वेदमां लखाणी तेटला वेदमां सूर्य सर्वोपरि भगवान कह्या छे अने बीजा चार देवोने ते सूर्यना भक्त कह्या छे. अने ज्यारे शक्तिरूपे परमात्मानुं वर्णन पोते कर्युं त्यारे तेने विषे शक्ति सर्वोपरि भगवान कह्या छे अने बीजा चार देवरूपे पोते ज छे पण ते ब्रह्माने शीखववा सारु शक्तिनी भक्ति, सेवा, स्तुति करी छे.

माटे ते उपदेशने विषे शक्ति भगवान कह्या छे अने बीजा शीव, गणपति, सूर्य अने विष्णु ए चारेय तेना भक्त कह्या छे. एवी रीते गणपतिनुं वर्णन कर्युं तेमां गणपति सर्वोपरि भगवान कह्या अने बीजा चार देव तेना भक्त कह्या छे. अने विष्णुनुं वर्णन कर्युं त्यारे विष्णु सर्वोपरि भगवान कह्या छे अने बीजा देवोए तेनी स्तुति, भक्ति करी छे एम कह्युं छे. अने शंकरनुं वर्णन कर्युं त्यारे शंकर सर्वोपरि भगवान कह्या छे अने बीजा चार देवो तेना भक्त कह्या छे.

एवी रीते सर्वोपरि एक परमात्मा छे तेना पंचदेवरूपे पांच अंग छे. माटे परमात्माए ब्रह्माने पोतानुं ज्ञान, भक्ति, सेवा, स्तुति कराववा शीखववा सारु पांचदेवरूपे पोते पोतानो महिमा कह्यो छे अने पोते पोतानी भक्ति करी छे अने पोते पोतानी स्तुति करी छे. एवी रीते परमात्मा अद्वैत पांच देवरूप एक ज छे पण तेमां कोई देव नाना मोटा केहेवाता ज नथी, पांचेय एक परमात्मा ज छे. माटे वेदने विषे पंचदेव रूप परमात्मानुं वर्णन कर्युं छे.

ते वेद उपरथी व्यासजीए पुराण कर्यां छे. ते पुराणने विषे जे देवना नामनुं पुराण कर्युं छे ते देवना नामने सर्वोपरि भगवान कह्या छे अने बीजा चार देवने तेना भक्त कह्या छे. ते ज्यांसुधी जीवने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान थयुं न होय त्यांसुधी पंचदेवने विषे नाना मोटा समजाय छे. पछी एक देवनुं भजन करे छे अने बीजा देवनी निंदा करे छे. ते जेनुं पोते भजन करे छे ते ज देवनो तेना उपर कोप थाय छे, केमके पांचदेवरूपे परमात्मा एक ज छे माटे जे देवनी निंदा करे छे ते परमात्मानी ज निंदा थाय छे.

माटे जेने पोताना आत्माना कल्याणने इच्छवुं होय तेने तो पांचे-

देव रूप एक परमात्मा छे एम जाणीने पांचदेवने पूज्यपणें करीने मानवा अने पांच देव छे तेमांथी जे देव उपर पोताने घणो भाव थतो होय ते देवनी भक्ति, भजन, सेवा, ध्यान करवुं अने बीजा देवने एम जाणवुं जे 'हुं जेनुं भजन करुं छुं तेनां अंग छे; अंग एटले तेनी शक्तिओ छे; शक्तिओ एटले परमात्माने जगत करवानुं पोतानुं सामर्थ्य छे. माटे पांचदेवरूप परमात्मा पोते ज छे.' एम समजीने जे जें देवनी भक्ति करशे तो तेनी भक्ति खरी छे. अने एम जे नथी समजता अने जे एक देवने भजे छे अने बीजा देवनी निंदा करे छे ते तो पाखंडी छे पाखंडी एटले पा जे सर्वेनुं पालन करे एवा जे वेद कहेतां सर्वे जीवनुं कल्याण करे एवा जे परमात्माना श्रीमुखनी वाणीरूप जे वेद ते वेदनुं जे खंडन करे तेने पाखंडी कहीए. माटे एवा पाखंडी होय ते पंचदेवने नाना मोटा कहे छे अने जुदा जुदा समजे छे. पण जे शुद्ध संप्रदायना वेदोक्त धर्मी होय ते पांचदेवने जुदा जुदा समजता नथी ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे." एम कहीने वार्तानी समाप्ति करी.

पछी भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराज सभामांथी उठया ते पोताना उताराना ओरडामां पधार्या अने सर्वे जरियानी वस्त्र पुष्पना आभूषण उतारीने बीजां श्वेत वस्त्र धारण करीने पाछा सभामां पलंग उपर विराजमान थया.

प्रश्नः—पछी गामश्री रोहीशाळाना ब्राह्मण भगवानजी लक्ष्मीरामे महाराजने एक प्रश्न पूछयुं जे "हे महाराज! भगवानना धाम त्रण कहेवाय छे, एक वैकुंठ, बीजुं गोलोक अने त्रीजुं अक्षर ए त्रण धाम छे ते धामने विषे जे भगवान रह्या छे ते त्रण ठेकाणे भगवाननां स्वरूप सरखां हशे के कांई अधिक नुन्य हशे? ते कृपा करीने जेम होय तेम कहो."

पछी भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराज बोल्या जे "त्रण धामने विषे भगवान तो एक ज छे पण भगवानना स्वरूपने विषे भेद नथी. तेनुं दृष्टांत–जेम एक हुं अहीं पलंग उपर बेठो छुं अने बीजा बे मोटा काचना तकता लावीने तेने मारे बे पडखे सामा मूके तो हुं ए बे तकतामां जेवो हुं अहीं बेठो छुं तेवो ने तेवो साक्षात्कार तेमां देखाउं. ते आ पलंग उपर अने बे तकतामां त्रण ठेकाणे हुं ज देखाउं छुं पण तेमां भेद न कहेवाय. तेम अक्षरधाम छे ते तो आ पलंगमां हुं बेठो तेने ठेकाणे छे अने बे तकताने ठेकाणे वैकुंठ अने गोलोक छे. माटे त्रणे धामने विषे भगवाननी मूर्ति तो एक ज छे पण ते मूर्तिमां भेद नथी. अने तेवी ज रीते बीजा पण बे धाम छे, एक बद्रिकाश्रम अने बीजुं श्वेतद्वीप छे. तेने विषे पण भगवाननी मूर्तियो रही छे ते पण एकना एक ज भगवान छे.

–पण पांच प्रकारना भक्त छे ते भक्तने भेदे करीने पांच धाम जुदा जुदा कहेवाय छे पण भगवान तो पांच धाममां एक ज छे. हवे पांच प्रकारना भक्त कया? तो एक तो जे पोताने देह आत्मानुं ज्ञान न होय माटे देहने पोतानुं स्वरूप मानतो होय तेने पण प्रत्यक्ष भगवान मल्या छे. माटे ते भगवानने सर्वोपरि अक्षरातीत जाणीने तेनी उपासना भक्ति सेवा स्मरण करे छे ते भक्त वैकुंठधामने पामे छे अने ते भगवाननुं नाम भक्तने भेदे करीने वैकुंठवासी कहेवाय छे. अने ते भक्त वैकुंठधाममां रहीने अन्न, धन, वस्त्र, आभूषणादिक भारे भारे पदार्थे करीने भगवाननी सेवा करे छे. अने ते भगवाननी सेवाए करीने ते सेवाना पदार्थ, स्थानक अने सेवक सर्वे निर्गुण कहेवाय छे.

अने ते भक्तने ज्यारे प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा भक्ति अने समागम करतां करतां पोताना आत्मानुं ज्ञान थाय छे अने आत्मारूप थईने

पोताने मळ्या जे प्रत्यक्ष भगवान तेने सर्वोपरि अक्षरातीत जाणीने ते मूर्तिने पोताना आत्माने विषे साक्षात्कार करवा सारु अने भगवाननी मूर्तिने विषे ध्यान, धारणा अने समाधी लक्ष पामवाने अर्थे भगवाननी सेवा करे छे, कहेतां तन, मन, धन, वस्त्र, आभूषणादिक पदार्थे करीने प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा, उपासना भक्ति करे छे, तेने गोलोकवासी भक्त जाणवो. अने ते भक्तने भेदे करीने ते भगवाननुं नाम गोलोकाधिश कहेवाय छे.

—अने ते गोलोकवासी भक्त केवी रीते भगवाननी सेवा करे छे? तो भगवाननी मूर्तिना अंगो अंगने संभारीने पोताना आत्माने विषे ध्यानमां सिद्ध करवाने अर्थे भगवाननी सेवामां पदार्थनुं अवलंबन करे छे, कहेतां भगवानना मस्तकनुं ध्यान करवा सारु मस्तक उपर पाघ धरावीने ते मस्तकनुं ध्यान करे छे अने ते पाघमां सारी पेठे इन्द्रियोनी वृत्ति अने प्रीति उपजे ते सारु पाघमां तोरा, कलगी, छोगलां धारण करावीने पाघे सहित भगवानना मस्तकनुं ध्यान करीने भगवानना मस्तकने पोताना आत्माने विषे ध्यानमां सिद्ध करे छे. एवी रीते भगवाननी मूर्तिना सर्वे अंगने पोताना आत्माने विषे ध्यानमां सिद्ध करवा सारु सर्वे अंगो-अंगमां वस्त्र, आभूषणादिक धारण करावीने ते भगवाननी मूर्तिनां अंगने नीरखीने नीरखीने पोताना आत्मामां ध्यान करे छे.

—अने ध्यान करतां करतां भगवाननी मूर्तिने विषे धारणा थाय छे. कहेतां भगवाननी समग्र मूर्ति पोताना आत्माने विषे ध्याने करीने अखंड सांभर्या करे छे अने तेने पंचविषयनी वासना टळी जाय छे अने ते भक्तने पछी वैराग थाय छे. ते वैरागे करीने संसारनो त्याग करीने साधु संन्यासी थईने प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा, भक्ति, ध्यान,

भजन करे छे ते भक्तने बद्रिकाश्रमवासी जाणवो अने ते भगवाननुं नाम नरनारायण कहेवाय छे. अने ते बद्रिकाश्रमवासी भक्त तपने मुख्य राखीने भगवाननी सेवा भक्ति अने ध्यान करे छे.

—अने तप करतां करतां तेनो आत्मा ब्रह्मरूप थईने निरावरण दृष्टिने पामे छे अने एक प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्ति विना बीजो कोई मायिक आकार मात्र तेनी दृष्टिमां रहेतो नथी. ते भक्त श्वेतद्विपधामवासी कहेवाय छे. अने ते भक्त भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान मुख्य राखीने भगवाननी भक्ति, सेवा करे छे. अने ते भक्तने भेदे करीने ते भगवाननुं नाम श्वेतद्विपवासी कहेवाय छे.

एवी रीते बे गृहस्थ भक्त छे अने बे त्यागी भक्त छे. ए चार प्रकारना भक्तने भेदे करीने चार धाम रूप चार स्थानक कहेवाय छे, पण चार धामने विषे भगवान एक ज छे. एटले जे परमात्मा अक्षरधाममां दिव्यमूर्ति अखंड रह्या छे तेना ते परमात्मा अक्षरमां अखंड रह्या थका रामकृष्णादिक अवतार धारण करीने प्रगट थाय छे.

—ते प्रगट भगवाननो जे जीव आश्रय करे छे तेमां जे भक्त वासना वाळा छे तेने वासना मूकवानी इच्छा पण थती नथी अने अने प्रत्यक्ष भगवानने अक्षरधामना वासी जाणीने तेने, मन, धनादिक पदार्थे करीने प्रगट भगवाननी सेवा भक्ति करे छे ते भक्त देह मूकशे त्यारे वैकुंठधामने पामशे. अने जे बीजो गृहस्थ भक्त छे तेने पण वासना तो छे पण ते वासना मूकवानी तेने इच्छा छे अने पोताने देहथी नोखो आत्मारूप माने छे अने भगवाननी मूर्तिने पोताना आत्माने विषे ध्यानमां सिद्ध करवा सारु भगवानने भारे भारे वस्त्र अने आभूषणादिक पदार्थ करीने सेवा करवामां घणो भाव होय ते भक्त देह मूकशे त्यारे गोलोकधामने पामशे.

–अने जे भक्त पोताने आत्मारूप मानीने संसारथी वैराग पामीने पंचविषयनो त्याग करीने साधु संन्यासी थईने प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति सेवा करे छे अने ते तप करीने भगवानने प्रसन्न करवाने इच्छे ते भक्त देह मूकशे त्यारे बद्रिकाश्रमने पामशे. अने जे भक्त साधु संन्यासी थईने निर्वासनिक अने ब्रह्मरूप थयो छे अने भगवान प्रत्यक्ष पोताने मळ्या छे तेनी मूर्तिनुं अखंड ध्यान कर्या करे छे ते भक्त देह मूकशे त्यारे श्वेतद्विपने पामशे.

–अने जे भक्त त्यागी छे अथवा संसारमां भगवाननी आज्ञाए करीने रह्यो होय अथवा प्रारब्धे करीने जनकविदेहीनी पेठे संसारमां रह्यो होय पण ते ज्ञाने करीने चार देहथी पर पोताना स्वरूपने जाणतो होय अने ते चार देहातीत एवुं जे पोतानुं स्वरूप अक्षरब्रह्म तेने विषे दृढ स्थितिने पामीने पंचविषयनो त्याग करीने पछी ते अक्षरब्रह्मना आधार अने प्रत्यक्ष भगवान तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्ते छे अने मोरे (आगळ) कह्या जे चार प्रकारना भक्त तेनी पेठे प्रत्यक्ष भगवाननी, सेवा, तप अने ध्यान तेने अखंड कर्या करे छे. अने प्रत्यक्ष भगवाननुं दर्शन अने सेवा मूकीने पोतानी मेळे क्यांय एक क्षण मात्र पण छेटे जवानो संकल्प करतो नथी अने तेने प्रत्यक्ष भगवानथी छेटे रहेवाय पण नहीं एवो जे भक्त छे ते देह मूकशे त्यारे अक्षरधामने पामशे.

एवी रीते भक्तने भेदे करीने धामना भेद कहेवाय छे पण भगवाननी मूर्तिने विषे भेद नथी. अने जेने वैकुंठवासी कह्या, गोलोकवासी कह्या, बद्रिकाश्रमवासी कह्या, श्वेतद्विपवासी कह्या तेना ते भगवान अक्षरना वासी छे. ते अक्षरधाममां अखंड रह्या थका काचना तकता रूप जे बीजां चार धाम छे तेने विषे भगवान ज ते ते धामना भक्तोने दर्शन आपे छे. अने पांच प्रकारना भक्त भगवाननी सेवा तो सरखी

रीते करे छे पण तेनी समजणने भेदे करीने स्थानकना भेद पड्या छे, पण भगवाननी मूर्तिने विषे भेद नथी. अने जे भगवाननी मूर्तिने विषे जे भेद पाडे छे ते तो अज्ञानी छे अने तेने पाखंडी जाणवो. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २७१ समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत २७२ विषयः–धर्ममां अधर्म अने अधर्ममां धर्म आदिकनी समज.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ ना मागशर वदि १० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री विरोल मध्ये पटेल भक्त मथुरभाई रणछोडभाईने घेर आथमणा बारना ओरडानी ओशरीमां गादीतकिये-युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल सोनेरी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पीळा पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगने विषे शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी श्रीहरिकृष्ण भगवान महाराजनी संध्या आरती थया पछी गाम श्रीरोहीशाळाना विप्र भगवानजीए महाराजने प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज प्रत्यक्ष भगवानना भक्त त्रण छे तेमां एक ज्ञानी भक्त छे अने एक विश्वासी छे अने एक प्रीतीवाळो छे अने ए त्रणे भक्तने आत्म-ज्ञान, वैराग अने धर्म ते तो दृढपणें सरखां छे अने वासना पण त्रणने टळी गई छे. अने प्रत्यक्ष भगवानने विषे सर्वोपरि पुरुषोत्तम जाणीने त्रणे भक्त जोडाई गया छे. माटे ते त्रणे भक्त भगवानना धाममां सरखा सुखने पामशे के कांई अधिक न्युन्य रहेशे ? ते कहो."

पछी भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराज बोल्या जे "ए त्रणे भक्तने सरखा सुखनी प्राप्ति थशे. केमके जे स्वरूपने विषे ज्ञानी ज्ञाने करीने जोडाणो छे

ते ज स्वरूपने विषे विश्वासी अने प्रीतिवाळो बेय जोडाणा छे. माटे त्रणेने सरखा सुखनी प्राप्ति थशे. तेमां ज्ञानी छे ते तो जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म, परब्रह्म तेना स्वरूपने जाणीने तेमांथी जीव, ईश्वर, मायानो भेद् टाळीने मायाना पडपंचनो त्याग करीने पोते आत्मा ब्रह्मरूप थईने परब्रह्म जे प्रत्यक्ष भगवान तेने विषे जोडाय छे.

अने जे विश्वासी अने प्रीतिवाळा भक्त छे तेने पूर्वने संस्कारे करीने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय प्रथम विश्वासे अने प्रीतिए करीने दृढपणें थाय छे. पछी तेने प्रत्यक्ष भगवान एम उपदेश करे छे जे 'तुं कामनी वासना मूकी दे तथा स्वादनो त्याग कर अने अमारा विना बीजे क्यांय प्रीति राखीश नहीं अने कोई जातनुं मान राखीश नहीं. अने तुं आ तारा देहथी नोखो आत्मा छुं अने ते आत्मा ब्रह्मरूप छे. माटे कामादिक पापरूप अने दुःखरूप छे एम जाणीने तेनो त्याग करीने पंचविषयनी अरुचि करीने एक मारे विषे प्रीति राख.' एवी रीते प्रत्यक्ष भगवाने एक वार कह्युं त्यारे ते वातने ते घडीए सत्य मानीने विश्वासी अने प्रीतिवाळा भक्त छे ते पोताना मनमां तेवी रीते समजीने वर्ते छे अने तेमां लेशमात्र फेर पडवा दीए नहीं. अने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे जेवी रीते ज्ञानी निरवासनिक थईने जोडाय छे तेवी ज रीते विश्वासी अने प्रीतिवाळा भक्त पण जोडाय छे. माटे त्रणे भक्त सरखी पदवीने पामे छे. ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

प्रश्नः—एम कहीने पछी महाराज बोल्या जे "अमे सर्वेने एक प्रश्न पूछीए छीए जे धर्म ते धर्म शुं? जे तेमां अधर्म प्रवेश करी शके ज नहीं. अने ज्ञान ते ज्ञान शुं? जे पाछुं कोई दिवस अज्ञान थाय ज नहीं. अने वैराग ते वैराग शुं? जे फरीने पदार्थमां राग थाय

ज नहीं. अने भक्ति ते भक्ति शुं? जे कोई दहाडे भगवानथी विमुख थवाय ज नहीं. ए चार प्रश्न छे. अने वळी धर्म ते अधर्म शुं? जे कहेवाय धर्म अने मांही महा अधर्म होय. अने ज्ञान ते अज्ञान शुं? जे कहेवाय ज्ञान अने मांही अज्ञान होय. अने वैराग ते राग शुं? जे कहेवाय वैराग अने मांही अतिशय राग होय. अने भक्ति ते अभक्ति शुं? जे कहेवाय भक्ति अने परमेश्वरथी विमुख होय. ए चार प्रश्न बीजा छे. अने वळी अधर्म ते धर्म शुं? जे जणाय अधर्म जेवुं पण मांही महा धर्म होय. अने अज्ञान ते ज्ञान शुं? जे जणाय अज्ञान जेवुं पण मांही महा ज्ञान होय. अने राग ते वैराग शुं? जे जणाय राग जेवुं पण मांही महा वैराग होय. अने अभक्ति ते भक्ति शुं? जे जणाय अभक्ति जेवुं पण मांही महा भक्ति होय. एवी रीते बार प्रश्न छे. तेनो उत्तर जेने आवडे ते करो."

पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए उत्तर करवा मांड्यो पण यथार्थ उत्तर थयो नहीं. पछी भगवान श्रीहरिकृष्ण महाराज बोल्या जे "सावधान थईने सांभळजो हुं तेनो उत्तर करुं छुं. जे धर्म ते धर्म शुं? तो मायिक पंचविषयमांथी इन्द्रियोनी वृत्तियोने पाछी वाळीने ते वृत्तियोने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपमां राखवी, तेनुं नाम धर्म छे. अने ते धर्मने विषे अधर्म कोई दहाडे पेसे ज नहीं. अने ज्ञान ते ज्ञान शुं? तो प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपने साक्षात्कार जाणवा अने पामवा सारु पोताने आत्मारूप थवुं, तेनुं नाम ज्ञान छे. अने ते ज्ञानने विषे कोई दहाडे अज्ञान पेसतुं ज नथी. हवे वैराग ते वैराग शुं? तो प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति अने ध्यान करवामां जे जे पदार्थ आडा आवे तेनो अतिशय अभाव आणीने ते ते पदार्थनो त्याग करवो, तेनुं नाम वैराग छे. ते वैरागमां कोई दहाडे राग पेसे ज नहीं. हवे भक्ति ते भक्ति शुं? तो धर्म, ज्ञान, वैरागने दृढ

करीने निरवासनिक थईने पोताना आत्माने ब्रह्मरूप जाणीने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे माहात्म्ये सहित प्रीति करवी, तेनुं नाम भक्ति छे. अने ते भक्त कोई काळे विमुख थाय ज नहीं.

हवे धर्म ते अधर्म शुं? तो सर्व जगतना कर्ता अने सर्वना आधार अने सर्वना पालक एवा जे भगवान पुरुषोत्तम अक्षरातीत छे ते भगवान अनंत जीवोने ज्ञान आपीने उद्धार करवा सारु रामकृष्णादिक रूपे प्रगट थाय छे ते प्रगट भगवानना आश्रयनो त्याग करीने पोताना पुरुषार्थ वडे करीने पोताना कल्याणनी इच्छा राखीने धर्म-नियम पाळे छे अने तप व्रत करे छे ते धर्म जेवुं जणाय छे पण ते धर्म ते महा अधर्म छे.

—ते एवो जैनमतनो धर्म छे. ते लोकमां तो तेनो धर्म सारो कहेवाय छे पण ते कल्याणना मार्गमां अधर्म छे. केमके कल्याणना दाता जे भगवान तेनो त्याग कर्यो माटे तेनो धर्म ते अधर्म छे.

हवे ज्ञान ते अज्ञान शुं? तो पोताने देहथी नोखो आत्मारूप मानीने ते आत्माथी पर परमात्मा भगवान एक छे अने सर्वेना प्रकाशक छे तेने भूलीने एम समजे जे 'आत्मा ते परमात्मा छे,' एम जाणीने पोताने भगवान माने छे जे 'हुं आत्मा ते भगवान छुं. वळी बीजो कोण भगवान छे?' एवुं जे ज्ञान ते महा अज्ञान छे. ते एवा ज्ञानी निर्बीज शुष्क वेदांति छे ते ज्ञान कथे छे, पण ते ज्ञान ते अज्ञान छे.

हवे वैराग ते राग शुं? तो पोते काम, लोभादिक मायिक आकार जे पिंड ब्रह्मांडादिक तेने नाशवंत जाणीने संसारथी उदास रहेतो होय पण ते एम जाणतो होय जे 'रामकृष्णादिक भगवान कहेवाय छे पण ते तो काम, क्रोधादिकने विषे वर्त्या छे. माटे ते करतां तो हुं वैरागवान छुं,' एम समजीने पोताने भगवानना अवतार करतां श्रेष्ठ मनाय जे

'रामकृष्णादिक करतां हुं मोटो छुं.' एवो जे वैरागवान ते तो अतिशय महा रागी छे अने ते तो महा पापी छे. ते एवो वैराग माधवानंद पासे छे.

अने हवे भक्ति ते अभक्ति शुं? तो एम समजतो होय जे "घटघटमां बोले छे ते ज परमेश्वर छे, पण परमेश्वर बीजो नथी.' एम जाणीने सर्वेने भगवान माने छे अने ते सर्वे जीवोनी भक्ति करे छे. ते केवी रीते भक्ति करे छे? तो कहेशे के 'कुतरुं वासुदेव, गधेडुं वासुदेव छे, बळद वासुदेव छे, सर्वे जीव प्राणी मात्र वासुदेव छे.' एम जाणीने स्त्रीयो पुरुषो एक बीजां भेगां थईने एक बीजानी भक्ति सेवा करे छे अने विषयने भोगवे छे. अने जे साचा भगवान रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष छे तेने मानता नथी अने जीव जीवनी भक्ति करे छे. एवी जे भक्ति छे ते अभक्ति छे, कहेतां एम समजनारा प्रभुथी विमुख छे अने ते धर्म-नियम कांई पाळता नथी. माटे लोकमां तो साधु बावाने खवरावे, सेवा करे ते भक्त कहेवाय पण ते तो भगवाननी भक्तिथी विमुख छे.

हवे अधर्म ते धर्म शुं? तो प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा भक्ति अने समागम करवामां कांईक अधर्म जेवुं जणातुं होय तो पण ते अधर्म ते ज खरेखरो धर्म छे. जेम व्रजनी गोपीयो तथा ऋषिपत्नीयो तेणे पोताना पतिने पड्या मूकीने वेदनी आज्ञा जे 'स्त्रीए पोताना पतिनी आज्ञामां रहेवुं,' ते आज्ञाने लोपीने श्रीकृष्ण प्रगट भगवानने थाळ जमाडवा गईयो तथा रास रमवा गईयो तथा सेवा करवा गईयो ते लोकमां तथा धर्मशास्त्रमां अधर्म जेवुं कहेवाय पण ते अधर्म ते मोटो धर्म छे, केमके जेणे करीने तेनुं कल्याण थयुं छे. ते जो अधर्म होय तो कल्याण थाय नहीं, केमके अधर्मीनुं कल्याण थतुं नथी. माटे गोपीयोनुं तथा ऋषि-

पत्नीयोनुं साक्षात्कार कल्याण थयुं. त्यारे ते अधर्म अतिशय ज धर्म छे. वळी जेम श्रीकृष्ण भगवाने अर्जुनने कह्युं के–

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।

कहेतां 'तारा कुळ, कुटुंबने मारी नाख अने सर्वे धर्मनो त्याग करीने एक मारा चरणनो आश्रय राख.' एवी रीते प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा करवामां अने आज्ञा पाळवामां अधर्म जेवुं होय तो पण ते अधर्म ते ज धर्म छे.

अने हवे अज्ञान ते ज्ञान शुं? तो इन्द्रियो अंतःकरणना विषयने प्रीतिए करीने भोगववा तेनुं नाम अज्ञान कहेवाय छे. पण ते इन्द्रियो अंतःकरणे करीने जे प्रत्यक्ष भगवानना भक्त छे ते नेत्र इन्द्रिये करीने भगवाननी मूर्तिने प्रीतिए करीने जुए छे, काने करीने भगवानना शब्दमां एकतार प्रीतिए करीने जोडाई जाय छे, रसनाए करीने भगवाननी प्रसादी जमवामां जोडाई जाय छे, भगवाननी मूर्तिने त्वचाए करीने प्रीतिए सहित बाथमां घालीने मळे छे, नासिकाए करीने भगवाननी प्रसादीना पुष्पना हार चंदनादिकनी सुगंधी प्रीतिए करीने लीए छे, मने करीने प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा करवाना संकल्प रातदिवस कर्या करे छे, बुद्धिए करीने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय करे छे, चित्ते करीने भगवाननी मूर्तिनुं चिन्तवन कर्या करे छे अने अहंकारे करीने 'हुं भगवाननो दास छुं,' एवुं अभिमान धरे छे. एवी रीते इन्द्रियो अंतःकरणरूप जे मायानुं टोळुं तेने करीने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपमां प्रीतिए करीने जोडाई जाय छे. ते इन्द्रियोना विषयरूपी अज्ञान ते महा ज्ञान छे. केमके भगवाननी मूर्ति विना बीजे जोडाय ते तो अज्ञान छे पण तेनां इन्द्रियो अंतःकरण प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपमां जोडाय तो ते अज्ञान ते ज ज्ञान छे. केमके भगवान विना बीजे

इन्द्रियो अंतःकरण जोडाय छे ते तो जीव नरकमां जाय छे अने भगवाननी मूर्तिमां जोडाय छे त्यारे तेनां इन्द्रियो अंतःकरण निर्गुण भावने पामी जाय छे अने ते आत्मा ब्रह्मरूप थईने अक्षरधाममां जाय छे. जेम लोढुं छे ते सर्वे धातु करतां उतरतुं छे पण तेने जो पारसमणिनो स्पर्श थाय तो ते लोढुं मटीने सोनुं थई जाय छे. तेम जीवनां इन्द्रियो अंतःकरण तो लोढानी पेठे जीवने नरकमां नाखनारा छे अने महा अज्ञानरूप छे पण ते इन्द्रियो अंतःकरणने प्रत्यक्ष भगवाननो संबंध थई जाय तो तेनुं अज्ञान अने मायिकभाव ते टळी जाय छे अने ते निर्गुण एटले ज्ञानरूप थई जाय छे. माटे ते अज्ञान ते ज्ञान छे.

अने हवे राग ते वैराग शुं? तो मायिक पदार्थमां प्रीति तेनुं नाम राग छे. ते मायिक पदार्थने विषे प्रीति करीने ते पदार्थ वडे प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा करे छे तो ते राग ते वैराग छे. अने ते प्रत्यक्ष भगवाननी सेवामां–संबंधमां जे जे पदार्थ आवे छे ते पदार्थ तो निर्गुण थई जाय छे, कहेतां ते पदार्थ तो अमायिकरूप छे एटले कल्याणकारी छे. माटे प्रत्यक्ष भगवाननी सेवा करवामां जे पदार्थ तेने विषे जे प्रीति जे राग ते तो वैराग छे.

अने हवे अभक्ति ते भक्ति शुं? तो धर्म, ज्ञान, वैराग सिद्ध करीने निर्वासनिक थईने पोताना आत्माने अक्षरब्रह्म साथे एकत्वपणुं करीने ते अक्षरब्रह्ममां अखंड रह्या एवा जे परब्रह्म परमात्मा प्रत्यक्ष मूर्ति भगवान तेने विषे समाधिलक्षे करीने ध्येयाकारपणें अद्वैतभावने पामी गयो जे मुक्त तेने अभक्ति कहेवाय छे, केमके भगवाननी मूर्ति थकी पोताने जुदांपणांनो भाव जणाय त्यारे तेनी भक्ति के सेवा करे पण ते तो तेनी ध्येयाकार वृत्ति थई गई छे.

जेम वृंदावनने विषे भगवान साथे रास रमवाने समे भगवान

अंतरध्यान थई गया पछी गोपीयो भगवानने खोळतां खोळतां भगवान क्यांय हाथ न आव्या पछी भगवानने संभारतां संभारतां गोपीयोनी वृत्तियो भगवानरूप थई गई. पछी ते गोपीयोए कह्युं के 'अमे कृष्ण छीए.' अने भगवानना जेवुं आचरण करवा लागी हती, कहेतां भगवाने गोवर्धन तोळ्यो हतो तेम पोते लाकडी उपर लुगडुं नाखीने उंचुं करीने कह्युं के 'में गोवर्धन तोळ्यो छे.' एवी रीते भगवानना भावने वृत्तियो पामी गई हती. तेम जेने भगवानने विषे ध्येयाकार वृत्ति थई जाय छे, तेनुं नाम अभक्ति छे. ते अभक्ति पण ते तो महा मोटी भक्ति छे.

एवी रीते प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने संबंधे करीने साधन सर्वे सफळ थाय छे अने प्रत्यक्ष भगवानना संबंध विना साधन सूझे तेटलां करे पण ते सर्वे अफळ छे. माटे प्रत्यक्ष भगवाननो जेने संबंध थाय छे तेने विषे जीव जोडाय छे तेनुं ज कल्याण थाय छे.

–ते सूझे तो ज्ञाने करीने प्रत्यक्ष भगवानमां जोडाय अने सूझे तो प्रीतिए करीने जोडाय अने सूझे तो विश्वासे करीने जोडाय अने सूझे तो गमे ते भावे प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे जोडाई जाय तो ते सर्वेनुं सरखुं ज कल्याण थाय छे. अने प्रत्यक्ष भगवान मळ्या विना अने ते भगवाननी मूर्तिने विषे जोडाया विना सूझे तेटलो ज्ञानी होय, सूझे तेटलो वैरागवान होय, सूझे तेवो त्यागी होय, तपस्वी होय, भेख लईने वनमां रहेतो होय, संन्यासी थयो होय, श्रीपात थयो होय तोपण प्रगट भगवान मळ्या न होय त्यां सुधी सर्वे साधन वृथा छे अने तेनुं कल्याण थतुं नथी."

इति श्रीमुखसिद्धांत २७२ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत २७३ विषयः—जीव, आत्मा अने ब्रह्मनां रूपमां भेद.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ ना पोष सुदि १ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री विरोल मध्ये पटेल सिद्धर लखुजीने घेर आथमणें बार ओरडानी रवेशमां गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगमां पीळां पुष्पनां आभूषणो शोभी रह्यां हतां. ललाटने विषे कंकुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराजनी संध्या आरती थया केडे महाराजे साधुने प्रश्न पूछ्युं जे "आत्मारूप अने ब्रह्मरूप ए बे एक हशे के जुदा जुदा हशे ? ते कहो." पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए कह्युं के जुदा जुदा छे, केमके आत्मारूप छे ते तो त्रणे देहनो द्रष्टा छे. अने जे ब्रह्मरूप छे ते तो त्रण देहने जाणतो ज नथी."

पछी महाराज बोल्या जे "जेने विषे रजोगुण अने तमोगुण तेनुं कार्य जे काम, क्रोध, लोभ, स्वाद, स्नेह, दंभ, कपट, ईर्षा, असूया, राग, द्वेषादिक दोष वर्तता होय तेने जीव जाणवो. अने ते जीव नरक चोराशीमां जाय छे. अने जेने विषे सत्त्वगुणनुं कार्य जे धर्म, ज्ञान, वैराग, भक्ति, शील, संतोष, दया, क्षमा, विवेक, विचार, अहिंसा, ब्रह्मचर्यादिक शुभ गुण वर्तता होय तेने आत्मारूप जाणवो. अने ते आत्मारूपने ते शुभ गुणनुं मान होय खरुं. माटे ते आत्मारूप थयो ते ईश्वरना साधर्म्यपणांने पामे छे. अने जे ब्रह्मरूप छे तेने विषे शुभ गुण तो सर्वे संपूर्ण होय खरा पण तेने ते गुणनुं मान होय नहीं. माटे रजोगुण अने तमोगुण वर्ततो होय तेने जीव जाणवो अने सत्त्वगुण जेने वर्ततो होय पण

जेने ते गुणनुं मान होय तेने आत्मारूप जाणवो. अने जेने सत्त्वगुण रूप शुभ गुण तो वर्तता होय पण तेनुं मान होय नहीं ते ब्रह्मरूप छे. अने जे ब्रह्मरूप थाय छे ते भगवानना अक्षरधामने पामे छे.

पण ए शुभ गुणनुं मान क्यारे टळे छे? तो जेने विषे एवा शुभ गुण अनंत अपार छे पण ते गुणनुं लेशमात्र मान नथी जेने एवा जे परमात्मा अने तेना एकांतिक संत ते प्रत्यक्ष मळे अने तेनो आश्रय करे त्यारे ज तेने शुभ गुणनुं मान टळी जाय छे अने ते आत्मा ब्रह्मरूप थाय छे. पण ते प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतना आश्रय मात्र विना कोई काळे शुभ गुणनुं मान टळतुं नथी. अने गुणनुं मान रंच- होय त्यांसुधी ते ब्रह्मरूप कहेवाय नहीं. अने प्रत्यक्ष भगवान अने संतना आश्रय विना गुणनुं मान आव्या विना रहे ज नहीं ए सिद्धांत वार्ता छे.

अने ते शुभ गुण पण परमात्माना ज घरना छे. पण ते परमात्माने यथार्थ जाण्या नथी त्यांसुधी ते गुणनुं मान रहे छे. अने ते परमात्माने जाणवा ते पोते परमात्मा पंडे अथवा तेना एकांतिक संत जणावे त्यारे जणाय छे पण ते विना बीजो कोई परमात्माने जणावी शकतो नथी. माटे प्रगट भगवान अने भगवानना संत मळ्या विना शुभ गुणनुं मान आव्या विना रहे ज नहीं. जेम कूवानी बहार होज होय ते कूवाने जळे करीने भराईने छलकी जाय छे त्यारे ते होज एम जाणे जे 'मारा जेटलुं जळ कूवामां तथा कोई ठेकाणे नहीं होय,' एम होज फूलाय छे. अने जे कूवो छे तेमां तो अपार जळ भर्युं छे ते एवा एक होज जेवा अनंत होजने भरी मूके तो पण ते कूवानुं पाणी खूटे नहीं एटलुं अपार जळ कूवामां भर्युं छे तो पण ते कूवो छलकातो नथी. अने होजमां तो कूवानुं जळ आवे छे त्यारे ते होज भराय छे. अने जो कूवानुं जळ होजमां न

आवे तो ते होजमां लेशमात्र जळ रहे नहीं. ते होजे कूवाना जळने नथी जाण्युं त्यांसुधी ते फूलाय छे पण जो कूवाना जळने होज जाणे तो ते होजने रंचमात्र मान रहे नहीं.

—तेम ए तो दृष्टांत अने तेनुं सिद्धांत तो ए छे जे बीजा मनुष्य, देव, ब्रह्मा अने प्रकृतिपुरुषादिक सर्वे ते होजने ठेकाणे छे अने प्रत्यक्ष परमात्मा भगवान छे ते कूवाने ठेकाणे छे. ते जेम होजमां पाणी जेटलुं होय छे ते कूवामांथी ज आवे छे पण कूवा विना होजमां पाणी होय ज नहीं. तेम मनुष्य, देव, ब्रह्मादिकने विषे जेटला जेटला शुभ गुण आव्या छे ते सर्वे परमात्माना ज गुण आव्या छे पण ते देव ब्रह्मादिक परमात्माने नथी जाणता त्यांसुधी ते सर्वेने शुभ गुण जेम जेम पोताने विषे आवता जाय छे तेम तेम गुणनुं मान आवतुं जाय छे. अने ते गुणने माने करीने ते गुणमां ते सर्वे बंधाय छे. अने प्रत्यक्ष परमात्माने विषे अनंत शुभ गुण रह्या छे पण ते गुणनुं मान तेमने नथी ते सारु ए परमात्मानो आश्रय जे आत्मा करे छे तेने गुणनुं मान रहेतुं नथी.

—माटे ते परमात्मानो आश्रय करवा सारु प्रथम जीवपणांना रजोगुणी अने तमोगुणी काम, क्रोधादिक दोष तेनो त्याग करवो अने सत्त्वगुणना शील, संतोषादिक शुभ गुण तेणे शीखवा अने ते शुभ गुणने तो दृढ करीने राखवा. अने ते गुणना मानने टाळवाने अर्थे प्रत्यक्ष परमात्मा अने तेना संत तेने खोळवा. अने ते परमात्माने खोळतां खोळतां घणांक जन्मना शुभ गुणना शुभ संस्कार भेगा थाय छे त्यारे ते आत्माने प्रत्यक्ष परमात्मा मळे छे. पछी ते प्रत्यक्ष परमात्मा जे ते तेना शुभ गुणना मानने नाश करीने ब्रह्मरूप करे छे.

ते केवी रीते मान मुकावे छे? तो परमात्मा पोते पोताना स्वरूप-

नो माहात्म्ये सहित निश्चय करावीने पोताना आश्रयमां राखे छे अने पोतानी आज्ञामां वर्तावे छे. अने ते आत्मा ब्रह्मस्थितिने पाम्यो होय अने घणोक शुभ गुणवान थयो होय अने महा मुक्त थयो होय तो पण तेने प्रत्यक्ष भगवाननी आज्ञामां लगारेक फेर पडे तो तेने तत्काळ शीक्षा करे छे. अने ते शीक्षा शा सारु करे छे? तो 'तेने शुभ गुण घणाक आव्या छे माटे रखे ते गुणनुं मान आवे नहीं ! अने जो कोई जातनुं मान आवशे तो तेना गुण ते सर्वे दुर्गुण थई जशे.' एम जाणीने मुक्तने पण वारंवार शीक्षा कर्या करे छे अने दंड दीधा करे छे.

अने जे मुक्त छे ते तो बीजा सर्वे जगतना तो गुरु छे. माटे प्रत्यक्ष परमात्मा विना बीजा कोई तेना मानने मुकाववाने समर्थ नथी. अने जेने शुभ गुण आव्या होय अने तेनुं जे मान चडे ते मान पोतानी मेळे टळतुं नथी ते सारु आत्मारूप थयो होय तेने ब्रह्मरूप करवा सारु तेना माननुं खंडन करवाने प्रत्यक्ष भगवान अने तेना एकांतिक संतज समर्थ छे. माटे प्रत्यक्ष भगवान अने संतनो आश्रय करीने तेनी आज्ञामां जेम कहे तेम वर्तशे तेनुं मान टळशे अने ते आत्मा ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामशे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २७३ समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत २७४ विषयः–ब्रह्मा, विष्णु अने शीव भगवानने प्रार्थना करे छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ना पोष सुदि ५ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री विरोल मध्ये पटेल जीवाभाई व्रजभाईने घेर आथमणां वारना ओरडानी रवेशमां गादीतकिया नखावीने पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगमां पीळां पुष्पना आभूषण शोभी रह्यां हतां. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी मोटी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी महाराजनी संध्या आरती थया केडे महाराज सर्वे सभा प्रत्ये बोल्या जे "भगवानना धामने जीव क्यारे पामे छे? तो जीवने भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय छे त्यारे ते जीव भगवानना अक्षरधामने पामे छे अने भगवानना स्वरूपमां संशय होय त्यांसुधी ते जीव भगवानना धामने पामे नहीं. हवे ते भगवानना स्वरूपनो निश्चय ते शुं? तो भगवानने यथार्थ जेवा छे तेवा जाणवा तेनुं नाम निश्चय कहेवाय छे. ते भगवाननुं स्वरूप बे प्रकारनुं छे, एक दिव्यस्वरूप छे अने एक दिव्य थका जीवोना कल्याण करवा सारु मनुष्य स्वरूपनुं धारण करे छे. ते ए बेय प्रकारना स्वरूपने जाणे त्यारे तेने भगवानना स्वरूपमां संशय थाय नहीं अने बे प्रकारना स्वरूपने जाण्युं न होय तेने भगवानना मनुष्य स्वरूपने विषे नाना प्रकारना चरित्र जोईने संशय थाय छे.

हवे ए बे प्रकारना स्वरूपने जाणवानी रीत कहीए छीए जे दिव्यरूप भगवाननुं केवुं छे? तो काने करीने सांभळ्यामां आवे एवा नथी, आंखे करीने जोयामां आवे एवा नथी, रसनाना वर्णनमां आवे एवा

नथी, नासिकाना सुंघ्यामां आवे एवा नथी, चित्तना चिन्तवनमां आवे एवा नथी, बुद्धिना निश्चयमां आवे एवा नथी, मनना संकल्पमां आवे एवा नथी अने अहंकारना अभिमानमां आवे एवा नथी. एवा दिव्य स्वरूप भगवान इन्द्रियो अंतःकरणथी पर छे अने दिव्य मूर्तिमान थका अक्षरधामने विषे विराजमान रह्या छे. अने ते भगवानना एक एक रोमने विषे कोटानकोटी सूर्य, चंद्रमा अने अग्नि तेना प्रकाशने पण झांखो करे एवो तो जेनो प्रकाश छे अने अनंतकोटी दिव्य पार्षदे विंटाणा थका दिव्य सिंहासन उपर विराजमान छे. अने जेनी इच्छा मात्रे करीने कोटी ब्रह्मांडनी उत्पत्ति थाय छे अने जेनी इच्छाए करीने कोटी ब्रह्मांडनी स्थिति रहे छे अने जेनी इच्छाए करीने कोटी ब्रह्मांडनो लय थई जाय छे. अने जेनी शक्ति काळ छे, माया छे, पुरुष छे अने अक्षर छे. एवा अनंत शक्तिओना ईश छे अने अनंत कोटी ब्रह्मांडना राजाधिराज छे. अने ते ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रत्ये ब्रह्मा, विष्णु, अने शीव छे ते ब्रह्मांडनुं रखवाळुं करे छे अने ते ब्रह्मांडना देव, दैत्य, मनुष्य सर्वे ब्रह्मा, विष्णु, शीवनुं भजन करे छे अने तेनी आज्ञामां वर्ते छे. अने ब्रह्मा, विष्णु, शीव छे ते दिव्य स्वरूप जे भगवान तेनुं भजन करे छे अने तेनी आज्ञामां वर्ते छे.

—अने ते ब्रह्मा, विष्णु, शीव ते भगवाननी प्रार्थना करे छे जे "हे महाराज ! तमे कृपा करीने अमारा ब्रह्मांडमां पधारो अने अमारा ब्रह्मांडना सर्वे जीवोनां कल्याण करो. अने अमाराथी जेवी तमारी सेवा थशे तेटली करीशुं." एम प्रार्थना करे छे. ते प्रार्थनाने सांभळीने दिव्य स्वरूप जे भगवान ते पोतानो दिव्यभाव छुपावीने ब्रह्मांडने विषे पधारे छे. ते ज्यां जेवुं कार्य होय त्यां तेवा देहनुं धारण करे छे. अने जेवो देह धारण करे छे तेवी ज चेष्टा करे छे, पण तेथी अधिकपणे नथी वर्तता. ते भगवाने मच्छ, कच्छनो देह धर्यो हतो तो ते जळमां ज

ફર્યા અને વરાહ અવતાર ધારણ કર્યો ત્યારે તેવી રીતે વર્ત્યા હતા અને હયગ્રીવ અવતાર ધારણ કર્યો ત્યારે ઘોડાની પેઠે વર્ત્યા અને નૃસિંહ અવતાર ધારણ કર્યો ત્યારે સિંહની પેઠે વર્ત્યા અને રામકૃષ્ણાદિક મનુષ્ય-દેહનું ધારણ કર્યું ત્યારે મનુષ્યના જેવી જ ચેષ્ટા કરી અને મનુષ્યની પેઠે વર્ત્યા પણ બીજી રીતે ન વર્ત્યા.

—તે જેમ મનુષ્ય પ્રથમ ગર્ભમાં આવે અને તે ગર્ભ વૃદ્ધિને પામે અને પછી બાળક જન્મે અને તે બાળક જુવાન થાય, વૃદ્ધ થાય અને દેહ મૂકે. તેમ ભગવાન પણ તેવી રીતે ગર્ભમાં આવે, બાળક થાય, જુવાન થાય, વૃદ્ધ થાય અને દેહ મૂકે. અને જેમ મનુષ્યને ખાવું-પીવું, ઓઢવું-પહેરવું, કામ, ક્રોધ, લોભ, સ્વાદ, સ્નેહ, માન, પક્ષપાત, પારકું-પોતાનું ઇત્યાદિક ગુણ હોય, તેમ તેવી રીતે ભગવાન મનુષ્યદેહનું ધારણ કરે છે ત્યારે તેને વિષે મનુષ્યની પેઠે કામ, ક્રોધ, લોભ, મોહ, પારકું-પોતાનું, પક્ષપાત, હારવું-જીતવું ઇત્યાદિક મનુષ્યના જેવા સર્વે ગુણ પોતાને વિષે જણાવે છે. અને મનુષ્યની રીતે જ વર્તે છે પણ મનુષ્યના કરતાં અધિકપણે નથી વર્તતા.

ત્યારે કોઈને શંકા થાય જે ભગવાન માણસની પેઠે વર્તે ત્યારે તે જીવને ભગવાનની ઓળખાણ કેમ પડે? તો ઓળખાણ એમ પડે જે જોયામાં અને વર્ત્યામાં અને ક્રિયામાં તો માણસ જેવા જણાય ખરા પણ તેને વિષે કાંઈક દિવ્યભાવ હોય ખરો. તે દિવ્યભાવ શું? તો તે ભગવાનને વિષે જેવું જ્ઞાન હોય તેવું જ્ઞાન બીજા કોઈ મનુષ્યને વિષે હોય નહીં. માટે બુદ્ધિવાળો મનુષ્ય હોય તે જાણે જે 'મનુષ્ય તો સર્વે છે પણ આવું મનુષ્ય કોઈ હોય નહીં.' એમ બુદ્ધિવાન હોય તે પ્રત્યક્ષ ભગવાનને ઓળખે છે પણ બીજે કોઈ પ્રકારે ભગવાન ઓળખાતા નથી.

અને જે ભગવાન દિવ્ય સ્વરૂપ કહ્યા તેના તે જ ભગવાન મનુષ્ય

नथी, नासिकाना सुंघ्यामां आवे एवा नथी, चित्तना चिन्त्वनमां आवे एवा नथी, बुद्धिना निश्चयमां आवे एवा नथी, मनना संकल्पमां आवे एवा नथी अने अहंकारना अभिमानमां आवे एवा नथी. एवा दिव्य स्वरूप भगवान इन्द्रियो अंतःकरणथी पर छे अने दिव्य मूर्तिमान थका अक्षरधामने विषे विराजमान रह्या छे. अने ते भगवानना एक एक रोमने विषे कोटानकोटी सूर्य, चंद्रमा अने अग्नि तेना प्रकाशने पण झांखो करे एवो तो जेनो प्रकाश छे अने अनंतकोटी दिव्य पार्षदे विंटाणा थका दिव्य सिंहासन उपर विराजमान छे. अने जेनी इच्छा मात्रे करीने कोटी ब्रह्मांडनी उत्पत्ति थाय छे अने जेनी इच्छाए करीने कोटी ब्रह्मांडनी स्थिति रहे छे अने जेनी इच्छाए करीने कोटी ब्रह्मांडनो लय थई जाय छे. अने जेनी शक्ति काळ छे, माया छे, पुरुष छे अने अक्षर छे. एवा अनंत शक्तिओना ईश छे अने अनंत कोटी ब्रह्मांडना राजाधिराज छे. अने ते ब्रह्मांड ब्रह्मांड प्रत्ये ब्रह्मा, विष्णु, अने शीव छे ते ब्रह्मांडनुं रखवाळुं करे छे अने ते ब्रह्मांडना देव, दैत्य, मनुष्य सर्वे ब्रह्मा, विष्णु, शीवनुं भजन करे छे अने तेनी आज्ञामां वर्ते छे. अने ब्रह्मा, विष्णु, शीव छे ते दिव्य स्वरूप जे भगवान तेनुं भजन करे छे अने तेनी आज्ञामां वर्ते छे.

—अने ते ब्रह्मा, विष्णु, शीव ते भगवाननी प्रार्थना करे छे जे "हे महाराज! तमे कृपा करीने अमारा ब्रह्मांडमां पधारो अने अमारा ब्रह्मांडना सर्वे जीवोनां कल्याण करो. अने अमाराथी जेवी तमारी सेवा थशे तेटली करीशुं." एम प्रार्थना करे छे. ते प्रार्थनाने सांभळीने दिव्य स्वरूप जे भगवान ते पोतानो दिव्यभाव लुपावीने ब्रह्मांडने विषे पधारे छे. ते ज्यां जेवुं कार्य होय त्यां तेवा देहनुं धारण करे छे. अने जेवो देह धारण करे छे तेवी ज चेष्टा करे छे, पण तेथी अधिकपणे नथी वर्तता. ते भगवाने मच्छ, कच्छनो देह धर्यो हतो तो ते जळमां ज

कल्याण थाय छे. माटे भगवान मनुष्य स्वरूपनुं धारण करे छे अने मनुष्यनी रीते वर्ते छे.

अने जो भगवान दिव्यरूप प्रगट करे तो जीवने ठीक पडे नहीं अने हेत पण थाय नहीं अने ऊलटो जीव व्हीी मरे अने मुंझाई जाय. जेम श्रीकृष्ण भगवाने अर्जुनने विश्वरूप देखाडयुं त्यारे ते रूप जोईने अर्जुन आकूळ व्याकूळ थई गयो अने कह्युं के "हे महाराज! आ तमारुं अद्भूत रूप जोईने हुं भयने पामुं छुं. माटे कृपा करीने तमारुं मनुष्य स्वरूप प्रथम हतुं तेवुं मने देखाडो तो मने सुख थाय." पछी भगवाने मनुष्य स्वरूप देखाडयुं त्यारे अर्जुनने सुख थयुं. माटे भगवानना दिव्य स्वरूपने जोईने कोई जीवने सुख थाय नहीं अने हेत पण थाय नहीं, केमके विजातिभाव थयो माटे विजातिभावपणांमां जीवने हेत थाय नहीं ते सारु भगवान मनुष्य स्वरूपनुं धारण करे छे त्यारे ते मनुष्य स्वरूपने विषे जीवने हेत थाय छे अने हेते करीने जीवनुं कल्याण थाय छे.

—अने जे दिव्यरूप भगवान छे तेना ते ज मनुष्य स्वरूप छे, पण भगवान बे नथी. अने जीवोना कल्याण करवा सारु भगवाने मनुष्य देह धारण कर्यो होय ते मनुष्यनी पेठे ज वर्ते छे अने तेनो आशरो करे तेनुं ज कल्याण थाय छे पण दिव्यस्वरूपथी कोई जीवनुं कल्याण थतुं नथी, केमके ते स्वरूप कोईना ग्रहण कर्यामां आवतुं नथी. ते सारु कृपा करीने भगवान मनुष्य स्वरूपनुं धारण करे छे अने मनुष्य देह धारण करीने मनुष्यनी पेठे वर्ते छे, पण आसुरी अने दिव्यभाव रंच मात्र देखाडता नथी.

माटे एवी रीते बे प्रकारना स्वरूपने जाणीने प्रत्यक्ष भगवाननो आशरो जेणे कर्यो होय तेने भगवानना मनुष्य स्वरूपने विषे गमे तेवा

चरित्र करे पण तेने संशय थाय नहीं. ते भगवान समर्थपणें वर्ते के असमर्थपणें वर्ते, काम जणावे, क्रोध जणावे, लोभ जणावे, क्यारेक भागे, क्यारेक रोवे इत्यादिक मनुष्यनी पेठे गमे तेवां चरित्र करे तो पण तेने संशय थाय नहीं. अने एवी रीते समजीने जेने प्रत्यक्ष भगवाननो आश्रय कर्यो होय तेने कल्याणना मार्गमां कोई विघ्न लागे नहीं."

–अने एवी रीते बे प्रकारना स्वरूपने जाण्युं न होय तेने बीजां अनंत साधन कर्यां होय तोपण तेनुं कल्याण कोई काळे थाय नहीं. माटे बे प्रकारना स्वरूपने एक जाणीने प्रत्यक्ष स्वरूप तमने मळ्युं छे तेनो दृढ आश्रय करो एटले तमारां कल्याण साक्षात्कार थशे अने जेणे आश्रय कर्यो छे तेनां तो कल्याण थई रह्यां छे.

इति श्रीमुखसिद्धांत २७४ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २७५ विषय :–जीवने सुख थवाना बे उपाय.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ ना पोष सुदि ६ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री विरोल मध्ये पटेल मनोरभाईने घेर उगमणे बारना ओरडानी रवेशमां गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगमां पीळां पुष्पना आभूषण शोभी रह्यां हतां. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज कृपा करीने बोल्या जे "जीवने सुख थवाना बे उपाय छे, एक पोतानी मेळे महेनत कर्याथी सुख मळे छे अने बीजुं कोईकनी महेरबानी थाय तो तेथी वगर दाखडे सुख थाय छे. जेम

कोई गरीब माणस होय ते खेती करीने, वेपार करीने, कोईनी चाकरी मंडावीने पैसो कमाय ते सो बसो, हजार, बे हजार सुधी कमाय अने तेणे करीने ते सुखियो थाय. अने कोईकनी उपर तो कोई मोटो राजा प्रसन्न थाय ते पोताना ढोलियानो चाकर करीने राखे अने तेने पोतानो खजानो होय ते बधोय सोंपी दीए ते वगर दाखडे लखेसरी थई जाय अने ते महा सुखने पामे.

तेम परलोकमां जीवने सुख पामवाना बे उपाय छे. ते जेम महेनत करीने पैसा कमाईने सुख पामे तेम परलोकनां सुख पामवा सारु पोतानी मेळे धर्म, ज्ञान, वैराग अने ऐश्वर्य ए चार गुण शीखे छे अने ते चार गुणे करीने तमोगुण अने रजोगुण ते टळीने सत्त्वगुणी थाय छे अने ते सत्त्वगुण छे ते सुखकारी छे. अने सत्त्वगुणीने देवादिक लोकनी प्राप्ति थाय छे. एटलुं तो जीव पोतानी मेळे पुरुष प्रयत्ने करीने सुखने पामे छे.

हवे धर्म, ज्ञान, वैराग अने ऐश्वर्यनुं शुं रूप छे? तो इन्द्रियोने नियममां राखीने पोताना आत्मानुं रूडुं थाय एवे मार्गे चाले तेनुं नाम धर्म कहेवाय छे. अने देहने अने आत्माने नोखा जाणवा अने देहने मिथ्या, जड अने दुःखरूप जाणवो अने आत्माने पोतानुं स्वरूप जाणवुं. अने ते आत्मा सत्य छे, सुखरूप छे, प्रकाशवान छे, ज्ञानरूप छे, एम जाणीने मायिक पदार्थने विषे हाण्य-वृद्धि, सुख-दुःख तेने करीने हरख-शोकने पामे नहीं तेने ज्ञान कहीए. अने पिंड, ब्रह्मांडादिक मायाकृत जगतना पदार्थने विषे अभाव वर्ते तेने वैराग कहीए. अने जे जे मनोरथने धारे ते ते मनोरथने बरोबर करी शके तेने ऐश्वर्य कहीए. ए चार गुण जेने विषे होय ते आत्मा सत्त्वगुणी कहेवाय छे अने ते सुखने पामे छे.

—अने एटलुं सुख तो जीव पोतानी महनते करीने मेळवी शके

छे पण तेणे करीने देहे करीने सुख भोगवे पण तेना आत्मानुं कल्याण थाय नहीं. अने जो एवो सत्त्वगुणी होय अने तेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो आश्रय थाय तो ते आत्मा ब्रह्मरूप थईने भगवानना अक्षरधामने पामे. अने तमोगुणी, रजोगुणी जीव होय अने तेणे कांई सुकृत कर्युं न होय पण तेने जो प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतने विषे हेत थई जाय तो तेना उपर भगवाननी एवी कृपा थाय ते तेना तमोगुणी अने रजोगुणी कर्मनां अनंत पाप ते सर्वे बळीने भस्म थई जाय छे अने ते आत्मा ब्रह्मरूप थईने भगवानना अक्षरधामने पामे छे. जेम रांक होय अने तेने राजानी महेरबानी थाय तो कारमोक (तरत) लखेशरी थई जाय, तेम महा पापी जीव होय पण तेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो आश्रय थई जाय अने तेनी सेवा करे तो ते जीव कारमोक (तरत) ब्रह्मरूप थईने भगवानना धामने पामे छे.

अने सत्त्वगुणी आत्मा होय अने धर्म, ज्ञानादिक गुणे युक्त होय पण जो तेने प्रत्यक्ष महात्मा पुरुषनो अवगुण आवे तो तेनां सत्त्वगुणी कर्मनां सुकृत मात्र ते बळीने भस्म थई जाय छे अने ते जीव घोर नरकमां जाय छे. जेम कोईक महेनत करीने सो, बसो, हजार, बे हजार रूपिया कमाणो होय पण ते जो राजानो द्रोह करे तो ते राजा तेना उपर कोपायमान थईने तेनुं घरबार लूटी ले छे अने तेने केदमां पूरी दे छे. तेम सूझे एवो सत्त्वगुणना धर्म, ज्ञानादिक लक्षणें युक्त होय अने ते सत्त्वगुणनी संपत्तिए करीने देवलोकमां जवानो होय पण ते जो प्रत्यक्ष महात्मा पुरुषनो द्रोह करे तो तेनां सुकृत मात्र बळीने भस्म थई जाय छे. अने ते जीव नरकमां पडे छे एवो प्रत्यक्ष महात्मा पुरुषना अपराधना पापनो दोष छे अने ते जीवनो पाछो कोई काळे ते पापनो छूटको थतो नथी. त्यां श्लोक छे जे—

अन्यक्षेत्रे कृतं पापं तीर्थक्षेत्रे विनश्यति ।
तीर्थक्षेत्रे कृतं पापं वज्र लेपो भविष्यति ॥

कहेतां असत्पुरुषने संगे करीने जे जे पाप थयां होय अने तेने तीर्थरूप सत्पुरुषनो आश्रय थई जाय तो तेना पाप सर्वे नाश पामी जाय छे अने तीर्थरूप जे सत्पुरुष तेनो अपराध थाय तो तेनुं पाप वज्रलेप थाय छे एटले कोई काळे ते पाप नाश पामतुं नथी. अने ते सत्पुरुषना द्रोहना करनाराए महोरे सूझे एटलां पुण्य कर्यां होय, तीर्थ कर्यां होय, यज्ञ कर्या होय, परोक्षपणें भगवाननी भक्ति करी होय, एवां घणांक शुभ कर्म कर्यां होय ते सर्वेनां सुकृतनुं पुण्य तत्काळ नाश पामी जाय छे अने ते जीव नरकमां जाय छे. अने जे सत्पुरुषनो गुण लेईने तेनी सेवा करे छे अने तेणे सूझे एटलां महोरे पाप कर्यां होय अने ते नरकमां जवानो होय पण ते पाप तेनां तत्काळ नाश पामी जाय छे अने ते जीवनुं कल्याण थाय छे. माटे सुकृती जीव होय अथवा दुष्कृती जीव होय पण ते जो प्रत्यक्ष महात्मा पुरुषनो गुण लईने सेवा करे तो ते जीवनुं कल्याण थाय छे. अने सूझे एवो सुकृती होय पण सत्पुरुषना अवगुणनो लेनारो जरूर नरकमां जाय छे.

माटे जेने पोतानुं कल्याण इच्छवुं तेने सत्पुरुषनो अवगुण कोई काळे लेवो नहीं अने गुण ज लेवो अने पोतानी श्रद्धा प्रमाणे थाय तेटली सेवा करवी, पण अवगुण तो लेवो ज नहीं. अने जे सत्पुरुषनो द्रोह करता हशे तेने तो अंतरमां यमपुरीना जेवुं दुःख थतुं हशे अने तेने अन्न पण भावतुं नहीं होय अने हडकाया कूतरानी पेठे रात दहाडो संतापने पाम्या करतो हशे अने तेने कोई ठेकाणे शान्ति नहीं थती होय अने ते मरीने घोर नरकमां पडशे. अने जे सत्पुरुषनो गुण लईने सेवा करे छे तेना अंतरमां महा सुख वर्ततुं हशे अने तेने रात

केवी रीते करवो? तो जड-चेतननो विवेक समजवो. जे चोवीस तत्त्वात्मक पिंड ब्रह्मांड ते जड छे, नाशवंत छे, दुःखरूप छे अने मिथ्या छे अने ते जडने धरी रहेनारो आत्मा चेतन छे, अविनाशी छे, सत्य छे. अने सुखरूप छे अने एवो जे चेतन आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप जाणवुं. एवी रीते आत्मज्ञाने करीने सूक्ष्म देह रूपी ए रोग टळे छे पण ते आत्मज्ञान कोने थाय? तो जेणे तपे करीने स्थूळ देहना विकार टाळ्या होय तेने आत्मज्ञान थाय छे, पण तप कर्या विना अने स्थूळ देहना विकार टाळ्या विना आत्मा-अनात्मानो विचार अनंत वरस सुधी कर्या करे तो पण तेने आत्मज्ञान थाय नहीं अने आत्मज्ञान थया विना सूक्ष्म देहरूपी ए रोग टळे नहीं. माटे तपे सहित आत्म-विचार करे तो सूक्ष्म देह अने स्थूळ देह बे य देहरूपी ए टळे छे.

अने कारण देहरूपी रोग भगवाननी मूर्तिने ध्याने करीने टळे छे ते ध्यान केवी रीते करवुं? तो इन्द्रियो अंतःकरणनी वृत्तियोने एकाग्र करीने ध्यान करवुं, ते वृत्ति एकाग्र क्यारे थाय? तो पंचविषयनो राग टळे त्यारे एकाग्र थाय. ते रागने टाळवाने अर्थे वैरागनो विचार करवो जे आत्मा अने परमात्मा विना पिंड ब्रह्मांडादिक सर्वे जगत नाशवंत छे, दुःखरूप अने पापरूप छे. एम जाणीने ते थकी वैराग पामीने एकाग्र वृत्तियो करीने भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करवुं अने एवी रीते ध्यान करे छे तेने कारण देहनुं जे अंधारुं ते टळीने प्रकाश थाय छे. ते प्रकाशने तूर्यापद कहे छे तथा तेने महाकारण देह कहे छे ते जेणे धर्मे सहित तपे करीने स्थूळ देहनो रोग टाळ्यो होय तथा आत्मविचारे करीने सूक्ष्म देहनो रोग टाळ्यो होय तेने ज वैराग उपजे छे अने जेने लोक भोगादिकने विषे वैराग होय तेने ज भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान थाय छे अने ध्याने करीने कारण देहनो नाश थाय छे.

अने कारणदेह टळी गयुं होय, तो पण तेने प्रत्यक्ष भगवानने विषे अत्यंत भक्ति जे प्रीति थई न होय त्यां सुधी तेने महाकारण देह रहे छे अने महाकारण देह टळ्युं न होय त्यां सुधी तेने जन्ममरणरूपी दुःख रहे छे. माटे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतने विषे प्रीति थाय त्यारे महाकारण देह टळी जाय अने ते आत्मा ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामे छे अने तेने जन्ममरणादिक महादुःख ते सर्वे टळी जाय छे अने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतने विषे प्रीति थई न होय अने बीजा धर्म, ज्ञान, वैरागे करीने त्रण देहने टाळी नाख्यो होय, तो पण तेने जन्ममरणरूपी महाकारण देहनी पीडा ते मटे नहीं.

जेम गुमडुं, वींछी अने झाटकानी पीडा टळी गई होय तो पण जो पत टळी न होय तो तेने दुःख रहे छे, अने पत टळी गई होय पण बीजा त्रण रोग होय तो पण तेने दुःख रहे छे. तेम धर्म, ज्ञान, वैरागे करीने स्थूळ, सूक्ष्म, कारण देहना रोगने टाळ्या होय, पण पतरूप जे महाकारण देह ते टळ्युं न होय त्यां सुधी तेने देहे करीने सुख वर्ते खरुं पण जन्ममरणरूपी महारोग ते टळे नहीं. अने धर्म, ज्ञान, वैरागे युक्त होय अने तेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत मळे अने तेने विषे प्रीति थाय तो तेना सर्वे रोग टळीने अक्षरधामने पामे छे.

अने धर्म, ज्ञान, वैराग तो न होय अने त्रिविधिना तापमां जीव बळतो होय पण जो तेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतने विषे प्रीति थई जाय तो तेना चारे देहना रोग टळीने अक्षरधामने पामे छे अने त्रिविधिना ताप सर्वे समाई जाय छे. जेम एक चंद्रकान्तमणि होय छे ते चंद्रकान्तमणिने हाथमां लईने अग्निनी मोटी ज्वाळा बळती होय तेमां जईने बेसे तो ते अग्नि टाढी शीतल जेवी थई जाय अने ते पुरुषने रंचमात्र ताप लागे नहीं एवो चंद्रकान्तमणिमां गुण रह्यो

छे, तेम प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनी मूर्ति छे ते चंद्रकान्तमणि जेवी छे ते जे आत्मा प्रत्यक्ष भगवान अने संतनो आश्रय करीने तेने विषे प्रीतिए करीने जोडाई जाय छे तेने चार देहरूपी रोग तथा त्रिविधिना ताप सर्वे नाश थई जाय छे. अने ते आत्माए तप, ज्ञानादिक साधन न कर्यां होय अने महा तमोगुणी जीव होय अने चार देहना रोगमां महा दुःखने पामतो होय पण तेने चंद्रकान्तमणिरूप प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना एकांतिक निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी संत तेनी मूर्तिने विषे प्रीति थाय तो ते जीव चार देहातीत थईने अक्षरधामने पामे छे.

अने जो प्रत्यक्ष भगवानथी विमुख रहीने प्रत्यक्ष भगवान अने संतना द्रोहना करनारा होय तेनो संग करे तो ते जीव महा संतापने पामे छे. जेम एक सूर्यकान्तमणि छे तेने हाथमां लईने सात समुद्रना जळमां जाय तो ते सात समुद्रनुं पाणी बळीने भस्म थई जाय एवो सूर्यकान्तमणिमां अग्नि रह्यो छे, तेम प्रत्यक्ष भगवानना द्रोहना करनारा छे ते तो सूर्यकान्तमणिनी पेठे सात समुद्ररूप जे धर्म, ज्ञान, वैरागादिक शुभ गुण तेने बाळीने भस्म करे छे अने ते प्रत्यक्ष *भगवान अने संतना द्रोहना करनाराना जे संग करे छे ते पण तेने* संगे करीने द्रोह करवा शीखे छे अने ते द्रोहना करनाराए तपे करीने स्थूळ, देहना रोगने टाळ्यो होय अने आत्मज्ञाने करीने सूक्ष्म देहना रोगने टाळ्यो होय अने वैरागे करीने कारण देहना रोगने टाळ्यो होय अने आत्मारूप थईने परोक्ष भगवाननी भक्ति करता होय पण जो ते प्रत्यक्ष भगवान अने तेना संतनो द्रोह करे तो तेनां साधन सर्वे नाश पामी जाय छे अने ते आत्माने पाछा चार देहना रोग प्रगट थईने ते जीवपणांना भावने पामीने नरकमां जाय छे.

ते पूर्वे कृष्णावतारने विषे राजा जरासंघ हतो तेणे तप, ज्ञान अने वैरागे करीने त्रण देहना रोगने तो टाळ्या हता अने परोक्ष भगवाननी भक्ति पण करतो हतो, पण जो तेणे प्रत्यक्ष भगवान श्रीकृष्णनो द्रोह कर्यो तो ते असुर कहेवाणो तथा कोरव, कर्ण आदिक घणाक मोटा मोटा ते महा धर्मवाळा अने सत्यवादी हता अने परोक्ष भगवाननी ए बधाय भक्ति करता हता पण तेणे एक प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना भक्तनो जो द्रोह कर्यो तो तेना सुकृत मात्र बळीने भस्म थई गयां अने ते असुर-दैत्य कहेवाणा अने ते सर्वे नरकमां गया. अने व्रजमां गोप-गोवाळ तथा रामावतारमां गुहराजा भील तथा शबरी भीलडी तथा वांदरा तेणे कांई जप तप साधन कर्यां न हतां अने कांई समजतां न हतां अने धर्म-नियम पण पाळता न हता पण तेणे प्रगट भगवानने विषे प्रीति करी तो ते सर्वे परमपदने पामी गया अने तेना गुण मोटा ब्रह्मादिक गाय छे.

माटे सूझे एवो अधर्मी जीव होय पण तेने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो आश्रय थई जाय तो ते जीव परम पवित्र थईने भगवानना धामने पामे छे अने तेने चारे देहना रोग टळी जाय छे, पण जे प्रत्यक्ष भगवान अने संतनो द्रोह करे अने तेणे बीजां अनंत साधन कर्यां होय ते सर्वे बळीने भस्म थई जाय छे अने जीव नरकमां पडे छे. माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण इच्छवुं तेने कोई शुद्ध ज्ञानदाता महात्मा पुरुष प्रगट थया होय तेनो द्रोह करवो नहीं अने तेनी जेटली थाय तेटली सेवा करवी अने तेने विषे प्रीति करवी. एवी रीते समजे तेनुं कल्याण थाय छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २७६ समाप्त।



श्रीमुखसिद्धांत २७७ विषय.–एकादशीनुं माहात्म्य.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ ना पोष सुदि ११ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री बोचासण मध्ये पटेल गणेसजी वेचरभाईने घेर उत्तरादा बारना ओरडानी आगळ गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पीळा पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराजनी संध्या आरती थया केडे महाराज बोल्या जे "सर्वेने अमे एक प्रश्न पूछीए छीए जे "एकादशी करवानुं शुं कारण हशे? अने एकादशी थई क्यांथी हशे? अने एकादशी करवी क्यां सुधी? ते कहो."

पछी धर्मानंद स्वामीए उत्तर करवा मांडयो पण यथार्थ थयो नहीं, त्यारे महाराज बोल्या जे "सांभळो अमे तेनो उत्तर करीए जे एकादशी करवानुं कारण तो ए छे के दश इन्द्रियोनी वृत्तियो अने एक मन एटले अंतःकरण ए अगियार मळीने लिंग शरीर कहेवाय छे. ते ए लिंग शरीर गळे कहेतां लिंग शरीर नाश पामे त्यारे आत्मानुं कल्याण थाय छे. तेथी ए लिंग शरीरने गाळवाने अर्थे एकादशी करवी. ते एकादशी करवा थकी लिंग शरीर गळी जाय छे अने लिंग शरीर गळ्युं एटले एकादशी पूरी थई रही.

हवे एकादशीए करीने केवी रीते ते लिंग शरीर नाश पामे छे? तो दश इन्द्रियो अने अगियारमुं मन तेनी वृत्तियोना जे मायिक पंचविषय तेने बंध करवा वडे करीने लिंग शरीर नाश पामे छे. केमके दश

इन्द्रियो अने मननी वृत्तियोने विषयमां प्रीति एज लिंग शरीर छे. ते ए इन्द्रियोनी वृत्तियोने विषय थकी पाछी वाळीने भगवानना स्वरूपमां राखे तो तेने लिंग शरीर गळी जाय छे अने ते आत्मानुं कल्याण थाय छे. अने जेने लिंग शरीर गळी गयुं होय तेने तो अखंड बारे मास एकादशी थया करे छे. ते आ अमारा साधु छे तेने अखंड एकादशी थया करे छे तथा बीजा अमारा गृहस्थ हरिभक्त केटलाक बाई-भाई छे तेने पण अखंड एकादशी थया करे छे. अने जेने लिंग शरीर गळ्युं न होय तेने एवी रीते अखंड एकादशी करवानुं तो बळ होय नहीं. ते सारु महात्मा पुरुषे पंदर दिवसे एक दिवसे एकादशी करवानो ठराव कर्यो छे. ते पंदर दहाडे एक दिवसे तो जरूर एकदशी करवी.

हवे ते एकादशी करवानी शी रीत छे ? अने केवी रीते करे तेनुं नाम एकादशी करी कहेवाय ? तो जे दिवस एकादशीनुं व्रत होय ते दिवस एम ठराव करवो जे 'सवारमां ऊठीने स्नान विधि करीने ज्यां देव मंदिर होय त्यां संसार वहेवारनो त्याग करीने जवुं अने त्यां मंदिरने विषे जईने कोई भगवाननी मूर्ति होय अथवा भगवानना संत पंच-विषयना त्यागी ते रहेता होय तेनां आंखे करीने दर्शन करवां, पण ते दिवस भगवान अने भगवानना भक्त अथवा संत ते विना बीजां रूप मात्र जोवां नहीं. अने भगवान अने भगवानना भक्तना दर्शन विना बीजा आकार मात्रने पापरूप अने बळता अग्नि जेवा जाणीने कोई आकारने आंखे करीने जोवां नहीं. अने तेवी ज रीते काने करीने भग-वाननी कथावार्ता, कीर्तनने सांभळवा अने ते विना बीजा शब्द मात्रने पापरूप जाणीने तेनो त्याग करवो. तेम ज त्वचाए करीने भगवाननो स्पर्श करवो अने बीजा स्पर्शनो त्याग करवो अने रसनाए करीने भगवानना चरित्र गावानो रस लेवो अने ते विना बीजा रस मात्रनो त्याग करवो

अने नासिकाए करीने भगवाननी प्रसादी पुष्प-चंदन तेनो सुगंध लेवो अने बीजा सुगंध मात्रनो त्याग करवो अने हाथे करीने भगवाननी सेवा करवी अने बीजी सर्व क्रियानो त्याग करवो अने वाणीए करीने भगवाननुं भजन कीर्तन करवुं अने ते विना बीजुं बोलवानो त्याग करवो अने अंतःकरणमां भगवाननी मूर्तिनुं ध्यान करवुं अने ते विना मायिक पंचविषय संबंधी देह-देहादिक जगतनां पदार्थने संभारवां नहीं. एवी रीते दश इन्द्रियो अने अगियारमुं अंतःकरण तेनी वृत्तियोने मायिक पंचविषयनो त्याग करावीने भगवानना स्वरूपमां जोडी देवी अने अगियारे इन्द्रियो अंतःकरणने निराहारपणें राखीने उपवास करवो तेनुं नाम एकादशी करी कहेवाय छे अने तेमां जेटलो फेर पडे तेटली तेने एकादशी अधूरी छे एम जाणवुं.

माटे खबडदार थईने प्रथम कह्युं तेवी रीते एकादशीनुं व्रत करे छे तेने लिंग शरीर गळवा मांडे छे. पछी एवी रीते एकादशी करतां करतां लिंग शरीर गळी जाय छे अने लिंग शरीर गळ्युं एटले तेने भगवान प्रगट थईने दर्शन आपे छे. ते भगवाननी मूर्तिने विषे प्रीतिए करीने जोडाई जाय छे अने तेनुं कल्याण थाय छे. माटे जेने पोताना आत्माना कल्याणनी इच्छा होय तेने एकादशीनुं व्रत आ कह्युं ते प्रमाणे विधि सहित जरूर करवुं."

इति श्रीमुखसिद्धांत २७७ समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत २७८ विषय:-धर्ममां कुसंप अने धर्म जुदा जुदा थवानुं कारण.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः- संवत १९२४ना पोष सुदि १२ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री बोचासण मध्ये पटेल हीराभाई नानाभाईने घेर उत्तरादे बारना ओरडानी रवेशमां गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंवल जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया पछी महाराज बोल्या जे "भगवाने प्रथम स्रष्टि करी त्यारे सर्वे मनुष्य एक धर्मी हता; कोईने कुसंप न हतो अने ते दहाडे सतयुग वर्ततो हतो. पछी काळे करीने घणाक जुदा जुदा धर्म थई गया अने एक बीजानां मन नोखां पडी गयां अने कुसंप थई गयो छे. ते कुसंप थयानुं कारण शुं छे? तो प्रथम जीवोने ज्ञान आपीने मायाथी मुकावीने भगवान पोताना अक्षरधाममां लई जवा सारु अने जीवोने जन्म-मरण अने गर्भवास अने चोरासीनां महा दुःख तेथी उद्धार करवाने अर्थे भगवान आ पृथ्वीने विषे मनुष्यदेह धारण करीने प्रगट थया अने प्रगट थईने घणाक जीवोने ज्ञान आपीने माया पर कर्या अने घणाक जीव प्रत्यक्ष भगवानना आश्रित थया अने एकांतिक धर्मनुं स्थापन करीने पछी भगवान पाछा पोतानी इच्छाए करीने स्वधाममां गया.

पछी काळे करीने ते धर्मनो लोप थई गयो अने विषयनी प्रवृत्ति थई गई अने मोक्षनो मार्ग बंध थयो त्यारे वळी फेर पाछा भगवान प्रगट थया अने ज्ञान देवा मांडयुं अने विषयनो त्याग करावीने निर्वासनिक करवा मांड्या अने केटलाक दैवी जीव हता ते प्रत्यक्ष भगवाननो आश्रय करीने निर्वासनिक थया. पछी आगळना पोताना ज धर्मना हता

पण ते तो विषयनी वासनाए करीने विषयमां भ्रष्ट थई गया होय तेने करीने विषयना त्यागी जे प्रगट भगवानना भक्त तथा प्रगट भगवान तेने देखीने वळी मरे अने तेनो द्रोह करे छे, पण ते प्रगटने माने नहीं. पछी भगवान तो समर्थ छे. ते बीजा धर्मनुं स्थापन करीने दैवी जीवनुं कल्याण करीने पाछा स्वधाममां जाय छे. एवी रीते भगवानना घणाक अवतार थया अने तेने करीने जुदा जुदा धर्म थई गया छे अने एक बीजाने कुसंप थई गयो छे.

ते शंकराचार्य प्रगट थया त्यारे पूर्वना जे जैन मतवाळा हता तेने अने शंकरस्वामीने लडाई थई अने ते जैन मतमां जे दैवी जीव हता ते शंकरस्वामीने आशरे आव्या अने जे आसुरी जीव हता तेनो शंकर-स्वामीए पराजय कर्यो. अने शंकरस्वामी पछी रामानुज प्रगट थया त्यारे शंकरस्वामीवाळाए रामानुजनो द्रोह कर्यो अने तेमां जे दैवी जीव हता तेणे रामानुजनो आश्रय कर्यो अने जे आसुरी जीव हता तेणे रामानुजनो द्रोह कर्यो. अने रामानुज केडे वल्लभाचार्य प्रगट थया त्यारे ते रामानुजवाळे वल्लभाचार्यनो द्रोह करवा मांड्यो अने तेमां जे दैवी जीव हता तेणे वल्लभाचार्यने ओळखीने आश्रय कर्यो अने ते जे आसुरी जीव हता ते द्रोह करता रह्या अने ते नरकमां गया. अने वल्लभाचार्य केडे सहजानंद स्वामी प्रगट थया त्यारे तेनो द्रोह वल्लभाचार्यवाळे घणो कर्यो अने तेमां जे दैवी जीव हता तेणे तो सहजानंद स्वामीनो आश्रय कर्यो अने जे बीजा हता तेणे द्रोह कर्यो. अने आज हवे सहजानंद-स्वामीवाळे अमारो द्रोह करवा मांडयो छे तेमां जे दैवी जीव हशे ते तो अमारे आशरे आवशे अने केटलाक तो अमारा आश्रित थईने अमारुं भजन करे छे अने जे आसुरी जीव हशे ते तो अमारो द्रोह करे छे अने तेना आत्मानुं भूंडुं थशे.

माटे ज्यारे ज्यारे भगवानना अवतार थाय छे त्यारे त्यारे मोरना अवतारना भक्त होय ते प्रत्यक्ष भगवाननो द्रोह करे छे पछी एकबीजाना मन नोखां पडयां अने धर्म पण नोखो कहेवाणो. एवी रीते भगवानना घणाक अवतार थई गया तेने करीने घणाक धर्म थई गया छे, पण तेमां जेटला दैवी जीव छे ते तो सर्वे प्रत्यक्ष भगवानने आशरे थई जाय छे. अने जेटला आसुरी जीव छे ते तो प्रगट भगवाननो द्रोह करे छे अने परोक्षने वंधाई रहे छे अने ते धर्म-नियम पण कांई पाळता नथी माटे ते जीव नरकमां जाय छे. अने प्रगट भगवानने भजवा लागे छे तेनुं कल्याण थाय छे.

माटे जेने पोताना आत्माना कल्याणने इच्छवुं होय तेने पृथ्वी उपर प्रगट भगवान न होय त्यारे तो जे धर्ममां विषयनो त्याग करता-करावता होय तथा भगवानने दिव्य साकार जाणीने ते ज भगवान अवतार धरे छे तेनुं भजन करता-करावता होय तेवा मार्गमां रहीने भगवाननी प्रतिमानी सेवा तथा भगवाननुं भजन करवुं अने ज्यारे भगवान प्रगट थाय त्यारे प्रगटनो आश्रय करवो अने तेनुं भजन करवुं. अने प्रगटना भजन करवामां जे ना पाडे तेनो त्याग करवो. एम समजशे तेनुं कल्याण थशे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २७८ समाप्त।

——:*×*:——

पण ते तो विषयनी वासनाए करीने विषयमां भ्रष्ट थई गया होय तेने करीने विषयना त्यागी जे प्रगट भगवानना भक्त तथा प्रगट भगवान तेने देखीने बळी मरे अने तेनो द्रोह करे छे, पण ते प्रगटने माने नहीं. पछी भगवान तो समर्थ छे. ते बीजा धर्मनुं स्थापन करीने दैवी जीवनुं कल्याण करीने पाछा स्वधाममां जाय छे. एवी रीते भगवानना घणाक अवतार थया अने तेने करीने जुदा जुदा धर्म थई गया छे अने एक बीजाने कुसंप थई गयो छे.

ते शंकराचार्य प्रगट थया त्यारे पूर्वना जे जैन मतवाळा हता तेने अने शंकरस्वामीने लडाई थई अने ते जैन मतमां जे दैवी जीव हता ते शंकरस्वामीने आशरे आव्या अने जे आसुरी जीव हता तेनो शंकर-स्वामीए पराजय कर्यो. अने शंकरस्वामी पछी रामानुज प्रगट थया त्यारे शंकरस्वामीवाळाए रामानुजनो द्रोह कर्यो अने तेमां जे दैवी जीव हता तेणे रामानुजनो आश्रय कर्यो अने जे आसुरी जीव हता तेणे रामानुजनो द्रोह कर्यो. अने रामानुज केडे वल्लभाचार्य प्रगट थया त्यारे ते रामानुजवाळे वल्लभाचार्यनो द्रोह करवा मांड्यो अने तेमां जे दैवी जीव हता तेणे वल्लभाचार्यने ओळखीने आश्रय कर्यो अने ते जे आसुरी जीव हता ते द्रोह करता रह्या अने ते नरकमां गया. अने वल्लभाचार्य केडे सहजानंद स्वामी प्रगट थया त्यारे तेनो द्रोह वल्लभाचार्यवाळे घणो कर्यो अने तेमां जे दैवी जीव हता तेणे तो सहजानंद स्वामीनो आश्रय कर्यो अने जे बीजा हता तेणे द्रोह कर्यो. अने आज हवे सहजानंद-स्वामीवाळे अमारो द्रोह करवा मांडयो छे तेमां जे दैवी जीव हशे ते तो अमारे आशरे आवशे अने केटलाक तो अमारा आश्रित थईने अमारुं भजन करे छे अने जे आसुरी जीव हशे ते तो अमारो द्रोह करे छे अने तेना आत्मानुं भूंडुं थशे.

पासे आवीने ज्ञान पूछे तो हुं तेने निश्चय करावुं अने ते पण मारा आश्रित थईने भजन करवा मांडे. अने ज्ञान विना बीजी रीते मारी पासे परीक्षा लईने निश्चय करवा आवे तेने तो हुं कोई दहाडे ओळखातो नथी अने तेनुं कल्याण पण थतुं नथी.

त्यारे कोईने शंका थाय जे ज्ञान तो घणाय माणस पासे होय छे, तेने करीने कांई भगवान कहेवाता हशे ? तो बीजा मनुष्य पासे जे ज्ञान छे ते तो मायानुं ज्ञान छे. ते ज्ञाननुं नाम तो अज्ञान कहेवाय छे. अने ते ज्ञाने करीने तो ऊलटुं जीवनुं भूंडुं थाय छे. अने जे प्रगट भगवान पासे ज्ञान होय ते तो माया पर ज्ञान होय अने अपार ज्ञान होय अने वगर शीखव्युं ज्ञान प्रगट भगवान पासे होय. अने बीजा कोई भगवानना भक्त पासे ज्ञान होय ते तो ते प्रगट भगवान पासेथी शीख्यो होय तेटलुं ज्ञान तेनी पासे होय, पण वधारे ज्ञान होय नहीं. अने प्रगट भगवान पासे जे ज्ञान होय ते तो वगर शीखव्युं अपार ज्ञान होय.

जेम एक कूवामां पाणी होय अने एक टांकामां पाणी होय. ते कूवामां पाणी छे ते तो अखुट अने अपार पाताळनुं पाणी छे. ते सूझे तेटलुं पाणी कूवामांथी काढे पण कोई दहाडे कूवानुं पाणी खूटे नहीं अने टांकामां पाणी छे ते तो मेघना वरसादनुं पाणी आव्युं छे तेटलुं पाणी छे. ते तेमांथी काढे तेटलुं ते टांकामांथी पाणी ओछुं थाय; ते एम काढता काढता खूटी रहे. तेम भगवानना भक्त पासे जे ज्ञान होय ते तो टांकानुं पाणी छे ते जेटलुं भगवान पासेथी शीख्यो होय तेटलुं तेनी पासे ज्ञान होय, पण वधारे होय नहीं. अने प्रगट भगवान पासे जे ज्ञान छे ते तो कूवानुं पाणी छे ते वगर शीखव्युं अपार ज्ञान होय अने ते अनंत अज्ञानी जीवोने ज्ञान आपीने ब्रह्मरूप करी मूके छे

तोपण जे ज्ञाननो अंत आवतो नथी एवुं ज्ञान प्रगट भगवान पासे होय छे. माटे एवी रीते ज्ञाने करीने ज भगवान ओळखाय छे अने ज्ञान विना बीजी कोई रीते भगवान ओळखाता नथी.

अने वळी ते प्रगट भगवानना ज्ञाने करीने तेना आश्रित पंच-विषयनी कामनाए रहित थईने दृढ निष्कामी थईने निर्भय थाय छे, ए ज प्रगट भगवाननो प्रताप छे. माटे ज्ञाने करीने ज भगवान ओळ-खाय छे अने ज्ञान विना जे परचो मागे छे ते तो मूर्ख छे अने तेने प्रगट भगवान कोई काळे ओळखाता नथी. ते पण मुक्तानंदस्वामीना कीर्तनमां कह्युं छे जे–

परचो इच्छे तेने पामर जाणवो, जन न इच्छवुं जोग जाणे,
निष्कामी ते ज नारायण रूप छे, आशने त्रास उरमां ज नाणे.

माटे परचो मागे ते तो पामर कहेवाय, कहेतां ते आसुरी जीव छे अने तेने भगवान ओळखाता नथी. अने पूर्वे जेटला अवतार थई गया छे ते कोई अवतारमां परचो आप्यो नथी अने परचो माग्यो छे ते असुर कहेवाणा छे. अने जेणे ज्ञाने करीने ओळख्या छे ते भक्त कहेवाणा छे. ते शास्त्रमां पण जुवो तो सर्वे अवतारनुं ज्ञान ज लख्युं छे. माटे ज्ञान छे ए ज सर्वे करतां भगवाननुं मोटुं पराक्रम छे. केमके अमारे पासे एक ज्ञान छे तो निर्भय थईने मुलकमां फरीए छीए अने ज्ञाने करीने निश्चय करावीए छीए; पण ज्ञान विना बीजुं कांई अमारी पासे जोर गणातुं नथी, तोपण अमने कोई पूगवाने समर्थ थतो नथी, तेनुं कारण शुं छे? तो ज्ञानमां अनंत शक्ति रही छे अने ज्ञान विना बीजुं सूझे तेटलुं बळ होय पण ते सर्वे ज्ञान आगळ तरणा मात्र छे.

जेम अंग्रेज सरकारनी पासे मायिक ज्ञान छे तो ते परदेशमांथी आवीने

बधाए माणसोने पोताने वश कर्या छे अने उपरथी जोईए तो ते माणस तो थोडाक छे अने आ देशना माणस तो तेना करतां लाखगणां वधारे छे, पण आ देशना माणसने बुद्धि नथी तथा तेमां बळ नथी. तेम प्रगट भगवान तो माणस जेवा जणाता होय अने तेने कांई झाझा मनुष्य पण भेगां होय नहीं अने बीजा मतपंथवाळाओने तो मनुष्य घणा होय अने घणा लोक तेने मानता होय अने पैसानुं पण तेने जोर घणुं होय तो पण ते सर्वे मळीने प्रत्यक्ष भगवानने पूगवाने समर्थ थता नथी. अने भगवानथी छेटे रहीने अविद्या करे, पण कोई पासे आवीने पूगी शके नहीं. ते दैवी जीव होय अने ते प्रगट भगवान पासे आवे तो तेने ज्ञान आपीने पोताना आश्रित करीने पोताना स्वरूपनो निश्चय करावे छे. अने आसुरी जीव होय अने ते प्रगट भगवान पासे आवे तो तेने ज्ञानरूपी खडगे करीने नजीवो करे छे, कहेतां ते असुर फरीने भगवानना भक्तने पीडी शके नहीं एवो तेनो पराजय करे छे. एवो अद्भुत ज्ञाननो प्रताप छे. माटे ज्ञाने करीने ज अमारुं स्वरूप ओळखाय छे अने जीवनुं कल्याण पण ज्ञाने करीने ज थाय छे."

प्रश्नः—पछी पटेल हरखजीभाईए महाराजने हाथ जोडीने कह्युं के "हे महाराज! तमे तो साक्षात्कार परमात्मा भगवान छो एवो मने तमारा स्वरूपनो निश्चय थयो छे, पण हवे तमारी मूर्ति मारा आत्माने विषे अखंड देखाय एवो उपाय मने बतावो."

पछी महाराज बोल्या जे "भगवाननी मूर्तिने देखावामां जे आत्माने आडुं मायानुं आवरण छे, तेने चिदाकाशनी दृष्टि करीने ते आवरणने टाळी नाखे तो तेने मूर्ति अखंड देखाया करे. हवे ते केवी रीते चिदाकाशनी दृष्टि करीए? तो एम विचार करवो जे 'पिंड ब्रह्मांडादिक मिथ्या अने स्वप्नवत् छे.' एम जाणीने पोताना आत्माने निराकार

अने व्यापक जाणीने 'सर्व ठेकाणे आकाश वधायमां हुं रह्यो छुं; हुं विना कोई जग्या खाली नथी एवो हुं अक्षरब्रह्मरूप छुं अने ते मारा स्वरूपने विषे प्रत्यक्ष भगवान रह्या छे.' एम विचार करीने आ अमारी मूर्ति जेवी तमे देखो छे तेवी वस्त्र पुष्पे सहित संभारीने ध्यान करवुं अने मूर्ति सामुं जोई रहेवुं. पछी एम ध्यान करवानो अभ्यास थोडाक दिवस करशो एटले अंतरमां प्रकाश थशे अने ते प्रकाशमां अमारुं स्वरूप अनंत प्रताप अने अनंत पार्षदे सहित देखाशे. पछी ते मूर्तिनी क्यारे य विस्मृति थशे नहीं. माटे पूर्वे कह्यो एवो विचार करीने ध्याननो अभ्यास करजो एटले तमने अमारी मूर्ति आत्मामां अखंड देखाशे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २७९ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत २८० विषयः—अपराध अने महा अपराधरूपा दोष टळे तो ज मोक्ष थाय.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ ना पोष वदि १०ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री बोचासण मध्ये कोटवाल वाला काला तथा वापु अमराने घेर गादीतकिये युक्त पलंग विछावीने ते उपर विराजमान थया हता. किनखापनो सुरवाल अने डगली धारण कर्यां हतां अने लीला रंगनो जरियानी रेटो पहेर्यो हतो. कसुंबल शेलुं एक केडे वांध्युं हतुं अने एक शेलुं खभे धारण कर्युं हतुं. मस्तक उपर कसुंबल सोनेरी कोरना छेडावाळी मोटी पाघ धारण करी हती अने सर्वे अंगमां पीळां पुष्पनां आभूषण शोभी रह्यां हतां. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने वेठी हती. अने ते पलंग उपर फूलनो हिंडोळो वांध्यो हतो.

पछी महाराजनी संध्या आरती थया पछी महाराज बोल्या जे

जीवने विषे बे दोष छे, एक अपराध अने बीजो महाअपराध. ए बे दोष ज्यांसुधी होय त्यांसुधी जीवनुं कल्याण थाय नहीं. ते अपराध शुं? तो जगत कर्ता एवा जे अनंत कोटि ब्रह्मांडना पति भगवान तेने अने नाशवंत एवो जे देह तथा देहना सगां स्त्री, छोकरा, मा-बाप तथा धन-दोलत, गाम-गरास ते बेयने सरखां जाणे छे अने भगवान उपर अने मायिक पदार्थ उपर सरखुं हेत राखे छे ते तो अपराधी जीव छे. अने जे भगवानना करतां मायिक पदार्थमां वधारे हेत राखे छे ते तो महा अपराधी छे केमके भगवान क्यां? अने मायिक पदार्थ क्यां? ए बेमां तो घणो ज भेद छे.

जेम एक चिंतामणि ते क्यां? अने एक फूटेल बदामनुं फोतरुं क्यां? तेम भगवान तो चिंतामणिरूप छे अने मायिक पदार्थ तो फूटेल बदामना फोतरां जेवां छे. माटे भगवाननो देह अने देहनां सगां संबंधी धन-माल तेने सरखां माने छे अने सरखुं हेत राखे छे तेने अपराधी जीव जाणवो अने तेनुं कल्याण थाय नहीं. अने जे भगवानना करतां मायिक पदार्थमां वधारे हेत राखे छे तेने तो महा अपराधी जाणवो; केमके जीवना साचा सगा अने सुख अपनारा तो भगवान छे अने देहने देहनां सगां-संबंधी, धन-माल गाम-गरास ते तो कोई जीवनी भेगुं आवतुं नथी. अने ऊलटा जीवने दुःख देनारा छे अने नाशवंत छे; तेमां वधारे प्रीति राखे छे अने भगवानमां प्रीति नथी राखतो तेने तो महा अपराधी जाणवो.

अने अपराधी अने महा अपराधी एवा जे जीव ते एम जाणे छे जे 'मने स्त्रीमांथी सुख थशे? के द्रव्यमांथी सुख थशे?' अने स्त्री जाणे जे 'मारे पुरुषमांथी सुख थशे? के सारुं सारुं खावामांथी सुख थशे? के मारे झाझां सगां-संबंधी होय तो तेमांथी सुख थशे? के मने घणा

मनुष्य वखाणे अने मान आपे तो सुखी थाउं.' एवी रीते मायिक पदार्थें करीने सुखी थवाने इच्छे छे, पण तेने करीने कोई काळे जीवने सुख थयुं नथी अने थशे पण नहीं.

अने आदि, मध्ये अने, अंते भगवान ज जीवनी रक्षा करे छे अने सर्वे सुखना सिंधु तो एक भगवान छे अने भगवान विना बीजुं सर्वे दुःखरूप छे. माटे भगवान अने बीजा मायिक पदार्थने सरखां जाणे छे तथा भगवान करतां वधारे वहालां करे छे ते तो महा अपराधी छे अने तेनुं कल्याण कोई काळे थाय नहीं. माटे जेने पोताना आत्माना कल्याण-ने इच्छवुं होय तेने भगवान जेवुं कोई पदार्थ वहालुं राखवुं नहीं.

त्यारे कोई एम कहे जे मायिक पदार्थ एवां नकारां अने दुःखनां देनारां छे तो तेने परमेश्वरे शुं करवा कर्यां हशे ? अने तेमां सुख जेवुं शुं करवा जणाव्युं हशे ? तो तेनुं एम छे जे भगवाने पोताना सुखनुं ज्ञान करावववा सारु जगतनी उत्पत्ति करी छे, अने ते जगतने विषे जे सुख जणाय छे ते सुख केवुं छे ? तो जेम समुद्रना जळमांथी एक सळी भरीने वहार नाखे ते केटलुं कहेवाय. तेम समुद्र जेटलुं भगवानना धामनुं सुख छे. ते सुखनुं ज्ञान करावववा सारु तेमांथी एक सळी जेटलुं सुख एक मूळप्रकृतिपुरुषने आप्युं छे. ते सुखे करीने प्रकृतिपुरुषे अनंत कोटि ब्रह्मांड उपजाव्या अने तेने करीने सर्वे ब्रह्मांडोना अनंतकोटि देव, दैत्य, राजा, प्रजा, पशु, पक्षी जीव प्राणी मात्र सुखिया थया छे अने ते सुखे करीने मोटा मोटा देव ब्रह्मादिक तथा पशु पक्षी आदिक सर्वे रचीपची रह्या छे. अने तेमां सर्वे जीव प्राणी मात्र मोह पामीने तेमां एकतार जोडाई रह्या छे, पण ते मायिक सुखमांथी कोई जीव तृप्त थतो नथी. तेम ते सुख थकी कोई जीव पोताने जाणे उदास पण थतो नथी एवुं आश्चर्यकारी लागे छे.

पछी ते सुखमांथी वैराग करावीने पोताना सुखनो अनुभव कराववा सारु परमात्मा पोते पृथ्वी उपर प्रगट थाय छे अने प्रगट थईने पोताने शरणे आव्या एवा जे जीवो तेने एम ज्ञान करावे छे जे 'मारा एक संकल्पे करीने अनंतकोटि ब्रह्मांड उत्पन्न थया छे ते तमने मारा सुखनो अनुभव कराववा सारु मिथ्या स्वप्नवत् देखाडयुं छे, तो तेमां तमे आश्चर्य पामीने तेमां जोडाई गया छो.' एम अनुभव करावीने पोताना स्वरूपमां प्रीति करावीने देह तथा देह संबंधी पदार्थनी वासना टळावीने निर्वासनिक करीने ब्रह्मस्थिति करावीने पोताना अक्षरधामने पमाडवा सारु भगवाने जगतनी उत्पत्ति करी छे. माटे 'भगवाने जे जे कर्युं छे ते जीवना मोक्षने अर्थे कर्युं छे,' एम जाणीने अपराध अने महा अपराधरूपी दोषनो त्याग करीने भगवान अने भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी निर्वासनिक संत तेने विषे प्रीति करवी अने भगवान अने भगवानना संत जेवुं कोई पदार्थ वहालुं राखवुं नहीं."

इति श्रीमुखसिद्धांत २८० समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २८१ विषयः-सर्वज्ञ भगवान रामे सीतानुं हरण केम थवा दीधुं ?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२४ ना पोष वदि ११ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री बोचासण मध्ये पटेल गवड काकुजीने घेर उत्तरादा बार ओरडानी आगळ गादीतकिया बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः-पछी पटेल हिराभाई नानाभाईए प्रश्न पूछयो जे "हे

महाराज ! रामचंद्रजी तो भगवान हता, सर्वज्ञ हता अने त्रण काळनुं जाणे एवा हता, तोपण सीताजीने रावण हरी गयो, ते केम जाण्युं नहीं?"

पछी महाराज बोल्या जे "रामचंद्रजी भगवानने सर्वज्ञ अने त्रणे काळने जाणनारा कह्या अने तेणे सीतानुं हरण केम जाण्युं नहीं! एम कहेवाय नहीं. अने एम कहेवुं जे 'एम भगवान सर्वज्ञ छे, ते सर्व वातने जाणता हता, तोपण तेणे सीतानुं हरण केम थवा दीधुं हशे?' एम कहो."

त्यारे हीराभाईए कह्युं के "हे महाराज ! भगवाने एवी लीला शा सारु करी ?" पछी महाराज बोल्या जे "भगवान छे ते न्यायक छे. ते न्याये करीने असुरनो नाश करे छे अने न्याये करीने जीवनुं कल्याण करे छे. ते असुरने वांकमां आणीने तेनो नाश करे छे. ते पोते रामचंद्रजी जाणता हता के सीतानुं हरण थशे. ते सीताजीने आगळथी कह्युं हतुं जे 'तमने रावण हरी जशे, पण ते वातनी फिकर राखशो नहीं. अने तमे आत्मा छो ते आत्मा तो देहथी नोखो छे अने निर्लेप छे.' एवी रीते ज्ञान अग्निमां सीताजीने प्रवेश कराव्यो हतो अने 'छायारूप जे पंचभूतनो देह तेने रावण हरशे.' एवुं आगळथी कह्युं हतुं. माटे राम तो सर्वज्ञ अने कर्ताहर्ता हता. ते पोतानी इच्छाए करीने सीतानुं हरण थयुं. अने रावण असुर हतो तेने वांकमां आणीने तेनो नाश कर्यो.

अने भगवाने वांदराओनां कल्याण कर्यां ते पण भक्ति कर्या विना कल्याण थाय नहीं. ते भक्ति शुं? तो प्रगट भगवान कहे तेम करवुं तेनुं ज नाम भक्ति छे. ते रावणने मारवाने अर्थे भगवाने जेम कह्युं तेम हनुमान, सुग्रीव, जांबुवान, नलनील आदिक अढार पद्म वानर तेणे आज्ञा पाळी अने प्रत्यक्ष भगवानने विषे हेते करीने जोडाई गया तो ते सर्वेनुं कल्याण रामचंद्रजीए कर्युं.

माटे प्रत्यक्ष भगवान छे ते अंतरयामी, सर्वज्ञ अने सर्वे कर्ताहर्ता छे. तो पण मनुष्यदेह धर्यो होय तो ते मनुष्यनी रीते वर्ते तेने करीने अज्ञानी मनुष्य ओळखी शके नहीं, पण जे दिव्यमूर्ति क्षर-अक्षरना आधार अने वेद जेने नेति नेति कहे छे अने जेथी पर कोई नथी, तेज पोते राम दशरथने घेर प्रगट थया हता; पण ते विना बीजो कोई भगवान नथी. अने जे राम हता ते ज कृष्ण थया हता, माटे जगतकर्ता अने सर्वेना कारण भगवान ते ज पोते जीवोनां कल्याण करवाने अर्थे अने अधर्म अने असुरनो नाश करवाने अर्थे, अने धर्मनुं स्थापन करवाने अर्थे वारंवार अवतार धारण करीने प्रगट थाय छे. पछी जे दैवी अने शुभ संस्कारी जीव होय ते प्रत्यक्ष भगवाननो आश्रय करीने सेवाभक्ति करे छे ते जीवनुं भगवान कल्याण करे छे अने जे आसुरी जीव होय ते प्रत्यक्ष भगवाननो द्रोह करे छे. तेनो भगवान नाश करे छे.

अने दैवी अने आसुरीनी खबर प्रगट भगवान होय त्यारे ज पडे छे, केमके जे दैवी होय ते प्रगट भगवाननो गुण लईने सेवा करे छे. अने जे आसुरी होय ते प्रगट भगवाननो अवगुण लईने द्रोह करे छे. ते जेणे प्रगट भगवाननो गुण लईने सेवा करी छे तेनां कल्याण थयां छे अने जेणे प्रगट भगवाननो अवगुण लईने द्रोह कर्यो छे ते सर्वे नरकमां गया छे. माटे जेने पोताना आत्माना कल्याणने इच्छवुं तेने प्रगट भगवाननो आश्रय करवो अने तेनी आज्ञा पाळवी ए ज जीवना कल्याणनुं अचळ सिद्धांत छे अने कोई एम कहेता होय जे—

एक राम तो घट घट बोले, बीजा राम दशरथ घर डोले,
त्रीजा राम सकल प्रसारा, चोथा राम सबसे न्यारा.'

एक रामना नोखा नोखा भेद बतावीने प्रत्यक्ष दशरथना पुत्र राम तेने विषेथी आस्था उठडावीने नास्तिक करे ते तो नास्तिक छे;

अने कल्याणना खपवाळाने तेनो संग करवो नहीं. अने जे 'राम दशरथना पुत्र ते विना बीजा कोईक निरंजन, निराकार भगवान छे' एम कहे छे ते तो असुर छे, महा पापी छे अने तेनो संग करे तेने पण नित्ये पंच महा पाप लागे छे.

ते पंच महा पाप ते कयां ? तो (१) ब्रह्महत्या (२) गोहत्या (३) स्त्री हत्या (४) बाळहत्या अने (५) ए चारमांथी एके जणनो संग करवो ए पंच महा पाप छे. ते जे 'प्रगट दशरथना पुत्र राम तेने मूकीने ते विना बीजो कोईक भगवान छे' एम कहेता होय तेने अने तेना संगना करनाराने नित्ये पंच महा पाप लागे छे. अने ते जीवनुं कोई काळे कल्याण थतुं नथी.

माटे एवा पापीनो संग करवो नहीं अने 'सर्व कर्ता अने सर्वना कारण प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक छे,' एम समजवुं अने तेनुं भजन करवुं अने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवाननुं भजन करता करावता होय अने चोरी, छिनाळी, दारु, माटी, गांजो आदिक अधर्मनो त्याग करी-करावीने धर्ममां रहेता-रखावता होय तेनो समागम करवो अने पोताने देहथी नोखो आत्मारूप मानवुं अने पंचविषयनां पदार्थ उपर अरुचि राखवी अने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवाननी मूर्तिओ अने तेना संत तेने विषे माहात्म्ये सहित प्रीति करवी. एवी रीते समजीने भगवाननुं भजन करशे तेनुं कल्याण थशे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २८१ समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत २८२ विषयः—जीव कयांथी आवे छे ? अने कयां जाय छे ?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ ना महा सुदि १ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री वोचासण मध्ये पटेल गणेशजी वहेचरदासने घेर गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी गाम रोहीसाळाना भक्त भगवानजी लक्ष्मीरामे प्रश्न पूछयो जे "हे महाराज! आ जीव छे ते क्यांथी आवतो हशे? अने पाछो क्यां जतो हशे? ते आवतो-जतो जणातो नथी ते अमने कहो के क्यांथी आवे छे? अने क्यां जाय छे?"

पछी महाराज बोल्या जे "ए वात जाणवी घणी ज कठण छे अने जेम बीजां मायिक पदार्थ देखाय छे तेवी रीते जीव देखाय एवो पण नथी अने समजणे करीने देखाय एवो छे. ते समजणे करीने जीवने आव्यो गयो देखाडुं छुं जे जीवने पांच कोषरूपी रहेवानां पांच स्थानक छे. ते पांच स्थानक क्यां? तो एक अन्नमय कोष छे, बीजो प्राणमय कोष छे, त्रीजो मनोमय कोष छे, चोथो विज्ञानमय कोष छे. अने पांचमो आनंदमय कोष छे. ए पांच कोषने विषे जीव रह्यो छे.

तेमां प्रथम जीव आनंदमय कोषरूप जे कारण माया घोर सुषुप्ति तेने विषे हतो. पछी उत्पत्ति समये आनंदमय कोषने भेगो लईने विज्ञानमय कोष जे बुद्धि तेमां प्रवेश करे छे अने ते पछी आनंदमय अने विज्ञानमय कोषे सहित मनोमय कोष जे मन तेमां प्रवेश करे छे. त्यार पछी ए त्रणे कोषे सहित जीव जे ते प्राणमय कोषमां प्रवेश करे छे अने त्यारवाद ए चारे कोषने भेगा लईने जीव जे ते अन्नमय कोष

अने कल्याणना खपवाळाने तेनो संग करवो नहीं. अने जे 'राम दशरथना पुत्र ते विना बीजा कोईक निरंजन, निराकार भगवान छे' एम कहे छे ते तो असुर छे, महा पापी छे अने तेनो संग करे तेने पण नित्ये पंच महा पाप लागे छे.

ते पंच महा पाप ते कयां? तो (१) ब्रह्महत्या (२) गोहत्या (३) स्त्री हत्या (४) बाळहत्या अने (५) ए चारमांथी एके जणनो संग करवो ए पंच महा पाप छे. ते जे 'प्रगट दशरथना पुत्र राम तेने मूकीने ते विना बीजो कोईक भगवान छे' एम कहेता होय तेने अने तेना संगना करनाराने नित्ये पंच महा पाप लागे छे. अने ते जीवनुं कोई काळे कल्याण थतुं नथी.

माटे एवा पापीनो संग करवो नहीं अने 'सर्व कर्ता अने सर्वना कारण प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक छे,' एम समजवुं अने तेनुं भजन करवुं अने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवाननुं भजन करता करावता होय अने चोरी, छिनाळी, दारु, माटी, गांजो आदिक अधर्मनो त्याग करी-करावीने धर्ममां रहेता-रखावता होय तेनो समागम करवो अने पोताने देहथी नोखो आत्मारूप मानवुं अने पंचविषयनां पदार्थ उपर अरुचि राखवी अने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवाननी मूर्तिओ अने तेना संत तेने विषे माहात्म्ये सहित प्रीति करवी. एवी रीते समजीने भगवाननुं भजन करशे तेनुं कल्याण थशे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २८१ समाप्त ।



होय अने तेने आपणा उपर अतिशय प्रीति होय पण जो आपणे काम-नी अतिशय वासना होय अने तेनी स्त्री सारु तेना घरमां पेसीए तो ते नो ते मांथु वाढवा उभो थाय अने हेतु मटीने शत्रु थाय छे. ते शत्रु कोणे कर्यो ? के पोताने कामनो स्वभाव हतो तेणे शत्रु कर्यो. माटे कामादिक दोष छे एज जीवना शत्रु छे.

माटे बुद्धिमान होय तेने भगवान अने भगवानना संतनो आश्रय करीने पोताना दोष टाळवाने विषे शूरवीर थवुं अने जे भगवान अने भगवानना संतनी आज्ञामां रहीने पोताना दोष टाळवानो खटको राखे छे तेना दोष टळी जाय छे अने तेनुं कल्याण थाय छे. माटे जेने पोताना आत्माने निर्दोष करीने परम सुखने पामवुं होय तेणे भगवान अने भगवानना संतनो समागम करीने तेनी आज्ञामां वर्तवुं अने जे भग-वान अने भगवानना संतनी आज्ञा प्रमाणे वर्तशे तेना सर्व दोष टळीने परम मोक्षने पामशे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २८३ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत २८४ विषय :—सत्त्वगुण राखवाथी ज कल्याण थाय छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ ना महा सुदि ८ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री धर्मज मध्ये पटेल त्रिकमभाई तळसीभाईने घेर उतरादा घारना ओरडानी आगळ गादीतकिया बिछावीने ढोलिया उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पीळां पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराजनी संध्या आरती थया केडे महाराज कृपा करीने सर्व सभा प्रत्ये बोल्या जे "जेने आलोकमां अने परलोकमां महा सुखने पामवुं होय तेने सत्त्वगुण राखवो अने सत्त्वगुणे करीने आलोक अने परलोकने विषे जीवने महा सुख थाय छे अने सत्त्वगुण राखीने जे काम करवानुं धारे ते काम सिद्ध थाय छे अने रजोगुण अने तमोगुणमां महा दुःख रह्युं छे अने रजोगुणी अने तमोगुणीने कोई मनोरथ सिद्ध थतो नथी. केमके कोईकनी पासे आपणे काम कराववुं होय त्यारे तेनी पासे जईने तेने सत्त्वगुण राखीने ते पासे मींठा मींठा वेण कहीशुं तो ते आपणुं काम करशे; पण जो रजोगुण के तमोगुण आणीने तेने कडवां वचन कहीए तो तेने काम करवुं होय तोपण न करे अने हेतु होय ते पण शत्रु थाय. अने आपणो कोईक शत्रु होय पण तेनी आगळ सत्त्वगुण राखीने सत्य हितनां प्रिय वचन बोलीए तो ते शत्रु मटीने हेतु थई जाय अने ते दुःख देतो आळसीने सुख देवा मंडे.

ते आलोकमां जेम सत्त्वगुणमां सुख थाय छे अने तमोगुणमां दुःख थाय छे, तेम परलोकमां जीवना कल्याणने अर्थे पण कोई महात्मा पुरुष होय तेनी पासे सत्त्वगुण राखीने निरमानी थईने दीन-आधिनपणें हाथ जोडीने गरीब थईने महात्मा पुरुषनी सेवा करीए तो ते महात्मा पुरुष कृपा करीने तेने ज्ञान आपे अने ते ज्ञाने करीने जीवनुं कल्याण थाय छे, पण जे तमोगुणे करीने महात्मा पुरुषने कचवावे तो तेना उपर महात्मा पुरुष प्रसन्न थाय नहीं अने ते जीव मरीने महा दुःखने पामे. माटे जेने पोताना कल्याणने इच्छवुं होय तेने कोई महात्मा पुरुष आगळ तमोगुण करवो नहीं अने तेने वसमुं लागे एवुं वचन तो भूलमां पण बोलवुं नहीं.

अने विष्णु, शिव, गणपति, देवी अने सूर्य ए पांच देवनी निंदा

क्यारेय करवी नहीं अने तेनी निंदा कोईक करतो होय तेनो संग करवो नहीं अने ए पांचेदेव जगतकर्ता जे परमात्मा तेनां रूप छे. माटे पांचे देवने पूज्यपणें करीने मानवा. अने रामकृष्णादिक जे अवतार कहेवाय छे ते पण सर्वना कारण, सर्वना आधार अने सर्वेथी पर एवा जे परब्रह्म परमात्मा भगवान तेना ज अवतार छे, कहेतां ते परमात्मा पोते ज जीवोना कल्याण करवा सारु स्वे-इच्छाए पृथ्वी उपर प्रगट थाय छे अने तेनो आश्रय करवा थकी ज जीवनुं कल्याण थाय छे, पण ते रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवानना आश्रय विना कोई जीवनुं कल्याण थयुं नथी अने थशे पण नहीं.

माटे रामकृष्णादिक भगवानना अवतारना मनुष्य चरित्रने विषे दोष जोवो नहीं. तेनां चरित्रने तो कल्याणकारी जाणवां अने तेनुं गान करवुं. अने तेने विषे दोष देखाडे तेने महा पापी जाणवो अने ते तो असुर छे अने तेनो जे संग करे ते जीव नरकमां जाय छे. माटे रामकृष्णादिक भगवानने विषे दोष देखाडे तेनो संग करवो नहीं अने तेनो जे संग करे छे तेने नित्य ब्रह्महत्यानुं पाप लागे छे. एम समजीने सत्त्वगुण राखीने शुद्ध ज्ञानदाता महात्मा पुरुष होय तेनी आगळ निरमानी थईने समागम करवो, तो ते आत्मानुं कल्याण थाय छे.”

इति श्रीमुखसिद्धांत २८४ समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत २८५ विषयः-भयानक, रेचक अने यथार्थ विचारो अने सत्पुरुष अने असत्पुरुषनी ओळखाण.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ ना महा सुदि १०ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धर्मज मध्ये पटेल गलाभाई रणछोडभाईने घेर उगमणे वार मेडीनी आगळ गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. किनखापनो सुरवाल अने डगली धारण कर्या हता अने लीला रंगनो सोनेरी बुटादार रेटो पहेर्यो हतो. कसुंबल शेलुं केडे वांध्युं हतुं अने एक बीजुं शेलुं खभे धारण कर्युं हतुं. पीळां पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां अने कंकुंनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ मुनिमंडळ तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी श्रीहरिकृष्ण भगवान कृपा करीने सर्व सभा प्रत्ये बोल्या जे "वेद आदिक सर्वे शास्त्रोनी जे मूळ मतलब छे तेने जे पुरुष महात्मा पासेथी समजे छे तेने शास्त्र सवळां पडे छे अने सर्वेनी मूळ मतलब न जाणी होय तेने शास्त्र अवळां पडे छे; केमके कोई शास्त्रमां केम कह्युं होय अने कोई शास्त्रमां केम कह्युं होय, माटे बुद्धि भमी जाय छे अने पछी नास्तिकभाव आवी जाय छे. माटे कल्याणना खपवाळाने कोई महात्मा पुरुषनो समागम करवो.

हवे शास्त्रनी मूळ मतलब जेम छे तेम तमने कहीए छीए जे शास्त्रमां त्रण विचार कह्या छे (१) भयानक (२) रेचक अने (३) यथार्थ विचार. ते त्रण प्रकारना जीव छे ते त्रणे प्रकारना जीवने नोखो नोखो विचार करवानुं कह्युं छे. ते त्रण प्रकारना जीव कया ? तो (१) पामर (२) विषयी अने (३) मुमुक्षु.

तेमां पामरने भयानक विचार आप्यो छे. ते भयानकनुं शुं रूप छे ? तो पामर होय ते पाप कर्म करतो होय अने पापे करीने जे दुःख थशे तेनी खबर नथी माटे भयानक विचार आपीने पाप थकी भय पमाडीने पाप मुकाववा छे ते सारु जेटलां पापे करीने दुःख थाय छे ते बधाय दुःखने भेगां करीने तेनो महात्मा पुरुषे सरवाळो लईने छ लाख अने चोरासी हजार नरकना कुंड कर्या. तेमां अट्ठावीस कुंड तो मोटा नामधारी कर्या. ते कुंडमां आवां आवां दुःख जीवोने भोगववा पडे छे अने दुःखना आपनारा एवा मोटा मोटा यमदूतनां रूप देखाड्या–ते यमदूत महा विकराळ छे अने काजळ जेवा काळा छे अने सात ताड जेवडा ऊँचा छे अने तेनां रुंवाटा बरछीनी अणी जेवां छे अने पापी जीवोने मारवा सारु अनेक प्रकारना शास्त्र लीधां छे. अने आवा पाप करे तेने आवी रीते ज मारे छे अने काळी चीसो नखावे छे अने नरकना कुंडमां डूबकीओ खवरावे छे अने माथा उपर मगदळना मार मारे छे. एवी रीते पाप करे छे तेने यमपुरीमां जईने नरकना कुंडमां यमना मार खावा पडे छे. एवुं पाप थकी दुःख थाय छे एम सांभळ्युं त्यारे पण दुःख तो वसमुं लागे छे ते पाप थकी भय पामीने पाप करवुं मूकी दे छे अने धर्म-नियमने पाळे छे अने ते जीव सुखियो थाय छे.

अने वस्तुगते यमपुरी तथा नरकना कुंड तथा यमना दूत नथी पण यमपुरीमां तथा नरकना कुंडमां तथा दूतनां दुःख कह्यां ते थकी लाख घणां वधारे दुःख जीवने पाप कर्मे करीने गर्भवासमां भोगववां पडे छे. ते दुःख साचां छे पण ए दुःखनी तो जीवने खबर नथी, माटे दुःखना रूप देखाडीने पामर जीवने पाप थकी पाछो वाळे छे.

पछी तेने रेचक विचार आपीने शुभ कर्म कराववा सारु महात्मा

पुरुषे स्वर्गनां सुख देखाड्यां जे 'आवां कर्म वेदमां कह्या प्रमाणे करीश तो देवलोकमां जईने आवां सुख पामीश अने तारे स्त्रीनी इच्छा हशे तो देवलोकमां घणिक अप्सराओ मळशे अने द्रव्यनी इच्छा हशे तो हिरा, मोति, मणिओना ढगला मळशे. एवी रीते शुभ कर्म करीश तो मने करीने चिंतवीश ते सुख देवलोकमां मळशे.' एवो विचार ज्यारे सांभळ्यो त्यारे जीवने सुख तो सारुं लागे छे; पछी शुभ कर्म करवा मंडी गयो अने कर्मने विषे आस्था बेठी अने शुभ कर्म करीने विषयनां सुख पण मळवा मांड्यां.

त्यारे तेने यथार्थ विचार आप्यो जे 'भाई! तुं शुभ कर्म करीने देवादिकना सुखने इच्छे छे; पण ते सुख तो अंते नाश थवानां छे अने नित्य, निमित्त, प्राकृत अने आत्यंतिक प्रलयमां देवादिक लोके सहित कोटि ब्रह्मांडनो नाश थई जशे अने तेमां तो महा दुःख पामवुं पडशे. माटे ए सर्वेनी वासनानो त्याग करीने तुं आत्मारूप थईने तारा शुभ कर्मनुं फळ ते परमात्माने अर्पण कर एटले तुं मायाना पडपंच थकी छूटीने भगवानना धामने पामीश.' एवी रीते यथार्थ विचार सांभळ्यो त्यारे शुभ कर्मे करीने अंतःकरण शुद्ध थई रह्युं हतुं ते माटे ते विचार जीवमां समजाई गयो अने विषय वासनानो त्याग करीने भगवान भजीने ते आत्मा भगवानना धामने पामे छे.

माटे आवी रीते जीवोना कल्याणने अर्थे महात्मा पुरुषे दया करीने त्रण प्रकारना जीव छे ते सारु शास्त्रमां त्रण प्रकारना उपदेशना भेद कह्या छे तेने समजी न शके पछी शास्त्रमां दोष काढे के भाई शास्त्रनुं क्यां ठेकाणुं छे ? कोईक ठेकाणे केम कह्युं छे अने कोईक ठेकाणे केम कह्युं छे? माटे शास्त्र खोटां छे एम समजीने नास्तिक थई जाय छे. माटे नास्तिक न थवुं अने सत्पुरुष थकी शास्त्र समजीए त्यारे शास्त्र

सवळां समजाय छे अने जीवनुं कल्याण थाय छे; तेथी सत्पुरुष थकी शास्त्र सांभळवुं, पण असत्पुरुष पासेथी शास्त्र न सांभळवुं.

हवे सत्पुरुष केवा होय? अने असत्पुरुष केवा होय? तो सत्पुरुषने विषे चार गुण होय छे अने असत्पुरुषने विषे चार दोष होय छे. हवे कया गुण अने कया दोष? तो सत्पुरुष पंचविषयनो त्याग करता-करावता होय अने असत्पुरुष पंचविषयने भोगवता होय तथा बीजाने भोगवावता होय अने सत्पुरुष पोते देहथी नोखो आत्मा तेने पोतानुं रूप माने अने दिव्य साकार एवा जे परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिक तेनी भक्ति करता होय अने बीजाने करावता होय तथा जीव जुदा जुदा अनेक छे अने जीवथी जुदा परमात्मा ते एक छे तेनी भक्ति करता-करावता होय अने असत्पुरुष होय ते तो वधाय जीवने एक जाणता होय अने जीव ए ज परमेश्वर छे एम समजीने रामकृष्णादिक भगवानना अवतारने अने पोताने एक मानता होय–ए मोटो महा दोष छे. माटे एम समजे अने बीजाने एम समजावे तेने असत्पुरुष जाणवा अने तेने महा पापी जाणवा अने जे पोते जुदो आत्मारूप थईने प्रत्यक्ष परमात्मानी भक्ति करे छे अने बीजाने भक्ति करावे छे ते मोटो गुण छे अने एवा गुण जेने विषे होय तेने सत्पुरुष जाणवा. अने सत्पुरुषने विषे धर्म दृढ होय कहेतां इन्द्रियो नियममां होय अने असत्पुरुषनी इन्द्रियो नियममां होय नहीं अने सत्पुरुषने विषे वैराग होय कहेतां जगतना पदार्थ उपर अभाव होय त्यारे असत्पुरुषने जगतना पदार्थ उपर प्रीति होय.

एवी रीतना गुण दोष जोईने जेने विषे दोष जणाय तेने असत्पुरुष जाणवा अने तेनां संगनो त्याग करवो. अने जेने विषे मोर कह्या एवा

होय तेना गुण ज नजर आवे छे अने हेतवाळाना दोष तो देखाय ज नहीं. जेम जेने दीकरामां के स्त्रीमां हेत होय तो तेमां अनंत दोष छे, तोपण तेने तेना एके दोष नजरे आवता नथी; केमके स्त्रीने विषे वासना होय तो ते जीव नरकमां जाय छे अने दीकराने विषे वासना होय तो त्यां पाछो जन्म धरवो पडे छे. एवा मोटा मोटा दोष छे, तोपण तेने विषे जेने स्नेह होय ते तो एम जाणे जे 'मारी स्त्री जेवी कोईनी स्त्री नथी अने मारा दीकरा जेवो कोईनो दीकरो नथी.' एम स्नेहवाळाने भासे अने पोतानुं घरबार धनमाल, गामगरास सर्वे तेने आपी दे अने जेने हेत न होय तेने गुण ते दोष भासे.

तेम जेने प्रत्यक्ष परमात्माना गुण जाणवा होय तेने प्रथम तो महात्मा पुरुषमां हेत करवुं अने हेते करीने तेमां जे अनंत कल्याणकारी गुण रह्या छे ते जणाय छे, पण ते विना भगवान साथे वेर बांधीने कहे के 'तमारा गुण देखाडो', तो एवी रीते कोई काळे भगवान ओळखाता नथी अने ते जीवनुं कल्याण थतुं नथी. माटे जेने पोताना कल्याणने इच्छवुं होय अने जेने प्रगट भगवान अने भगवानना संतने ओळखवा होय तेने जेटला संसारने विषे मोटा पुरुष कहेवाता होय ते बधाय साथे हेत राखवुं अने तेनो समागम करवो अने हेत राखतां थकां तेने विषे जे गुण होय अथवा दोष होय ते जणाय छे. पछी तेने विषे कोई जातनो दोष जणाय के कपट जणाय तो तेना संगनो त्याग करवो, पण तेनो द्रोह न करवो अने समागम करतां करतां तेना गुण जणाय तो तेनो आश्रय करवो तो ते थकी आत्मानुं कल्याण थाय छे पण भगवान अने भगवानना संत प्रगट होय अने तेने विषे हेत राखे नहीं अने समागम करे नहीं अने ऊलटो निंदा कर्या करतो होय अने एम कहे जे 'जो भगवान होय तो मने कांई परचो देखाडीने ओळ-

खावे तो हुं भगवान मानुं.' एम कहे तेने कोई काळे भगवान अने भगवानना संत ओळखाता नथी अने तेनुं कल्याण थतुं नथी अने जे कोई महात्मा पुरुष पासे परचो मागे छे तेने तो असुर जाणवो अने तेनो जे संग करे तेना आत्मानुं पण अतिशय भूंडुं थाय छे. अने जे सत्पुरुषने विषे प्रीति करीने सत्पुरुषनी सेवा करशे तेने ज प्रगट भगवान अने भगवानना संत ओळखाशे अने तेनुं कल्याण थशे.

माटे प्रथम तो प्रगट भगवान अने संत साथे अतिशय प्रीति करवी ए ज कल्याणनुं मुख्य साधन छे, पण तेमां जे दैवी जीव हशे तेने आ वात समजाशे अने समजीने सत्पुरुषने विषे हेत प्रीत करशे अने जे आसुरी जीव हशे तेने तो सत्पुरुषने विषे कोई काळे हेत प्रीत थाय ज नहीं अने ते तो ज्यारे सत्पुरुष प्रगट थाय त्यारे तेनो द्रोह ज करे अने तेनो जे संग करे तेने पण सत्पुरुषनो द्रोह ज करवा शीखवे छे अने ते जीवनुं अतिशय भूंडुं थाय छे. अने जे महात्मा पुरुषने विषे प्रीति करीने सेवा करे तेने प्रगट भगवान अने भगवानना संतनुं स्वरूप ओळखाय छे अने तेनुं कल्याण थाय छे. माटे जेने पोताना कल्याणने इच्छवुं होय तेने प्रगट भगवान अने भगवानना संत ओळखाय छे अने तेनुं कल्याण थशे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २८६ समाप्त ।

શ્રીસુખસિદ્ધાંત ૨૮૭ વિષય:– જીવ સુષુપ્તિમાં જાય ત્યાં જગતના પદાર્થ મિથ્યા થઈ જાય છે પણ પાપ-પુણ્ય સાથે જ જાય છે.

શ્રીહરિકૃષ્ણાય નમોનમઃ–સંવત ૧૯૨૪ ના મહા વદિ ૧૨ ને દિવસ મહારાજ શ્રીહરિકૃષ્ણ ભગવાન ગામ શ્રી ધર્મજ મધ્યે પટેલ તિકમભાઈના ઘરના ઓરડાની ઓશરીમાં ગાદીતકિયે યુક્ત પલંગ ઉપર વિરાજમાન થયા હતા. સર્વે કસુંબલ વસ્ત્ર ધારણ કર્યાં હતાં. અને સર્વે અંગમાં પુષ્પનાં આભૂષણ શોભી રહ્યાં હતાં. કંકુનો ચાંદલો કર્યો હતો અને પોતાના મુખારવિંદની આગળ સંતમંડળ તથા ઘણાક હરિભક્તની સભા ભરાઈને બેઠી હતી.

પછી મહારાજની સંધ્યા આરતી થયા પછી મહારાજ બોલ્યા જે "ગીતામાં અર્જુને ભગવાનને કહ્યું કે 'તમે મને એમ કહો છો જે 'તું યુદ્ધ કર', પણ તેમાં મારે સુખ થશે કે દુઃખ થશે, હાર થશે કે જીત થશે એ કાંઈ મને જણાતું નથી, માટે હું શું કરું?' પછી ભગવાને કહ્યું કે 'સુખ-દુઃખ લાભ-અલાભ, જય-પરાજય તેને સમાન કરીને તું મારી આજ્ઞાએ કરીને યુદ્ધ કર એટલે તને કોઈ કર્મ બંધન કરશે નહીં.' ત્યાં શ્લોકઃ–

સુખદુઃખ સમે કૃત્વા લાભાલાભૌ જયાજયૌ ।

એમાં ભગવાને શું કહ્યું? કે જીવને સ્થૂળ દેહનું જેટલું જેટલું સુખદુઃખ, હારવું-જીતવું એ આદિક અનંત પ્રકારનો સ્થૂળ દેહનો વ્યવહાર છે અને જ્યારે સ્વપ્ન અને સુષુપ્તિમાં જાય છે ત્યારે સર્વે મિથ્યા થઈ જાય છે અને તે સમયે રાજાપણું કે રંકપણું કાંઈ રહેતું નથી. તેમ જ સ્થૂળ દેહનો ત્યાગ કરે છે ત્યારે પણ તે દેહનાં સુખદુઃખ આદિક ઉપાધિ તે સર્વે મિથ્યા થઈ જાય છે. માટે જે જ્ઞાની હોય તે આલોકના સુખદુઃખ આદિકે કરીને હરખશોકને પામતા નથી અને આલોકને સ્વપ્નવત્ દેખે છે અને એક ભગવાનને સત્ય જાણીને તેનું ભજન કરે છે."

प्रश्नः-पछी पटेल काशीदासे प्रश्न पूछयो जे "जेम स्वप्न अने सुषुप्तिमां जीव जाय छे त्यारे जगतनां पदार्थ सर्व मिथ्या थई जाय छे अने कोई पदार्थ काम आवतो नथी, तेम पाप अने पुण्य ते पण नाश पामतुं हशे के नाश नहीं पामतुं होय? तेनुं केम हशे? ते अमने जेम होय तेम कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "आ जीव देहनो त्याग करे छे त्यारे आलोकना भोग पदार्थ, अने स्थानक ते मिथ्या थई जाय छे, पण ते देहे करीने शुभ अने अशुभ कर्यां जे कर्म तेनुं जे फळ पाप अने पुण्य ते तो सूक्ष्म अने कारण देहमां जीव भेळुं जाय छे; पण ते कर्मनुं फळ जेम आलोकनां पदार्थ मिथ्या थाय छे तेम ते मिथ्या थतां नथी, केमके कर्म तो अंतःकरणनी समजणे करीने थाय छे. ते जेने सत्पुरुषने समागमे करीने सवळी समजण होय ते शुभ कर्म करे छे अने अने जेनी असत्पुरुषने संगे करीने अवळी समजण होय छे ते अशुभ कर्म करे छे माटे ते ते कर्मनुं फळ पाप अने पुण्य वेय जीवना भेगां जाय छे अने पाछो फरीने जीव जे ते स्थूळ देहनुं धारण करीने पूर्वना कर्मनुं फळ सुखदुःख तेने भोगवे छे. अने तेने जे खोटुं कहे छे ते तो महा पापी छे केमके तेने घणाक पाप कर्यां हशे अने वळी तेने घणांक पाप करवां हशे माटे ते कर्मना फळने मिथ्या कहे छे अने शुद्ध संप्रदायना वेदोक्त धर्मी छे ते तो कर्मना फळने सत्य जाणीने अशुभ कर्मनो त्याग करीने शुभ कर्म कर्यां करे छे.

माटे कर्मनुं फळ नाश पामतुं नथी अने एक वाते कर्मनुं फळ नाश पामे छे के जे आत्माने प्रत्यक्ष परमात्मा अने तेना संतनो आश्रय थयो होय अने ते थकी ज्ञानने पामीने त्रण देहनो भाव टाळी नाखीने आत्मारूप थईने परमात्मानी भक्ति करतो होय अने ते परमात्मा अने

तेना संतनी प्रसन्नताने अर्थे तेनी आज्ञाए करीने निष्कामकर्म करे तो तेने ते कर्मनुं फळ भोगववुं पडतुं नथी, केमके कर्मना फळने रहेवानुं स्थानक जे अंतःकरणरूप सूक्ष्म शरीर ते नाश पामी गयुं छे केमके तेणे मन आदिक इन्द्रियो अंतःकरण परमात्मा अने तेना एकांतिक पंचविषयना त्यागी संत तेने अर्पण कर्युं छे; माटे तेने कर्म बंधन करतुं नथी.

अने ते पोताना मनने धारे कोई कर्म करे ज नहीं अने परमात्मा अने संतनी आज्ञाए करीने निष्कामभावे करे, ते पण गीतामां श्रीकृष्ण भगवाने अर्जुनने कह्युं छे जे 'तारा मन कल्पित धर्म तेनो त्याग करीने हुं कहुं एम मारी आज्ञाए करीने कर्म कर एटले तने कर्म बंधन करशे नहीं.' माटे एवी रीते प्रत्यक्ष भगवाननी आज्ञाए करीने जे जे कर्म करे ते कर्मनुं फळ भोगववुं पडतुं नथी अने ते आत्मा तो भगवानना धामने पामे छे. अने भगवान अने संतना आश्रय विना अने तेनी आज्ञा विना तो जीव जेवां जेवां कर्म करे छे तेने तेवां तेवां फळ भोगववां पडे छे ए सिद्धांतवार्ता छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २८७ समाप्त।

———:+:———

श्रीमुखसिद्धांत २८८ विषयः–प्रत्यक्ष परमात्माने ओळखवानी रीत.
एक पण इन्द्रिय विनाना जीवनो मोक्ष केम थाय ?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ना फागण वदि ९ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण गाम श्री भादरण मध्ये पटेल हाथीभाई तळसीभाईने घेर उगमणे बार ओरडानी आगळ संध्या आरती समये पाट उपर गादीतकिये युक्त पलंग बिछाव्यो हतो ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगने विषे पुष्पनां आभूषण शोभी रह्यां हतां. ललाटने विषे कंकुनो चांदलो कर्यो हतो

अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "जीवने पोताना आत्माना स्वरूपनुं तथा परमात्माना स्वरूपनुं अज्ञान छे तेने करीने जन्म-मरणादिक संसारमां दुःखने पामे छे. ते वेदमां कह्युं छे जे—

आत्माज्ञानात् जगत भाति इति श्रुतिः ।

अर्थः—जे आत्मा शब्दे करीने आत्मा परमात्मा बेयना स्वरूपना अज्ञाने करीने जीवने जगतनो भास थयो छे अने जन्ममरणने पामे छे. हवे ज्ञान थाय त्यारे जीवनी मुक्ति थाय ते पण वेदमां कह्युं छे जे—

ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः ।

अर्थः— ज्ञान विना मुक्ति थाय नहीं माटे ज्ञाने करीने ज मुक्ति थाय छे. अने ते ज्ञान पोतानी मेळे थतुं नथी केमके पोतानी मेळे ज्ञान थतुं होय तो जीव आज दिवस सुधी शुं करवा अज्ञानी रहे? माटे ज्ञान आपनार बीजो कोई जोईए छे अने बीजो पुरुष जोईए ते पण माया पर होय ते ज्ञान आपनार हशे त्यारे ज्ञान थशे, पण जे मायामां होय ते थकी माया परनुं ज्ञान थाय नहीं. ते सारु माया पर तो एक परमात्मा छे, ते परमात्मा जीवोने ज्ञान आपवा सारु माया पर रह्या थका पोताना सत्य संकल्पे करीने मनुष्यने जोयामां आवे एवा राम-कृष्णादिक अवतारनुं धारण करे छे अने जीवोने ज्ञान आपीने ब्रह्मरूप करीने पोताना धाममां लई जाय छे. माटे कल्याणना खपवाळाने महात्मा पुरुष पासेथी ज्ञान जरूर सांभळवुं अने तेनी सेवा करवी तो तेने ज्ञान थाय अने कल्याण थाय."

प्रश्नः—पछी पटेल भीखाभाई रणछोडभाईए महाराजने प्रश्न पूछयो जे "परमात्मा प्रत्यक्ष होय ते शा लक्षणे करीने ओळखाय जे आ परमात्मा हशे? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "जेम जे वृक्षने विषे जेवो गुण होय छे तेवो गुण तेना फळमां आवे छे. ते फळे करीने जेम वृक्ष ओळखाय छे, तेम परमात्माना गुण परमात्माना ज्ञाने करी सिद्ध थया छे एवा जे तेमना भक्त-जन संत तेने जोई परमात्मा ओळखाय छे. जेम आंबानी केरी जमीए अने ते केरीनी मधुरता सरस होय त्यारे एम जाणीए जे 'आ आंबो सरस छे.' तेम जेना ज्ञाने करीने तेना आश्रित निर्वासनिक थईने पंचविषय थकी वैरागने पामीने विषयनो त्याग करीने ब्रह्मस्थितिमां वर्तता होय त्यारे एम जाणवुं जे परमात्मा विना बीजा कोई थकी निर्वासनिक थाय नहीं.

माटे निर्वासनिक अने पंचविषयना त्यागी संत ज्यां होय त्यां परमात्मा होय छे एम जाणवुं अने ज्यां प्रत्यक्ष परमात्मा होय त्यां एवा संत जरूर होय पण ते विना विषयना त्यागी संत होय नहीं. अने एवा संत होय ते पंचविषयनो त्याग करीने ब्रह्मरूप थईने परमात्मानी नवधा भक्ति करता होय. माटे एवा ब्रह्मरूप मुक्त जेनी सेवा करे छे, ते परमात्मा छे एम जाणवुं. तेने तमे ते प्रमाणे नजरे जोईने परमात्माने ओळखो ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

पछी गाम सींसवाना थाणादार मामासाहेबे श्रीमहाराजने प्रश्न पूछ्युं जे "हे महाराज! जे काने सांभळतो नहीं होय अने मुंगो होय तेने परमात्मानुं ज्ञान शी रीते थाय? अने ज्ञान थया विना तो जीवनी मुक्ति थाय नहीं, माटे तेने ज्ञान थवाने कांई हशे के नहीं होय?"

त्यारे महाराज बोल्या जे "जे बहेरो अने मुंगो होय तेनां जे सगां भाई-बाप के दीकरो होय ते तेने कोई ठाकोरजीनुं मंदिर होय तथा प्रगट भगवान अने तेना संत पृथ्वी उपर होय त्यां तेडी जाय अने तेने आंखो होय तेथी भगवान अने भगवाननी मूर्तिओ अने संत तेनां

दर्शन करावे. पछी ते भगवान अने भगवाननी मूर्ति अने संतने पगे लागतां अने दंडवत् करतां घणा मनुष्यने देखे माटे ते वहेराना मनमां एम ज्ञान थाय जे आ कोई मोटा देव छे. एम जाणीने पोते पगे लागे दंडवत् करे अने मनमां स्तुति करे अने एम चिंतवन करे जे 'हे देव! मारुं सारुं करजे' एम तेने आंखे करीने ज्ञान थाय छे अने ते जीवनुं कल्याण थाय छे."

पछी वळी ते थाणादारे पूछयुं जे "कोईक आंधळा जीवने तो आंख, कान, जीभ, हाथ, पग आदिक एके इन्द्रिय होय नहीं, तेने शी रीते ज्ञान थाय? अने तेनुं कल्याण शी रीते थाय? के तेनुं तो कल्याण थाय ज नहीं? ते कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "जेने एके इन्द्रिय होय नहीं तेनुं तो एम कल्याण थाय जे तेनां सगां होय ते प्रगट भगवान अने भगवानना संतना चरणारविंदने धोईने तेनुं चरणामृत तेने पीवरावे अने तेने शरीरे चोपडे तथा गंगामां नवरावे तो तेने करीने तेनुं कल्याण थाय छे. ते पण भागवतमां कह्युं छे जे 'जे वृक्ष तळे प्रगट भगवान अने भगवानना एकांतिक संत ऊभा होय ते वृक्षने पण परमपदनुं अधिकारी कह्युं छे.' माटे प्रगट भगवान अने संतना संबंधमां जे जे जीव आवी जाय ते सर्वेनुं कल्याण थाय छे एवो प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतना संबंधनो प्रताप छे.

माटे जेने कल्याण इच्छवुं होय तेने पोताने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो संबंध राखवो अने बीजां पोतानां सगां होय तेने भगवान अने भगवानना संतनो समागम कराववो ए ज जीवने कल्याण थवाना उपाय छे. केमके भगवानने देखावा अने देखीने जाणवा त्यारे जीवनुं आत्यंतिक कल्याण थाय छे. तेमां देखवा ए तो भगवाननी

कृपा छे अने तेने जाणवा ते तो पुरुष-प्रयत्न छे अने दर्शन तो भगवान कृपा करीने प्रगट थाय छे त्यारे ज्ञानी-अज्ञानी सर्वेने दर्शन थाय छे, पण तेने जाणवा कठण छे. माटे प्रगट भगवाननां दर्शन करीने तेने जाणवा सारु नित्ये संतनो समागम करवो अने सेवा करवी तो ते थकी प्रगट भगवान जणाय छे अने ओळखाय छे अने ते जीवनुं कल्याण थाय छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २८८ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत २८९ विषय:-वासनानो त्याग अने प्रगट भगवानमां प्रीति करे तो ज जन्ममरण टळे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ ना फागण वदि १० ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भादरण मध्ये सोनी गला भगवानने घेर उगमणें चार ओरडानी आगळ पांट उपर गादीतकिये युक्त पलंग विछाव्यो हतो. ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "बे साधन सिद्ध थाय छे त्यारे जीवने जन्ममरण टळे छे. ते बे साधन क्यां? तो एक प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपमां प्रीति करवी अने बीजुं वासनानो त्याग करवो. ए बे साधन पूरां थाय त्यारे जीवने जन्ममरण टळे अने ए बेमांथी एक वासनानो त्याग कर्यो होय पण तेने अक्षरातीत परमात्मा प्रगट थईने मळ्या न होय अने तेने विषे प्रीति थई न होय त्यां सुधी तेने जन्म धरवो पडे छे अने कदापि प्रगट भगवान मळ्या होय पण तेने पंचविषयनी वासना

रही होय तो तेने पण जन्म धरवो पडे छे, माटे जेने जन्ममरण टाळीने आत्यंतिक मोक्षने पामवुं होय तेने बेय साधन सिद्ध करवां.

तेमां वासना टाळवाने अर्थे त्रण साधन सिद्ध करवां. तेमां एक तो धर्म दृढ करीने राखवो कहेतां इन्द्रियोने नियमे करीने विषय थकी पाछी वाळवी अने वर्णाश्रमनो धर्म जेने जेम वेदमां कह्यो होय ते प्रमाणे वर्तवुं पण तेमां कोई दहाडे फेर पाडवो नहीं अने आत्यंतिक ज्ञानने पामीने वासना टळी गई होय अने प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीति थई गई होय तोपण वर्णाश्रमनो धर्म अने इन्द्रियोनो नियम ते तो देह पर्यंत राखवां; पण तेनो क्यारे य त्याग करवो नहीं.

अने वर्णाश्रमनो धर्म अने इन्द्रियोनो नियम तेनो त्याग करीने अनियमपणे वर्तशे तो ते सूझे एवो मोटो कहेवातो हशे अने ब्रह्मस्थितिने पाम्यो हशे तोपण ते भ्रष्ट थई जशे अने ते जन्ममरणने पामशे. ते पूर्वे नारदजी महा मोटा हता अने ब्रह्मस्थितिने पाम्या तोपण जो वर्णाश्रम धर्म अने इन्द्रियोना नियमनो त्याग करीने राजानी कन्यानुं भविष्य जोवा सारु तेना हाथनो स्पर्श कर्यो तो ते ब्रह्मस्थितिमांथी तत्काळ पडी गया. ए आदिक घणाकने नियम चुकवाथी कलंक लाग्यां छे, माटे नियम अने वर्णाश्रमनो धर्म तेने दृढ करीने राखवां.

अने बीजुं देह अने आत्मा ए बे जुदा जाणवा अने आत्माने पोतानुं स्वरूप मानवुं अने पंचविषयना भोग ते देहना छे पण आत्माना नथी एम जाणीने विषयनो त्याग करवो अने आत्मा अखंड अविनाशी छे तेने विषे स्थिति पामवी, तेनुं नाम ज्ञान कहेवाय छे.

अने त्रीजुं चार प्रकारना प्रलयनो विचार करीने पिंड ब्रह्मांड थकी वैरागने पामवुं ए त्रण साधन करीने वासना टळे छे. पछी एवा ज्ञानना आपनारा अने निर्वासनिक करीने ब्रह्मस्थितिने पमाडनारा एवा जे प्रत्यक्ष

सद्गुरु तेने विषे प्रीति करवी. अने जे निर्वासनिक थईने प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीतिए करीने जोडाई गया तेनी आत्यंतिक मुक्ति थाय छे अने तेमां जेटलुं अधुरुं होय छे तेटलुं तेने जन्ममरण रहे छे.

अने पूर्वे भरत राजाने प्रगट भगवान ऋषभदेवने विषे प्रीति तो थई हती पण तेने स्नेहरूपी वासना टळी न हती तो तेने मृगलाना बच्चामां स्नेह थयो अने तेने करीने जन्म धरवो पडयो. पछी त्रीजे जन्मे जडभरत थया अने स्नेहरूपी वासनाने टाळवाने अर्थे जाणीने गांडा थया अने पंचविषयनो अतिशय त्याग कर्यो अने अतिशय वैरागने पामीने असंगपणें वर्त्या अने अतिशय निर्वासनिक थईने भगवानना अक्षरधामने पाम्या. ते सर्वे शास्त्रने विषे अने सर्वे पूराणने विषे लखेलुं छे जे 'जड भरतना जेवो कोईनो त्याग-वैराग नहीं.' केमके तेने एकवार वासनाये धक्को लगाड्यो ते सारु वासनाने टाळवा सारु अतिशय सावधान थया अने वासना टाळीने भगवानमां प्रीति तो पूर्वनी हती माटे बे साधन भेगां थयां त्यारे तेनो मोक्ष थयो.

अने गोपीओने वासना टळी गयेली हती पण तेने प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीति न हती ते सारु श्रीकृष्ण भगवानने विषे प्रीति करवाने अर्थे भगवान साथे गोपीओ रास रमी अने प्रीति भगवानमां थाय तेवी रीतनां अनंत साधन कर्यां अने भगवाने पण पोताने विषे प्रीति करावका सारु गोपीओ साथे तेवी लीला करीने पोताने विषे प्रीति करावी अने तेनो मोक्ष थयो. केमके ते पूर्वे ऋषि हता ते जप, तप घणां करीने वासना टाळी नाखी हती, पण तेने भगवान प्रगटमां प्रीति थई नहोती अने परोक्षपणें भगवाननुं ध्यान करता हता. पछी तेने रामे प्रगट थईने वनने विषे दर्शन आप्यां. पछी ते ऋषिए स्तुति करीने भगवानने कह्युं जे " हे महाराज ! अमे चौद लोकना सुखनी वासनानो त्याग करीने तमने पामवा सारु ध्यान करता हता ते तमे कृपा करीने

अमने दर्शन आप्यां पण ह्वे तमारे विषे प्रीति थाय एवी अमारा उपर कृपा करो." पछी भगवाने तेने कह्युं के "आज तमारे मारे विषे प्रीति नहीं थाय माटे आगळ हुं कृष्णावतार धारण करीश अने तमे वृंदावनने विषे स्त्रीओना देह धरजो एटले तमारा मनना मनोरथ सर्व सिद्ध थशे अने मारे विषे तमारे अतिशय प्रेम थशे." एम वरदान भगवाने आप्युं हतुं. पछी ऋषि वधाय गोपीओ थया अने भगवान कृष्णरूपे थया अने तेने विषे प्रीति कराववा सारु गोपीओ साथे रसिकपणें वर्त्या अने रास रम्या अने दूध दहींनी चोरीओ करी अने दाणा लीधा अने वस्त्र हर्यां एवा भाव देखाडीने गोपीओनां चित्त पोताने विषे जोडाव्यां अने अतिशय प्रेम उपजाव्यो, ते कृष्ण विना गोपीओने बीजुं कांई ज सांभरे नहीं. अने घेलीओ थईने कृष्ण कृष्ण करती फरे एवो कृष्णने विषे गोपीओने अतिशय प्रेम थयो. माटे पूर्वे वासना टाळी हती अने प्रगट कृष्णने विषे निश्चये सहित प्रेम थयो तो तेनुं कल्याण थयुं.

माटे वासना टाळवाने अर्थे धर्म, ज्ञान अने वैराग दृढ करीने राखवां अने भगवानमां प्रीति करवाने अर्थे भगवाननी श्रवण कीर्तन आदिक नवधा भक्ति करवी. पछी भक्ति करतां करतां तेने प्रगट भगवान मळे छे अने तेने विषे ते भक्तने निश्चय अने प्रेम थाय छे अने ते भक्त अक्षरधामने पामे छे.

माटे धर्मे सहित भगवाननी भक्ति करे छे तेनुं कल्याण थाय छे, पण भक्ति करे अने धर्म पाळे नहीं तो तेनुं कल्याण थतुं नथी अने धर्म पाळतो होय पण ते जो भगवाननी भक्ति न करे तो पण कल्याण थाय नहीं. ते पण कृष्णजन्मखंडने विषे भगवाने कह्युं छे जे "मारी भक्ति करतो होय पण जो ते धर्म पाळतो न होय तो ते मारो द्रोही छे अने ते धर्मे रहित हे कृष्ण! हे कृष्ण! करतो होय; तो पण ते नरकमां जाय छे." माटे धर्मे सहित परमात्मा रामकृष्णादिक भगवान तेनी भक्ति करवी."

इति श्रीमुखसिद्धांत २८९ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २९० विषयः—जीवे पंचविषयरूपी शत्रुने हेतु मान्या छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ना फागण वदि १३ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री भादरण मध्ये त्रवाडी सेवकरामनी स्त्री बाई हरकुंवरने घेर गादीतकिये युक्त पलंग बिछाव्यो हतो ते उपर बिराजमान थया हता. सर्वे जरियानी कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगमां पुष्पनां आभूषण शोभी रह्यां हतां. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "जीवने दुःखना देनारा मायिक पंचविषय छे ते पंचविषय कया ? तो (१) शब्द (२) स्पर्श (३) रूप (४) रस अने (५) गंध; ए पांचविषयनी वासनाए करीने जीव जे ते जन्म-मरणने पामे छे. माटे पांचविषय जीवना शत्रु छे अने ते शत्रुने जीवे हेतु मान्या छे एज जीवनुं महा अज्ञान छे. केमके एक फेरो कोईए मार्यो होय तो तेना उपर केवुं वेर थाय छे ? तो पंचविषये तो जीवने अनंत फेरा मार्यों छे अने गर्भवास, चोरासीमां अपार दुःख दीधां छे, तोपण तेनी ते जीवने भान नथी. अने विषयमां प्रीति राखीने विषय भोगवे छे एज जीवनुं महा अज्ञान छे. केमके अखंड, अविनाशी, अजर अने अमर एवुं जे पोताना आत्मानुं स्वरूप तेने भूलीने नाशवंत अने दुःखरूप एवो जे देह तेने पोतापणुं मानीने ते देहने सुखे सुख अने देहने दुःखे दुःख माने छे. अने ते देहने संगे करीने अपरिमित क्लेशने पामे छे अने ते क्लेश थकी पोतानी मेळे छूटवाने समर्थ नथी.

माटे ते दुःख थकी जीव क्यारे छूटे ? तो माया पर एवा जे भगवान अने भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी संत ते जीवने मळे

अने तेने विषे प्रीति करे त्यारे ते जीवने भगवान अने भगवानना संत ज्ञान आपीने विषयनो त्याग करावे छे त्यारे ते जीव महा सुखने पामे छे अने तेनुं कल्याण थाय छे. अने जन्म-मरण, गर्भवास अने चोरासीनां महा दुःख ते मटी जाय छे अने अद्‌भुत अने अलौकिक अने पूर्ण एवुं जे भगवाननुं अक्षरधाम तेने पामे छे.

माटे ते समय आज तमारे सर्वने आव्यो छे, ते तमारा भाग्यनो पार नथी, केमके जेने अनेक जन्मनां महा पुंण्य होय तेने भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संत मळे छे. ते तमने आज भगवान अने भगवानना संत मळ्या छे. माटे पोतानुं मोटुं भाग्य मानीने अमारो अने अमारा निर्वासनिक संतनो समागम करीने पंचविषयनो त्याग करवो अने ज्ञान पामीने अविनाशी सुखने पामवुं."

इति श्रीमुखसिद्धांत २९० समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २९१ विषयः–ब्रह्मचर्यव्रत अनें मोक्ष. भगवाननी कसणी खमे तेने ज सुख आवे छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ ना चैत्र सुदि ३ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामश्री भादरण मध्ये पटेल हाथीभाई तळसीभाईने घेर गादीतकिये युक्त पलंग उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. कुंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः–पछी महाराज बोल्या जे "परमात्माने साक्षात्कार पामवानो एक एवो कयो रस्तो हशे जे एक रस्ते करीने परमात्माने जीव पामी जाय? ए प्रश्न सर्वेने पूछीए छीए ते कहो."

पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए कह्युं के "आत्मारूप थईने परमात्मानी भक्ति करे तो ते जीव परमात्माने पामे छे."

त्यारे महाराज बोल्या जे "अमे पूछयुं तेनो उत्तर तो एम छे जे परमात्मानुं नाम ब्रह्म छे. ते ब्रह्म जे परमात्मा साक्षात्कार पामवानो एक रस्तो ब्रह्मचर्यव्रत सिद्ध करवुं. ते ब्रह्मचर्यनो शो अर्थ छे ? तो ब्रह्म जे परमात्मा तेना स्वरूपने विषे गति करवी कहेतां परमात्माने पामवानो मार्ग तेनुं नाम ब्रह्मचर्य छे; पण ब्रह्मचर्य विना बीजो परमात्माने पामवानो मार्ग नथी. हवे ब्रह्मचर्य शुं ? तो कामनो त्याग करवो तेनुं नाम ब्रह्मचर्य छे. हवे काम शुं ? तो पुरुषने स्त्रीना भोगनी इच्छा अने स्त्रीने पुरुषना भोगनी इच्छा एज काम छे. अथवा शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंध एवा जे मायिक पंचविषय तेने भोगववानी अभिलाषा तेनुं नाम पण काम छे. माटे ए कामनो त्याग करवो, तेनुं नाम ब्रह्मचर्य छे.

तेमां मुख्यपणें पुरुषे स्त्रीना संगनो त्याग करवो अने स्त्रीए पुरुषना संगनो त्याग करवो एज ब्रह्मचर्य कहेवाय छे. अने जे स्त्री पुरुषना संगनी इच्छानो त्याग करशे तेने पांचे विषयनी कामना टळी जशे अने तेम ज जे पुरुष स्त्रीना संगनी इच्छानो त्याग करशे तेने पण बीजा पांचे विषयनी कामना टळी जशे. केमके काम थकी जगतनी उत्पत्ति छे अने अज्ञान थकी काम छे. माटे एम जेने ज्ञान थयुं जे "काम एज जन्ममरणादिक दुःखनो देनारो छे," एम समजीने कामनो त्याग करे छे ते परमात्माने पामे छे. माटे ब्रह्मचर्यव्रत पाळवुं एज एक परमात्माने पामवानो धकधोरंधर मार्ग छे; पण ब्रह्मचर्य पाळ्या विना परमात्माने पमाय नहीं.

अने ब्रह्मचर्यव्रत पाळता नहीं होय अने ते बीजां जप, तप, दान, पुण्य, यज्ञादिक अनंत साधन करता होय ते सर्वे तेनां साधन वृथा थई जाय छे अने जे ब्रह्मचर्यव्रत राखीने जे जे दान, पुण्य, तीर्थादिक

करशे तेनां साधन सफळ थशे. माटे ब्रह्मचर्य पाळ्या विना कोई वातनी सिद्धि थती नथी. ते सारु जेने परमात्माने पामवुं होय तेने ब्रह्मचर्यव्रतना पाळनारा एवा जे भगवानना एकांतिक पंचविषयना त्यागी निर्वासनिक संत तेनो समागम करीने ब्रह्मचर्यव्रत पाळवुं, पण अमारो रंच मात्र अवगुण लीए नहीं."

पछी वळी श्रीहरिकृष्ण महाराजे एक वार्ता करी जे "बाई अथवा भाई ते अमारा खरा भक्त कया? तो अमे तेने वांके अथवा वगर वांके सुझे तेवा वढीए, मारीए, तिरस्कार करीए, काढी मूकीए, तो पण ते मुंझाय नहीं अने तेमां सामो राजी थाय, पण अमारो रंच मात्र अवगुण ले नहीं ते अमारो खरो भक्त छे अने तेनी उपर अमे घणा प्रसन्न थईए छीए.

केमके पूर्वे पण जे जे भक्ते भगवाननी कसणी खमी छे, तेनी उपर ज भगवान प्रसन्न थया छे. ते जेम वळीराजाने वामनजी भगवाने घणी कसणी आपी तो पण वळीराजा मुंझायो नहीं अने सामो राजी थयो तो ते उपर वामनजी भगवान घणा प्रसन्न थया अने तेने वश थईने तेने घेर अखंड भगवान रह्या. अने तेने भगवाने पोतानो एकांतिक भक्त करीने अखंड सुखने पमाडयो. अने वळी मोरध्वज राजाने भगवाने माथे करवत मूकयुं तोपण ते मुंझायो नहीं अने रंच मात्र अवगुण पण लीधो नहीं अने सामो राजी थयो अने शरीरने वसमुं लाग्युं त्यारे डावी आंखमांथी आंसु पडयुं त्यारे भगवाने कह्युं के 'तारुं अंग आपतां तुं कुराजी थयो त्यारे मारे तारुं अंग खपे नहीं.' एम कहीने भगवान चाली नीसर्या. पछी मोरध्वज राजाए भगवानने कह्युं के 'हे प्रभु! डावी आंखमां तो एम आंसु आव्युं जे जमणा अंगने भगवान ग्रहण करशे अने डाबा अंगनुं शुं अभाग्य जे भगवानना काममां न आव्युं,'

एम जाणीने डावी आंखमां आंसु आव्युं छे. एम मोरध्वज राजाए कह्युं त्यारे तेनी उपर भगवान घणा प्रसन्न थया अने तेने पोतानो एकांतिक भक्त करीने पोताना अक्षरधामने पमाडयो. एवी रीते कसणी आपीने पोताना खरा भक्त करे छे.

ते कसणीने जे खमे छे अने तेमां मुंझातो नथी अने तेमां सामुं जे राजी थाय छे अने एम समजे छे जे 'जेम जेम भगवान मने कसणी आपशे तेम तेम मारी उपर भगवान घणा प्रसन्न थशे अने मारे वश थईने मने घणुं सुख आपशे.' एम समजीने जे अमारी भक्ति करशे तेनी उपर अमे घणा प्रसन्न थईशुं अने एवी समजणवाळा तेज अमारा खरा भक्त छे अने तेने कल्याणना मार्गमां कोई विघ्न आवशे नहीं अने एवी समजणवाळा हशे तेज अक्षरधामने पामशे. माटे एवा खरा भक्त थवुं पण लोचापोचा रहेवुं नहीं."

इति श्रीमुखसिद्धांत २९१ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत २९२ विषय :–सत्त्वगुणी कर्मथी ज मनुष्यदेह प्राप्त थाय छे अने मोक्ष थाय छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ ना चैत्र सुदि ५ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम सोजीत्रा मध्ये व्यास कुबेरजी ईश्वरने घेर दक्षिणादे वांर ओरडानी आगळ गादीतकिये युक्त पलंग बिछाव्यो हतो ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां विषे शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "जीव जे ते त्रण गुणे करीने स्वर्ग, मृत्यु

ते तो मनुष्यरूपी गधेडो छे अने तेने धिक्कार छे. अने जे प्रत्यक्ष अमारो आश्रय करीने अमारी आज्ञा जे वेद तेमां कह्या जे चार वर्ण अने चार आश्रमना धर्म तेने पाळशे तेने धन्य छे अने तेनुं साक्षात्कार कल्याण थशे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २९२ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २९३ विषयः—प्रत्यक्ष अमारी आज्ञा पाळवी ए ज धर्म छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ ना चैत्र वदि १२ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री पलोल मध्ये पटेल कालुभाई वहेचरभाईने घेर आथमणें चार ओरडानी आगळ गादीतकिये युक्त पलंग विछाव्यो हतो ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंवल जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पना आभूषण सर्वे अंगने विषे शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज कृपा करीने बोल्या जे " आ एक अमे वात करशुं ते प्रमाणे जे समजशे अने वर्तशे तेनुं साक्षात् कल्याण थशे अने ते वातने भूलीने बीजा अनंत उपाय करशे तो पण तेनुं कल्याण थाय नहीं. हवे ते वात कहुं छुं तेमां प्रथम दृष्टांत कहुं छुं जे जेम आलोकमां सुख पामवाने अर्थे पैसा एटले द्रव्य कमाईने भेगुं करी राखे छे तेने काळ पडे त्यारे काम आवे छे अने ते सुखने पामे छे. अने द्रव्य अने धान्य न होय ते काळमां दुःखी थाय छे. तेम आत्माने परलोकमां सुख पामवाने अर्थे प्रत्यक्ष भगवाननी धर्मे सहित भक्ति करवी अने जे धर्मे सहित परमात्मा भगवाननी भक्ति करे छे ते आत्मा देह मूकीने परमात्मा भगवानना धाममां जाय छे. केमके जीव प्राणी

मात्र महामायारूप ऊंडा कूवामां पड्या छे. ते मायारूपी कूवामांथी जीवोने काढवाने अर्थे परमात्मा ए माया पर रह्या थका पोते प्रगट थईने धर्मरूपी दोरडुं मूक्युं छे. ते धर्मरूपी दोरडाने जे जीव पकडशे तेने परमात्मा ताणीने मायारूपी कूवानी बहार काढशे अने ते आत्मा भगवानना धामने पामशे. अने जे जीव प्रत्यक्षनी आज्ञारूपी धर्मने नहीं पकडे कहेतां धर्मने नहीं पाळे ते जीवनुं कोई काळे कल्याण थशे नहीं. माटे प्रत्यक्ष भगवाननी आज्ञारूपी धर्म पाळवो एज एक जीवना मोक्षने अर्थे अचळ साधन छे अने जे धर्म पाळे छे तेने धर्म, अर्थ, काम अने मोक्ष ए चारे पुरुषार्थनी सिद्धि थाय छे.

हवे ते धर्म शुं ? तो प्रत्यक्ष अमारी आज्ञा पाळवी ए धर्म छे. ते अमारी शी आज्ञा छे ? तो गृहस्थ होय तेने एक चोरी न करवी तथा परस्त्रीनो संग करवो नहीं तथा स्त्रीए परपुरुषनो संग करवो नहीं तथा विश्वासघात न करवो तथा पारकी थापण ओळववी नहीं तथा जुठी साक्षी भरवी नहीं तथा लांच लेवी नहीं तथा स्त्री धनादिक पदार्थना स्वार्थ सारु जुठुं बोलवुं नहीं तथा मद्य, मांस, मफर, माजम, अफीण गांजो, लीलागर आदिक केफी वस्तु तथा अभक्ष्य वस्तु तेने खावी-पीवी नहीं तथा ब्राह्मण, साधु, वेद तथा सूर्य, गणपति, देवी, विष्णु अने शिव ए जे पंचदेव ते एक परमात्मानुं रूप छे माटे तेनी निंदा करवी नहीं. अने आ कायाथी पोताना आत्माने जुदो समजवो अने 'देह नाशवंत छे अने हुं आत्मा अविनाशी छुं,' एम समजवुं. अने अमारी मूर्तिने अंतःकरणमां ध्यान करीने अमारा नामनी पांच माळा फेरवे अने अमारो आश्रय दृढ राखे तो ते गृहस्थाश्रमी होय तेना आत्मानुं साक्षात्कार कल्याण थाय छे. अने जे त्यागी होय ते पांच विषयनो त्याग करे अने अमारुं भजन करे तो ते त्यागीनुं पण साक्षात्कार कल्याण थाय छे. अने हुं प्रगट

होवुं अने मने मूकीने बीजां साधन करे अने बीजे तीर्थादिकमां फरे छे ते तो मूढ अने पापी छे अने तेनुं कल्याण कोई काळे नहीं थाय."

इति श्रीमुखसिद्धांत २९३ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत २९४ विषयः-इन्द्रियो, अंतःकरण अने पंचविषयरूपी अज्ञाननो नाश करवानी रीत.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२४ ना वैशाख सुदि १ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री गाडा मध्ये पटेल रामाभाई गगाभाईने घेर गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. कुंकुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज कृपा करीने बोल्या जे "एक ज्ञान छे अने बीजुं अज्ञान छे. ते अज्ञान जीवोने अनादिनुं छे अने ते अज्ञान कारण छे अने अज्ञाननुं कार्य आ पिंड ब्रह्मांडरूप जगत छे ते कारण जे अज्ञान ते थकी जगत उपज्युं छे अने कार्यरूप जे जगत तेने आधारे अज्ञान रह्युं छे. जेम कुंभारनो चाकडो छे ते कारण छे अने नळियां तेनुं कार्य छे. पण ते चाकडाने नळियानुं करेलुं जे घर तेनो आश्रय छे ते घरमां चाकडाने मूके तो चोमासाना वरसादने जळे करीने नाश न पामे अने जो घरमां न मूके तो वरसादने जळे करीने पलळीने तेना मुवाळाना डुचा नीसरी जाय अने माटी धोवाईने चाकडो नाश पामी जाय. तेम अज्ञान थकी उपज्यां जे जगतरूप इन्द्रियो अंतःकरण तेने आधारे अज्ञान रह्युं छे अने जो इन्द्रियो अंतःकरणनो नाश थाय तो अज्ञान नाश पामे,

जेम बीज कारण छे अने तेनुं कार्य वृक्ष छे. ते वृक्षने फळ थया मोर कापी नाखीए तो तेना कारणरूप बीजनो नाश थई जाय अने जो वृक्षने न कापी नाखे तो ते वृक्षमांथी बीज घणांक थाय छे. तेम कारण जे अज्ञान ते थकी पिंड ब्रह्मांडरूप जगत उपज्युं छे ते पिंड ब्रह्मांडरूप जगतनो निषेध करीए तो ज्ञानरूपी वरसादना जळे करीने अज्ञानरूपी चाकडो पलळीने नाश थई जाय छे अने ते जीवनो मोक्ष थाय छे. माटे इन्द्रियो अंतःकरण तथा इन्द्रियो अंतःकरणना ग्रहण कर्यामां आवे एवा जे पंचविषय तेनो नाश करवो.

हवे ते इन्द्रियो अंतःकरणनो केवी रीते नाश करवो ? अने पंच-विषयनो केवी रीते नाश करवो ? तो इन्द्रियो अंतःकरणनी बहार जे जगतना विषय सन्मुखवृत्ति छे ते अज्ञानने वधारनारी छे अने जगत संबंधी बहार विषयनो त्याग करीने ते वृत्तिने पाछी वाळीने ते इन्द्रियो अंतःकरणथी पर एवो जे आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप जाणीने ते आत्माना प्रकाशक अने आत्माना आधार एवा जे परमात्मा रामकृष्णादिक भगवानना अवतार माया पर दिव्यमूर्ति प्रत्यक्ष तेने विषे इन्द्रियो अंतःकरणनी वृत्तिओने जोडी देवी. ते काने करीने जगतना मायिक शब्दनो अभाव करीने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संत तेना शब्द प्रीतिए करीने सांभळता अने आंखे करीने जगतना मायिकरूप आकारनो अभाव करीने भगवान अने भगवानना संतना दर्शन आंखे करीने प्रीतिए सहित करवां. एवी रीते जगत संबंधी मायिक पंचविषयनो त्याग करीने भगवानना दर्शन, स्पर्शादिक विषयनुं ग्रहण करवुं अने एवी रीते जगत संबंधी मायिक विषयनो अभाव करीने भगवानना रूपमां जोडाय छे तेने इन्द्रियो अंतःकरणरूप पिंड ब्रह्मांडनो नाश कर्यो जाणवो अने इन्द्रियो अंतःकरणरूप पिंड ब्रह्मांडने नाशे करीने कारणरूप जे अनादिनुं अज्ञान तेनो नाश थई जाय छे अने ते आत्मा भगवानना धामने पामे छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २९४ समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत २९५ विषय :-सत्संग-कुसंगनी समज.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ना वैशाख सुदि ३ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री गाडा मध्ये पटेल नरसींह लखाभाईने घेर आथमणें बार ओरडानी आगळ गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे कसुंबल ताराळां वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराजनी संध्या आरती थया केडे महाराज बोल्या जे "सर्वे शास्त्रने विषे सत्संगनो महिमा बहु कह्यो छे अने सत्संगे करीने जीवनो मोक्ष थाय छे अने सत्संग विना बीजां अनंत साधन करे, तीर्थ करे, ज्ञान कथे, शास्त्र वांचे-सांभळे, तो पण जीवनो मोक्ष थाय नहीं. अने बीजां साधन कांई कर्यां न होय पण जो तेने सत्संगनो योग थई जाय तो ते आत्मानो तत्काळ मोक्ष थई जाय छे. एवो सत्संगनो अपार महिमा छे. अने पूर्वे सत्संगे करीने घणाक जीव परमपदने पामी गया छे. माटे मनुष्य मात्रने पोताना आत्माना मोक्षने अर्थे सत्संग जरूर करवो.

—पण ते सत्संग जीवने मळवो तथा ओळखवो घणो कठण छे, केमके एक सत्संग छे अने बीजो कुसंग छे. ते उपरथी बेयनो सरखो वेश जणातो होय छे जेम एक हंस छे अने बीजो बगलो छे ते उपरथी तो बेय धोळा जणाता होय पण तेमां भेद घणो छे केमके जे हंस छे ते तो मानसरोवर होय त्यां रहे छे अने मोतिनो चारो चरे पण ते विना बीजुं कांई खाय नहीं. अने ते हंस दूध-पाणी बे भेगां होय तेने जुदां

करीने दूधने ग्रहण करे छे अने पाणीनो त्याग करे छे. अने जे वगलां छे ते तो ज्यां खाडा खाबोचियानां पाणी होय अने जेमां घणां जंतु होय एवा तलावडां होय त्यां रहे छे अने माछलादिक जीवनो चारो करे छे अने दूध पाणीने जुदा करी शकता नथी. माटे हंस अने वगला उपरथी सरखां उज्वल जणाता होय, पण तेनी क्रियामां घणो भेद छे.

तेम एक हंसरूप सत्पुरुष छे अने बीजा वगलारूप असत्पुरुष छे ते उपरथी तो साधु तथा ब्रह्मचारी तथा संन्यासी तथा परंहस तथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा छाप माळा तिलके युक्त भक्त ते सर्वे सरखा जणाता होय पण तेना आचरणमां अने तेनी समजणमां घणो भेद छे ते हंसरूप सत्पुरुष छे ते तो मानसरोवररूप जे परमात्मा प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवान तेने आश्रये रहेता होय पण ते प्रत्यक्ष परमात्माना आश्रयनो त्याग क्यारेय करे नहीं. अने ते प्रत्यक्ष परमात्माना नाम, गुण, लीला, चरित्र ते रूपी मोती तेनुं श्रवण कीर्तनादिक नवधा भक्तिरूपी चारो करता होय अने दूध-पाणीनी पेठे आत्मा दूधरूप छे अने देह पाणीरूप छे; ते बे एक थई गयां छे तेने सांख्यविचारे करीने जुदा करे छे अने पाणीरूप देहनो निषेध करीने आत्मानुं ग्रहण करावता होय.

—अने जे वगलारूप असत्पुरुष होय ते तो खाडाखाबोचीयांरूप जे क्षुद्र देव तेना आश्रयमां रहेता होय. हवे क्षुद्र देव ते शुं? तो परमात्मा प्रत्यक्षना अवताररूप जे पंचदेव विष्णु, शीव, गणपति, सूर्य अने शक्ति ते विना जेने मद्यमांसनुं नैवेद्य थतुं होय तेने क्षुद्र जाणवा. माटे असत्पुरुष तेनी उपासना करता होय अने अनियमपणे पंचविषयने भोगवता होय अने देहने पोतानुं रूप मानता होय अने तेने जगतनां पदार्थमां प्रीति बहु होय.

अने जे सत्पुरुष होय ते तो इन्द्रियोना नियमरूपी धर्म दृढ करीने

राखता होय अने पोते आत्मारूपे वर्तता होय अने जगतना पदार्थ उपर तेने प्रीति न होय, एवां लक्षण होय तेने सत्पुरुष जाणवा अने तेनो समागम करवो तेनुं नाम सत्संग छे अने ते सत्संगे करीने जीवनो मोक्ष थाय छे. ते सत्संग तमने आज मळ्यो छे माटे तमारा बहु ज मोटां भाग्य छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २९५ समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत २९६ विषयः—अमे तमने जन्म धराव्या छे अने हुं पण स्व-इच्छाए करीने प्रगट थयो छुं.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ ना वैशाख सुदि ५ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री गाडा मध्ये पटेल लल्लुभाई दाजीभाईने घेर आथमणां बारना ओरडानी परसाळमां भोजन जमीने ते घरना उंबरा उपर ऊभा हता अने एक श्वेत धोतियुं लाल-कोरनुं पहेर्युं हतुं अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु च्चार ऊभा हता तथा हरिभक्त वीस पच्चीस आशरे ऊभा हता.

पछी महाराज कृपादृष्टि करीने बोल्या जे "अमने साक्षात्कार पामवाने अर्थे परोक्षपणें जप, तप, तीर्थ, व्रत, यज्ञ, दान, पुण्य, धर्म, ज्ञान, वैरागादिक अनंत शुभ कर्म करीने अक्षरधाम विना बीजां अनंत धाम छे तेनें पाम्या हता ते सर्वेने अमारा स्वरूपनी प्राप्ति करावीने अक्षरधामने पमाडवाने अर्थे ए सर्वे अनंत मुक्तने अमे आ समये मनुष्यना देह धराव्या छे. माटे सर्वे बाई भाई नानां मोटांने प्रीति थाय छे अने ते सर्वेने अमे जे जे नियम धरावीए छीए तेने शिर साटे पाळे छे अने अमारुं ज्ञान सांभळीने पंचविषयनी वासनारूपी जे काम तेनो त्याग करे छे अने अखंड ब्रह्मस्थितिमां वर्तवा लागे छे. ते मोटा मोटा

योगीने पण एवी स्थिति आववी घणी कठण ते स्थिति अमारी वात सांभळीने सहेजमां आवी जाय छे.

ते एवी स्थिति सहेजनां पामे छे तेनुं कारण शुं छे? तो आज अमे घणाक धामोना मुक्तने देह धराव्या छे, माटे ब्रह्मस्थितिने सहेजमां पामे छे. अने अमारा स्वरूपमां कोईने संशय रहेतो नथी. ते नानी वार वर्षनी अवस्था अमारी हती, ते दहाडे चूडेथी बलदाणे हुं जतो हतो. पछी ते बलदाणा अने चूडा वच्चे अमे ऊभा रहीने एवो संकल्प कर्यो के जे 'अमने पामवाने अर्थे साधन करीने जे जे लोकमां रह्या होय तथा जे जे धाममां गया होय ते सर्वे आ सोरठे देशमां सो सो गाउ फरतां फरतां जन्म धरजो', एवो संकल्प अमे कर्यो हतो माटे ते बधाय मुक्त-मुमुक्षुए जन्म धर्या छे अने जेटले मुक्त-मुमुक्षुए जन्म धर्या छे ते सर्वेने अमारे विषे सहेजमां प्रीति थाय छे अने तेने अमारा स्व-रूपनो निश्चय थाय छे. अने जेटलाने संस्कार ओछो छे तेने अमारा स्वरूपनो निश्चय थवामां वार लागे छे. माटे तमारे सर्वेने अमारे विषे तरत प्रीति थई अने अमारा स्वरूपनो निश्चय थयो ते अमे तमने जन्म धराव्या छे. अने तमोने दर्शन देवा सारु अने तमोने अमारा स्वरूपनो निश्चय करावीने अक्षरधामने पमाडवाने अर्थे हुं पण मारी स्व-इच्छाए करीने प्रगट थयो छुं.

ते हुं जेने साक्षात्कार प्रगट मळ्युं छुं अने मारा स्वरूपनो जेने निश्चय थाय छे तेनुं लक्षण शुं छे? तो तेने संसारना सुखनी आसक्तिरूप जे काम ते नाश पामी जाय छे अने ए ज प्रगट भगवान अने भगवानना संत मळवानो प्रताप छे. ते उपर तुलसीदासनी साखी छे जे–

राम त्यां काम नहीं, काम त्यां नहीं राम;
'तुलसी' दोनुं न रहे, रवि रजनी एक ठाम.

तेनो अर्थे जे राम त्यां नहीं काम एटले राम कहेतां प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो निश्चय जेना अंतःकरणमां थाय छे तेना अंतःकरणमां पंचविपयनी वासनारूपी काम नाश पामी जाय छे अने पंचविषयनी वासनारूपी काम जेना अंतःकरणमां छे तो तेना अंतःकरणमां भगवान नथी. जेम दिवस अने रात्री वे भेगां होय नहीं, तेम परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान जेने थयुं तेने विषयनी वासनारूपी अज्ञान रहेतुं नथी अने जेने पंचविषयने विषे आसक्तिरूप अज्ञान छे तेने प्रत्यक्ष परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान थयुं नथी, एम जाणवुं.

माटे आज तमने सर्वेने जन्म धराव्यो छे अने अनंत जन्म थयां अमने पामवा सारु जप, तप, साधन कर्यां हतां ते सर्वेनुं फळ तमने आज प्राप्त थयुं छे: अने तमारां सर्वेनां साधन पूरां थई रह्यां छे हवे तमारे कांई करवुं रह्युं नथी. माटे तमारे देह रहे त्यां सुधी अमे आप्यां जे वर्तमान तेने दृढ राखीने अमारुं भजन कर्या करजो एटले तमारो साक्षात्कार मोक्ष थई रहेशे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २९६ समाप्त ।

———:x+x:———

श्रीमुखसिद्धांत २९७ विषय :—शब्दनी उत्पत्ति.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ना वैशाख सुदि ८ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री गाडा मध्ये पटेल हरखजी काळीदासने घेर आथमणां वारना ओरडानी आगळ गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी कसुंबल वस्त्र धारण कर्यां हतां अने श्वेत पुष्पनां आभूपण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराजनी संध्या आरती थया केडे ते गामना भक्त पटेल कल्याणभाईए महाराजने एक प्रश्न पूछयो जे "आ शब्द ऊठे छे ते क्यांथी ऊठतो हशे? अने ते शब्द शेने करीने बोलातो हशे? ते कृपा करीने कहो."

पछी महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान बोल्या जे "अर्धमात्रारूप जे तूर्यावस्था त्यांथी प्रथम शब्द ऊठे छे अने ते शब्दने परावाणी कहीए अने ते तूर्यानुं स्थानक दशमो द्वार जे मगज त्यां छे. अने त्यांथी शब्द हृदयने विषे आवे छे अने ते हृदय मकार मात्रारूप कारणदेह अने सुषुप्ति अवस्था छे अने ते शब्दने पश्यंतिवाणी कहीए. अने हृदयमांथी ते शब्द कंठे आवे छे अने ते कंठने उकार मात्रारूप सूक्ष्मदेह अने स्वप्न अवस्था छे अने ते शब्दने मध्यमावाणी कहीए. अने ते कंठेथी शब्द वाक् इन्द्रिये आवीने बोले छे अने ते वाक् इन्द्रिय अकार मात्रारूप स्थूळदेह अने जाग्रत अवस्था छे अने तेने वैखरीवाणी कहीए. माटे मगजरूप जे विचार करवानुं स्थानक दशमोद्वार त्यांथी शब्द ऊठे छे अने त्यांथी हृदयमां आवीने पछी कंठमां थईने वाणीए आवीने जीह्वाए करीने बोले छे ए तमारा प्रश्ननो उत्तर छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २९७ समाप्त ॥

:x*x:

श्रीमुखसिद्धांत २९८ विषय :—दया रहे अने अहंकार टळे तो ज मोक्ष थाय छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ ना वैशाख सुदि १३ ने महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री गाडा मध्ये पटेल काळीदासने घेर समडी तळे गादीतकिये युक्त पलंग विछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां, कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदना आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी महाराज बोल्या जे "सभाने एक प्रश्न पूछीए छीए ते जेने आवडे ते उत्तर करजो. ते प्रश्न उपर एक साखी छेः—

दया मुक्त को मूळ है, नरक मूळ अभिमान;
तुलसी दया न छांडीये, जबलग घटमें प्राण.

जे दया छे ते मुक्तिनुं मूळ छे अने जे अभिमान छे नरकनुं मूळ छे. हवे तेमां पूछवानुं ए छे के जो दया राखवा जाय छे तो अहंकार विना दया रहेती नथी अने जो अहंकार रहे छे तो मुक्त थवातुं नथी केमके देहने लईने दया रही छे. जे कोई जीवने देहे दुःख थतुं होय तेने जोईने तेना उपर एम दया आवे जे 'हुं एनुं दुःख मटाडुं', एवो दयाने विषे अहंकार रहे छे. अने जो देहना अहंकारनो त्याग करीने आत्मरूप पोताने माने तो ते आत्मा तो सदाय सुखरूप छे, अखंड अविनाशी छे अने देह तो जड छे अने तेमज सर्वेना आत्मा तो सुखरूप अने अखंड अविनाशी छे अने देह तो जड छे. माटे कोना उपर दया राखवी? एम समजे छे तो अहंकार टळी जाय पण ते भेगा दया टळी जाय छे. अने ज्यारे दया टळे छे त्यारे—मुक्तिनुं मूळ तो दया छे ते मूळ गयुं त्यारे—मुक्ति पण थाय नहीं. माटे अहंकार टाळीए छीए त्यारे दया रहेती नथी अने दया राखीए छीए तो अहंकार टळतो नथी. माटे दया रहे अने अहंकार टळे तेनो शो उपाय छे? ते कहो."

पछी अक्षरमुक्तानंद स्वामीए कह्युं के "देहना अहंकारनो त्याग करीने आत्मारूप थईने ब्रह्मदशाने पामीने देह अने देह संबंधी पदार्थने नाशवंत अने पापरूप अने दुःखरूप जाणीने जगतना मायिक शब्दादिक पंचविषयनी वासनानो त्याग करीने पछी दया राखवी. ते केवी रीते दया राखवी? तो एवी रीते ब्रह्मरूप थयो होय ते पण पोताना देहना रक्षणने अर्थे अवश्य घटे तेटलुं देहने खवराववुं, पीवराववुं,

ओढाडवुं, पहेरावतुं इत्यादिक पोताना देह उपर दया राखे छे अने जो एटली दया न राखे तो देह पडी जाय अने जो देह पडी जाय तो धर्म, ज्ञान, वैराग, भक्ति आदिक भगवाननी प्रसन्नताना साधन ते शेने करीने करे ? अने साधन करे नहीं तो मुक्त थवाय नहीं. एम जाणीने पोताना देहनुं रक्षण मुक्त थयो होय ते पण करे छे तो जेम पोताना देहनुं तेम बीजा सर्वे जीव प्राणी मात्रना शरीरनुं दया राखीने रक्षण करवुं. एम समजे तो तेने दया पण रहे छे अने अहंकार पण टळी जाय छे."

पछी महाराज बोल्या जे "ए पण उत्तर खरो, पण एक तेनो बीजो उत्तर छे जे आम समजे तो तेने अहंकार टळी जाय छे अने दया पण रहे तो जे जीव प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो दृढ आश्रय करीने तेणे करी जे आज्ञा ते आज्ञारूपी जे धर्म ते धर्मने दृढ राखीने पछी जेवी रीते घटे तेवी रीते पोताना सामर्थ्य प्रमाणे बीजा जीवो उपर दया राखे अने जे दया राखवामां पोताना धर्मने लगारे पण घसारो आवे कहेतां दया राखतां धर्म लोपाय तो ते दयाने पाप रूप जाणीने तेनो त्याग करवो अने पोताना इष्टदेवे जेने जे जे नीम धराव्या होय तेने पोताने शिर साटे राखीने पछी बीजा जीवोनुं जेम सारुं थाय एवी दया राखे तो तेनो अहंकार पण टळी जाय छे अने तेने दया पण रहे छे अने ते मुक्त थईने भगवानना अक्षरधामने पामे छे. अने जे पोतानो धर्म चूकीने दया राखे छे ते तो महा पापी छे अने ते तो महा अहंकारी छे अने तेनी दया ते पण बीजा जीवोनुं भूंडुं करे एवी छे. अने पोतानो धर्म चूकीने जे दया करे छे ते तो देह मूकीने जरूर नरकमां पडे छे. माटे जेने पोताना आत्मानुं कल्याण इच्छवुं होय तेने तो परमात्माए कह्या जे वेदमां वर्ण अने आश्रमना धर्म तेने दृढ करीने पाळवा अने ते धर्ममां रहीने दया राखवी अने

परमात्मा प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक तेनुं भजन करवुं. एवी रीते समजीने वर्तशे ते जीवनुं कल्याण थशे."

इति श्रीमुखसिद्धांत २९८ समाप्त।

———:*×*:———

श्रीमुखसिद्धांत २९९ विषयः–जगतनी उत्पत्ति शा माटे ? अने परमात्मा सर्वाधार थका निराधार.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ ना वैशाख सुदि १४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री गाडा मध्ये पटेल काळीदासने घेर उगमणें वार ओरडानी आगळ चोकमां गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. कंकुनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज कृपा करीने बोल्या जे "सर्वे पिंड ब्रह्मांडादिक अनंत कोटि ब्रह्मांड ते परमात्माने आधारे रह्या छे. जेम आ जगतने विषे जेटला आकार मात्र जणाय छे ते सर्वेने आ पृथ्वीनो आधार छे अने ते आकार पृथ्वी थकी उपज्या छे अने पृथ्वीमां लय पामे छे. अने पृथ्वीने जळनो आधार छे, जळने अग्निनो आधार छे, अग्निने वायुनो आधार छे, वायुने आकाशनो आधार छे, आकाशने अहंकारनो आधार छे, अहंकारने महत्तत्त्वनो आधार छे, महत्तत्त्वने प्रधानपुरुषनो आधार छे, प्रधानपुरुषने मूळप्रकृतिपुरुषनो आधार छे, प्रकृतिपुरुषने अक्षरब्रह्मनो आधार छे अने अक्षरब्रह्मने परमात्मानो आधार छे. पण परमात्माने कोईनो आधार नथी; परमात्मा तो सर्वोपरी छे अने निराधार छे, कहेतां जीव, ईश्वर, माया, ब्रह्म ए सर्वेने परमात्मानो आधार छे, माटे परमात्मा सर्वाधार

कहेवाय छे. अने परमात्माने कोईनो आधार नथी माटे परमात्मा निराधार कहेवाय छे.

अने ते परमात्मा दिव्य मूर्तिमान छे. अने कर्तुमकर्तुम् अने अन्यथाकर्तुम् समर्थ छे अने ते प्रत्यक्ष भगवाननो आश्रय जे जीव करे छे ते जीवनो मोक्ष थाय छे अने ते जीवात्मानुं अनादि घर जे अक्षरब्रह्म तेने पामे छे. पण प्रत्यक्ष भगवानना आश्रय विना जीवनो मोक्ष थतो नथी अने पोतानुं मूळ घर जे अक्षरब्रह्म ते जडतुं नथी. केमके प्रथम तो जीव अज्ञान अवस्थामां ब्रह्ममांथी सृष्टिमां आव्यो छे माटे पोतानी जाणे पोतानुं मूळ घर जे अक्षरब्रह्म ते जडतुं नथी.

जेम कोईक मनुष्य अहिंथी काशीए गयुं होय तेने दीकरो छ महिनानो होय तेने भेगो तेडी गयो होय ते छोकरो मोटो थाय तो पण तेने पोताना घरनी गम होय नहीं अने तेने घेरथी काशीए गयो तेमां जे जे गाम शहर वचमां आव्या होय तेनी पण छोकराने खबर होय नहीं अने ते छोकराना मावाप छे तेने पोताना घरनी पण खबर छे अने वच्चे मार्गमां जे जे गाम शहेर आव्यां होय तेने पण जाणे छे. ते पाछो तेना दीकराने मार्ग बतावशे अने घेर पोताने तेडी जशे त्यारे ते पोताने मूळ घेर पूगशे. तेम जीव प्रथम पोतानुं मूळ घर जे अक्षरब्रह्म तेना कोकदेशने विषे अज्ञान अवस्थामां महामायाने विषे हतां, कहेतां चिदाकाशने विषे चार भूतना परमाणुंरूप जे महाकारण शरीर तेने विषे जीव हता. ते जीवोने मायामांथी वहार काढीने ज्ञान आपीने महा सुखिया करवा सारु परमात्माए पोतानो आधार आपीने काशीए जवारूप जगतनी उत्पत्ति करी छे. ते केवी रीते सृष्टि करी छे? तो प्रथम चिदाकाशने विषे जीवे सहित चार भूतनां परमाणुं हतां तेमांथी परमात्माए वायुनां परमाणुं भेगां करीने एक मोटो वायु कर्यो

अने ते वायुने विषे त्रण गुण रह्या छे. सत्त्व, रज अने तम तेमांथी वायुना सत्त्वगुणनी स्पर्श ग्रहण करनारी त्वचा इन्द्रिय परमेश्वरे करी अने ते इन्द्रियना वायु नामे देव कर्या. अने वायुना रजोगुण थकी हस्त इन्द्रिय करी ते इन्द्रियना ईन्द्र नामे देव कर्या अने वायुना तमोगुणनो मोटो वायु कर्यो अने पंच प्राण कर्या तथा चलन, वलन, धावन, प्रसारन अने आकोचन ए पांच भाग थया अने रूप विनानो स्पर्श विषयरूप परमाणुं हतां ते थकी वायु परमेश्वरे कर्यो छे अने वायु रह्यो छे जेने विषे एवो जे आकाश ते आकाश वायुने उपजवे करीने अंधकारे युक्त थवा माटे ते चिदाकाश विकार पामीने महदाकाश थयो अने ते महदाकाशने विषे त्रण गुण रह्या छे, तेमां सत्त्वगुण थकी शब्द ग्रहण करनारी श्रोत्र इन्द्रिय थई तथा ते इन्द्रियना दिगपाल नामना देव परमेश्वरे कर्या छे अने आकाशना रजोगुणनी वाक् इन्द्रिय करीने ते इन्द्रियना अग्नि नामे देव कर्या छे अने सूक्ष्म आकाशना तमोगुणना अंतःकरण मन, बुद्धि, चित्त अने अहंकार कर्या छे अने अंतःकरणना देव कर्या छे ते मनना देव चंद्र एटले अनिरुद्ध अने बुद्धिना देव ब्रह्मा एटले प्रद्युम्न अने चित्तना देव वासुदेव अने अहंकारना देव रुद्र एटले शंकर्षण ए चार देव परमात्माए निर्गुण ब्रह्मरूप जे चिदाकाश ते थकी कर्या छे अने ते आकाशने विषे शब्द विषय रह्यो छे, ते महदाकाशनुं कारण छे. ते शब्द थकी महदाकाश थयो छे अने महदाकाश थकी स्पर्श विषय थयो छे अने स्पर्श थकी वायु थयो छे. अने ते अग्निने विषे ऊना स्पर्शवाळां अग्निनां परमाणुं रह्यां छे, तेने परमात्माए भेगां करीने तेनो रूप विषय कर्यो अने ते रूप विषय थकी मोटो अग्नि कर्यो अने ते अग्निने विषे पण त्रण गुण रह्या छे. तेमां सत्त्वगुण थकी रूप ग्रहण करनारी चक्षु इन्द्रिय करी अने ते इन्द्रियनो देव सूर्य कर्यो अने अग्निना रजोगुण

थकी पाद इन्द्रिय करी अने ते इन्द्रियना विष्णु नामे देव कर्या अने अग्निना तमोगुण थकी भूख, तरस, निद्रा, आळस अने कांति ए पांच भाग कर्या छे. अने ते अग्निने विषे टाढा स्पर्श विषयवाळां परमाणुं रह्यां छे तेने भेगां करीने जळ परमेश्वरे कर्युं अने ते जळने विषे त्रण गुण छे. तेमां सत्त्वगुण थकी रस ग्रहण करनारी रसना इन्द्रिय करी तथा ते इन्द्रियना वरुण नामे देव कर्या. अने जळना रजोगुण थकी शिष्नु इन्द्रिय करी तथा ते इन्द्रियना प्रजापति नामे देव कर्या अने जळना तमो गुण थकी वीर्य, मूत्र, परसेवो, लाळ अने लोही ए पांच भाग कर्या छे. अने ते जळने विषे कठण स्पर्शवाळा गंध विषयरूप पृथ्वीनां परमाणुं रह्यां छे तेने परमात्माए भेगां करीने मोटी पृथ्वी करी अने ते पृथ्वीना सत्त्वगुण थकी गंध विषय ग्रहण करनारी नासिका इन्द्रिय करी तथा ते इन्द्रियना अश्वनीकुमार नामे देव कर्या अने पृथ्वीना रजोगुण थकी गुदा इन्द्रिय करी तथा ते इन्द्रियना यम नामे देव कर्या अने पृथ्वीना तमोगुण थकी हाड, मांस, नाडियो, त्वचा अने रोम ए पांच भाग कर्या छे.

अने तेमां मोटो आकाश, मोटो वायु, मोटो अग्नि, मोटुं जळ अने मोटी पृथ्वी ए पांच भूत तथा ते पंच महा भूत थकी थया जे इन्द्रियो अंतःकरण अने तेना देव अने ते सर्वे थकी थयुं जे वैराटरूप ब्रह्मांड तेने ईश्वररूपे करीने परमात्माए पोते धारण कर्युं छे. अने ते परमात्मानुं अन्वय स्वरूप कहेवाय छे अने ते पंचभूतनां परमाणुंने विषे हता जे जीव तेने मोटा पंचभूतने अंशे करीने नानां शरीर सर्जी आप्यां ते शरीरनुं नाम पिंड कहेवाय छे, तेमां ईश्वरनां इन्द्रियो अंतःकरण छे ते जीवनां इन्द्रियो अंतःकरणना देव कहेवाय छे. एवी रीते अक्षरमांथी जीव पिंडमां आव्यो छे तेने परमात्मा जाणे छे, पण जीवने तेनी खबर नथी जे 'हुं क्यांथी आव्यो छुं?' तथा जीवने तो परमात्मा पोते तेनुं

मूळ घर जे अक्षरब्रह्म ते देखाडशे त्यारे ते पोताना मूळ घरने जीव पामशे अने ते जीवनी मुक्ति थशे. जेम नाना बाळकने तेनां मा-बाप परदेशमां तेडी गया होय ते बाळकने तेनां मा-बाप पोतानुं घर बतावशे त्यारे ते बाळकने खबर पडशे. ते मोटो वीस वर्षनो थयो होय तो पण तेने पोताने जाणे पोताना मूळ घरनी खबर पडे नहीं. माटे ते बाळकना मा-बाप तेनुं घर बतावशे अने घेर तेडी जशे त्यारे ते पोताना घरने पामशे.

—अने समजु थया पछी पोताना मा-बाप पोताने घेर तेडी जाय त्यार केडे तो ते परदेश गयो हतो ते शहेर तथा वचमां जे जे गाम शहेर आव्यां होय ते सर्वेनी खबर पडे छे. तेम मा-बाप रूप एवा जे परमात्मा तेणे मूळ घर जे अक्षरब्रह्म तेने पमाडवाने अर्थे परमात्मा पोते अक्षरमां रह्या थका रामकृष्णादिक अवतारनुं धारण करे छे. पछी ते प्रत्यक्ष भगवानने आश्रये जे जीव आवे छे तेने जे रीते अक्षरमांथी अज्ञान अवस्थामां जीव पिंड ब्रह्मांडमां आव्यो छे ते रीतने प्रत्यक्ष परमात्मा बतावी आपे छे. केमके परमात्माए पोते जीवोने ज्ञान करावबा सारु परदेशरूप पिंड ब्रह्मांडमां लाव्या छे अने जीव तो बाळकनी पेठे अज्ञानमां आव्यो छे. माटे जीव पोतानी मेळे समर्थ नथी. अने तेम ज पिंड बह्मांडने विषे सर्वे देव ब्रह्मादिक तथा सर्वे मनुष्यादिक अनंतकोटि ब्रह्मांडना जीव प्राणी मात्र ते सर्वे अनादिना अज्ञानी हता. माटे ज्ञान आपवा सारु ए सर्वेने परमात्मा सृष्टिमां लाव्या छे, तेथी ते देव, ब्रह्मा अने मनुष्यादिक कोई पण पोताना मूळ घरने कहेवा जाणवाने पोतानी मेळे समर्थ नथी. माटे एक परमात्मा ज ज्ञान करावीने मूळ घर जे अक्षरब्रह्म तेमां लई जवाने समर्थ छे. माटे प्रत्यक्ष भगवानना अवतार जे रामकृष्णादिक तेनो आश्रय जे जीव करे छे ते

जीवनुं सहेजमां थोडाक दाखडे कल्याण थाय छे. जेम बाळक परदेशमां गयो तेने पोताने घेर आववा सारु तेना मा-बापनो आश्रय करीने ते भेगो चाल्यो आवे तो तेने मार्ग पूछवो पडे नहीं तथा क्यांय भूलो पण पडे नहीं तथा तेने वाटमां भाता-पोतानी पण फीकर राखवी पडे नहीं अने सहेजमां पोताना मा-बाप भेगो चाल्यो आवे तो पोताने घेर पहोंचे अने सुखने पामे.

अने मूर्खाई करीने एम कहे जे 'हवे तो हुं मोटो थयो छुं ते मा-बापनुं शुं काम छे; हुं मारी मेळे मारे घेर जईश,' एम कहीने तेना मा-बापथी जुदो पडीने एकलो चाले तो वाटमां भूलो पडे अने पोतानुं घर होय पूर्वमां अने चालवा मांडे पश्चिममां. पछी जेम जेम चाले तेम तेम पोताना घेरथी छेटुं पडतुं जाय. पछी पोता जेवा ज अजाण्या होय तेने मार्ग पूछे तो ते बराबर बतावी शके नहीं. माटे जीवे त्यां सुधी पंथ कर्या करे अने परदेशमां भटक्या करे. पण पोताने घेर पहोंचे नहीं अने आथडी आथडीने वचमां तेना प्राण जाय. तेम प्रत्यक्ष परमात्माना आश्रयनो त्याग करीने पोताने जाणे शास्त्रने भणी, सांभळी, वांचीने मोक्षने मार्गे चालवा जाय छे तो तेनो मोक्ष कोई काळे थतो नथी. अने ते तो नरक चोरासीमां भटक्या करे छे. अने जे प्रत्यक्ष भगवाननो आश्रय करीने मोक्षने मार्गे चाले छे ते तो वगर दाखडे मोक्षने पामे छे अने तेने तो आलोकमां कोई विघ्न लागतुं नथी अने ते निर्भय थको परमपदने पामे छे.

हवे ते प्रत्यक्ष भगवान केवी रीते जीवने अक्षरमां लई जाय छे? तो जेवी रीते जगतनी उत्पत्ति थई तेवी रीते ते पाछो ज्ञाने करीने प्रलय करावे छे. जे प्रथम पृथ्वीनुं जीवने ज्ञान करावे छे, जे घटपटादिक आकार मात्र ते सर्वे पृथ्वी थकी थया छे. माटे ते आकारमात्र पाछा

पृथ्वीमां लय पामशे अने पृथ्वी गंध विषयमांथी थई छे माटे ते पृथ्वी गंधमां लय पामशे अने ए गंध छे ते परमाणुंरूप थईने जळने विषे लय पामे छे. अने जळ छे ते रसने विषे लय पामशे अने रसविषयरूप जळना परमाणुं थईने अग्निने विषे लय पामशे अने रूप विषयरूप अग्निना परमाणुं थईने वायुने विषे लय पामशे अने वायु छे ते स्पर्शने विषे लय पामशे अने स्पर्श विषय छे तेना परमाणुं थईने आकाशने विषे लय पामशे अने आकाश छे ते अहंकारमां लय पामशे अने अहंकार छे ते चित्तमां लय पामशे अने चित्त छे ते महत्तत्त्वमां लय पामशे. अने महत्तत्त्व छे ते मनमां लय पामशे अने मन छे ते प्रधानपुरुषमां लय पामशे अने प्रधानपुरुष छे ते बुद्धिने विषे लय पामशे अने बुद्धि छे ते मूळप्रकृतिपुरुषने विषे लय पामशे अने प्रकृतिपुरुष छे ते शुद्ध चैतन्य आत्माने विषे लय पामशे अने शुद्ध चैतन्य आत्मा छे ते अक्षरने विषे प्रवेश करशे कहेतां मायाना भावथी रहित थईने शुद्ध चैतन्य आत्मा थयो ते आत्मा अक्षरब्रह्म जे पोतानुं मूळ घर तेने पामे छे अने ए अक्षरब्रह्मना आधार अने प्रकाशक एवा जे परब्रह्म परमात्मा तेने पोताना ब्रह्मस्वरूपने विषे साक्षात्कार देखे छे. अने ते जे अक्षरना आधार 'अक्षरातीत परमात्मा ते ज आ मने प्रत्यक्ष मळ्या छे अने तेणे ज मने मारुं मूळ घर जे अक्षरब्रह्म तेनुं ज्ञान करावीने अक्षरने पमाड्यो.' एवी रीते तेने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपनो उत्तम निर्विकल्प निश्चय थाय छे.

—अने ते आत्मा अक्षर ब्रह्मरूप थईने प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे माहात्म्य ज्ञाने सहित जोडाई जाय छे. अने ते प्रत्यक्ष परमात्मा भगवाननी मूर्तिने विषे जोडावे करीने ते आत्मानी ब्रह्ममय दिव्य एवी भागवतीतनु बंधाय छे. अने ते आत्मा आलोकमां होय त्यां सुधी

तेनो देह उपरथी जोयामां तो मायिक अने पंचभूतनो देखाय तो पण मांहे तो ते आत्मा ब्रह्मनी ज मूर्ति छे. जेम कचरानुं वीवुं करीने धातुनो रस रेडे छे एटले धातुनी मूर्ति बंधाय छे. पण ज्यां सुधी कचराना वीवांने भागी नाख्युं नथी त्यां सुधी धातुनी मूर्ति देखाती नथी. तेम कचराना वीवारूप जे पंचभूतनो देह तेमां आत्मा परमात्माना ज्ञानरूपी धातुनो रस ते रस इन्द्रियो अंतःकरणरूप द्वारे करीने जेना आत्मामां उतर्यो तेनी ब्रह्ममय दिव्य एवी भागवतीतनुं बंधाय छे. पण ज्यां सुधी पंचभूतनो देह नाश नथी पाम्यो त्यां सुधी उपरथी बहारदृष्टिवाळाने ब्रह्ममय दिव्य मूर्ति जोयामां नथी आवती. अने अंतरदृष्टिवाळा जे ज्ञानी पुरुष छे ते तो मुक्त अने साक्षात्कार ब्रह्मनी ज मूर्ति देखे छे अने ते जीवने मुक्त कहेवाय छे अने ज्यारे पंचभूतना देहनो नाश थशे त्यारे ते मुक्त विदेहीमुक्त पदवीने पामशे. अने परमात्मानी मूर्तिने विषे भक्ति जे प्रीति तेने करीने अखंड जोडाई रहे छे. अने ते मुक्त पाछो कोई काळे देह धरतो नथी अने अखंड सुखने पामे छे.

अने प्रथम 'जीवनुं मूळ घर जे अक्षर तेमांथी जीव आव्यो हतो' एम कह्युं ते तो अक्षरना कोक देशने विषे अज्ञान अवस्थामां अनादिनो हतो तेने परमात्माए ज्ञान आपीने अज्ञाननो नाश करीने आत्मानुं मूळ घर जे अक्षरब्रह्म तेना मध्यरूप जे व्यतिरेकब्रह्म अने ते व्यतिरेक ब्रह्मना प्रकाशक परमात्मा तेनो साक्षात्कार पोते परमात्माए पमाड्यो ते आत्मा पाछो फेर अक्षरमांथी आलोकमां देह धरतो नथी."

इति श्रीमुखसिद्धांत २९९ समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत ३०० विषय :–आळस अने प्रमाद क्यारे टळे?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ ना वैशाख वदि ६ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये पोताना मंदिरमां सहेजवट उपर गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. ललाटने विषे ककुंनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी मोटी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "आळस अने प्रमाद ए बे दोषे करीने जीव जन्ममरणादिक दुःखने पामे छे. ते आळस ते शुं? तो देहे करीने कांई क्रिया करवी नहीं, तेनुं नाम आळस कहेवाय. ते जे आळसु होय ते आलोकमां अने परलोकमां कोई ठेकाणे सुख पामे नहीं अने ते महा दुःखने पामे. पछी तेने कोईक एम कहे जे "तुं कांईक उद्यम कर तो तने सुख मळशे, पण उद्यम कर्या विना कांई सुख मळशे नहीं." एम कह्युं त्यारे तेणे उद्यम करवा मांडयो पण ते उद्यमने विषे पण महा दुःख थवा मांडयुं. केमके कर्म करे छे पण प्रमादरूपी दोषे करीने दुःख उपजे एवुं न करवानुं कर्म थाय छे अने सुख उपजे एवुं जे करवानुं कर्म ते थतुं नथी केमके 'करवानुं न करवुं अने न करवानुं करवुं,' ए ज प्रमादनुं रूप छे. माटे प्रमादे करीने न करवानुं कर्म करवा थकी महा दुःख थवा लाग्युं त्यारे वळी कोईके एम कह्युं जे "भाई कर्मनो त्याग करीने निवृत्ति पामशो त्यारे सुख थशे." एम सांभळीने पाछो कर्मनो त्याग करवा गयो, त्यां आळसरूपी दोष आव्यो. ते आळसमां पण महा दुःख रह्युं छे. एवी रीते जीव पोताने जाणे कर्मनो त्याग करे छे, तो पण आळसे करीने दुःख पामे छे अने कर्म करे छे

તો પ્રમાદે કરીને ન કરવાનું થાય છે તેમાંથી મહા દુઃખને પામે છે. એવી રીતે કોટિ કલ્પ થયાં જીવ જે તે જન્મ, મરણ, ગર્ભવાસ અને ચોરાસીમાં દુઃખ પામ્યા કરે છે.

હવે તે જીવ સુખને ક્યારે પામે? અને એ બે દોષ ક્યારે ટળે? તો જીવને જ્યારે માયા પર અને જેને વિષે બે દોષ કોઈ દહાડો હતા નહીં એવા જે પરમાત્મા પ્રત્યક્ષ મળે અને તેનો જીવ દૃઢ આશ્રય કરે અને તે પ્રત્યક્ષ ભગવાનની મૂર્તિની અખંડ સ્મૃતિ રાખે અને તે ભગવાન અને સંત જેવી રીતે પ્રસન્ન થાય તેવી રીતે આજ્ઞામાં વર્તે તો તે જીવને વિષેથી આળસ અને પ્રમાદરૂપી દોષ ટળી જાય છે અને બ્રહ્મરૂપ થઈને ભગવાનના અક્ષરધામને પામે છે. અને જેને પ્રગટ ભગવાન અને ભગવાનના નિર્વાસનિક પંચવિષયના ત્યાગી સંત મળે છે, તેને આળસરૂપી દોષ હતો તે મટીને તેની તે આળસ કલ્યાણકારી થાય છે. અને જે પ્રમાદરૂપી દોષે કરીને કર્મ બંધનકારી હતું તે કર્મ પ્રત્યક્ષ ભગવાન અને સંતને આશ્રયે કરીને પ્રમાદરૂપી દોષ ટળીને કલ્યાણ-કારી થાય છે માટે પ્રત્યક્ષ ભગવાન અને સંત જેને મળે અને તેનો આશ્રય કરીને પ્રત્યક્ષ ભગવાનના સ્વરૂપની અખંડ સ્મૃતિ રાખે અને તેની પ્રસન્નતા પ્રમાણે વર્તે તો તેને આળસ અને પ્રમાદરૂપી જે અનાદિના જીવના મહા દોષ તે ટળી જાય છે અને તે જીવ અક્ષરધામને પામે છે.

—અને પ્રત્યક્ષ ભગવાન મળ્યા વિના અને તેનો આશ્રય અને પ્રસન્નતા અને સ્મૃતિ વિના બીજાં કોટિ સાધન કરે તો પણ તેને આળસ અને પ્રમાદરૂપી દોષ કોઈ કાળે ટળે નહીં અને તે જીવનો મોક્ષ પણ થાય નહીં. તે સારુ જેને પોતાના આત્માના કલ્યાણને ઇચ્છવું હોય તેને તો પ્રત્યક્ષ ભગવાન અને ભગવાનના એકાંતિક નિર્વાસનિક પંચવિષયના

त्यागी संत तेना आश्रये करीने तेनी आज्ञा प्रमाणे मन, कर्म, वचने वर्तवुं अने जे भगवान अने भगवानना संतनी आज्ञा प्रमाणे वर्तशे तेना आळस अने प्रमादरूपी दोष टळी जशे अने ते ब्रह्मरूप थईने अक्षरधामने पामशे."

इति श्रीमुखसिद्धांत ३०० समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत ३०१ विषय :-जीव अने ज्योतिष.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः-संवत १९२४ ना जेठ वदि २ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये. भक्त ईश्वरदास अंबईदासने घेर पाट उपर गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर संध्या आरती समये सर्वे शणगार धारण करीने विराजमान थया हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज कृपा करीने बोल्या जे "सर्वे जीवना शरीर उपर त्रण आकर्षण छे. जेम सर्वे खेडुना खेतर खेतर प्रत्ये त्रणना हुकम छे, एक खेडु खेतरनो धणी कहेवाय छे अने बीजो राजाए जेने परगणुं सोप्युं होय एवो जे महेत्तो तेनो पण ते खेतर उपर हुकम छे अने त्रीजो सर्वे खेतर उपर राजानो हुकम छे. तेम देह देह प्रत्ये एक एक जीवनुं आकर्षण छे ते देहने जीव साचवे छे अने रक्षण करे छे. जेम खेडु खेतरने साचवे छे अने रक्षण करे छे त्यारे तेमां निपज आवे छे पण खेडु रक्षण न करे तो खेतरमां निपज आवे नहीं अने खेडु दुःखने पामे. तेम जीव देहने साचवे नहीं अने शुभ मार्गे चलावे नहीं तो ते जीव महा दुःखने पामे. माटे एक तो देह उपर जीवनुं आकर्षण छे तेने करीने

देहनो वंदोवस्त रहे छे. अने जीव देहमांथी नीसरी जाय अने देह पांच दस दिवस पड्यो रहे तो देह सडीने सांधे सांधेथी नोखो थईने विखराई जाय. माटे एक जीवनुं धणीपणुं देह उपर छे.

अने वीजुं जे पृथ्वी उपर आपणे रहीए छीए तेने धारणनो करनारो एक जीव छे. ते जीवनुं पण पृथ्वी उपरना प्राणीमात्र उपर आकर्षण छे. अने आ पृथ्वीमां जीव छे तेने करीने ज आ पृथ्वीनी मजबूताई रहे छे अने जीव पृथ्वीमां न होय तो पृथ्वी सींखल विखल थईने परमाणुंरूप थई जाय. माटे पृथ्वीमां जीव छे ते जीवनुं सर्वे जीवना देह उपर आकर्षण छे अने तेमज पांचे भूतने विषे एकेको जीव छे. तेनुं पण सर्वे जीवना देह उपर आकर्षण छे अने तेमज आ तारामंडळ देखाय छे तेमां सर्वेने विषे एकेको जीव छे. ते तारामंडळना जीवोनुं पण आ पृथ्वीना जीवोना सर्वे देह उपर आकर्षण छे.

—*अने त्रीजुं अनंतकोटि ब्रह्मांडनो आधार एवो जे ईश्वर तेनुं* पण सर्वे जीवना देह उपर आकर्षण छे. ते ईश्वर सर्वे जीवना शुभ अशुभ सर्व कर्मने जाणे छे अने ते कर्म प्रमाणे सुखदुःखरूप फळ ते जीवोने नवग्रहादिकद्वाराए आपे छे. ते शुभ कर्मनुं फळ शुभग्रहादिके करीने सुख आपे छे अने अशुभ कर्मनुं फळ अशुभग्रहादिके करीने दुःख आपे छे. माटे वेदनुं छठुं अंग जे ज्योतिष तेमां जे जे ग्रहादिके करीने सुखदुःख कह्युं छे ते प्रमाणे जीवने थाय छे ते सत्य छे. ते जीव देहे करीने वेदमां कह्या प्रमाणे शुभ कर्म करे छे, तेने ईश्वर शुभ ग्रहादिके करीने सुख पमाडे छे. अने जे जीव वेदना धर्मनो त्याग करीने अशुभ कर्म करे छे तेने अशुभ ग्रहादिके करीने ईश्वर दुःखरूप फळ पमाडे छे.

जेम राजा छे ते जे पोताना कायदा प्रमाणे वर्ते छे तेने राजा

पोताना चाकर जे महेता, कारभारी, सिपाई ते पासे ते लोकोने सुखिया राखवाने अर्थे तेनी रक्षा करावे छे. अने जे लोको राजानो कायदो लोपीने जुलम करे छे तेने महेता, कारभारी पासे शिक्षा अपावे छे अने ते कायदानो लोपनारो दुःखने पामे छे. अने कायदा प्रमाणे वर्तनारा सुखने पामे छे. तेम ईश्वरनो कायदो जे वेद तेमां कह्यां प्रमाणे जे शुभ कर्म करे छे तेने ईश्वर पोताना चाकर जे काळ, माया अने ग्रहादिक पासे सुख अपावे छे अने जे वेदरूप ईश्वरनो कायदो लोपीने अशुभ कर्म करे छे तेने ईश्वर पोताना चाकर जे काळ, मायादिक ते पासे दुःख पमाडे छे अने जीवना शुभ-अशुभ सर्व कर्मने ईश्वर जाणे छे अने तेना कर्म प्रमाणे तेनां फळ जरूर पमाडे छे. माटे आ वार्ताने जे जाणे छे ते अशुभ कर्मनो त्याग करीने शुभ कर्म ज करे छे अने ते जीव आलोक-परलोकमां सुख ज पामे छे. अने जे आ वातने नथी जाणता तथा तेने जे खोटुं माने छे ते अशुभ कर्म करे छे अने ते आलोक-परलोकमां दुःख ज पामे छे. अने तेनुं कल्याण कोई काळे थतुं नथी.

—अने जे ईश्वरने अंतरयामी जाणे छे अने वेदमां जे जे कह्युं छे तेने सत्य माने छे ते तरत अशुभ कर्मनो त्याग करीने शुभ कर्म करे छे अने ते जीवनुं कल्याण थाय छे. माटे जेने सुखिया थवुं होय तेणे ईश्वरने अंतरयामी जाणीने वेदमां जे जे शुभ कर्म करवानुं कह्युं होय ते सर्वेने करवुं अने तेमां ईश्वरनुं स्मरण करवुं. ते ईश्वर परमात्मा छे अने ते ज परमात्मा जीवोना कल्याणने अर्थे रामकृष्णादिक अवतारनुं धारण करे छे अने तेनो आश्रय करीने आज्ञामां रहीने भजन करे छे तेनुं कल्याण थाय छे, माटे आ वार्ता सर्वेने जरूर समजवानी छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत ३०१ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत ३०२ विषयः–परोपकार माटे ज गृहस्थनो धर्म बांध्यो छे.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ ना जेठ वदि ४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गामथी सोजीत्रा मध्ये पोताना मंदिरने विषे रवेशमां पाट उपर गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर संध्या आरती समये सर्वे शणगार धारण करीने विराजमान थया हता. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज कृपा करीने बोल्या जे "वेदने विषे चार वर्ण अने चार आश्रम कह्या छे ते चार आश्रम कया? तो (१) ब्रह्मचारी (२) गृहस्थ (३) वानप्रस्थ अने (४) संन्यासी. तेमां ब्रह्मचारीनो तो धर्म ए छे जे स्त्री आदिक पांचे विषयनो त्याग करीने आत्मरूप पोताने मानीने परमात्माने पामवाने अर्थे वेदाभ्यासने करतो थको परमात्मानी नवधा भक्ति करे अने परमात्माना स्वरूपने साक्षात्कार पमाडे एवा जे सत्पुरुष तेनी सेवा करे अने गृहस्थनो धर्म ए छे जे पोताने सांख्यविचारे करीने देहथी नोखो आत्मा मानीने परमात्मानी भक्ति अने उपासनाने करतो थको पर उपकारने माटे गृहस्थाश्रम राखे अने साधु संत कोई महात्मा पोताना गुरु तेनी सेवामां पोतानुं तन, मन, धन, स्त्री छोकरां सर्वने जोडी देवा अने कोई गरीब अथवा असमर्थ होय पण तेने कोईक देशकाळे करीने दुःख आवी पडे तो तेना दुःखने पोताना सामर्थ्य प्रमाणे टाळवानो उपाय करवो. एवी रीते जीव प्राणी मात्र उपर दया राखीने पर उपकार पण करवो. अने वानप्रस्थनो ए धर्म छे जे पोते गृहस्थाश्रमनो त्याग करीने पंचविषयनी वासना मूकीने ब्रह्मरूप थईने परब्रह्म प्रत्यक्ष परमात्मानुं ध्यान, भजन अने सेवा करवां. अने संन्यासीनो ए धर्म छे जे अक्षरब्रह्म साथे पोताना आत्माने

एक करीने ते ब्रह्म तो जेना अंगनो प्रकाश छे एवा जे परब्रह्म परमात्मा तेने विषे अद्वैतपणें जोडाई जाय. एवी रीते चारे आश्रमनो धर्म छे.

तेमां हवे गृहस्थाश्रमीनो धर्म विस्तार करीने यथार्थ कहुं छुं जे गृहस्थनो धर्म केवळ परोपकार माटे परमेश्वरे स्थापन कर्यो छे. केमके बीजा सर्वने देह निर्वाह करवाने अर्थे अन्न वस्त्रादिक जोईए ते गृहस्थाश्रमी द्वाराए परमेश्वर उपजावे छे तथा तेने घर बंधावी आप्यां छे तथा पैसा राखवानी तेने आज्ञा आपी छे. माटे तेने अन्न, धन, वस्त्र, घर, शरीर आदिक सर्वे पदार्थे करीने परोपकार करवो एज गृहस्थनो धर्म छे अने जे परोपकार करे छे तेने कोई दुःख आवतुं नथी अने तेने कदापी पूर्वना कर्मे करीने दुःख आवी पडे तो ते दुःखने टाळवाने अर्थे बीजा अनंत लोको सहाय करवाने लागे छे अने तेनुं दुःख तत्काळ टळी जाय छे. ते पोते मोटो गृहस्थ होय अने तेणे कोई गरीब उपर उपकार कर्यो होय तो ते गरीब पण कोईक वखते मोटाने दुःख आवे तो तेने ते गरीब पण सहाय करीने दुःख थकी मुकावी शके छे. ते उपर एक दृष्टांत छे जे–

एक कीडी पाणीमां तणाई जती हती तेने होले दीठी त्यारे ते होलाने दया आवी के 'ते कीडीने बहार काढवानो माराथी बनी शके तेटलो उपाय करुं.' एम जाणीने ते होलाए एक खडसलानी सळी चांचवते लावीने ते कीडीनी आगळ पाणीमां नाखीने ते सळीनो एक छेडो पाणीने कांठे पोताना पगवते दाबी राख्यो. पछी ते कीडी सळी उपर चढीने बहार नीसरी अने कीडीए विचार कर्यो जे 'मारुं तो मृत्यु आव्युं हतुं, पण आ होले मने जीवती राखी. पण ते होलाना उपकारने पाछो माराथी वळे तो ठीक.' पछी ते होलो एक दिवसने समये वृक्ष उपर बेठो हतो. तेने मारवाने अर्थे पारधीए बंदूक भरीने हैये चढावी त्यारे

तेने कीडीए दीठो. पछी ते कीडीए होलाने उगारवाने अर्थे ते पारधीनी पगनी घुटीमां चटको भर्यो. ते चटके करीने तेनी नजर चूकी गई अने बंदूक वछूटी तेने भडाके करीने होलो ऊडी गयो. एवी रीते होलो घणो मोटो अने कीडी घणी नानी, पण ते कीडीने होले उपकार कर्यो हतो तो ते कीडीए होलाने पण उपकार कर्यो अने मरण थकी उगार्यो.

—तेम मोटो गृहस्थ होय अने ते गरीबने उपकार करे तो ते गरीब पण कोईक वखते मोटाने दुःख आवी पडे तो ते दुःख थकी मुकावी शके. माटे नाना मोटा सर्व गृहस्थोने पर उपकार करवो. अने जे पर उपकार करे छे तेना सर्वे प्राणीओ हेतु थाय छे. अने ते सर्वे आशीर्वाद आपे छे 'जे तेनुं सारु थजो, सारु थजो.' एम कहे छे. अने एवा परोपकारी छे तेना उपर परमात्मानी कृपा पण थाय छे अने तेनुं कल्याण थाय छे.

—अने जे उपकार पर गृहस्थ नथी करतो अने पोताना सर्वे पदार्थनो पोते एकलो ज भोक्ता थाय छे अने पोतानां स्त्री छोकरांने भोगवावीने ज राजी थाय छे तेने तो महा पापी जाणवो. अने ते तो दुष्ट छे अने गृहस्थना धर्म थकी तेने भ्रष्ट थयो जाणवो. अने जे देहाभिमानी होय ते परोपकार करतो नथी अने जे देहने पोतानुं स्वरूप मानीने पोतानां पदार्थ पोते एकलो भोगवे छे अने तेमांथी परोपकार माटे कोईने नथी आपतो तेने आ जगतने विषे जेटलुं पाप थाय छे ते सर्वे पाप तेने लागे छे. अने ते मरीने घोर नरकमां पडे छे. अने नरकना जीव पण तेनो तिरस्कार करे छे के 'हे दुष्ट! तुं अमारा भेगो क्यांथी आव्यो. केमके तें परोपकार कर्यो नथी, माटे तने ईश्वर नरकमांथी कोई काळे काढशे नहीं ते तारे पापे करीने तारा भेगुं अमारे पण घणाक काळ नरकमां रहेवुं पडशे.' केमके पापीना संगनुं पण पाप लागे छे. माटे ते नरकना जीव पण जेणे परोपकार कर्यो नथी तेनो तिरस्कार

करे छे. अने श्राप आपे छे. माटे जे गृहस्थाश्रम बांधीने बेठो ते कांई पण परोपकार नथी करतो ते जेवो तो कोई पापी नथी.

अने जे गृहस्थ परोपकार करे छे अने पोताना देह अने देहना सगां-संबंधीने विषे जेवी दया अने स्नेह छे तेवो बीजा सर्व प्राणीने विषे दया अने स्नेह राखीने जेवुं देह अने देहना संबंधीने जेम सुख थाय तेम करे तेम सर्व प्राणी मात्रने पोताना सामर्थ्य प्रमाणे सुख थाय एम परोपकार करे छे ते गृहस्थने धन्य छे अने तेने आ जगतने विषे जेटलुं पुण्य थाय छे तेटलुं पुण्य परोपकारीने थाय छे अने जे परोपकारी होय तेनुं ज कल्याण थाय छे.

माटे जेने पोताना आत्माने परम सुख पमाडवुं होय तेने पोताना धर्ममां रहीने परमात्मानी भक्तिए सहित परोपकार करवो कहेतां एम समजवुं जे 'मारा इष्टदेव अने जगतना कर्ता एवा जे परमात्मा भगवान ते सर्व प्राणी मात्रना आत्माने विषे अंतरयामीपणें रह्या छे माटे सर्व प्राणीने परोपकारे करीने परमात्मानी सेवा थाय छे अने जे कोई प्राणीने माराथी दुःख थशे तो तेमां रह्या जे परमात्मा ते दुभाशे' एम जाणीने परोपकार जे करे छे पण पोताना स्वार्थने माटे कोई जीवने दुभावतो नथी ते ज गृहस्थाश्रमी खरो छे, ते ज अमारो भक्त छे अने तेनुं ज कल्याण आने आ देहे करीने थशे. अने जे परोपकार नथी करतो अने पोताना सर्व पदार्थने पोते एकलो ज भोगवे छे अने पोताना संबंधीने भोगवावे छे अने पदार्थ होय तेने संघरी राखे छे अने वळी बीजां पदार्थ भेगां करवाने अर्थे बीजां प्राणीओने दुःख दे छे ते गृहस्थनुं तो कोई काळे कल्याण नहीं थाय अने ते तो गृहस्थ मोटो गधेडो छे अने जे परोपकार करे छे ते गृहस्थने धन्य छे. माटे गृहस्थाश्रम परोपकारने माटे परमेश्वरे बांध्यो छे, तेथी परोपकार करवो ए ज गृहस्थनो धर्म छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत ३०२ समास।

श्रीमुखसिद्धांत ३०३ विषयः-धर्म अने गृहस्थ

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ ना जेठ वदि ६ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये पोताना मंदिरमां उतरादा वारनी मेडीयोनी रवेशमां सहेजवट उपर गादीतकिये युक्त पलंग बिछांव्यो हतो अने ते उपर विराजमान थया हता. श्वेत सुरवाल अने फुलछाटमनी डगली पहेर्या हता अने गुढो रेटो पहेरीने ते उपर कसुंवल शेलुं धारण कर्युं हतुं अने एक शेलुं खभे नाख्युं हतुं. कसुंवल सोनेरी पाघ मस्तके धारण करी हती अने ककुंनो चांदलो कर्यो हतो. अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "जेने सदाय सुखिया रहेवुं होय अने कोई दिवस दुःख देखवुं न होय ते आ वात कहीशुं ते प्रमाणे समजीने वर्ते तो सदाय सुखी रहे अने तेने कोई दिवस दुःख आवे ज नहीं. ते वात कहीए ते सांभळो जे परमेश्वरे जगतनी उत्पत्ति करीने जगतना सर्वे मनुष्योने सुख आपवाने अर्थे परमेश्वरे पोताना धर्मरूपी दूत मोकल्यो छे, ते धर्मने जे राखे छे ते सदाय सुखने पामे छे. अने जे धर्मने नथी राखतो ते दुःखने पामे छे.

ते धर्म बे प्रकारनो छे; एक वर्णाश्रमनो धर्म छे अने एक एकांतिक धर्म छे. ते वर्णाश्रमने धर्में करीने पापनो क्षय थाय छे अने एकांतिक धर्में करीने भगवानना अक्षरधामने पमाय छे. ते जे प्रथम वर्णाश्रमनो धर्म पाळीने निष्पापी थाय छे त्यार पछी ते एकांतिक धर्मने पामे छे. अने एकांतिक धर्मने पामीने भगवाननो एकांतिक भक्त थईने अक्षरधामने पामे छे. माटे आत्माना मोक्षने अर्थे सर्वे मनुष्यमात्रने वर्णाश्रमनो धर्म जरूर पाळवो. अने जे धर्म पाळे छे तेने आलोकमां कोई

दहाडे दुःख आवतुं नथी अने परलोकमां पण महा सुखने पामे छे. अने जे धर्मने नथी जाणता अने धर्मनो त्याग करे छे तेने आलोकमां जरूर दुःख आवे छे अने परलोकमां नरकमां पडे छे.

हवे धर्म शुं छे ? तो चार वर्ण अने चार आश्रमना नोखा-नोखा धर्म छे. तेमां गृहस्थाश्रमीनो धर्म कहीए छीए जे गृहस्थने परमेश्वरे एम आज्ञा करी छे जे तेने जे जे हक महेनत करीने जे जे अन्न, धनादिक पदार्थ कमावुं तेमांथी दशमो भाग चोख्खो काढीने भगवानने अर्पण करवो अने बाकी नव भाग रह्या तेने पोताना देह निर्वाहमां वापरवा अने तेमां जो कोई वधारे पदार्थ रहे तो तेनो परोपकार करवो. एवी रीते धर्मनो भाग काढीने जे भगवानने अर्पण करे छे तेने कोई दहाडे वहेवारमां दुःख आवतुं नथी अने तेने सुखेथी वहेवार चाले छे. अने एवी रीते धर्मनो भाग जे काढे छे ते कोई दिवस अनीति अधर्म करे ज नहीं अने परमेश्वर तेना उद्यममां रस मूके छे, कहेतां ते धर्मना भागने काढनारो थोडो उद्यम करे तेमां तेने घणी उपज आवे छे. अने तेना पाप सर्वे नाश पामी जाय छे अने तेना उपर परमेश्वरनी कृपा थाय छे.

–अने जे पोताना उद्यम थकी प्राप्त थया जे अन्न, धनादिक पदार्थ तेमांथी दशमो भाग भगवानने अर्पण नथी करतो अने ते धर्म-भागनो धणी पोते थाय छे ते तो महा पापी छे अने ते तो आलोकमां जरुर दुःख पामे छे. अने जे पोते जाणीने धर्म-भाग काढीने भगवानने अर्पण नथी करतो तेने परमेश्वर राजा द्वाराए लेवरावे छे, पण परमेश्वर पोतानो भाग मूकता नथी पण जे पोते जाणे भगवानने धर्म-भाग अर्पण करे छे ते निष्पापी थईने मोक्षने पामे छे. अने जे धर्म-भाग पोते जाणीने अर्पण नथी करतो ते पुरुष पापने पामतो थको राजा, चोर अने अग्नि द्वाराए दंडाईने नरकमां जाय छे.

माटे आ समे लोकोए धर्म-भाग काढीने भगवानने अर्पण करवो बंध कर्यो छे ते सारु ईश्वरे राजामां प्रवेश करीने लोकोने दंडवा मांड्या छे. माटे आ खंडेरावने ईश्वरे ज प्रेरणा करी छे जे 'कोई लोको धर्म-भाग अर्पण करवामां तो समजता ज नथी माटे राजाए सर्वस्व लेवा माड्युं छे ते माटे कोईना घरमां धातुपात्र रहेवा देवुं नथी; एवुं ब्राह्मण, भाट आदिक सर्वेनुं लई लेवुं, केमके सर्वे लोको धर्म-भागना धणी थईने पोते ज भोगवता थया छे.' माटे राजाने ईश्वरे ज एवी प्रेरणा करी छे. अने जो सर्वे लोको धर्म-भाग काढीने भगवानने अर्पण करवा लागे तो हमणां राजानी बुद्धि सारी थाय अने सर्वे लोकोने सुख थाय तेम करवा लागे. एवी रीते ईश्वर राजामां प्रेरणा करे छे.

पण आ समे लोकोनी बुद्धि धर्म उपरथी उठी गई छे माटे एवुं थवुं महा कठण छे. अने धर्म उपर क्यारे लोकोने आस्था आवशे? तो ज्यारे कोईना घरमां अन्न खावा रहेशे नहीं अने महा पीडाने पामशे त्यारे ईश्वरने पोकारवा लागशे. अने कोई धर्मगुरु हशे तेने एम कहेशे जे 'हे महाराज! अमारुं दुःख मटे तो तमे जेम कहो तेम करीए.' त्यारे ते धर्मगुरु तेने धर्म-भाग गुरुने अर्पण करवानुं कहेशे एटले राजी थईने अर्पण करवा लागशे.

—पण सारी स्थिति होय अने घरमां अन्न खावा मळतुं होय त्यां सुधी कोईनो उपदेश मनाय नहीं. जेम कोईक धनवान गृहस्थ होय तेना शरीरने कोई कठण ग्रह आवनारो होय अने ते शरीरे साजो निरोगी होय तेवा समामां कोई ब्राह्मण तेने एम कहे जे 'तारे घातचंद्र आवनारो छे ते तने पीडा जरूर करे एम छे. माटे तेना निवारणने अर्थे शिव, विष्णु, सूर्य, गणपति आदिक देवना मंत्र जपाव अने दश वीस ब्राह्मण साधु जमाड अने दश वीस रूपियानुं दान-पुन्य कर तो तने घात-चंद्र

नडशे नहीं.' एम ब्राह्मण ते गृहस्थने तेना हित सारु कहे पण ते शरीरे साजो होय त्यां सुधी तेने मनाय नहीं. अने ते सामो ब्राह्मणने एम कहे जे 'तारे जमवुं हशे अने मारी पासेथी पैसा धूती जवा जशे पण हुं धुतावुं एवो नथी.' एम शरीरे साजो होय त्यां सुधी ते ब्राह्मणनो उपदेश हितकारी छे पण मनाय नहीं. पण ते पुरुष मांदो थाय अने शरीरमां पीडा बहु थवा लागे अने मरणतोल थई जाय त्यारे ते ब्राह्मणने तेडावीने एम कहे जे 'हुं आ मंदवाडमांथी जीवतो रहुं अने साजो थउं तो तुं जेम कहे तेम करुं.' एवी रीते दुःखनी वखते ते ब्राह्मण जेम कहे तेम करे, पण सारी स्थितिमां दान-पुन्य कराय नहीं. अने जे सारी स्थितिमां दान-पुन्य करे छे तेने दुःख आवनारुं होय ते मटी जाय छे, पण सारी स्थितिमां कोईक ज दान-पुन्य करी शके छे अने दुःख आवी पडे त्यारे तो सर्वे दान, पुन्य, जप करवा लागे छे.

तेम लोक सारी स्थिति अने संपत्तिवान होय तेने धर्मगुरु धर्मभाग काढीने भगवानने अर्पण करवानो उपदेश आपे ते घणा लोकोने मनाय नहीं. माटे ते अंते जरूर दुःख पामवाना छे. अने ज्यारे दुःख पामशे त्यारे धर्मगुरुनो उपदेश मनाशे पण आज मनाय एवुं जणातुं नथी. माटे ईश्वरे राजामां प्रवेश करीने अनेक प्रकारना कायदा करीने लोको पासेथी पैसा लेवा मांड्या छे. ते पैसा घरमांथी जशे तो पण भगवानना तो चोर रहेशे अने ते पापे करीने नरकमां पडवानुं थशे.

माटे जे समजु होय अने जेने आलोक-परलोकमां सुखिया थवुं होय तेने पोतपोताना वर्णाश्रमना धर्ममां रहीने गृहस्थ होय तेने पोतपोताना उद्यम थकी पोताने प्राप्त थयां जे अन्न, धनादिक पदार्थ तेमांथी वेदमां कह्या प्रमाणे दशमो भाग काढीने भगवानने अर्पण करवो, कहेतां पोताना जे जे देव शिव, विष्णु आदिक प्रिय होय अथवा पोताना गुरु

होय तेना मंदिरमां अर्पण करवो. अने जे एवी रीते श्रद्धाए सहित धर्म-भाग भगवानने अर्पण करशे ते आलोकमां कोई दहाडे दुःख पामशे नहीं अने परलोकमां पण तेनुं जरुर कल्याण थशे."

इति श्रीमुखसिद्धांत ३०३ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत ३०४ विषयः—षट् कर्मनो त्याग अने वर्णनी उत्पत्ति.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ ना जेठ वदि ८ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री सोजीत्रा मध्ये पोताना मंदिरमां सहेजवट पर गादीतकिये युक्त पलंग विछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने ललाटने विषे ककुंनो चांदलो कर्यो हतो. सर्वे अंगने विषे पुष्पनां आभूषण शोभी रह्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "परमेश्वरे प्रथम सृष्टि करी त्यारे सर्वे ब्राह्मण हता अने तेने षट्कर्म करवानी आज्ञा परमेश्वरे करी हती. ते षट्कर्ममां सर्वे बराबर ज्यांसुधी रह्यां त्यांसुधी सर्वे ब्राह्मण कहेवाता हता अने सर्वे एक पंक्तिमां बेसीने खाता हता. पछी ते षट्कर्ममांथी केटलाक ओछा कर्म करवा लाग्या त्यारे ते क्षत्रिय कहेवाणा. तेथी ओछां कर्म कर्यां त्यारे ते वैश्य कहेवाणा अने तेथी ओछां कर्म कर्यां त्यारे ते शुद्र कहेवाणा अने तेथी ओछां कर्म कर्यां त्यारे ते असत्शुद्र कहेवाणा अने मुद्दल कर्म करवानो त्याग कर्यो त्यारे ते ढेड तथा ओळगाणां तथा म्लेच्छादिक भावने पामी गया. माटे षट्कर्म करवे करीने जीव उंची पदवीने पामे छे. अने षट्कर्मनो जेम जेम त्याग

करे छे तेम तेम नीची नीची गतिने पामतो जाय छे. ते सर्वे मनुष्य मात्रने पट्कर्म करवानी आज्ञा वेद्ने विषे कही छे अने जे मनुष्य छ कर्म बराबर विधि सहित करे छे ते खरो ब्राह्मण कहेवाय छे, कहेतां ते परमात्माने जाणनारो थाय छे. परंतु निष्काम कर्म करीने अंतःकरणने शुद्ध नथी करता तेने भगवान ओळखाता नथी. माटे जेने सुखिया थवुं होय अने जन्ममरणना दुःख थकी मुकाववुं होय तेने सौ सौना धर्म प्रमाणे जरूर वर्तवुं."

इति श्रीमुखसिद्धांत ३०४ समाप्त ।

श्रीमुखसिद्धांत ३०५ विषय :–क्षर, अक्षर अने अक्षरातीतनां रूप.
सर्वं खल्विदं ब्रह्म क्यारे ?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ ना अषाड वदि ४ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम जी धोळका मध्ये सोनी गिरधर रणछोड तथा नरसिंह रणछोडने घेर उत्तरादे बार मेडीनी ओशरीमां गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. ककुंनो चांदलो ललाटने विषे कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया पछी महाराज बोल्या जे "वेदने विषे कह्युं छे के 'ऋते ज्ञानान्न मुक्तिः'। ए श्रुतिमां एम कह्युं छे जे ज्ञान विना मुक्ति थाय नहीं. ते ज्ञान शुं? तो क्षर, अक्षर अने अक्षरातीत ए त्रण पदने जाणवां, तेनुं नाम ज्ञान कहेवाय छे. हवे त्रणने जाणवाने अर्थे तेनां रूप कहीए छीए जे क्षर ते शुं? तो स्थूळ, सूक्ष्म, कारण अने महाकारण ए चार देह अने जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति अने तुर्या ए चार

अवस्था, ए जीवना चार देह अने चार अवस्था कहेवाय छे. अने विराट, सूत्रात्मा अने अव्याकृत, ए त्रणनो अभिमाननो धारण करनार ईश्वरनो आत्मा महत् उपाधीये युक्त ए ईश्वरना चार देह अने उत्पत्ति, स्थिति, प्रलय अने महाप्रलय, ए चार ईश्वरनी अवस्था कहेवाय छे. ते जीवना देहने पिंड कहे छे अने ईश्वरना देहने ब्रह्मांड कहे छे. ए पिंड अने ब्रह्मांड तेनुं नाम क्षर कहेवाय छे, कहेतां मिथ्या नाशवंत छे.

—अने ए चार देह अने चार अवस्था तेने ज्ञान प्रलये करीने पोते शुद्ध, चैतन्य, निराकार, व्यापक आत्मरूप थईने ते आत्माना प्रकाशक एवा जे परमात्मा 'तेना अंगनो प्रकाश हुं छुं; कहेतां अज्ञानरूप अंधकारे युक्त हतो तेने जेणे ज्ञान आपीने ब्रह्मरूप कर्यो एवा परब्रह्म परमात्मा तेनो दास छुं. एम जाणीने ते परमात्माने विषे ध्याने करीने जोडाय छे अने परमात्मा विना तेनी दृष्टिमां बीजुं कांई देखातुं नथी; एक परमात्मानी मूर्तिने अखंड देख्या करे छे एवो जे ब्रह्मरूप मुक्त तेनुं नाम अक्षर कहेवाय छे.

अने हवे अक्षरातीत ते शुं? तो कर्तुमकर्तुम् अने अन्यथा कर्तुम् समर्थ एवा जे अक्षरना आधार अने अक्षरथी पर, ईश्वरना आधार अने ईश्वरथी पर, जीवना आधार अने जीवथी पर, मायाना आधार अने मायाथी पर सर्वना आधार अने सर्वथी पर एवा अने पोते सर्वाधार कहेतां पोताने कोईनो आधार नथी अने पोते पोताने ज आधारे रह्या छे एवा जे प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवान ते अक्षरातीत छे.

एवी रीते क्षर, अक्षर अने अक्षरातीतनां रूप जाणीने क्षरनो त्याग करीने अक्षररूप पोताने जाणीने अक्षरातीत एवा जे प्रत्यक्ष परमात्मा तेनो आश्रय करीने ते भगवाननी आज्ञामां दृढपणें रहीने तेने विषे प्रीतिए सहित भक्ति करे छे ते जीवनी मुक्ति थाय छे."

पछी ते सभामां एक शुष्क वेदांति ब्राह्मण बेठो हतो तेणे महाराजने प्रश्न पूछयो जे "हे महाराज! तमे तो एम कहो छे जे जीव नोखो छे, ईश्वर नोखो छे, माया नोखी छे, ब्रह्म नोखुं छे अने परब्रह्म नोखा छे, एवी रीते पांच भेद कहो छो अने वेद तथा वेदान्तमां तो एम कह्युं छे जे 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' ॥ ए श्रुतिमां एम कह्युं छे जे "सर्वे ब्रह्म छे." वळी कह्युं के 'ॐ सोऽहं तत्त्वमसि'। एमां पण एम कह्युं छे जे ज्ञानने आपनारो जे गुरु तेणे शिष्यने कह्युं के 'ॐ जे ब्रह्म ते सोऽहं कहेतां हुं ब्रह्म छुं' अने शिष्यने कह्युं 'तुं पण ते ब्रह्म छे.' एम कह्युं छे तेनुं केम समजवुं ?"

त्यारे महाराज बोल्या जे "वेदान्त बे प्रकारनुं छे एक निर्बीज वेदान्त छे अने बीजुं सबीज वेदान्त छे. तेमां निर्बीज वेदान्त छे ते तो वेदना छ अंग छे तेमांथी छठ्ठुं अंग वेदान्त छे ते छट्ठा अंगमां तो छट्ठा भागनुं ज्ञान होय. माटे ते तो पांच भागे अधूरुं ज्ञान छे. ते सारु अधूरा ज्ञानमां पूरी समजण होय नहीं. माटे जे एकला निर्बीज वेदान्तने समजीने सर्वेने ब्रह्म माने छे अने पोताने पण ब्रह्म समजीने पछी विधि निषेधने खोटा मानीने धर्म नियमनो त्याग करीने पाप पुण्यने समान मानीने निःशंकपणे वर्ते छे अने रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष परमात्मा परब्रह्म तेनी उपासना, भक्ति, सेवा नथी करतो अने ते ब्रह्मचारी कहेवातो होय, गृहस्थ होय, सन्यासी होय, परमहंस कहेवातो होय, ब्राह्मण होय, क्षत्रिय होय, वैश्य होय पण ते सर्वे महा पापी छे. अने ते एवा ज्ञानना कथनारा सर्वे नरकमां जशे.

त्यारे हवे ए श्रुतिनो अर्थ केम छे ? तो "सर्वे ब्रह्म छे; बीजुं कांई नथी." एम कोण बोल्युं छे ? तो जे प्रत्यक्ष परमात्मानो आश्रय करीने ते थकी ज्ञानने पामीने चार देहनो ज्ञान प्रलय करीने पोते ब्रह्मरूप

थईने परब्रह्मनी मूर्तिने विषे प्रीतिए करीने जोडाई गयो छे अने जेनी दृष्टिमां परमात्मा विना बीजुं कांई पिंड ब्रह्मांडादिक देखातुं नथी ते एम बोल्या छे जे 'सर्वे ब्रह्म छे; बीजुं कांई नथी.' ते एवा ज्ञानने पाम्यो तेने सर्वे ब्रह्म छे ते खरुं पण जेने एवुं ज्ञान तो थयुं नथी अने देहने पोतानुं रूप मानीने विषयने भोगवतो होय अने देहने सुखे सुख अने देहने दुःखे दुःख मानतो होय अने मोढेथी कहेवा शीख्यो होय जे "सर्वे ब्रह्म छे, माटे पाप पुण्य कोने छे ?" एम जाणीने वेदमां कह्या जे वर्णाश्रमना धर्म तेने तोडीने वर्तता होय ते तो पापी छे अने तेने असुर जाणीने कल्याणना खपवाळाने तेना संगनो त्याग करवो. माटे सर्वेमां ब्रह्म कोणे जाण्यो ? तो जेणे इन्द्रियो अंतःकरणमांथी मायिक पंचविषयनी वासनानो त्यागी करीने जेनां इन्द्रियो अंतःकरणमां प्रत्यक्ष पोताने मळ्या जे भगवान तेने धारवा कहेतां जे काने करीने जगतना शब्द प्रीतिए करीने सांभळतो हतो ते जगतना शब्द अने तेमां प्रीति तेनो त्याग करीने ते काने प्रत्यक्ष परमात्माना शब्द सांभळे छे. अने जे त्वचाए करीने मायिक जगतना स्त्री आदिकनो प्रीतिए करीने स्पर्श करतो होय ते जगतना स्त्री आदिक पदार्थना स्पर्श अने तेमां प्रीति तेनो त्याग करीने ते त्वचाए करीने प्रत्यक्ष भगवानना चरणनो स्पर्श करे छे. एवी रीते जे ठेकाणे जगत देखातुं हतुं ते जगतने ठेकाणे ब्रह्म जे परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान तेने जोया माटे तेने 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' नो अर्थ सिद्ध थयो जाणवो.

अने ते विना जे मायिक जगतना पंचविषयने प्रीतिए करीने भोगवे छे अने मोढेथी एम कहे छे जे "सर्वे ब्रह्म छे" एम कहेनाराने तो ब्रह्म बकवा थयो जाणवो अने ते तो पापी छे अने तेनो जे संग करे अने तेनी जे वात माने तेने पण महा पाप लागे छे. अने जो सर्वे

ब्रह्म होय अने बीजुं कांई न होय त्यारे शास्त्र सांभळवानुं काम शुं रह्युं? अने गुरु करवानुं पण शुं काम रह्युं? अने धर्म, नियम, जप, तप, तीर्थ, व्रत, कर्म, उपासना, ज्ञान ए सर्वे खोटुं ठरे छे. केमके सर्वे एक ब्रह्म छे, त्यारे ब्रह्मने तो कांई करवुं नथी.

माटे सर्वे ब्रह्म नथी अने ब्रह्म तो एक प्रत्यक्ष परमात्मा रामकृष्णादिक भगवानना ज अवतार ते ब्रह्म छे अने तेनो आश्रय करीने तेने विषे प्रीतिए करीने जोडाई जाय छे ते पण ब्रह्मरूप एवा प्रत्यक्ष परब्रह्मनो दास छे अने ते विना बीजा सर्वे मायाना जीव छे अने ते जन्म-मरणने पामे छे. माटे ते जीवोने ज्ञान आपीने माया पर करवाने अर्थे प्रत्यक्ष परमात्मा उपदेश निमित्ते बोल्या छे जे 'ॐ सोऽहं तत्त्वमसि ॥' तेनो अर्थः—'सर्वेथी पर अने सर्वना कारण, सर्वना आधार अने जेने वेद नेति नेति कहे छे ते हुं छुं.' एम मनुष्य स्वरूप एवा जे प्रत्यक्ष भगवान तेणे पोताने शरणे आव्यो एवो जे जीव तेने पोताना स्वरूपनुं ज्ञान आपवा सारु कह्युं त्यारे ते शरणे आव्यो जे मुमुक्षु तेणे कह्युं के "त्यारे हुं कोण छुं?" पछी ते परमात्माए कह्युं के "तुं पण तेनो दास छे." त्यारे कहे "हुं तेने क्यारे पामुं?" पछी तेणे कह्युं के "तुं मारो आश्रय राखीने मारा विना बीजे प्रीति होय तेनो त्याग करवाने अर्थे मारी आज्ञा पाळ अने हुं कहुं ते प्रमाणे ज्ञान समज एटले ते स्वरूपने हुं तने पमाडीश." एवी रीते प्रत्यक्ष भगवाननो आश्रय करीने ते थकी कर्म, उपासना अने ज्ञान सिद्ध करे छे ते जीवनुं जीवपणुं मटीने ब्रह्मरूप थईने परब्रह्मनो एकांतिक भक्त थईने मोक्षने पामे छे.

तेमां उपासना ते शुं? तो प्रत्यक्ष पोताने मळ्या जे शुद्ध ज्ञानदाता मनुष्य स्वरूप भगवान तेनो आश्रय राखवो, कहेतां ते विना बीजो कोईनो आधार नहीं, एक तेनो ज आधार राखवो; तेनुं नाम उपासना

कहेवाय. अने कर्म एटले शुं ? तो ते प्रत्यक्ष भगवाननी आज्ञा दृढ करीने पाळवी अने तेमां जराये फेर पडवा देवो नहीं, तेनुं नाम कर्मकांड कहेवाय छे. अने ज्ञान एटले शुं ? तो चार देह अने चार अवस्थानो त्याग करीने तेथी नोखो एवो जे शुद्ध, चैतन्य, आत्मा तेने पोतानुं स्वरूप जाणीने ते आत्माना प्रकाशक एवा जे परमात्मा परब्रह्म ते सर्वेना आधार छे अने तेथी पर कोई नथी, एवा जे परमात्मा ते सदाय अखंड अक्षरधाममां रह्या थका जीवोने पोतानुं स्वरूप जणाववाने अर्थे अने जीवोने ज्ञान आपीने मुक्ति आपवा सारु पोतानी स्व-इच्छाए करीने रामकृष्णादिक मनुष्यस्वरूपनुं धारण करे छे, एम जाणीने ते प्रत्यक्ष भगवानने ब्रह्मना आधार जाणवा अने ते प्रत्यक्ष मूर्तिने विषे इन्द्रियो अंतःकरण अने अनुभवे करीने जोडाई जवुं; तेनुं नाम ज्ञान छे. अने एवी रीते कर्म, उपासना अने ज्ञानने समजीने प्रत्यक्ष भगवानने विषे प्रीति करे छे तेनी आत्यंतिक मुक्ति थाय छे.

अने जे रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवानना आश्रयनो त्याग करीने एक एम कहे छे के 'हुं जीव छुं अने अज्ञानी छुं.' अने पंचविषयने विषे लोलुप वर्ततो होय एवो एक पामर जीव अने एक एकला निर्बीज वेदान्तना पुस्तकने सांभळीने तथा वांचीने तेमां कह्या प्रमाणे समजीने एम कहेतो होय जे 'स्थूळदेह हुं नहीं, सूक्ष्मदेह हुं नहीं, कारणदेह हुं नहीं, महाकारण देह हुं नहीं, तथा जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुर्या, ए चार अवस्था हुं नहीं तथा विराट, सूत्रात्मा, अव्याकृत तेनो अभिमानी ईश्वर ते हुं नहीं अने हुं तो सर्वथी पर छुं, हुं ब्रह्म छुं, हुं सच्चिदानंद छुं,' एम कहेतो होय अने एम जाणतो होय अने एम जाणीने विधि निषेधने मिथ्या जाणीने विषयने भोगवतो होय अथवा विधि निषेधने सत्य जाणीने विषयनो त्याग करीने निर्वासनिकपणे

वर्ततो होय पण 'पोताथी पर परमात्मा परब्रह्म छे अने ते परमात्मा रामकृष्णादिक अवतारनुं धारण करे छे.' एम न समजतो होय अने एम समजतो होय जे 'आत्मा ते ज परमात्मा छे,' एवो एक ज्ञानी अने एक कांई न समजतो होय एवो जे पामर जीव ए बेय सरखा छे अने ए बेय मरीने नरकमां जशे.

—केमके ब्रह्मरूप थाय पण परब्रह्म एवा जे प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिक तेनी उपासना भक्ति न करे तो तेने कांई पण सिद्धि थती नथी. अने प्रत्यक्ष भगवाननी उपासना अने भक्ति विनानो पोताने ब्रह्मरूप माननारो एवो जे ज्ञानी तेने तो अज्ञानी जीवनां करतां उलटुं वधारे बंधन थाय छे अने तेने तो परमात्मा पोताना अवतार रामकृष्णादिक तेने न मानवारूप पापे करीने तेने ब्रह्मना कोक देशने विषे महा सुषुप्तिमां लीन करी मूके छे; ते पाछो तेने कोई दिवस काढता नथी. माटे प्रत्यक्ष परमात्मानी भक्ति अने उपासनानो त्याग करीने 'हुं ब्रह्म छुं,' एम समजवुं ए मोटुं पाप छे अने तेनुं कोई काळे कल्याण थाय नहीं.

त्यारे तेमां कोईने एम शंका थाय जे ब्रह्मरूप पोताने मानवुं ते पाप हशे? तो हा, जे ब्रह्मरूप मानवे करीने रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवाननी उपासना अने भक्ति टळी जाय एवुं जे ज्ञान ते तो महा पापरूप छे अने प्रत्यक्ष भगवाननी उपासना अने भक्ति दृढ करवा सारु ब्रह्मरूप थवुं ते तो मोटुं पुण्य छे. जेम कोई रजपूतनी दीकरी होय ते रूडांगुण शीखीने पछी चक्रवर्ती राजाने परणे अने राजानी आज्ञा प्रमाणे करे अने पतिव्रतानो धर्म पाळे तो ते महा सुखने पामे अने जेटलामां राजानुं राज्य छे तेटलामां राणीनुं पण राज्य कहेवाय. अने जेटली राजानी समृद्धि तेटली राणीनी समृद्धि कहेवाय. अने जेटलुं राजा सुख भोगवे तेटलुं राणी पण सुख भोगवे. अने ते रजपूतनी दीकरी रूडां गुण शीखे

पण राजाने परणे नहीं तो ते सुखने पामे नहीं अने ते कन्या दुर्भागणी कहेवाय अने रूडा गुणने पामी एवी जे कन्या ते जो कोई पोताना कुळने घटित एवो जे पुरुष तेने परणे नहीं ते तो अंते जतां जरूर भ्रष्ट थाय अने महा दुःखने पामे. अने वळी भ्रष्ट थया मोर रूडां गुणने माने करीने राजानो द्रोह करे अने एम कहे जे 'राजा ते राजा नथी अने हुं राजा छुं.' एम कहीने हुकम करवा जाय तो राजा तेने कोपायमान थईने जन्म केद करे अने ते महा दुःखने पामे. तेम तुर्यपदने पामवुं अने ब्रह्मरूप पोताने मानवुं ते तो रजपूतने घेर शुभ गुणवान दीकरी थई ते राजाने परणवा योग थई तेम ब्रह्मरूप थयो ते प्रत्यक्ष परमात्मानी भक्ति अने उपासना करवानो अधिकारी थयो. ते उपर गीतानो श्लोक छे :

ब्रह्मभूतः प्रसन्नात्मा न सोचति न कांक्षति ।
सम सर्वेषु भूतेषु मद्भक्तिं लभते परां ॥

अर्थः—परमात्मा एवा जे श्रीकृष्ण तेणे कह्युं के 'मारी भक्तिनो अधिकारी कोण छे? तो ब्रह्मरूप अने प्रसन्न छे आत्मा जेनो अने हरख अने शोक गया छे जेना अने सर्वे भूत प्राणीमात्रने विषे समान छे दृष्टि जेनी ते मारी भक्ति करीने मारा धामने पामवानो अधिकारी छे.' एवी रीते ब्रह्मरूप थईने प्रत्यक्ष परमात्मानी भक्ति करे छे ते परम मोक्षने पामे छे अने पूर्वे नारद सनकादिक मुनियो तथा जनकादिक भक्तो ते ब्रह्मरूप थईने प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक भगवाननी भक्ति करीने मोक्षने पामी गया छे, पण ते विना प्रत्यक्ष भगवाननी उपासनानो त्याग करीने कोई मोक्षने पाम्यो नथी. माटे ब्रह्मरूप थईने प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति करवी ए ज मोक्षनो अचळ सिद्धांत छे.

इति श्रीमुखसिद्धांत ३०५ समाप्त ।



श्रीमुखसिद्धांत ३०६ विषय:—कर्मनी गहन गतिने पार थवानी रीत.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ना अषाड वदि १२ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये सोनी प्रभुदास गोविंदजीने घेर उगमणें बार मेडीना चोकमां पाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा देशदेशना घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "कर्मनी गहन गति छे, कहेतां कर्मने यथार्थ जाणवुं घणुं कठण छे. ते कर्म शुं? तो वेदे जे जे आज्ञा करी होय ते प्रमाणे वर्तवुं तेनुं नाम कर्म छे. ते वेदनी पहेली आज्ञा जे "हिंसा न करवी," बीजी आज्ञा जे "खोटुं न बोलवुं," त्रीजी आज्ञा जे "तप करवुं," चोथी आज्ञा जे "व्रत करवां," पांचमी आज्ञा जे "चोरी न करवी," छट्ठी आज्ञा जे "व्यभिचार न करवो," सातमी आज्ञा जे "मांस न खावुं," आठमी आज्ञा जे "मद्य न पीवुं," नवमी आज्ञा जे "कोईनी निंदा न करवी," दसमी आज्ञा जे "विष्णुनी भक्ति करवी." इत्यादि अनेक प्रकारनी आज्ञाओ वेदमां कहेली छे. ते आज्ञाओ प्रमाणे वर्तवुं, तेनुं नाम कर्म छे. ते आज्ञाओने जे बरोबर पाळे तेनुं कल्याण थाय.

हवे ते आज्ञा अनेक प्रकारनी छे तेमां परस्पर विरुद्ध आवे छे तेने जाणवुं ते घणुं कठण छे. ते शुं विरुद्ध छे? तो वेदनी पहेली आज्ञा जे 'हिंसा न करवी' अने बीजी आज्ञा जे 'खोटुं न बोलवुं,' ए बे आज्ञा जरूर पाळवानी छे पण तेमां एवो देशकाळ आवे जे कोई गायने कसाई मारतो होय अने ते कसाईना हाथमांथी वछुटीने गाय नासी

जती होय तेने आपणे जतां दीठी होय पछी तेने वांसे कसाई आव्यो अने पूछ्युं के 'एक गाय आवा वरणनी अने आवां तेने शिंगडां छे ते जतां तमे दीठी?' एम कह्युं. ते हवे जो साचुं बोलशुं अने तेने गाय बतावीशुं तो हिंसा थशे अने जो गायने ऊगारवा जईशुं तो खोटुं बोलवुं पडशे.

—त्यारे त्यां केम करवुं? तो तेनो तोल करवो 'जे केनुं परिणाम साचुं छे.' एम तपास करीने जोईशुं तो गायने ऊगारवी ए ज श्रेष्ठ छे अने गायने ऊगारवाने अर्थे खोटुं बोलवुं पडे ते तो साचुं छे. एम जाणीने ते कसाईने एम कहेवुं जे 'तमारी गायने में जतां दीठी छे.' अने ते गई होय ऊगमणीं अने बताववी आथमणीं. एवी रीते खोटुं बोलीने गायने ऊगारवी. ते उपरथी खोटुं बोल्यो कहेवाय खरुं पण तेनुं परिणाम साचुं छे, तो ते खोटुं ते पण साचुं ज छे. केमके ते कसाई महा अधर्म करतो हतो माटे जे उपाये करीने कसाईना हाथमांथी गाय मुकाववी ए ज साचुं छे अने ए ज वेदनी आज्ञा छे 'जे सर्वे आज्ञाओ पाळीने जीवे जीव प्राणीमात्रने सुखी करवा अने ते प्राणीओने कोई दुःख देतुं होय तो ते थकी दरेक उपाये करीने पोताना सामर्थ्य प्रमाणे तेने उगारवा.' ए ज धर्म छे अने ए ज परमेश्वरनी आज्ञा छे. एम समजे ते ज्ञानी कहेवाय.

अने जे मूर्ख होय ते तो एम जाणे जे 'गाय तो मरे के जीवे पण आपणे तो खोटुं बोलवुं नहीं.' एम समजीने ते कसाईने गाय बतावे तो ते मनमां एम जाणे जे 'हुं साचुं बोलुं छुं.' पण तेने तो खोटाबोलो जाणवो अने ते तो महा पापी छे, केमके तेना बोलवाथी गायनो वध थशे माटे तेनुं साचुं ते साफ खोटुं छे. अने गायने ऊगारवाने अर्थे

खोटुं बोल्यो तेने करीने गाय जीवती रहेशे माटे तेनुं खोटुं ते साफ साचुं छे. एवी रीते कर्मनो विवेक अनेक प्रकारनो छे.

ते पोतानी मेळे शास्त्रमांथी सांभळीने आज्ञा पाळवा जाय तो धर्म होय तेने अधर्म मनाय छे अने अधर्म होय तेने धर्म मनाय छे. माटे महत् पुरुषना संग विना कर्मनी सिद्धि थती ज नथी. ते कर्म छे तो पाप क्षयने अर्थे पण सत्पुरुषना आश्रय विना अने तेना संग विना जीव पोतानी मेळे जे जे शुभ कर्म करे छे तेमां ऊलटां पाप ज वृद्धि पामे छे. माटे कर्मनी गहन गति छे, कहेतां निर्बाधपणांनां कर्मने जाणी शकाय एम नथी.

केमके आज्ञा अने कर्मना भेद अनेक प्रकारना छे. ते 'एकादशीने दिवस अन्न खावुं नहीं तथा त्यागीने नित्य एक वखत खावुं, ते एकादशीने दिवस तो मुद्दल न खावुं अने पछी रोज एक वखत खावुं' एम आज्ञा छे. पण तेने शरीरे मंदवाड थाय त्यारे तेने नियम न राखवुं अने एकादशीने दिवस पण अन्न खावुं, ते एक बे वखत खाय, जेवी रीते शरीरने सुख थाय तेवी रीते खाय तेनो बाध नहीं अने मांदाने उपवास न थाय अने अन्न खाय ए ज धर्म छे. केमके देह छे ते धर्म पाळवानुं साधन छे. ते देह साजो हशे तो धर्म, ज्ञान, वैराग, भक्ति सिद्ध शुभ थशे पण देह विना ए साधन थाय नहीं. माटे देह पडी न जाय तेवी रीते वर्तवुं. एम समजीने मांदो होय तेने एकादशी न कराय तथा एक बे वखत खावानो नियम त्यागीने न रहे तथा गळ्या-चिकणानो नियम न रहे तेनो कांई बाध नहीं. ते मांदो भगवान प्रत्यक्षनो भक्त छे ते कर्म कांई नथी करतो पण तेने सर्वे कर्म थाय छे.

अने मंदवाडमां पण एम जाणे जे 'एकादशीने दिवस ते अन्न

खावानी ना पाडी छे ते माराथी केम खवाय?' अने बीजा पण एम जाणे जे 'ते मांदो छे पण एकादशीने दिवस ते केम खाय? अने साधु मांदो छे ते कांईक तेने भावे तेवुं दूध, दहीं, घी, गोळ, साकार खाय तो ठीक पण तेने खवाय नहीं, केमके तेने नियम छे.' एम जे समजे तेने मूर्ख जाणवो, केमके मांदाने तो एकादशीनो तथा एक बे वखत खावानो तथा गळ्या चिकणानो नियम न रहे तेनो दोष नथी. माटे ते मांदाने तो जेम रुचे ते प्रमाणे एकादशीने दिवस खाय तथा गळ्युं चिकणुं खाय तथा एक बे वखत खाय अने शरीरने सुख थाय एम करवुं अने बीजाने एम कराववुं ए ज शुभ कर्म छे. अने तेमां जे दोष परठे जे 'जो एकादशीने दिवस अन्न खाय छे तथा त्यागी थईने गळ्युं चिकणुं खाय छे' एम समजीने जे मांदानो अवगुण ले छे तेने पापी जाणवो.

अने शरीर नीरोगी थाय पछी जेना जेम नियम होय ते प्रमाणे नियम राखवा अने तेमां फेर पाडे तो तेने भ्रष्ट थयो जाणवो. एवी रीतना अनेक प्रकारना कर्मना विवेक छे. तेने जाणवा घणा कठण छे माटे कर्मनी गहन गति कही छे. ते सारु प्रत्यक्ष भगवान तथा भगवानना एकांतिक निर्वासनिक संत तेनो आश्रय करीने तेनी आज्ञा प्रमाणे करे तो तेनुं प्रत्यक्ष कल्याण थाय पण ते विना शास्त्रमांथी सांभळीने तथा अज्ञानी गुरुओनो आश्रय करीने तथा भगवानना आश्रयनो त्याग करीने पोतानी मेळे जे जे कर्म करशे तेने अवळुं ज कर्म थशे अने तेनुं कल्याण कोई काळे थाय नहीं. ते पण श्रीकृष्ण भगवाने कह्युं छे जे—

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज ।
अहं त्वा सर्व पापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ॥

अर्थः—"जे अज्ञान दशामां पोताना मानेला एवा जे सर्वे धर्म तेनो त्याग कर अने एक मारा शरणने पाम, कहेतां हुं कहुं ते प्रमाणे कर्म कर तो हुं तने सर्व पाप थकी मुकावीश अने तारो मोक्ष करीश; तुं कांई चिन्ता राखीश नहीं." तथा पहेला श्लोकमां कह्युं जे "दैवी अने गुणमयी एवी जे मारी माया ते दुःखे करीने तराय एवी नथी पण जो एक मारी चरणने पामे, कहेतां मारो आश्रय करीने मारी आज्ञा प्रमाणे वर्ते तो ते मायाने तरी जाय."

एवी रीते सर्वे शास्त्रने विषे तथा वेदने विषे कहेलुं छे जे क्षर-अक्षरथी पर एवा जे परमात्मा ते ज परमात्मा जीवोना कल्याण करवा सारु पोतानी स्व-इच्छाए करीने रामकृष्णादिक मनुष्य स्वरूपनुं धारण करे छे. ते प्रत्यक्ष भगवानना आश्रय करीने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्ते छे तेनां ज सर्व कर्म शुभ थाय छे अने तेनां पाप मात्र क्षय थई जाय छे अने प्रत्यक्ष भगवानना आश्रये करीने ज जीवनो आत्यंतिक मोक्ष थाय छे पण प्रत्यक्ष भगवान मळ्या विना अने तेनो आश्रय कर्या विना कोईनो मोक्ष थाय नहीं अने ते विना कर्म सूझे एटलां करे पण तेने कल्याणनो मार्ग सूझतो नथी.

ते पूर्वे रावण हतो ते वेदनो भणेलो हतो अने सर्वे शास्त्रनो पण भणेला हतो. अने वेद शास्त्रना कह्या प्रमाणे परोक्ष परमात्माने पामवा सारु कर्म बराबर करतो अने उपासना पण परोक्षपणे शंकरने परमात्मा जाणीने करतो हतो अने ज्ञान पण 'तत्त्वमसि' महा वाक्यना अर्थने जाणतो हतो तथा जरासंध तथा हिरण्यकशिपु तथा सहस्रार्जुन तथा दुर्योधन तथा कर्ण इत्यादिक मोटा मोटा राजा सर्वे कर्मकांडनी उपा-

सना वाळा अने ज्ञानी हता पण तेणे प्रत्यक्ष परमात्मा रामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेनो आश्रय कर्यो नहीं अने सामो तेनो द्रोह कर्यो तो तेना कर्म, उपासना, ज्ञान सर्वे अफळ थई गयां अने ते ऊलटा दैत्य कहेवाणा.

' अने व्रजना गोपी, गोवाळ तथा वांदरा, गुह राजा भील, शवरी भीलडी, कुवजा आदिक घणाक भक्तो थई गया ते कांई भणेला न हता अने कर्म, उपासना, ज्ञानमां पण समजता न हता, पण तेणे प्रकट भगवाननो आश्रय कर्यो अने प्रगटनी आज्ञामां वर्त्या तो तेना मोक्ष थई गया अने तेना सर्वे साधन पूरां थई रह्यां. माटे प्रगट भगवाननो आश्रय करीने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं ए ज कर्म मोक्षने अर्थे थाय छे अने प्रत्यक्ष भगवान मळ्या विना अने तेनो आश्रय कर्या विना सूझे तेटला शुभ कर्म करवा जाय ते सर्वे अशुभ कर्म ज थाय छे अने ते कर्मे करीने ऊलटुं वधारे वंधन थाय छे.

माटे जेने पोताना कल्याणने इच्छवुं होय तेने प्रत्यक्ष भगवाननो आश्रय करीने तेनी आज्ञा प्रमाणे वर्तवुं, तो तेनुं साक्षात्कार कल्याण थशे. अने आ समये जे प्रत्यक्ष अमारो आश्रय करीने अमारी आज्ञा प्रमाणे वर्ते छे तेनां तो साक्षात्कार कल्याण थई रह्यां छे अने तेने तो कांई करवुं रह्युं नथी. अने अमारो आश्रय मूकीने वीजां सूझे एटलां कर्म करे, तीर्थ करे, व्रत करे, यज्ञ करे, होम करे, ज्ञान कथे, वैराग राखे, भेख ले, तप करे, योग साधे पण एक प्रत्यक्ष हुं पृथ्वी उपर होवुं अने मारो आश्रय करे नहीं तो तेनां सर्व साधन वृथा छे अने ते सर्वे साधने करीने कांईपण सिद्धि थती नथी.

माटे जेने पोताना कल्याणने इच्छवुं, तेने सर्वे मत पंथादिकना धर्मनो त्याग करीने प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना संतनो आश्रय

करीने तेनी आज्ञा पाळवी ए ज मोक्षनो अचळ सिद्धांत छे अने पूर्वे जेनां जेनां कल्याण थया छे ते प्रत्यक्ष भगवान जेने मळ्या छे तेनां ज थयां छे, पण ते विना कोईनां कल्याण थयां नथी. माटे ते दुर्लभ समय आज तमारे सर्वेने आव्यो छे ते जे चेतशे तेनो मोक्ष थशे अने जे नहीं चेते ते नरकमां जशे, ए सिद्धांत वार्ता छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत ३०६ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत.३०७ विषयः—पाखंड धर्मनुं रूप.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ना श्रावण सुदि १४ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये जोशी सदाशिव कृपाशंकरने घेर उत्तरादे वार ओरडानी ओशरीमां गादीतकिये युक्त पलंग बिछावीने ते उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां धारण कर्यां हतां. ललाटने विषे केसरनी अर्चा करी हतीअने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी संध्या आरती थया पछी महाराज कृपा करीने बोल्या जे "आ जगतने विषे एक शुद्ध अने सत्य एवो वेदोक्त धर्म छे अने ते वेदोक्त धर्मनुं प्रतिपादन करे एवां सत्य शास्त्र छे. अने जे जे जीव तेने आशरे छे तेनुं कल्याण थाय छे. अने बीजो वेदोक्त धर्मथी ऊलटो पाखंड धर्म छे अने ते पाखंड धर्मनुं प्रतिपादन करे एवा असत्शास्त्र छे. अने ते पाखंड धर्मने जे जे आशरे छे ते जीव नरकमां जाय छे.

हवे वेदोक्त धर्मनुं शुं रूप छे ? अने पाखंड धर्मनुं शुं रूप छे? तो धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति ए चार साधन तेने सिद्ध करवा तेनुं नाम वेदोक्त धर्म छे. अने ते वेदोक्त धर्मथी ऊलटो एटले अधर्म, अज्ञान, राग

अने अभक्ति ए चार वानां जे ठेकाणे होय ते पाखंड धर्म कहेवाय. हवे धर्म ते शुं ? तो परमात्मा परब्रह्म वेदोक्त धर्मना प्रकाशक एवा जे रामकृष्णादिक प्रत्यक्ष भगवान तेनी आज्ञा जे वर्णाश्रम धर्ममां रहीने पंचविषय थकी इन्द्रियोने पाछी वाळीने इन्द्रिओनी वृत्तिओने प्रत्यक्ष भगवानना स्वरूपमां जोडी देवा तेनुं नाम धर्म छे.

अने ज्ञान ते शुं ? तो देह आत्मानो विवेक करीने देहने मिथ्या जाणवो अने आत्माने पोतानुं स्वरूप जाणीने ते आत्माना आत्मा एवा जे परमात्मा प्रत्यक्ष भगवान तेनी उपासना भक्ति करवी तेनुं नाम ज्ञान छे. अने अज्ञान शुं ? तो प्रथम देह आत्मानो विवेक करीने पोताने आत्मारूप मानीने पछी ते आत्मा एज परमात्मा छे एम मानीने विधि निषेधने तोडीने विषयने भोगवे छे अने ते पछी विपरीत वामी थईने मद्य, मांस आदिकनुं भक्षण करे छे अने प्रत्यक्ष भगवानना आश्रय थकी विमुख थईने नरकमां जाय छे, अने ते प्रत्यक्ष भगवानना आश्रय विना ज्ञान विकार पामीने विपरीत वामी थईने महा अज्ञानी थाय छे.

अने अधर्म शुं ? तो धर्म विकार पाम्यो एटले अधर्म थई गयो. ते केवी रीते धर्म विकार पाम्यो ? तो प्रत्यक्ष भगवानना आश्रयनो त्याग करीने शास्त्रमां कह्या प्रमाणे धर्म पाळे अने नियम राखे अने विषयनो त्याग करे पण ते प्रत्यक्ष सत्पुरुषना आश्रय विना धर्म, नियम अंते रहेतां नथी अने भ्रष्ट थाय छे. पछी धर्म नियमनो त्याग करीने निःशंक थईने विषय भोगववा मंडी जाय छे. पछी ते एम कहे जे 'अधूरा होय तेने नियम राखवुं पडे पण जे सिद्धदशाने पाम्यो होय तेने नियम शुं करवा राखवो पडे ?

माटे जे नियम राखे छे ते तो हजु सिद्ध नथी अने अधूरा छे अने अमे तो सिद्ध छीए माटे अमारे शुं करवा नियम राखवो पडे ?' एम

निःशंक थईने विषयने भोगवे छे अने भ्रष्ट थाय छे अने केटलाक विषयना रागी, भोळा अने विश्वासी लोकोने भ्रष्ट करे छे अने ते सर्वे मरीने घोर नरकमां जाय छे. ते एवो अधर्म मार्गीपंथमां छे ते जेने कूडापंथ कहे छे तथा बीजपंथ कहे छे. ते पंथ धर्म विकार पामीने अधर्मनो चाल्यो छे. ते धर्मने पाखंड धर्म कहीए. अने ते धर्मनी जेने प्रतीति आवे छे ते सर्वे जीव नरकमां जाय छे. माटे ए पंथ धर्म थकी भ्रष्ट थयेला छे. ते सारु ए पंथमां धर्म, नियम कोई राखतुं नथी. अने ते पाखंड धर्मनी पुष्टि करे एवा भक्तमाळादिक असत्शास्त्र कर्यां छे अने तेने विषे वर्णाश्रम अने ब्रह्मचर्यनुं अतिशय खंडन कर्युं छे. माटे ते वेदोक्तथी विरुद्ध पाखंड धर्म छे अने ते मार्ग नरकमां जवानो छे.

अने ज्ञान विकार पामीने अज्ञानरूप एवो विपरीत वामीनो पंथ चाल्यो छे कहेतां जे पंथमां शक्तिनुं नाम लईने दारु, माटीनुं भक्षण करे छे ए धर्म पण पाखंड धर्म छे; केमके दारु माटीनुं भक्षण करवुं ते तो वामा जे शक्ति तेने गमतुं ज नथी. माटे शक्तिनुं नाम लईने दारु, मांसनुं भक्षण करे छे तेना उपर तो शक्तिनो ऊलटो कोप थाय छे. केमके वेदने विषे पांच देवरूपे परमात्मानी उपासना करवी कही छे. ते चोरी, छिनाळी, दारु, माटी, जुठुं बोलवुं अने हिंसा ए छ वानानो त्याग करीने पंचदेवमांथी जे देव पोताने प्रिय होय तेनी उपासना, भक्ति करवी तो ते देव तेना उपर प्रसन्न थाय छे. अने ए छमांथी एके वानुं करतो हशे तो तेना उपर पांचमांथी एके देव प्रसन्न थशे नहीं अने सामुं जे देवनुं भजन करतो होय ते देवनो ज तेना उपर कोप थशे. माटे जे शक्तिनुं नाम लईने दारु, माटी अने व्यभिचारादिक भूंडां कर्म करे छे ते तो विपरीत वामी छे अने पाखंडी छे अने ते चोख्खो नरकनो मार्ग छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत ३०७ समाप्त ।

———:*:———

श्रीमुखसिद्धांत ३०८ विषयः–छ प्रकारना ब्रह्मना अवतार

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः–संवत १९२४ ना श्रावण सुदि ८ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये भक्त आशाराम जेठाने घेर हिंडोळा खाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां. ककुंनो चांद्लो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "आज अमे वात करीशुं ते वातने समजशे तेने पछी कांई समजवुं रहेशे नहीं अने ते वातनी जोडे कोई बीजी वात आवे एम नथी; ए वात तो एक ज छे. अने ए वातने जे समजशे तेना संशय मात्र टळी जशे अने निःसंशयपणें परमात्माना स्वरूपने जाणीने परम मोक्षने पामशे. माटे आ वात खबडदार थईने सांभळजो जे एक परब्रह्म छे, बीजुं निर्गुणब्रह्म छे, त्रीजुं सबळब्रह्म छे अने चोथुं मिथ्या-ब्रह्म छे. ते मिथ्याब्रह्मना त्रण भेद छे; उत्तम, मध्मय अने कनिष्ठ. हवे मिथ्याब्रह्म ते शुं ? तो आ जगतरूप जे विराट, सूत्रात्मा अने अव्याकृत ए जे ईश्वरना त्रण शरीर तेनुं नाम मिथ्याब्रह्म छे. अने ए त्रण शरीरनो धारणनो करनारो जे ईश्वर–आत्मा तेनुं नाम सबळब्रह्म छे. अने ए मिथ्याब्रह्म अने सबळब्रह्म ते जेनी दृष्टिमां नथी एवुं जे शुद्ध, चैतन्य, सर्व व्यापक तेनुं नाम निर्गुणब्रह्म छे. अने ए निर्गुणब्रह्म तो जेना अंगनो प्रकाश छे एवा जे दिव्यमूर्ति परमात्मा तेनुं नाम परब्रह्म छे.

हवे मिथ्याब्रह्मना त्रण भेद कह्या तेनुं ए रूप छे जे जाडा पंच-भूतात्मक जे ईश्वरनुं स्थूळ विराटदेह तेनुं नाम मिथ्या कनिष्ठब्रह्म छे. अने ए स्थूळने प्रकाश करनारुं सूक्ष्म पंचभूतात्मक ईश्वरनुं सूत्रात्मा देह तेनुं नाम मध्यम मिथ्याब्रह्म छे. अने ए विराट अने सूत्रात्मा जेमांथी

उत्पन्न थयां एवी जे अहंवृतिरूप ईश्वरनुं अव्याकृतदेह तेनुं नाम उत्तम मिथ्याब्रह्म छे. एवी रीते त्रण प्रकारनुं मिथ्याब्रह्म अने चोथुं सबळ-ब्रह्म अने पांचमुं निर्गुणब्रह्म अने छठ्ठा परब्रह्म, ए प्रकारे वेदने विषे छ ब्रह्मना भेद कह्या छे.

—अने ए छ प्रकारना ब्रह्मना स्वरूपने न जाणनारा एवा अज्ञानी जीवो ते असंख्य छे. ते जीवोने ज्ञान आपवा सारु छ प्रकारनुं ब्रह्म ते आ मृत्युलोकने विषे मनुष्यदेहनुं धारण करे छे. अने मनुष्यरूपने धारण कर्युं एवुं जे ब्रह्म ते जीवोने छ प्रकारना ब्रह्मनुं ज्ञान आपीने निर्गुण ब्रह्मरूप करीने परब्रह्मने पमाडे छे त्यारे ते जीवनी मुक्ति थाय छे.

हवे ए छ प्रकारना ब्रह्म तेणे मनुष्यदेह धारण कर्यो होय तेने ओळखवानी ए रीत छे जे कनिष्ठ मिथ्याब्रह्म जे विराट तेणे देह धर्यो होय तो ते पोतानुं स्वरूप जे विराट तेना ज्ञानने वगर शीखव्युं यथार्थ जाणतो होय अने पोताने आश्रये आवे जे जीव तेने विराटरूप अने कनिष्ठ मिथ्याब्रह्म तेनुं ज्ञान करावे छे अने ते विराटने विषे जेटली कळाओ छे ते सर्वेनुं साक्षात्कार ज्ञान करावीने तेना जाणवाने विषे निःसंशय करे छे. अने ते वहारदृष्टिए जोयामां तो माणस जेवो ज जणातो होय पण तेने ज्ञाने करीने जोईए तो तेना जेवुं ज्ञान बीजा कोई माणस पासे होय नहीं अने ते पोताना शिष्योने एम कहे जे 'हुं ईश्वरनुं शरीर जे विराट तेने विषे अद्वैत छुं. कहेतां हुं विराट छुं माटे तमे मारे विषे प्रीति करीने मारा स्वरूपमां ज्ञाने करीने जोडाई जाव एटले तमे मने पामशो.' पछी तेने विषे विश्वास राखीने जे प्रीतिए करीने जोडाई जाय ते विराटना साधर्म्यपणांने पामे. अने तेवी ज रीते सूत्रात्मा-रूप जे मध्यम मिथ्याब्रह्म तेने देह धर्यो होय तो ते सूत्रात्मारूप ईश्वरना शरीरना ज्ञानने यथार्थ जाणतो होय अने ते एम कहे जे 'हुं सूत्रात्मा-

ब्रह्म छुं अने तमे मारे विषे प्रीति करो एटले तमे तेने पामशो.’ अने अव्याकृतरूप मिथ्याब्रह्मे देह धर्यो होय तो तेने विषे विराट, सूत्रात्मा अने अव्याकृत ए त्रणनुं ज्ञान होय अने ते एम कहे जे ‘हुं अव्याकृत ब्रह्म छुं’ अने तेने विषे जे प्रीतिए करीने जोडाई जाय छे ते अव्याकृतरूप मिथ्याब्रह्मना साधर्म्यपणाने पामे छे.

अने सबळब्रह्मे देह धर्यो होय तो तेने विषे विराट, सूत्रात्मा अने अव्याकृत ए त्रण शरीरने धारण करी रह्यो होय एवो जे सबळब्रह्म ए चारे प्रकारना ब्रह्मना ज्ञानने वगर शीखव्युं यथार्थ जाणतो होय अने तेने आश्रये जे जे जीव आवे तेने ज्ञान आपीने अनंतकोटि ब्रह्मांडने जेम हथेळीमां जळनुं टीपुं देखाय तेम देखाडी दे अने तेनो कर्ता अने कारण एवो जे सबळब्रह्म तेनुं ज्ञान करावे अने पोते एम कहे जे ‘हुं सबळब्रह्म छुं’ अने तेनो जे आश्रय करीने तेनी भक्ति करे छे ते सबळ-ब्रह्मरूप जे मूळ प्रकृतिपुरुष तेना साधर्म्यपणाने पामे छे.

अने निर्गुणब्रह्मनो अवतार थयो होय तो तेने विषे त्रण प्रकारना मिथ्याब्रह्मनुं ज्ञान होय तथा निर्गुणब्रह्मनुं ज्ञान होय; ते वगर शीखव्युं साक्षात्कार ज्ञान होय. अने ते एम कहे जे, ‘ॐ सोऽहं कहेतां मिथ्याब्रह्म अने सबळब्रह्म ए बेयथी पर एवुं जे निर्गुणब्रह्म ते मारुं स्वरूप छे.’ अने तेनो जे जे जीव आश्रय करे तेने निर्गुणब्रह्मना साधर्म्यपणाने पमाडे छे.

अने ज्यारे परब्रह्म पोते अवतार धारण करे छे त्यारे तेने विषे विराट, सूत्रात्मा, अव्याकृतरूप मिथ्या ब्रह्मनुं ज्ञान तथा सबळब्रह्मनुं ज्ञान तथा निर्गुणब्रह्मनुं ज्ञान तथा परब्रह्मनुं आदिक अनंत ब्रह्मविद्यानुं ज्ञान होय छे अने ते पण एम कहे जे ‘ॐ सोऽहं कहेतां मिथ्याब्रह्म, सबळब्रह्म अने निर्गुणब्रह्म तेथी पर जे परब्रह्म ते मारुं स्वरूप छे.’ अने तेनो आश्रय करीने तेने विषे जोडाई जाय छे ते निर्गुणब्रह्मरूप थईने परब्रह्मना साधर्म्यपणाने पामे छे.

एवी रीते जेनो अवतार थयो होय तेनुं ज्ञान तेनी पासे वगर शीखव्युं होय एम ज्ञाने करीने ओळखाय छे अने जेने जे जे मळ्या होय तेना ते भगवान कहेवाय अने भगवान जाणीने तेनुं भजन करे अने ते सर्वे अवतार कह्या तेने विषे ज्ञान तो जेवुं जेनुं स्वरूप होय तेटलुं ते आपी शके पण सर्वेने विषे इन्द्रियोना नियमरूप जे धर्म तथा देह आत्माना विवेकरूप जे ज्ञान तथा पंचविषयना त्यागरूप जे वैराग अने एवा ज्ञानना आपनारा प्रत्यक्ष सद्गुरु तेनी आज्ञा अने सेवारूप भक्ति ए चार साधन तेने संपूर्ण सरखां होय छे. एवी रीते वेदने विषे ब्रह्मना ज्ञानना भेद कह्या छे. ते ज्ञान शुद्ध अने मोक्ष पामवानुं छे, ते मोक्ष तो सर्वात्माब्रह्म जे परब्रह्म तेने पामशे त्यारे थशे. पण ते परब्रह्मने पामवुं तेना मार्गमां बीजा पांच प्रकारना ब्रह्मनुं ज्ञान पामवुं जोईए छीए पण ते विना पाधरुं परब्रह्मने नथी पमातुं.

ते सारु परब्रह्मे ज ए छे प्रकारना ब्रह्मनुं ज्ञान उत्पन्न कर्युं छे अने कोई कोई समय ए पांच प्रकारना ब्रह्म कह्या तेने अवतार धरावीने तेना स्वरूपनुं ज्ञान जीवोने करावे छे, ते जेने जे मळ्या होय तेना ते भगवान कहेवाय छे. अने कोई समये तो पोते सर्वकारण, सर्वकर्ता, सर्वाधार अने सर्वथी पर परब्रह्म ते अवतार धारण करे छे अने छ प्रकारना ब्रह्मनुं ज्ञान आपीने निर्गुण ब्रह्मरूप जीवने करीने पोताना साधर्म्यपणाने पमाडे छे. एवी रीते जीवनो मोक्ष ज्ञान आपीने करे छे.

ते ए छ प्रकारना ब्रह्मना अवतार आ पृथ्वी उपर थाय छे. ते उपरथी जोयामां तो सर्वे माणस जेवा सरखा देखाय पण तेना ज्ञानमां घणो भेद होय ते जेवा जे होय तेटलुं तेनी पासे ज्ञान होय छे. अने ते माणस जेवा होय तोपण एम कहे जे 'अमे ब्रह्म छीए' ते तो साचा ब्रह्म छे, केमके तेनी पासे ब्रह्मनुं यथार्थ ज्ञान छे.

पण हवे जेने एवुं ज्ञान तो न होय अने पोते तो जीव होय ते एम कहे जे 'हुं पण ब्रह्म छुं; केमके पूर्वे राम, कृष्ण, ऋषभ, कपिल आदिक अवतार थई गया तेणे पण कह्युं छे जे 'अमे ब्रह्म छीए', तो ते पण माणस हतो अने हुं पण ते जेवो माणस छुं, माटे हुं पण ब्रह्म छुं,' एम कहेनारा असुर छे, पापी छे अने तेने ब्रह्म बकवा थयो जाणवो केमके ते माणस जेवा हता पण तेनी पासे साक्षात्कार ब्रह्मनुं ज्ञान हतुं अने तारी पासे तो ज्ञाननो लेश नथी. माटे तुं अने ते रामकृष्णादिक सरखां नथी.

जेम एक पृथ्वीनो पति राजा ते माणस अने एक कोईक रांक भीख मागतो होय ते माणस ए बेमां केटलो भेद छे? केमके जे राजा छे ते एम कहे जे 'हुं राजा छुं' ते तो साचो राजा छे अने तेनो तो हुकम चालशे अने जे रांक छे ते एम जाणे जे 'राजा य माणस छे अने हुं य माणस छुं, माटे हुं पण राजा छुं', एम कहे पण तेनो हुकम चाले नहीं. अने तेने राजा जाणे तो तेनुं घाणीए घालीने तेल काढी नाखे. तेम जे राम, कृष्णादिक अवतार ते तो ब्रह्म हता माटे तेणे कह्युं जे 'अमे ब्रह्म छीए.' अने तेनी पासे तो ब्रह्मरूप करवानी अद्भूत एवी ज्ञान शक्ति हती. अने तेनो वाद लईने बीजो अज्ञानी जीव छे ते शास्त्रमांथी सांभळीने एम कहे जे 'हुं ब्रह्म छुं.' तो ते एम कहेनारो पापी छे अने तेना उपर तो ब्रह्मनो कोप थाय छे. माटे ए ज्ञान खोटुं छे.

अने धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्तिए सहित एवुं जे ब्रह्मनुं यथार्थ ज्ञान ते जेनी पासे होय ते साचा ब्रह्म छे अने ते माणस जेवा देखाय छे तोपण ते माणस नथी; ब्रह्मनी ज मूर्ति छे, अने ते तो पोताना धाममां रह्या थका पोतानी योग मायाए करीने माणस जेवा देखाय छे. तेम अवतारादिक मनुष्य स्वरूप छे ते तो ब्रह्मनी मूर्ति छे पण तेने देह–देही एवो भेद नथी. माटे माया पर परब्रह्म अने तेना अवतार

रामकृष्णादिक ते वे एक ज छे अने ते अवतार विनाना बीजा माणस ते तो जीव छे. ते जीव ए प्रत्यक्ष मूर्ति अवतार तेनो आश्रय करीने ए थकी ज्ञानने पामे तो ते जीवनुं अज्ञान टळीने माया पर थईने ब्रह्मना स्वरूपने साक्षात्कार पामे पण तेना आश्रय विना ब्रह्मना स्वरूपने कोई पामे ज नहीं.

अने ते विना शास्त्रमांथी सांभळीने 'हुं ब्रह्म छुं,' एम कहे छे ते तो जेम रांक होय ते एम कहे छे 'हुं राजा छुं,' एम कहे पण तेनो रंच मात्र हुकम चाले नहीं अने भीख मागीने तेना प्राण जता रहे. तेम रामकृष्णादिक परब्रह्मना अवतार तेना आश्रयनो त्याग करीने जीव कहे जे 'हुं ब्रह्म छुं,' एम कहेनारा तो यमना दूतनो मार खाशे अने लख चोराशीमां जन्ममरणने पामशे अने कोई दहाडे तेनो छूटको नहीं थाय. माटे जीव कोई दहाडे ब्रह्म नथी; जीव तो अनादिना जीव ज छे. ते जीवने ब्रह्मना अवतार जे रामकृष्णादिक तेनो आश्रय थाय अने तेने विषे जीव जोडाई जाय तो ते जीव ब्रह्मने पामे अने अने तेनी जन्ममरण टळीने मुक्ति थाय. पण प्रत्यक्ष परब्रह्मना अवतारना आश्रय विना जीवनी मुक्ति थाय नहि.

त्यारे कोई एम कहे जे 'शास्त्रमां तो पोताने ब्रह्मरूप मानवुं एम कह्युं छे तेनुं केम समजवुं?' तो तेनुं एम समजवुं जे ज्यारे प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिकरूप ज्ञानदाता जीवने मळे अने ते थकी तेनो आश्रय करीने धर्म, ज्ञान, वैराग अने भक्ति सिद्ध करीने निर्वासनिक थाय त्यारे ते जीव ब्रह्मरूप थाय छे. पछी एवो ब्रह्मरूप निर्वासनिक थयो तेने एम मानवुं जे 'हुं ब्रह्मरूप एवो परब्रह्मनो दास छुं,' एम समजवुं.

जेम राजाने घेर जन्मने पामीने राजनीतिने भणीने पछी ते एम कहे जे 'हुं राजा छुं ते तो राजा खरो.' अने जे राजाने घेर जन्मीने

मूरख जेवो होय ते एम कहे जे 'हुं राजा छुं, ते तो मूरख छे.' अने राजानो गुन्हेगार थाय छे. तेम जेने भगवान अने भगवानना निर्वासनिक पंचविषयना त्यागी ब्रह्मरूप संत तेनो आश्रय थयो छे अने ते थकी धर्म, ज्ञान, वैराग अने माहात्म्ये सहित प्रत्यक्ष भगवाननी भक्ति सिद्ध करीने आत्यंतिक ज्ञान पामे छे ते तो ब्रह्मरूप छे. अने तेने एम मानवुं जे 'हुं ब्रह्म छुं.'

पण जेने प्रत्यक्ष भगवान रामकृष्णादिकनो आश्रय न होय अने धर्म, ज्ञानादिक गुण पण न होय अने पंचविषयमां लोलुप थई रह्यो होय अने विषयने भोगवतो होय अने ते एम कहे जे 'हुं ब्रह्म छुं,' ते तो पापी छे अने तेना उपर तो ब्रह्मनो कोप थाय छे. माटे प्रत्यक्ष भगवान अने भगवानना निर्वासनिक संतनो आश्रय करीने निर्वासनिक थाय छे ते ब्रह्मरूप छे अने तेनी मुक्ति थशे अने जेने भगवान अने भगवानना संतनो आश्रय नथी ते तो सर्वे जीव छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत ३०८ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत ३०९ विषय :–निर्बीज-सबीज सांख्य-योग एटले निर्विशेष-सविशेष वेदान्त अने परमात्मानुं साम्राज्य.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ना श्रावण सुदि १२ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये सोनीनी धर्मशाळामां हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. सर्वे जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने पुष्पनां आभूषण सर्वे अंगमां शोभी रह्यां हतां अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "जीवनी मुक्ति थवी ते ज्ञाने करीने थाय छे पण आ जगतना ज्ञाने करीने थती नथी; केमके जगतनुं ज्ञान तो मनुष्य, पशु-पंखी ए आदिक जेटला जंगम जीवमात्र छे ते सर्वेने जगतनुं ज्ञान छे. अने झाड, पहाड आदिक स्थावार जीव सुपुप्ति अवस्थामां छे तेने जगतनुं ज्ञान नथी. अने जंगम जीवने तो पोत पोताना देह निर्वाहने अर्थे विषयरूप जगतनुं ज्ञान छे माटे ते ज्ञाने करीने मुक्ति थती नथी; मुक्ति तो वेदान्तने ज्ञाने करीने थाय छे.

ते वेदान्त एटले शुं ? तो वेद जे जगतनुं जाणवुं तेनो जे अंत तेनुं नाम वेदान्त छे, कहेतां जगतनो अंते एटले जगत पर जे ज्ञान तेनुं नाम वेदान्त छे. अने वळी ते वेदान्तनो बीजो अर्थ छे जे वेद जे ज्ञान तेनो अंत तेनुं नाम वेदान्त छे कहेतां ज्ञान जे ब्रह्म तेथी पर एवा जे दिव्यमूर्ति परब्रह्म परमात्मा तेने जाणवा तेनुं नाम वेदान्त कहेवाय छे. माटे वेदान्त बे प्रकारनुं छे, एक निर्विशेष छे अने बीजुं सविशेष वेदान्त छे. ते जगतनो अंत एटले जगतनो प्रलय करीने जे ज्ञानने पामवुं तेनुं नाम निर्विशेष वेदान्त कहेवाय छे. अने ज्ञानरूप जे ब्रह्म ते रूप पोते थईने ए ब्रह्मना प्रकाशक एवा जे दिव्यमूर्ति परब्रह्म तेने साक्षात्कार जाणवा अने पामवा तेनुं नाम सविशेष वेदान्त कहेवाय छे. माटे ए बे प्रकारना वेदान्तना ज्ञानने सिद्ध करे ते जीवनी मुक्ति थाय छे.

हवे ते वेदान्तनुं ज्ञान सांख्य अने योगे करीने सिद्ध थाय छे. ते सांख्य अने योग पण बे प्रकारना छे, एक निर्बीजसांख्य छे अने एक निर्बीजयोग छे अने बीजुं सबीजसांख्य छे अने बीजुं सबीजयोग छे हवे निर्बीजसांख्य ते शुं ? तो आ देहथी जीवने जुदो जाणवो अने ब्रह्मांडथी ईश्वरने जुदो जाणवो, तेनुं नाम निर्बीजसांख्य कहेवाय छे अने ए पिंड ब्रह्मांडनी जेम उत्पत्ति थई छे तेम तेनो प्रलय करीने जीव

ईश्वरने विषे जे द्रष्टा-दृश्यनो भेद छे तेने टाळीने ब्रह्मरूप जे अधो अने उर्ध्व भेदे रहित प्रकाश तेने विषे एकत्वपणुं करवुं कहेतां ब्रह्मरूप प्रकाश विना पिंड ब्रह्मांड तथा जीव ईश्वर कांई नजरे आवे नहीं, तेनुं नाम निर्बीजयोग कहेवाय छे. अने एवी रीते निर्बीजसांख्य अने निर्बीज योगना ज्ञाने करीने ब्रह्मना भावने पामवुं कहेतां ब्रह्म थवुं तेनुं नाम निर्विशेष वेदान्त कहेवाय छे. पण ते एकले निर्विशेष वेदान्तने ज्ञाने करीने जन्म-मरण टळतुं नथी. केमके प्रकाशमां निराकारपणें अद्धर पद्धर निराधारपणें रहेवातुं नथी, माटे तेने देहनो आधार टळतो नथी. माटे निर्बीज सांख्य-योगे करीने निर्विशेष वेदान्तना ज्ञानने सिद्ध करीने ब्रह्मना भावने पामी जाय छे.

माटे पछी सविशेष वेदान्तना ज्ञानने पामवा सारु सबीजसांख्य अने सबीजयोगने सिद्ध करवां. हवे सबीजसांख्य ते शुं? तो शुद्ध, चैतन्य, निर्गुण, निराकार, व्यापक, ब्रह्मरूप जे प्रकाश ते प्रकाशने मध्ये प्रकाशना आधार दिव्यमूर्ति परमात्मा रह्या छे, एम जाणवुं तेनुं नाम सबीजसांख्य कहेवाय छे, केमके प्रकाशने मध्ये प्रकाशवान होय. जेम सूर्यना प्रकाशमां सूर्य रह्यो छे, पण सूर्य विना प्रकाश एकलो अद्धर-पद्धर रहेतो नथी. तेम ब्रह्मरूप जे प्रकाश तेने मध्ये ते ब्रह्मना प्रकाशक एवा परब्रह्म परमात्मा ते दिव्य मूर्तिमान थका रह्या छे, एम समजवुं तेनुं नाम सबीजसांख्य कहेवाय छे.

अने हवे सबीजयोग ते शुं? तो ए ब्रह्मना आधार एवा जे दिव्यमूर्ति परमात्मा ते ज परमात्मा प्रत्यक्ष रामकृष्णादिकरूपे प्रगट थाय छे, एम जाणीने ते प्रत्यक्ष भगवाननी मूर्तिने विषे प्रीतिए करीने जोडाई जवुं, तेनुं नाम सबीजयोग कहेवाय छे. केमके प्रत्यक्ष सत्गुरुए छ प्रकारना ब्रह्मनुं ज्ञान आपीने जीवने ब्रह्मरूप कर्यो माटे ब्रह्मथी पर

होय ते ज ब्रह्मरूप करी शके, पण ते विना बीजो कोई ब्रह्मरूप करवाने समर्थ नथी. माटे प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक परमात्मा ते ब्रह्मना आधार अने ब्रह्मना मध्यने विषे दिव्य मूर्तिमान थका अखंड रह्या छे, एम जाणीने ते प्रत्यक्ष ज्ञानदाता पोताने मळ्या जे परमात्मा तेने विषे प्रीतिए करीने जोडाई जवुं, तेनुं नाम सबीजयोग कहेवाय छे.

अने सबीजसांख्य-योगे करीने ब्रह्मने विषे दिव्यमूर्ति परमात्माने सिद्ध करीने ते परमात्मा प्रत्यक्ष रामकृष्णादिक पोताने मळ्या ते ज छे, एम जाणीने ते प्रत्यक्ष मूर्तिने विषे जोडाई जवुं, तेनुं नाम सविशेष वेदान्ततनुं ज्ञान जाणवुं. एवी रीते निर्बीज-सबीज सांख्य-योगादिके करीने निर्विशेष-सविशेष वेदान्तना ज्ञानने सिद्ध करवुं, तेने करीने आत्मानी मुक्ति थाय छे अने जन्ममरण टळे छे. माटे जेने पोताना आत्माने मोक्ष पमाडवानी इच्छा होय तेने आत्यंतिक ज्ञानना आपनारा जे प्रत्यक्ष भगवान तेनो आश्रय करीने निर्विशेष-सविशेष वेदान्तनुं ज्ञान सिद्ध करवुं.

हवे ते ज्ञान पामवानी रीत कहीए छीए तेमां प्रथम निर्बीजसांख्यनुं ज्ञान कहेवाशे. तेमां प्रथम जगतनी उत्पत्ति शी रीते थई छे तेने जाणवुं जे प्रथम आत्यंतिक प्रलयमां जगत न हतुं ते दहाडे दिव्य मूर्तिमान एवा जे परमात्मा ते एक हता अने ते परमात्माना अंगनो प्रकाश जे सर्व व्यापक अक्षरब्रह्म तेने विषे ए प्रकाशना सजाती एवा असंख्य-कोटि जीवो ते अज्ञान अवस्थामां रह्या हता, ते ब्रह्मना प्रकाशमां मळीने रह्या हता पण ब्रह्मथी जीव जुदा देखाता न हता. जेम सूर्यना प्रकाशने विषे चंद्रमानो प्रकाश, तारानो प्रकाश, मशालनो प्रकाश, दिवानो प्रकाश एक मळीने रहे छे पण दिवसना प्रकाशमां एम नथी देखातुं जे आटलो चंद्रमानो प्रकाश छे अने आटलो तारानो प्रकाश छे अने आटलो मशालनो प्रकाश छे अने आटलो दिवानो प्रकाश छे. एम दिवसना

प्रकाशमां कोईनो जुदो प्रकाश देखातो नथी, सर्वेनो प्रकाश एक जणाय छे. तेम सूर्यरूप एवा दिव्य मूर्तिमान परमात्मा छे अने तेना अंगनो प्रकाश सर्वव्यापक निरंजन निर्गुणब्रह्म छे.

हवे ते ब्रह्म केवुं छे? तो सर्वव्यापक एटले एना विना कोई जगा खाली नथी अने निरंजन एटले जेमां अंधारुं नथी अने निर्गुण एटले जेने विषे रज, तम, सत्त्वात्मक मायाना गुण नथी, एवुं ब्रह्म छे. पण तेने विषे अवकाश छे अने ते अवकाशने विषे ब्रह्मना प्रकाशना सजाती जीवो ते अज्ञान अवस्थामां लीनपणें रह्या हता ते जीवोने परमात्माना स्वरूपनुं ज्ञान नथी अने तेने पोताना स्वरूपनुं पण ज्ञान नथी एवा जे अज्ञानी जीवो तेने आत्मा-परमात्मानुं ज्ञान कराववा सारु ए ब्रह्मना प्रकाशक दिव्यमूर्ति अने निरअवकाशमूर्ति अने कर्तुमकर्तुम् अने अन्यथा कर्तुम् समर्थ एवा जे परमात्मा परब्रह्म तेणे ब्रह्ममां अखंड रह्या थका ब्रह्मना कोक देशने विषे जगत करवानी इच्छा करी.

पछी आ जगतने विषे जीव रह्या छे ते वधाय जीवने भेगा करीए तेमां जेटलुं बळ तेज छे तेथी अनंत घणुं बळ तेजवाळो एवो सर्वे जीवनो जीवन एक पुरुष प्रगट कर्यो, तेनुं नाम मूळपुरुष कहेवाय छे. अने बधाय जीवनी बुद्धि भेगी करीए एवडी एक बुद्धिरूप प्रकृति प्रगट करी ते सर्वे जीवोनी बुद्धिने प्रकाशे छे अने ए प्रकृतिपुरुष थकी सर्वे जीवोना बधाय मन भेगा करीए एवुं महत् ईश्वरना मनरूप प्रधानपुरुष प्रगट कर्युं. ते प्रधानपुरुषरूप मन जे ते सर्वे जीवोना मनने प्रकाश करे छे. अने ते प्रधानपुरुष थकी परमात्माए सर्वे जीवना चित्तनो सरवाळो लईए एवडुं एक ईश्वरनुं चित्त उत्पन्न कर्युं, तेनुं नाम महत्तत्त्व कहेवाय छे. ते महत्तत्त्वरूप ईश्वरनुं चित्त ते सर्वे जीवना चित्तने प्रकाश करे छे. अने ते महत्तत्त्व थकी सर्वे जीवना अहंकारनो सरवाळो लईए एवडो एक अहंकार प्रगट कर्यो, तेनुं नाम विराटरूप ईश्वरनो अहंकार कहेवाय छे.

अने ईश्वरनो आत्मा जे मूळपुरुष जेने सवळब्रह्म कहे छे ते पुरुष जे ते अनंत कोटि ब्रह्मांडना देव, दैत्यने, मनुष्य, पशु, पंखी सचराचर सर्व जीव मात्र तेने प्रकाशे छे. ते पुरुषने प्रकाशे करीने जीवने विषे चैतन्यता, जाणपणुं, व्यापकपणुं अने प्रकाशपणुं आवे छे. अने ईश्वर जे ते पुरुषरूपे करीने जीवने प्रकाशे नहीं, तो ते जीवने विषे चैतन्यता, जाणपणुं, व्यापकपणुं अने प्रकाशपणुं ते लेशमात्र न रहे अने पत्थर जेवो जडवत् जीव थई जाय. माटे जीवने विषे चैतन्यता, जाणपणुं, व्यापकपणुं, प्रकाशपणुं ते पुरुषने प्रकाशवे करीने आवे छे. अने पुरुषने परमात्माए पोताना अंगनो प्रकाशरूप जे निर्गुणब्रह्म तेने करीने प्रकाश्यो छे अने तेने प्रकाशे करीने पुरुष जे ते अनंतकोटि ब्रह्मांडना जीवोने प्रकाशवानी शक्तिने पाम्यो छे. अने जो ते पुरुषने परमात्मा न प्रकाशे तो ते पुरुष कांई करवाने समर्थ नथी अने परमात्माना प्रकाश विना तो जेवो जीव छे तेवो ते पुरुष पण जडरूप थई रहे छे. माटे परमात्माने प्रकाशवे करीने पुरुष जे ते अनंतकोटि ब्रह्मांडना जीवोने प्रकाश करवानी शक्तिने पाम्यो छे. माटे ईश्वर जे ते पुरुषरूपे करीने जीव मात्रने प्रकाशे छे.

अने ईश्वरनी बुद्धि जे मूळ प्रकृति तेने करीने अनंतकोटि ब्रह्मांडना जे जीव प्राणी मात्र तेनी बुद्धिने प्रकाशे छे, तेने करीने सर्वे जीव जे ते सर्व पदार्थनो निश्चय करी शके छे अने जो ईश्वर पोतानी बुद्धि जे प्रकृति तेने करीने प्रकाश न करे तो जीव जे ते कोई पदार्थनो निश्चय करी शके नहीं. माटे ईश्वरनी महत् बुद्धि जे मूळप्रकृति तेने प्रकाशवे करीने सर्व जीवनी बुद्धि जे ते निश्चय करे छे. अने ईश्वरनुं मन जे प्रधानपुरुष तेणे करीने सर्वे जीव प्राणी मात्रना मनने प्रकाश करे छे, तेने करीने संकल्प-विकल्प करी शके छे, पण ईश्वरनुं मन जे

प्रधानपुरुष तेना प्रकाश विना जीव जे ते संकल्प करवाने समर्थ नथी. माटे प्रधानपुरुष जे ईश्वरनुं मन ते जीवोने प्रकाशे छे. अने महत्तत्त्व-रूप जे ईश्वरनुं चित्त ते जे ते सर्व जीवना चितने चिंत्वन करावे छे. अने जो ईश्वर महतत्त्वरूप पोताना चित्ते करीने प्रकाश न करे तो कोई जीव चिंत्वन करी शके नहीं, कहेतां कोई पदार्थनी स्मृति जीवने रहे नहीं. माटे महत्तत्त्वे करीने सर्व जीवना चित्तने ईश्वर प्रकाशे छे तेने करीने पदार्थनी स्मृति करी शके छे. अने विराटरूप अहंकारे करीने ईश्वर जे ते सर्व जीवने अभिमान धरावे छे अने विराट प्रकाश न करे तो जीव जे ते पोताना देहनुं, घरनुं, वर्णनुं, आश्रमनुं, नातनुं, जातनुं धननुं इत्यादिक कोई जातनुं अभिमान धरी शके नहीं, कहेतां 'हुं कया वर्णमां छुं? के कया आश्रममां छुं? के कई मारी नात छे? के आ मारुं घर छे? के आ मारो देह छे के बीजो मारो देह हशे?' एम कोई जातनी खबर रहे नहीं. माटे नात, जात, वर्ण, आश्रम, धर्म, नियम इत्यादिक मर्यादानो रखावनारो जे अहंकार तेने विराट प्रकाश करे छे त्यारे तेनी मर्यादा रहे छे. माटे मर्यादानो रखावनारो एवो जे अहंकार तेने विराट प्रकाशे छे.

अने ईश्वरना देहमां जे महदाकाश छे ते सर्वे जीवना देहमां अवकाशने आपे छे, कहेतां देहने वहारनो वहेवार हरवा फरवा आदिक तथा देहने मांहेनो वहेवार जे केडनी पोल, उदरनी पोल, छातीनी पोल, कंठनी पोल, मस्तकनी पोल तथा कान, म्होंं, आंख, नाक, शिष्नु गुदा आदिक इन्द्रियोनी पोल ए सर्वने अवकाश आपे छे अने जो महदाकाशे करीने ईश्वर जीवने अवकाश न आपे तो कोई जीव कांई पण वहेवार करी शके नहीं. माटे ईश्वर जे ते पोताना महदाकाशे करीने सर्वे जीवना देहने अवकाश आपे छे. अने ईश्वरना देहमां जे महत्-वायु छे तेने करीने जीव जे प्राणादिक श्वासोश्वास लई शके छे तथा

चलन, वलन, धावन, प्रसार, आकोचनादिक क्रिया करी शके छे. अने ईश्वरना महत् अग्निए करीने जीवना देहमां अन्नादिक पाचन थाय छे. अने ईश्वरना महत् जळे करीने जीवना देहमां वीर्य, मूत्र आदिकनुं पोषण थाय छे. अने ईश्वरनी महत् पृथ्वीए करीने जीवना देहमां अन्नादिकनुं पोषण थाय छे.

माटे जेम चक्रवर्ती राजा पोतानी राजगादीए बेठो थको आखा मुलकमां पोतानो कायदो पोताना कारभारी द्वारा अदल प्रमाणे चलावे छे, तेम परमात्मा भगवान पोताना अनंत ऐश्वर्य तथा अनंत शक्तिओ द्वाराए अनंत ब्रह्मांडना जीवोने तथा अनंतकोटि ईश्वर तेने पोतानी इच्छाशक्तिए करीने वर्तावे छे. ते आ रामकथाना किस्किंधाकांडनी चोपाई छे—

उमा दारुडी मरकट नाहीं सबही नचावत राम गुसाई.

माटे अखिल विश्व एक भगवाननी इच्छाए करीने सर्व क्रिया करवाने समर्थ थाय छे अने मोक्ष पण एक भगवान करे छे कां भगवान पासेथी ज्ञान पामीने सिद्धदशाने पामेला संत ते थकी मोक्ष थाय छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत ३०९ समाप्त।

श्रीमुखसिद्धांत ३१० विषय :—राग द्वेष टळीने जीवनी मुक्ति केम थाय?

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ना श्रावण सुदि १५ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धोळका मध्ये सोनीनी धर्मशाळामां संध्या आरतीने समये हिंडोळाखाट उपर विराजमान थया हता. जरियानी वस्त्र धारण कर्यां हतां अने सर्वे अंगमां पुष्पना आभूषण शोभी रह्यां हतां. ककुंनो चांदलो कर्यो हतो अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

पछी महाराज बोल्या जे "गीतामां श्रीकृष्ण भगवाने कह्युं छे जे

राग द्वेष रहित थाय त्यारे जीव मोक्षने पामे छे. ते राग द्वेष ते शुं ? तो सारा पदार्थ उपर प्रीति तेनुं नाम राग अने नरसा पदार्थ उपर प्रीति नहीं ए अभाव; ए वेय टळी जाय त्यारे जीवनी मुक्ति थाय पण ते विना मुक्ति थाय नहीं. ते राग, द्वेष टाळवो घणो कठण छे. केमके राग टाळवा जाय तो द्वेष रहे छे अने द्वेष टाळवा जाय तो राग रहे छे. अने कोई मुमुक्षु होय अने ते एम जाणे जे 'आपणे तो राग करवा योग्य जे सारां पदार्थ अने द्वेष करवा योग्य जे नरसा पदार्थ ए वेयनो त्याग करीने भगवान भजवा' एम जाणीने जगतना पदार्थथी वैराग पामीने, भगवानमां प्रीति करे, तो पण तेने राग द्वेष तो रहे छे केमके जगतना पदार्थ साथे वैराग एटले द्वेष थयो अने उत्तम गुणने विषे प्रीति करी तो पण तेने शुभ गुण जे धर्म, ज्ञान, वैराग आदिक तेनो अहं ममत्व-रूप राग रहे छे. माटे भगवानना भक्तने राग अने द्वेष टळ्यो नहीं अने कदापि भगवानमां प्रीति करे तेवी जगतनां पदार्थमां पण प्रीति राखे अने द्वेष कोई साथे न राखे तो द्वेष तो टळ्यो पण एक तेने देह निर्वाह-रूप राग रहे छे. माटे राग पण बंधनकारी छे अने जो रागनो त्याग करे कहेतां भगवानमां प्रीति न करे अने सर्वे थकी उदास थईने एकलो वेसी रहे तो तेने राग टळ्यो पण तेने द्वेष रहे छे. केमके द्वेष विना कोई पदार्थनो त्याग थतो नथी अने राग विना कोई पदार्थनुं ग्रहण थतुं नथी. माटे राग टाळवा जाय छे त्यारे द्वेष रहे छे अने द्वेष टाळवा जाय छे त्यारे राग रहे छे. अने राग अने द्वेष वेय टळ्या विना मुक्ति थती नथी. माटे तमने सर्वने हुं प्रश्न पूछुं छुं के राग अने द्वेष वेय टळी जाय अने जीवनी मुक्ति थाय तेनो शो उपाय छे ? ते कहो."

पछी कोईथी उत्तर न थयो त्यारे महाराज बोल्या जे " प्रत्यक्ष माया पर सद्‌गुरु मळे अने तेने विषे जीवने प्रीति थाय अने ते आत्मा

परमात्मानुं शुद्ध आत्यंतिक ज्ञान करावे अने तेनी निष्कामभाव राखीने सेवा करे त्यारे राग अने द्वेष टळे छे. केमके पूरा ज्ञानने विषे राग अने द्वेष छे ज नहीं अने अधूरा ज्ञानने विषे राग द्वेष छे. अने जेने ज्ञान थयुं एवो जे पुरुष ते सार असारनो विवेक राखीने वर्ते छे, ते तो ज्ञानी ज छे, केमके भगववाननना संतने हंस कह्या छे. ते केम हंस कह्या छे? तो हंस छे ते दूध, पाणीने जुदां करीने पाणीने पडयुं मूकीने दूधनुं ग्रहण करे छे. तेम संत पण पिंड ब्रह्मांडरूपी मायानुं कृत तेने पडयुं मूकीने आत्मा-परमात्मानुं ग्रहण करे छे; माटे संतने हंसनी उपमा आपे छे."

इति श्रीमुखसिद्धांत ३१० समाप्त ॥

श्रीमुखसिद्धांत ३११ विषयः—पामर, विषयी, मुमुक्षु अने मुक्तनां लक्षण एटले महामोह, मोह, प्रमाद अने आळसनां रूप.

श्रीहरिकृष्णाय नमोनमः—संवत १९२४ना भादरवा वदि ८ ने दिवस महाराज श्रीहरिकृष्ण भगवान गाम श्री धरोडा मध्ये पंड्या गगुभाई पितांबरनी स्त्री वाई अचरतने घेर उतरादा बार ओरडानी आगळ पाट उपर गादीतकिया विछावीने विराजमान थया हता. राता किनखावनो सुरवाल पहेर्यो हतो अने सोनेरी लपेटानी डगली धारण करी हती. सोनेरी ग्रेवंधी लीला रंगनो रेटो पहेरीने ते उपर कसुंबल शेलुं केडे धारण कर्युं हतुं अने एक शेलुं खभे नाख्युं हतुं. कंठमां गुलाबना पुष्पना हार धारण कर्या हता अने बे हाथने विषे करणना पुष्पनां आभूषण, बाजु अने गजरा धारण कर्यां हतां. बे कान उपर गुलाबना पुष्पना गुच्छ धारण कर्यां हतां ललाटने विषे केसरनी अर्चा अने कंकुनो चांदलो कर्यो हतो. मस्तक पर कसुंबल पाघ धारण करी हती अने पाघमां पुष्पना तोरा बेकोरे लटकता हता अने पोताना मुखारविंदनी आगळ साधु तथा घणाक हरिभक्तनी सभा भराईने बेठी हती.

प्रश्नः—पछी भट्ट त्र्यंवकरामे प्रश्न पूछयो जे, "हे महाराज! पामर, विपयी, मुमुक्षु अने मुक्त ए चार प्रकारना मनुष्य छे तेनां केवां लक्षण होय? ते कृपा करीने कहो."

पछी महाराज बोल्या जे "बहु सारुं पूछयुं. सांभळो तेनां लक्षण कहीए जे ए चार प्रकारना मनुष्य छे तेने विषे चार दोप रह्या छे. ते चार दोप कया? तो (१) महामोह (२) मोह (३) प्रमाद अने (४) आळस; ए चार दोपे करीने जन्ममरणने पामे छे. तेमां पामरने विषे महामोह मुख्यपणें रह्यो छे अने महामोहने विषे बीजा त्रण दोप मळीने भेगा रह्या छे, एटले पामरने विषे चार दोष वर्ते छे. अने विषयीने विषे मुख्यपणें मोह वर्ते छे अने बीजा बे दोप तेने विषे मळीने रह्या छे, एटले विषयीने विषे त्रण दोष वर्ते छे. अने मुमुक्षुने विषे मुख्यपणें प्रमाद वर्ते छे अने ते प्रमादने विषे आळस रही छे, माटे मुमुक्षुने विषे बे दोष रह्या छे. अने मुक्तने विषे एक आळसरूपी दोष रह्यो छे.

हवे पामरने विषे महामोह वर्ते छे ते महामोहनुं शुं रूप छे? तो जेने महामोह वर्ततो होय तेने पापनी के पुण्यनी खबर होय नहीं तथा धर्मनी के अधर्मनी खबर होय नहीं अने तेने आहार, मैथुन, निद्रा अने भय ए चार बानानुं ज्ञान होय, तेने पामर जीव जाणवो.

हवे विषयीने विषे मोह वर्ते छे. ते मोहनुं शुं रूप छे? तो जेने विषे मोह वर्ततो होय तेने सत्यने विषे असत्यनी भावना होय अने असत्यने विषे सत्यनी भावना होय, कहेतां सत्य एवो जे आत्मा अने आत्माना आधार एवा जे परमात्मा भगवान तेनुं ज्ञान होय नहीं. अने असत्य एवो जे देह अने देहने पोषण करे एवा जे पंचविषयना पदार्थ तेने विषे सत्यपणांनी भावनाए सहित भोगबुद्धि होय. माटे शास्त्रमां कह्या जे धर्म अने अधर्म, पाप अने पुण्य तेने जाणीने अधर्मनो त्याग

करीने धर्ममां रहीने उत्तम विषय भोगने पामवाने अर्थे इन्द्रियो नियममां राखीने दान, पुण्य, जप, तप, तीर्थ, व्रत, यज्ञादिक शुभ कर्म करे अने ते शुभ कर्म करीने प्राप्त थयां जे मायिक पंचविषयना पदार्थ तेने पोते देहे करीने भोगवीने राजी थाय, तेने विषयी जीव जाणवो. अने ते विषयीने विषे मोह अने प्रमाद दोष भेगा वर्ते छे; केमके मोहे करीने सत्यने असत्य जाण्युं अने असत्यने सत्य जाण्युं अने प्रमाद एटले करवानुं न करवुं अने न करवानुं करवुं. माटे जेवुं समजाय छे तेवुं ज कराय छे. ते सारु अविवेकी एवो जे विषयी जीव ते न करवा जोग जे विषयने पामवानी क्रिया तेने करे छे अने करवा जोग जे आत्मा परमात्माने पामवाने अर्थे निष्कामकर्म तेने नथी करतो, एवां लक्षण जेने विषे होय तेने विषयी जीव जाणवो. अने पामर अने विषयी ए बेय मिथ्या एवो जे देह तेने पोतानुं रूप मानता होय छे.

—अने जे मुमुक्षु होय ते तो देहथी नोखो जे आत्मा तेने पोतानुं रूप जाणे छे अने आत्माने बंधनना करनारा एवा जे मायिक पंचविषय ते थकी मुकावाने अर्थे निष्कामभावे धर्म, ज्ञान, वैरागादिक साधन करतो होय तथा तीर्थादिक देह दमन करतो होय तथा 'पंचविषय थकी मुकावे एवा जे प्रगट भगवान अथवा प्रगट भगवानना एकांतिक संत ते मने क्यारे मळे' एम इच्छा करतो होय अने विषयने भोगवता होय तथा बीजाने भोगवावता होय एवा जे असत्पुरुष तेथी दूर रहेतो होय अने रामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेने ब्रह्मना आधार एवा जे परब्रह्म जाणीने तेनी उपासना भक्ति करतो होय अने मायिक पंचविषयने पामवाने अर्थे जे उपाय तेनो त्याग करीने उदास थको रहेतो होय, एवां जेनां लक्षण होय तेने मुमुक्षु जाणवो.

—अने जे मुक्त छे ते तो पंचविषय थकी मुकाईने ब्रह्मरूप थईने आत्मा परमात्माने साक्षात्कार देखतो होय. ते एवा मुक्त बे प्रकारना छे, एक

जीवनमुक्त छे अने बीजा विदेहीमुक्त छे. तेमां जे जीवनमुक्त छे ते तो विषयनो त्याग करीने पोते पोताना जे वर्णाश्रमना धर्म कह्या छे ते धर्ममां रहीने विषय थकी विरक्त वर्तता होय, पण नियमरूपी धर्मने क्यारेय चूके नहीं. अने जो नियमने चूके तो तत्काळ मुक्त स्थिति थकी पडी जाय. माटे जीवनमुक्त छे ते देह पर्यंत पोतपोताना नियम रूपी जे धर्म तेने क्यारेय चूके नहीं. अने जे विदेहीमुक्त छे ते तो विषयनुं ग्रहण करता थका विषय थकी विरक्त वर्ते छे.

ते कोनी पेठे ? तो तेनुं दृष्टांतः—जेम एक माछलुं छे ते जळमां ने जळमां रहे छे अने ते जळथी बहार नीसरे तो ते माछलुं मरी जाय. अने एक पक्षी छे ते वृक्ष उपर रहे छे अने ते जो जळमां पेसे तो ते पक्षी मरी जाय. अने एक जळकुकडी छे ते तो जळमां पण माछलां भेगी रहे छे अने वळी पक्षी भेगी वृक्ष उपर आकाशमां पण तेने क्यांय आवरण थाय नहीं. तेम जे जीवनमुक्त छे ते तो माछलुं अने पक्षी जेवा छे माटे तेने तो पोतपोताना जे वर्ण अने आश्रम ए बे य प्रकारना धर्म वेदमां कह्या छे तेमां रहे तो ते मुक्त निर्विघ्नपणें अक्षरधामने पामे छे अने धर्म चूके तो भगवानना मार्ग थकी पडीने जन्ममरणने पामे. अने जे विदेहीमुक्त छे ते तो जळकुकडीनी पेठे पोतानी नजरमां आवे तेम वर्ते तोपण तेने कांई बंधन थाय नहीं. अने विदेहीमुक्त तो पोताने चरणे जे जे जीव आवे तेना अज्ञान अने मायाना बंधन तेने टाळीने जीवनमुक्त करी मूके एवुं अद्भूत सामर्थ्य तेमां होय.

अने एवा विदेहीमुक्त कोण छे ? तो परमात्मा परब्रह्मना अवतार जे रामकृष्णादिक जेनुं भजन थाय छे ते विदेहीमुक्त छे. अने ए विदेहीमुक्तना भजने करीने सिद्धदशाने पाम्या एवा जे नारद, सनकादिक, शुकदेव, जडभरतादिक संत तथा ध्रूव, प्रह्लादादिक भक्त ते सर्वे जीवनमुक्त छे. ते जीवनमुक्तने माथे विधि-निषेधरूपी धर्मनो कायदो छे अने रामकृष्णा-

दिक जे भगवानना अवतार तेने मांथे विधि-निषेधरूपी धर्मनो कायदो नथी. ते तो पोतानी इच्छामां आवे तेम वर्ते पण तेने बंधन थतुं नथी. अने बीजा जीवोनां अनंत बंधनने कापीने अक्षरधामने पमाडे छे.

अने बीजो कोई तेनो वाद लईने नजरमां आवे तेम वर्तवा जाय तो ते घोर नरकमां पडे अने ते सूझे एवो मोटो कहेवातो होय पण भ्रष्ट थईने जगतमां निंदावा लागे. ते नारद मोटा हता पण तेने जो पोतानो धर्म जे 'त्यागी होय तेने स्त्रीनो स्पर्श करवो नहीं,' ते धर्म चूकीने राजानी कन्यानो हाथ जोवा सारु स्पर्श कर्यो तो ते नारदनी मोटी अपकीर्ति थई अने ब्रह्म-स्थितिमांथी पडी गयो. ए आदिक घणांक मोटा मोटानी धर्म चूकवाथी फजेती थई छे. अने रामकृष्णादिक भगवानना अवतार ते तो पोतानी इच्छामां आवे तेम वर्त्या छे तो पण तेनां चरित्र तो कल्याणकारी कहेवाणां छे. अने ते चरित्रने मोटा मोटा मुक्त तेणे गान कर्यां छे अने तेने गाने करीने अनंत जीवोना उद्धार थई गया छे.

एवी रीते विदेहीमुक्तरूप जे प्रत्यक्ष परमात्माना अवतार जे रामकृष्णादिक तेने विषे जे दोष परठे छे ते तो असुर छे अने दैत्य छे. केमके जेने भजने करीने अनंत जीव उद्धरी गया छे तेने विषे जे दोष परठे छे ते जेवो पापी कोण? ए तो महा पापी छे. माटे विदेहीमुक्तरूप एवा जे रामकृष्णादिक भगवानना अवतार तेना चरित्र अने तेनुं ज्ञान अने तेनी सेवा तेने करीने पामर, विषयी अने मुमुक्षु ए त्रण प्रकारना मनुष्य ते जीवनमुक्त पदवीने पामे छे.

एवी रीते पामर, विषयी, मुमुक्षु अने मुक्तनां लक्षण छे तेने समजीने जे पोतानां अंतरमां विचार करीने सत्पुरुषनो समागम करीने दोषने मकीने गुणने ग्रहण करे ते पण जीवनमुक्तनी पदवीने पामे छे.

इति श्रीमुखसिद्धांत ३११ समाप्त ।